विश्रामसागर

बाबा श्रीरघुनाथदास रामसनेही

विरचित

प्रकाशक—नवलकिशोर-प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ.

तेरहवीं बार, सन् १९४० ई० ।

श्रीबाबा रघुनाथदास रामसनेही ।
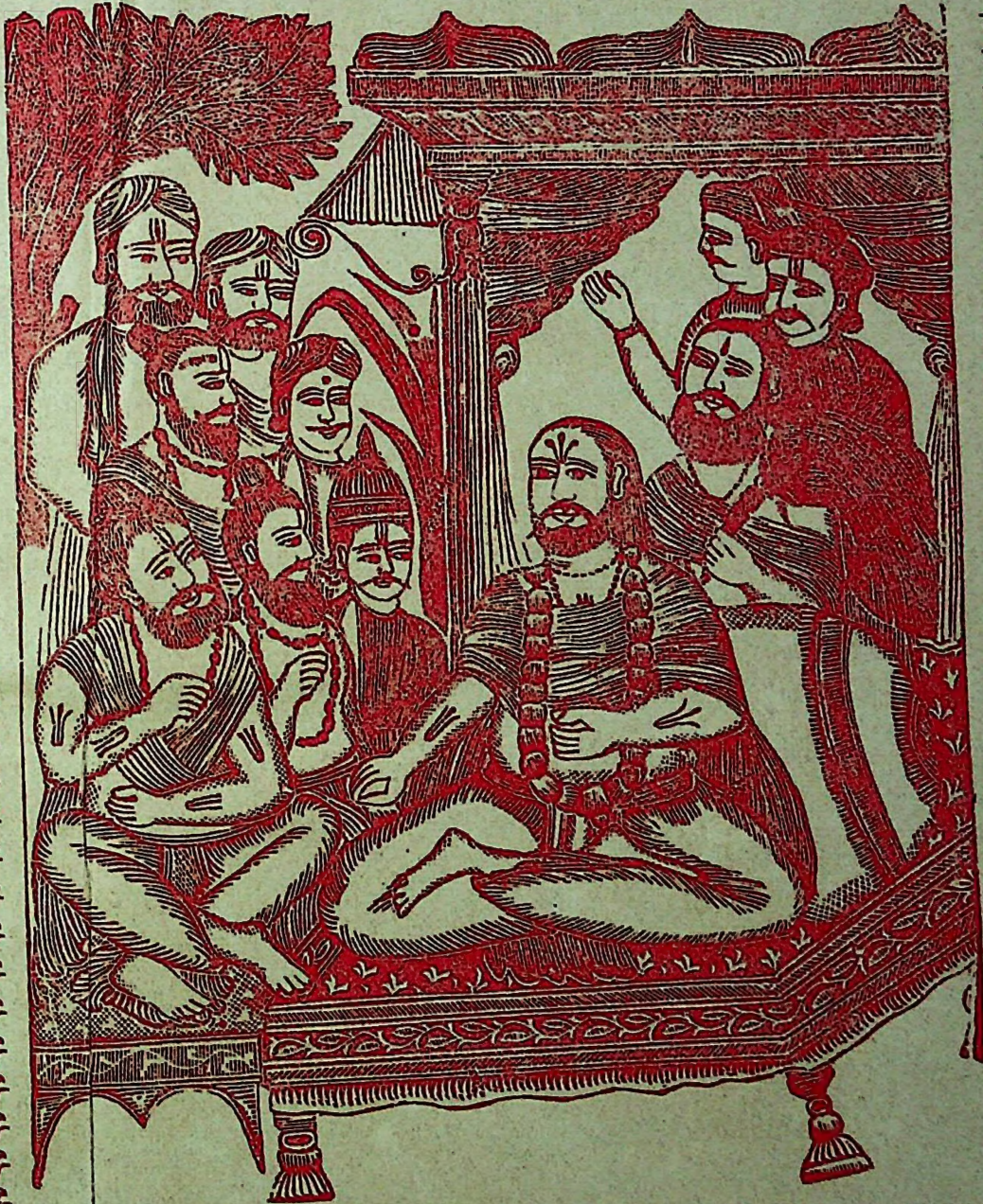
श्रीमहाराज रघुनाथदासजी शिष्यों के साथ समाज में बैठे हुए कथा-वार्त्ता कर रहे हैं ।

अथ विश्रामसागर

रघुनाथदासरामसनेहीकृतप्रारम्भः ॥

श्लोक ॥ सीतारामेतियुगलं वस्तुतस्त्वेकरूपिणं । परमानन्दसन्दोहं सर्वाराध्यंनतोस्म्यहम् ॥ तत्प्राप्त्यैपरिमार्गिताहिबहवोलोकेजनानैवतत् । दातारंहरिभक्तदासगुरुतोनान्यंकचिद्दृष्टवान् ॥ तेषामेवतुपादपद्मप्रभवा यासुस्वचक्ष्वाजिहं । रघुनाथाखिलग्रन्थसारसुखदं विश्रामसिन्धौकृते ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
नानाग्रन्थनकेर मत कहौं वन्दना बखानि ॥
वन्दौं शारदके चरण हरण अविद्यामूल ।
बुधि सुधि विद्यादे सुमति ह्वै मोपर अनुकूल ॥

छं० एकरदन करिवदन सदन सुखके दुखनाशक ।
ईशतनय गणईश शीश रजनीश प्रकाशक ॥
ऋद्धि सिद्धि बुधिदेत लेत हरिकुमतिनजागत ।
जो सुमिरै मनलाय विघ्न ता जनके भागत ॥
जैजैगणेशगिरिजासुवन भुवनविदित यशअपहरण ।

रघुनाथदासवंदन करतबारबारगणपति चरण ॥
जयअनंग अरिसंग उमा अरधंग विराजत।
मुण्डमालमृगछाल कण्ठविषव्यालजोछाजत ॥
शीश गंग सारंग भस्म सर्वांग लगावत।
तीननयन मृदुवयन अयनसुखदुःख नशावत ॥
दीनदयाल कृपालहर कर त्रिशूलवर गौरतन।
रघुनाथदासवन्दनकरतकरौकृपामोहिंजानिजन॥
वन्दौं द्विजपदकमल अमल सुंदरसब लायक।
वन्दौं रघुपति सचिवसखा सेवक सुखदायक॥
वन्दौं गंग तरंग मेदिनी कुमुद विभाकर।
वन्दौं सुरमुनि मनुजदनुज विधि जीवचराचर ॥
वन्दौंकविकोविदविमलजिनवरणयोसियरामयस।
सबमोपर किरपाकरहु कहौं कथाबलपायतस ॥

रामचरित्र विचित्र अपारा * गावत निगम न पावतपारा
निजमतिसरिसतदपिमुनिगावैं * मन चंचल तेहि तहांरमावैं
श्रवणकीरतन सुमिरण सेवा * भक्ति अंग भाषत महिदेवा
करन पवित्र गिरा अघहारी * सब प्रकार मुद मंगलकारी
असबिचारिवरणत रघुनाथा * भाषाकरि हरिप्रेरित गाथा
कवित दोषगुणग्रन्थमँझारा * कहे नागपति यहि परकारा

रो० मगणनगणअरु भगणयगण शुभचारिकहावैं।
जगणरगणपुनिसगणतगणकविअशुभबतावैं॥
मगणतीन गुरु आदिदेव महि सब सुखकारी।
नगणतीन लघु देव नागदायक बुधि भारी॥
भगणआदि गुरुदेव चन्द्र मंगलदा होई।
यगणआदि लघुदेव नीर आनँदप्रद सोई॥

जगण मध्य गुरुदेव सूर सुख सकल विनासै।
रगण मध्य लघुदेव अग्नि दाहत तनु त्रासै॥
सगण अन्त गुरुदेव काल नितदेत उदासी।
तगणअन्तलघु देवव्योम निरफल फलनासी॥
मनुजकवितके आदिमहँ लीजैइन्हें बिचारिखुब।
कहैरघुनाथ श्रीरामगुणवरणत अशुभौहोतशुभ॥

दो० तहां मित्र कोउ दासहैं उदासीन रिपुकोउ।
अक्षर शुद्ध अशुद्धकोउ सुनोकहौं मैं सोउ॥
खगकचघनघनजड़परत छतइतिसुखप्रदअङ्क।
शेष परै जो कवित तो करै राव ते रङ्क॥

यहिविधिपिंगलकहतबखानी ❋ सोहै मम विशेषनहिंजानी
तेहिते सबैकहौं करजोरी ❋ जोकछु चूक परै लखिमोरी
सुजनसुधारिलहेउ तुमताही ❋ लघुगुरुवरणजहांजसचाही
मोहिं न ज्ञान बुधिबलचतुराई ❋ कीन्हचहौं हरिकथा सुहाई
मतिअतिछीन पीनरुचिमोरी ❋ चाहत नभै छुवन बरजोरी
यह ढीठता समुझि वरज्ञानी ❋ क्षमिहैंनिजशिशुसेवकजानी
सुनिहैं मुदित सराहिसराही ❋ रामसियापद रतमतिजाही
जिमिबालक बोलत तुतराई ❋ सुनत मातपितु अति हरषाई
निंदिहैंकपटी खलअभिमानी ❋ जेहरिविमुखभक्तिनहिंजानी
तासु वचनसुनि सुजन सुछंदा ❋ तजहिंनउड़पदोषाशिवनिंदा
रविहिउलूक कहै भलनाहीं ❋ साक्षी किमिधारै मनमाहीं
निंदाफल नहिं कह्यो बखानी ❋ पैहैं जबतब जैहैं जानी

दो० रामकथा सबको सुखद ऋतुवर्षाकी नाइँ।
अर्क जवासा दुष्टजन ते आपुइ जरिजाइँ॥

यदपि रहैमम भणितभदेशी ❋ परिहरि जनगुणनामतेलेशी

तातेभई अनूपम नीकी * जिमिमणिमढ़ितचौतनीफीकी
हरिहरिजन बिनजो कविताई * सुभगप्राणबिनजिमिवपुभाई
खल बायस कर तीरथसोई * सुजनहंस तहँरमै न कोई
छंद प्रबंध न हरिगुणगावै * संजीवनि सोइ काव्य कहावै
कहैं सुनैं मिलि सज्जनताही * करैंप्रणाम प्रीति गुणग्राही
यथा वक्रगति सरितनिहारी * तासुपाथ पावन सुखकारी
मज्जहिं ताहि महामुनि देवा * अपर न काकोवरणों भेवा

दो०
श्रीपतिधीपति यज्ञपति अखिललोकपतिजोपि ।
प्रणवों भूपति प्रजापति करौ कृपा प्रभु सोपि ॥
वन्दौं हरिजन पदकमल अमल तत्त्व प्रदरेनु ।
जिनकेसँगप्रभुफिरतइमि जिमिबछरासँगधेनु ॥
यद्यपिकामी कुटिलखल समली जन रघुनाथ ।
तद्यपि अहै तुम्हारोई समुझि न छांड़ो हाथ ॥
बड़कृत अंगीकारजेहि प्रतिपालत सजिताहि ।
अहिमहिहरविषदधिअगिनितजतनदुःखदआहि ॥
वन्दौं खल मलरहित जे रामभक्त गुणखानि ।
परदुख सोई सुख जिन्हैं परसुख मोटी हानि ॥
हरिजन मणि की कोठरी आप सुतारी आहि ।
मुयेहु न त्यागत टेकनिज तेहिते छांड़्यो नाहि ॥
सन्तस्वभाव प्रभावलखि समुझिखलनकैरीति ।
तब मैंकीन्ह्योंग्रन्थयह हृदय न आन्योंभीति ॥
करिअरि केरे कुँवर को कहासकै करि श्वान ।
भूकत मारे जाइ हैं यम के भवन निदान ॥

सो०
वन्दौं सन्त समाज शीशनाय करजोरि करि ।
जहँहरिनामजहाज अमितपतितचढ़िभवतरहिं ॥

हरिहरिजन बिनजो कविताई सुभगप्राणबिनजिमिवपुभाई

वन्दौं गुरुपद बारहिबारा * जासु कृपा छूटत संसारा
होतविमलमति मानबड़ाई * मिटतविभेद कपटकुटिलाई
मोहिंसमपतितनयहिजगकोऊ * लघुमतिअगुणवपुषलघुसोऊ
सतगुरुगुरुमोकहँ गुरुकीन्हा * यथा दण्डकर बावन लीन्हा
करहुँतासुकेहि भांतिप्रशंसा * जोकृतकागहि पिकबकहंसा
मलिनभक्षतजि कपटकुसंगा * लागेउ नाम चुनन सतसंगा

दो० काशी वास निवाससुर सरि पद पाथ स्वरूप।
गुरु मूरति पशुपति प्रकट तारक मन्त्र अनूप॥

वन्दौं अवध अवधपुरवासी * जे अनन्य सिय रामउपासी
वन्दौं सरयू विमल तरंगा * पावनकरणि करणिअघभंगा
करहिं पान जल सुमिरैं नामा * बसैं अवधमें जे वसु यामा
तेतनुतजिफिरिजगनहिंआवैं * असप्रभाव निगमागम गावैं
वन्दौं नृप दशरथ सब रानी * दुलराये जिन शारँगपानी
वन्दौं श्रीमिथिलेश सुनयना * अवलोकेरघुपतिनिजअयना
वन्दौं भरत लषण रिपुआरी * रामानुज सबविधि सुखकारी

छप्पै जयतिबातसंजात जयति रविमण्डल ग्रासक।
जयतिसंतसुरसुखद जयतिनिशिचरकुलनाशक॥
जयतिविजय मदहरण जयतिसियशोचनिवारण।
जयति ज्ञान गुणउदधि जयतिसबसंकटटारण॥
जयतिजासुउरवसतनितरघुकुलमणिशरचापधर।
सोइप्रभु सेवक जानिकै करो कृपारघुनाथपर॥

दो० वन्दौं श्रीजानकीपद पदुम जोरि युग पानि।
विधिहरिहरचिन्ततजिन्हैं शक्तिसहितसुखखानि॥

छप्पै सारँगसे दृगलाल माल सारँगकी सोहत।
सारँगज्योंतनुश्याम वदनलखि सारँगमोहत॥

सारँग समकटिहाथ माथबिच सारँगराजत ।
सारँगलाये अंग देखि छवि सारँग लाजत ॥
सारँग भूषण पीत पट सारँग पद सारंगधर ।
रघुनाथदासवन्दनकरत सीतापति रघुवंशवर ॥

दो० गुणागारगुणरहितहरि गुणनियता गुणपाल ।
गुणनायकगुणनिधनकर गुणदायकगुणजाल ॥
मातृ पितृ गो मित्र द्विज गुरुहा दुर्वृत कोउ ।
जासुनामकीर्तन किये शुद्धहोत जग सोउ ॥
अन्ध विलोचन पंगुपग लहै मूकवचनासु ।
जासुकृपाते तिमिमहूं कहिहौं गुणगणतासु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतवन्दनावर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० वन्दौं वेदपुराणजे करहिं रामगुण गान ।
जो सुनि प्राणी पावहीं भोगभक्ति निर्वान ॥

वन्दौंरामनाम अविनासी ✵ अचलअखण्डचराचरवासी
सबसुखकरणहरण दुखभारी ✵ जपैंजाहि शिवशैलकुमारी
भवनिधानकलिमल मथनारी ✵ पावनहूं को पावनकारी
मुक्तिपंथ विश्राम स्थाना ✵ कवि सुसन्तके जीवनप्राना
धर्मविटपवरबीज प्रकाशक ✵ मंगलकरनशोक सबनाशक
मानस रोग अनेकप्रकारा ✵ भेषज नाम विनाशनहारा
विपतिगहन घन बाणकुठारा ✵ करि अज्ञान मृगेशनिहारा
मंत्रराज षट वरण समेता ✵ कहतसकलनिगमागम बेता
परमसरल सुमिरत सुखदाई ✵ लोकानँद परलोक भलाई
जनमन सारँग सारँग हरिसे ✵ जगदधिकूलकलपदलसरिसे
मुक्तिवाम श्रुति सुमन विहंगा ✵ मुनिमनपक्ष उड़तजिनसंगा

कलिमलतमविधुवल्लभगंजन ❋ ब्रह्मनयन भ्रमधूम प्रभंजन
करमकोटि करि दशनकराला ❋ दुर्वासना उड़पकर ताला
जन्ममरण बिबिक्षुधा पियासा ❋ नाम पियूषअशन वरबासा
ज्ञान विराग श्रवण जलजाता ❋ कहै रघुनाथ मोर पितुमाता

दो० रामनाम वस जासुउर अखिल मंत्रको वीर्य।
प्रलय अनल विष मृत्युते सोनरहोयउतीर्य॥

तो० सोइ नाम सुमिरिसुभाय। कहौं ग्रन्थ एकबनाय॥
विश्राम सागर नाम। सुनि लहैं नर आराम॥

दो० संवतमुनि वसु निगमशत रुद्रअधिक मधुमास।
शुक्लपक्ष कवि नौमिदिन कीन्ही कथा प्रकास॥
अवधपुरी परसिद्धजग सकलपुरिन सरनाम।
रामघाट के बाट में राम निवास सुधाम॥
तहां कीन आरम्भ मैं रघुपति आयसु पाय।
श्री गुरुदेवा दास के पदनिज हृदय बसाय॥
सतगुणरजगुण तमोगुण त्रयविधि के मुनिवाच।
मोक्षदस्वर्गद शुभद हैं धरिहौं सुखप्रदसांच॥
उमा शम्भु सीतारमण जो मोपर अनुकूल।
तौ वरणों सो होइ फुर अंत मध्य अरुमूल॥

हरउपदेश न लेशबड़ाई ❋ कहौंकथानिजमति हितगाई
जगवनमनकरि दुखदवदहई ❋ हरिगुणसरिपरितबसुखलहई
श्रुतिपुराणबहुविधि सुरबानी ❋ लघुमतिमोरिपरतनहिंजानी
भाषाबन्ध करब मैं ताते ❋ समुझिपरे अस्माकम जाते
वचनविभेद अर्थनहिं दूजा ❋ यथा इन्दुशशि अर्चनपूजा
पुनिबहुमत बहुग्रन्थनमाहीं ❋ सबसंग्रहबिन जानि न जाहीं
तेहिते मैं एक ग्रन्थ मँझारा ❋ धरबवरणक्रम अर्थ अपारा

बातबात पर वर इतिहासा * भक्तिविवेक सहितनहिं हासा
सुनि संदेह करै जनि कोई * देखै वेद पुराण बिलोई
सबकरसार अंशमत लीन्हा * मैं बिश्राम सुसागर कीन्हा
आदिअंतदोउ जानिकिनारा * रामसुयश पय पावनभारा

दो० अद्भुत हास शृँगारभव वीरबिभत्स विषाद ।
रुद्रसुरुचि सम शान्तये यामें नवरसस्वाद ॥

संशय भँवर करन सतसंगा * अर्थ गहिर अध्यायतरंगा
कमल कबित्त सोरठा दोहा * भक्तिसुवास संत अलिमोहा
छंदैं विविध भांतिकी मीना * सीपसकल चौपाई दीना
राम नाम मुक्ताहल भाई * जासुआब त्रिभुवनमहँ छाई
सज्जनमाल चुकत हरषाहीं * दुष्टकाग वककी गतिनाहीं
नानाविधि इतिहास पुरानी * सोइयाहिबीच रत्नकी खानी
मनगिरिबासुकिसुरतिलगावै * यहिविधिमथै सोइजन पावै
क्षमाशील संतोष बिचारा * मोहशयन भक्षक धरिआरा

दो० उक्तियुक्ति औरेब धुनि अर्थ भावना केर ।
चोपप्रास अन्वै जमक जलचर अपर घनेर ॥

वसत तहां श्रीयुत भगवाना * यामें राम सियाकर थाना
जो चाहै प्रभु दरशन भाई * तासुयुक्ति इमि आगम गाई
प्रथमैं श्रद्धा सम्मल बांधै * दूसर साधु संग शुभसाधै
तीसरभजनक्रिया सोइचलई * तुर्य अनर्थ विरति वनलहई
पञ्चम निष्ठारुचि उपजावै * षष्ठसुजान ध्यान चितलावै
सप्तम नामाशिक ह्वैजावै * जपतजीव त्रयताप नशावै
अष्टम भावहरै दुखनाना * नवम प्रेम पयकरि अस्नाना
दशम दरश रघुपतिके पावै * जीवव्याधि सब तुरतनशावै
निजस्वरूप सुखलहै हजूरी * यहि उपाय बिनदरशन दूरी

रामकृपा बिन श्रमें उपाई * पावै जिमि द्विजसुत समुदाई
ग्रन्थ अनेक नदी नद नारा * बहि आवे शुचि जासु मँझारा

गी.छं. षटशास्त्र वेद पुराणमत विश्राम याहीमें लह्यो।
यहि अर्थते विश्रामसागर नाम मैं याकोकह्यो॥
जेसुनहिंसमुझहिंप्रीतिकरिहरिचरणमेंचितलाइहैं।
रघुनाथ ते गोपद सरिस संसार यह तरि जाइहैं॥

दो० कल्पद्रुम सम ग्रन्थ यह सर्व सुफलदातार।
धर्म मोक्षकामार्थहरि भक्ति विराग विचार॥
बुद्धि न ज्ञान विवेककछु बढ़ै न हरिपदप्रीति।
तिन्हैं न प्रीतमलागयहु विश्रामोदधि रीति॥
विविधग्रन्थ देखेसुने जिनके कपट न शोक।
तेप्रमुदित ह्वै वर्णिहैं पदपद प्रतिश्लोक॥

पैहैं सुखसम्पति यशपावन * ह्वैहैं हरि हरिजन मनभावन
कलिपत ग्रन्थ कहै जो कोऊ * याचौं ताहि जोरि करदोऊ
यह ममकृत तुव बारकबारा * देखिजाउशुचिसहितविचारा
जोमममति कलिपत कछुहोई * तौ मिलि दोष देहु सब कोई
आगेमुनिनकथन जोकीन्हा * सोई मैं भाषा करिदीन्हा
बहु ग्रन्थनमा रहै जो बाता * सो एकैमा धरी सोहाता
तहँ कोइ कहै कहाहै भाखा * तेहिते मैं ब्रवीत बिनमाखा
सुर नर पशु पक्षी जो होई * निजवाणी समुझत सबकोई
रहैं बिबिहुकोविद गिरिराया * गरुड़ै वायस पास पठाया
आपुधर्यो पुनि हंस शरीरा * जब गुणसुने भुशुण्डीतीरा
अजहूँ जे सुर वाणी कहई * प्राकृतकरि समुझावतअहई
तब सब हरषैं प्रीति बढ़ावैं * नाहितकोइ निकट नहिं आवैं
तेहिते जौनि जहांकी बानी * सोई ताहि तहां सुखदानी

लेन देन विधि जो कछु करई ❋ देश वाक्यते कारज सरई

दो० जेहिते निज कारज सरैं ताको निंदैं नीच।
यथा कोलपयपानकरि पुनि करिडारत कीच॥
जो भाषा मानत नहीं तो भाषा मति गाय।
जोबोलैतौ श्वानसम उगिलिअशन फिरिखाय॥
अब गुरुपद निजआंजिदृग रामचरणशिरनाय।
चलीकथा जेहिभांतिजहँ सो सब कहौं बुझाय॥

षटऋतुमाहिंशिशिरऋतुजानो ❋ फाल्गुनशुक्लपक्षपहिचानो
नैमिषक्षेत्र अटन तब होई ❋ पक्ष एक निवसै सब कोई
प्रथम चक्रतीरथ जल पावै ❋ पुनि सब पंचप्राग चलिजावै
यहिविधि ब्रह्मसरादि नहाई ❋ धेनुमतिहि आवै ऋषिराई
तेहितट व्यासदेवकर थाना ❋ ऋषिशौनक तहँ रहैं सुजाना
बहुरि सूत आये तेहि ठामा ❋ लखिशौनककियोदंडप्रणामा
चरणधोइ आसन बैठारी ❋ धूप दीप आरती उतारी
बोलेवचन सुचित करिगाढ़े ❋ हाथजोरि सम्मुख भे ठाढ़े
नाथ बात कछु पूंछा चहऊं ❋ आयसु होय वचन तब कहऊं

दो० अतिशय प्रीति विलोकितब कहा सूत हरषाय।
मुनिमन जनि शंकाकरौ पूंछो जो जिय आय॥

बोलेऋषि सुनिये महिदेवा ❋ तुम जानत तिहुँकालकभेवा
वेदरुशास्त्र सकल तवदेखा ❋ नित्यानित्यक कीन्हों लेखा
तुमदयालु दीनन सुखदाई ❋ तुमतजि कहां पूछियेजाई
प्रथम कहौ गुरुमहिमा गाई ❋ नाममहातम बहुरि सुनाई
कर्म्माकर्म्म धर्म्म आधर्म्मा ❋ ज्ञानविराग भक्तिको मर्म्मा
दुखसुख स्वर्गनरकसबभांती ❋ कौनकर्मकरि केहिमाजाती
मायाब्रह्म जीव जगजाना ❋ हरि हरिजन गुणकरौबखाना

ब्रह्मअनादि धस्यो वपुआई ❋ कीन्हचरित कस कहौबुझाई
चारिखानि जगजीव अपारा ❋ उत्पति पालन अरु संहारा

दो० योग यज्ञ व्रत दान तप वरणाश्रमकर भेउ।
भिन्न भिन्न भाषौ सकल रहे रहाये तेउ॥
शास्त्रविना नहिंज्ञानभव ज्ञान विना नहिंभक्ति।
भक्ति विना नहिं सत्य सुख ताते सुनियसुशक्ति॥

कुं० शीशभार श्रुतिसर्प बिल ग्रहमल मगसम लयन।
कर सबकरपग अफल तरु मोरपत्त शशिनयन॥
मोरपत्त शशिनयन प्राण बिन विग्रह अहई।
नवै न गुरुजन चरण रामगुण सुनै न कहई॥
करै न जो हरि कर्म्महित अटै न तीर्थ मुनीश।
दारुयोषिता सरिस सो धावत नावत शीश॥

दो० हरिविषयक जो होइजन ताहि उचित है येह।
महामनोहर हरिचरित सुनै सदा करि नेह॥

सुनिमुनिवचनसूतसुख पावा ❋ वेदव्यासपद शीश नवावा
क्षणयक हरिकर ध्यान लगाई ❋ पुनि मृदुवचन कहे हर्षाई
भेद तुम्हार हवै सब जाना ❋ पूंछेउ जिमि मूरुख अज्ञाना
सो मैं अब तुम्हार मत जाना ❋ कीन्हचहत सबकर कल्याना
धन्यधन्य तुम मुनिबड़भागी ❋ पूंछ्यो रामकथा अनुरागी
रामकथा शुभाचिंता मनसी ❋ दायकसकलपदारथ जनसी
मोहमहातम बसि करणीसी ❋ अहंकार करि हरिघरणीसी
अभिमतफलप्रद देवधेनुसी ❋ स्वच्छ करन गुरुचरणरेनुसी
कलिमलभेकविपुल सरपीसी ❋ क्रोध महिष दुर्गेदरपीसी
सुजन समाज उडुपरजनीसी ❋ साधु पोतपालन जननीसी
ब्रह्मलखन हित दृगपुतरीसी ❋ मन मृगबन्धनहितसुतरीसी

लालच लोभ लवाबहरीसी ❋ सदगुणसकलचनकडहरीसी
दुर्वासना समूह शलभसी ❋ दीपशिखासमदहनकलभसी
हरिभयहरणि विभावसुतासी ❋ दुखद अविद्यातूल हुतासी
धर्म कर्म वरबीज रसासी ❋ सुमतिबढ़ावनसुखसुदशासी
ज्ञानभाव भव सुराबतीसी ❋ कविकोविदहितअजयुवतीसी
कामभुवंग विषय लहरीसी ❋ मणि मयूरपाटन गहरीसी
भर्मबलाहक जगत प्रानसी ❋ ज्ञानखड्ग खरधरनसानसी
भवस्वरश्वानकमलबहनीसी ❋ विरति विचारकहनिरहनीसी
दालिददुख मूषकमिनकीसी ❋ रघुपति ध्यानकरनपिनकीसी
सर्वभूत पादप मधुऋतुसी ❋ कपिमलभंजन हेतु मृत्युसी
विरतिविवेकनृपति मोहनीसी ❋ सदसंतोष क्षीर दोहनीसी
शोक शुक्रभव भीम गुसासी ❋ पितरतरण हरिभक्ति सुपासी
प्रभुपद प्रीति बढ़ावनि ऐसी ❋ अनुदिनलाभलोभकहँ जैसी
रामहिंप्रियजिमिकाककजासी ❋ भक्ति मुक्तिप्रद मंगलरासी

दो० मंगल वकता के भवन मंगल श्रोता धाम ।
मंगल लेखक के करन मंगल हो तेहिठाम ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतबन्दनावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० भगवत चरित पियूषवर नित सेवै जो कोइ ।
अन्तकाल के समय में तेहि उदवेग न होइ ॥

असहरिकथा कहौं सुखदाता ❋ सुनो प्रथम गुरुमहिमा ताता
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु पुरारी ❋ गुरु परब्रह्म दीन दुखहारी
गुरु शरणागत जो कोइ आवै ❋ बहुरि न सो चौरासी जावै
गुरुकृपालुअगणितगतिदाता ❋ गुरुकृपा छूटै यमनाता
महाअधम पापीनर होई ❋ गुरु शरणागत आवै सोई

फिरि ते नरक परैं नहिं प्रानी ॥ जो गुरु वचनलेइँ फुरमानी
कहौं एक इतिहास पुरानी ॥ मनलगाय सुनुमुनिवरज्ञानी

सो० रहा बधिक यक नीच करै ठगाही वन बिषे।
नाम तासुमारीच अतिनिर्दय कपटी कुटिल॥

तेहियकदिनमनकीन्हविचारा ॥ मोसमपतित न कोउ संसारा
जबते धर्यो देह जग आई ॥ पापकरत सबउमिरि बिताई
इन अपराध कौनिगति होई ॥ यहिविधिविपिनशोचकरसोई
तेहिअवसरगौतमऋषिआये ॥ जात रहैं कछु सहज सुभाये
मुनिहिंविलोकितुरतउठिधावा ॥ चरण नाय शिर वचन सुनावा
मैं पापी ठग कुटिल चवाई ॥ तुम दयालु पतितनगतिदाई
तेहिते प्रभू कृपा अब कीजे ॥ मोहिं आपनो शिष्य करीजे
कहमुनि तोहिं शिष्य जोकरहूं ॥ अर्द्धपाप अपने शिर धरहूं

दो० सुनु ठग पद्मपुराण में देखी सब निरताय।
पाप पुण्य जेहिविधिबँटै सो तोहिं कहौं बुझाय॥

यक तपसी विषयी यक होऊ ॥ भोजन करैं एकमहँ दोऊ
भली बुरी संगति होइजाई ॥ पाप पुण्य आधा बँटिजाई
छुवै सराहै औ बतलावै ॥ दशवां अंश तहां बँटिजावै
दर्शन ध्यान वचन सुनुजाका ॥ सतवां अंश पाप पुनि ताका
जप तप दान धर्म यक करई ॥ यक सेवा वाकी अनुसरई
दशौं अंश फल सोऊ पावै ॥ पाप पुण्य जोई होइ आवै
करजकाढ़ि पुनिपाप जोकरई ॥ तीन भागफल धनदहि परई
चोरीकरि धर्मकरै जो कोई ॥ पाप पुण्य तेहि कछू न होई
जो कोउ काहू प्रेरि करावै ॥ पुण्य पाप षटअंश सो पावै
प्रजा जो धर्माधर्म कमाई ॥ छठाअंश राजा ढिग जाई
होम पाठ सन्ध्या अस्नाना ॥ जाप करत वा पूजा ठाना

बातकरै अथवा छुइ लेई ❋ छठाअंश निज पुण्यहि देई
आनकेकर निज धर्म करावै ❋ छठाअंश फल सोऊ पावै

दो० पिता पुत्र नारी पुरुष गुरू शिष्य यहि भाय।
पाप पुण्य जो कछु करै अर्द्ध अर्द्ध बँटिजाय॥

असविचारि शिषिकरौंनतोहीं ❋ बाट न रोंकु जानदे मोहीं
बोला बधिक जाननहिं देहौं ❋ जबलगिगुरुनतुम्हैं करिलेहौं
सुनिमुनिहृदयविचारहिआना ❋ यहहै खलनहिं देहै जाना
सहसनेह चह निज भलभाई ❋ परी पूरपथ देहु बताई
कहऋषि गुरुदक्षिणादे मोहीं ❋ तब तो शिष्यकरौं मैं तोहीं
बोला का दीजै सो कहऊ ❋ ममढिग होइलेउ जो चहऊ
अबजनि पापकिहेउ कछुभाई ❋ रामनाम सो सुमिरहु जाई
परमजाप तारक ब्रह्म संगी ❋ ब्रह्महत्यादि पाप हरै जंगी
असकहिऋषिचलिभेजिउपाई ❋ बधिकनाममें प्रीति लगाई
तेहिभांतिनकछुकाल बितावा ❋ मरणकालकादिन जब आवा
ताहिलेन यमदूत सिधाये ❋ पाछेते हरिगण चलि आये
शीशमुकुटमणिकुण्डल काना ❋ पीत वसन तन भूषण नाना
भुज विशालअनुपमकरलाजे ❋ हरिदर चक्र कौमुदीराजे
गणन देखि यमदूत डराने ❋ बोले वचन कपट छलसाने
बड़ी भाग्य हम दरशन पाये ❋ आजु कहां यहि तीर सिधाये

दो० कहा गणन दूतौ सुनो बधिकभक्त यहि ग्राम।
तेहि आनै आयन यहां लैजैबै हरिधाम॥

सुनत वचन किंकर यमकेरे ❋ बोले निज निज नैन तरेरे
बधिक नीच पापी अन्याई ❋ जीव हतेसिनहिंजायँ गनाई
वनके वन यहिकीन्हेंसिनासा ❋ तेहि तुम कहत रामकर दासा
कहगण जबतेगुरुयहि कीन्हा ❋ रामनाम में मन चित दीन्हा

किहिसि न तबते कछु अपराधू * यहिसम और कौन है साधू
असकहि लीन विमानचढ़ाई * हरिपुरको चलिभे हरषाई
छं० चलिभे विमान चढ़ाइ हरिपुर ताहि राख्यो जायकै।
अतिदेखि गुरुपरताप यमके दूतगय खिसियायकै॥
अससमुझिनरगुरुशरणह्वैहरिभजनजिननाहींकियो।
तिनपायनरतनआयजगकरिहानिनरकहि चलिदियो॥
दो० गुरुशरणागत आइकै जो सुमिरै सियराम।
इहां रहै आनन्द में अन्त बसै हरिधाम॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ते जो अधिकी ह्वैजाय।
गुरुबिन भवनिधिनातरै कहतनिगमअसगाय॥
यामें कछु सन्देह न पैली * आदिहिते सब गुरुकरिऐली
ब्रह्मके शिष्य प्रकृतिही जानो * प्रकृतिशिष्यमहतत्त्वपिछानो
महत्तत्त्वशिषिप्रणवजोकहिये * ॐकारते विष्णुहि लहिये
विष्णुकिशिष्यलक्ष्मी भयऊ * तिनकेविधिविधिकेशिवकह्यऊ
रामचन्द्र अवतार जो लीन्हा * विश्वामित्र गुरू तिन कीन्हा
व्यासपुत्र शुकदेव सुभाये * जन्मलेतही विपिन सिधाये
तिन्हगुरु कीन्हों जनकै जाई * तब हिरदय महँ निष्ठा आई
ब्रह्मपुत्र नारदमुनि जेऊ * मनु भगवान केरि सुनिलेऊ
दीक्षाहीन जाइँ हरितीरा * दरशन हेत सदा मुनिधीरा
कछुककालरहिजबफिरिआवैं * जब बैठैं सोठाउँ धोवावैं
एकबार नारद लखि लयऊ * रमानाथते पूछत भयऊ
दो० बोले हरि नारद सुनो तुम गुरु अबै न कीन।
सो विचार एती जगह नित्य पाक करिलीन॥
दीक्षाहीन जहां चलिजावै * सो जागह अशुद्ध ह्वैजावै
गुरुमुख चरण परैं जब आई * तब सोइ धरा शुद्ध ह्वैजाई

कह नारद सुनिये सुरराया ❋ प्रथमैंतुम मोहिंकतनबताया
कहप्रभुतुमअतिशयप्रियमोरे ❋ कह्यो न सुनि होई दुख तोरे
तेहिते प्रभु गुरुकीजे जाई ❋ काहिकरौं अब देहु बताई
जो प्रथमैं मिलिजाय सकारे ❋ ताहि गुरू तुम कीन्ह्यों प्यारे
भोरभये निकसे मुनि जबहीं ❋ धीमर देहधरी हरि तबहीं
मुनि आगे ह्वै निकसे आई ❋ नारद देखिपरे पग धाई
तेहि गुरुकरि हरिके ढिगआये ❋ देखत प्रभु निजहृदयलगाये

दो० कह गुरु कीन्हों कौन पै सुनि बोले हरिराउ ।
गुरु मैं पै जो तुम कही चौरासी कहँ जाउ ॥

सुनिनारद निज गुरुपहँ आये ❋ समाचार सब कहि समुझाये
गुरुदयालु बोले तुम जावो ❋ हरिते चौरासी लिखवावो
लिखिजबहोहिंलोटितबजायो ❋ हाथ जोरियुग वचन सुनायो
सुनि नारद आये प्रभु पाहीं ❋ चौरासी जानत मैं नाहीं
सो लिखिमोहिं देहु समुझाई ❋ ताहि देखि भुगतौं मैं जाई
कहहरि नौलखजलचरजाती ❋ सब योनिन भरमै बहुभांती
दशलख पक्षीको विस्तारा ❋ उड़तरहैं भयको उरधारा
ग्यारहलाख जाति कृमिकीटा ❋ बीसलाखवन विटप जो दीटा
तीसलाख पशुयोनिहि जानो ❋ चारिलाख मानुष्य पिछानो
यह चौरासी योनि कहावै ❋ सब भुगते बिन अन्त न पावै

छं० सुनिगये नारद लोटि तामें देखि प्रभु बोलतभयो ।
केहिंदीनमतयहतुम्हैंकहऋषिआजगुरुमोकोदयो ॥
तेहि कहतपै जिन एकक्षण में मेटि चौरासी दई ।
अस औरनाहिंकृपालु दीनदयालु गुरुसमजगहई ॥

दो० गुरु गोविंदते अधिक हैं यह प्रतीत मनलाइ ।
गोविंद डारैं नरक जो तौ गुरु लेइँ बचाइ ॥

तम गुकार रू तासुहर गुरु सोइ करै प्रकास ।
बरणो धर्मरु शास्त्रको यह मैं वर इतिहास ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतमारीचनारदकथावर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० वन्दिरामासिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखखानि ।
वरणौं धर्मरु शास्त्रको पुनि इतिहास बखानि ॥

कहा सूत गुरुमहिमा गाई * सुनि शौनक बोले हरषाई
नाथ मोहिं निजकिंकर जानो * गुरुप्रभाव कछु और बखानो
कहा सूत गुरु बिन कछु करई * ताको काज एक नहिं सरई
गुरु बिन मुक्तिपन्थ नहिं पावै * गुरु बिन नर चौरासी जावै
गुरु बिन ज्ञानभक्ति नहिं जानै * गुरुबिनआतमनहिंपहिंचानै

दो० बिन गुरुदीक्षा अफल सब जप तप होम क्रियादि ।
ज्यों पाहन में बीज बइ उपजै ना फलबादि ॥

तेहिपर इक इतिहास बखानो * सुन्दर ताहि पुरातन जानो
अवध उत्तरै योजन चारी * रहे नगरयक अतिसुखकारी
तामें कृष्णदत्त द्विज रहई * सुन्दरि नामतासु त्रियअहई
करैदान दिनप्रति अधिकाई * द्वारेअतिथिविमुखनहिंजाई
हीरा हेम पदारथ नाना * देहिं विप्र कहँ वेद विधाना
अशन वसन गजबाजि मिठाई * शय्यादान करै मनलाई

दो० एक दिवस द्विजवर सोई गयोरहे कहुँग्राम ।
नाम सुन्दरी तासु त्रिय रही आपने धाम ॥

तेहिदिन तेहिपुर नारद आये * करवीणा शिर तिलक लगाये
राम चरित गावत हरषाई * तेहि द्वारे ह्वै निकसे जाई
ऋषिहि देखि सुन्दरि उठि धाई * करिबहु विनय भवन लैआई
उच्चासन तापर बैठारे * हेम थार लै चरण पखारे

कछु चरणोदक कीन्हों पाना * कछुछिरक्यो सिगरे अस्थाना
धूप दीप आरती उतारी * बड़ी भाग्य भै आजु हमारी
मुनि आज्ञाले पाक बनाई * कह्योस्वामिचलिभोगलगाई
तब नारदउठि भोजन कीन्हा * अँचैबहुरि आसनपगदीन्हा
सुन्दरि बातकरन तब लागी * लखि नारद बोले अनुरागी
धन्य तुम्हार मातु पितु चीन्हा * जिनकीकोखिजन्मतुमलीन्हा
नरतनु पाय सफल तव भयऊ * जो मन जन सेवा महँ दयऊ
धन्य तुम्हार गुरू सुखदाई * साधुसेव जिन तुम्हैं दृढ़ाई

सो० सुनि बोली द्विज नारि मेरे तौ गुरु हैं नहीं ।
अपनेहृदयविचारि देहुँअशन लखिक्षुधित कहँ ॥

सुनिअसवचन देवऋषितासू * डारे अशन बान्तकरि आसू
लखिसुन्दरि डरिबोले लीन्हा * केहिअपराधवमनप्रभुकीन्हा
कह मुनि होइ वैष्णव जो जन * करै अवैष्णवके गृह भोजन
पावै तहां जलहु बिनजानै * ताको यह प्राश्चित्त बखानै
चान्द्रायण व्रत ठानै सोई * तेहि अघते तब पावन होई
इष्टापूर्त्ति पुण्य सब वाके * किये अमिथ्या निष्फल ताके
तेहिते अधिक पाप तेहि परई * निगुरा छुआ जो भोजन करई
यहिते नष्टकर्म्म नहिं आना * भ्रष्टबुद्धि करिदेत अयाना

दो० ताते सुन्दरि तव छुआ भोजन कीन अजान ।
कियो बान्त यहि कारणे नष्ट भयो मम ज्ञान ॥

सुनि सुन्दरि मनकीन विचारा * कतमैं कीन्ह धर्म्म अधिकारा
कतमैं विविध दान व्रत किह्यऊं * कतमैं तीर्त्थाटन मन दिह्यऊं
कतमैं सुवरण सींग मढ़ाई * दई गऊ विप्रन समुदाई
गुरु बिन धर्म्म करै जो कोई * मैं नहिं जान्यों निष्फल होई
तेहिते मुनि अब दाया कीजे * राममंत्र मोका प्रभु दीजे

अबजनि देर लगावहु स्वामी * देखिप्रीति बोले ऋषिनामी
प्रथमजाइ कीजै अस्नाना * सुन्दरिकहा वचन परमाना
जब हरिशरण जीव यह जाई * यमगण ग्रसैं कुटुम्बिन आई
सुत पितु मातु कहैं असबैना * भक्ति न छाजे हमरे ऐना
कोउकहैअबहिंजगतसुखकीजै * वृद्धभयेपर हरि भजिलीजै
सुनि मतिभ्रम जे रहे चुपाई * लीन्ह्यो काल अचानक खाई
मृतक जानि सुत पुत्री नारी * रोवहिं स्वारथ हेतु पुकारी
तासु शोच कोउ नेक न करई * हरिहि विमुखधौंकसदुखपरई
तेहिते मैं नहिं जाब नहाई * सुनि नरनारि देहिं भरमाई
रामचरण पंकज चितदीना * जिहिते होत पाप सब छीना
सुनतवचनमुनिअतिसुखपावा * तुलसीमाल कंठ पहिरावा

दो० विप्र वैश्य नृप शूद्रवा होइ अपति पति वाम।
हरिव्रत धारै उचित तेहि है तुलसीकी दाम॥
विधि हरिहरकहँ साखिकरि राममन्त्र तब दीन्ह।
वैष्णवधर्म सिखाइके गमन पितापुर कीन्ह॥

तेहिछणमिलै तासुपतिआवा * लखिसक्रोधअसवचनसुनावा
केहिके कहे लीन्ह तैं माला * जानिपरा पहुँचा तवकाला
अबते तोरु चहसि जो प्राणा * नाहिंत कटिहौं शीश कृपाणा
सुनि सुन्दरि बोली करजोरी * सुनहु प्राणपति टेक जो मोरी
चहु तनु टूकटूक करिडारो * भावै अनलमाहिं धरिजारो
धरती खोदि तोपि बरुदेहू * तजौं न रामहिं प्रण मम येहू
जिन प्रथमैं करिपाछे छांड़ा * तिन्हैं जानिये स्वांगी भांड़ा

दो० असअबलाके वचनसुनि गुनिद्विज रह्यो चुपाय।
काढ़ि देउँ तो जग हँसै मारे हत्या आय॥

तेहिदिनते असनेम सो धरई * पतिकाछुआ न भोजन करई

सहित प्रीतिते अशन बनावै ❋ परसि दूरिते ताहि पवावै
यहिविधि दिनप्रतिपावैखाना ❋ देखि विप्र मन भई गिलाना
जो हमारि जूठनि नितखाई ❋ सो अब दूरिते देत बहाई
अबकी ऋषि आवैं ममधामा ❋ मोहूँ गुरुकरि सुमिरौं रामा
यहिविधिद्विजमनकरतविचारा ❋ कृपा कीन्ह नारद पगुधारा
गुरुहि देखि सुंदरि हरषानी ❋ शीशनाय बोली मृदुबानी
सफल जन्मभा आजु हमारा ❋ जो निकेत रौरे पगुधारा
सुन्दर आसनपर बैठावा ❋ चरण धोइ चरणोदक पावा
बहुरि पांच पैकरमा कीन्हा ❋ द्रव्य भेंट लै आगे दीन्हा

दो० गुरू वैद्य अरु ज्योतिषी देवमित्र बड़राज।
इन्हैं भेंट बिन जो मिलै होइ न पूरण काज॥

आज्ञा मांगि कीन्ह जिवनारा ❋ षटरस व्यंजन विविधप्रकारा
सुवरण थारपरसि धरि दीन्हा ❋ हरि हिअर्पिमुनिभोजनकीन्हा
अचमनकरिआसनजबआये ❋ द्विज सुन्दरिते वचन सुनाये
गुरु दिक्षा मोहिं देहु देवाई ❋ जाते तव संगति होइ जाई
सुन्दरि आयकही गुरुपासा ❋ इनहुनका कीजे हरिदासा
विप्रहु तब बोला करजोरी ❋ पुरवहु प्रभु अभिलाषा मोरी
दिक्षा लिहे सरी मम काजू ❋ ताते विनय कीन्ह मैं आजू
कह नारद द्विज आउ नहाई ❋ तब तुमका हरिनाम सुनाई
सुनि मुनि वचन विप्रहरषाना ❋ पुरतट सरितहँ चल्योनहाना
मगयक पण्डितते भै भेंटा ❋ ठाढ़कीन्ह तेहिं गहिकर फेंटा
पूछा कृष्णदत्त तुम आजू ❋ हरबर चलत कौन बड़काजू
कृष्णदत्त पण्डित ते भाषा ❋ गुरुदीक्षा की है अभिलाषा

दो० तब पण्डित बोले वचन कृष्णदत्त सुनिलेहु।
यह मृत्युपक्ष कुवारहै गुरु दिक्षा जनिलेहु॥

यामें पिण्डदान भलकीन्हा * दीक्षा मंत्र न चाहिय लीन्हा
कार्तिक शुक्लपक्ष शुभमासा * तबतुम होयहु हरिके दासा
सुनतवचनाद्विजमनभ्रमछावा * तुरतपलटि नारदपहँ आवा
कहप्रभु क्वार जान अब दीजे * कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा कीजे
यह सुनि नारदगे विधिपासा * विप्ररहे कार्तिककी आसा
ताकी अवधि न पहुँचन पाई * बीचन दुहुनकाललियोखाई

दो० पलपहार की खबरि नहिं धौं यामें का होय।
आगे की आशा करत काल हँसै मुखमोय॥
अस बिचारि जे चतुरनर करत न लावैं बार।
नहिं जानी केहि घरी में काल करै संहार॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृत कृष्णदत्तकथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

कह शौनकमुनि कहौं बखानी * तनुतजि कहांगये द्वौ प्रानी
कहा सूत सुन्दरि द्विजनारी * चढ़िविमान हरिलोक पधारी
विप्र गयो यमके दरबारा * पाप पुण्यका भयो विचारा
यम ते चित्रगोपित्र बखाना * इन बहुकीन्ह पुण्य अरुदाना
जबते जाय देह इन धारी * उभय पाप कीन्हे अतिभारी
कह यम कौन पाप सो कहिये * तेहिअनुसार दंड यहि चहिये
एकबार इन यज्ञ जो कीन्हा * सब विप्रनकहँ न्योता दीन्हा
तहां एक हरिजन चलिआवा * कृष्णदत्त ते वचन सुनावा
हमहैं क्षुधावन्त द्विजराई * कछु भोजन मोहिं देहु मँगाई
अससुनिविप्रक्रोधकियोभारी * अनुचितवचनकहेउदुइचारी
सुनि कटुवचन गयोउठि साधू * तेहिते यहिपर भा अपराधू
हरिजन जासु यज्ञमहँ आवैं * मिलैनअशनक्षुधितफिरिजावैं
ताकी पुण्य सकल घटिजाई * बहुरि पाप होवै अधिकाई

दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा ❋ तेहिलखिइनअतिडाटैलीन्हा
ताते पुण्य छिन्न भे याकी ❋ थोरी एक रही है बाकी

सो० सुनि बोले यमयाहि राजदेहु गजदेह अब ।
निजफल भोगीजाहि आप कहूं नृपके भवन ॥

असकहिधर्मविपिनजनभावा ❋ कृष्णदत्त गजका तनु पावा
कछुकदिवस वनमाहिंबितायो ❋ पुनि नृप चन्द्रसेन गृह आयो
चन्द्रसेन कुरुक्षेत्र के राजा ❋ जिनके सदा धर्म्मकर साजा
यह सब चरितदेखि द्विजनारी ❋ मनमा शोचकरै अतिभारी
ममपति सो वारण तनु पावा ❋ मोहविवश मन खेद बढ़ावा
वर लै पुनि मृतलोकहि ऐली ❋ जहँ आशा तहँ बासा पैली
जाके घर गज ता नृप केरी ❋ भई सुता अतिरूप घनेरी

दो० दान दिहिसि अरु किहिसि गुरु भे कन्या नृपकेरि ।
राजाको करि द्विजभयो दूनों जात सुमेरि ॥

कन्या जब कछु भई सयानी ❋ गईद्विरदपहँ निजपति जानी
इन देखा यह है मम नारी ❋ भई महीपति केरि कुमारी
अस विचारि दोउ प्रीतिबढ़ाई ❋ दिनदिनहोत जातअधिकाई
एक दिवस नृप हृदय विचारी ❋ ब्याह योग्य भइ सुता हमारी
विप्र बोलि शुभघरी शोधाई ❋ यत्न स्वयंवर केरि बनाई
सुनिसिन्धूर निराशन त्याग्यो ❋ करिविचारमन शोचनलाग्यो
लखि राजा वर वैद्य बोलावा ❋ तबहुँ न कुम्भी दाना खावा
यहिविधि बीति बारबहु गयऊ ❋ तबतो नृपके अतिदुख भयऊ
कह कन्या पितुते अस जाई ❋ गजहि अशन मैं देहुँ कराई
बोले भूप जाहु किन अबहीं ❋ मरिजाई तब जैहौ कबहीं
पिता वचन सुनि गे पतिपासा ❋ बोली तुम कत रहत उदासा
बहुदिनते भोजन नहिं खायो ❋ सो कारण मोहिं नाहिं बतायो

दो० कहगयन्द चाहत करन नृपति तुम्हार विवाह।
सो विचार अब होत है हृदय हमारे दाह॥

जबते यहां जन्म तव भयऊ * कबहुँनसंगबिछुरि ममगयऊ
असविचारि दुखहोतहै मोहीं * ब्याही आन पुरुष अब तोहीं
ताते मैं नहिं दाना खाहूँ * बारहिंबार मनहिं पछिताहूँ
सुनि कन्या बोली मृदुबानी * शोच किहे दुखहै अरु हानी
हम जो कहा नरतनु के माहीं * भजहु राम फिर अवसर नाहीं
तब कार्त्तिककी आश लगायो * अब वारणकी देही पायो

दो० तबकार्त्तिककी आशकरि बिसस्यो सिरजनहार।
अब चौरासी योनि में आय पस्यो भर्त्तार॥
ताते पुनि मैं कहतहौं दुखतजि भोजन खाहु।
तुम्हैं छांड़ि हौं ना करब आनपुरुषसँग ब्याहु॥

सो० सुनिगज भोजनकीन लखि नृपबोल्यो कुँवरिते।
कौन मन्त्र तुमदीन जो सुनि खायो तुरतही॥

ष० कहकन्या वोहि जन्मकेर गज अहै मोरपति।
मैंहौं याकी नारि विप्रघर जन्म रहै सति॥
हौं गुरुकरि हरिभज्यों भइउँ तेहि सुताआइतव।
इनदीन्हों बहुदान भक्ति बिन वारण वपुभव॥
सज्योस्वयंवरसाजसुनिकरिभोजनतजदीनतेहि।
वचनदीनमैंजाइजब तबफिरभोजनकीन्हयहि॥

सुनि अस वचन भूप हरषाना * कन्या वचन सांच नहिंमाना
लागे करन स्वयंवर साजा * आये देश देश के राजा
रानी तब कन्यहि अन्हवावा * कीन्ह्यों तनु शृंगार सोहावा
सहित सनेह गोद बैठाई * बोली मधुर वचन सुखदाई
रंगभूमि आये बहु भूपा * देश देश के सुभग स्वरूपा

जो तव मनभावै महिपाला ❋ मेल्यो तासु गरे जयमाला
असकहि हार दीन्ह तेहिहाथा ❋ पठई एक सहेली साथा
भूप न दिशि नहिं दृष्टि उठाई ❋ चली कुँवरि कुंजर पहँ आई
पद्मी उर मेल्यो जयमाला ❋ चकितभयेसब देखि भुवाला
सबहिन कही वयस लघुजानी ❋ चौंधिगई कन्या फिर ठानी
सखी सदन लाई जहँ रानी ❋ मातुताहि लखिबहुतरिसानी
दई सबै मतिहरी तुम्हारी ❋ नृपतजिमाल व्यालउरडारी
दीनचहै विधि दुख जब जेही ❋ ताकी मति पहिले हरिलेही
असकहिपुनिदीन्ह्योंकरमालहि ❋ अबते पहिरावहु नरपालहि
गईकुँवरि पुनि करि उरडारी ❋ देखि भूप सब चले सिधारी
तब राजा अतिशय दुखपावा ❋ असिलै कन्यै मारन धावा
श्रुतिधारी जे विप्र प्रवीना ❋ छोरि कृपाण नृपतिते लीना
अल्पवयस यह अहै कुमारी ❋ है अज्ञान न चाहिय मारी

सो० गौहरहँटद्विज चौर सुतानारि व्यभिचारिणी।
यती भ्रष्टजन और तदपि न इनको मारिये ॥

ष० दश गौमारे पापसदृश यक द्विज संहारे।
दश द्विज वधे जो पाप एक स्त्री के मारे ॥
दश स्त्री वध पाप एक कन्या वध होई।
दश कन्या वध पाप यती यक मारे सोई ॥

दो० दश दण्डी मारे परै जो पातक शिरआय।
तेहिसमयकहरिजनवधेकहतनिगमअसगाय॥
ताते हरिजन लीजिये कीजे एक उपाय।
बर खोजाय टीकाकरो बहुरि देहु भौंराय ॥

सुनि नृपनाऊ विप्र बोलावा ❋ वरढूँढ़न हित तुरत पठावा
पुर अरु ग्राम अनेकन देशा ❋ देखे जहँ तहँ सकल नरेशा

गुंग पंगु अन्धाधर काना * सिर्री बर्री कोढ़ी जाना
अस बरु मिलै जहां चलि जाहीं * कन्यासरिस मिलै कहुँ नाहीं
तब द्विज नाऊ दोउ फिरि आये * राजाते सब वरणि सुनाये
सुनि नृप कर्मविपाक मँगाई * विप्रनते ताको बँचवाई
कह द्विज कन्या कहा जो रहई * महाराज सो सांची अहई
जहां तहां फैली यह बाता * हाथी राजा कर जामाता
सुनि अपकीरति नृपदुखपावा * अग्निकुण्ड तुरते खनवावा

दो० गोमल घृत भरिदीन नृप जरैलाग तेहिमांह ।
तेहिक्षण आये देवऋषि खैंचिलीन गहिबांह ॥

कह नारद क्यों जरै भुवाला * सो सब वरणै मोसे हाला
बोल्यो नृप गज अशन न कीन्हा * कन्या ताहि खवावै लीन्हा
मैं पूछा कस दिहे खवाई * कन्या कहा मोर पति आई
तासु गिरा हम सत्य न जानी * यत्न स्वयंवरकी सब ठानी
कन्या हारु गजहि पहिरावा * तेहिपाछे मैं वर खोजवावा
जसि कन्या वर मिला न तैसा * मिला सो आँधर पंगु अनैसा
तब मैं कर्मविपाक बँचाई * कन्या कहा सो सांची पाई
ताहूपर जे पुरुष अनारी * पग पग निन्दा करैं हमारी
सो अपकीरति सुनी न जाई * ताते जरिमरिहौं ऋषिराई

दो० कह नारद जनि जरहु अब है कछु एक उपाय ।
रामनाम गजसुने तो अबहीं नर होइ जाय ॥

सुनि मुनि वचन भूप सुखपावा * बार बार चरणन शिरनावा
महाराज अब देर न कीजै * वेगि गजहि गुरुदीक्षा दीजै
जेहि अपकीरति मिटै हमारी * वरीजाय तेहि साथ कुमारी
सुनि नारद हरिमन्त्र सुनावा * गज पातक सब दूरि बहावा
मुखते भा बालक यक आई * तेहिशोभा कछु वरणि न जाई

वयस किशोर गौरतनु जासू ❋ दृगविशालशशिसममुखहासू
बाल विलोकि भूप अरु नारी ❋ इकटक रहे निमेष निहारी
देखि सखी सब कुँवरि सराहैं ❋ धन्यभाग्य बड़ तुम्हरे आहैं
प्रथमैं तनुदुख सह्यो अपारा ❋ ताते पायो सुभग कुमारा
हमैं न विधि अस दीन्ह्यो नाहा ❋ सखी सराहि कहैं मनमाहा
तब कुमार शिशु वन्दन कीन्हा ❋ शीशनाइ चरणन धरि लीन्हा
जयजयजय ऋषिराज तुम्हारी ❋ मोहिंपापीकी बिपति निवारी
गजतनु लहिमैं अतिदुखपावा ❋ ता दुखते तुम आजु बचावा

दो० जान्यों मैं तव कृपाते अब सतसंग प्रभाव।
दानौजात न बादिहित करत जहां चलिजाव॥

तब मुनिवर वरशिक्षादीन्हा ❋ सुनितेहिसहितहियेधरिलीन्हा
नृपनारी कन्या सोइ जानो ❋ भे नारदके शिष्य बखानो
तेहिपाछे पण्डित बोलवावा ❋ ब्याहहेत शुभ दिवस शोधावा
पत्राखोलि विप्र अस बोला ❋ आजु लग्न नृप अहै अमोला
सुनि नरेश मन भै परतीती ❋ कीन्ह ब्याह गन्धर्व कि रीती
बहुविधि दायज दीन्ह भुवाला ❋ बड़ आनन्द भयो तेहिकाला

छं० नृप कीन्ह सुता विवाह अति उत्साह नहिं वरणत बनै।
दियोदानबहुमहिसुरनकहँ गजवाजिपदरथकोगनै॥
दिनदिनअधिकअधिकातसुखसुरपुरसरिसबहुभांतिहो।
गुरु शरणके परताप ते हरि सकल संशय जातिहो॥

दो० गुरुसमान तिहुंलोक में और न दूसर देव।
ताते शौनक कीजिये गुरुचरणन की सेव॥
दीप उड़प मणि चन्द्र रवि पंचप्रकृति गुरुजानि।
वैष्णव दीक्षा सर्वपर मुनिवर कहत बखानि॥
वैष्णव धर्म्मते परे जो धर्म्म निरूपै कोय।

सो सहस्र जयमानते सुजन न बाढ़ै सोय ॥

कुं० अन्य सुराश्रय होइ तो राममन्त्र फिर देय ।
राममन्त्र युत जौन तेहि अपर न देय न लेय ॥
अपर न देय न लेय सोई पथ पाय बतावै ।
सतगुरु मानहि ताहि ज्ञान जो जाते पावै ॥
कहतदास रघुनाथ ये गुरु शिष्य दोउ धन्य ।
परै नरक महँ जाय जो धर्म सिखावै अन्य ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतगुरुमाहात्म्यकृष्णदत्तकथावर्णनोनामपंचमोऽध्यायः५ ॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्तगुरु गणपगिरासुखखानि ।
वरणौं नामप्रभाव बहु ग्रंथनकर मत आनि ॥

पुनि शौनक बोले करजोरी ❋ ऋषि सुमंतुपद प्रीति न थोरी
नाथ मोहिं निज सेवकजानी ❋ नाम महातम कहौ बखानी
सुनि मुनि वचन सूत हर्षाने ❋ बोले विमल वचन सुखसाने
सुनौ कहौं मैं नाम प्रभावा ❋ जो गिरिजाप्रति शंकर गावा
एकबार शिवसहित भवानी ❋ बैठे निज आश्रम सुखदानी
पतिहि प्रसन्नदेखि अधिकाई ❋ बोलीं शिवा सनेह बढ़ाई

दो० मुहुर मुहुर तुम कहतहौ रामनाम सुखदानि ।
तासु अर्थ करिकृपा प्रभु मोसेकहौ बखानि ॥
धन्य प्रिया तुम जगत में कह्यो ईश हर्षाइ ।
राम नाम के अर्थही जो पूंछेउ मनलाइ ॥
चारि वेद अरु षटसहस सब पुराण मुनिदेव ।
नाम प्रभावसो उग्रअति ते नहिं जानत भेव ॥
राम नामको अर्थ जो सो सब जान्यो राम ।
तासु अनुग्रहसे कछुक मैं पायों सुखधाम ॥

निजमतिसरिससुनहुमनलाई ❋ नाम अर्थ मैं कहौं बुझाई
कोटि कामसम जाततनु शोभा ❋ असको जोनदेखि तेहिलोभा
जनक नगर जे नर अरु नारी ❋ रमे देखि तनु सुरति बिसारी
सप्तद्वीपके नृप जो आये ❋ सहित विदेहसोदेखिलोभाये
परशुराम बिन कारण कोही ❋ राम रूप देखत गे मोही
वन विहरत खग मृग नरनारी ❋ कोल किरात पात द्रुमडारी
रमे सकल मिलि सेवाठानी ❋ रमक्रीड़ा तेहि कहत भवानी
घोरि निशाचरिलखिछविरामा ❋ पुनिइच्छाकीन्हेसिवशकामा
चौदहसहस असुर खरदूषण ❋ मोहे देखि राम बिन भूषण

दो० दण्डकवन मुनि सर्व जे ज्ञान योगतप धाम ।
राम रूप छवि देखिकै भे पूरुष ते वाम ॥

रमेहु बालि देखत रघुराया ❋ अजरामर नहिं लीन्ही काया
रावण समर निशाचर जेते ❋ देखि राम छवि मोहे तेते
अवध नगर नरनारि चराचर ❋ रम्यो रामतनु देखि दिवाकर
रमक्रीड़ा ताते तुम जानौ ❋ अबसोसुनोजो और बखानौ
जलतरंग जिमिरविअरुघामा ❋ कनक एक भूषण बहुनामा
गिराअर्थजिमिअग्निउष्णता ❋ कहतभिन्ननहिंभिन्नसोअनता
तैसे नाम रूप है भावा ❋ यदपिनामकरअधिकप्रभावा

दो० रूप मिलतनहिं नाम बिन नामरूप बिनबादि ।
ताते दोऊ नित्य हैं अमल अनूप अनादि ॥
राम वदन रा जानिये आ तेहि उर पहिंचानि ।
मामकार दोउ चरण भे रेफ तेज चेतानि ॥

सो० कोटि भानु ते भूरि है प्रकाश यामें विमल ।
रह्यो चराचर पूरि परब्रह्म ताको कहत ॥
कोटि विष्णु अजईश कोटि शारदा शेषशशि ।

सुरपति कोटि फणीश सम प्रभाव जामें विशद ॥
तीरथ कोटि अनन्त नाम अधिक पावनकरन।
हरणपाप श्रुतिसन्त कहततदपि उपमानहीं ॥

कहँ रवि कहँ खद्योत प्रकाशा * समकिलहैं मुख फूंक बताशा
उपमा नाम कि नाम न आना * गुह्य भेद सुनु करहुं बखाना
राम नाम अंशांश ते जानौ * तीनिसिद्धि भे प्रकट बखानौ
सोहं बीज और ॐकारा * अर्द्ध अर्द्ध ते करब विचारा
अर्द्धाकार तेऊ पहिंचानो * रेफसो अन्तरभूत पिछानो
हलमकार ऊपर अनुस्वारा * ताते सिद्धि भई ॐकारा
यहिविधि सोहं बीज भवानी * नामते प्रकट मुक्तिकी दानी

दो० रामनाम ते प्रकट भई षट वस्तुई जे और।
तिनके नाम बखानहूं सुनु मनकरि इकठौर ॥
परब्रह्म अरुजीव जो महानाद स्वरचारि।
पंचमविंदु षष्ठरुअवर माया दिव्य निहारि ॥

परब्रह्म सो रेफ ते भयऊ * जीव रकार आदिते कह्यऊ
मध्याकार नादसो कहिये * रा दीरघ ते स्वरको लहिये
हल मकारते भा अनुस्वारा * अनुस्वारते प्रणव विचारा
प्रणवतेभये तीनिगुण जानौ * सतरजतामसआदि बखानौ
त्रैगुण ते त्रैदेव उपाये * ब्रह्मा विष्णु महेश कहाये
तिनते भयो सकल संसारा * रमक्रीड़ा तेहि करत उचारा

दो० नारायण को रूपकरि जो है प्रथम रकार।
महाविष्णु आकारते महा शम्भु माकार ॥
राम नाम के भीतरै ब्रह्म जीव त्रैलोक।
ज्योंक्षिति बीज नक्षत्रनभ नग्रमाहिं गृहथोक ॥
रामनाम के ध्यानमें सृष्टि ध्यान होइ जान।

जिमि सींचे यक मूलके डारपात हरियात ॥
रामनाम को छांड़िकै करत जो अपर उपाइ।
मुखतजि भोजनभजै जिमिसपनेहुँ क्षुधा न जाइ ॥

रमक्रीड़ा याते बुध कहई * अपर हेतु सुनिये जो अहई
परम याग शुभरेफ कहावै * परम विराग रकार बतावै
सो पावकके बीजहि लहिये * बड़वानलआदिक जोकहिये
अस विचारि जो नाम उचारैं * कर्म शुभाशुभ सो सब जारैं
परम ज्ञान विज्ञान जो कहई * ताको मूल अकार सो अहई
सो सूरजका बीज यही है * सुमिरत करतप्रकाश सही है
भक्ति स्वरूप मकार सुहावनि * चन्द्र बीज त्रैताप नशावनि
तीनकाण्डरवि शशिसबजाते * रमक्रीड़ा कवि वरणत ताते
सत रकार चित जानु अकारा * आनँदरूप मकार विचारा
सत कहिये जो विनशै नाहीं * चित चैतन्य सकलघटमाहीं
आनँद जो नितअहै अनन्दा * ताते नाम सच्चिदानन्दा

दो० तत्पद ब्रह्म सो रेफकहि त्वम्पद जीवअकार।
हलमकार मायाअसी तत्त्वमसी श्रुतिसार ॥
हलमकार क्षर माया अक्षर ब्रह्म अकार।
रेफ निरक्षर ब्रह्मकहि सब व्यापक निरकार ॥
हलमा इच्छा प्रकृतिते सकल शक्ति संजाय।
रमकीड़ातेहि कहतअब मुख्यनामकहौं गाय ॥

छं० विष्णु नरायण कृष्ण जो वासुदेव हरिब्रह्म।
परमेश्वर परमातमा विश्वम्भर निष्कर्म ॥
विश्वम्भरं निष्कर्म कलानिधि कलुष हनन्ता।
केशव कमलाकन्त विश्ववपु भव भगवन्ता ॥
औरो नाम अनेक जो रटै त्यागि मुख शिष्णु।

सुखद सकल पावन महापहुँचावत पुर विष्णु ॥
सब नामन में रामनाम परकाशक जियजानु ।
जिमि नक्षत्रमहँ चंद्रमा अरु ग्रहगण में भानु ॥
अरु ग्रहगण में भानु कविन में यथा अनन्ता ।
निर्जर में जिमिशक्र भक्तमें जिमिहनुमन्ता ॥
लोकन में गोलोक सरित में सरयू धारा ।
नरनमाहिं जिमि भूप धनुषधारिन में मारा ॥
भगवन्तन में राम यथा शक्तिन में सीता ।
अद्रिन में जिमि मेरु पुण्य पाठन में गीता ॥
कामधेनु गोमाहिं अहिंसा धर्मनमा जिमि ।
वृक्षन में सुरवृक्ष खगन में वैनतेय तिमि ॥
क्षमनमाहिंजिमिक्षमासरनमें जिमिसरस्वाना ।
कर्मन में हरिकर्म ज्ञान में ब्रह्मज्ञाना ॥
पुरिनमाहिं जिमि अवध मंत्रमें जिमिॐकारा ।
रुद्रन में मैं यथा स्वरन में जिमि आकारा ॥
पुष्कर तीरथ माहिं मणिन में कौस्तुभ जैसे ।
सब नामन में राम नाम तुम जानौ तैसे ॥
सुनिबोलीगिरिजाबहुरि वरणौतिनकेअर्थअब ।
कह शिवसोऊसुनु प्रियावरणौं नामसँक्षेपसब ॥

नर जीवन की संज्ञा मानौ ✽ नरसब जाके आश्रित जानौ
ताते नाम नरायण कहिये ✽ नरहियअयनजासुकोलहिये
हरि दुख हरत भक्तके पापा ✽ ताते हरि असनाम सुथापा
वासुदेव सबमा बस जोई ✽ सब जहँ बसै वासुदेव सोई
केशव सो जेहि तेहुसुर सेवैं ✽ कला अंश अवतार जो लेवैं
पोषत भरत सकल संसारा ✽ तासु विश्वम्भर नाम उचारा

पूरणजिमिसबजगतअकाशा ❋ सर्व भिन्न निरगुण परकाशा
ताते ब्रह्म कहावत सोई ❋ अनतअनन्त रूपजेहि होई

दो० कृषि भूवाचक शब्द जो ताहि कहतहैं कृष्ण।
सबमेंव्यापकरहतानित विषणव्यापसोविष्ण॥
सर्वैश्वर्य सुधर्म यश श्रीविराग विज्ञान।
षटभग जामें होइँ ये तेहि कहिये भगवान॥
राम नाम ते होत जो सो काहूते नाहिं।
यहनिश्चयकरि देखियो सकलपुराणनमाहिं॥
रामनाम निर्वर्ण है सब वर्णन को ईश।
मुकुट छत्रकै जानिये रेफ बिन्दु सब शीश॥
रामनाममय सर्व है नाम प्रकृति अरुवर्ण।
रमक्रीड़ा ताते कहत सुनहु अपर परिकर्ण॥
कोटि तीर्थ व्रतदान तप कोटि योग जप ध्यान।
कोटि ज्ञान विज्ञान मख तुलै न नाम समान॥
सप्त कोटि जो मन्त्रहै चित भरमावन काज।
रामनाम परमंत्र है सकल मंत्रको राज॥

रामनाम जे जपैं सदाहीं ❋ भुक्ति मुक्ति तेहि संशय नाहीं
मूर्द्ध गगन तहँ वसत रकारा ❋ त्रिकुटीवास अकार विचारा
जिह्वावास मकारहि जोई ❋ निजनिजथल उच्चार सो होई
योगी अर्त्त रकारहि ध्यावै ❋ अरु अकार ज्ञानिन मनभावै
पूरण नाम जपै हरिदासा ❋ भुक्ति मुक्तिकी छांड़ै आसा
जैसे मंत्र प्रयोग कहावै ❋ तैस तैस साधे फल पावै
ते सब सिद्ध क्षिप्र होइ जाई ❋ रामनाम सुमिरै मनलाई
जपै कौन विधि युक्ति बताओ ❋ निजजनजानिननाथदुराओ
कह शिवसुनौप्रियाकरिप्रीती ❋ नाम जपन की वरणों रीती

सतगुरु ते जब पावै नामैं * तजि विश्वास रटै तजिकामैं

छं० तजिकामक्रोध विमत्सरालस लोभ मोहनिवारिकै।
छलमलकुसंगतित्यागिमदद्‌दुरवासनासनमानिकै॥
शुचिअंग गोमन जीतिनासा निरत नितनामैं रटै।
ह्वै जाय सो नर रामहीको रूप भवबंधन कटै॥

प्रीति अप्रीति रीति बिन जाने * कहतनाम सुख लहत सयाने
अमियगरलगदजलमलआगी * पारससमगुएकहतविरागी
अन्तर नाम जपत जो कोई * मुक्ति होत परि भक्त न सोई
राम रूप दरशन नहिं पावैं * ताते जन रसना मनलावैं
रसना नाम रटत जो कोई * पराभक्त हरि दर्शन होई
रसना नामरटउ जिन जानो * तिन सबहिनके नामबखानो

दो० लोमश नारद व्यासशुक भृगु अगस्त्य प्रहलाद।
गणिका यमन गयंद द्विज नामक जान्यो स्वाद॥

काकभुशुण्डि नाम गतिजोई * कल्पांतौ जेहि नाश न होई
बाल्मीकि ध्रुव सुमिरेउ नामा * पावन भयो लह्यो विश्रामा
नाम प्रसाद शेषमहि लीन्हें * भुवन चारि दशरजसमकीन्हें
नामहिंबल मैं विषकियोपाना * वेद पुराण विदित जगजाना
सनकादिकगणपतिहरिजाता * जीवनमुक्ति पूज्य सुखदाता
औरौ अमित भये हरिदासा * नाम सुमिरिगे प्रभुके पासा

सो० योगी ज्ञानी भक्त जे सुकर्म करता सकल।
राम नाम अनुरक्त रमक्रीड़ा ताके कहत॥

सतयुगसत्य न झूठ बखानी * करि हरिध्यान तरैं भवप्रानी
त्रेता तपमख संयम करहीं * सुरबलिदेइ जीव जगतरहीं
द्वापर व्रत पूजा आचारा * करिकरि जीव होइ भवपारा
कलिनहिं तपव्रतसंयमयोगा * साधन कठिन देह जसरोगा

ताते निगम सुगम मगगावा ❋ कलिभवसिंधु नाम दृढ़नावा
नाम प्रताप सकल युगजानू ❋ कलिविशेषजिमिग्रीषमभानू
अस विचारिते नरवरज्ञानी ❋ जपहिंनामऋतुअनऋतुमानी
अन्नअशनतजिवनफलखाना ❋ गज रथ वाजि देइ गोदाना

छं० गोदेइकोटिन दानगिरि चढ़ि झांपलेत न जारहीं।
सबकरहिं तीरथ अटनज्ञान पुराण वेद विचारहीं॥
मखकोटि सुर तेंतीस राधै योग अटङ्गिहि करै।
यक रामनाम जहाज बिन संसार सागर नातरै॥

दो० स्त्रवैअनलशशिव्योमफल तम रविदेइ मिटाय।
बिन हरि भजन न भवतरै करै जोकोटि उपाय॥
गरुड़ै खाइ भुजंगवर घृत निकसै जलनीक।
भजन विना सुखना लहै यह पाथरकी लीक॥
अस विचारि रघुनाथ भजु रामनाम मन ओर।
जब होई तब होइ है येही ते भल तोर॥
सोइ ज्ञानी ध्यानी गुणी दाता शूर सुजान।
अतिपवित्र रघुनाथ सो जो सुमिरै भगवान॥
रामनामका अर्थ कछु कह्यो बुद्धि अनुसार।
नाम प्रभाव अपार अति को असपावै पार॥
शठ अशिष्य विष पाठकी तिन्हैं न यहमतदेइ।
राम उपासक ते कही जो सुनि उरधरिलेइ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतनाममाहात्म्यवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

दो० सुमिरिराम सियसंतगुरु गणपगिरासुखखानि।
कूरमकोलपुराणकी कहौं इतिहास बखानि॥
कह शौनक हरिनामकहि पतित तरे जग कौन।

यह अभिलाषा सुननकी कहौ नाथ तुम तौन॥
बदेउ सूत हरिनाम कहि तरिगे पतित अनेक।
पार न पावैं जो गनैं सहस शारदा शेष॥
जो कछु मम जाने सुने गुणे पुराणन माहिं।
सो तव हित वरणन करौं जो पूछेउ मोहिंपाहिं॥

बालमीकिगणिका गजजानौ * यमनकेर इतिहास बखानौ
कीरतिमुख इक मुनिवर रहई * विपिनमध्यतनयोग न चहई
इकदिन स्वपने शुक्र विनासा * बांबी धरि ऋषि चले उदासा
तेहिते बालमीकि मुनिभयऊ * ठगनिकेरि संगतिहोइगयऊ
तिनकेसाथ विपिन नित जाई * मारि जीव धन लेइ छिनाई
सब विधिसों जबभयोसयाना * तब वनलागअकेलेहि जाना
ब्राह्मण वैश्य शूद्र जेहि पावै * प्रथममारि तेहि वस्तुछिनावै
जो कोइ आपुइते धन देई * बिन वधकिहे कबहुँ नहिंलेई

दो० एक दिवस बड़ि देरभइ मिला न कोऊ ताहि।
तेहिमगनिकसेसप्तऋषि कहतनाम जोआहि॥
कश्यप अत्रै जमदगिनि विश्वामित्र वशिष्ठ।
भरद्वाज गौतम कहे नाम सप्तऋषि शिष्ठ॥

इन्हें देखि धावा हरषाई * बोला वचन मुनिनते जाई
पोथी पत्रा देहु उतारी * नाहिंत सबन डारिहौं मारी
जानि दुष्ट बोले मुनि ज्ञानी * सुनुठग हम पूंछत इकबानी
जो तुम पाप करत अतिभारी * तिनमाकोइऔरौ सझियारी
यह घर जाइ पूंछिये बाता * आइ हमैं फिरि कीजै घाता
कही विहँसि मैं बूझन जावों * तुमभजिजाउ कहां पुनिपावों
तब मुनि सौंह रामकी खाई * सुनि आवा घर देर न लाई
तात मात सुत वनिता भाई * पूंछेसि सबका निकट बोलाई

मैं जो लूटि मारि धनलावों * खातसकलमिलिभोगभोगावों
जीव वधेकर पाप जो होई * तेहिमा सझियारी है कोई
सबहिन कहा पाप जो आहीं * ताके हम साथी हैं नाहीं

दो० असमुनि सो डरपत भयो गयो सप्तऋषिपास।
हाथजोरि चरणनपर्यो कर्यो वचन परकास॥

महाराज हौं शरण तुम्हारी * पतितजानिमोहिं लेहु उबारी
सुत पितु मातु बन्धुत्रियनाती * हैं सब स्वारथ केर सँघाती
संकट परे काम नहिं आवैं * सबके सब जहँ तहँ भजिजावैं
अब लग मैं सबका निजुजानी * करत रह्यों पातक सुखमानी
सोअघसमुझिलगतडरभारी * पाहिपाहि मैं शरण तुम्हारी
दीन जानि बोले सुखदाई * मरामरा कहि सुमिरेहु जाई
सुनिमुनिवचनहृदयधरिलीन्हा * मरामरासोइसुमिरणकीन्हा
तिसरे शब्द राम होइगयऊ * बालमीकिकर कारज भयऊ
जाप करत भे पातक नाशा * निर्मल हृदय भयो परकाशा

दो० तब भविष्य सियरामयश कह्यो कोटि शतगाइ।
शौनकनाम प्रभाव अस मराकहे गति पाइ॥

और सुनो गणिका इक रहई * ताके पाप पार को लहई
अन्तसमय लीन्हो यम घेरी * लगे देन तेहि त्रास घनेरी
तेहीसमय यक हरिजन आयो * देखि नायिका विनय सुनायो
तुमहो दीनबन्धु सुखदाई * मोहिं संकटते लेहु छुड़ाई
सुनि साधूमन विस्मय कीन्हा * मंत्र याहिनहिं चाहिय दीन्हा
जो याकर कल्याण न होई * तौ प्रण जाइ हमारो खोई
विना नाम भल होत न जानौं * याहि कौनविधि नामबखानौं

दो० अस विचारि साधूकह्यो जग जो हिन्दूलोग।
कीर पढ़ावत कहो सोइ तब तव नाशै शोग॥

सुनिगणिकाकहरामसोआही * अस कहते तन छूटा ताही
सुनतहि हरिगण आये धाई * यमफांसीते लेत छुड़ाई
हितते सुभग विमानचढ़ावा * रामधाम तहँ जाइ बसावा
अस है रामनाम सुखदाई * अधमजातिगणिकैगतिपाई
सुनहु एकगज अतिबलवाना * करनगयो सागर जलपाना
ग्राहगह्यो ताकर पग धाई * लैगा जलगहिरे घसिलाई
फिरिगजखैंचि किनारे लावा * यहिविधिसोबहुकालबितावा
गजके तातभ्रात सुतभामा * कछुदिन भोजन दीन्होंतामा
पाछेसबनत्यागि तेहि दीन्हा * क्षुधाक्षीण भा बलते हीना
कोउ सहायक जबनहिं देखा * जान्योगा अब प्राण विशेखा
तबतेहिअर्द्ध नाम गोहरायो * गरुड़छांड़ि हरितुरतहिधायो
ग्राहैहति गज लीन बचाई * सुनुमुनि असदयालु रघुराई
तिन्हें छांड़ि जे आनें ध्यावें * तजिसुरसरिजल कूपखनावें
और सुनौ मैं कहों बखानी * रह्यो मलेच्छ एक अघखानी
एक दिवस गुर्वीकहँ गयऊ * बाहर ग्राम सो बैठतभयऊ
पाछे ते शूकरसुत आवा * विट ऊपर मुख मारि गिरावा
कहा यवन मारयो हारामा * अस सांगतछूट्यो ताजामा
यमकेदूत गहिन तेहिधाई * आइगणन तबलीन छुड़ाई
कहागणन लीन्हों यहिनामा * अबनहिं जाय तुम्हारे धामा
कह यमदूत हरामजो कीन्हा * सोयहि नाम सुवरका लीन्हा
हरिगण कह संकटके मारे * हायराम असकहेसि बिचारे
दूतकहा चलि न्याव चुकाई * जाहि मिलै सोई लैजाई
यहिविधिभ्रूगरतगेविधिपासा * बोले ब्रह्म जाहु कैलासा
तब चलिउमानाथ पहँगयऊ * दोउमिलिहालगुजारतभयऊ

दो० सुनत कहा शिवनामकर न्याव न मोसों होइ ।

चलि बैकुण्ठ चुकाइये श्रीपतिते कहि सोइ ॥

असविचारि वैकुण्ठहिआये * समाचार सब हरिहिसुनाये
कह यमदूत चरण शिरनाई * इहुहै अतिपापी अन्याई
मरत हराम कहेसि मुखयेहीं * ताते गण लैजान न देहीं
सो नियाव तुमते प्रभु होई * जो तुमकहौ करैं हम सोई
सुनत विष्णु मनकीन्हविचारा * नाम प्रभाव अनन्त अपारा
बोले यमदूतो सुनिलीजै * याको इहैं रहन अब दीजै
सुनियमगणचलिभेखिसियाई * हरषे शिवविरंचि मुनिराई

छं० हर्षे विरंचि महेश शेश गणेश नारद आदिकै ।
जेहिहेतमुनितपकरतयोगीयोगआसनसाधिकै ॥
नंहिंमिलतसोपदयवनकहिहारामाबिनश्रमपायहू ।
अंसजानि नामैंनाजपैं तिनबादिजन्मगँवायहू ॥

दो० असहै नामप्रभावजेहि कहि न सकैं हरिआपु ।
ताते सन्तत कीजिये रामनामको जापु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृत बाल्मीकिगजगणिकाउद्धारवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः७॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ।
कहौंकथा भागवतकी अबइतिहास बखानि ॥

बोलेमुनि कछु नाम प्रभावा * कहौं सुनौ अबअपरसोंहावा
कनउजतीर ग्राम इक अहई * अजामील द्विज तामें रहई
मातापिता नाम यशधारा * सो सब सांचकीन्ह करतारा
पूर्व कर्मवश तजि निजनारी * वेश्याएक लिहिसि बैठारी
सुरापान ताकेसँग कीन्हा * शौच सयान दूरिधरिदीन्हा
अजा मोल लै नीचनदेई * चर्म नफ़ापर अपना लेई
असपातक निशिवासर करई * हृदय नेकु दाया नहिं धरई

छं० एकदिवस इक साधु तासु नगरीमहँ आयो।
पूंछेउ हरिजन धाम सुनत दुष्टन बहँकायो॥
अजामील घरजाहु चहौ जो तुम विश्रामा।
हरिजन जान्यो सांच गयो चलि ताके धामा॥

दो० गणिका लखि घूमे तुरत अजामील सुनिपाइ।
बिनती करि फिरि लेगयो आसन दीनबनाइ॥
यद्यपि मैं यहि जन्ममें दुर्भग अघयुत दीन।
तदपिपाछिले जन्म महँ पुण्य घनी कछुकीन॥

सो० पुण्यपुंज बिन नाथ मोको तव दर्शन कहां।
जोपि मिलतकहुँसाथ तौनहिं होतो भावउर॥

असकहि सीधा विटते लायो * विविधभांति भोजनकरवायो
ह्वै प्रसन्न बोल्यो हरिदासा * तव वनिता उर पुत्र निवासा
अबकि बेरजन्मब जब याही * धर्‍यो नाम नारायण ताही
नारायण जो धरिहौ नामा * तौ नहिं जैहौ यमके धामा

छं० असकहिहरिजनगयो भयोजबबालकजानी।
धर्‍यो नरायण नाम वचन वैष्णवको मानी॥
तासों राखै नेह नेकु नहिं न्यारा करई।
मोहवश्य भा अन्ध मृत्युते नाहीं डरई॥

दो० यहि भांतिन कछुकालगे अन्त समयकी बार।
लेन चले यमदूत बहु आये तासु अगार॥

महाभयानक रूप निहारी * अजामील डरप्योअतिभारी
मुद्गर मारिडारि गरफांसा * काढ़तजीव चले उधश्वासा
निकसत प्राण भई अतिपीरा * रही न तनुकी सुद्धि शरीरा
कंठघेरि यमगण इकलयऊ * मुखसेवचनबोलिनहिंगयऊ

दो० तब सोइसुतकी यादिकरि कह्यो वचनहरुवाय।

कहां नरायण पुत्रमम तेहि मोहिं देउदिखाय ॥

नामलेत हरि हृदय विचारा ❋ दुखकेवशकहुँ मोहिं पुकारा
मोर नाम जे जगमें लेहीं ❋ तेहि कि कष्ट यमकिंकर देहीं

स० तुरतैहरिबोलिकह्योगणतेकेहुँनामलियोतेहिबेगिबचावो
फांसछोड़ाइचढ़ाइविमानबजाइनिशानमेरे ढिगलावो
आयसुपाइगयेद्विजधामबिलोकिकैदूतसबैदुखपावो
बोलिउठेतबहीं गणते केहिकारणभौनघुसेतुमआवो

इतनासुनि उत्तर गण दीन्हा ❋ इहांरहत हरिजन हमचीन्हा
तासु फांस काटन के हेता ❋ ताते पठइनि कृपानिकेता
सुनि यमदूतन कहा रिसाई ❋ तुमतौ गणौ बड़े अन्याई
याके सम नहिं दूसर पापी ❋ ताको तुम हरिजन करिथापी
खायसिमांसकिहिसिमदपाना ❋ असजारहिलैचल्यो विमाना
सुनहुगणौ जे आमिष खाहीं ❋ तेहिसम और पापनहिंआहीं
याकर दोष जौन कछु होई ❋ कृष्ण कह्यो पारथसे सोई
पशूहते जो रोम शरीरा ❋ तितने वर्ष नरक सह पीरा
आठ जो हिंसाके गृह जानों ❋ सो भारतमें साखि बखानों
जीव वधन इक आज्ञा देई ❋ दूजो मारै त्रै गहि लेई
चौथो सुनो सँवारन हारा ❋ पँचवां बेचनहार निहारा
छठों रसोई जौन चढ़ावै ❋ सतवों सो जो परसि जिमावै
अठवां खान हार जो होई ❋ परैं नरक महँ आठों सोई

दो० मोल मँगावै घरहतै ताहि द्रव्य दे कोउ ।
सुखसम्पति सबनाशही मोक्षलहै नहिंसोउ ॥

द्विजह्वैके मदिरा जो खाई ❋ देव तुरुककर पूजे जाई
बारमुखी जो गरे लगावै ❋ कुलका धर्म सकल घटिजावै
तेहि द्विजकी पूजा जो करई ❋ पुण्य जाइघटिअघशिरपरई

यामें नाहिं हम झूठ बखाना ❋ धर्मशास्त्र में यह परमाना
तेहिते अब ऐसी जनि कीजै ❋ याहि नरक लैजाने दीजै
अस पापी जो हरिपुर जाई ❋ नरकहिकेहि हम डारबभाई

स० बोलेतबैगणदूतनते तुमनामप्रभावनजानतभाई।
गोद्विजपापकरैनरजो अपनेकरतेमधुलेइछोड़ाई ॥
चोरीकरैबटपारीकरै गुरुतल्पधरैपगआमिषखाई।
औरहुपापकरैबहुजोहरिनामलियेसबहीजरिजाई॥

दो० गणिका यवन गयन्द से बालमीकि अघखानि।
नाम कहत सब तरिगये कहँलगिकहौं बखानि ॥

कोटि गऊ जो देवै दाना ❋ ग्रहण करै काशी अस्नाना
मकर प्रयाग बसै जो जाई ❋ यज्ञकरै दश सहस सुहाई
गिरि सम हेम दान कर कोई ❋ राम नाम सम तुलै न सोई
यथा ढेबुक मुद्रा जगमाहीं ❋ हैं सब एकपदिक सम नाहीं
वस्तुअमोलयथामतिकहहीं ❋ जिनजानाजसतसफललहहीं
संकेतहु परिहास जो करई ❋ राम नाम सुमिरत अघहरई
असहरिनामप्रकटजगआही ❋ शेष महेश रटतहैं जाही
सोई नाम याते कहि आवा ❋ याके सम को भक्त कहावा
कह यमदूत सुनहु गण जेता ❋ कब यहिं कीन रामते हेता
यह तौ पुत्र नाम कहि टेरा ❋ ताते हम दियोदुःखघनेरा
जो यह लेत राम कर नामा ❋ तो हमते याते का कामा
कहगणहरिजनजोकहिगयऊ ❋ ताके वचनमानि यहिलयऊ
करि उपदेश सन्त दियनामा ❋ ताते भक्तभयो यह रामा
चारौं युग श्रीशारँगपानी ❋ सांची करिआये जन बानी
यहिविधिदूतनकहँ समुझाई ❋ लीन्हों ताहि विमानचढ़ाई
रामधाम लैगे यहि भांती ❋ यमकिंकरचलिभेखिसियाती

छं० खिसियाहिंचलिभेदूतयमकेदेखिमहिमानामकी ।
अस अधमपापी खलसुरापी निर्दयीहरिवामकी ॥
सो अन्तसमयपुकारि सुतकोनामहरिपुरकागयो ।
असरामनामप्रभावसुनिअतिहर्षशौनककेभयो ॥

दो० नारायण इति नामकहि अजामील भो पार ।
ताते सन्तत कीजियो रामनाम उच्चार ॥
सुत वनिता धन धाम जो सब इहनै रहिजाय ।
नरक स्वर्ग यमलोक में नामै होत सहाय ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतअजामीलप्रसंगवर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
धर्मदूत संवाद अब कहौं असकंद बखानि ॥

सो० कहशौनक हरषाइ अजामील जब ना मिल्यो ।
दूत धर्म ढिगजाइ कहा कहिन सो वरणिये ॥

कहा सूत यमदूत रिसाई * धर्मराज पहँ पहुँचे जाई
दंड फांस सब दीन्हों डारी * देखो रविसुत दशा हमारी
जाहि अधमपापीहम चीन्हा * तेहितवढिगलावनमनकीन्हा
अन्तसमय सुतनाम पुकारा * तुरतै हरिगण ताहि उबारा
लीन्हेनि बहुरि विमानचढ़ाई * रामधाम तहँराखेनि जाई
अस अनरीति न हमें सुहाई * ताते तव ढिग आयन सांई

दो० दंड फांस लीजे अपनि कह्यो सबन शिरनाइ ।
दूतकर्म नहिं करब अब असकहिचले रिसाइ ॥

रिसह जानियमराज बोलाये * करि सनमान निकट बैठाये
कह धर्म दूत सुनो ममबाता * है हरिनाम सकल सुखदाता
संसकार जो अघकर आही * सूक्ष्मरूप कहत मुनि ताही

सोनहिं नशै तपादिक कीन्हें * यतन अनेकदानविधिदीन्हें
सोवह सूक्षम अघको मूला * सुकृत नामनाशत सबशूला
ताते ताके अघ सबनाशे * जिमि तम्सहजे भानुप्रकाशे
जो जन लेइ रामकर नामा * तेहिते तुमते है का कामा
तिनके निकट न जायो भाई * देखि दूरिते दिह्यो बराई
सुनत दूतकह जगके माहीं * नाम एक बरलेत को नाहीं
जो उनके ढिगजान न पाई * तौ मृत्युलोक करबका जाई
कह रविसुत दूतौ सुनलेहू * मैं जो ब्रूत तामें मन देहू
राम कहत जो नर जगमाहीं * सो व्यवहार नेह कछुनाहीं
गुरुते रामनाम जिनपावा * करि विश्वाससो हृदयबसावा
जो कोइ कोटिन करै उपाई * मारै त्रासै लोभ दिखाई
तदपि रामतजि अन्तनध्यावै * सो हमरे लोकै नहिं आवै
असहरिभक्तविलोक्योजबहीं * कर्यो प्रणाम दूरितेतबहीं
साकटकहँ तुम धरि ले आवो * नरकडारि सबकर्म भोगावो
बोले दूत जोरियुगपानी * इकसंशय हमरे उर आनी
पांचतत्त्वकी सब की देही * किमि जानब ये रामसनेही
भक्तनकेर चिह्न कहौ गाई * जाते हम उनढिग नहिंजाई
बहुरिकहौ साकट करभेदा * जिन्हैं लाय देई बहु खेदा
कह रवितनय सुनौरे भाई * भक्त चिह्न मैं कहौं बुझाई
कंठविषे तुलसी की माला * मस्तकमेंदियतिलकविशाला
शंखचक्र भुजमूल सोहाये * भुवनपवित्रकरणभुवि आये
हरिकी कथा सुनैं हरषाई * राम नाम सुमिरैं मनलाई
जीववधनाहित अस्त्र न धरहीं * देखतदीन दया अतिकरहीं
क्षमाशील सन्तोषै गहहीं * बाल वृद्ध सबके प्रिय रहहीं
मन क्रम काहू दुःख न देवैं * अतिउदार सन्तन कहँ सेवैं

अस हरिभक्त हरीसमजान्यों ❋ यामें रंचक भेद न आन्यों

दो० जो कदापि भक्तनबिषे कलुक दोष दरशाइ।
तथा देह कृत मानिये भक्तन परसै नाइ॥
भक्तदोष प्राकृत नहीं तिन्हैं न बाधा होइ।
औरनको पावन करन सद समर्थ हैं सोइ॥

ताको यह दृष्टान्त विचारौ ❋ सो सुनिकै सन्देह निवारौ
जो गंगामें फेन दिखावै ❋ तौका गंग प्रभाव मिटावै
ब्रह्मद्रव जगमगत जहांहीं ❋ हरत ब्रह्महत्या क्षणमाहीं
तैसे सन्त गोविन्द पियारे ❋ सब दोषन को भंजनहारे
ताते तुम्हैं कहौं समुझाई ❋ भक्तन ढिग जनिजायोभाई

दो० भक्तनके लक्षण कहे कछु संक्षेप बखानि।
अब साकट वर्णनकरौं सोउ लेहु तुम जानि॥

साकटजेहि हरिभक्ति न भावै ❋ साधनलखि मनक्रोधबढ़ावै
साकट पर जे निन्दाकरई ❋ परसुख देखि बिनानल जरई
साकट सो हिंसारत रहई ❋ तजै सुपन्थ कुपन्थै गहई
साकट जो परद्रव्य चोरावै ❋ परअपकार सदा मनभावै
साकट सो भोगै परदारा ❋ करै अकारण क्रोध अपारा
जिवबदले जो जीव मरावै ❋ साकट मांस बिराना खावै
गुरु पितुमातु वचननहिं मानै ❋ साकट औरन का दुखठानै
इमिनर विमुख रामते आहीं ❋ डारहु आनि नरकके माहीं

दो० कौन कर्म करिलहतनर नरक स्वर्ग में वास।
सो हमते वर्णन करौ जानि आपनो दास॥

कह यमदूत सुनौ जेहि कर्मा ❋ परत नरक महँ कहौं सुमर्मा
हिंसाकरै वचन कटु भाखै ❋ सुनै वेद परतीत न राखै
दैविश्वास घात जो करई ❋ प्राणी सोइ नरक महँ परई

देव विप्र सन्तन दुखदाई ❋ परनिन्दा करै अपन बड़ाई
विनासमय भोगै जो नारी ❋ परत नरक मदमांस अहारी
रजस्वला तिय गर्भयुत होई ❋ तासों रमण करै जो कोई
विप्रैन्यवति बहुरि नहिं देवै ❋ सो नर नरकवासको लेवै
शूद्र भील श्वपचाधम कोई ❋ भगवद्भक्ति परायण होई
तिन्हैं जानिकै करै जोतर्का ❋ मन्द बुद्धि सो भोगै नर्का
जे निज देहमांझ अभिमानी ❋ आतमबुद्धि लखैं अज्ञानी
हरि कलत्र अपना करिमानैं ❋ प्रतिमामात्र देवकरि जानैं
सलिलमात्र तीरथजिनजाना ❋ सन्तनमें कछु भाव न आना
ते गोखरसम जानौ प्रानी ❋ परत नरकमहँ वाचकज्ञानी
अर्चै विष्णु शिलाकरि मानैं ❋ श्रीगुरुदेवै नरकरि जानैं
वैष्णवकी जोजाति विचारैं ❋ अन्यदेव सम विष्णुहि धारैं
हरि हरिजन चरणोदक होई ❋ तीर्थबुद्धिकरि मानै सोई
राम नाम मंत्रन सम धरई ❋ सो नर घोरनरकमहँ परई
गोशाला अरु ग्राम जरावै ❋ द्यूत चौर्य्य परत्रिय मनलावै
देखे विना दोषदे शीशा ❋ नरक परै सो बिस्वेबीशा
तीरथ देव गऊ अस्थाना ❋ मध्यगली धर्मशाला जाना
जाय मैल विष्ठा जो करई ❋ जीववधै सो तन मे परई
पूजै नाहिं सन्त घर लाई ❋ और देखिमन क्रोध बढ़ाई
रोषगुरूते बात चोरावैं ❋ हरियश तजि नरकीरति गावैं
भक्तन को यश कभूं न कहई ❋ रामभक्तते विमुखहि रहई
पर अवगुण जो करै उघारा ❋ ते शठ भुगतैं नरक अपारा
नारी जो निजपति छिटकावै ❋ आनपुरुषका गले लगावै
पतिते बोलै वचन कठोरा ❋ रामते विमुखधर्म मुखमोरा
अस त्रियपरै नरक के माहीं ❋ यामें कछु संशय है नाहीं

पाप कर्म सबते तम होई * ऊंच नीच चाहै करै कोई

दो० नरकपरत जेहि कर्म करि सो मैं कह्यों बखानि।
स्वर्गमिलै सो कहतअब दूतलिह्यो तुमजानि॥

श्रद्धा सहित करैं जे दाना * पूजैं उत्तम विप्र सुजाना
होम यज्ञ तीरथ व्रतकरहीं * जप तप गायत्री मन धरहीं
परउपकार सदा मन भावै * द्वारे अतिथिविमुखनहिंजावै
बोलैं वचन सबन सुखदाई * ते नर बसैं स्वर्ग महँ जाई
काहू केर बुरानहिं चहहीं * रक्षा करत जीवकी रहहीं
मान परावो गिरन न देहीं * सत्य वचन इन्द्री गहि लेहीं
वैष्णव देखि करैं परणामा * रजकण जितने लागैं यामा
तितने शत मन्वन्तर माहीं * बसैंस्वर्ग कहि आगम जाहीं
नारी पतिव्रता जो होई * धर्मवान कोमल चित सोई
पति कुष्ठी दारिद्री जानो * रोगी कृपण अन्ध पहिंचानो
कामी क्रोधी कैसो होई * नारि ईश सम मानै सोई
पतिके संग सती होइजावै * सोतिय सत्य स्वर्ग सुखपावै

सो० आश्रमधर्म दृढ़होइ विहँग कपोता की सरिस।
बसै स्वर्गमहँ सोइ बहुत काललगि जानियो॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतयमदूतसंवादवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९।

दो० सुमिरिराम सियसंतगुरु गणप गिरासुखदानि।
कहौं इतिहाससमुच्चकी अबइतिहास बखानि॥

सुनत दूत अस पूंछै लीन्हा * विहँगकपोत धर्मक्याकीन्हा
सोउनाथ अब कहो बखानी * जाई गृहआश्रम जेहिजानी
कह धर्म सुनहु दूत मनलाई * बदौं कथा सुन्दर सुखदाई
वधिकएक अतिनिर्दय रहई * विपिन जाइ जीवनकहँ गहई

निशिदिन नीच जीवसंहारै ❋ पाप दोषनहिं हृदय विचारै
एकदिवसयकवनहिं सिधावा ❋ तामें जीव न एकहु पावा
उत्तर दिशिते आंधी आई ❋ भयो अँधेर न सूझै राई
गरज्यो मेघ प्रलय की नाई ❋ भाग्यो सुनतपंथनहिं पाई
वृष्टिहोनपुनि अतिशयलागी ❋ पाथरपरत सबै सुधिभागी
जहां तहां जल बहै घनेरा ❋ पांव न अड़ै विपति ने घेरा
माघ मास कांपै सब देहा ❋ सहै वास करि करम सनेहा
क्षुधासतावै ज्यों ज्यों तनको ❋ होवै पीर अधिकही मनको
पवन जोर ते पत्ती जानो ❋ गिरि गिरिपरे वृक्षतर मानो
दामिनि चमक कपोतीदेखी ❋ धायवधिकतेहिगह्योविशेखी

दो० आपु काल के गाल में सो न विचार्‌यो अंध।
वाहि पींजरा माहिं करि चलत भयो मतिमंद॥

शोचत सुमन कपोती सोई ❋ मम पति आजु अकेलोहोई
मंदिर तिनकर जहांरहावा ❋ तेहिद्रुमतरे वधिकसोइआवा
छाया ताकी सघन निहारी ❋ बैठा सिमिटि सुपास विचारी
शीत क्षुधावश बोलि न जावै ❋ काठसरिस तनभा दुखपावै
ताही समय कपोत सो आयो ❋ प्यारी वाम धाम नहिं पायो

दो० मोते पहिले आवती नित्यवधू गृह माहिं।
आजु रही कहँ प्राणप्रिय कछू कुशलहै नाहिं॥

असविचारिमनशोचनलाग्यो ❋ मोहप्रबलहिरदयमहँजाग्यो
मैं जु अकेल रह्यों घरमाहीं ❋ बिन वनिता जीवन कछुनाहीं
नारि पुरुष ते अंतर परई ❋ धिकतेहिनरहिजोगृहमनधरई
आश्रमकी शोभा त्रियजानौं ❋ वनिताविना वृथा सुखमानौं
जिततित दृष्टि कपोतहिं फेरी ❋ देखी वधू पींजरे गेरी
विस्मयकीन्ह कपोती जबहीं ❋ बोल्योवचन विकलह्वैतबहीं

अहोप्रिया अबमैं काकरिहौं * तुमबिनप्राणत्यागिकै मरिहौं
पतिको विकल कपोतीजानी * बोली वचन धर्मनयसानी
हे पति त्यागौ शोच सनेहा * दुःखमूल जानौ जग गेहा
मिलन वियोगदुःखसुखसाथा * ताते शोचकरिय जनि नाथा
देखो तुम विचारि मनमाहीं * जगमें कोउ काहूकर नाहीं
धाम वाम तनधन सुत भाई * एकदिवस सबही छुटिजाई
जो कछु धर्माधर्म कमावे * अंतसमय सो संग सिधावे
अधरम करै भरै यमत्रासा * धर्म्मते लहै अमरपुरवासा
ताते धर्म्म करौ मन लाई * याते लोक प्रलोक भलाई
वधिक आश्रम तुम्हरे आयो * याको पूजि करौ मनभायो
पति मति वैरी याको जानो * बैठो शरण तुम्हारी मानो
विपति परे जो करै सहाहीं * होयतासु यश त्रिभुवनमाहीं
घर आये सत्कार न करई * नाशैपुण्य पापशिर परई
धनि वह गेह कुटुँब परिवारा * जाते होवै पर उपकारा
ताते याकी सेवा करहू * गृहस्थधर्म्म सो हिरदे धरहू
करौधर्म्म जनि देरलगावो * फिरि ऐसो अवसर नहिंपावो

दो० सुनत कपोती के वचन कीन कपोत विचार ।
मैं पत्ती मानुष्य यह किमि पोषों यहिबार ॥
असकहि उतख्यो वृत्तते गयो वधिकके पास ।
सम्मुखह्वै श्रद्धासहित कीन्हों वचन प्रकास ॥
मोको आज्ञादेहु कछु सोइ करौं यहि बार ।
धन्य भाग मेरे प्रभू जो तुम आये द्वार ॥

सुनिकिरात बोलाअसिबानी * अहोकपोत सुनहु सुखदानी
मोको शीत सतावे भारी * सो काहू विधि देहु निवारी
तबकपोतचढ़िचहुँदिशिदेखी * बरतबृहद इकपुरमें पेखी

विहँगचावकरि पहुँचो जाई ✱ जरत समिधगहिलायो धाई
झौंझ उजारि भूमिमें डारी ✱ तामें अग्नि दई परजारी
औरौ पात सूखतरु केरे ✱ चुनिचुनिलाइ अग्निमहँगेरे
ताप्योवधिकशीतभयो नाशा ✱ चेतनुह्वै पुनिवचन प्रकाशा

दो० पर उपकारी विहँगतैं शीत निवारे मोर ।
अबकछु भोजन दीजिये क्षुधासतावै घोर ॥

सुनिकपोतमन कीन विचारा ✱ धिकहै पशुपच्ची अवतारा
चरिचुनिकै निजुपेटहि भरहीं ✱ परउपकार कौन विधिकरहीं
धनिवैमनुष बहुत मुखडारैं ✱ धिकहम आपन उदरपसारैं
भयोकपोत खेदउर भारी ✱ बिनवित गृहको बसब उजारी
भुवनकूपक्रमि कुटुम विलासा ✱ होइपाप जनजाइ निरासा
रुदनकपोत कियो बहुतेरो ✱ केहिविधिहरौं दुःखयहिकेरो
शोचतही मनकीन विचारा ✱ त्रयविधिते चहि परउपकारा
धर्म्म सधै तो करौं उपाई ✱ हर्षि वधिकते बोल्यो जाई
धीरजधरौ अतिथि मनमाहीं ✱ देत अहार देरअब नाहीं

दो० करि परिकर्मा अग्निको कूदि पर्यो ताबीच ।
यहसब कौतुकदेखिकै वधिककियो शिरनीच ॥

सो० पूरब पुण्य प्रताप उदय भयो बैराग तेहि ।
लाग्योकरन कलाप मोसम मन्दनबुद्धि कोउ ॥

धन्य धन्य पच्ची तन तेरो ✱ धिक मम जन्म मनुषकरहेरो
नरतन लहिकाकीन्ह कमाई ✱ पापकरत सब वयसगँवाई
कबहूंकछू सुकृतनहिं कीन्हों ✱ नहिंकाहूकर दुखहरिलीन्हों
धिकधिक मोकों वारहिंवारा ✱ धनिविहंग जेहि धर्मविचारा
मैंजोकिये अति पातक भारी ✱ अब तपकरि सबदेहौं जारी
असकहि डार्योजालहि फारी ✱ तुरत विहंगिनि दीननिकारी

दो० छूटि कपोती फन्दसों ऐसे करत विचार।
पति बिन जीवन नारिको जगमें वृथा निहार॥

योंकहि गिरी अग्निमहँ सोई ॥ भईसती सांचो यह जोई
मध्यअग्निमहँ दीख विमाना ॥ पतिताबीच बैठ जिमिभाना
विहँगिनिकोतनुपलटिजोगयऊ ॥ ताहूकेर दिव्य वपुभयऊ
पतिलखि भेंट्यो गरेलगाई ॥ गयोदुःख सन्ताप नशाई
रञ्चकदुख कीन्हों धर्महेता ॥ सुखजो भयो गनै को तेता
ताते धर्म कीजिये भाई ॥ यामें जनि रहिये कदराई
नारिपुरुषदोउ चढ़े विमाना ॥ गणलैउड़े मगन मनजाना
जयजयदेव किहिनि हरषाई ॥ सत्यलोक तहँराखेनि जाई

दो० प्रवरा प्रवरी की कथा भई कही मैं सोय।
वधिकहाल वरणों बहुरि सुनिराखोहियजोय॥

वधिक विपिनतपकीन्होभारी ॥ मगनध्यानतनुसुरतिबिसारी
यकदिनअग्निलगीचहुँपासा ॥ वधिकदेह जरिबरि भइनासा
अघजोरहे जरे तन संगा ॥ वधिकसो राच्यो हरिकेरंगा
दिव्य विमान पारषद लायो ॥ तापर चढ़िकरस्वर्ग सिधायो
कपटी कुटिल कीर अघधामा ॥ सज्जन संगलहो विश्रामा
गृहस्थधर्म जसतस यहगावा ॥ सुनिदूतनअतिशयसुखपावा
कह यमचरण चार शिरनाई ॥ अबहम मृत्युलोक कहँजाई
कौने ठौर जाइ हम रहिये ॥ कहांनजाइँ कृपाकरि कहिये
बोले यम जो पूछेउआई ॥ तुमहिंदेहुँ अस्थान बताई
जेनर हरिपूजन मनधरहीं ॥ लै चरणोदक भोजन करहीं
कथासुनैं हरिकीरति गावैं ॥ ठाकुरद्वारे में नित जावैं
कुटुम सहित गुरुसाधुन सेवैं ॥ क्षुधितदेखि तेहि भोजनदेवैं

दो० हरि गुरुदासन तेरहे सांचो निःछल जौन।

तिनके ढिग जनिजायहू दिह्यो त्यागि ये भौन ॥

पिता अवज्ञापुत्र न करहीं * द्वारेअतिथिविमुखनहिंफिरहीं
यज्ञ होम करिविप्र जिमावैं * सन्तनकी संगति चलिजावैं
वेद वचन राखैं विश्वासा * इतनेठौर तुम्हार न बासा
असअसधामत्यागि तुमदेहू * बसौ जहां सोऊ सुनिलेहू
जहां न कथा रामकी होई * हरिकी भक्ति न जानै कोई
पुत्र न मानै पितुकी सीखा * जेहिघरलहै न भिक्षुक भीखा
कण्टक वृक्षहोइ जेहि धामा * तहांजाइ तुमकरो मुकामा
जिवहिंसा जाके घर होई * मदिरा मांस मीनभखजोई
हरितजि पूजै भूत पिशाचा * वेश्यारत कहसत्य न वाचा
असनर जहँ तहँ बसिये जाई * मरे नरकमहँ डारयोलाई
सूनेभवन दीपनहिं बरई * गणिकाआयनृत्य जहँ करई
गृह जूठनि जारा लपटाना * पर्व परे नहिं देवैं दाना
सुता पराई घरमा आवै * रहै निरादर दुखजहँ पावै
पर्व परे भोगैं जो नारी * बसहुजाइ असभवनविचारी
बासी अन्न जो दिनप्रतिखावैं * जेहिगृहसन्त न आदरपावैं
कलह होइ जहँ सांझ सकारे * साधु विप्र जे करैं दुखारे
विनादीप निशि भोजनखाहीं * बसहु दूत तिनके घरमाहीं

दो० मातु पिता कहँ देहिं दुख करैं कहे जो वाम ।
तहां बसो तुम जाइके जे न भजहिं सियराम ॥

आपु भक्त घरसाकट नारी * सुतकलत्रसब मांस अहारी
तिनका छुवा जो भोजनखाई * भक्ति धर्म सबही घटिजाई
अवशि बसौतिनकेगृहशोधी * जेसतगुरु तेभये विरोधी
छोड़े केश रहैं जो नारी * बहूसासु से लड़ैं प्रचारी
मरघटचारि पंथ जो होई * अजया पुत्र रहैं जहँ सोई

ये अस्थान कहे मैं वरणी * औरोलेहु जानिलखिकरणी
धर्मराज के वचन सुहाये * सुनि यमदूतन के मन भाये

छं० भयो सुनत यमदूतपुर रविपूत जो वर्णन कियो।
उठिनाइशिरमनमुदितह्वैसबफाँसमुदगरकरलियो॥
यह दूत यम संवाद वरणों सुनैं जे अरु गाइ हैं।
तेहि भूत अपर पिशाचयमके दूत नाहिं सताइहैं॥

दो० लक्षण धर्माधर्म के ऊंच नीच जे आहिं।
जनरघुनाथ विचारि कछु लिखे ग्रन्थके माहिं॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृतगृहधर्मयमदूतकथावर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
नाशकेत भारत्थ की कहौं इतिहास बखानि॥
धर्मराज निजगणनते बोले निकट बुलाय।
गंगयमुनके बीच इक द्विजतेहि लावहु जाय॥

जामू गिरि ढिग बस्ती आही * तामें विप्र रहत है वाही
नाम शालमलिताको जानो * गोत्र अगस्त्यकेरपहिंचानो
पूरण आयुभई सब ताकी * लावहु बेगिनहीं अब बाकी
सुनि यमदूत सकल हरषाने * निजनिजबाहनसबनपलाने
कोइकूकर शूकर पर कोई * करमें गुर्ज भयानक सोई
कोई चले महिष चढ़ि वीरा * बड़ेबड़ेदशन लिहेधनुतीरा
कोइ खरपर आरूढ़ पिछाना * कारीदेह सुमेर समाना
कोइमुरदा पर किहे सवारी * ठाढ़े केश गदा कर धारी
कोई सिंह चित्ता चढ़ि धाये * लोहित लोचन भौंहचढ़ाये
कोइ वसहापर आसन कीन्हें * फांसी अरु मुद्गर कर लीन्हें
यहि भांतिन यमदूत सिधाये * बसतविप्रजहँ तेहिपुरआये

सो० सोइगोत्र सोइनाम दूसर द्विज तामें रहत।
यमघुसिगे तेहिधाम डारि फांस त्रासन लगे॥

दो० उभै घरी के बीचमहँ मारि लिहिनि द्विजसोइ।
मुसक बांधिलै चलतभे रहे कुटुम्बी रोइ॥
तात मात सुत भ्रात तन ग्राम धाम धन जोइ।
सब जहँ के तहँई रहे संगचल्यो नहिं कोइ॥

भूसुर कहँ आगे करिलीन्हा ❋ यमपुर ओर पयानाकीन्हा
मृत्युलोकते यमपुर जानो ❋ सहस छियासी योजनमानो
आठ ठौर तेहि मारग माहीं ❋ अतिशयकष्ट होत सुखनाहीं
प्रथमै दुइ सहस्र मग जोई ❋ तामें दुख सुखकछु नहिंहोई
एक सहस योजन तेहिआगे ❋ सिंहबहुतलखिअति भैलागे
जे बैठे साधुनके माहीं ❋ तिन्हैं दुःख तहँ व्यापै नाहीं
योजन पांचसहस असहोई ❋ कांटेपरत लोहसम सोई
पांयन में सो चुभिचुभि जावें ❋ तामें प्राणी बहुदुखपावें
गजरथवाजि पालकी दीन्हा ❋ तेनर तेहि चढ़ि जाते चीन्हा
उभै सहस योजन यहिभांती ❋ बारू तपत रहत अतिताती
सुवरणदानदीन्ह जिनलोगा ❋ तिनका तहां न व्यापै सोगा
योजन द्वादश सहस अगारा ❋ परत विषम खांड़ेकी धारा
रथकर दान काम तहँ आवै ❋ नाहितनरअतिशय दुखपावै
आगे योजन आठ हजारा ❋ मिलततहांजलगहिरअपारा
मही दान दीन्हें सुखपावै ❋ उतरत पांवन में छुइ जावै
योजन तीस अगारू जाई ❋ अंधकार तहँ अति दुखदाई
दीपदान तहँ कामे आवै ❋ ठाकुर द्वारे जौन बरावै
की ब्राह्मणघर की मगमाहीं ❋ साधुभवन कीतुलसी पाहीं
तीरथमाहिं कथाके नेरे ❋ बारि दीपते जाहिं उजेरे

सो० आगे योजनआठ महाभयानक मग मिलत।
चढ़ा उतरके घाट होत तहां प्रापी विकल॥

दो० तेहिके आगे मिलतहै योजन सहस अठार।
तपत भानु भृशशीशपर तहँ अति तुदन अपार॥

तेहि मारगमें सो सुखपावै * कुवाँ बावली ताल खोदावै
की पौसरा दीन बैठाई * की ठाकुरद्वारे पहुँचाई
अरु मारग में वृक्ष लगावै * ऐसा दान काम तहँ आवै
सहस छियासी योजन येही * पृथक पृथक देख्यो द्विजतेही
आगेजाय यमपुरी तीरा * देखी तहँयक नदी गँभीरा
नाम तासु वैतरणी आही * मज्जा रुधिर भरातेहि माही
गोजरबीछि सर्प अरु कीरा * उतरत पापी पावहिं पीरा
सौयोजन की चाकल सोई * देखत प्राण विकल तहँहोई
जो अपने स्वामीको मारै * कन्या कामिनि द्विज संहारै
जीवबधै अरु सबै सतावै * पुर जंगल महँ आगिलगावै
तिन्हें प्यासतहँ लागे भाई * रक्त पीब सोइ पीवैं जाई

दो० अमिष.अहारी मदपिया ज्वारीचोर कसाय।
बटपारी जो पातकी दुख पावत अधिकाय॥
कोउ उछरत बूड़तकोऊ लहरिसंग बहिजात।
काहू बीछी सर्प बहु कीड़ा नोचे खात॥

सो० जोकोउ पापी होय ताहि रुधिरकी लखिपरै।
पुण्यवान कहँ सोय देखिपरै घृत क्षीर की॥

छं० होम यज्ञ व्रत कीन दीनजिन अन्नकोदानहिं।
पूजे द्विज त्रिपुरारि किये तीरथ अस्नानहिं॥
पुरटदान पटदान तुला गज वाजि जोदीन्हों।
आज्य मिठाई चीर दही पोथी दत कीन्हों॥

सन्तचरणमें प्रीतिजिनगुरुदित्तालियजानिसुख।
तेवैतरणीशैलचढ़ि उतरिजात नहिं होतदुख॥

जिन गोदान दीन्ह संसारा * पकरि पूंछ सो होवें पारा
यहिविधिनदीउतरि द्विजपाई * पुरह यमपुरी देख्यो जाई
योजन सहस तासु विस्तारा * तामें द्वारे चारि निहारा
पूरुब उत्तर पश्चिम जानौ * चौथा दत्तिण द्वार पिछानौ
धर्मवान जो प्राणी भयऊ * सो तौ तीन द्वारह्वै गयऊ
दत्तिण द्वारे भेसो जाई * जो नरपाप कीन्ह अधिकाई
विप्रसाधु सुरभिनदुखदीन्हा * अरुविश्वासघातजिनकीन्हा
दुष्टबड़े तन मन दुखदाई * सब जीवन की तकैं बुराई
चोरी करैं चौपया मारैं * पत्ती पकरि फन्दमें डारैं
कन्या बेंचि द्रव्य जे लेहीं * छल करिकै काहू विषदेहीं
हरि ते विमुख सदा जे रहई * काम क्रोध तृष्णावश बहई
वेदपुराण शास्त्र नहिं मानैं * गुरुते कपट सयानप ठानैं
दुखी दीन कहँ आपु सतावैं * झूठी साखि भरन जे जावैं
साधू ब्राह्मण सेइन नाहीं * किहिनि न दान पर्वके माहीं
असप्राणी दत्तिणदिशिजावैं * यमकिंकर तेहि बहुत सतावैं
दत्तिणद्वारगयो द्विज सोई * जायशालमलि देख्योजोई

दो० तहां सिंहबहु श्वानवृक सर्प गीध अरु भाल।
अन्धकार नाहिं जानकोउ राति दिवसकाहाल॥
नरक हजारन हैं जहां परे पतित रहे रोइ।
त्यों त्यों मारैं दूत शिर रत्तक तहां न कोइ॥
तिनमें बड़े जो मुख्यहैं नरक अठारह जानि।
भिन्न भिन्नकर नाम अब सब के कहौं बखानि॥

पं०छं० प्रथमैंइककुंभीपाकजानि। अतिशैदुखदाईताहिमानि

जोविप्रगऊपशुपक्षिमारि । ब्रह्मचारीकोतपदेहिंटारि
अरुदानदेतहटकैजोनीच। सोपरतनरककुम्भीकेबीच
हैकुंभसरिसमुखछोटजासु। षोड़शयोजनविस्तारतासु
तामेंमलमज्जाअतिनिहारि। दुखपावतपापीनररुनारि

क.छं. दूसरनरक अवीचि नाम । तामेंपलनाहीं है अराम
गुरुअरुकन्यावधैकोइ । भक्ष्यअभक्ष्य जो खातहोइ
जोपाहुनआवैनिजनिकेत । तेहि न करै सनमानहेत
नरक अवीचीपरतसोइ । नरनारी चाहै सोइ होइ

ह.छं. अब नरक तीसर नाम रौरव है भयानक सो महा
तेहि देखि डरपत जीव बारू तपत रहती है तहां
पग जरत प्राणी करत रोदन दौरिचहुँदिशिजावहीं
अतिहोत व्याकुलएकक्षण विश्राम नाहिंनपावहीं

तो.छं. निजराजबिषेनहिंन्यावकिया। बिनऔगुणपर्जहिंदंडदिया
जिनब्राह्मणवेदपढ़ेजुभले। तेहिमारगआपुसोनाहिंचले
केहुँआरतआइकैप्रश्नकरी। ग्रहटेढ़बताइसोवित्तहरी
धरिपाखँडरूपफिरैंजगमें। हरिविमुखसोबूड़िरहेअघमें
जप संयमपूजन नाहिंकरैं। तपतीरथयज्ञ न ध्यानधरैं
व्रतदान कभूं जे ना करते। तमरौरव माहिं परैं नरते

चौथनरकगुरु जिमिहै नामा * गुरुरस अस औटतहै तामा
जो काहू की भांजी मारै * अरु काहू का बुरा विचारै
पटगुड़लोण जो लोहचुरावै * गुरुजिमिनरक सोइदुखपावै
पँचवाँ कूप नरक तहँ सहई * तामेंप्राणी अतिदुख लहई
कूपसमान बनानि तेहि केरी * पीव रक्त कृमि तामें हेरी
तासु निकट बैठे बहुकागा * बड़िबड़िचोंचभयानकनागा
परे जीव जबहीं उतराहीं * मारैं चोंच रसातल जाहीं

दो० रामभक्ति जिन नहिंकरी गुरुदित्ता नहिं लीन।
रामनाम सुमिरयो नहीं साधुसंग नहिं कीन॥

सो० मानुष देहीपाय कह्यो सुन्यो नहिं रामयश।
दासी संगकराय कूपनरक महँ सोइ परत॥

छठवां कीट नरक है जानौ * तामें कीड़ा भरे बखानौ
पापिन के तन चोटै सोई * तामें त्रास अधिकही होई
मारि मारि मछरी जिन खाई * ह्वै कृमिरहैं निरैमहँ जाई
भली वस्तु जो छिपिकै खावैं * अरु काहूको अन्न चोरावैं
दुखीदीनलखि दया न करहीं * कीटनरकमहँ सो नर परहीं
सतवां असीपत्र वन नामा * ताके पत्र दुधारे श्यामा
पापिनको तामें घसिलावैं * कटिकटिजायँबहुरिजुरिआवैं
त्राहित्राहि तहँ जीव पुकारैं * त्यों त्यों दूत परिघाशिरमारैं
जिनकोउ अपने मित्रहिमारा * काटेनि हरियरवृत्त गँवारा
कामी कुटिल अकारण क्रोधी * परनिन्दक गुरुसन्त विरोधी
राखाबरत भंग जे करहीं * असीपत्र महँ सो दुखभरहीं

दो० अठवां दारुण नरक है जेहि देखत भयहोय।
जे कामी हैं नारि नर तहँ पावैं दुख सोय॥
बहुत खम्भ नररूप तहँ बहुहैं नारि अकार।
बरतरहत इकरससदा दोउदिशि काष्ठ अपार॥

जो नर परत्रिय गरेलगावैं * पकरिखम्भमहँ ताहिभेंटावैं
कहैं कि चीन्हि लेहु सोइनारी * जेहि के संग कियोसुखभारी
जेत्रिय आनपुरुषसँग करहीं * तहां जाय तेऊ दुख भरहीं
परवी परै बरत वा होई * तेहिदिन मैथुनकरै जो कोई
सोउ खम्भमहँ जात भेंटावा * यमकेदूत अधिकतेहिंतावा
कहिसिकितुममानुषतनपायो * करि करि मैथुनताहि गँवायो

तुमते खर शूकर भलजानी ❋ बरष बरष सन्तोषे आनी
हरिकी भक्ति कियो सो नाहीं ❋ सहौ कष्ट अब दारुणमाहीं
नवम नरक निरश्वास कहावे ❋ तामें श्वास न घूंटी जावे

सो० ब्राह्मण विधवानारि सुरगुरु अंश चोरावहीं ।
कहें न वचन विचारि परैसोई निरश्वास महँ ॥

दशवांकुल संकुल है भारी ❋ तामें तौ अतिदुखअधिकारी
अग्निसमान जरत द्रुमरहहीं ❋ दशयोजनके चाकलअहहीं
योजन पांच घेर विस्तारा ❋ एक एक का न्यारा न्यारा
बँधे जँजीरन में तहँ पापी ❋ हाय हाय बोलैं संतापी
ब्राह्मण क्षत्री शूद्ररु वैसा ❋ भारी पाप कीन जिन जैसा
मारैं जीव मांस लै खावैं ❋ ते नर यही नरक दुखपावैं
गेरहौं नरक सोइमुख नामा ❋ सूचीछेद परे जिव तामा
जिन सतगुरुकी निन्दाकीना ❋ संतन दोष लगावतहीना
तीरथ बहिमुख वेद पुराना ❋ सबहिनकीनिन्दाजिनठाना
नारिवधे अरु विप्र सतावैं ❋ सो सूचीमुख नरकहि जावैं
बरहों घोर नरक असनाऊं ❋ सोविकराल भयानक ठाऊं
तामें सिंह स्यार अहि शूकर ❋ भालु भेड़िया कागरुकूकर
जिनरसना हरिनाम न लीन्हा ❋ कटुकवाद साधुनते कीन्हा
कबहुँ न कोमल वचन उचारे ❋ तेहिमुख नाग लगावतकारे
सन्तदरश जिन कीन्हों नाहीं ❋ निरखिधरयोनहिंपगभूमाहीं
परत्रिय देखि कुदृष्टिहि झांकें ❋ तिनकीकाग निकारतआंखें
जो कोउ पुरमें आगिलगावे ❋ तिनका मांस भेड़ियाखावे
जो कोउ वन पशु पक्षी मारै ❋ ताका पेट सिंह धरिफारै
जो कोउ काहुइ मारै भाई ❋ शूकर ताके हाथ चबाई
जिन हरिचरित सुनैनहिं जाना ❋ शीशऔटि डारै तेहि काना

जिननरअमिष अहारे कीन्हा ✱ गोलालाल पिवावे लीन्हा
पीवत गोला करैं पुकारा ✱ त्रास देइँ यमदूत अपारा
तबतो भख्यो परावा मांसू ✱ अबकत रोवत बड़बड़ेआंसू
कांट चुभत अपनेदुखमान्यो ✱ परको संकट देत न जान्यो

दो० बिन दावा नित रहत जे फूल पात चुनि लेत।
तिन्हैं मारि भक्षण किह्यो केवल रसना हेत॥

कर्म किह्यो जस भोगोसोई ✱ नरक अघोरमाहिं असहोई
तेरहों शूली नरक कहावै ✱ शूली सम दुख तामें पावै
जो नर पाप करै अधिकाई ✱ करि शिकार मृगमारै जाई
नाहक नर शूली धरिदीन्हों ✱ जिनवनमाहिंठगाही कीन्हों
काहू को शस्त्रन ते मारै ✱ तेहि यम शूली नरक में डारै
नरक चौदहों है दुखखानी ✱ अग्निकुण्डतेहिनामबखानी
तामें अग्नि बरै अतिभारी ✱ जाहिदेखि डरपै नर नारी
जरैं जीव बहु ताके माहीं ✱ हाय हाय बोलैं घिघियाहीं
कोउ कहैं मैं. बहुतपियासा ✱ जल पियाइ फिरदीजे त्रासा
दूत कहैं सुनुरे मतिहीना ✱ तूतो दया धर्म नहिं कीना
प्यासे को जलनाहिं पियायो ✱ भूखेको नहिं कबहुँ खवायो
साधु ब्राह्मण अरु गुरु भाई ✱ पूज्यो नहीं कबहुं घरलाई
ग्रहण परे नहिं दीन्ह्यो दाना ✱ पेट भरयो नित बैल समाना
धिक धिक रे मूरख नरलोई ✱ अपनाकियाभुगत अबसोई
पानी मांगत कौने ज्ञाना ✱ प्रथमैअग्निकुण्डनहिंजाना

दो० नरक पन्द्रहों है जहां तेलयंत्र ता नाम।
कोल्हूकी सम सो बना डरत देखि नरवाम॥

जो चोराइ परखेतहि काटै ✱ नितदिन मात पिताकहैं डाटै
भूमि पराई लेइ छिनाई ✱ परपत्नी बरबस लैजाई

तुला चढ़ाय घाटि जो देवै ❋ तेल यन्त्र सो वासा लेवै
सोरहों नरक नाम दुखदाई ❋ तामें तो है दुख अधिकाई
जो मद पीवै आमिष खावै ❋ झूठे काहू दोष लगावै
पर अवगुण जो करै उघारा ❋ दुखी दीनकहँ नाहक मारा
भक्ति छुड़ावै निगुरा करई ❋ कहे कहाये जो परहरई
दुखद नरकमें सो दुखपावै ❋ जो नर कीन्ही कृत बिसरावै

सो० नरक सत्रहों जानि अन्धकार जेहि नामहै ।
महाभयानक मानि तामें कछु सूझैनहीं ॥

जे राकस अतिनिरदै कोही ❋ तनअभिमानी हरिजनद्रोही
गरे बिराने करद चलावै ❋ अन्धकार दुख सोई पावै
नरक अठरहों है दुखधामा ❋ हवै विलोचन ताकर नामा
तामें नर अन्धा ह्वै जावै ❋ भरमत फिरै कष्ट बहु पावै
जो मगचलत जीवनहिं पेखै ❋ क्रोधदृष्टि ह्वै साधुहि देखै
अरु परनारि कुदृष्टि निहारै ❋ कण्टक तोरि बाट में डारै
विधवानारि नयन जो आंजे ❋ खाइ पान परपतिके काजे
जो ठाकुरद्वारे नहिं जावै ❋ साधुगुरूलखि शीश नवावै
अन्धे को देवै बहँकाई ❋ परै विलोचन में सो आई

दो० नरक अठारौं सालमहँ देखि डर्यो मनमाहिं ।
तनकांपत सबकछु वचन मुखते आवत नाहिं ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतयमपुरीवर्णनोनामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
वर्णौं कर्मविपाक कछु सोइ इतिहास बखानि ॥

फिरि दूतन आगेकरि लीन्हा ❋ यमकीसभा ठाढ़ तहँ कीन्हा
विप्र विलोकेउ धर्मक रूपा ❋ मारकण्ड्यो समतेज अनूपा

रतनजटित शिर मुकुटविराजे * श्रुतिकुंडलगलमाल सुछाजे
चारि वेद के पढ़नेवारे * और मिमांसा जाननहारे
बहुतशास्त्र रचिआप बनाये * धर्महेत जग माहिं चलाये
बैठे सिंहासन हरषाहीं * शोभाकांतिअधिकतिनमाहीं
और ऋषीश्वर बहुसतिवादी * धर्मराजढिग तिनकी गादी
जीवहि जब यमगण लैजावें * ठाढ़करें रविसुतके ठावें
कहें माहिशेष वहां लैजावो * चित्रगोपित्रै याहि दिखावो

दो० गुप्त प्रगट पुनि पापजो करत जीव जग माहिं।
सो सब लिखिलिखि धरतहैं तनको चूकतनाहिं॥

पापपुण्यते सब कहिदेहीं * रविसुतनिजकाननसुनिलेहीं
धर्मसहित तब न्याव चुकावें * जे जसकरें सो तस फलपावें
पापिनको लै नरक में डारें * यमकिंकर शिर मुदगर मारें
धर्मवान ते स्वर्ग सिधावें * आगे बाजन बाजत जावें
पहुंचें स्वर्ग निकट जब जाई * आगे मिलें अप्सरा आई
नृत्य करत भीतर लैजावें * सिंहासन ऊपर बैठावें
कहें कि हम हैं तुम्हरी दासी * रहिये एककने बचखासी
देवदेव ह्वै करें निवासा * हेमालै सुखभोग विलासा
अबसो पुण्य कहौं समुझाई * जासे बसत स्वर्गमहँ जाई
जिननरदानद्विजनकहँदीन्हा * काहूकर अपमान न कीन्हा
सब जीवनकी दया विचारें * काहुइ दुखदेवें नहिं मारें
वेद पुराण सुने सुख पावें * कथा कीरतन में मनलावें
योग तपस्या तीरथ करहीं * संयम सहित बरत अनुसरहीं
भांड़े बस्तर घोड़े हाथी * गौवें दई बाछरा साथी
कन्दमूल फल अन्न जो दीन्हा * विप्र साधुकर आदर कीन्हा
मगमें वृक्ष विपुल लगवाये * कूप बावली ताल खनाये

कार्तिक माह वैशाख नहाये ※ नांगे पगसों पर पहिराये
औरौ धर्म विविध विधि कीन्हा ※ स्वर्गमाहिं तिन बासा लीन्हा

दो० जो कोइकरै सो आपुको परको करै न कोइ ।
अपना कीन्हा पाइहै ऊंच नीच किन होइ ॥

जिन कोउ गुरुते दिक्षा लीन्हा ※ मनलगाइहरिसुमिरणकीन्हा
साधुनकी सेवा नित करहीं ※ मुखते वचन मीठ उच्चरहीं
दानकरै सो हरिको अरपै ※ बोलै सत्य झूठ नहिं जलपै
करैं भक्ति सतसंगति जावैं ※ अस नरते वैकुण्ठ सिधावैं
तिनको धर्म तीर नहिं न्याऊ ※ जे हरिभक्ति करैं सतिभाऊ
याविधि धर्मराज के पासा ※ जाइ न एको हरिका दासा
पापिनकोयम यहिविधिकरहीं ※ प्रथमैं नरक माहिं लै डरहीं
बहुत काल लगि नरकभोगाई ※ फिरि जगमें जनमावत भाई
पूरब जिन जसकीन्हें कर्मा ※ तैसा आइलेत जग जन्मा
जो नर ब्राह्मण हत्याकीन्हा ※ जन्मनिपुत्रीतेहि जगचीन्हा
गऊ पापते होइ मलेच्छा ※ जो नहिं करै जीव की रच्छा
जो काहूका सोन चोरावै ※ जन्म पाइ कुष्ठी ह्वै जावै
मदिरा पीने मेंडुक होई ※ मारै पंथ रोगयुत सोई
द्विज पुस्तक पढ़िनाहिंविचारा ※ बहुतरहे विषयाकी धारा
हरिकी भक्ति करी सो नाहीं ※ तेई होत सर्प जग माहीं
जिनगणिकाकी संगति ठानी ※ रासभ होत आइ सोइप्रानी
जो द्विज मांस अहारी होई ※ ताको दान देइ जो कोई
दोनों गीदरका तन पावैं ※ परकी निन्दा मुख कर गावैं
जिनपलदान दीन अधिकारा ※ पावैं बाघ सिंह अवतारा
जोकोउ कन्या होती मारै ※ सो गिरगिट की देही धारै
झूठा वाद विवाद बढ़ावै ※ सो कच्छप की देही पावै

देबेयोग्य दान नहिं करहीं * सो शठ बकुलाका वपुधरहीं
दान देत जो बरजै कोई * सोतौ लढुवा घोड़ा होई
कर्ज खाइ कोई मरिजाई * ह्वैकै वृषभ भरै सो आई
जो साधुनकी निंदा कीन्हा * शूकरकेर जन्म तिन लीन्हा
जो कोइ धरी धरोहरि नाटै * अरु पक्षिनके पर जो काटै
साधुहि दोष लगावै जोई * सोइ विष्ठा कर कीड़ा होई
जो काहूका लोह चुरावै * होइ नहारू बहु दुख पावै
जो काहूको अन्न चोरावै * होवै बहिरा सुना न जावै

दो० ब्राह्मण अरु हरिभक्त कहँ लातन मारै जोइ।
जन्म पाइ जगके बिषे सोई पंगुल होइ॥

आपु होत गुरु गुरू न कीन्हा * सोइ बिलार होत हम चीन्हा
जो नित क्रोधी हरषै नाहीं * सोई होत नकुल जगमाहीं
दै विश्वास करै दुष्टाई * सो ह्वै कुरँग बसै वन जाई
दान देइ पाछे पछितावै * सो नर जन्म मेष कर पावै
जिन करपूर कपास चोराई * सो शुत्रा होवै सति भाई
बैलै बधिया करै करावै * सोइ नपुंसकवा ह्वै जावै
जो अनहोती करै लड़ाई * सो वनकी माखी ह्वै जाई
गुरु ब्राह्मणका अंश चोरावै * सो मरुदेश भुजँगतनु पावै
नरतन पाइ करै पर पीड़ा * सो होवै मोहरी का कीड़ा
ज्ञान पाइ गुरु ते फिरजावै * सो शरीर कोढ़ीका पावै
जो सन्तनकी हांसी करई * जन्म पाइ सिरीं ह्वै मरई
भीतर कपट उपरते प्रीता * सो पापी धारै तन चीता
पर प्रमदन ते जो रति करहीं * सो जगमाहिं श्वान वपुधरहीं
देखि दोष जो आमिष खावै * सो नर गीधकेर तनु पावै
पाप सहित जिन दीन्हों दाना * सोई होत द्विरद जगजाना

हरिजनमाहिं छूति जिनमानी ❋ होत छछूंदरि सो मलखानी

सो० विनालगाये भोग जे नर भोजन करत नित ।
होत तासुतन रोग जन्म मिलत तेहि कागकर ॥

दो० जहँ लगि खोटे कर्म हैं सो सब दुखकी खानि ।
सोई करि नर परत हैं चौरासी में जानि ॥

स्वर्गी पुण्य क्षीण ह्वै जावै ❋ पुनि सो मृत्युलोक को आवै
नरतनमिलैतिन्हैं अतिपावन ❋ सुत वनिता धन धाम सुहावन
फिरि धर्मकरै स्वर्ग सुख पावै ❋ अधरम करै तौ नरक सिधावै
हरिकी भक्ति करैं नहिं जबलौं ❋ आवागमन मिटै नहिं तबलौं
यहि भांतिन यम लेखा लीन्हा ❋ जेहिजसचहीताहितसदीन्हा
पाछे यमगण द्विजै दिखावा ❋ लखिहरितिनतेवचनसुनावा
रेदूतौ मतिमन्द अनारी ❋ आजु कसूर कियो तुम भारी
अस्यनाम द्विज और रहायो ❋ ताको तजि याको लैआयो
सुनि यमदूतन वचन बखाना ❋ धोखे नाथ इन्हैं हमआना
तव धर्मराज द्विजै सनमान्यो ❋ मनमें निजअपराधपिछान्यो
कैसो पापी होवै कोई ❋ विना अवादे आव न सोई
यहद्विज विना अवादे आयो ❋ असविचारियमबचनसुनायो

दो० हे द्विज तोको देखिकै लागिदया अतिमोहिं ।
जो भावै सो मांगुवर आजु देहुँ मैं तोहिं ॥

कह द्विज जो प्रभु किरपा कीजै ❋ तौ मृत्युलोक जान मोहिंदीजै
जितनी मोरि आयुहै बाकी ❋ तितने दिवस वहां मोहिंराखी
अबलगि मैंकछुधर्म न किहेऊं ❋ झूठे जगतमाहिं मन दिहेऊं
जबते देख्यों पुरी तुम्हारी ❋ नरक निरखि लाग्यो डरभारी
ताते अस मत मोसे कहिये ❋ जाते फिरि तवधाम न अइये
कह यम पापी पुण्यी दोऊ ❋ मोरेपुर आवत हैं सोऊ

राम भक्ति जगकरै जो कोई ॥ तिनपर मेरा दण्ड न होई
चक्र एक दिशि रक्षा करई ॥ इकदिशि गरुड़ नकबहूंटरई
एक ओर सब पार्षद दौरैं ॥ हरिरक्षा तिन पर सब ठौरैं
तिन्हैं विरोधि कहौ कितरहऊं ॥ मनक्रम वचनसत्यमैं कहऊं
ताते द्विज अब जगमें जाई ॥ सुखप्रद भक्तिकरौ हरषाई
बिन हरि भक्ति इंद्र दुखपावै ॥ पुण्यक्षीणमृत्युलोकहिआवै
राम भक्त को पात न होई ॥ भक्ति बीज अजरामर सोई
सुनिद्विजधर्महिशीशनवायो ॥ तुरतपलटिमृत्युलोकहिआयो
मृतकशरीरमाहिंपुनिजाग्यो ॥ लखिगृहवासिनकोदुखभाग्यो
पर्‍यो कोलाहल नगरमैंभारी ॥ सुनत चले देखन नरनारी
भई भीर बहु विप्र निकेता ॥ आये चलि पुरवासी जेता
पूछन लगे कहांतुम गयऊ ॥ केहिभांतिनफिरि आवतभयऊ
कहांसालमल यमगण आये ॥ महा भयानक रूप बनाये
मारिमोहिं यमलोक सिधाये ॥ आठठौर मगदुख अतिपाये
देखि एक वैतरणी धारा ॥ तामें पीब रक्त क्रिमिछारा
गयन यमपुरी दक्षिण द्वारे ॥ तहां हजारन नरक निहारे
तिन में जीव परे कृत शोरा ॥ देखत धीरज भाग्यो मोरा
दूतहमैं लैगे यम पासा ॥ तिनमोहिंदेखतवचनप्रकासा
याके नाम और द्विजभाई ॥ तेहितजियहिदीन्होंदुखआई
मोसे कहिनि मांगि वर लीजै ॥ मैंकह बहुरिजान मोहिंदीजै
और बात इक देहु बताई ॥ जाते फिरि तव लोकन आई
तिनकह रामभक्ति करु जाई ॥ कबहुँन नरक परहु पुनिभाई
ज्यहिविधिगयनजवनविधिआयन ॥ सोइमतुमतेवरणिसुनायन
जेनर चतुर सुजान सुकर्मी ॥ लागे करन भक्ति मिलिमर्मी
आपु सालमलगुरुहिंबोलाई ॥ राममंत्र लीन्हो हरषाई

ह.छं. लीन्होंहरषि द्विजमंत्रतारकबहुतविधि उत्सवकियो।
पितुमातसुततियबन्धुकोउघररहनसाकतनाहिंदियो॥
करिनेमसुमिरैं नामपूजन ध्याननित हरिको करै।
सतसंगसाधन सेव हरियश कहैसुनि मनमें धरै॥

दो० यहिविधिरघुपतिभक्तिद्विजकीन्हींअतिअभिराम।
अन्त समय सब कुटुँबलै बस्यो राम के धाम॥
जन रघुनाथ विचारिकै भक्ति करो सतिभाय।
नातरु फिरि पछिताहुगे नर तन बीतो जाय॥
बहुत जन्म सुकृत कियो ताको फल नर देह।
कहै रघुनाथ सो पाइकै जन्म सुफल करिलेह॥
चौरासी लख कोस में यक दरवाजा छोट।
ताहि पाइ जो नाकढ़ै तो फिरि भरमै कोट॥
काल सिचानो शिर खड़ो ताहि डरै नहिं नेक।
फूलो फिरै समुद्र में करत कुकर्म अनेक॥
आखिर को फिर ना रहै मरना तोहिं विशेखि।
ताते हरि भजि लीजिये यहीलाभ मन पेखि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतगृहधर्मकर्मविपाकवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
वरणौं महभारत्थ की पुनि इतिहास बखानि॥
कह शौनक यह जगतमें कोउ धनी कोउ रंक।
कोउ भोगी रोगी कोऊ भूपति भिक्षुक शंक॥
कोउनिशिदिनदुखहीसहतकोउजन्मतमरिजात।
कोउ जियत बहुकालतक कोउ बिनपुत्रलखात॥
काहूके जननी जनक मरत बालपन माहिं।

सो यह कारण कौनहै कहोनाथ मोहिं पाहिं ॥

सुनितबसूत वचनअसभाखा * लखिअधिकारीगुप्त न राखा
शौनक जो तुम पूछेउ आई * सो सब कर्म प्रभाव लखाई
कर्मते दुखसुख रोग अरोगी * कर्मते भिक्षुक भूपति भोगी
कर्मते मरै बाल पितुमाता * और बात कछु नाहिंन ताता
इक इतिहासकहौं अबगाई * जाहिसुनतबहुव्याधि नशाई
यकद्विजगुणनिधिनामसुजाना * सर्व शास्त्रनको जेहिज्ञाना
तेहिके यक कन्या भै आई * नाम सुवर्त्ता छविअधिकाई
चारि वर्ष की भई कुमारी * तबहीं तासु मरी महतारी
तबगुणनिधिनिजमनहिंविचारा * बिनतियभवन बसबधिकारा
कन्यायुत सोवनहिं सिधायो * तामें मुनिआश्रम बहुपायो
तिनकेढिग यककुटी बनाई * रहनलग्यो द्विजअतिहरषाई
करनलाग कन्यहि प्रतिपाला * विप्र जानिये बड़ेदयाला
विविध भांतिके चित्रबनावै * लायखिलौना ताहिखिलावै
राखै ताहि प्रसन्न सदाहीं * होइउदास कबहुं सो नाहीं
मातुहीन अरु बालकुमारी * तेहिहित द्विजसंन्यासनधारी
भई सुवर्त्ता जबै सयानी * तबद्विजब्याहकरनमनआनी
इतने माहिं काल धरिखायो * मनइच्छा सो करन न पायो
मृतक पितहि लखिकन्यारोवै * व्याकुलअधिकधीरनहिंहोवै
कहै सुवर्त्ता बहुविधि बानी * पिता पिताकहि रोदन ठानी

दो० मोकोतजि कितको गयो अहोपिता परवीन ।
दयावन्त सबभांति तुम मैं कन्या अतिदीन ॥

अब इत रक्षक कौन हमारा * मात पिताभ्रातानहिं प्यारा
हाय हाय मैं काकर्म कीन्हा * ऐसा दुःख दैवमोहिं दीन्हा
जरौंअग्निकीजलमेंबहिहौं * कीचढ़िगिरि गिरिमहिमरिजैहौं

पटकै दोउ करशिर भूमाहीं * बिन पितुमा ममजीवननाहीं
सुनि कन्या का रोदन भारी * उठिदौरे ऋषि संयुत नारी

सो० आयेसब तेहितीर समझावैं बहुभांति करि।
धरै न मनमें धीर तात मात कहि शिरधुनै॥

ऋषि पत्नी बहु करै प्रबोधा * नहिं उपजै ताके उर बोधा
लखियमके मन करुणा आई * ततत्तण द्विजका रूपबनाई
पहुंचे आइ सुवर्त्ता तीरा * कह्यो वचनमृदुसुखदगँभीरा

दो० हे कन्या मति रुदनकरु धरुधीरज मनमाहिं।
अपने कर्मन केर फल जाय कहूंसो नाहिं॥

आगे करै सो अब भुगतावै * अब जो करै सो आगेपावै
कल्प कोटितक घटै न सोई * अवशिमेव भोगनकहँ होई
कर्म बीज होनाफल अन्ता * तेहिनिरवंतहोत कोइसन्ता
ताते कुँवारि न रोदन कीजै * पाछिल कर्मकिह्योतसलीजै
कह कन्या भाषौ प्रभुतौना * पूरब कर्म कीन्ह हम कौना
विप्रकहा सुनु सुता सयानी * प्रथम जन्म तवकहौंबखानी
पूर्व जन्म गणिकातैं अहई * उजयनि नगर माहिंघररहई
सुन्दर रूप नयन चपलाई * जेहिचितवै तेहि लेइलोभाई
पुरके लोग बहुत वशतेरे * जो तुम कहौ करैं वहि बेरे
तेहिपुर विप्ररह्यो इकजानो * पुत्र तासु विद्वान पिछानो
पूजा करै धर्म शुभ साधै * पापकर्म नहिं कछु अवराधै
एक दिवस सो सहजसुभाई * तवद्वारेह्वै निकसो आई
देखि तुम्हैं भूल्यो बुधिज्ञाना * रह्योठाढ़ तहँ मनोदिवाना
तब तूजानि ताहि बोलवावा * आदर करि निजढिग बैठावा
वाकीप्रीति तुम्हींसे लागी * मातुपितावनितानिजत्यागी
तेरे विषयबसै दिनराती * चलतफिरतहियतोहिंसोहाती

इक दिन तेरे भवन मँझारा ❋ दूसर कामी आइ पधारा
विप्र शूद्रते भई जो रारी ❋ शूद्रद्विजै तहँ डार्यो मारी

दो० यमकिंकर तेहि लैगये डारेनि नरक अघोर ।
शूद्र तुरन्तै भाग तब भयो नगरमहँ शोर ॥

काहू द्विजगृह आइ पुकारा ❋ तव सुतगा गणिका घरमारा
सुनि पितुमातु नारि दुखपाई ❋ रोदन करत धाम तवआई
पुत्रविलोकिअधिक दुखपागे ❋ तोको शापदेन तब लागे
तासु मातु बोली असि बानी ❋ पुत्र वियोग न धीरजआनी
हे वेश्या तैं सुत वश कीन्हा ❋ यंत्र मंत्रकरि धनहरि लीन्हा
फिर ताको डारे मरवाई ❋ हम कहँ दुखदारुणदिलवाई
पुत्र बिछोह कराये मोहीं ❋ मातु हीन होई दुख तोहीं

दो० पिता तासु ऐसो कह्यो बाल अवस्था माहिं ।
पिता तोर मरिजाइहै जहां हितू कोउ नाहिं ॥
कह्यो भार्य्या पतिविना मोहिं कियेतैं जैस ।
रह्यो कुवाँरी नाहबिन सह्योकष्ट तुम तैस ॥
ऐसो तोको शाप जो दियोतिहूं मिलिजानि ।
ताते दुख यहि उमिरिमें भयो कर्मगति आनि ॥

सो० भले बुरे जो कर्म बिन भोगे छूटत नहीं ।
धरै जो कोटिन जन्म संग न छांड़त एकक्षण ॥

सुनत सुवर्त्ता बोली बानी ❋ द्विजतुम कहा सत्यमैं जानी
जन्मपाछिलो तुमकहि गावा ❋ जेहि क्रमते मैं असदुखपावा
इक सन्देह होतमन मोरे ❋ सो अब पूंछतिहौं करजोरे
मैंदारिकअतिअधमअपावनि ❋ बहुनाहनते नेह लगावनि
विषय मनोरथ नित प्रतिपाले ❋ बहुमनुष्यके घर में घाले
जननिजनककुलधर्मसोत्यागे ❋ जे मेरे सँग नेकहु पागे

कहौं कथा सब पापै कीन्हा ❋ भलोकर्म स्वपने नहिंचीन्हा
द्विजकुलजन्मकौनविधिपायों ❋ सबदिन खोटे कर्म कमायों
अरुतुमदरशदियोकिमिआई ❋ सुनि भूसुरबोला सुखपाई

दो० जौन कर्म ते विप्रकी सुता भई तू आइ।
दीन दरश में पुण्य जेहि सुनुसो कहौं बुझाइ॥

एक विप्र हरिभक्त सुजाना ❋ समदरशी गुणज्ञाननिधाना
गोगज श्वान विप्र चण्डाला ❋ सबमें इकदीखै नँदलाला
जपतप आदि धर्म जो ठानै ❋ तेहिकर फल अर्पै भगवानै
इन्द्री जीति घेरि मनराखै ❋ झूठ वचन मुखते नहिंभाखै
कामरुक्रोध मोह मदत्यागी ❋ रहितलोभहरिपदअनुरागी
मैं अरुमोरि तोरिनहिं जानै ❋ दुखसुखकोसामान्य पिछानै
नहिं कछु आश्रम बन्धनताके ❋ कुलकुटुम्ब कर मोहनजाके
जितचाहै तितही बसि रहई ❋ हर्षशोकनहिं विस्मय गहई
एक दिवस पुरवासा लेवै ❋ दूजे दिन तहँ ते चलिदेवै
विचरतसहज सुभायसोहायो ❋ यकदिननगरतुम्हारे आयो
देखि श्वेत तवद्वारे माहीं ❋ बस्योसंतनिशिखोटपननाहीं
मैले वसन शरीर कृशाना ❋ त्यागे विषय भोग जोनाना
आधी रात भई निशि नासा ❋ बैठे भजन करै हरिदासा

दो० तेही समय कुतवाल की फेरी पहुँची आइ।
कह्यो सन्त सों कौन तू सो तौ मौन रहाइ॥

तिन्हैं उतरकछु दियो न जबहीं ❋ चोरचोरकरि पकर्यो तबहीं
द्विजकछुसांचवचनसमुझायो ❋ दुष्टनमन विश्वास न आयो
खैंचिचले लै अपनेसाथा ❋ नहिंकुछदुखमान्योद्विजनाथा
तैं जागै अपने घरमाहीं ❋ शोर सुनत आई तिन पाहीं
दीपमँगाइ द्विजै दिखरायो ❋ तबतुम तिनते वचनसुनायो

जो यह चोर होइ सुनिलीजै * तौ चाहौ सो हमको कीजै
सुनितववचनदिहिनिछुटकाई * करगहि तू निजमंदिर लाई
चरण पखारि पलँग बैठावा * धूप दीपकरि पदशिरनावा
कह्योकछुकदिनममगृह रहऊ * पहिरौंवसन जौनविधिचहऊ
षटरस भोजन करौ बनाई * जाते देह पुष्ट है जाई
सुनत सन्त बोल्यो शुभबानी * ज्ञानविराग भक्ति रससानी

दो० धन्य मातु तव भाटको मोहिं चही कछुनाहिं।
वृथासकलसुखजगतके विनशिजात चणमाहिं॥
क्षुधातृषा सुख भोगकी कछुइच्छा नहिंमोहिं।
सहज आइ निकस्यो इहां सत्य सुनायों तोहिं॥

तुम समानमें और न चीन्हा * परउपकार आजु तें कीन्हा
पर उपकारी धनि नर नारी * भवसागर सो होवै पारी
तुमपर तुष्ट होइँ भगवाना * मेटैं जग कर आवन जाना
मोको कछु चहिये कहिमाई * करहुशयन निजसेजहिजाई
यहिविधिसन्तकह्योसमुझाई * तबतें पुनि बोली शिरनाई
महाराज मैं धनिहौं आजू * दरशन पाइ सरे सब काजू
पापचारिणी मैं असिनारी * जेहिभवतरों सोकहौविचारी
कह्यो संत भवतरण जोचाहै * तौ हरिशरण आइकै गाहै
काम क्रोध मद मोह निवारै * निज अभिमान दंभपरिहारै
तृष्णा लोभ मछरता दहई * इन्द्रिन के मारग नहिंबहई
थिरस्वभाव एकांत निवासी * दुखसुखसमचितधर्मप्रकासी
उपज्योनताहिम्रतकपहिचानै * मिले न हर्ष शोक गयआनै
नाशवन्त सब जगका देखै * आतम अचल अखंडितपेखै
शमदम शील दया उरराखै * गुरुते गर्वित वचन न भाखै
परदुख देखि तासु दुखहरई * हरिहरजन की सेवा करई

रामनाम सुमिरै मन लाई * राम छांड़ि चित अन्त न जाई
ऊठत बैठत भोजन पावत * श्वासश्वासप्रतिनामैध्यावत
आन उपाय सकल परिहरई * केवल रामनाम व्रत करई
सो संसार तरै सतिमानो * यामें कछु संदेह न आनो
मुक्त होय भवबंधन छूटै * फिरि तेहि यमकिंकरनहिंकूटै
ताते तुमहूं येही कीजै * नरतनपाइ सुफल करिलीजै
भय निद्रा मैथुन आहारा * सब योनिनमें मिलतनिहारा
हरिसुमिरण याही ते होई * सबयोनिनसम ताहि न खोई

दो० ऐसे तोहिं उपदेशही करत भयो भिनसार ।
साधू उठि रमतो भयो धरि हरिपद उरसार ॥

तबतोहिं उदय भयो वैरागा * विषयविलासवमनसमत्यागा
धर्मवृत्ति हिरदयमहँ धार्यो * कंचनमृतिकासरिसनिहार्यो
तजिघर वनमें वासा कीन्हो * रामचरण पंकज चितदीन्हो
द्विजरत्ता करि हरिको ध्यायो * जन्मविप्रकुल तेहिपुनिपायो
प्रथमे द्विजनशाप जो दयऊ * तेहिते तोहिं दुःखयह भयऊ
संत कृपा यमजाल न परेऊ * संतकृपा सब पातक जरेऊ
संत कृपाते नरक न लहेऊ * चौरासी बिच नाहिंन बहेऊ
संतकृपा मैं दरशन दीन्हों * पूर्व कर्म तव वर्णन कीन्हों
यह मैं भेद सकल कहि गावा * जो तुम पूरब कर्म कमावा

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृतसुवर्त्ताकथावर्णनोनामत्रिदशोऽध्यायः १३ ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौंमिमांसा शास्त्रमत सोइ इतिहास बखानि ॥

सुनत सुवर्त्ता वचन उचारा * नाथ शोक तुम मोर निवारा
तदपिसुरतिकरिदुखह्वैआवत * मोहविवशमनबोधन पावत

तातै बातकहौं अब सोई ❋ जाते फिरि मोहिंदुःखन होई
कह द्विजसुनु कन्या मनलाई ❋ तहँदुख जहँ सनेह सरसाई
बिन सनेह दुखहोय न कैसे ❋ शुक मूषकसुत सेदज जैसे
सब जीवनमें समता आनै ❋ शत्रु मित्र मध्यस्थ न मानै
वपुधरिहानि लाभ जो होई ❋ कर्मन के शिर राखै सोई
जैसे नारि गौतमी कीन्हा ❋ पुत्रशोक तेहिभयो न चीन्हा
कह कन्या सुनिये द्विजराई ❋ कथा गौतमी कीजो चलाई
मैं अज्ञान न ऐसे जानो ❋ ताते कर विस्तार बखानो
बोला विप्र कुवँरि सुनि लेहू ❋ कहौं कथा तामें मन देहू

दो० ज्ञानवन्त धीरज बड़ी दया हृदय वैराग।
नारि गौतमी जानिये हरिपद में अनुराग ॥

करै तपस्या वन के माहीं ❋ परमकठिनकहिजातसोनाहीं
ताके रहै पुत्र यक जानो ❋ खेलै तहँ निर्भय पहिचानो
यकदिन एकतरू शिशुगयऊ ❋ काट्यो सर्प तुरित मरिगयऊ
तहँ यकवधिक देखियहुहाला ❋ डारिफांसपकस्योसोइव्याला
लायो जहां गौतमी रहई ❋ तासों वधिकवचनअसकहई

अ० छं० बालक तिहारो। सर्प ने सँहारो ॥
बड़ोदुष्ट जान्यो। पकरिताहिआन्यो ॥
तजो नाहिं याको। बदल लेव वाको ॥
चही जाय पोषी। भयो ब्रह्मदोषी ॥

ऐसे वचन सुने भयकारी ❋ बोलत भई गौतमी नारी
अहो वधिक मैं कहौंसोकीजे ❋ अबहीं छांड़ि सर्पको दीजे
याहि हते सुत जीवे नाहीं ❋ वृथाधरे क्यों अघशिरपाहीं
कह्यो कीर हिंसक ठग कोई ❋ ताहिवधे कछु पाप न होई
बालक दोषी सर्प अनारी ❋ मैं तो याहि डारिहौं मारी

सुनि गौतमी कही असबाता * मुये को कहा करै तू घाता
कामी क्रोधी हिंसक रोगी * अयशी कृपण दरिद्री शोगी
बूढ़ मूढ़ तृष्णा के जारे * राजअग्नि जल सिंह बिदारे
रामविमुखनिन्दकअभिमानी * पापी कोल कालवश जानी
वेद विदूषक हरिजन द्रोही * भुजँग भूत तनपोषक होही
ये सबजीव मृतक सम जानो * मुरदे कहा मारनो ठानो
अपने कर्म ते मर्यो कुमारा * अपने कर्म तुमजाय निहारा
अपने कर्म सर्प बँधि आवा * जसकीन्हेसि तैसाफलपावा
परको दुख देवै जो कोई * सोई दुख ताहू कहँ होई
बोलै गिरा कूप को जैसी * वाही समय मिलै तेहि तैसी
जो दरपन का थाप उठावै * तैसी थाप ताहि बनिआवै
पिछिले जन्मकर्म किये जैसे * भोगे देह धारिकै तैसे
बालक नहीं सर्प ने मार्यो * वाके कर्म वाहि संहार्यो
तेहिते वधिक छांड़ि दे येहू * दोष भुजंगहि नाहक देहू
सुनि गौतमी केर अस बैना * बोला उरग पाय उरचैना
यामें है कछु दोष न मेरा * मैं तो फिरौं मृत्युका प्रेरा
बालक मोते कैयो बारा * भई भेंट इहिविपिनमँझारा
डस्यों न मैं तेहिसहजसुभाये * विना मृत्युकी आज्ञा पाये
अससुनि मृत्युतहांचलिआई * बोली वचन सत्यसुखदाई

सो० हौंनहिं खायों बाल नहीं वध्यो यहि सर्पने।
दई जो आज्ञा काल सोइ करौं मैं आइके ॥

मैंहौं काल राय की चेरी * आज्ञा होइ ग्रसौं वा बेरी
काल कहै ताको मैं खाऊं * विना निदेशनिकटनहिंजाऊं

सु० छं० सुने बैन ऐसे जबै कालराया।
धरी देह छिप्रै उसी ठौर आया ॥

कह्यो सर्पनाहीं नहीं मृत्युमार्‌यो।
नहींरोग कोई जो मैं नाश धार्‌यो॥
करै कर्म जो जैस तैसाहि पावै।
विना भेद जाने हमैं दोष लावै॥
मरै औ जियै वृद्ध बालक जवाना।
सोतौ कर्महीते नहीं और आना॥
कोई कर्म कैकै बहुत काल राहै।
कोई कर्म कैकै अगिनिमें न दाहै॥
कोई कर्म कीन्हों हमैं जीतिलीन्हों।
बस्यो विष्णुके धाम विश्राम चीन्हों॥

दो० कोई कर्म करि नीचते भये ऊँच कोइ गर्त्त।
कोइ बोरत तारत कोई सिरजत पालत हर्त्त॥
कोइ जल डूबै तरुगिरै अगिनिजरै विषखाय।
कोइ सहस्रन रोग कोउ सर्पडसे मरिजाय॥

काहुइ सिंह भेड़िया खावै * कर्मकिहिनि तसिमृत्युहिपावै
चित्रकेतु सुत गजह्वै जनमा * रानीसकल गिंजाई वनमा
पग तर पीसिगई मरिजोई * विषदै बदला लीन्हेनि सोई
कीरबिछोह जानकी कीन्हों * ह्वैसो रजक निंदि वनदीन्हों
दशरथ दुख अंधन का दयऊ * पुत्रशोक तनु त्यागत भयऊ
चतुरानन कन्या को धायो * तेहिंक्रमते शिवशीशगिरायो
बालिहि रामबाणते मार्‌यो * द्वापरमें सोइ बदल विचार्‌यो
कीर भयो द्वापर महँ सोई * कृष्ण चरण मार्‌यो शरजोई
गांधारी सुत शतगे मारे * कमठ अण्डरुज हेत बिदारे
कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई * कर्म ते नृप वर भयो जटाई
कर्मते भे नृगनहुष कुजंतू * कर्मते रवि शशि राहु ग्रसंतू

हरिचन्दाते जो छल कीन्हा * तेहिक्रमश्रापजन्मजगलीन्हा
नारदशाप विष्णुकहँ दयऊ * कर्मते शम्भुलिंगगिरिगयऊ
कहँलगिकहौंकर्मजसकीन्हा * तससबहिनमिलिभोगैलीन्हा
तेहिते कर्मप्रधान जगअहई * दुखसुखजीवकर्म्म करिलहई

सो० सम्पति बिपति कलेस उत्पतिपालनयशअयश।
होत कर्म ते तैस यामें दोष न मोर कछु॥
सुनत कालके बैन बुद्धि फिरी तब वधिककी।
भाविरागउरऐन छांड़िदिहिसि तेहि सर्प कहँ॥
सर्प मृत्यु अरु काल जित ते आये तित गये।
भयो वधिकउर शाल कर्म पाछिले सुरति करि॥

दो० वधिक गौतमी के चरण पुनिपुनि शीश नवाय।
लग्यो योगजपतपकरन कुलकी रीतिगवाँय॥
वधिक गौतमीकी कथा भई जौन विधिजानि।
सो कन्या तोसों कही मैं संक्षेप बखानि॥
अस ब्राह्मणके वचनसुनि मनमें कीन्ह विचार।
पुनि कन्या बोलत भई वचन महा सुखसार॥
मेरेमन को दुख हस्यो कस्यो बोध बहुभांति।
गयो मोह अज्ञान अब हृदय में आई शांति॥

सो० योगी जानत भेव अगले पिछले जन्म कर।
सो मोसों कहिदेव हे स्वामी तुम कौन हौ॥

कह्यो विप्र सुनकन्या बाता * मैंहौं यमपापिन दुख दाता
तोको दीनदुखी अतिदेखा * कीन्हों बोध आयद्विज भेखा
मांगो वर भावै जो तोहीं * अतिप्रसन्नजियजानहुमोहीं
कहकन्या पितु मात हमारा * सुहृदबन्धु सगरो परिवारा
बसैं स्वर्गजबलागि शशिभानू * यही मोहिं दीजे वरदानू

एवमस्तुकहि यमचलिभयऊ * तुरत सुवर्त्ता यह व्रतलयऊ
जप तप लागी करन उदारा * कन्दमूल भखिभोग बिसारा

गी.छं. बिसरायतन सुखभोगजगके तुच्छमनमें जानिकै
लागीकरनहरिभक्तिसुमिरण ध्यानज्ञान पिछानिकै
सब कर्म बन्धन काटिकै श्रीरामके धामैं गई
सुरसिद्धमुनिगति जौनदुर्लभभजनकरिपावत भई

दो० आठ पहर चौंसठ घरी तिनमें भजिये राम।
जन रघुनाथ न भूलिये यही सयानो काम॥
यह इतिहास पुनीतमैं वरण्यो मति अनुसार।
कहै रघुनाथ जो उरधरै भवसागर ह्वै पार॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतगौतमीसुवर्त्ताधर्म्मप्रसंगवर्णनोनामचतुर्द्दशोऽध्यायः १४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं भार्तकीकथा कछु अवध विलासबखानि॥

सो० पुनिशौनक मुनि पाहिं पूछ्यो दोउ करजोरिकै।
दान तपस्या माहिं अधिक कहा सो वरणिये॥

सुनत सूत बोले हरषाई * सुनु शौनक मैं कहौं बुझाई
तपते दान अधिकहै जानी * श्रद्धा सहित करै जो प्रानी
बहुत कष्ट करि द्रव्य कमावै * तेहि परमारथ माहिं लगावै
ताको यश त्रिभुवन महँहोई * बसैस्वर्गमहँ निश्चय सोई
जो सुधर्मकरिफलनहिं चहई * तौ हरिभक्त परमपद लहई
तापर यक इतिहास बखानो * सुन्दर महा पुरातन जानो
मुद्गल विप्रएक सुत नारी * बसतरहे कुरुक्षेत्र मँझारी
सीलाबीनिविरति असिगहई * पाख एकतक जोरत रहई
डेढ़ सेर जब इकठे होई * पीसि बनावै भोजन सोई

साधु विप्र प्रथमैं भुगतावै ❋ पाछे अपना सब मिलिपावै
यहि भांतिन बीते बहुकाला ❋ द्विज निजधर्मकरै प्रतिपाला

अ.गी. एकदिवसऋषिदुर्व्वासा। सुनिविमलबड़ाईतासा ॥
ते लेन परीक्षा आये। हरिजन का वेष बनाये ॥

म. छं. अरु देह क्षीन। तन वसन हीन ॥
द्विजद्वार आय। तप को छिपाय ॥
लखिविप्र सोय। अति मगन होय ॥
दण्डवत कीन। पग धोय लीन ॥
आसन पधारि। आरति उतारि ॥
दोउ पानिजोरि। बोल्यो निहोरि ॥

महाराज धनिभाग हमारे ❋ जो निकेत तुम आइपधारे
जेहिगृह सन्तचरण नहिंजावै ❋ अश्मशान तहँ भूतरहावै
तवदर्शन निर्मल मन भयऊ ❋ संचितकर्मसकल जरिगयऊ
भोजनरहे सो आगे राख्यो ❋ दीनवचन बहुमुखते भाख्यो
सुनिद्विजवचन गूढ़ सुखदाई ❋ पावनलग्यो संत हरषाई
जेइँचुक्यो कछु जूंठनि रह्यऊ ❋ सोऋषिबांधिबगलमेंगह्यऊ
एकौग्रास न तिनको बाच्यो ❋ विप्रप्रसन्नभयो मत सांच्यो
दुर्वासा चलिभे निजगैला ❋ मुद्गलमन नाहिं आयो मैला
षट पखवारे ऐसे करेऊ ❋ खाइजाइ द्विज दोष न धरेऊ
और भाव दिनदिन अधिकाई ❋ नेक कृपणता मनहिं न आई
लखि दुर्वासा दूगुन भावा ❋ भीतर बाहर यकसम पावा
बोलतभये विप्रते बानी ❋ हर्षसहित निर्मल सुखदानी

तो.छं. धन्य तुम जगमाहिं। असदानि दूसरनाहिं ॥
निजअशनहमकोदीन। बड़दान तुमने कीन ॥
तिहुंलोक में यश तोर। होई वचन फुर मोर ॥

अरुविष्णुके पुरजाइ। बसिहौ तहां सुखपाइ॥
जो मुनिनदुर्लभभक्ति। मिलिहै तुम्हैंसोशक्ति॥
असवचनसुनिद्विजराय। बोल्योवचनशिरनाय॥

सो० अहौसंत सुखभौन तुम किरपा जापर करौ।
मोक्षआदिसुखजौन मिलतसहजमेंआइतेहि॥

व.छं. यहिविधि करत बतकही विप्रसुजान।
स्वर्ग लोक ते लाये दूत विमान॥
सुर विमान की उपमा कही न जाय।
सातस्वर्गकी विभव जुमाहिं लखाय॥
रतनजटित अति उज्ज्वल शोभावान।
उतरयो नभते मानो चन्द्र समान॥

सु.छं. सुरदूतपुनि बन्दनकही। इंद्रादि देवनकी सही॥
तवहेतुजियआयोभलो। चढ़िस्वर्गकोअबहीचलो॥
अस बैनदूतनके सुने। मनमाहिंद्विज मुद्गल गुने॥
बोल्यो बहुरिहरषाइके। दूतौ सुनौ मन लाइके॥

सो० सुरपुर दुखसुखकौन गुण अवगुण तामें कहा।
कहौ कृपाकरि तौन हौं प्रभु जाते जानिये॥

कह्योगणन हे सन्त कृपाला * तुमको सब मालुम है हाला
दीन जानि प्रभु दायाकरेऊ * हमते प्रश्न ऐसि उच्चरेऊ
सुनो स्वर्गसुख वरणौं सोई * जन्ममरणकी व्याधि न होई
भय न कलेश लेन नहिं देना * क्षुधा तृषा नहिं व्यापत जेना
कल्प विटप मनसाका पूरा * छांह बसे होवै दुखदूरा
रतन जटित हेमालय धन्यऊ * सुभगसेज पटभूषण घन्यऊ
दिव्यरूप है बासा पावै * सेवाकरन अप्सरा आवै
स्वर्गमाहिं अस सुखहै भाई * सो हम तुमका दीन बताई

दुख अबताके सुनो ऋषीशा * कहौंसोई जो आंखिन दीशा
इकतोकछु करतव्य न होवै * जाते पुण्य बढ़ै अघखोवै
करी कमाई जो फल खावै * खात खात कमती ह्वै जावै
परकीपुण्य अधिकलखिसोई * तबै ईर्षणा मनमें होई
पुण्यक नाश सद्य ह्वै जावै * फिरि सो मृत्युलोक को आवै
जपतप यज्ञनते सुरलोका * मिलतइ मपि ताहूमें शोका
देव दूतकी ऐसी बानी * सुनि मुद्गल बोल्यो सुखमानी
काम क्रोध मद मत्सर आदी * जहँआतितहँके सुखसबबादी
स्वर्गमाहिं है दुःख अपारा * तेहिमन चाहत नाहिं हमारा
निश्चल धाम होइजो कोई * हमते वरणि सुनावो सोई

दो० कहगए स्वर्ग पतालये सब नाशक ये जानि।
स्वर्गलोक विधिलोकलौं सबकी होवै हानि॥
विष्णुलोक नित थिररहै उतपति परलय नाहिं।
सुखतित बहुत प्रकारके बसत सन्त तेहि माहिं॥
जन्म मरण तामें नहीं अकस ईर्षणा व्याधि।
आनन्दै आनन्द है राम धाम आनादि॥

तो.छं. तहँरहतहैं हरिराय। ऐश्वर्य्य कछुकहौं गाय॥
जेहिराजसबब्रह्मण्ड। चौदहभुवन नवखण्ड॥
वैकुंठगढ़ आजीत। चाकर सकल सुरमीत॥
विरंचि जासु देवान। है फौजदार ईशान॥
मातंगवसु दिगपाल। पानी भरै घनमाल॥
कोतवालहैं यमराज। नात्तत्र मानहुँ बाज॥
मुस्तौफि चित्रगुपित्र। लम्बोदर मुंशी तित्र॥
पुर देव कानौगोइ। औजीर अक्किल सोइ॥

स.छं. अरुसूबाशेष विचारी। कूबेर जासु भण्डारी॥

चहुंखानि लाख चौरासी। तेहैं सबकरिखनवासी ॥
करै परारब्धकर भोगा। रहैसबपर कर्म्मदरोगा॥
अहदी ग्रहरोगअनन्ता। जागीरतगीर करन्ता॥
यमदूत पियादा फिरहीं। जे राम विमुखते धरहीं॥
महिषेशलोकबँदिखाना। बहुनरकभाषसी जाना॥
हरिधर्म पोत बिनदीन्हें। तहँपरतआइशठचीन्हें॥
बिनवेद प्रतिग्रह धारी। ते जानहु सबै बेगारी॥
परबी पचग्रह जानो। तहसीलदार यह मानो॥
जपतपव्रतदानहिंकरहीं। तेनर जनु पोतहिं भरहीं॥
मदकामक्रोध अहँकारा। डकइत लूटत संसारा॥
सतसंगनकी बतयारा। सोकरतफिरतहुशियारा॥
है अन्नपूरणा मोदी। देसबै अहारे सोदी॥
वकील वीर हनुमाना। जय विजय रहत दरवाना॥
शुचि सेवक भक्त पियारे। जिनके हित नरतनु धारे॥
सुरलोकसकल जागीरा। सरसहना जासु समीरा॥
अरु धर्म नवीन करारा। है भक्ति बड़ी सरकारा॥
नौबतिहै अनहदतासा। चोपै बरबारहु मासा॥
भूलोक जासु बाजारा। तहँ होत कर्म व्यापारा॥
सेराइ द्वीप अरुखण्डा। धनुकाल मृत्यु परचण्डा॥
वन बाग अठारौबागा। हैं सातो सिंधु तड़ागा॥
परबत सब बिल्लीजाना। तम्बू नभ दीरघ ताना॥
बन्दीगण वेद कहावैं। जे नेतिनेति यशगावैं॥
जिनकी प्रिय लक्ष्मीरानी। साहेली गिरा भवानी॥
देभक्ति मुक्ति दो दाना। तेहिधेत्तक संत सुजाना॥
हैऋद्धिसिद्धिजेहिदासी। सोनिशिदिनकरैंखवासी॥

दो० कोटि कोटि ब्रह्माण्ड हैं रोम रोम प्रति जासु।
कहै रघुनाथ बखानि कोउ पारकि पावै तासु॥
सुनि प्रभाव अस विष्णुको मन हर्ष्यो महिदेव।
पूछ्यो हरि पुर किमि मिलै ताको कहिये भेव॥
मिलै जो वह पद भक्ति से योग ज्ञानमन लाय।
और उपाय करै किते विष्णुलोक महँ जाय॥

सो० देवदूत के बयन सुनि बोल्यो मुदगल बहुरि।
जाहु आपने अयन कह्यो वन्दना सुरन ते॥

दो० देवदूत भेजे स्वरग आप भक्ति मन लाय।
करणी बल निजकुटुँब युत बस्यो विष्णुपुरजाय॥

सो० तप ते अधिकी दान सह श्रद्धा के जो करै।
होय भुवन विख्यात भक्तिमिलै पुनिद्विजसारिस॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतमुद्गलप्रसंगबर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥

दो० सुमिरि रामासियसन्त गुरु गणपगिरा सुखदानि।
हरि धर्मोत्तर ग्रन्थकी कहौं इतिहास बखानि॥

सो० सुनिशौनक सुखपाय नाइ शीश बोल्यो बहुरि।
नाथ कहौ समुझाय पुण्य बढ़त केहि द्रव्य ते॥

कहासूत मुनि कहौं बुझाई ❋ जेहिधन धर्मबढ़ै अधिकाई
सुकृतकरि जो द्रव्य कमावै ❋ तेहि परमारथ माहिं लगावै
बाढ़ै पुण्य पाप है नासा ❋ सो नर लहै स्वर्ग में वासा
अधरमकरि जो द्रव्य कमावै ❋ धर्म माहिं पुनि ताहि लगावै
ताकी पुण्य वृथाही जानो ❋ सुना एक इतिहास बखानो
नृप यक वीरभद्र अस नामा ❋ सोरठनगर माहिं तेहिधामा
करै पुण्य बहुभांतिन राजा ❋ गजरथ भूमि पालकी बाजा

सो० सुवरण सींग मढ़ाय मुक्ता पूंछै रजत खुर।
पीताम्बर ओढ़वाय देइ धेनु इमिद्विजनकहँ ॥

शय्यादान करै पटदाना ❋ यज्ञमहोत्सव बहुविधि ठाना
तेहिपर एकबार विधियोगा ❋ नृपयक चढ़्यो संगलैलोगा
निशाअचानक नगरलुटायो ❋ कैदकीन जेहि पकरे पायो
रानी नृपति अतिथिके वेषा ❋ भागिबचे काहू नहिं पेषा
आये एक नगर के माहीं ❋ देबुकामात्र रहे ढिग नाहीं
करमुद्रिका एक नृप चीन्हा ❋ बेंचिकछुकदिनभोजनकीन्हा
नातेदार रहैं पितु मामा ❋ रानीसहित गयो तेहि धामा
तहां नहीं कछु आदर पायो ❋ बहुरिभूप भगिनी घरआयो
जानि अभाव जनकलघुभाई ❋ तिनके निकटगयोचलिराई

सो० रहे तहां कछुकाल पुनिलागे अनखान सब।
चलिभेतुरतभुवाल समुझिकर्मगति मनबिषे ॥

दो० जाके भवनै जाइँ चलि बात न पूंछै कोइ।
बिपति परे हरिबिन कोई काहूको नहिं होइ ॥

कुं० कमलकेरपितुसरितपाति गरलसुधाशशिभाय।
मित्र भानु ब्रह्मातनय विश्वभरा जेहि माय ॥
विश्वभरा जेहिमाय श्री रम्भा दोऊ भगिनी।
बहनोई हरिश्चन्द्र नाति शिव सुन्दर भगिनी ॥
असपरिवार सुसारजड़ जारि दियोनिशियाम।
बिपति परे रघुनाथबिन कोई न आयो काम ॥

भूंखन मरन लगे नृप रानी ❋ भिक्षाकेरि युक्ति तब ठानी
घर घर भिक्षा करै भुवारा ❋ तनपर वसन न जुरैअहारा
कछुककालयाविधिचलिगयऊ ❋ नृपरानी से बोलत भयऊ
संभरिगढ़ इक शाहु सुजाना ❋ मानिकनाम विदितधनवाना

बेंचन पुण्य जात जो कोई ❋ मानिक शाहु लेतहै सोई
कागज़पर लिखि तुला चढ़ावै ❋ ताहि बराबर सोन देवावै
रानी कहा सुनो नृपराई ❋ तुमहूंकीन्ह पुण्य अधिकाई
तामें कछुक बेंचिलै आवो ❋ पहिरो वसन पेटभरि खावो
जो जगमें तनु रही हमारा ❋ करबदान पुनि बहुत प्रकारा
कह राजा रानी सुनि लेहू ❋ मारग को खरचा कछु देहू
सुनि रानी तुरतै उठिधाई ❋ गृह गृहते भिक्षा करिलाई
नृपके वसनबांधि सोइदीन्हा ❋ गणपतिसुमिरिपयानाकीन्हा
तेहि वासर निशिभै तरुपाई ❋ रह्योसो तियबिन भोजनराई
दुसरे दिन चलि सरयकपायो ❋ करिमज्जन नृप भौंरी लायो
सँकितूर्ण हरिभोग लगावा ❋ तेहिक्षणयकअभ्यागतआवा
क्षुधावंत बोला हर आई ❋ सुनि नृपके मन करुणाआई

दो० होय धनी कंगाल जो तद्यपि रहे उदार।
जन्म दरिद्री धनलहै करि न सकै उपकार ॥
द्वै भौंरी अभ्यागतहि दीन्हीं करि सन्मान।
दुइ पुनि अपना खायकै कीन्हों बहुरि पयान ॥

तिसरे दिवस शाहु पहँ आयो ❋ आदर करि राजा बैठायो
पूंछेउ वणिक कहांते आये ❋ कोहौ कौने काज सिधाये
सुनि नरेश असवचनप्रकासा ❋ सोरठते आयन तुव पासा
बेंचन पुण्य हेतु यह ताता ❋ तुमहूं लेत सुनी हम बाता
अससुनिशाहुउतरुतबदीन्हा ❋ बेंचहु पुण्यजवनकछुकीन्हा
लिखिकागज़पर तुलाचढ़ावो ❋ सांची लिखो द्रव्यजेहिपावो
दश सहस्र मखकीन्हों राई ❋ सो लिखिमानिकतुलाउठाई
पलरा दोऊ रहे समाना ❋ रती न चढ़ा महीप लजाना
बोलाशाहु और लिखिधरहू ❋ सांची लिखो झूंठ परिहरहू

सो० हेम गऊ गज बाजि दीन्हों कन्यादान जो।
तुला चढ़ायो राज सोऊ सब बिरथा भयो॥

जहँलगि लोग रहे तेहिठामा * हितूगुमास्ता चार गुलामा
सबन कही झूठे तुम अहऊ * ठगहीकरिसुखसम्पति चहऊ
जो तुम करते दानरुधर्मा * कंचन चढ़त न कौने मरमा
लखिरुख बोला शाहुसुजाना * कौने समय कीन तुम दाना
वीरभद्र कह सुनिये शाहू * जब हमथे सोरठके नाहू
गजरथ तुरग पालकी याना * भृत्य मृताबहु चमू खजाना
तब यह दान दीन्ह हमभाई * तुमते सांची कहा बुझाई
बोला विट का चढ़ै भुवारा * यह अधर्म कर धर्म तुम्हारा
लूटि बांधि परजै दुख दिहेऊ * बनितनकहँबिनबस्तरकिहेऊ
बछरा गऊ बेढ़ि ले आयो * हरियर वृक्ष अनेक कटायो
आवाकोउ फिरियादी दीन्हों * लैधनसांच न्याय नहिंकीन्हों
सो धन आनि धर्म तुमठाना * ताते कौन पुण्य परमाना
जबते रंक भयो तुम राई * तबते पुण्य किह्यउ कछु भाई

दो० कह्यो महीपति वचन मृदु सुनिये शाहसुजान।
भिक्षाकरि भोजन मिलै काहेम कीजे दान॥

कुं० कीन्ह पयाना यहां को सुमिरि हृदय गणराय।
तेहिमग इकसरके निकट भौंरी चारिलगाय॥
भौंरी चारि लगाय अर्पि हरिग्रास उठावा।
तेहि समय ममनिकट एक अभ्यागत आवा॥
क्षुधित देखि मैं तासु को उभय मधुकरी दीन्ह।
रंक भयन तबते सुनहु यही पुण्य जगकीन्ह॥

सुनिमानिकालिखितुलाचढ़ायो * डांड़ीगहि धरि हेम उठायो
तबहीं पला गरू ह्वै गयऊ * पुनि लै पुरट चढ़ावत भयऊ

ज्योंज्यों कंचन आनि चढ़ावै * त्यों त्यों पला अधिक गरुवावै
जहँलगि सुवरण शाहु निकेता * द्वै भौंरी सम भयो न तेता
बोला मानिक सुनहु नरेशा * अब नहिं हेम हमारे लेशा
तेहिते जो कछु है सोइ लीजै * अपने नगर पयाना कीजै
सुनि नृप महिषाऊंट मँगायो * सकल कनक तिन माहिं लदायो
लीन्हे संग सिपाही नाना * जिन सोरठ कहँ कीन्ह पयाना
पहुँचे दिन तिसरे घर आई * लखि रानिहिं भा सुख अधिकाई
बहुरि सेन नृप साजि अनेका * चतुरंगिणी एकते एका

दो० दै डंका अरि भूप पर चढ़ा चमू लैजाय।
रामकृपा तेहि जीतिकै लीन्हों राज छिनाय॥

आय निकेत महोत्सव कीन्हा * विप्रन दान बिविध बिधि दीन्हा
करन लाग पुनि राज भुवारा * पालै प्रजा अनेक प्रकारा
अधरम कछुक होन नहिं पावै * करै ताहि नृप दण्ड देवावै
लागेहु करन भक्ति युत रानी * छाँड़ि अनीति कर्म मन बानी
आवै साधु नगर में कोई * मिलै पुरःचलि भूपति सोई
करि प्रणाम मंदिर लै आवै * पद पखारि निज शीश चढ़ावै
षोड़श भांति पूजि सनमानी * मन जोगवत रहै भूपति रानी
सुनै कथा हरिकीरति गावै * तजि सतसंग अनत नहिं जावै
सेवक सचिव करैं पुरकाजा * विष्णु चरण सेवै नितराजा
भवन बनाय सुवस्तु भराई * मुदित देइ महिदेवन राई
सुमन वाटिका बाग लगाये * वापी कूप तड़ाग खनाये
करै जो धर्म कर्म शुभ जानी * वासुदेव अर्पै नृप ज्ञानी
सहित नेम सुमिरै हरिनामा * क्रोध न लोभ मोह मद कामा
युक्ति सहित करि भोग विलासा * समय पाय तनु तजि अनयासा

ह० कं० अनयास निजवपु त्याग मोह हरि रूप करि आयुध धरे।

भुजचारिउरपट मुकुटकुण्डल तिलकशिरमालागरे
आरूढ़शुभग विमानलखिसुर सुमनबहु बरषायहू
जप योग तपते अगम सो पद भक्तिकरि नृपपायहू

दो० कहरघुनाथ अधर्मकरि पुनि हरिसुमिरण कीन्ह ।
करम बन्धते छूटिकै मोक्ष स्वरूपी लीन्ह ॥
तजिकुकर्म शुभकर्म करि द्रव्य कमाय जो कोइ ।
ताहि लगावै धर्ममें तपते अधिकी होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरभवमतंआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतवीर भद्रप्रसंगवर्णनोनामषोड़शोऽध्यायः १६॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
महभारत सदग्रन्थको कहौं इतिहास बखानि ॥

सो० शौनक सहित हुलास पूंछेउ कै पद धर्म के ।
कितउतपतिकितनासकितअस्थितिविस्तारकित ॥

कुं० कह्यो सूत मुनि धर्म्म के चारि चरण पहिंचान ।
प्रथम सत्य पुनि दयाहै और तपस्या दान ॥
और तपस्या दान सत्यते उतपति सोई ।
दया तहां विस्तार क्षमा ते अस्थिर होई ॥
नाश होतहै लोभ करि क्रोधौ ते दूरी रह्यो ।
कृतयुगचहुँपुनितीनिफिरिदुइकलिइकवेदनकह्यो ॥

दो० सुनशौनकजिहिभांतिजिनधर्मकिहिनितनुधारि ।
लिखे पुराणन में कहौं तिनमें ते दुइ चारि ॥
भूप त्रिसंकुचतुभुजबली महि मण्डल रिपुजीति ।
दीन्ह्यो सुख गो द्विजप्रजन सहित वेदकीरीति ॥

चन्द्रप्रभा रहै तिनकी बाला ॥ जिनजाये हरिचन्द्र नृपाला
बदनावति हरिचन्द्र कि रानी ॥ जासुसुयश त्रिभुवनमेंजानी

तासु तनय रोहिणी कुमारा * इन्द्रावती बधू सुकुमारा
करै राज्य हरिचन्द्र नरेशू * धन अधर्म कर लेइ न लेशू
तासु राज्य कोउ दुखी न रहई * चारोंवर्ण धर्म निजगहई
सब सुन्दर सब विरुज शरीरा * सबगुणज्ञ सब पण्डितधीरा
तेहिपुर राम भक्त नरनारी * सन्तसमागमरुचिअधिकारी
निशिदिनभूपप्रीतिहरिचरणा * सुमिरण पूजन वंदन करणा

सो० वापी कूप तड़ाग खनवाये मारग बिषे ।
लगवाये बहुबाग बनवाये हरिहर भवन ॥

दो० विटप फूलफल सहितगिरि प्रकटभई गलियान ।
कामधेनु भै भूमिजल कहे देहिं धन आन ॥
धर्म्म वचन मन जो करै सो अरपै भगवान ।
भक्तिवन्त भूपाल वर हरि तजि रति नहिं आन ॥

प्रतिसंवत सब माल खजाना * देइलुटाइ न राखै दाना
नृप कीरति सब जग में छाई * जहां तहां मुनि करैं बड़ाई
कहैंकि नृप हरिचन्द्र समाना * है न अवर धर्मज्ञ जहाना
सुनिकौशिकमुनि कहा रिसाई * अबहीं नृप सत देहुँ डिगाई
तुरतै अवधपुरी चलिआयो * कोलककुनपविशालबनायो
प्रविशि वाटिका चांड़न लागे * घुरघुरात रखवारे भागे
ते भूपति पहँ जाय पुकारे * सुवर देत इक बाग उजारे
सुनि नरेश पठये भट भूरी * आये सब जहँ कोलगरूरी

दो० करिउपाय हारेसकल कोल सुनिकस्यो नाहिं ।
सुनि हरिचन्द्र तुरङ्ग चढ़ि पहुँचे तेहिके पाहिं ॥

भागबराह टाप सुनि पावा * देखि ताहि भूपति रपटावा
कहुँलखिपरतकबहुँदुरिजाई * सघनविपिनइमिगयउलिवाई
आगे बढ़ि मुनियुक्ति उपायो * यक पुत्री यक पुत्र बनायो

आपुभये पण्डित तेहि बेरा * लागे करन ब्याह तिनकेरा
अग्रबराह दीख नहिं जबहीं * आये नृप तिनके ढिग तबहीं
लखिक्षितिपतिबोलाद्विजसोई * यहि कन्याके है नहिं कोई
पायँ पूजि याके नृप देहू * तुम धर्मज्ञ जगत यशलेहू
कह हरिचन्द्र विपिनके माहीं * है कछु प्रभु मेरे ढिग नाहीं
नगर माहिं जो चलते देवा * सब विधिते तहँ करतिउँ सेवा
विप्र कहा कछु सगुन करीजै * गृहलिवाइपुनिचहोसोदीजे
है लगाम कुंजी तव तीरा * तेहिते पद पूजो रणधीरा
तुरतै नृप पद पूजे लीन्हा * विश्वामित्रस्वाल पुनिकीन्हा
मैं तुम्हार पण्डित हौं राजा * मोको कछु दीजे महराजा
भूपति कहा मांगि द्विजलेहू * कनक तीनिमन राजन देहू
कह हरिचन्द्र दीन द्विजराई * चलहु भवन मन लेहुभराई
कन्या कुँवर गुप्तह्वै गयऊ * मुनिनृपसङ्गअवधचलिभयऊ
राजावाजि चढ़न तब लागा * छीनिलीनमुनिगहिकरबागा

दो० कह ऋषि कन्यहि देइके पुनि नृप फेरे लेत।
अस अधर्म नहिं चाहिये तनक वस्तु के हेत॥

अस कहि आपु भये असवारा * पायँ पियादे चले भुवारा
पहुँचे नहीं अश्वके साथा * आगे बढ़ि टेरैं ऋषिनाथा
नृपसुकुमार बहुत श्रम पायो * कछुदिनरहे अवधपुर आयो
लखिनृप खुशीभये नरनारी * गये भूप निज भवन मँझारी
सुभग गलीचा एक बिछायो * करिसनमान मुनिहिं बैठायो
चरण पखारि वारि मुख नाई * भोजन कहँ पूछा पुनि राई
सुनि मुनि कहा हेम मम दीजे * पीछे अपर बात कछुकीजे
तब नृप कनक भराइ मँगावा * कह्यो लेहु मुनि वचनसुनावा
कुंजीदान दियो त्वहिं राई * द्रव्य सकल तेहि भीतर आई

जहँ लगि टाप घोड़की बाजी * तहँ लगुभई हमारी राजी
मोरि द्रव्य मोसों कहै लेहू * औरै कनक आनिकै देहू
नाहिंत कहो दीन नहिं राई * हम अपने आश्रमका जाई
कह नृप शिर काटै जो कोई * ऐसिबात हम ते नहिं होई

दो० सुनि सुतरानी भूपतिहु कह्यो शीश धरिमाथ ।
मनु मनु सोनेपर हमैं बेंचिलीजिये नाथ ॥

असमुनितिन्हें लीन अगुवाई * बेंचन हेतु चले ऋषिराई
अकनि प्रजाले हेम सिधाये * राजै मोललेन बहु आये
विश्वामित्र कह्यो तिन हेरी * प्रजाकि द्रव्य हवै नृपकेरी
आन देश तहँ बिकहु नरेशू * चले बनारस सहत कलेशू
आगे मुनि पाछे नृप रानी * तेहि पाछे सुत रोहिणि जानी
मुनिदूसर द्विज देह बनाई * बैठ्यो पुरः कूप पर जाई
राजहि देखि समीप बोलायो * पूछेउ हाल महीप बतायो
बोला विप्र भूप सुनि लीजै * गोद्विज दूरि पान जल कीजै
कहनृप द्विजहि दिये बिनभाई * पियबन पाथ प्राण बरुजाई

दो० असकहि अबनृप चलिदियो रानी पहुँची आइ ।
कह्यो विप्र जल पीजिये पेइ गये हैं राइ ॥

रानी वैसे वचन सुनायो * पाछे पुत्र रोहिणी आयो
ब्राह्मण कहा पियउ सुत पानी * आगे पेइगये नृप रानी
कुँवर कह्यो वै वृद्ध विचारे * छांड़िन धर्म प्यास के मारे
हमतौ द्विजहि दिहेबिन हेमा * घूटब नहीं लार यह नेमा
अति धर्मज्ञ हिये महँ जाने * गाधिसुवन मनमाहिं लजाने
चलत चलत काशीमहँ आये * मुनिलै बीच हाट बैठाये
विप्र एक रानिहि लैगयऊ * मनुभरि हेम देइ सो दयऊ
माखाकार कुँवर कहँ लीन्हा * फुलवारी महँ डेरा दीन्हा

राजहि लिहिसि डोमयक आई ❁ पाइ पुरट चलि भे अधिराई
नृपते कही श्वपच अस बानी ❁ भराकरो नाँदनमहँ पानी
सुनि नृप नीर भरन तब लाग्यो ❁ कह मुनि भूप सत्य नहिं त्याग्यो
जो जल भरै चले मुनि आवै ❁ फोरै नाँद पाथ बहि जावै
देखि श्वपच त्रिय तिनतेलरई ❁ बैठ रहत कछु काम न करई
सुनि कह डोम भूप सुनु बाता ❁ हम तुम बीच ईश जग त्राता
वाचाबद्ध नृपति तो कियऊ ❁ मरघट निकट वास तब दियऊ
लैशव यहां जो आवै कोई ❁ दण्ड लिहे बिन दाह न होई
निशा आइ हमका धन देऊ ❁ भोजन मात्र तात तुम लेऊ

दो० यहि विधि बसत मशान नृप बहुत दीन धन आइ।
सुखी डोमनायक परम हितकारी जन पाइ॥

कछुक काल यहि विधि चलि गयऊ ❁ तब मुनि रूप सर्प को लयऊ
हरिशशि सुतहि डस्यो सो जाई ❁ दीन्हों ताहि रविहिं सौंपाई
रानी जबै खबरि यह पाई ❁ रोदन करत कुंवर पहँ आई
लै लहास गंगा के तीरा ❁ गै जेहि घाट रहत नृप धीरा
नारि विलाप करत विधि नाना ❁ सुत शव देखि भूप दुखमाना
पुनि धरि धीर महीपति कहई ❁ ईशर जाइ शीश पर अहई
दुखसुख देह पाय सँगलागे ❁ मिलनबिछोह स्वप्नजिमिजागे
जल अकाश क्षिति पावक बाता ❁ मिलै कीन परपंच विधाता
नश्वर रूप मोहवश शोचा ❁ परधन गये करै दुख पोचा

दो० प्रकट भयो तनु जानिये सो सोवत तव तीर।
जीवन नाशन नित्य है अस विचारि धरु धीर॥

नट मर्कट गति देखु निहारी ❁ हरि आधीन सकल तनुधारी
चाक कुलाल फिरत है तौलौं ❁ अध आधार लकरिया जौलौं
सब संसार कालकर भोगा ❁ आपुन देखत आनहिं सोगा

अस्थिमांस विष्ठातन छयऊ ✳ चर्म लपेटि सहाय न भयऊ
तेहिपर कहत मोहिंसमआना ✳ कछुदिन गये रही नहिंमाना
अल्प आयु बहुकरत उपाई ✳ मृत्यु शिरखड़ी न ताहिडराई
बलिपशु पाइघासजिमिचरई ✳ बूड़त आपु आनको धरई

दो० जगत विकट वन कुरँगमन मायाजाल पसारि।
काल शिकारीबिन खबरि लीन अचानकमारि॥

दारु नारि तन ममता डोरी ✳ कर्म नचावत है चहुंओरी
दशइन्द्रीसुर निजनिजओरा ✳ खैंचत जहां तहां बरजोरा
मूसत पांच चोर करदंगा ✳ रहतहितू ह्वै निशिदिन संगा
जीव कुशल कैसे कहिजाई ✳ जिमि खेती हरवाहैं खाई
शोक समाज देखि सब परई ✳ सुखीसो जो हरिपद मनधरई
दुख कर मूल मोहहै रानी ✳ सोतजि सपदि मानुममबानी
दण्डघाट कर हमकहँ दीजे ✳ पाछे पुत्रदाह निजकीजे
रानी कहा सुनो नरपाला ✳ तुमते कछू छिपा नहिं हाला
कहो द्रव्य कहँवा मैं पाई ✳ जोलै तुम्हैं दीजिये आई

दो० कहनृप करलीन्हें विना हौं नाहिं दाहन देहुँ।
स्वामी केर निदेशतजि नाहक अधरम लेहुँ॥

सो० तेहिते मैं अबजाय पूंछौ प्रभुते हाल यहु।
जो वे देहँ बताय सोइकरब पुनि आइकै॥

असकहिहरिचँदनगरसिधाये ✳ गाधिसुवन मरघट तहँआये
रानीसे अस वचन उचारा ✳ बैठिलिये कत मृतक कुमारा
रानी सकल हाल कहिदयऊ ✳ पुनिमुनि ऐसे बोलत भयऊ
जोदुरखत नहिं करी दिनेशा ✳ तौतोहिं दहन न देइ नरेशा
तेहिते मैं तोहिं देउँ बताई ✳ भस्म सकल तन लेहु लगाई
बालकयकआकर्षि जोलीन्हा ✳ सो रानीकहँ मुनिवर दीन्हा

कह्यो कि लै मठ बैठो जाई ॥ मैं तुम्हार सुत देउँ जराई
सुनिरानी गै मंडप जबहीं ॥ कौशिकमुनि पुरआये तबहीं
जहँ तहँ अस दीन्हों गोहराई ॥ नगर तुम्हारे डाइनि आई
पूंछिनि कहां ह्वै मठ माहीं ॥ यामें झूठ कहत हम नाहीं
गई अबै पुरते सह मोदा ॥ लीन्हें यक बालक शवगोदा

चौ.छं.
सुनि सब धाये ॥ तेहि ढिग आये ॥
रूप निहारी ॥ अति भयकारी ॥
बालक चीन्हा ॥ गहिकर लीन्हा ॥
नृपपहँ ल्यायो ॥ कहि समुझायो ॥
भूप रिसाई ॥ दिहिसि टँगाई ॥
कह्यउ कि धावो ॥ श्वपचहि लावो ॥
गरदन मारो ॥ करो न वारो ॥
हिंसक त्यागे ॥ भल नहिं आगे ॥

दो० गा इकधावन डोम गृह कह्यो हाल समुझाइ ।
तेहि पठवा हरिचन्द्रकहँ चलिआये तहँ राइ ॥

राजा निजरानी पहिचान्यो ॥ तनुको मोह न मनमें आन्यो
कत्ता तुरत उठायो राई ॥ मारौं शीश बिलग ह्वै जाई
आइ तबै हरि कर गहिलीन्हा ॥ जयतिजयतिनभदेवनकीन्हा
धनिरानी धनि नृपतिमहाना ॥ तज्योनधर्म सह्यो दुखनाना
सुदिन सकल धर्मज्ञ कहावै ॥ कुदिनकसौटी परिखुलिजावै
घन प्रहार बिन सांचे हीरा ॥ अँगै कि सकै कांचकर खीरा
अस्त्रशस्त्र जिमि सब कोइबांधै ॥ शूर सोइ जो समर न कांधै
मुनिते कह्यो रिसाइ खरारी ॥ तुम्हरे मदसरता अतिभारी
जप तप संयम करते भयऊ ॥ आदिसुभावतदपिनहिंगयऊ
असधर्मज्ञ नृपहिदुख दीन्ह्यो ॥ यामें कहो लाभ का चीन्ह्यो

धर्म्मछोड़ावन इनकर आयो * फूंकन चहत सुमेरु उड़ायो
तपकर तुम्हें बहुत अभिमानू * सो नहिं रही सत्य यहजानू
सुनि मुनि चरणपरे ह्वै दीना * प्रभु अपराध बहुतमैंकीन्हा
करहु सो क्षमा जानि अज्ञानी * नृपपदपरेहु कह्यो प्रभुबानी
सुनिमुनिगहेचरण तजिमाना * लखिनृपकीनसकुचिसनमाना
तुरतै पुत्र दीन मँगवाई * जो प्रथमै रविका सौंपाई

दो० नृपहरिचन्द्रहि जानिकै पुरवासी सब लोग।
भूपसहित बिनती करी भये दरश विधियोग ॥

सो० बोले विष्णु बहोरि जो भावै सो मांगिये।
कह नृप दोउ करजोरि मोको कछू न चाहिये ॥

रानी ते बूझेउ सुरराई * मांगी जो कछु वाको भाई
रमानाथ नारी ते भाषा * मांगहु वर जो मन अभिलाषा
रानी कहा नाथ सुनिलीजै * प्रथमै भक्ति आपनी दीजै
जहँ जहँ जन्म धरब हमजाई * तहँतहँ हरिचन्द्रै पतिपाई
पुत्र मिलै रोहिणी समाना * राजकाज धन धाम खजाना
यहि विधि मुनिसांगे तहँआई * जाते नाथ दरश तव पाई
यह वरदान देहु मोहिंस्वामी * और न चाहिय अन्तर्य्यामी
सुनिहरिसजलनयनहोइआयो * प्रेमसहितनिजहृदयलगायो
तुम समान त्रियजासु अगारा * कस न होय तहँ धर्म अपारा
चलहु अवध निजराज करीजै * प्रजा अनाथ तिन्हैं सुखदीजै
सुनिहरिचन्द्रअवधचलिआये * पुरवासी लखि रत्न लुटाये
सिंहासन भूपति बैठारे * जग निवास वैकुण्ठ पधारे
बहुरि सकल संशय करिदूरी * रानीसहित किहिनि सुखभूरी

गी.छं. सुखभूरिकरिनृपरानिपरजनविविधविधिपालतभये।
तजि अंतसमय शरीर बिन परिशर्म हरिपुरकागये॥

यहकथा नृपहरिचन्द्रकी तुमने कहीसमुझाइके।
अबऔरयकइतिहासभाषौं सुनहुमुनिमनलाइके॥

सो० हंसध्वज नृप तासु तनय सुधन्वा हरि भगत।
निजबपुदीन्ह्योआसुशंखलिखितखलद्विजनहित॥
रन्तिदेव नृप आन बहु दिन में भोजन लहे।
विप्र शूद्र शठ श्वान सनमाने तब मिलेहरि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमलआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतहरिचन्द्रसुधन्वारन्तिदेवप्रसंगबर्णनोनाम सप्तदशोऽध्यायः १७॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
वरणों भारत की कथा कछु दालभ्य बखानि॥

सो० शौनक मन में गुण्य पूंछ्यो पद शिरनाइ कै।
जिवरक्षाकृत पुण्य होत कहा सो वरणिये॥

सुनि सुमन्त बोले हरषाता * नीक प्रश्न कीन्ह्यो तुमताता
धर्ममूल जिव रक्षा जानो * सुनो तासुकृत पुण्यबखानो
जहँतक सबतीरथ करि आवै * गयामाहिं नित पिंडपरावै
गोगजहय पटमाणिक हेमा * देहि विप्र कहँ करिनित नेमा
यज्ञ सुसकल करै व्रतदाना * संयम नेम तपस्या ठाना
ये सब पुण्य जोतुला चढ़ावै * जिवरक्षा सम सोउ न पावै
राजाशिबि की कथा बखानौं * जिवरक्षा तिन कीन्ही जानौं
भूपति यज्ञ करत इकबारा * रहैं तहां महिदेव अपारा
इन्द्रअग्निशिबियशसुनिपायो * लेन परीक्षा दोउ सिधायो
अग्निकपोत वपुषतब कीन्हा * बाजरूप वासव धरिलीन्हा
भाजकपोत बाज रपटावा * नृप जहँ यज्ञकरत तहँ आवा

दो० बैठे शिबिलखि गोदमें दुख्यो कपोत डराय।

घेरिबाज बोलतभयो नृपते वचन बनाय ॥
अहो भूप धर्मज्ञ तुम महूँ सुनी यह बात।
मोह कृपणता है नहीं तनकौ तुम्हरे गात ॥

तैं सबको पाले महिपाला * सन्त असन्त कहा नरवाला
अवगुण देखि छिपावै जानी * गुणको सदा धरत उरआनी
द्वारे अतिथि जोकोई आवै * तुमते बिमुख जान नहिंपावै
अब जनि धर्म छोंड़ियो राई * यशते रहै अयश जगछाई
भोजन मोर कपोत रहायो * ताको तैं क्यों गोद छिपायो
भूंखो हौं बहु दिन को राई * याको मोहिं देहु पकराई
राजा कहा श्येन सुनि लीजै * याको आश छोड़ि अब दीजै
पक्षी डरपि शरण मम लीन्हा * तजौं नयाहि परण दृढ़ कीन्हा
शरणागत आये जो त्यागै * ब्रह्महत्या ताके शिर लागै

दो० लोभ क्रोधवश परिहै करै न रक्षा जासु।
सो नरपापी नीचखल मुख नहिं देखियतासु ॥

मुख देखे सुकृत घटि जाई * धर्मवान लखिसुखअधिकाई
तेहिते यहितजिहौं नहिं भाई * शीशहु जो कोउ काटै आई
बोला श्येनसुनत असि बाता * मैं तोहिं सुनारहे बड़दाता
धर्मटेक सो छांड़ि भुवाला * लै अपयश जीहौ केकाला
दिये अहार होइ जिवरक्षा * तजि हठलेहु मानि सोशिक्षा
किये अहार प्राण थिररहई * नाहिंत तनु तजि मारगगहई
मोरेमुये बहुत कर नाशा * जननिजनकसुतनारिविनाशा
एक जीव की रक्षा करहू * बहुतनकी शिर हत्या धरहू
बिन विवेक धरमहु कर कोई * पाछे तेहि पछिताइक होई
करमन की गति भीनी राई * पुण्य करत पातक ह्वैजाई
तेहिते नृपति मानि अबलीजै * मोर अहार होइ मोहिं दीजै

सो० कह शिबि सुनहु शचान शरणागत रक्षाकरे।
यहिसम धर्म न आन सो मैं निज हिरदयधर्यो॥

दो० सोइपंडित धर्मज्ञ सोइ सतिवादी मतिधीर।
शीलवन्त ज्ञानीश जो हरै पराई पीर॥

मोहिंइच्छाकछुस्वर्ग किनाहीं * नहिं वैकुण्ठ जानके माहीं
मुक्तिभुक्तिकी चाह न करहूं * नरक परनको मैं नहिं डरहूं
इक अभिलाष यहै मनमाहीं * आवै शरण तजौं तेहि नाहीं
जो मोपर प्रसन्न भगवाना * देहिं टेक हिय यही न आना
तन धन धाम वाम सुत जावै * तजौं न ताहि शरण जो आवै
मोहिं कपोत परम प्रियभाई * ताको कहौ तजा किमिजाई
और चहौ सो लीजै मांगी * सुनि शचानबोला भयत्यागी
भूमि धाम धन अन्न अपारा * लिहे सरी नहिं काज हमारा
मम भक्षण पक्षी है येहू * सो नहिं देउतौ अब सुनिलेहू
आपन मांस खवावो मोहीं * दयावन्त तब जानों तोहीं
तुला चढ़ाय कपोतहि दीजे * तेहि सम धरहु देरमत कीजे

कुं० सुनिशिबिमनहरषितभयो कह्योधन्यममभाग।
असद अस्वच्छ शरीर यह परस्वारथमें लाग॥
परस्वारथमें लाग धन्य जननी जिन जायो।
दीन्हों जात जराय कहौ केहिकामें आयो॥
हरिसुमिरणअरुकर्मशुभसाधैपाइनर देहपुनि।
जीवनताहीकोसफलबोल्योबहुरि शचानसुनि॥

वृथा करै कतवाद भुवारा * क्षुधित जात है प्राणहमारा
राजा तुरत तुला मँगवायो * पलरा पर कपोत बैठायो
दूजे पला मांस निज धरेऊ * आपन गुरू कपोतै करेऊ
तब राजा फिर काटि चढ़ावा * विहँगपलानहिंसमसरिआवा

काटि काटि कैयो बेर डाख्यो ❋ उठ्यो न भूते नेकु निहाख्यो
चढ़ि बैठ्यो नृप तब हरषाई ❋ देखि अग्नि हरि रहे लजाई
सुर देखैं नभ चढ़े विमाना ❋ कहैं कि असप्रण कहूनठाना
जयजयधन्यधन्यनृपकरहीं ❋सुमनवरषिनिजनिजपुरफिरहीं

दो० अगिनि पुरन्दर कपट तजि प्रकट्यो आपन रूप ।
ह्वै प्रसन्न बोलत भये धन्य धन्य तुम भूप ॥
विश्व माहिं तुम सम नृपति है नहिं कोई और ।
प्रण कीन्हों भल होइ है तेरो यश सब ठौर ॥
मेघ नदी जल भूमिद्रुम सन्त जन्म जो लेत ।
केवल विधि परकट किये परमारथ के हेत ॥

तुम समान राजा जे आहीं ❋ तेउ जानिये सन्तन माहीं
इतनेकी जो निन्दा करहीं ❋ रौरवनरक माहिं सो परहीं
तेरे तनुकी जाय बुढ़ाई ❋ होइ नवीन सुभग सुखदाई
हमशठहठवशकुकरमकीन्हा ❋ नाहकआय तुम्हैं दुखदीन्हा
सो अपराध क्षमोकरिदाया ❋असकहिसुरपतिस्वर्गसिधाया
यज्ञ जबै पूरण ह्वै गयऊ ❋ तब भूपति मनहर्षित भयऊ
गण विमान लाये हरषाई ❋ विष्णुलोक तहँ राखिनिजाई
जो यह कथा सुनैं अरु गावैं ❋ यम किंकर तेहि नाहिंसतावैं
शिबिकी कथा कही जो जानी ❋ और सुनो यक कहौं बखानी
केकी नगर रहै यक शाहू ❋ बुद्धिमान घरद्रव्य अथाहू
देवदत्त अस ताकर नामा ❋ सुयशा नाम तासुकी वामा
एक बार पति पद शिरनाई ❋ बोली वचन मधुर सुखदाई
सुनहु नाथ निगमागम गावै ❋ नरतनु बड़े भाग्य ते पावै
तेहिलहिजोहरिभजननकरहीं ❋ जगतभार शिरऊपर धरहीं
सो पाछे पछितात अभागी ❋ जिमिनगबालअमोलिकत्यागी

ताते पति हरिभक्तिहि कीजै * नरतनु पाइ सुफल करिलीजै
धनते धर्म करहु मन लाई * आखिर अन्त संग नहिंजाई
ऐसे वचन नारि जब कह्यऊ * सुनिशुचिशाहपरमसुखलह्यऊ

दो० धर्म करन लागे ललकि तन मन धनते दोउ।
जो माँगै तेहि देइ सोइ विमुख न जावै कोउ ॥

नवधा भक्तिकरै नित नेमा * विप्र वैष्णव पद अतिप्रेमा
यहिभाँतिन बहुदिवस बिताये * लेन परीक्षा धर्म्म सिधाये
रूप अघोरी का धरिलीन्हा * शाह दुवार स्वाल आकीन्हा
देखि वैश्य भीतर लै गयऊ * मुदित मनोरथ पूंछत भयऊ
कह्यो अघोरी सुनु अनुरागी * मोको आजु क्षुधा बहुलागी
पुत्र तुम्हार वर्षषट केरा * तेहिआमिष मन चाहत मेरा
दोउ प्राणी मिलि सुतवधकीजै * क्षोभ न तनकौ मनमें लीजै
निजनिज कर मोहिंदेहुखवाई * ना ह्वै सकै तौ अन्तैजाई
सुनत शाहशाहुनिअसबयना * खेलतसुतै बोलायो अयना
मारनलगे दोउ मिलि जबहीं * बालक वचन कहतभातबहीं
मारु न मातु घरै महँ रैहौं * अबहौं दूरि न खेलन जैहौं

सो० अहो सुवन तव कर्म होत जो खेलनकोलिखा।
तौ कत लेत्यो जन्म आइ हमारे जठरमहँ ॥

अस कहि घात कीन हरषाई * बोटी बोटी बिलग बनाई
कह्यो अघोरी सों प्रभुलीजै * देर भई यहि भोजन कीजै
सुन तेहि कहा कि मैं नहिंखैहौं * इतने में तनकौ न अघैहौं
निजनिज आमिष दीजैथोरा * जेहिते जाइ उदर भरिमोरा
स्वपलजबै काटन कहँ कीन्हा * तुरतै धर्म हाथगहि लीन्हा
खुश ह्वै आपन वपु प्रकटायो * देवदत्त सों वचन सुनायो
अहो शाह सुनु मैंहौं धरमा * आयों लेन तुम्हारो मरमा

धन्य धन्य तुमहौ धनि ताता * धर्म हेतु सुत कीन्हो घाता
तुम्हरी पुण्य घटी नहिं भाई * दिन २ अधिक २ अधिकाई
विष्णुलोकबसिहौ तिहुँप्रानी * जन्म मरणकी होई हानी
पुत्र तुम्हार बालकन माहीं * खेलतहवै अमिथ्या नाहीं
सुनि यक सेवक शाहपठायो * तेहिके संग कुँवरचलिआयो
देखि मातु पितु हर्षित भयऊ * हृदयलगाय मायभरिलयऊ

दो० भये बिदा तब धर्म करि देवदत्त सनमान।
हरिपुरते आवत भयो ताही समय विमान ॥

गी.छं. आयो विमाननिकेत निर्मल रत्नसागर मणिमयो।
लयोधायगणनचढ़ायतिनकाविष्णुपुरवासादयो ॥
लखिदेवजयजयजयतिकहिकहिसुमनबहुवरषायहू।
रघुनाथ गुरुपद माथ धरि यह कथा सूक्ष्मगायहू ॥

दो० धन्य पुत्र हरिभक्त जो धन्य पतिव्रत नारि।
जासों परमारथ बनै धन्य सो द्रव्य निहारि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतशिबिवादेवदत्तप्रसंगवर्णनोनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
वरणौं भारतग्रन्थकी पुनि इतिहास बखानि ॥
अग्नि देव कर पुत्र यक तासु सुदर्शन नाम।
धर्मवान गोजीतवर क्षमा शील तपधाम ॥
बोधवान नृप निज सुता दीन्ही द्विजे विवाहि।
दोऊ प्राणी मिलि बसे कुरुक्षेत्र महँ जाहि ॥

निशि दिन धर्म सुदर्शन भावै * अतिथि द्वारते विमुख न जावै
मन क्रम करै साधुकी सेवा * अंतै स्वामी संतै देवा

यहिविधिकछुककालचलिगयऊ ❋ इकदिनद्विजमनशोचतभयऊ
साधुनमें नहिंत्रियको भावा ❋ अरध अंग तेहि वेदबतावा
मैं नहोउँ गृह हरिजन आवै ❋ वनिताते सनमान न पावै
तौ ममधर्म होइ सब नासा ❋ जोआदर नहिं पावहिं दासा
नारिपुरुष दोउ इकमत होई ❋ तेहिकर धर्म डिगै नहिं कोई

दो० अस विचारि निज वधूते बोल्यो विप्र सुजान।
संत सेव हिरदै धरौ जाते होय कल्यान॥
सन्तसेव हरिसेवसे शतगुण अधिकी जानि।
निजमुख प्रभु वर्णनकियो धर्मोत्तर में मानि॥
पुरह धरत नैवेद्य तेहि शुद्ध करौं मैं देखि।
स्वाद लेत मुखदासके कहहरि बिसिते पेखि॥
सर्वाराधन में परे हरि अवराधन आहिं।
जनसेवा तेहिते अधिक कह शिवआगम माहिं॥
गोविंद पद पूजन करैं सन्तहि सेवैं नाहिं।
तेनहिं प्रीतम विष्णुकहँ दम्भिक भाजन आहिं॥
आवै वैष्णव जासुघर पावै नहिं सनमान।
नशै पुण्य सौजन्म की कह अस्कन्दपुरान॥
यमन क्षेत्र निश्चय तहां जहां न संतस्थान।
वासै जब हरि क्षेत्र सो बद वाराहपुरान॥
साधुभजे भजिजातहरि जिमिशिशु गर्भमँझार।
बिनजननी तोषै नहीं इमि कह अमृतसार॥
श्रद्धायुत हरिभक्त कहँ अन्न खवावे कोइ।
सोई सोम पर्वत सरिस दिनदिन अधिकी होइ॥
साधुसेव कीन्ही नहीं जिन नरतन को पाय।
ते नर पशुते अधिकहैं पेट भरन को चाय॥

पचि पचि मखो कुटुम्बहित परमारथ नहिं कीन।
धृक धृक ताकी बुद्धिको तजि अमृत विष पीन॥
ताते सुमुखि मानु मम बाता * जाते मोर तोर कुशलाता
तन मन धन संतन कहँ दीजे * है अधीन चरणोदक लीजे
गृहस्थाश्रमको धर्म है याही * हरिजनआइविमुखनहिंजाही
जो कछु सन्तकहैं सो कीजे * सुखप्रदवचन मानिमनलीजे
जोत्रिय कहा करे पतिकेरा * सो पावे सति लोक बसेरा
सुनि पतिवचन नारिसुखपाई * बोली वचन कपट नहिंराई
अहोनाथ म्वहिं धर्मदृढ़ायो * सुनितववचनमोहिंअतिभायो
तनमनधनकरिसंतहिपोषिहौं * हे पति परण तुम्हारो रखिहौं
पतनी सो जो अनी सम्हारै * विमुखकरै सो शठ निरवारै
पतिसोजोत्रियकीपतिराखै * निजपतिबिनत्यहिकोपतिभाखै
ऐसे वचन कहे जब नारी * सुनतविप्र उरभा सुखभारी

दो० दोउ धर्म लागे करन तन धन सों तजिनेह।
विविध भांति सेवा करैं संत जो आवे गेह॥
यहिभांतिन बहुकाल गे रह्यो सुयश जगछाय।
मृत्युदुवारे आयकै मुहुर मुहुर फिरिजाय॥

कबहुँ धर्म घटती नहिं होई * ताते मारिसकै नहिं सोई
यकदिन सुनोसुदर्शनकानन * गये रहैं तहँ समधी आनन
धर्म परीक्षा लेन सिधाये * वेष वैष्णव केर बनाये
जहँद्विजभवनतहांचलिगयऊ * बोधवतीते बोलत भयऊ
हे धर्मज्ञ सुना मैं तोहीं * मनमथआजुसतावत मोहीं
तेहिते अपने तनका दीजे * जेहिते अंग संग करिलीजे
सुनिकरजोरि कह्योद्विजवामा * लीजे अशनवसन बहुदामा
ऐसी बात न कहो गोसाईं * बोले धर्म और कछु नाईं

केवल यही शरीर तुम्हारा * जासों लाग्यो चित्त हमारा
जो न देहु तौ मारग लीजे * ह्वैमा एक बात कहि दीजे
सुनिअसवचननारि शिरनाई * मनमें शोचकीन अधिकाई
मेटौं तौ प्रणकीन सो जाई * संग करौं पतिवर्त नशाई

दो० शोचतही श्रुतिके वचन ह्वै आये तब आदि।
पति आज्ञा त्रियकरै तौ पतिव्रत जाइ न वादि ॥

तब हरिजन ते बोली नारी * किरपा हम पर कीन मुरारी
यह तन धनसबतुम्हरै स्वामी * हमसेवकसबविधिअनुगामी
सुनि हरि कुटी कपाट लगायो * ताही समय सुदर्शन आयो
सांगसुनतत्रियसकुचिनबोली * दीन्हों भेदअतिथितबखोली
मोर मनोरथ पुरवत नारी * खड़ेरह्यो तलद्वार मँझारी
सुनतसुदर्शन अतिसुखपावा * धन्यधन्यपति वचन सुनावा
धन्य प्रिया तव पितु अरुमाई * पूज्यो सन्तहि हेत बड़ाई
आखिर तनु नहिंरहततुम्हारा * ह्वै जातो कृमि विष्ठा छारा
सो वपु वैष्णव हेत लगायो * राख्यो धर्ममोहिं अतिभायो
अहोसन्त मन निश्चल होई * मतिशंका मान्यो तुम कोई
धाम वाम तन धन जो हेरो * सो सब जानो साधुन केरो
मैं सब विधि सन्तन को दासा * और न मेरे आन उपासा
पुण्य हमारि उदय भै आजू * जो घरसख्यो तुम्हारो काजू
वचन सुदर्शनके सुनि प्यारे * धर्म निकरि आये तब द्वारे
धन्य धन्य तुम धनि तव बाला * प्रणआपनकीन्हौंप्रतिपाला

दो० अहो सन्त मैं धर्म हों यह पतिव्रता नारि।
लेन परीक्षा आयउं नहिं कछु दोष विचारि ॥
तुमसम पुण्यसलोकनहिंतीनिलोकमहँकोइ।
जसकीन्हों तस जगत में काहू ते नहिं होइ ॥

देवदनुजनर नागमुनि गणिकातजिजगमाहिं।
नारि दोष को देखिकै रोष करै को नाहिं॥

तुम्हरे क्रोध भयो नहिं राई ❋ ऊपरते बहु किह्यो बड़ाई
नहीं कृपणता मान न मोहा ❋ समजित इन्द्री जीतनकोहा
विष्णुलोक तहँ बसिहौ जाई ❋ आजुइलेन विमान जो आई
अर्द्धंगी तव आधे अंगा ❋ सदा रही सो तुम्हरे संगा
अर्द्ध अंग ते सरिता होई ❋ बोधवती कहवाई सोई
जो कोइ मज्जी याहि मँझारा ❋ तासु पाप सब ह्वैहै छारा
असकहि धर्म भे अन्तर्द्धाना ❋ गणलै आये सुभग विमाना
घोड़ा सहस लगे त्याहिमाहीं ❋ पवनसमान उड़त जे जाहीं
पति पत्नी तेहि माहिं चढ़ायो ❋ लखिसुरहर्षि सुमन बरसायो
अपने पुण्य प्रताप ते दोऊ ❋ गे हरिपुर जानै सब कोऊ

दो० द्वारे मृत्यु बैठी रहै सत देखन के काज।
प्राणछूटै तौ मारहूं ज्यों तीतरको बाज॥

सो० प्राण जब छूट्यो नाहिं चली तुरत खिसिआइकै।
जाति न मृत्युघरमाहिं है मुनि पुण्य प्रतापते॥
पढ़ै सुनै नर कोइ यह इतिहास जो नित्तप्रति।
मृत्यु अकाल न होइ भाषत भीषमपर्व इमि॥

इति श्रीविश्रामसागरसुदर्शनकथावर्णनोनाम
ऊनविंशोऽध्यायः १९॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
वर्णौं भारतग्रन्थकी पुनि इतिहास बखानि॥

और सुनो मैं करौं प्रकासा ❋ बहुला गऊकेर इतिहासा
चन्द्रावतीपुरी यक अहई ❋ चन्द्रसेन राजा तहँ रहई
द्विजहरिभक्त बसै तेहि ग्रामा ❋ बहुला गऊ तासुके धामा

उज्ज्वल अंग हंसकी नाहीं * विचरैसदा अभय वनमाहीं
रोहितगिरि यमुनातट एका * गुफनमाहिंरहैं जीव अनेका
वृत्त सघन बेली उरझानी * चारों तरफ भरातेहि पानी
यक दिन बहुला संगविहाई * चरत चरत परबतपर आई
सिंहएक निकसा अतिभारी * बड़ेबड़े रदनबदन भयकारी
बहुले देखि सामने धावा * निकटजायअसवचनसुनावा
जीवन कठिन जानुनिजगाई * लेहौं तोहिं आजु मैं खाई
जो आवै इहि वनके माहीं * मोसे सो उबरत है नाहीं
सुनिहरिवचनगऊबिलखानी * बछरा छोट आपनो जानी
केहरिकह रोवै केहि काजू * बचिहौ नहिं हमते तुम आजू
बदबहुला सुनु केहरि भाई * आपन शोच मोहिं नहिंराई
जो उपजै सो निश्चय नाशै * जो नाशै सो पुनः प्रकाशै
प्रीतिपुत्रकी हृदय में गाढ़ी * तेहितेमोह अग्नि मोहिंबाढ़ी
प्रथम पुत्र जावा मैं याही * पियतअबैपयतृणनहिंखाही

सो० बच्छै छीर पियाय फिरि मैं इहिनैं आइहौं।
तब तुम लीन्ह्यो खाय सुनि बोल्यो मृगराज हँसि॥

दो० जो कोउ शूली चढ़त पर लगन लिखावै धाय।
तैसे तैं मृत्यु भूलि कै बछराके ढिग जाय॥

मेरे फन्द आय जो परेऊ * सो जानौ जग जन्म न धरेऊ
तैं चाहै निज पुरको जाना * मोहिं बनाये निपट दिवाना
घरमें जाय पुरुष को पैहौ * प्राण देन फिरि काहेक ऐहौ
ताते हौं नहिं देहौं जाई * सुनि बहुला बोली अकुलाई
विप्र गऊ पितु मातै मारै * वनिता बालक गुरूसँहारै
कन्या ब्याहि औरको देवै * दोउ जननते पैसा लेवै
साधुनकी निन्दा मुख गावै * हरिहरतजिजो आनहिंध्यावै

इनकर मनका पापजो जागै ❋ नहिंआऊँ तौ मम शिरलागै
झूठी साखि सभामहँ बोलै ❋ अतिथि निराश वासते डोलै
तुला चढ़ाय घाटि फिरि देवै ❋ माफिनमें पुनि पोतहि लेवै
कथा होत जो द्वुन्दि मचावै ❋ विघ्नकरै होने नहिं पावै
चोरी ज्वारी रत परनारी ❋ हरिहिंसक मद मांसअहारी
येते कर्म किहे जो पापू ❋ नहिं आवौं तो ममशिरथापू

दो० हरि विमुखन ते मित्रता रामजनन ते रोष ।
जो नहिं आऊं तौ परै मेरे शिर यह दोष ॥

मात पिता जे सेवैं नाहीं ❋ भली वस्तुमें छिपिकै खाहीं
दे विश्वास दगा करिजावैं ❋ साधु गुरू में दोष लगावैं
हरिहरजनगुण कहै न सुनई ❋ परअपकारलागि शिरधुनई
औरौ पापकर्म जो होहीं ❋ नहिं आवौं तौ लागैं मोहीं
सुनत सिंह बोला हे गाई ❋ शपथ तोर मोरे मन भाई
हमरे मन विश्वास तिहारो ❋ जितचाहो तितवेगि सिधारो
आयो आतुर चीर पियाई ❋ असजानि जान्यो ठग्योबनाई

दो० अहो सिंह तवठगनकी समरथ काकोआहि ।
ठगा चहै जो औरको सोई शठ ठगि जाहि ॥

असकहि आयसुहरिको पाई ❋ हुंकरत बहुला तुरत सिधाई
पहुँची जब बछरा के तीरा ❋ बाल विलोकि गई सबपीरा
अङ्गजजननिदेखिढिगआवा ❋ चूमि चाटि मा दूध पियावा
चित उदास अम्बाकरजानी ❋ बोलाबच्छ अग्रह्वै बानी
मातु विकल देखौं मैं तोहीं ❋ कारण कौन बताओ मोहीं
बहुला कहा पियहुसुतचीरा ❋ जेहिकारण आइउँ तवतीरा
आजु निहारिलेहु मोहिंबेटा ❋ काल्हिते नहिं होई पुनिभेंटा
वन में हरिघेरयो कहि खैहौं ❋ सौंहैं दै आइउँ फिरिजैहौं

बोलाबच्छ जाउँ मैं माई * तेरे बदले म्वहिं हरिखाई
धर्मवान माता तैं आही * तव सेवा मोहिं करनो चाही
जाते मम होवे उद्धारा * सुनिबहुलाअसवचनउचारा

दो० हेसुत आई मृत्यु मम तेरी आई नाहिं।
मेरीबदि तू कौन विधि जैहै हरिमुख माहिं॥

सो० सुनसुतमम उपदेश नखी नारि नृपशृंगधर।
सरिसुशस्त्रअकुलेशइन विश्वास न कीजिये॥

असकहिचलिगौवनढिगआई * देखिमिलीं सुरभी सबधाई
पूछनलगीं कुशल कितरहेऊ * गिरिपर गइनासिंहतहँगहेऊ
खायेलेत रहे मृग राजा * सौंह देइ आइन सुत काजा
सबसों विनय करौं करजोरे * क्षमा कीजिये अवगुण मोरे
हौं अब जात सिंहके पासा * सुनतसखी सब भईं उदासा
बोलीं बिलखिशास्त्रअसकहई * झूठे कहिय प्राण जो रहई
तेहिते बहुला तुम मतिजावो * घरबैठो निज प्राण बचावो
बहुलाकहा सखी सुनि लेहू * अस उपदेश हमैं मतिदेहू
आपन प्राण बचन के हेता * झूठकहै तेहि जानो प्रेता
परके प्राण झूठकहि बाचैं * झूंठ नहीं सो जानहु साचैं
जाकी मृत्यु मरै नर सोई * आपु अकेलो संग न कोई
सत्य समान धर्म कोइ नाहीं * पाप न झूंठ सरिसजगमाहीं
शिवते झूंठ कह्यो चतुरानन * जगमहँ पूज्यनहींतेहिकारन
सियते झूंठ नदी गो कहेऊ * भक्ष्य अभक्ष्य गुप्त ह्वै बहेऊ
हरि श्रुतिनिन्दा झूंठबखानी * भये बोध सोइ पातक जानी
उमा शंभुते झूठ उचारा * त्यहिकारणदुखलह्योअपारा
नर वा कुंजर धर्म बखाना * तेहि अघभयो अंगुष्ठपषाना
तेहिते सत्य तजब हम नाहीं * असकहि चली केशरी पाहीं

नमस्कार सब गौवन कीन्हा ❋ सत्यहेतु जीवन तनु दीन्हा
चलत चलत बहुला तहँ आई ❋ बैठो रहै जहां मृगराई
बोलतभई सिंह मोहिं खावो ❋ हौंआई निजक्षुधा मिटावो
देखि व्याघ्र कह बैठो माई ❋ अबनखाबतोहिंचहुमरिजाई
सतिवादी कहुँ दुखको पावै ❋ तिमिरकतहुँदिनमणिहिमिटावै
कीन्हों सत्यजौनकछुकहेऊ ❋ तबआवनमोहिंअचरजभयऊ

दो० सत्य माहिं सब लोकहै सत्य माहिं सबधर्म ।
ज्ञान मुक्तिहै सत्यमें सत्य माहिं शुभकर्म ॥
धन्य धाम तव धन्यपुर धन्य चरत तृणजौन ।
धन्यधरणि जहँपग धरौ धनि किसानहै तौन ॥

धनि तव क्षीरधन्यजिनपीन्हा ❋ धन्यतुम्हारदरशजेहिकीन्हा
मैं निजभागिधन्यकरि चीन्हों ❋ जबते दरश आपको कीन्हों
अब बहुला सो दीजै ज्ञानू ❋ जेहिते होय मोर कल्यानू
बहुला कहा सिंह सुनिलेहू ❋ हिंसा करन छांड़ि अबदेहू
हरिसुमिरणमें तन मन दीजै ❋ यह उपदेश मानिमनलीजै
को तुमहौ सो कहहु बखानी ❋ सुनि कण्ठीरव बोलाबानी
हे स्वामिनि मैं हौं गन्धर्वा ❋ विद्या रूप केर उर गर्वा
देवशाप द्वीपी तनु पायों ❋ यहि तनते बहुपाप कमायों
तुम्हरे दरशभये अघ नाशा ❋ छूटो शाप हृदय परकाशा
मैं प्रसन्न हौं तुम घरजाई ❋ मम अपराध क्षम्यो ये माई
असकहिहरिसुमिरनमेंलाग्यो ❋ भोजननीरदेह सुख त्याग्यो
कछु दिनमें तनुछूटत भयऊ ❋ चढ़ि विमानसुरपुरकहँगयऊ
बहुला जब आई निज धामा ❋ पुत्र सखिन पायो विश्रामा
सत्यवृत्ति सबहिन उरधारी ❋ बच्छ सहितभइ धेनुसुखारी

ह० गी० सुखसाथरहिं कछुकाल चलतविमानलेन जोआयहु ।

नृपसहितपुरनरनारिद्रुमपशुआदिसबनचढ़ायहू ॥
लैउड़ेगणलखिदेव वरषे सुमनघनजयजयकियो ।
गयोलांघि सातौंस्वर्गपर गोलोकमें बासालियो ॥

सो० बहुला हरि संवाद नित कहै सुनै जो कोइ ।
रहै सदा आनन्द में मृत्यु अकाल न होइ ॥

छं० ग्राम माहिं जो पढ़ै सुक्ख बालक का होई ।
गऊखरिक जो पढ़ै वृद्धि गौवनकी सोई ॥
दुखी होइ सो पढ़ै नहीं तौ श्रवण करई ।
होइ सकल दुख नाश और तन रोगौ हरई ॥
बहुत महातम भार्त में कह्यों कछुक मैं गायकै ।
मुक्ति चहै रघुनाथ भजु रामनाम मनलायकै ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतसुदर्शनबहुलाकथावर्णनोनामविंशोऽध्यायः २० ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं जैमिनिकी कथा कछु असकंदबखानि ॥

सो० मोरध्वज नृपएक धर्म्म धुरन्धर नीतिरत ।
रामभक्ति की टेक वधू पिंगला पतिव्रता ॥

तासुराज्य कोइ दुखी न रहई ❋ धनअधर्मकर भूप न लहई
बाल वृद्ध यौवन नर नारी ❋ बसैंजौन तेहि नगरमँझारी
सब मिलिकरैं भक्ति हरिकेरी ❋ नृप रानी उर प्रीति घनेरी
माला तिलकसहित जो आवै ❋ सुनतै नृप आगे उठिधावै
भवन लायकै चरण पखारै ❋ चरणोदक सोइ मुखमेंधारै

दो० गंग नहाय सहसवर द्वारावति सत्य जान ।
सन्तचरणजल जो पियै तुलैनतेहिसमआन ॥

सो० सिंहासन बैठाय षोड़श विधि पूजन करै ।

नित नव नेह बढ़ाय सेवैं नृप सुत नारियुत ॥

जेहिदिन सन्त न कोई आवै * तेहिदिन आप न भोजनपावै
चोरसात मिलिकीन्ह विचारा * हरिजनके आधीन भुवारा
साधुन केर वेष धरिलेहू * सब चलिये मोरध्वज गेहू
नृपते प्रथमै सेव कराई * घात पाय मूसब धन भाई
असकहि सुन्दरवेष बनायो * सातो हरि राजा गृह आयो
देखि दण्डवत कीन्ह महीपा * मानोलह्यो स्वातिजलसीपा
पदपखारि आसन बैठार्‌यो * धूप दीप आरती उतार्‌यो
अन्तःपुर में आसन दीह्यो * सुतबनिता सब सेवा कीह्यो
एक दिवस राजा मन आई * वनकी शोभा देखिय जाई

कुं०
अस विचारि कसवाइ अश्वचढ़ि चलेभूपजब।
चमूबार असवार अनुग पाछे लागे सब ॥
सघन विपिनमें गये फिरैंजहँमृग करिहरिसँग।
बोलत विविध विहँग फूल फूले नाना रँग ॥
विहरतबीतोदिवसनिशि पायकीन्हविश्रामतहँ।
शुभतड़ागपुरइनिकमल करतभँवरगुंजारजहँ ॥
इहां देखि घर सून चोर मूसन मन लायो।
हीरा हेम निकारि भवन बाहेर धरि आयो ॥
ढोवत बीती रैनि लोभ वश कछू न जान्यो।
रानिहि डार्‌यो मारि बांधि वसु बेगि परान्यो ॥
इतते सातौ जात हरि उतते आवत राज।
देखि हियेसंशयकर्‌यो पर्‌यो चरण तजि बाज ॥
बोल्यो दोउ करजोरि क्षमौ प्रभु गुनह हमारी।
रानी नारि सुभाव अवज्ञा किहिसि तुम्हारी ॥
चलिये बहुरि निकेत चेत हमरे तब होई।

सुनि ठग गये सुखाय राय ते बोले सोई ॥
साधु नहीं हम चोर हैं धन मूसा सो लेहु ।
ह्वै दयालु हम सबनपर जीवदान अब देहु ॥
कह्यो भूप धन धाम वाम सुत देह हमारी ।
ह्वै सकल तव नाथ वृथा कत होत दुखारी ॥
ऐसवचनजनि कहौ लोग सुनिकरि हैं शोरा ।
कहि हैं परगट गुप्त सबै हरि जन हैं चोरा ॥
गहि कर लाये भवनको सिंहासन बैठाय ।
रानिहि मृतक निहारिकै शोचन मनमें आय ॥
लाग्यो पुनि सेवा करन नृप संतनकी आय ।
कनक थार सातहुन के धोये चरण बनाय ॥

कुं०

धोये चरण बनाय मृतक रानी तहँ लायो ।
रुण्डहिमुण्डमिलाय रामकरध्यानलगायो ॥
सींच्यो चरणामृतहि प्राण घटमाहीं जाग्यो ।
उठी तुरत हरषाय भूपलगि भाषन लाग्यो ॥
आजु तुम्हें निद्राबहुत कहां कि घेरी आय ।
संतचले जब रूठिकै राख्यो क्यों न मनाय ॥
हाथ जोरि रानी कह्यो सुनो प्राणपति बात ।
सोइगई मैं आजुअति इन्हैं न जान्योजात ॥
कहनृप पद अबते गहो गहे रानि सुखभेरि ।
मनमें भयो न मैल कछु लागे सेवन फेरि ॥
प्रतिमा तीरथ मंत्र गुरु वेष जो वैष्णव कोइ ।
जाकी जैसी भावना ताहि तैस फल होइ ॥
तबहरिपुनिपुनिआयसुमांगा ❋ बोले भूप सहित अनुरागा
जो धन चहौ सो हम ते लीजे ❋ चोरी कर्म छांड़ि प्रभु दीजे

जन्मभरे कहँ सम्पति दीन्हों * हरषसमेत बिदा तब कीन्हों
ऐसी भक्ति देखि भगवाना * मनवचक्रमतेनिजजनजाना
मोरध्वज पर दाया कीन्ह्यो * चक्र सुदर्शन रक्षक दीन्ह्यो
ईति भीति दुख दारिद आवै * नृप के नगर न पैठनपावै
एक दिवस यमदूत जो आये * चक्र सुदर्शनलखि रपटाये
भागत यमपहँ पहुँचे जाई * दण्डफांससब दिहिनिचलाई
लखि हरि कहा हवैका भाई * सुनिगण बोले वचनरिसाई
दण्ड हमार तिहूँपुर माहीं * ऊंच नीच कोउ छांड़तनाहीं
मोरध्वज पुर जान न पायन * खेदेहु चक्र इहां भगिआयन
यह अनुचित देखी महराजा * हमते यह सपरीनहिंकाजा
सुनिरविसुतमन क्रोधबढ़ायो * दूतनसहित विष्णुपहँआयो
शीशनाय कह अरज हमारी * सुनहुनाथ त्रिभुवनसुखकारी
तव आज्ञा ते जगत मँझारा * सबपररहत है दण्ड हमारा
मोरध्वज पुर दूत हमारे * गे तहँ खेद्यो चक्र तुम्हारे

दो० दूतनकर अपमानभा दीन्हिनि फांस चलाय ।
सो यह कारण कौन है नाथ कहौ समुझाय ॥
हँसिबोले हरि सुनहुयम नृपसम भक्त न कोय ।
तेहिते दीन्ह्यो चक्र निज रखवारी कहँ सोय ॥
केहि विधि जावें दूत तव मेरे जनके पास ।
सुनत पित्रपतिजोरिकर कीन्हों वचनप्रकास ॥

छं० भूपकरै केहि भांति यज्ञ सो कहिये मोहीं ।
कह प्रभु कहे न बनी चलौ दिखरावों तोहीं ॥
यमहिं सिंहकरि आपु साधुकर रूप बनायो ।
आये नृप दरबार देखि उठि पद शिरनायो ॥
सिंहासनपधरायके षोड़श विधि पूजाकरी ।

भोजन को पूछत भयो तब नृपते बोले हरी ॥
सिंह एक मम साथ प्रथम भोजन तेहि दीजै ।
कह्यो भूप का चही तौनि ततबीरहि कीजै ॥
सुत को मांस जु देहु आन साउज नहिं खाई ।
कितौ भक्ति प्रण तजहु कितौ शिशु लेहु बोलाई ॥
भक्ति तुम्हारी ना तजौं कोटि विघ्न किन होय ।
सुत वनिता धन धाम तन संगजाय नहिं कोय ॥

हरषसहित यक दास बोलाई * कह्योकिआनहुसुतहि लेवाई
आज्ञामानि कुँवरढिग गयऊ * खेलतबोलि लयावत भयऊ
पुत्रहिलखिनृपवचनप्रकासा * हमरे इक आये हरिदासा
तिनके सँग इक नाहर अहई * तुम्हरो मांस खान सो कहई
सो कस आज्ञा अहै तुम्हारी * मेटहु संशय आजु हमारी
सुनिताम्रध्वज कह शिरनाई * धन्य सोतन परस्वारथ आई
धन्यधामजहँअतिथिकिसेवा * धन्य शिष्य जानै गुरुदेवा
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरई * धन्य पुत्र पितु आज्ञा करई
धन्य ग्राम जो सुरसरि तीरा * धन्य तपी तामस बिन धीरा
धन्य सो नगर जहां रजधानी * राजा धन्य धर्म मतिसानी
धन्य दास जो आयसु मानै * धनि स्वामी सेवा पहिंचानै
धन्य ज्ञान जो इन्द्री जीतै * धन्य सो प्रीति न यांचै मीतै
धन्य सभा जहँ पण्डित होई * पण्डित धन्य क्रियायुत सोई
धनिधन पाइ जो त्यागन करई * धन्य दरिद्री पाप न चरई
धन्य सुखी जो विषयनिवारै * धन्य साधु जो मानस मारै
धन्य सो क्षमा समरमहँआनै * धनि दाता नहिं दान बखानै
धन्यसो द्रव्य दान महँ लागै * धनि प्रभुता मदमान न जागै
धन्य कर्म जो भगवत हेता * धन्य ज्ञान वैराग्य समेता

धन्यविरति जो रति भगवानै * धन्यसोकविहरिचरितबखानै
धनिनर परअवगुणहिंछिपावैं * धनिविद्या विकार मिटिजावैं

दो० दयावान सो देश धनि कहत वेद बुध लोइ ।
रामभक्त जहँ ऊपजै धन्य जाति कुल सोइ ॥
धन्य घरी रघुनाथ तब जब होवै सतसंग ।
जन्म तासु को सफल जो रँगै रामके रंग ॥

अहोपिता मोहिं भा सुखभारी * जो हरि मांगी देह हमारी
अब यह परस्वारथ में आयो * धनि जननी ऐसो तनजायो
रोगदोष वश छूटै काया * स्वारथ शास्त्र रजाय कटाया
विष्ठाकर्म खाक होइ जाई * कहो कौन स्वारथ फिरिआई
माता भार मुई दशमासा * सही अनेकभांति तेहिंत्रासा
सोतनलग्यो न परहित माहीं * जीवन जन्म धिग्गहै ताहीं

दो० भजन परारथ कर्म शुभ सधै पाय नरदेह ।
जीवन ताको सफल है अरु सबकेमुख खेह ॥
असकहिपितै नवायशिर चलिभे कुँवर प्रवीन ।
आये केहरि सन्त जहँ कहे वचन ह्वै दीन ॥

अब भोजन हमका करिलीजै * अहोसिंह तुम देर न कीजै
बारबार ऐसे जब कहेऊ * सुनियमनिजतनप्रकटतभयऊ
रूपचतुर्भुज हरिकरलीन्हा * प्रकटनृपतिकहँ दर्शनदीन्हा
धन्य धन्य तुम धन्य भुवारा * आपु सराहत सिर्जनहारा
कह रवितनय धन्यहो राई * सुत तुम्हार तुमसे अधिकाई
जसि श्रीपति तव कीनबड़ाई * सो निज नयनन देख्यों आई
बोले प्रभु वर मांगु नरेशा * प्रणतपाल मेरो यह पेशा
मोरध्वजकहसबसुखदायिनि * आपनिभक्तिदेहुअनपायिनि
एवमस्तु कहि कृपानिधाना * बोले पुनि सुनु भूप सुजाना

करो भक्तिजबलगियह देही ॥ अन्तसमय ममधाम सनेही
असकहिहरियमतुरतसिधाये ॥ अपने अपने मंदिर आये
धर्म गणनसे कथाबखानी ॥ भई प्रीतिमन मिटीगलानी
जो जन चरितसुनै नितएहा ॥ होइ संतपद पावननेहा

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतमोरध्वजकथावर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० सुमिरिरामासियसन्तगुरु गणपागिरासुखदानि ।
बर्णौं हरि अस्मृति मत कछु सोइकथा बखानि ॥
रानिहि मार्योहरिणलखि तदपि न भयो अभाव ।
पुत्रहि दीन्ह्यो द्वीपिजन हित मोरध्वज राव ॥

यहिविधि भक्तिकरै नरनाहा ॥ दिनप्रतिबाढ़ैअधिकउछाहा
भूप धर्म जो वेदन गाये ॥ सोसकलौक्षितिपति करवाये
सुरभूसुरसुरभिन अतिमानै ॥ वैष्णवकोविष्णुहि समजानै
श्रीपतिचरण लीनमनजासू ॥ लुब्धमधुपजिमितजे न पासू
बहुतकालयहिविधिचलिगयऊ ॥ औरसुनौजोकसनीलयऊ
कीन धर्मसुत यज्ञकसाजा ॥ पत्र बांधिछांड़्यो वर बाजा

दो० कृष्ण विजय बभ्रूवहन नीलध्वज वृषकेतु ।
हंसध्वज औरो सुभट सँग रक्षाके हेतु ॥
चलत वाजि आयो सोई मोरध्वजके ग्राम ।
ताम्रध्वज गहि बांधिपट बाँध्यो लै निज धाम ॥

चढ़ि रथ आगे आपसिधायो ॥ पाछे इत अर्जुनदल आयो
होन लागि अतिमारु गँभीरा ॥ शूरमगन कदरनमन पीरा
सात दिवस भरि भई लराई ॥ मोरध्वज सुत जीति न जाई
अर्जुन आदि वीर जे रहेऊ ॥ दियेबिडार विकलसबभयऊ
लखिअचेतनिजमंदिरआयो ॥ बड़पराध भा भूपसुनायो

भक्तिकरत जाकी नितरहिये ❋ तिनते युद्धकरन को चहिये
महिदुखहरन सुरनसुखकारी ❋ धस्योआय वपु कृष्णमुरारी
सुनि ताम्रध्वजकही जुबाता ❋ अनजाने अनीतिभै ताता
यहां कृष्ण पारथते कह्यऊ ❋ सात दिवस इहनै ह्वैगयऊ
मोरध्वज है भक्त हमारा ❋ तेहिते लरे न पैहौ पारा
सुनिकपिध्वजकेभाअभिमाना ❋ हमते बड़ाभक्त को आना
जिनकेवशनितरहतगोपालय ❋ धनुषकेरि विद्या उरआलय
यह अभिमानकृष्णप्रभुजाना ❋ लगे विचारन इमिभगवाना

अ.छं.

जाय द्वैत ते ज्ञान जायकुल द्विजहि सताये।
जाय नीच सँग सुमति जाय क्षुधभोजनखाये॥
जाय क्रोध ते धर्म जाय आदर नित मांगे।
जाय नीति बिन राज्य जाय शूरापन भागे॥
जाय ज्ञान ते मोह जायअघ हरिगुणगाये।
जाय तिमिर रवि उदय जायविद्यालसआये॥
जाय यती वशकाम जाय यशलोभबढ़ाये।
जाय गृही बिनकार जाय सुखसबहिंसताये॥
जाय कुमतितेद्रव्य जाय संतोष ते समता।
जाय कपट ते प्रीति जाय रिसकीन्हें ममता॥
जाय सखाते शोच जाय पातकते शोभा।
जाय सुपथ ते रोग जाय वैराग्य ते लोभा॥
जाय जन्म अरुमरण रामके सुमिरण कीन्हें।
जाय गुरु ते भर्म कर्म निज रूपहि चीन्हें॥
शान्ति जाय परवर्सिते दोषजाय दिहे दान।
कहै रघुनाथयों जात है भक्ति किहे अभिमान॥

ताते अबहीं देहूँ मिटाई ❋ नातरु बढ़तबढ़त बढ़ि जाई

कृष्ण कहा पारथ सुनु मोहीं * आवो भक्ति देखावों तोहीं
आपवृद्धद्विजवपुधरि लीन्हा * बालकरूप विजयकहँ कीन्हा
आये चलि मोरध्वज द्वारा * हरि पूजन महँ रहे भुवारा
द्वारपाल जा खबरि जनाई * बोले नृप बैठारहु जाई
कहत दोउजन चले रिसाई * सुनि नृपपरे चरणमहँ धाई
करि सन्मान सुआसन दीन्हा * हाथ जोरि इमिपूछे लीन्हा
कौन हेत आयो महराजा * आयसुहोय करौं सोइकाजा
हम सरिखेनते बनत नआना * तुम्हरी सेवाते कल्याना

दो० विप्र कही जो देनकी करो प्रतिज्ञा राइ।
तो मैं मांगौं जाहिते वचन वृथा नहिं जाइ॥

कहनृप कीन्ह प्रतिज्ञा माँग्यो * तबतौविप्र कहन असलाग्यो
जातरहेनवनहरियकमिलेऊ * गहिसिआयबालकमोहिंढिलेऊ
तबमैं कह्यों छांड़ि यहि दीजै * याके बदले मोको लीजै
सिंहकहा मोरध्वज राऊ * तासु अंग दाहिन लैआऊ
तौ मैं बालक देउँ बचाई * नाहिंतो याहि डारिहौं खाई
हौं तव अंग देन कह राई * छांड़ेसि तबबहु सौंह कराई
सोई लेन आयों तव द्वारा * अपर हेत नहिं कछूहमारा
सुनि रानी बोली हरषाई * अर्धंगी त्रिय वेदन गाई
ताते मोहिं केहरि को दीजै * पुत्र कह्यो नहिं मोको लीजै
बहुरि कृष्ण बोले सुनि लेहू * केहरि वचन कहेउ यक येहू
इस्त्री पुत्र हाथ गहि आरे * चीरैं हर्ष समेत भुवारे
सुनि आरा नृप लीनमँगाई * रानी पुत्र गह्योतब आई
शिर धरि चीरन लागे कैसे * बढ़ई उभय दारु कहँ जैसे
चीरत आयो नासा तीरा * बायें दृगभरि आयो नीरा

दो० निंदानिंदि कहि नीरलखि चलेकृष्ण अनखाइ।

दोउ करटेकि करोतनृप पूंछेउ ठाढ़ कराइ ॥

केहि कारणप्रभु चल्योरिसाई ❀ तौनिबात म्वहिं कहौबुझाई
देत छोभ तेरे है आवा ❀ तेहितेयक अम्बकजलछावा
कह नृप मोरे छोभ न शाई ❀ वाम अंग रोवत यहिलाई
मैं न लग्यों परमारथ माहीं ❀ मोसम भाग्यहीन कोउनाहीं
तुम्हरे दहिने तौनहिं आवा ❀ सुनत कृपाल महा सुखपावा
फेरयोशीश कमलकर जबहीं ❀ भई नवीन देह नृप तबहीं
सजलनयनप्रभुहृदयलगायो ❀ जयकहिदेव सुमन वरषायो
कह्यो कि नृप मांगहु वरदाना ❀ जो इच्छा मनहोइ सुजाना
कोटि भांति जो देहुँ भुवारा ❀ तुमते तबहुँन हौं उद्धारा
ऐसी भक्ति कीन्ह तुम मोरी ❀ दृष्टि न सूधि होत दिशितोरी

दो० भूप कहा जो इषदहू करै तिहारे साथ ।
ताकोतुम गिरि मेरु सम मानिलेतहौ नाथ ॥

एक बात मांगत हौं स्वामी ❀ सो मोहिंदीजै अन्तरयामी
आगे युग लागी कलिकाला ❀ कुटिलअपावन रूपकराला
तामें कसनी भक्तन केरी ❀ लेहु न नाथ अरज यहमेरी
कलिमें भक्त नाम की आसा ❀ कसनी लिहे न होइ प्रकासा
सुनत वचनकह विहँसिमुरारी ❀ जो मांग्यो सो दीन्ह्यों हारी
निजकेहेतुहि अबकछुकहिये ❀ प्रभुपदप्रीतियहीमोहिंचहिये
कहप्रभु धन्य धन्य तुमराजा ❀ धन्यपुत्रतिय सहितसमाजा
असकहिहयलैबिदाजोभयऊ ❀ देखि दर्प पारथ कर गयऊ

गी.छं. जबदेखिनृपकीभक्तिको अभिमान पारथकोगयो ।
गिरिचरणश्रीगोपालके है दीनअसबोलतभयो ॥
नहिं मंद मोसम कोउ तुमते नाथहौं सेवालई ।
धृगतेहुँ पर अहँकार राखत भक्तमोसम नाहई ॥

लोभवश गुरु मित्र भ्राता पुत्रबहु जीवनिहने ।
समुझिकुल करतूति अपने दोष जायें नहिंगने ॥
परपिता द्विजकानीनहमरे पिता गोलकगारजू ।
हम कुंड कटु अग्रज जुवारी हृदहारीनारिजू ॥
अतिकष्टकरि भोब्याहुसो त्रियपंचभरतारीभई ।
गुणहीनहरिछलपीनपांवर निधननिर्बलनिर्दई ॥
ऐसेहु परनहिं जानियत धौंकाहिते रीझेउहरी ।
बन बान विष ऋषरिपुनते सबठौरतुमरक्षाकरी ॥

छं० दुरबल के बल भूप भूप के बल को बलहै ।
तस्कर के बल राति धनिहि धन घातै छल है ॥
मूरख के बल मौन मानिनी के बल रोदन ।
क्रोध के बल खलवयन मयन के वामविनोदन ॥
द्विजकेश्रुतिकविबलवरण खगकेपरसरकरलहौ ।
तेहिप्रकार यदुनाथतुम नाथहमारे बल अहौ ॥

दो० कहरघुनाथ सनेहिनर यहिविधि बिनती कीन्ह ।
मोरध्वजकी यह कथा यथा बुद्धि कहि दीन्ह ॥
मोरध्वजकी यह कथा पढ़ै सुनै नित नेम ।
होय भाव भक्तन विषे बढ़ै राम पद प्रेम ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतमोरध्वजआख्यानवर्णनोनामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

दो० सुमिरिराम सियसंतगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
वरणौं महापुराणको अब इतिहास बखानि ॥
सुनहु मुनिहु मनलाय कै सुंदरकथा अनूप ।
कही जौन शुकदेवजी सुनी परीक्षित भूप ॥
सोई कथा मैं कहौं बुझाई ✱ रामचरणजेहि रतिअधिकाई

सतयुगभे मनुजगयश जासू ❋ नृप उत्तानपाद सुततासू
सुरुचि सुनीतिरहैं दोउरानी ❋ विधुवदनी गुणरूपसयानी
उत्तमनाम सुरुचि सुतजायो ❋ ध्रुवसुनीति के वेदनगायो
सुरुचिमहीपै प्रियअधिकाई ❋ सोसुनीतिके महल न जाई
अन्न सेर भरिदेइ भुवारा ❋ ताहीते दोउ करैं गुजारा
पांच वर्षके ध्रुवजब भयऊ ❋ खेलतनृपजहँतहँचलिगयऊ
ठाढ़भये आगे हरुगाई ❋ लखिनृपपुरुषलियोगोदउठाई
देखिसुरुचिअति उठीरिसाई ❋ दिहिसि उतारि गोदतेधाई

दो० बैठन को नृपगोद जो लिखाहोत तव कर्म।
तौ सुनीति के जठरमें काहेक लेत्यो जन्म॥
पूत अभागिनि केर ह्वै चहो गोद नृपकेर।
अन्न मिलतहैं सेरभरि सोउन मिलि है फेर॥

छं० तपबिनहोइ कि राज साज बिनहोइ कि कारज।
गुण कि होइबिनटहल विनागुणहोइ कि चारज॥
धनबिन मित्र किहोइ मित्रबिनहोइ कि सदसुख।
सिद्धि कि बिनविश्वासदासबिनमिटै कि भवदुख॥
अघबिनहोतकिअयशशुभयशकिहोइबिनदानके।
होत भुक्तियुत मुक्तिकहुँ विनाभजे भगवान के॥

अस कहिबाहँ पकरि ध्रुवकेरी ❋ मंदिर बाहर दीन खदेरी
रोवत ध्रुव माता ढिग आयो ❋ देखत जननी गोद उठायो
क्यहिं मार्योसो कहिये मोसे ❋ का अपराधभयो सुत तोसे
कहध्रुवपितागोदमोहिंलीन्हा ❋ रानी छीनिडारि मोहिंदीन्हा
दूरिदूरि कहि घरते काढ़्यो ❋ सुनिदुर्वचनमोहिंदुखबाढ़्यो
ऐसी विधिमोको दुख दियऊ ❋ राजाकछू मन्यो नहिंकियऊ
ताते मैं पूछत हौं तोको ❋ काकी शरणअहै सुख मोको

कह्योमातुसुख निधि भगवानू ॥ सोइ पितुमातु बंधु सँगजानू
जेहि प्रभुराखिगरभमेंलीन्ह्यो ॥ पानीकेबुंद प्रकटबपु कीन्ह्यो
गरभ मोचि पुनिबाहर लायो ॥ मात पयोधर क्षीर पियायो
यहिविधि पुष्ट किहे सबअंगा ॥ जनमत मरत तजै नहिंसंगा
जिय अपराधी ताहि न जानै ॥ संकट परे तबै कछु मानै
ताते सहै विपति बहु भांती ॥ चौरासीलख आवत जाती
असजियजानिभजहुभगवानै ॥ सुमिरतजाहिशम्भुधरिध्यानै
सोप्रभु विश्वरूप श्रुतिकहई ॥ सुनो तात जेहि संशय दहई

प. छं. पद्पताल शिरब्रह्मधाम ॥ अपर लोकहै अंगनाम
नयनदिवाकरदिशाकान ॥ अश्विनीकुमारनाजासुघ्रान
घनकेशअम्बुपतिजीहजानु ॥ निशिदिननिमेषआननकृशानु
दिगपालबाहुहैंपवनश्वास ॥ रोमावलि विटपलघु दीर्घवास
नारी सरिता अरु अजाहांसु ॥ अधरलोभ यमदसन तासु
अस्थिअद्रि रसशब्द भोग ॥ जानै बिरला कोउ चतुरलोग
विष्णु प्रजापति वीर्य तोय ॥ भृकुटी विलास सोइकालहोय
उदर सिन्धु सांचौ प्रसंग ॥ ईसथूल इतना जुअंग

सो० अहंकार त्रिपुरारि चतुरानन सोइ बुद्धिवर ।
मन दिजराज विचारि चेतनरूप अनूपहरि ॥

दो० सो प्रभु सचराचर विधे पूरण व्योम समान ।
भजनविनानहिंलखिपरतज्योंबिनमथेकृशान ॥
असविचारिसबशोचतजि रामचरणचितदेहु ।
सुर दुर्लभ तनु पाइकै ताहि सुफल करि लेहु ॥

ऐसे वचन सुने ध्रुव जबहीं ॥ हाथ जोरि बोले इमितबहीं
तुम कत दुखी सुखी वहरानी ॥ तीन भेद मोहिंकहो बखानी
कह रानी प्रथमैं तनु माहीं ॥ सपन्यो दानदीन कछुनाहीं

साधु संगहरि भजन न भावा * खर कूकर सम सेंति गवाँवा
जसकछुकर्मपोचमलकीन्हा * सोइजनमतविधिशिरलिखिदीन्हा
नहिं जानी केहि सुकृत तेरे * भये प्राप्त गुण गोविंद केरे
तेहितेकोइदुख निकटनआवे * परारब्ध तेहि तनु भुगतावे

दो० जो कछु लिखा ललाटमें सो होवै परिणाम।
चहै परै घर रंकके चहै महीपति धाम॥
यद्यपि हरिके भजनकरि होत सुरीते कांट।
नरवर्षनते ह्वै गई विधि वरषै बड़ि बांट॥

ताते सुत तुम ऐसी करहू * रामचरण पंकज चितधरहू
भुक्ति मुक्ति हरि दरशन पावो * जोतजिकाम नामलव लावो
यहिविधिमातुदीन जबज्ञाना * सुनिध्रुवकेअतिशयमनमाना
पूरबकाकछु सुकृत जागा * ध्रुवके भयो विमल वैरागा
उठि जननीते आज्ञा मांगी * करिहौंभजनविपिनगृहत्यागी
बोली मातु अबै तू बारो * सतसंवत जनि वनपगुधारो
क्षुधातृषा जब आनि सताई * केहिते भोजन मँगिहौ जाई
शीत उष्ण वरषा दुख पैहौ * का वन ओढ़िहौ काहडसैहौ
बाघ सिंह वृक शूकर आई * औरौ जीव बहुत दुखदाई
बालक देखि देहैं दुख भारा * का उपाय तब चली तुम्हारा

दो० सुनिध्रुव कह माता तुरत गयोज्ञानका तोर।
अबहीं तैं हमते कहै हरि रक्षक सब ठौर॥
गरभ माहिं रक्षाकरी जहां हितू नहिं कोइ।
अबका परखिन पालिहैं विपिनगये महँसोइ॥

असकहि ध्रुव चलिभे हरषाई * मंत्रिन भन्यो भूपते धाई
ध्रुवबालक वनजात तुम्हारा * का निदेश तव है यहिबारा
कह नृप सोन सेर युग देहू * अबहीं ध्रुवै फेरि तुम लेहू

मंत्रीसुनि आये ध्रुवपासा * अस्थिरकरिअसवचनप्रकासा
सेरभरे कर दुइ सेर खाहू * लउटिचलौघरवनहिंनजाहू
जेहिं प्रभुकीन सेरसे दूना * तेहिके भवन अवरकासूना
हरि मारग ते फिरब न भाई * करे जो कोई कोटि उपाई
मंत्रिन आइ कहा नृपपाहीं * चले जात ध्रुव आवत नाहीं
राजाकह्यो ग्राम यक दीजै * मानै तबै फेरि ध्रुव लीजै
सचिवन ध्रुवको ग्राम सुनायो * तबध्रुवअधिक सनेहबढ़ायो
मनमें अभय मनोरथ जागा * तुरतैं मिलन ग्राम इकलागा
नाम जपेते धौं का होई * मोरेमन प्रतीति असिसोई
ताते हम अब लौटब नाहीं * मंत्रिन जाइ कही नृपपाहीं
तब राजा आपुइ चलिआयो * चौथाई कहि अर्द्ध सुनायो
बहुरि कह्यो सब राजहिलीजै * नानाभांति भोग चलिकीजै
सुनिपितुवचनकहतध्रुवभयऊ * प्रथमै सेर अन्ननहिं दयऊ
जेहिन कोइ ताकर प्रभुसोई * प्रभुजाके ताके सब कोई
जबमैं रामचरण चित दीन्हा * तबतुम नामराज्यकरलीन्हा
हरिसम्मुखते जो फिरिआवौं * सतीस्वांगकरि ताहिलजावौं

दो० रानी जबहीं गोदते दीन्हों मोहिं उतारि ।
तबहीं क्योंन सँभारेऊ मोहकरत अबहारि ॥

जबलगि हरिके दर्श न पैहौं * तबलग जगमें मुखनदेखैहौं
मंत्री नृप सब कहि कहि हारे * हठकरिकै ध्रुव वनै सिधारे
मिले ध्रुवै नारद मगमाहीं * पूछेउ कितआयो कितजाहीं
जननिजनककोकिततवग्रामा * हेसुतकहो कहा तवनामा
बोलेध्रुव पितु मातु मुरारी * भ्रातामित्र सोई सुखकारी
सोइकुलजाति कुटुँबपरिवारा * सब जीवनको सिरजनहारा
जबलग ऐसे पितै न जानै * तबलग झूठसांच करिमानै

जगमहँजेहिविधिवदसबकोऊ ❋ तुमते कहि समुझाऊं सोऊ
नृप उत्तानपाद पितु अहई ❋ माता उभय नाम ध्रुवकहई
पितागोदलखिदूसरिमाता ❋ दिहिसिउतारिकहिसिकटुबाता

दो० रोवत जननी पहँगयों तेहिमोहिं दीन्हों ज्ञान ।
हे सुत सुख सपन्योनहीं विना भजे भगवान ॥

तब मैं वनको चल्यों रिसाई ❋ सचिवन कहा भूपते जाई
राजा तब बहु लोभ दिखायो ❋ सबतजिहौंहरिशरणतकायो
तुमकोहौ निज नाम बखानौ ❋ मैं बालक नहिं ऐसे जानौ
कह ऋषि नारद नाम हमारा ❋ गो दोहन विचरौं संसारा
सुनिध्रुव गिरे चरण हरषाई ❋ ऋषिउठायलियगोदलगाई
चलु ध्रुव तोहिं फेरि लै जावों ❋ राजाते सन्मान करावों
राजकरो चलि व्याह करीजै ❋ बालक एकहोइ सुनिलीजै
सुतहिराजदै वनहि सिधारो ❋ सबराजनकी साखि विचारो
कानन सिंह बाघ बहुरहई ❋ भालु भेड़िया देखत गहई
निशिचरविपुलफिरतदुखदाई ❋ बड़े बड़े भयमानत भाई
तहँ बालकको कौन उबारा ❋ ताते मानौ वचन हमारा
शीत उष्ण वरषा दुखपावै ❋ क्षुधातृषा जबअधिकसतावै
तब केहिते दुख कहिहौ रोई ❋ तहँ नहिंमातु पितानुज कोई
करणी कठिन न कीन्हीजावै ❋ विपिनजाइ कत प्राणगमावै

दो० कहरघुनाथ अनेक विधि मुनिभय रहे देखाय ।
ध्रुवके तनक न शंकभय रामकृपा दृढ़ताय ॥

कहध्रुव हरिरक्षक सब ठावां ❋ घरवनफिरतचलतबिचगांवां
जैसी कर्म्म भावती होई ❋ तैसी मृत्यु पाव सब कोई
आखिरयहतनु यकदिनछीजै ❋ तेहितेहरिसुमिरणकरि लीजै
माता पिता नारि सुत नाती ❋ को काको सब पथिक लखाती

इन सबहिनते सरत जो काजा * तौ तजि क्यों वन जाते राजा
राज पाइकै मद होइ आवै * करै अनीति नरकको जावै
राज नरक दोउ संगै रहई * यहितेमोहिंनहिंभावत अहई
ताते मोहिं हरिभक्ति दृढ़ावो * कृपाकरो गुरुमन्त्र सुनावो
मैं बड़भागी हौं ऋषिराया * यहि अवसर तवदर्शन पाया

दो० लागत लवज्यों वृष्टिमै बूड़त वोहितसाथ।
मरतधन्वंतरि मिलै तिमि मोहिंमिलेतुमनाथ॥
बन्धुबयर परनारि सँग न्यायम कीजै देर।
भोजन दान सुकर्म में नाहिं लगाई बेर॥

ताते वेगि सुदीक्षा दीजे * पतितै प्रभु पावनकरि लीजे
नारद ध्रुवके मन की जानो * भूतभविष्यवर्त्तमानपिछानो
तब ध्रुवका दीन्हों उपदेशा * मूलमन्त्रज्यहि जपत महेशा
आसन ध्यान कह्यो जपनेमा * नवधा भक्ति बतायो प्रेमा
शम दम सत सन्तोष विचारू * ज्ञान विराग दयाउर धारू
काम क्रोध मद मत्सर लोभा * छांड़ो मान मोह छल छोभा

सो० विद्या जाति महन्त यौवनको मद रूपमद।
तजैं यतनकरि सन्त पांच काटिये भक्तिके॥

औरो विघन भजनमें भाई * ऋद्धि सिद्धि सब घेरैं आई
इन्द्र डरपि अप्सरा पठावें * छलबलकरिसोआनिडिगावैं
जापर कृपा करैं असुरारी * तेहिते सकलजाइ जियहारी
मुनि शिक्षादे जबहिं सिधाये * तबध्रुवचालि मधुवनमें आये

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतध्रुवमधुवनआगमनोनामत्रयो विंशोऽध्यायः २३॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
राजनीति संयुतकहौं सोइ इतिहास बखानि॥

पांचवर्ष के वयस ध्रुव धर्षकरी कछु नाहिं।
सुनिमातेउपदेश लहि आये मधुवन माहिं॥

एकपायँ भे ठाढ़ सुजाना * निश्चलमनकरिहरिकोध्याना
अन्नत्यागि फलमूल जोखायो * फलहु तजे तब पात चबायो
दलहुछांड़ि जलकीन अहारा * जल परिहरिभे पवनअधारा
यह चिंतवनि रहत चितछाई * कब देखौं हरिपद सुखदाई

दो० पवन तजत लागे जरन सुरसब शक्रडरान।
जैसेकेहरिको निरखि अस्थि लिये मुखश्वान॥

माया देवी तुरत बुलाई * कहिनिकिध्रुवाहिडिगावहुजाई
मैना और उर्वशी संगा * आईं जहँध्रुवसहित अनंगा
ऋतुवसन्तविरचेसि अमराई * नवपल्लव फलफूल सोहाई
गुंजतअलिगए कुंज विहंगा * बाजत बाजन उठत तरंगा
नृतहिं अप्सरा भाव बतावैं * ऊंचे स्वरकल किन्नरगावैं
यहिविधि किहेनिउपायघनेरी * छूटी नहिं समाधि ध्रुवकेरी
ऐसे ध्रुव डिगिहैं नहिं जाना * तब देवी माया छल ठाना
रूप बनाइ सुनीतिक लीन्हा * पुत्र पुत्रकहि रोदन कीन्हा
प्रथमैं आंधीआनि चलाइसि * परेउपलजलमलबरसाइसि
भीजे पट कट कट रद होवै * कांपै कुणप पुत्र कहि रोवै
घरते नृप मोहिं दीन निकारी * ज़ा ध्रुवढिग जाकी महतारी
केहिकी अबमैं शरणै जावों * बोलौ लाल बहुत दुखपावों
शीश धुनै कर दैदै मारै * हाय हाय वदि वचन उचारै

दो० शोर सुनत रघुनाथ तब ध्रुवकी जगी समाधि।
लगे विचारन मनैमन हरिचरणन चितसाधि॥

एका एकी कानन माहीं * किमिरानी आवतमोहिंपाहीं
जो अज्ञान होत तौ औती * प्रथमैं कतमोहिं वनै पठौती

ध्रुवलीला

आये हैं ध्रुव निकट मुरारी। लगि समाधि तन सुरति बिसारी॥
कृश लखि शंखनाद हरि कीन्हों। खोलि नयन ध्रुव तबहीं दीन्हों॥
आगे खड़े दीख भगवानै। भक्तबच्छल शिवरूप निधानै॥ (पृष्ठ१२७)

जानि परत यह माया अहई * आई छलन मोहिं सुत कहई
नारद वचन यादि जब कीन्हा * पुनिध्रुवरामचरणचितदीन्हा
रघुपति कृपा न भूलै सन्ता * जिमिनट लहै जमूड़ा अन्ता
बहुप्रकार सो सचि पचिहारी * तब लजाइ सुरलोकसिधारी
इन्द्र आदि सुर ह्वै ह्वै दीना * मधुसूदन की विनती कीना
महाराज ध्रुव तेज अपारा * तेहिते सुरपुर छूट हमारा
तिष्ठन कौन ठौर प्रभु पाई * जरतविवुधजहँजहँचलिजाई
ताते हमैं राखि प्रभु लीजै * ध्रुवको जाय दरश अब दीजै
व्याकुललखिसुरकृपानिधाना * मन वच कर्म दास निजजाना
आये हैं ध्रुवनिकट मुरारी * लगिसमाधितनसुरतिबिसारी
कृशलखिशंखनाद हरिकीन्हों * खोलिनयनध्रुव तबहींदीन्हों
आगे खड़े दीख भगवाने * भक्तबछल शिवरूप निधाने

दो० तड़ित विनिन्दक पीतपट नीलजलद तन श्याम ।
इन्दुवदन वारिजनयन करआयुध अभिराम ॥
शीशमुकुट वनमाल उर छवि मनोज हरिभास ।
ध्रुव विलोकि लागेकरन अस्तुति सहित हुलास ॥

अ० छं० नमोराम सुखधाम नमो जगदीश दयालं ।
नमो अशेष अलेख नमो सुर मुनि प्रतिपालं ॥
नमो अनाथनिनाथ नमो सन्तन हितकारी ।
नमो शम्भु अज ईश नमो निरगुण गुणधारी ॥
नमो अपार अगार नमो निरकार निरामय ।
नमो अभेद अछेद नमो निरखेद निरामय ॥
नमो अजीत अतीत नमो परमात्मानन्दं ।
नमो निकर्म निभर्म नमो निजब्रह्म सुछन्दं ॥
नमो अरूप अनूप नमो सुरभूप उजागर ।

नमो वीर रणधीर नमो तारण भवसागर ॥
नमो शरण दुखहरण करण ततकाल निहालं ।
नमो तुमेक अनेक नमो कालहुके कालं ॥
नमो कृष्ण तोहिं कृष्ण तोहिं रामं बलरामं ।
तुहीं दशो अवतार तुहीं सारण सब कामं ॥
नमोनमो जयजयतिजय अधमउधारणअघहरण ।
रघुनाथदासयहिभांतिध्रुवअस्तुतिकीन्हीगहिचरण॥

दो० सजलनयन प्रभु अंगभरि लीन्हों हृदयलगाय ।
कह्यो पुत्र वर मांगिये जो तेरे मनभाय ॥

मधुभारछन्द । सुनि । गुनि ॥ ध्रुव । ध्रुव ॥

मांगौं कहा जगतपति देवा * सब नश्वर बिन तुम्हरी सेवा
अर्बि खर्बि लग द्रव्य जो होई * त्रिभुवन राजपाव जो कोई
जोपै मरण करण सुख कैसो * सपनेकी सम्पति भ्रम जैसो
तेहिते नाथ कृपा जो कीजे * प्रेमभक्ति आपनि मोहिं दीजे
योगयज्ञ जप ज्ञान विरागा * क्रियाकाण्डबहुभांतिविभागा
भक्तिविना गुण सोहत कैसे * जीवविना तन भूषण जैसे
सतसंगतिभवनिधिजलयाना * देव दयाकरि सो भगवाना
सुनिध्रुववचन सरलछलहीना * बोले प्रभु भंजन दुख दीना
सांची बात कही तुम ऐसी * मेरेभक्त कहत हैं जैसी
सुर नर नागलोक विधिहूको * मोबिन भक्त गनत सब फीको
परतव मातु बहुत दुख पायो * राजहेत तैं वन को आयो
जो निजपुर अबहीं लेजावों * जगमें जाहिर नाहिं करावों
तौ सब जनिहैं ध्रुव मरिगयऊ * की वनखाय जनावर लयऊ
जो जगमें अपकीरति होई * तौ केहिकाम धाम ममसोई
ताते प्रथम राज चलिकीजे * छत्तिस सहस वरषलग लीजे

पुनि ममलोकहि आयो ताता * चढ़ि विमान सँग लीन्हे माता
तब ध्रुव कह्यो जोरियुग पाणी * राजते नरक होत श्रुतिवाणी
कह भगवान अधर्म जो करई * सो नृप जाय नरक महँ परई
धर्मवान क्यों नरकै जावै * राजनीति रत दोष न आवै
बोले ध्रुव मम नीति न जानी * कह हरिसुनु मैं कहौं बखानी

अ०छं० कहै न मिथ्या वचन मूढ़ मंत्री नहिं राखै।
दैकै लेइ न फेरि अजानै अमन न चाखै॥
मित्रै देइ न दुःख अमित्रै ना पतिआवै।
सबते राखै हेत विप्र ना भूलि सतावै॥
दण्ड न विरथा करै पुत्रसम परजै पालै।
जूवा चोरी मांस मद्य हिंसा ये टालै॥
परत्रिय मातुसमान द्रव्य पर विषसम जानै।
तजै कोह मद मोह द्रोह तन छोह न आनै॥
करै सदा सत्संग भक्त भगवतसम लेखै।
मनराखै हरिचरण करण सुनि कथा विशेखै॥
रिपुते ठानै समर गूढ़ निजमन्त्र न खोलै।
मानै कवि बुध वेद गिरा कटु कभी न बोलै॥
लोभी लम्पट द्विज न धर्म अधिकारी करही।
दानदेइ लखिपात्र पाठ पूजा अनुसरही॥
जप तप सन्ध्याबरत करि तजै खजाना कोष।
कहैं रघुनाथ ऐसे नृपै रती न लागै दोष॥

दो० कृश सींचै छांटै जबर झुकेन माहिंदे टेक।
फूले फल सोइ लेइ नृप चिरजिव माली एक॥
जो न चलै यहिरीति नृप अवशि नरक सो जाय।
अब सुनु परजनको धरम जाते दोष नशाय॥

कृषी वणिज व्यापार में नफामिलै जो जानि ।
दशाअंश दे विप्र कहँ दोष न लागै हानि ॥
जो द्विज पावै और कहँ चौथ्याई दे सोइ ।
लेइ देइ विश्वास करि दोष नाश तब होइ ॥
सेवाकरि धन जो लहै यथाशक्ति दे दान ।
तौ नहिं लागै दोष कछु कुकरमकरै न आन ॥

ताते तुम ध्रुवराजहि करहू * जो मैं कह्यों सो मारग धरहू
मम आज्ञा मानै जो कोई * ताहिकिकछु दुखसपनेहुँहोई
मोरी सीख करौ तुम राजू * भुक्ति मुक्ति दे सारो काजू
यों कहि राजकाज सब साजे * विविध प्रकार बाजने बाजे
सैन अपार प्रकट प्रभु कीन्हों * तम्बू सेज बिछौना दीन्हों
गज रथ वाजि पालकी याना * चोपदार दरवानी नाना
वणिक बजाज सराफ सोनारा * हलवाई जौहरी चमारा
जहँ लग भूपनकेर समाजा * सो सब प्रकटकीन महराजा
भक्तबछल प्रभु किरपा कीन्हों * चक्रवती ध्रुवको करिदीन्हों
शंखादिक बहुभांति बजाई * चलीकटकअतिवरणिनजाई

दो० हरिकी आज्ञा मानिकै ध्रुवचढ़ि चले गयन्द ।
जनराघव हरिकृपाते मिटिगे सब दुखफन्द ॥

देश देशके नृप सुधि पाई * लै लै भेंट मिले ते आई
करिसनमान सुता निज देहीं * दायजु अमित कहांतक लेहीं
यहिभांतिन निजपुरनियरायो * नारद तब नृपके ढिग आयो
कह्यो पुत्रध्रुव आवत तेरो * हरिदीन्हों तेहि राज घनेरो
राजा कहा विपिनगा सोई * अब ध्रुव कैसे जीवत होई
जलबहिगयोकिअग्निजरायो * सिंह सर्प्पधौं बाघन खायो
वृषभ महिष हय अजा हेराई * सकल कामतजि ढूंढ़न जाई

मैं अपराधी बालक त्याग्यों ❋ चल्योगहनउठिसंगनलाग्यों
नारद कहा शोच जनिकरहू ❋ वेगिहि आवत धीरजधरहू
सुनि सुनीति उरभा सुखभारी ❋ मुनिअसत्यक्योंकहतविचारी
तेहिसमय ध्रुव दूत पठायो ❋ नृप उत्तानपाद ढिग आयो
सब वृत्तान्त कहा तेहिं गाई ❋ सुनतै भूप उठा हरषाई
रानी सहित सचिव पुरवासी ❋ ध्रुव ढिगचले विहाय उदासी
ध्रुवके डेरे नृप जब आयो ❋ पितहिदेखिध्रुवउठिशिरनायो
लीन महीपति गोद लगाई ❋ गइमणिमनहुँ नागफिरिपाई
अंकमाल भरि भेंटी माता ❋ प्रेमांशुनते सींच्यो गाता

दो० पुरलोगन कहँ भेंटिकै पूंछि कुशल बहुभांति ।
आसन दीन्हों सबन कहँ यथायोग्य सबजाति ॥

राजा ध्रुव की करत बड़ाई ❋ धन्य धन्य तुम धनि तुवमाई
जो हरिभक्ति हृदयमहँ धार्‌यो ❋ सौपीढ़ी तक पितर उधार्‌यो
सुर नर मुनि सबकरत बिचारा ❋ पुत्रविना मिथ्या संसारा
एकपुत्र जन्मै अस आई ❋ शतपीढ़ी दे नरक पठाई
एक सुवन सुरपुर पहुँचावै ❋ निरैवास यमफांस छोड़ावै
मोसम भाग्यवन्त नहिंआना ❋ पुत्र मिला हरिभक्त सुजाना
सुनिकरजोरिविनयध्रुवकीन्हीं ❋ तुम्हरी कृपा भक्ति प्रभु दीन्हीं
विविध भाँति जेंवनार कराई ❋ बासर गयो निशा तब आई
हरि बिशकरमैं आज्ञा दीन्हीं ❋ कंचनपुरी छिनक महँ कीन्हीं
मणिमयमंदिरप्रभुरचिलिहऊ ❋ तेहिमहँ ध्रुवकहँ वासा दिहऊ
लागे रहन सकल हरषाई ❋ भावभक्तिदिनदिनअधिकाई
अरिनजीतिविप्रनसुखदीन्हा ❋ भुजबलसकलविश्ववशकीन्हा
पुत्रसमान प्रजन कहँ सेवै ❋ अधरमकर धन कबहुँ न लेवै
कथा कीरतन ध्यान कराहीं ❋ सुमिरणकरतयामचलिजाहीं

ध्रुव राजाकी आज्ञा मानैं ❋ राजा ध्रुवहि बड़ा करि जानैं
यकदिनकरिविचारवनगयऊ ❋ हरिसुमिरणकरिहारिपदलयऊ

दो० ज्यों पंकज जलमें रहत अरु सनेह पयमाहिं ।
त्यों ध्रुववरतै राजसुख लिप्तहोइ कहुँ नाहिं ॥
यहिविधि छत्तिस सहसवर्ष कीन्ह्यों भोगविलास ।
कछुदिन बाकीरहे जब तब मन भयो उदास ॥

कमलछं० साधुविप्र । बोलिच्छिप्र ॥ पूंछिकाम । दीनदाम ॥

गी.छं. दियोराजकाजसुपुत्रकहँपुनिआपुवनहिंसिधायहू ।
जहँ कीन्ह प्रथमै आय तहँ हरिकेर ध्यान लगायहू ॥
कछुकाल बीते विष्णुकेर विमान ढिग आयो भलो ।
गए लिहिनि ध्रुवै चढ़ाइ तापर हर्षि वैकुंठै चलो ॥
ध्रुव कह्यो तिनते मातु हमरी रहत तेहि लैलीजिये ।
वह जात चढ़ी विमान आगे देखि आनँद भीजिये ॥
यहिभांति पहुँचे जाय ध्रुवका अचल हरिपदवीदई ।
रघुनाथ सकल नक्षत्र अजहूं करत परिकर्माहई ॥

दो० ऐसी हरिकी भक्ति है ताहिं करत जे नाहिं ।
तिन्हैं जानिये पशूसम सींग पूंछ बिन आहिं ॥
ध्रुव चरित्र रघुनाथ जन कह संक्षेप बखानि ।
पढ़ै सुनै करिनेमतेहि होय दैत्य दुख हानि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतध्रुवचरित्रवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

दो० सुमिरिरामासियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
अब नरसिंहपुराणकी कहौं इतिहास बखानि ॥
जगतविदित वैकुण्ठ है जहां बसत भगवान ।
द्वारपालजयविजयदोउअतिभुजबलीसुजान ॥

एकबार सनकादितहँ आये जनु चहुँ वेद।
ब्रह्मानन्द मगन मन बाल स्वरूप अभेद॥

रमानाथ के दरशन हेता * लगे जानऋषि हरषिनिकेता
जयरुविजयदोउरोकिबखाना * बिन आयसु नहिं पैहौ जाना
सुनि मुनि दीनशाप करिकोहू * तीनिजन्म तक राकस होहू
भयो शोर सुनि सबहिन जाना * श्रीसंयुत आये भगवाना
कह हरि इन बहुकीन्हों पापा * मुनिभलकिह्योदिह्योजोशापा
तब बोले सनकादि विचारी * प्रभु अपराध कीन्ह हम भारी
इन आपन धर्मपालन कीन्हा * बिनअपराध शापहम दीन्हा
कह जय विजय सुनौ गोसाईं * इहां तुम्हार दोष कछु नाईं
निजकृतदुखसुखसबकोइलहई * समुझेविनासोआनहि कहई
जो तुमनाथ दण्ड मोहिंदीन्हा * सो हममानि अनुग्रह लीन्हा
सुर हेलन प्रभु आज्ञा हानी * उपज्यो महापाप दुखदानी
सो सबअघ मम कीन्ह्यो नासा * कृपासिन्धुसम दृग हरिदासा

दो० अब करि करुणा देहुहम जहँ जहँ जनमीजाय।
तहँ तहँ प्रभुके नामको सुमिरण बिसरि न जाय॥

मन्दयोनि करत्रास न कोई * केहूभांति हरि सुमिरण होई
मुनि तिनकेरि साधुता देखी * सहितलाजदुखभयोविशेखी
कहहरि तुमकत शोचहिकरहू * ममइच्छा सोइ मनमें धरहू
अससबमिलिसोकरहुउपकारा * ज्यहिते हो इनकर उद्धारा

दो० एक जन्म लक्ष्मी कह्यो सनकादिक इकबार।
एक जन्म भगवान कह हम करिहैं उद्धार॥

असकहिसनकादिकसहितहरिगृहचले सिधाय।
कछु दिनबीते जय विजय मे दितिके सुत आय॥

दो० छं० कनक कशिपु हाटकनयन दैत्य बली दोउ भाय।

दैत्य बली दोउ भाय छीनि इन्द्रासन लीन्ह्यों ॥
निरजर दिहे निकारि हुकुम अपनोहीं कीन्ह्यों ।
एक बार हरनाक्ष धरा लैगयो पराई ॥
धरि वराह अवतार ताहि हरि मास्यो आई ।
हरणाकुश तपको गयो इन्द्रसून सुन पाय ॥
लै लीन्ह्यो पुर आपनो त्रिय दइ कैदकराय ।
दुखित जानि नारद तहां आय दियो उपदेश ॥
आय दियो उपदेश शोक तेहि कछुक मिटायो ।
गर्भ रहैं प्रह्लाद ज्ञान सब तामें पायो ॥
रहे तहां बहुकाल मातु वोदर के माहीं ।
करै भजन मन मुदित कष्ट तन व्यापै नाहीं ॥
हरणाकुशको सिद्धिभो तपविधि भाख्यो आइ ।
अहो पुत्र वरमांगिये ऋधिसिधि जो मनभाइ ॥
जो मोपर परसन्न प्रभु तौ दीजै बरु येह ।
तौ दीजै बरु येह हमैं जो सृष्टि तुम्हारी ॥
मरौं न काहू हाथ बात मोको यह प्यारी ।
रातिदिवस नहिंमरौं गगननहिं जल हथियारा ॥
दैकै बरु विधि गयो भयो तेहि हर्ष अपारा ।
गरजि चल्यो घर आपने सूनो देख्यो आइ ॥
कोपि चढ़्यो फिरिइन्द्रते सुरपुरलीन छिड़ाइ ।
घरलायो त्रिय आपनी जन्म लीन प्रह्लाद ॥
जन्म लीन प्रह्लाद भयो तेहि आनँदभारी ।
दिये दान गज वाजि याचकन किये सुखारी ॥
करै राजि मनमगन विप्र गौवन कहँ मानै ।
हरि देवनते द्रोह आपनो वैरी जानै ॥

यहि भांतिन बीतत भये भोग करत कछुकाल ।
बड़े भये प्रह्लाद तब खेलैं जहँ कहुँ बाल ॥

म० छं० सुनो एकहाल तेहि नगरकुम्हारबसैधोखेते बिलारी बच्चाआवांमें लगायोहै । पाछेसुधिआई शीशधुनै पछिताईतहांआयोप्रह्लादबातकहिसमुझायोहै ॥ जपौराम नामजासेसरैसबकाम निशिबीती चारियाम रामराम रटला योहै । होतहीप्रभातखोल्योलाग्यो सबरेंगनको मिटिगयो शोक प्रह्लाद मन भायो है ॥

च० छं० इकदिवससुरारी मनहिंविचारीपढ़नयोगप्रह्लादभयो कवि गुरुकेलरकासण्डामरकाबोलितिन्हैंसुतसौंपिदियो लैगे चटसारा तहँ बैठारा बाल अपारा जहां रह्यो पाटीकरलिद्धंओंनमासिद्धंपढ़ौद्विजनयहि भांतिकह्यो तेहिअर्थलगायोपोतिबहायोनिखवखरामै रामलिख्यो लखिविप्रसुजानीकहिमृदुबानीअरेपुत्रयहकाहसिख्यो तवपितु सुनिपैहै बहुतरिसैहैमरिहै धरिहै शिरखोरी ताते यहि बारी डारु बिगारी मानहुँ सतवाणी मोरी

पादाकुलक ॥

कहप्रह्लादा । युतआह्लादा ॥ विप्रसुनीजै । सत्यभनीजै ॥
विद्यानामा । उभैजुतामा ॥ अधिककोआही । पढ़ौंमैंताही ॥

तो० सुनियेसुतवेदपुराणकहैं । विद्यासमनाधनऔरअहैं ॥
नहिंचोरचोरायसकैनजरै । सुखदेशप्रदेशनभूपहरै ॥
गुणरूपपराक्रमबुद्धिघनी । सुतसेवकबंधुअनेकधनी ॥
विनविद्यासोंनरसोहतयों । बहुहंसनमेंयकबागलज्यों
तेहितेसुतविद्यानित्यपढ़ौ । जेहिपावहुराजगयंदचढ़ौ
असबैनसुनेद्विजकेजबहीं । प्रह्लादजुबोलिकह्योतबहीं

दो० विद्याधन कुल रूप मद प्रभुता यौवन नारि ।
ये बाधक हरिभक्ति के कह बुध वेद विचारि ॥

ब.छं. तेहिते मैं यह विद्या पढ़ब न नाथ ।
सुनिमहिसुर प्रह्लादके गहिदोउहाथ ॥
लाये जहँ हरणाकुश कहिनि रिसाइ ।
पढ़ै न तव सुत राजन हमहिंसिखाइ ॥

कड़षाछंद ॥

विहँसिप्रह्लादको गोदबैठारिकै कहीमुखचूमि सुतपढ़ोकाहा ।
रामहीनाम सबपढ़नमेंसारहै पढ़ाहमसोई सुनिहृदयदाहा ॥
वदतबुधवेदयह दुष्टकीरीतिहै प्रीतिअाधर्ममें अधिकलावै ।
ज्ञानवैराग्यहरिभक्तिभवभयदहननामगुणग्रामजेहिनाहिंभावै ॥
कहीहँसिदेवशठकूर ऐवीबड़े आइकोइबालभुरकायदीन्हा ।
बहुरिप्रह्लादतेकहतसुनिलीजियेशत्रुकोनामनहिंचहोलीन्हा ॥
सकलजगईशसब जीवकोपोषता तासुतेतातकाबैर कीजे ।
छांड़िमदमानशुभज्ञानहिरदैधरौकरौहरिभजनजगसुयशलीजै ॥

दो० शत्रु न काहू केरहरि मित्रहु नाहिंन तात ।
जैसो देखै मुकुर में तैसो ताहि लखात ॥
सुनेवचनअसअसुरपतिरिसबशादिहिसिउतारि ।
कहिसि द्विजनते याहिलै जाहुपढ़ावो मारि ॥

ह.छं. सुनि पुनि द्विज लाये चटसारहि ।
लिखिदीन्हेनि सुत पढ़ो पहारहि ॥
आपु गये पुर कहँ कुछ कामहिं ।
पोति लिख्यो प्रह्लाद श्रीरामहिं ॥

श.छं. लखि बालक सब । ढिगआये तब ॥
सखा ते जैसे । बोले ऐसे ॥

दो० कहा शिशुन प्रह्लाद ते हठतुम करतेकाहि।
मातपिता गुरु जो कहै प्रमुदित कीजैताहि॥
सुनिबोले प्रह्लाद तब मात पिता गुरु सोइ।
करैजो सम्मुख रामके जहँ लगनिजबलहोइ॥
अमृत पलटे देइ बिष पारस बदले कांच।
जानिबूझि तेहिलेइकोउ कहौसखौसबसांच॥
पढ़नसुननसोइ सुफलजो रामचरणरतिहोइ।
नातरु फिरि मूरख भला बाद न ठानै कोइ॥

सुनहु तातयहि जगके माहीं * दुखनिशिदिनसुखसपनेहुनाहीं
देखहुतुम निजहृदय विचारी * उपजतचारिखानि तनु धारी
अण्डज जो अंडा ते होई * पिंडज प्रकट गर्भते सोई
स्वेदज श्रमसीकर ते जानौ * उद्भिज संग वारि करमानौ
भ्रमतजीव सबयोनिन माहीं * दुखबहुभांतिवरणिनहिंजाहीं
पापपुण्य जब समदोउ होई * ईश कृपा नरतनलहै सोई
प्रथम जीव जल माहीं आवै * जलते बहुरि अन्नमें जावै
जाके भवन जन्मभा चहई * सोई अन्नखात वह अहई
अन्नते रस रसते सुखकारी * रुधिरवीर्य्य यकमासनिहारी
जब युवती रतिदानहिं पावै * तबसोइ जीव गर्भमें आवै
रजबीरजयकदिन महँ मिलई * पँचयें दिनबुद२ उठिखिलई

दो० सतयेंदिन फेनाउठत दशयें पिण्ड पलबीश।
मासदिवस जबहोततब निकसनलागतशीश॥

उभयमास भुजजांघ लखाई * तिसरे पेट बिलग ह्वैजाई
वेदमास अँगुरी कच रोमा * हाड़मांस शरत्वचा जुझोमा
पूरणगर्भ सातयें मासा * अठयेंवाकसहितचलश्वासा
नवयें मास चेतभा भाई * पूर्बजन्म शतकी सुधिआई

विष्ठा मूत्र उपर ह्वै बाहैं * चोटत कीट अनलतनदाहैं
पीड़ितसदा अधोमुख रहई * तहँनमातु पितुकेहिदुखकहई
तब भगवानकेरि सुधिकीना * बोलतभयो वचन ह्वै दीना
दीनदयालु कृपालु मुरारी * अशरणशरण हरणदुखभारी
प्रभु यहिबार मोहिं निरवारो * कर्म क्षेत्र में लै तनु डारो
तहँतवचरणकमलचितलावों * जाते गर्भवास नहिं पावों

दो० चारिठौर सब नरनके कछु वैराग चढ़न्त।
गर्भमाहिं शवके निकट कथासुनत रतिअन्त॥
विनय सुनी तब कृपानिधि पवन चलाई एक।
योनि छांड़ि बाहर भयो भूल्यो ज्ञान विवेक॥
पिता शुक्र बहुते कुवँर भारज अधिक कुमारि।
रजबीरज दोउसमतहां होत नपुंसक धारि॥
कर्म होत जैसे कछू तैसाही फल होय।
तैसाही सुख दुःख को भोगकरत नर सोय॥
कर्म सो त्रैविधि संचित परारब्ध क्रियमान।
भरै धरै बपुकरै जस तस भोगै तन आन॥

यहिविधिलीनजन्म जगआई *छिनयकवचनबोलिनहिंजाई
पुनिभाकछुकचेत तब जाग्यो * कहांकहांकहि रोवन लाग्यो
सुतउतपतिसुनिपितुमहतारी * हर्षितगानकरैं मिलि नारी
छठी भई पुनि बरहों कीन्हा * नामकरणशिशुमुखमें दीन्हा
करतमूत्र विष्ठाजहँ परिया * स्वच्छास्वच्छगनतनहिंकरिया
माताहू कछु भेद न जानै * सुतधौंकेहिहित रोदन ठानै
मन अनरूपित करै उपाई * जेहिते अधिकहोतदुखआई
पांचवर्ष बालापन गयऊ * पुनि पौगण्डअवस्थाभयऊ
पढ़ि सुनि खेल कूदके माहीं * नवसंवत गतचेत्योनाहीं

जननीकहत पुत्रबड़ भयऊ * यहनहिंजानतसुत घटिगयऊ
बहुरिकुमार अवस्था आई * कसब करन लाग्यो हरषाई
भा विवाह वर भामिनि पाई * प्रमुदित षोड़श वर्ष बिताई
तबतहँतरुण अवस्था लागी * कामअग्नि हिरदैबिचजागी
बनितनते अति हेत बढ़ायो * आपनसुखतिनमेंलखिपायो

दो० यथा गृहप शवकास्थिलै चपिचाबत सहप्रीति।
निजतालूगततनुजभषि मानत तोष अभीति॥
तनहेरै फेरैनयन वयन बदै मद साथ।
हिंसारत निजमत चलै मलै मोछ दोउहाथ॥

चालिस वर्ष लगे तरुणाई * रही बहुरि आई वृद्धाई
भये पुत्र उपपुत्र घनेरे * होत दुखी तिनके दुखतेरे
निशिदिनचिन्ताकरत अपारा * सबनकेर मोसे प्रतिपारा
कहु शठ कुशवारी के जीवैं * को तेहिचारा देत सदीवैं
तिनके हेत करै अघ नाना * नहिंजानैं मरियमपुर जाना
भजेनहरि हरिजनगुणलीला * कहेनसुने मुदितमन शीला
बातनहीं वृद्धापन गयऊ * जरा अवस्था आवत भयऊ
तनबलगयो गिरे सबदांता * डगमगचलतसुनतनहिंबाता
हरजलबहत अकाम विचारी * दीन्हों खाट दुवारे डारी
परेपवँरिपर क्षुधा सतावै * मांगत कहे कहां कोउ पावै
तृषा लागि जल देत न कोई * बकत तहां मुख आवत जोई
घरके कहैं मरिउ नहिं जाही * का यमराज बिसरिगे याही
जिनकेहित परलोक बिगारा * तेसबजियतैकिहिनिकिनारा
इकदिनयमगणलीन्हेंनिमारी * सुनतदीन पुरबाहेर डारी
लै जब गये दूत यम पासा * देखतदिहिनिनरकमहँवासा
प्रथमैं दुखद नरक भुगतायो * पुनि चौरासीमें जनमायो

दो० जीवत नानादुख सह्यो बिनाभजे भगवन्त।
अब चौरासीके बिषे भोगौ कष्ट अनन्त॥
धृग धृग ताकी बुद्धिको नरतन बोहित पाइ।
तरै नजो जगजलधिसों आतमहत गतिजाइ॥

तेहिते तात नरक परिहरहू * रामभक्ति हिरदय महँधरहू
स्रवैं अम्बुभुक कुशरस पाई * उवैं दिवाकर पश्चिमआई
मृगजलनिरखितृषा बरुजावै * रामविमुख सुख जीवनपावै
सुनिसब बालक बोले सोई * इक संशय हमरे मनहोई
हम तुम जन्म लीन इकसंगा * खेलत रहेन विहंग तुरंगा
तुम हरिभक्ति कहां यहपाई * मुनिदुर्लभ पुराण श्रुतिगाई

दो.छं. सुनिप्रह्लादकह्योहरिणाक्षजब। मारोगयोपितुगालपकोतब
इन्द्रसकोपिदैत्यपुरछेकिकै। मातुहमारीसगर्भहिंदेखिकै

मु.छं. विचार्योहियेमें तबैपर्बतारी। असुरशुक्रतेगर्भयाकेमँझारी
बधैयाहिनीकोनतौशत्रुहोई। करीरारिआगेखलीदुष्टसोई

दो० तेहिअवसर नारदतहां आइ कही असिबात।
यहिके उर हरिभक्त है सुर सुखदायक तात॥
सुनिकै नारदके वचन तब चलि भये सुरेश।
दुखित देखि मुनि मातु कहँ लगे देन उपदेश॥

स० तजिशोचहिये हरिनामधरौजोहवैंसुखदायकदुःखप्रहारी
जेहिध्यावतशेशगणेशदिनेशऋषीसनकादिउमात्रिपुरारी
सुतबन्धुसखात्रियमातुपिताधनधामसबैरविकोभववारी
ताबिचधावतहैंमृगज्योंनजपै जगपालकसिंधुमुरारी

दो० यहि विधिमुनिममातुकहँ उपदेश्यो दिनसात।
मैं सचेत जननी जठर सुन्यों कह्यों सोइतात॥

सुनि प्रह्लाद वचन अनुरागे * दण्डप्रणाम करन सबलागे

भल उपदेश हमैं तुम दीन्हा * मात पिता स्वारथरतचीन्हा
असकहि बैठे निजनिजठामा * लागे लिखन रामहीरामा
तेहिअवसरदोउमहिसुरआये * प्रह्लादै लखि वचन सुनाये
विद्या पढ़ौ छांड़ि शठताई * हठकीन्हे कछु नाहिं भलाई
हाटक नयन बहुत हठठाना * मारे गये हवैं तब जाना
भक्ति पक्ष कर हठहै नीका * शठताकरहठदुखप्रद जीका
सुनिरिसकरिद्विजधरिदोउहाथा * लायेतहँजहँनिशिचरनाथा
महाराज तव सुत यह कैसा * कालकूट हरिघटमहँ जैसा
राम राम जयराम पुकारे * पढ़त न विद्या हम पचिहारे
विप्रवचन सुनि गोद उठाई * बोला अधिकसनेह बढ़ाई
तुम सुत जेठे सब सुखकारी * तुमहीं राजकेर अधिकारी
ताते विद्या पढ़ौ सचेता * सुखद सिखावन सुततवहेता

नि.छं. यदपि तुमतात यहबात हितकी कही।
तदपि मोहिं नीकि नहिंलागि तनकौ सही॥
लोकमें सुखद परलोकमें अकाज को।
ताते हौं न पढ़ौं तात करौं नाहिं राज को॥

शि.छं. सुनिअसबानी। अतिरिसठानी॥ अवनिगिरायो। गजैमँगायो॥ कह इहि लीजै। पगतर दीजै॥ बड़ दुखदाई। बधेभलाई॥

म.छं. प्रह्लादकिमात। सुनीयहबात॥ गईपतितीर। कह्योधरिधीर

मा.छं. नाथ बात मानि मोरि। पुत्रबधे बड़ी खोरि॥
दास नीचकी समान। परा रही देहुजान॥
छोटपुत्र याहि लेहु। राजकाज ताहि देहु॥
ऐस ज्ञान नारिदीन। कहे सुने क्षमा कीन॥

इति श्रीप्रह्लादचरित्रवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः २५॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
बरणौं श्री प्रह्लाद को पुनि इतिहास बखानि॥
तब निज सचिव पठायो आयो जहँ प्रह्लाद।
बोल्यो सुत विद्यापढ़ौ तजि हठ वाद विवाद॥

प.छं. नृपनिंदैतेतन राखिलेह * तुमगुप्तकरौहरिपदसनेह
मलमांसमूत्रकफहैप्रधान*ऐसे तनकाशोचै अयान
कोइअल्पकालकोइकल्पमाहिं*मरनाविशेषिकछुरहननाहिं
अबहींचहौडारैसोमराइ*पररामनामनहिंतजबभाइ

दो० अल्प काल जीवन भला रामभक्त जो होइ।
भक्ति हीन नर कल्पशत जीवै बिरथा सोइ॥
कहैरघुनाथ अनेकविधि सचिवरह्यो समुझाय।
मान्यो नहिं प्रह्लाद जब तब उठिगयोरिसाय॥

ता.छं. ताहि समयपुरलोगजु आये * आरत ह्वै अस बैन सुनाये
नाथसुनोबड़शोचहमारे * बाल सबै प्रह्लाद बिगारे

तो.छं. तिनकेरिदशा नहिंजातकही* कहुँ रोवत हांसत हालसही
कहुँनाचतगावतगोपरहै*पुलकांगविलोचननीरबहै
हरिनामनिशङ्करटैमुखते*किन येऊपियूषकहै हमते
धृगजीवनहैजगमेंतिनको*मनलागनयारसमें जिनको

दो० सुनो नाथ प्रह्लाद जो फिरि जैहैं चटशार।
तौ हम बसिबेअनतकहुँ त्यागबनगरतुम्हार॥

ता.छं. याविधिकेसुनिबैनसुरारी * मुष्टिकएकभवांइकैमारी
विप्रनतेपुनिबोल्योरिसाई*खोयहुबालकभक्तिपढ़ाई

दो० गुरुनन्दन तुम बन्धुदोउ ताते करिय न रोष।
भयो कालवश बाल यह विप्र तुम्हार न दोष॥
असकहिपुनिसुतकेदिशिडोला *रामनामसुमिरतलाखिबोला

अबते मानि लेहु ममबानी * नाहिंत होत प्राण की हानी
सुनो तात संतन की टेका * छूट न जो दुख परे अनेका
सुनि प्रह्लाद वचन करिक्रोधा * बांधौअधम प्रचारिसियोधा
राजकुमार सकै को बांधी * सुभट समूह रहे चुपसाधी

च. छं. तबआपुइधावा बांधिबनावा गिरिते दीन्हेसि डारी
उपरै हरिलीन्हों भूधरिदीन्हों लागिन तातिबयारी
पुनिजकड़िजँजीरननीरगँभीरनदिहिसिदुष्टबोरवाई
सांकरकहुँ तोरी भक्तहिछोरी किहिनिकिनारे आई
तब गजमँगवायो तरेडरायो देखतकुञ्जर भाग्यो
महिखोदिगड़ायोअहिलपटायोतेहिक्षणविपतिनत्याग्यो
तुपकैबहुदाग्योघाव न लाग्यो पुनिफेरेउ शिरआरा
दोउचरण बँधायो उरधँगायो तीरनतकितकिमारा
उर चुभ्यो न एका तापअनेका नामप्रताप न व्यापी
सबकरैं विवादू यहिढिगजादूतेहिबल बचतप्रलापी
सुनि ताकी भगनी हरवर मगनी नामढूंढ़लाआई
उरलै प्रह्लादै अति अह्लादै बैठिअग्नि लगवाई
निशिचर हरषाने जरत पिछाने काठकपाट लैआवैं
डारैं तिहि माहीं छप्परढाहीं चरखफरक जो पावैं
बछ्रनकीमाला नरभखबाला गुहिगुहि आइचलायो
जपिये मनु लाई हँसे ठठाई बड़ हरि भक्त कहायो
भोरहि प्रह्लादा युत अह्लादा बैठे धूरि उड़ावैं
जरिगे तमचारी दुष्टनिनारी नभ निर्जर गरियावैं
भाषत रघुनाथा यह सब बाता भइसतयुगकेमाहीं
करिसाधुसे द्रोहा ह्वैवशमोहा अबलगुजारी जाहीं

दो० देखिसखा प्रह्लाद के हर्षि मिले सब धाय।

दनुजराय बोलतभयो पुनि निज ढिग बैठाय ॥

सु. छं. हौंबहुत्रासदईसुततोकहँ * तद्यपितूनडरैकछुमोकहँ
तातसुनोजिनकेउरहैंहरि *तेनिर्भयकोउकाहसकैकरि
तौलगसंश्रितशोकसतावत*जौलगरामकनामनध्यावत
हैसबतापप्रणाशनकोगद * देखुसमीपअहंबपतेहद

म. छं. सुनिवचनऐस । शरलागजेस ॥ गहिखम्भधाइ ।
बांधिसिरिसाइ ॥ तवप्राणहर्ण । मैंकीनपर्ण ॥
करखड्गकाढ़ि । जनुतड़ितगाढ़ि ॥ बोलाकठोर ।
कहँरामतोर ॥ जेहिरहेसुधेइ । अबराखिलेइ ॥

बि. छं. रामहमारहवैसचराचरमें नहिंमानुतौ योंलखिलीजै
नामकेअक्षरचौगुणकैपुनिपांच मिलायकेदूगुनकीजै
आठकभागदियेरघुनाथ बचैंयुगअंक तहांमनदीजै
मोहूंमेंरामहैंतोहूंमेंरामहैं खड्गमेंरामहैंखम्भसुनीजै

श्रीछन्द ॥ खम्भा । माहे । भाष्यो । जैसे ।

द. छं. गगड़गड़गड़ान्यो खम्भफट्यो चरचराय निकस्यो
नरनाहरको रूपअतिभयानोहै।ककटकटकटावे दाढ़ै
दशन लपलपावे जीभ अधरफरफरावै मुच्छव्योम
व्याप्यमानोहै। भभरिभरभरानेलोग डडरिडरपरा-
नेधाम थथरिथरथरानेअङ्ग चितै चाहतखानोहै।
कहत रघुनाथ कोपिगर्जे नरसिंह जबै प्रलयको
पयोधिमानो तड़पि तड़तड़ानो है ॥

गी. छं. गर्जोमहाधुनि घोर शब्दक शोर तिहुँपुरमाभयो
चौंकेविरञ्चि डेरानबासव ध्यानशङ्कर तजिदयो
लेलखरतदिग्गजकोलकूरमकलमल्योअहिमहिहली
नरनागसुरभेविकलउछरेउ सिंधुजलमारुतचली

दनुजराज देखा नर हारी * बोला वचन सक्रोध पुकारी
रेहरि कुहुक तोरि मैं जाना * छलकरि बध्योबन्धुबलवाना
तासु बैर लेनेहित तोहीं * खोजिफिरेउँकहुँमिल्योनमोहीं
अबनरहरि तनुधरि मम नेरे * आयो कठिन कालके प्रेरे
असकहिकीन्हेसिगदाप्रहारा * गहि नरसिंह धरणि दैमारा
पुनि उठि लरतधरतहरिधाई * बहुत काल इमिभई लराई
विकल जानि सुररमा निवासू * उरधरि उदर विदारेउ तासू
लखि सुरहर्षि सुमन बरषायो * जयजयकहि दुंदुभी बजायो
आँतैंकाढ़ि पहिरि उरहारा * तदपिननिघटितक्रोधअपारा
नारदादि सनकादि मुनीशा * सहितशक्र कमलाजगदीशा
डरहिंसकलकोइनिकटनजावैं * दूरिहिते सब विनय सुनावैं
कहविधि कमलाते तुमजाहू * निकटवासिनी हरिकीआहू
सुनि कमला कर कानन धारा * हम अस रूपन कबहुँ निहारा

दो० तबसुरसब प्रह्लादकी विनय किहिनि ढिगआय।
चतुरानन बहु प्रीतिते बोले हृदय लगाय॥
निकट जाहु प्रह्लाद तुम हम सब देव डरात।
सुनतगये नरसिंह पहँ हर्ष शोक नहिं गात॥

दीनदयालललकि उरलायो * बिछुरा वन बालक जनुपायो
हासुततोहिंनीच दुखदीन्हा * पायसिफलखलआपनकीन्हा
अबमोहिंअतिप्रसन्नजियजानू * मांगुतात अभिमतवरदानू
सुनहु नाथ तव भक्तिजे करहीं * मनमें कछू कामना धरहीं
तेवै वनिक न आसिकजानी * कृत उद्योग नफा अनुमानी
हमें न कछु चहिये किरपाला * सुकृति सुभक्तिहि देहुदयाला
यह वरदान मिलै प्रभु मोका * विमुख पिता पावै परलोका
सुनिनरसिंह कह्यो हरषाई * सुनहु तात ममभक्ति बड़ाई

कुं० जाके कुलमें भक्त मम नामलिहाड़ी होय।
एक एक शत आपनी पीढ़ीतारत सोय॥
पीढ़ी तारत सोय पिताकी चौबिस जानौ।
माताकी गनि बीस वामकी षोड़श मानौ॥
द्वादशपुत्री और एक दश भगिनी ताके।
दश फूवाकी और आठ मौसीगै जाके॥

दो० कुल पवित्र जननी सकल भागवती महिवास।
स्वर्ग स्थित पितरोपि धनि येषुवंश मम दास॥

जबजगपतिअसवचनसुनाये॥ जनप्रह्लाद हिये अतिभाये
जामें जासु प्रेम परतीती॥ सोत्यहिप्रियलागतयहरीती
पुनि नरसिंह कही असिबाता॥ वचन हमार मानिये ताता
यदपि तुम्हैं इच्छा कछु नाहीं॥ तदपि मन्वंतरराजि कराहीं

गी०छं० करियमन्वंतर एककी सुतराज्य अब मोरेकहे।
हौंडरतमायाते तुम्हारी विनयकरिहरिपदगहे॥
ममतोरयाहिचरित्रनितसहमोदसुनिहैंजेगाइहैं।
रघुनाथते निश्शंकही भवबन्धते छुटिजाइहैं॥

दो० यह चरित्र प्रह्लादकर वरणयोजन रघुनाथ।
श्रीगुरुदेवादास के चरण कमल धरि माथ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतप्रह्लादचरित्रवर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः २६॥

दो० सुमिरिराम सियसंतगुरु गणपगिरा सुखदानि।
मारकण्डेय पुराण कछु भोगल कहौं बखानि॥
रघुपति इच्छा प्रकृति सो रचब्रह्माण्ड अनेक।
विधि हरि हर गुणथापि बहु कबहुँकबहुँ रहएक॥
पुनि शौनक बोलत भये नाथ कहौ यहिवार।

अवध पुरी भूलोक महँ आई केहि परकार ॥
कहा सूत सुनिये मुनिज्ञानी * यहो भेद मैं कहौं बखानी
एक बार जलबाढ़त भयऊ * सब ब्रह्माण्ड बूड़ितहँगयऊ
ले जीवन की तत्त्व भवानी * आदि विष्णुमहँआइसमानी
हरि तबशयन शेषपरकीन्हों * मोह्यो माया जगन न दीन्हों
विष्णु श्वास ते भे चौवेदा * आदि अन्त जे वरणत भेदा
नाभितेएककमलतहँनिकस्यो * सो पंकजजलऊपरविकस्यो
तब तामें ब्रह्माभे आई * चारि भुजा मुख चारि लखाई
जलविलोकिविधिहृदयविचारा * कहँमाता कहँपिता हमारा
कमलनाभिगहि तरकागयऊ * पुनिऊपरकहँ आवत भयऊ
विपुलबार अधऊरध आयो * पद्मनाभिकर अन्त न पायो
तब नभते भै गिरा सोहाई * मिली न प्रभुबिनतपसेवकाई
सुनिअजचित्तध्यानमें दयऊ * बहुतकालपर दरशन भयऊ

सं. छं. तहँ विष्णुके श्रुतिमैलसे * प्रगटेअसुरयुगशैलसे
लखिकैतिन्हैं ब्रह्मा डरेउ * तब देवकीविनतीकरेउ

श० छं० जयजयमातासबसुखदाता * जगतकहावैतबउपजावै

मो. छं. तोहिं आदि माया * निगम नेतिगाया
तोहीं कर्णि हरणी * तोहीं विश्व भरणी
जलज माहिं मोहीं * प्रकट कीन्हतोहीं
जगत वश तुम्हारे * तरुण वृद्ध बारे

पा. छं. हरिवशतोरे । सोवतभोरे ॥ देहुजगाई । करैलराई
असुरसँहारै।हमैंउबारै।सुनितवमाया।हरिहिजगाया

मधुकैटभ देख्यो हरिजागे * दोउ ब्रह्मा कहँ मारनलागे
तोहीं विष्णुहि दिये जगाई * तब ब्रह्मा अति शोर मचाई
केशव दीख दुष्ट कहँ आये * क्रोधित ह्वै असुरनपर धाये

होनलागि जलमाहिं लड़ाई ❋ जीति न जाइँ बली दोउभाई
पांचसहस्र वर्षचलि गयऊ ❋ मधुकैटभ तब बोलत भयऊ
हम प्रसन्न तुमपर भगवाना ❋ लखिशूरता अहो बलवाना
ताते वर भावै सोइ लीजै ❋ कह हरि शीश आपने दीजै

दो० हँसिबोले दोउदीन हम जो तुम मांग्यो नाथ ।
पर जल में जनि मारिये बाहर काटो माथ ॥

हरिलं० तबहरि उरु धरि । जल पर वध करि ॥

ली.छं. मरन लागे जबै । वचन बोले तबै ॥
भूमि तनकी सचौ । सृष्टि तापै रचौ ॥

तब हरिअसुरहते निजपानी ❋ तासुज्योति प्रभुमाहिंसमानी
तब ते मधुसूदन कहवाये ❋ कैटभारि गुण आगम गाये
भूमि भई तिन तनकी जानौ ❋ नाम मेदिनी ताहि बखानौ
जलके ऊपर रही सोछाई ❋ जिमिनलिनी सरपरउतराई
जलकर पारावार सोनाहीं ❋ कच्छप एक रहत त्यहिमाहीं
मस्तक कुक्षि चरण दृगहेरे ❋ कैयो कैयो योजन केरे

दो० सप्तसहस शतकोटियक अर्ब योजन परमान ।
कूरमसुख पूरबदिशा पश्चिम पूंछ बखान ॥

तापर शेषनाग इमिरहई ❋ जैसे मूल मेरु पर अहई
फनहजार ताके श्रुति काहा ❋ यकफनपर यकरहत बराहा
मशकसमान जानिनहिंपावा ❋ असतनुशेषसोआगमगावा
वसुधादशन बराहके धारी ❋ तिलसमगनेकोलअसभारी

कुं० आठौदिशि दिग्गजरहैं महिरक्षाहित दुन्द ।
ऐरावत पुनि पुंडरिक वामन चौथ मुकुन्द ॥
वामनचौथ मुकुन्द पराजित यमसारभकुज ।
हेमदन्त परमान अठारह योजनके द्विज ॥

द्विज द्वै योजन केर सूंड़ि त्रै योजन पाठा।
षटषट योजन ऊंचबली अति दिग्गज आठा॥

दो० यहिविधिथिरकरिभूमिप्रभु विधिको आज्ञादीन।
सृष्टिरचौयहिधरणिपर सुनिविधिशिरधरिलीन॥

ब्रह्मा सृष्टि रचन जब थापी * पचासकोटि योजन भूनापी
मनते विधिजग रचने लागे * इच्छैते बहु सुत उपरागे
सनकादिक आदिक जेभयऊ * मायारहित सकल वनगयऊ
तब बायें भुज ते शतरूपा * दहिने उपजाये मनुभूपा
तिनहूं वनका कीन पयाना * लखि ब्रह्मा तब रोदन ठाना
ताते रुद्रप्रकट भे गेरा * कतरोवत हम रचब घनेरा
कोईदीनकोइपीनविशाला * कोइबिनशिरकोइविपुलकपाला
कोइबिनकरमुखदृगपगकाना * कुटिल कराल केहूके नाना
यहिविधि भूत बहुत उपजाये * एकहि एक लेहिं सोखाये
तब विधि तिन्हैं बरचिसौंपाये * रुद्रनसहित विष्णुपहँ आये
प्रभुते सब निज हालनिरूपा * मुनिमिलिगेजहँमनुशतरूपा
बोले सुवन राज्य चलि करहू * वचन हमार हृदय महँधरहू
शमसंतोष दया सुविचारी * जहँतहँ अहैसुखद ब्यवहारी
कहमनु हमैं पुरोहित दीजे * बोले विधि वशिष्ठ कहँलीजे
सुनत वशिष्ठवचनअसभाखा * दशकूकर सम चक्री राखा
दश चक्री सम ध्वज यकहोई * दशध्वज सरिस नायका सोई
दशगणिकासम नृपयकगावा * दशनृप सम उपरहित रहावा
ऐसा मन्द कर्म मोहिं देहू * अहो पिता मैं लेब न येहू
सुनिवशिष्ठके वचन पितामह * कहसुतलाभअग्रतोहिंयामह
परमातमा ब्रह्म नरदेहा * धरि हैं रविकुलान के गेहा
तिनकहँतुमदेखिहौभरिनयना * सुनिहर्षे वशिष्ठ विधिबयना

पुनिमनुकह्यो थानमोहिंदीजे * विशद राजधानी जहँकीजें

दो० सुनत विष्णु वैकुंठ ते दीन अयोध्या आनि ।
मनुलाये महिलोकमहँ श्रीपति को तनु जानि ॥
कटिकांती पग वन्तिका नाभि द्वारका शोध ।
हृदमाया कँठमधुपुरी काशिघ्राण शिरऔध ॥
चौरासी योजन बिषे बसी कनक मय झारि ।
त्रयशत छत्तिस कोसकर घेरा तासु निहारि ॥

इकइस अर्ब पांच सौ कोरी * लाखउन्हत्तरि द्विजघरजोरी
चौदह लाख यकोतर धामा * तपसिनकेर रहें ऋषितामा
यकसौ अर्ब यक्यासी कोरी * चारिलाखदुइशतपुनिओरी
चारि हजार अपर फिरि हेरी * यतनी बखरी क्षत्रिन केरी
चौदह पद्म एकसौ अर्बा * येते वैश्यनके गृह सर्बा
चारि पद्म गृह शूद्रनकेरे * यामल रुद्र कहत इमिटेरे
वानप्रस्थ और संन्यासी * रहैंअसंख्य असंख्य उदासी
यहिविधिप्रजनसहितमनुराजा * करैराज्य सब सुखी समाजा
द्वै सुत भे मनुके अभिरामा * प्रियव्रत पदउत्तान सुनामा

दो० बहुरि तीन कन्या भईं सकल सुलक्षण खानि ।
देवहुती अवकूति अरु परसूती ये जानि ॥

मनुते भे मनुष्य मनुराया * तेहिते मानुष नाम कहाया
राज्य करत बीते बहुकाला * यकदिनकीन्हविचारभुवाला
विषयकरत चारिउपन गयऊ * तदपिन इंद्रीतिरपित भयऊ
भक्तिविमुखसुखदुःखसमाना * असविचारिवनकीन्हपयाना
नारि सहित नृप नैमिष आये * हर्षि गोमती माहिं नहाये
तहां विप्र हरिदेव प्रवीना * कनकलता युत नारिनवीना
करहिं तपस्याभगवत हेता * अशनवसनतजिअवधनिकेता

लागे करन तहैं तप आपू * द्वादश वर्ण मंत्रकर जापू
गौरश्याम सिय रामस्वरूपा * धरैं अहर्निश ध्यान अनूपा
कन्दमूलफल कछु दिनखाये * पुनिसबत्यागि नीरपरआये
षटसहस्र संवत जलपीनो * पुनिभखिवातसोउतजिदीनो
बर्ष सहसदश भख्योसमीरा * पुनिसोउतजिदीन्होंमतिधीरा
मनअभिलाष यहै दिनराती * प्रभुकहँ देखिजुड़ाइयछाती
निर्गुण निराकार निरखेदा * नेतिनेति ज्यहि गावत वेदा
ब्रह्मा विष्णु महेश सुभेषा * जासु अंशते होत अलेषा

दो॰ सोइप्रभु सेवा वशरहत कहत निगम असगाय।
जो यह सत्य तौ पूजिहैं मम अभिलाषा आय॥

तो.छं. इमि वर्ष दशहज्जार * रहे दोउ बिनआधार
कृशगात नातनवारि * नहिं नेक मानी हारि

ह.छं. लखि तप अतिभारी * हरि अज त्रिपुरारी
चलि मनु ढिगआये * मृदु वचन सुनाये

यु.छं. मांगहु वरसुत सोई * जो इच्छा मनु होई
मनुकछुकहत न भयऊ * पुनिपुनिफिरिकैगयऊ

चौ.छं. प्रभुजगस्वामी। अन्तर्यामी॥ निजजनजान्यो।
नन्यपिछान्यो॥

च.छं. तबभै नभवानी सुनुनृप रानी मांगहु जो वरभावै।
सुनि गिरासोहाई उठेमोटाई जिमि घरते कोइआवै॥
बोले हरषाई प्रेम बढ़ाई सुनु सेवक सुर धेनू।
विधिहरिहरनायकसुरनसहायकप्रणतपालसुखदेनू॥
जो शम्भुइभावै मुनिजन ध्यावै कागभुशुण्डिसुखैना।
सोइ राम अनूपा श्यामस्वरूपा देखौं मैं भरिनैना॥
असवचनविनीता परमपुनीता सुनि प्रकटे भगवाना।

शुभतनघनश्यामंलखिशतकामंलाजतनीरजपाना॥
शशिमुखछविसीवाचिंबुकग्रीवाअधरअरुणशुकनासा।
नवअम्बुजलोचनरिपुमदमोचनरदकपोलहरिहासा॥
भूषण मणिजाला उरवनमालाभालतिलकउरभारी।
श्रुतिकुंडललोलामुकुटअमोलाभृकुटीधनुअनुहारी॥
कटिकसे निषंगा करशारंगा पीतवसन लपटाये।
करि कन्धजनेऊ कचशुभतेऊ विविधसुगन्धलगाये॥
नखनखतछवीरा नाभिगँभीरा उदर रेख त्रयराजे।
राजिवदोउचरणंमुनिमनहरणंजिनध्यावतअघभाजे॥
जो सब जगमोहै बायेंसोहै आदिशक्ति सुखखानी।
जेहिअंशते अघटैं अगणितप्रकटैं उमारमा ब्रह्मानी॥
दोउ रूप अनूपा मनु शतरूपा यकटक रहे निहारी।
पगगिरे सुजाना दण्ड समाना बपुकी दशाबिसारी॥
प्रभुतुरतउठायो हृदयलगायो फेरेउ शिर निजहाथा।
माँगहु वरसोई जो मनहोई सुनिबोले नरनाथा॥
पदपद्म तुम्हारे देखिहमारे सबपूजे मन कामा।
लालसा जुएका हैमँगिबेका कहत लगत भय तामा॥
जानत तुमस्वामी अन्तर्यामी पुरवहु ममअभिलाषा।
सब सकुचविहाई माँगहुराई नहिं अदेव प्रभु भाषा॥
बोले महिपालक तुमसमबालक इनसम चहौंपतोहू।
विषइकइव जानो ईश न मानो देव यहै करि छोहू॥

दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि पुनि बोले सुरराय।
आपु सरिस पैहौं कहां महीं होब सुत आय॥

शतरूपा ते कह्यो बहोरी * देवि मांगुवर जो रुचि तोरी
जो पतिमांगा सोइप्रियमोहीं * मानों मैं ईश्वर करि तोहीं

सुनि मृदुगूढ़ वचन छलहीना * कह प्रभु जो मांग्यो सो दीना
अबतुमदोउममआयसुमानी * बसोजाय सुरपति रजधानी
तहँ कछुकाल रहेउ सुखपाई * युग त्रेता जबलगिहै आई
तबतुम ह्वै हौ अवध भुवारा * तहैं होब मैं तनय तुम्हारा
इच्छा मय नर देह बनाई * अवतरिहौं अंशनयुतआई
करिहौं चरित अनेक प्रकारा * जो सुनि नर ह्वैहैं भवपारा
असकहिपुनिप्रभुद्विजपहँआये * मांगुमांगु वरवचनसुनाये
नारि समेत विप्र अस भाषा * देहुनाथवर यह अभिलाषा

दो० इनसमान कन्या मिलै तुम समान जामात।
यहवर दीजै कृपाकरि और न चाहिय तात॥

एवमस्तु कहि कृपानिधाना * बोलतभे सुनु विप्रसुजाना
त्रेता जनक होब तुम सोई * नाम सुनयना इनकर होई
तबतव तनया शक्तिहमारी * ह्वैहै अंशन संयुत चारी
मैंजामात्र मिलब तहँजाना * असकहिभे प्रभु अंतरधाना
मनुशतरूपा द्विज द्विजनारी * बसेजाय चहुँस्वर्ग मँझारी
जबमहि अवतरि हैं वरलागे * सो चरित्र वर्णबपुनि आगे

हि.छं. यहइतिहासजौनमैंकही * लोमशरामायणमहँसही
पद्मपुराणसाखिपुनिभारै * सुनिकरकोइसन्देहनकारै

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृतब्रह्माकीउत्पत्तिअयोध्याकीउत्पत्तिस्वायंभुवमनु
कथावर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
वरणों सुखसंहिता कछु विष्णुपुराण बखानि॥

कह शौनक शंभू मनु पाछे * कीनराज्य केहि कहियेआछे
बोले मुनि जबनृप वनगयऊ * तब उत्तानपाद पति भयऊ

तिनते ध्रुव ध्रुवते सुत दूना * कछु दिन पाछे ह्वैगा सूना
लखिविरंचि प्रियव्रतै लयाये * कीनराज्यभलिप्रजा रिझाये
सात पुत्र तिनके भे चीन्हें * ताते सात द्वीप करि दीन्हें

दो० जाम्बू और पलाक्ष है शालमली कुशचारि।
क्रौंचसंकला द्वीपषट पुष्करसात विचारि॥
सागर अन्तर जानिये इन द्वीपन में तात।
क्षारक्षीर दधि मधुमदिर इक्षुजलसागर सात॥

जम्बू द्वीप तासु विस्तारा * योजन लक्षकेर निरधारा
जम्बू फल तहँ नदी बहावै * ताते जम्बू द्वीप कहावै
सेम्भदादि तैगिरि बहु रहईं * गंगादिक सरिता बहुबहईं
नृपअग्नीध्र तहांभे चण्डा * नवसुत करिदीन्हें नवखण्डा

दो० ईला रमनक हिरणिकुर हरिवष किंपुरुषाल।
भरत माहिं उपद्वीप बहु भद्रास ध्वजमाल॥

सौ योजनका देश बनावा * सवै देश का मण्डल गावा
त्रयशतमण्डलका यकखण्डा * विष्णुउपासी वसतअखण्डा
तामें चहुँ वर्णन के नामा * द्विजनृपवणिकशूद्रअभिरामा
जम्बुद्वीपके चहुँ दिशि हेरा * क्षारसिन्धु लखयोजन केरा
ताके आगे द्वीप पलाक्षा * उभयलाखयोजनकरआक्षा
तामें पाकरि विटप सोहावै * ताते द्वीप पलाक्ष कहावै
इदिमबाहु तहँ के नृप हेरे * भयो सातबालक तिन केरे
जबै सुभद्र सात शिवरासा * क्षेमअभय अमृतहरिदासा
ताते सात खंड करिदीन्हें * सरिबहुगिरिद्रुममाधिधरिदीन्हें

दो० तामें विप्रै हंस कहि क्षत्रिहि कहत पतंग।
वैश्यहिबुध शूद्रैबदत त्याग अपरबहु अंग॥
ताके चारोंतरफ हैं सागर दर रस केर।

द्वैलख योजन में तहां तरणि उपासकढेर ॥
ताके अग्र शालमलि द्वीपा ❋ चारि लक्ष योजन करदीपा
रुद्र सहस योजन कर तामें ❋ शेमलतरु खगपति रहजामें
द्वीप शालमलि त्यहि कहवावा ❋ यज्ञबाहु नृप तहां रहावा
सात सुवन तिनकेभे चीन्हें ❋ तिनहितसातखंडकरि दीन्हें
ऐयायन अविज्ञान सुरोचन ❋ समरसोम परिभद्रविमोचन

दो० तहँ विप्रै वद सूत्रधर नृपै बीचधर भाव।
वैश्यहि बोलत वंशधर शूद्रहि दुखधर गाव ॥
तेहिके चारों तरफ है सागर मदिरा केर।
चारि लक्ष योजन तहां चन्द्र उपासी ढेर ॥

तेहि आगे कुशद्वीपजु अहई ❋ आठलाखयोजनश्रुतिकहई
तेहिमधिकुशकरविटपसोहावा ❋ रुद्रसहस योजनका गावा
भूप हिरण्यरेत तहँ केरे ❋ सात पुत्र भे तिनके हेरे
नाभिगुप्त दृढ़रुचि वसुमाना ❋ वसुविवक्त कस्तुत व्रतजाना
तेहिते सातखण्ड करिदीन्हें ❋ सरि गिरि मर्यादाकेलीन्हें

दो० तहँ ब्राह्मणको कुशलकहि क्षत्रिहि कोविदकाम।
वैश्यहि अभिजितवदतुहै शूद्रहि कोकिलनाम ॥
तेहिके चारों दिशि रह्यो घृत को सागर पूरि।
आठलाख योजन तहां अग्नि उपासी भूरि ॥

क्रौंचद्वीप तेहि आगे आहैं ❋ सोरहलख योजन तहँ राहैं
क्रौंचविहँग रवितेज सुहावा ❋ क्रौंचद्वीप तेहिते कहवावा
घृत कूरट तहँके नृप जाना ❋ तिनके भे सुतसात सुजाना
मेघपृष्ठ भाजीष्ट सुधामा ❋ मधुरुहलोहितवनपतिआमा
सातखण्ड करि तेहिते बांटै ❋ मर्यादाहित गिरि तरु पाटै

दो० तहँ विप्रहि पुरुषाकहत क्षत्रिहि ऋषिबाराय।

वैश्यहि भद्रा भनत हैं शूद्रै देवक गाय ॥
ताके चारों तरफ हैं षोड़श योजनकेर ।
क्षीर सिन्धु तहँ के मनुष उदक उपासी ढेर ॥

शाकद्वीप तेहि आगे सोहा ❋ बत्तिसलख योजनकर जोहा
तहँ शाकोन केर तरु अहई ❋ शाकद्वीप तेहिते सब कहई
मोक्षातिथ तहँ के नृप धीरा ❋ सात पुत्र तिनके भयेवीरा
चित्ररेफ पवमान पुरोजय ❋ धम्रविश्व बहुरूप मनोजय
तिनहित सातखंडकरि दयऊ ❋ सोई नाम खंडनकर भयऊ

दो० तहँ विप्रै वद बालजी क्षत्रिहि कहत अमीर ।
वैश्यहि भाषत विरुज कर शूद्रै धारक धीर ॥
ताके चारों तरफ है दधिकर सागर नीक ।
बत्तिस लख योजन तहां पवन उपासी ठीक ॥

ताके आगे पुष्कर द्वीपा ❋ चौंसठ योजन केर समीपा
पुष्कर कातरु तहां रहावे ❋ ताते पुष्करद्वीप कहावे
इन्द्रदवन राजा तहँ केरे ❋ रमन धातुकी सुत युग हेरे
तिनहित उभयखंडकरिनाखे ❋ गिरि तरु मर्यादा हितराखे

दो० तहँ विप्रै पारस कहत क्षत्रिहि भनत भुजंग ।
वैश्यहि बोलत भरथरी शूद्रै भनत कुरंग ॥
ताके चारों तरफ है सिन्धु शुद्ध जलकेर ।
चौंसठ लख योजन तहां ब्रह्म उपासक ढेर ॥

चि० छं० ताके आगे परैभूमि । राती माटी केरिभूमि ॥
पौने सोरह लाख हेरि । ताके आगे हेम केरि ॥

गो० छं० आठकरोरि उन्तालिस लाख । योजन जानहु एक पाख ॥ लोका लोकी आदि अद्र । औरहु बीसन आहिभद्र ॥

बीरछंद ॥ अबतात । सुनुबात ॥ नभ केरि । मख हेरि ॥

दो० जाम्बू मध्य सुमेरुयक लख योजन परमान ।
तामधि इकइस लोकहैं सोसब करौंबखान ॥

कुं० बासुकि भूतक यमसुदत्त किन्नर ब्रह्मराक्षेश ।
राकस कालरु चितगुपित योगिनि गंध्रबदेश ॥
योगिनि गन्ध्रबदेश सुअर्यम महत तपसुजन ।
सत्य सुदिव्य सुनाग देव पिप्पल विशुकर्मन ॥
विशुकर्मादिक छांड़ि अहैं औरौ नाना पुर ।
पावक पवन पुरारि ब्रह्म वैकुण्ठ दिवासुर ॥
इकलख योजन भूमिते है ऊंचा रवि लोक ।
सहस बहत्तर योजन तेहि विमानकर ओक ॥
तेहि विमानकर ओक उदयकृत इन्द्रपुरी जहँ ।
धर्मपुरी मध्याह्न अस्त भव वरुणपुरी महँ ॥
अर्द्धलाख योजन रहै धनदपुरी उतरेक ।
इकइससहस योजन छसै चलै पलक बिचएक ॥
यकलख योजन भानुते हैशशिलोक उछार ।
योजन अरतालिस सहस में ताको विस्तार ॥
में ताको विस्तार एक लख पर मंगरपुर ।
तेंतालिस हज्जार माहिं विस्तार तस्य फुर ॥
यहिविधि इकइक लाखपर बसैं ग्रहनखत अनेक ।
वर्णै जन रघुनाथ किमि सब न अहै द्वै एक ॥

यहइतिहास कह्यों जसजानी ❋ अब पूँछौ सो कहौंबखानी
सुनि शौनक बोले हरषाई ❋ हाथ जोरि चरणन शिरनाई
दीनदयाल वचन सुनि तोरे ❋ अति आनन्द भयो उर मोरे

तृप्तनहोत श्रवण ममस्वामी ❋ सरितसमूहसिंधु जिमिगामी
तेहितेमोहिंनिज किङ्करजानो ❋ अब सरयूकी कथा बखानो
प्रकटी किमि भूलोकम आई ❋ कोलायो सो कहो बुझाई
सुनेसूत मुनि वचन विनीता ❋ रामकथापर प्रीति पुनीता
धन्य धन्य कहि बारहिंबारा ❋ वर श्रोता मैं तुम्हैं निहारा
सुनो तात सरयू जिमि आई ❋ उतपति मैं सो कहौं बुझाई
ब्रह्मा कहँ जानत संसारा ❋ जिनसिरज्योजगकरविस्तारा
तिनके भवन तीनि रहैंइस्त्री ❋ संध्या स्वस्ति और सावित्री
तिनके तनय मरीची भयऊ ❋ नाम प्रेमजा प्रियविधिदयऊ
सुत मरीचिके कश्यप जानो ❋ दशत्रिय तिनकेनाम बखानो

दो.छं. प्रथमै अदिती अमर कोटि तेंतिस जिन जाये। दितिके दैत्यअपारनागकद्रुमकेगाये॥ विनतासुतखग नाथचन्द्रसोमावतिकेरे।सुरावतीकेसूर्यरहतजगजासुउजेरे॥ पादवतीजोसवालच पर्व्वतकी माता। दमावतीसुतऋषैअ मोघाखगसंजाता॥ इराते तृणवृत्तजौनलागतपरकाजे। न खरेखासुतमेघ कोटिछप्पनउपराजे॥ तिनकेअमृतवृष्टि कि हेसबजगसुखपावत। कश्यपतेभैसृष्टिसकलश्रुतिऐसेगावत॥

तो.छं. श्रीकश्यपके सुतभानु। द्वैनारि तिनके जानु॥ छायाप्रभा असनाम। विश्वकर्मजा अभिराम॥ युगपुत्र छायाजाय। यमराजशनि दुखदाय॥ शनिबहिनियमुनाना म। यमभयहरणिप्रदकाम॥ प्रभाकेअश्विनीकुमार। प्रकटेहर णरुजभार॥ तिनकेतनयमनुभूप। शुचिरेखानारिअनूप॥ तिनके तनयइक्ष्वाकु। जिनकीनप्रजाविश्वाकु॥ सरयूनदी तिनआनि। भूपरबहाईजानि॥ केहिभांतिलायेनाथ। वि स्तारवरणौगाथ॥ कहसूतअवधभुवाल। इक्ष्वाकुभेजेहिका

ल ॥ बैठेभवन यकबार । नृपकीन स्वतःविचार ॥ पुरपास सरिताहोइ । तौलहैसुखसबकोइ ॥

दो० गृह स्नान सो अधम है मध्यकूपकर होइ।
उत्तम सर स्रवती करै उत्तम उत्तम सोइ ॥

सो० अससमन समुझि नृपाल गुरुवशिष्ठपहँ आयहू ।
नाइ कमलपद भाल कहत भये निजकामना ॥

सुनिवशिष्ठहिय हर्षितभयऊ ❋ दोउमिलिगोकन्याढिगगयऊ
बोलत्त भयेनदी यक चहिये ❋ कहां सोमिलैकृपाकरिकहिये
कहनंदिनी सुनहुमुनि ज्ञानी ❋ सुनी एकहौं कहौं बखानी
एक समय वैकुण्ठ मँझारी ❋ बैठे नारायण युत नारी
महादेव हरि दरशन हेता ❋ आयेतहँ गिरिसुता समेता
नारदादि सनकादि मुनीशा ❋ चतुरानन सुमनससुरईशा
सबहिन आइआइ शिरनायो ❋ प्रभुआदर करिकरि बैठायो
सभा देखि शंकर अनुरागे ❋ लागे करन नृत्य हरि आगे
नारद वीना ताहि बजावैं ❋ ब्रह्मादिक सुरसंग गवावैं
छैयो राग रागिनी छत्तिस ❋ समगुणग्रामसप्तस्वरबत्तिस
तालमृदंग तँबूर सितारा ❋ बाजतबढ़्यो विनोद अपारा
देखि नृत्य रीझे भगवाना ❋ बोले हरि मांगहु वरदाना
कह पशुपति जो दाया कीजै ❋ तौ मोहिं भक्ति आपनीदीजै
सुनि शंकर के वचन मुरारी ❋ बोले दीन नयन भरि वारी
सोइ जलपात भयो मुनिराई ❋ लीन कमंडलु महँविधिधाई
तीरथभयो गुप्त सो रहई ❋ लावहु जाय ब्रह्मपहँ अहई

दो० सुनि वसिष्ठ हरषितभये गये पिताके लोक।
सुखशोभातहँकरनिरखिभेमुनिविगतविशोक ॥

ब्रह्म भवन पुनि देख्यो जाई ❋ कहि नजातकछुतासुनिकाई

चतुरानन के दरशन कीन्हें * भालतिलक करवेदजुलीन्हें
धरे कमंडलु अग्र सोहायो * लखिवशिष्ठचरणनशिरनायो
विधिरहैं ध्यानमाहिंलवलीना * बैठिगये तहँ मुनि परवीना
नवसहस्र संवत चलिगयऊ * तबअजध्याननिवारतभयऊ
सुतविलोकिहँसिहृदयलगायो * कह्योतातकेहि कारण आयो
तब वशिष्ठ मृदुवचन उचारे * नृप इक्ष्वाकु यजमान हमारे
तिनके पुरढिग सरिता नाहीं * तेहिते हौं आयों तुमपाहीं
अब महराज मया करि सोई * दीजे जेहि मोको यशहोई
सुनिविधिहर्षि कमंडलु नायो * चल्यो प्रवाह संगमुनिधायो
गगनते गिरीभहूं आकासा * गिरिसुमेरु महँ कीह्यों वासा
ऐरावत के रद दोउ लागे * फाट पहाड़ चली बहिआगे
सो जलगिय्यो भूमिपरजाना * तेहिते सरयू नाम बखाना
पुनि जल मानसरोवर आवा * गैसमाइमुनिलखिदुखपावा
मानसरोवर विधि मनतेरे * भयो धाम हरिका तेहिनेरे
जाय वशिष्ठ ठाढ़ भे द्वारे * लगे करन तप तन मनवारे
विपुलकाललगि तहँतपकीना * तज्यो अहारभयो तनछीना
तब हरि द्वारपाल हँकराई * कह्यो वशिष्ठै लेहु बोलाई
द्वारपाल तहँ बोलि लै आयो * आपवशिष्ठचरण शिरनायो
कह भगवान सुनो मुनिप्यारा * कवन हेततपकियो अपारा
कह वशिष्ठ इक्ष्वाकु यजमाना * भूप अयोध्याके जगजाना
तिन असकहा नदी यकहोई * मैंविधिपासगयों सुनि सोई
तहां एक सरिता प्रभुपाई * सो सरवर महँ आइसमाई
बोले हरि हलकोरहु माथा * अबहींनिकरिचलैतवसाथा
तब वशिष्ठ जलजाय हिलोरा * चली निकसिसरयू वरजोरा
गिरि पुरग्राम धामकरिपावन * बही अवधतरआइ सुहावन

दो० सुनिनृप पुरवासिन सहित आये अपगातीर।
पूजन कीन्हों विविध विधि दीनदान भयभीर॥
आय आय सुरवधुन युत कीन्हेनि तहँ स्नान।
नाम धरे त्रयनयनजा सरयु वशिष्ठी जान॥
दरशपरश मज्जन करत हरतपाप श्रुतिगाय।
अंतकाल हरिपुरबसै रविसुत भय मिटिजाय॥
सरयूकी उत्पत्ति इमि मुनिन कही रघुनाथ।
केहु पुराणमें वदत बुध है रघुपति पद पाथ॥

कामाछंद॥ बायें। पायें॥ केरो। हेरो॥

तो.छं. दोउभांति मंगलमूल। मोहिंदेहु है अनुकूल॥
सियरामनाम अधीर। सुमिरौं सदा तवतीर॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतसातोद्दीपनवखण्डप्रमाणश्रीसरयूउत्पत्तिवर्णनो नामअष्टविंशोऽध्यायः २८॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणप गिरासुखदानि।
पिककृतअगिनिपुराणमतकहौं भागवतबखानि॥

सुनि शौनक बोले शिरनाई * गंगा कौनभांति महिआई
केहिविधि उत्पतिभै सो गावो * प्रभुप्रभाव कछु वरणिसुनावो
कह्योसूतनृपसगरजोभयऊ * जिनबहुभांतिप्रजहिसुखदयऊ
तिनके केशि सुमति द्वै नारी * पुत्रविना नितरहे दुखारी
इकदिननृपदोउत्रियनसमेता * वन तप करनगये सुतहेता
कीन कठिन तप तीनिहुँप्रानी * वरम्बूहि बोले भृगुबानी
केशी कहा पुत्र इक दीजै * एवमस्तु अति सुन्दर लीजै
मांगहु कहन सुमतिते लागे * साठिसहस्र सुवन तिनमांगे
वरदै भृगु आश्रमै सिधाये * वधुन समेत भवन नृपआये

असमंजससुतकेशीजायो ❋ शिशुनकेमिससोविपिनसिधायो
सुमतिकेभे सुत साठिहजारा ❋ घृतघटमें कीन्हों प्रतिपारा
वीर महा रणधीर सक्रोधी ❋ मारेअसुर सकल जिनशोधी
एकबार नृप मखकर साजा ❋ कीन्ह्योंतहँलिखिछांड़्योबाजा

दो० इन्द्र ताहि गहि कपिलके पाछे बांध्योजाइ ।
रखवारे नहिंदीखतब कहिन भूप ते आइ ॥

सुनि सुतरहे सुमतिके जेता ❋ चले सकल ढूंढ़न के हेता
सात द्वीप नवखण्ड मँझायो ❋ श्यामकरण को खोजनपायो
तब लागे महि खोदन सोई ❋ तीनिदिशादिशिडारिनिजोई
पुनि ढूँढ़त उत्तर दिशिआये ❋ तहांकपिलमुनिध्यानलगाये
पाछे अश्वबँधा लखि मानी ❋ बोले सगर सुवन कटुबानी
पकरि तुरंग आड़में आना ❋ हमैंविलोकिधरिसिबकध्याना
सुनिमुनीशकरिक्रोध निहारा ❋ सबयकसंग भये जरि छारा
समुझिबूझिविषपानजोकरई ❋ कहौ तात सो काहे न मरई
इहां शोच मन कीन भुवारा ❋ भे बहुदिन नहिं फिरेकुमारा

दो० तब असमंजसके तनय अंशुमान कहँ बोलि ।
कह्यो खबरिलैविपिनकी लखिहयलावहुखोलि ॥

सो० सुनत चले हरषाय जहँ तहँ खोजत नगरवन ।
मिले गरुड़मग आय कही कथासब जिमिजरे ॥

का.छं. असखबरिपाइ । जलनिधिनहाइ ॥ तिलउदकदीन ।
पुनिगमनकीन ॥ संयुताछंद । खगनाथयुततहँआयहू । मुनि चरण शीशनवायहू ॥ करि विनयआशिषपायकै । हयलैचले हरषायकै ॥ तोमरछंद ॥ बदबैनते सुनुतात । परमार्थकी यकबात ॥ जोगंगआवे भार्थ । तोहोहिंपितरकृतार्थ ॥ सुनि अंशुमाननिहोरि । कहगरुड़तेकरजोरि ॥ अब गंगकी

उत्पत्ति। कहियेकृपाकरिसत्ति॥ आयेमहीपरजासु। तरि हैं पितरममआसु॥ बोलेगरुड़हरषाय। उत्पत्तिसुनुकहौंगाय॥
त्रेतायुगमें बलिमख ठयऊ * इन्द्रलोकलै सो मनुभयऊ
तबहरिहियविचारअसकीन्हा * प्रह्लादै मैं यह पद दीन्हा
सोबलि लेन चहत करियागा * तेहिहितबामनतनअनुरागा
बामन आंगुरके केहिकारण * भेप्रभुसोकहिये अहिचारण
मांगन केर हेतु हरि जाना * तेहि ते बामन भे भगवाना
मांगन मरण उभयसम अहई * मान बड़प्पन नेह न रहई

सो० तृणते लघु तूलाइ तूलहुते लघुयाचकहु।
कतन उड़ावत बाइ मांगनकर भयमानिकर॥

यातेहरिबामन तन भयऊ * अदितिकेजठरजन्मआलयऊ
यज्ञो पवीत भयो जब जाना * भिक्षा हेत चले भगवाना
बड़दानी सुनिबलिपहँआयो * बहुप्रभुतामुखवरणिसुनायो
बलिबिलोकियकटकरहिगयऊ * असबपुकबहुँनदेखतभयऊ
कह बलि मांगु जो भावेतोहीं * पैग तीन पृथ्वी दे मोहीं
मम समान दानीलहि तुमते * मांगतबना न मांगहु अबते
बामन कही सुनहु नरपाला * द्विजै तोष चाही सब काला

दो० असन्तोष द्विजदोष युत सन्तोषी नृपचारि।
सहलज्जा गणिका अधम निरलज्जा कुलनारि॥
कहा शुक्र महिपाल सुनु येहैं श्री भगवान।
छलनहेत आये तुम्हैं देव न इनकहँ दान॥

दो.छं. जोभगवान कह्यो तुमयेहैं। हौंनदेहौंदलिकैनहिंलेहैं॥
ताते यहै हितहि ते दीजे * नामचली धनलै कह कीजे
शुक्रकहा पुनि सुनहु भुवारा * अबते मानहु वचन हमारा
द्रव्य हीन नर व्याकुल रहई * सर्बठौर मन्दादर लहई

बिनापराध मित्र जन मारवै ❁ त्रियसनेहकरि वचन नभाखै
तेहिते धनकी रक्षा ठानहु ❁ दर्बै ते सबैं बश मानहु
दो.छं. कहबलिदेनकह्योइनकाअब। जोनहिंदेहुंतोधर्मनशैसब
झूठसमान न पातकआनजू। बोलतभे धनिशुक्रसुजानजू॥
बी०छं० ओतुब्यौर। पांचठौर॥ झूंठकही। दोष नही॥
दो० निजत्रियते पुनि ब्याहमें धनहित संकट प्राण।
गो द्विज हिंसा में कही झूठ न दोष प्रमाण॥
जिनकर रक्षक लोक सब असुरहते जिनहाथ।
तेहिकरमांगत भीख अब किमपि न दीजैनाथ॥
अवनिरवनिधनतनसँगसबहीं ❁ पुनिअससमयमिलीनहिंकबहीं
असकहि करनसंकलप लागे ❁ प्रविशेकवि करवामहँ आगे
रुक्यो नीर हरि डाभचलायो ❁ फूटि आंखि संकल्प करायो
तब बामन निज देह बढ़ाई ❁ पगभू जंघ लोकध्रुव जाई
स्वर्गभयो कटि शिवपुर पेटू ❁ रवि सुतलोक हृदयजा भेटू
कंठ आय तपलोकहि भयऊ ❁ आननसत्यलोक महँगयऊ
ऐसो दीर्घरूप हरि कीन्हा ❁ पुनिपृथ्वी नापन मन दीन्हा
दो० तल अतल बितल तलातल रसातल पाताल।
सप्त पतालन एक पग नापे कृष्ण कृपाल॥
प्रथमै भू दूसर भुवर तीसर स्वर जन चारि।
पंचम सत्य छठा महर मुनि विधिलोक निहारि॥
सात स्वर्ग ये जो मैं वरणा ❁ सो सब नापे दहिने चरणा
ब्रह्मलोक जब हरिपद गयऊ ❁ चीन्हिचलांक धोइसोलयऊ
धरेउ कमण्डलमहँचतुरानन ❁ गंगाभई रहत जग जानन
तप जो करहु गंग महिआवैं ❁ तब तुम्हार पुरुषा गतिपावैं
गंगाकी उतपति इमिजानो ❁ बामनकृत अबसुनतबखानो

द्वैपगसकल लोक जब भयऊ * एकै पग बाकी रहिगयऊ
बलि बामन पग पीठि नपाई * रीझिकहा मांगो बरराई
जो प्रभु मोपर किरपाकीजै * यहीरूप निज दर्शनदीजै
एवमस्तु कहि बलिहि लवाई * राज्य सुतलको दीन्हों जाई
द्वारपाल ह्वै श्रीभगवाना * रहतसदा तहँ सबजगजाना
याहीते हरि सन्मुख ठीका * कृपा कोप छल तिनकरनीका

दो० बड़े बड़ेन ते छल करहिं जन्म कनौड़े होय।
वृन्दा श्रीपति शिरलसै गति बामन बलिजोय॥

यहसबचरित गरुड़ जबगावा * अंशुमानसुनिअतिदुखपावा
पुनि खगनाथ गये हरिपासा * आये अंशुमान निजबासा
देखिसगर उरलीन लगाई * खबरि सकल पुत्रनके पाई
यज्ञकीन्ह भूसुर सनमाने * कछुदिनरहिगृहपुनिअकुताने
राज्य सुअंशुमान कहँदयऊ * आपुतपनहितसरिवनगयऊ
अंशुमानके भये दिलीपा * तिन्हैंथापि वनगे नरधीपा
भागीरथ दिलीप के सूवन * भे जेहि नाम चारि दशभूवन
तिन्हें राज्य देवन अनुराग्यो * करि तपकठिनतहैंतनत्याग्यो
भागीरथ सुत काकुथ भयऊ * देतेहिंराज्य आप वन गयऊ
लागे तप गंगा हित करना * रवि सन्मुख ठाढ़े इक चरना
सहसबर्ष बीते विधिआये * मांगुतात वरवचन सुनाये
कहनृप जो किरपा प्रभुकीजै * तो गंगामहि आवन दीजै
बोलेअज हम छांड़ब जबहीं * जाई गंग रसातल तबहीं
तेहिते अब शम्भुइ अवराधी * मांगहु बर ते रखिहैं साधी
सुनिनृपदिव्यवर्ष शिवध्याये * मांगहुबर हरआइ सुनाये
गंगारोंकि लेहुकरि दाया * कीन कबूल गंगसुनि पाया

दो० जाउँ रसातल सहितशिव जटा बढ़ायो ईश।

छांड़्यो अजइक बर्षलों रही भुलानी शीश ॥
ध्यायोन्नृप गाख्यो जटा भई धारा तहँतीन ।
सुरपुर गइ पाताल इक रही मही पर पीन ॥
सुरपुर मन्दाकिनि कहत परभावती पताल ।
गंगकहाई अवनिलखि बोले मलिनन्नृपाल ॥
हे सुरसरि हरि भक्त जे रहि समस्त बेकार ।
तिन के तन स्पर्श से नाशी पाप तुम्हार ॥

सुनि समोद नृप संगसिधाई * स्वच्छ करत पुरसागर आई
तरे पितर भागीरथ केरे * अजहुँ उधारत पतितघनेरे
यहिविधिमुनि गंगामहिआई * जासु महातम वरणि न जाई
दशसहस्र सम्बत तप करई * मखव्रतदान नेम आचरई
सकल पुण्य लै तुला चढ़ावै * गंगमहातम सम नहिं पावै
सुरमुनि मनुज सिद्ध बहुजाना * गंगाके व्रत सबहिन ठाना
हरिजन भावबहुत विधिराखैं * प्रभुका पादोदकश्रुति भाखैं
जिमिघनसोष्णवोष्णतमखोवै * तिमि गंगाकलिपातक धोवै

दो० दृष्ट्वा अघ शतजन्म के पीत्वा अघ शतदोय ।
मज्जन जन्म सहस्र के हंतिगंग कलि जोय ॥

जोपै कुञ्जर शौच न होई * तौ हरिधाम बसै नर सोई
बैश्यकेर बालक एक मरेऊ * कफ्फनकी रज मुखमें परेऊ
भयो न भूत गयो सुरधामा * देखि सिद्ध कीन्हो परनामा
विप्र एक गणिका रत जाना * अंतकाल निकसै नहिंप्राना
बारमुखी मुख थूक्यो आई * तजितनबस्यौविबुधपुरजाई
पत्ती गिख्यो मृतक ह्वै नीरा * मिटिगै तासु सकलभवपीरा
गंग महातम अहै अपारा * थकैं कहत मुखशेष हजारा

गी०छं० कहि थकैं शेष सहस्र मुख मैं एक का वर्णनकरौं ।

निजबुद्धिमाफ़िक कह्योकछु तब हेतुहरिपद उरधरौं ॥
तेधन्य सुरसरि तीर रहि लहिनाम नित्य नहावहीं ।
रघुनाथते तन त्यागिकै परधाम निश्चय जावहीं ॥

सो० माथ नाय रघुनाथ मांगत दीजै जननि मोहिं ।
जन्म जन्म तप पाथ पावों गावों राम गुण ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतगंगोत्पत्तिवर्णनोनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ।
वरणौं ब्रह्मपुराण को अब इतिहास बखानि ॥
सुरसरि महिमा अगमसुनि बामनकथारसाल ।
पुनि शौनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ॥

प्रभु आनन्दभयो अतिमोरे * सुनि इतिहास सुधारसबोरे
इक लालसा और उरजामी * सो अबपूरण कीजै स्वामी
एकादशी की उतपति कैसे * भइ जगमाहिं बखानौ तैसे
सुनत सूत बोले सुखपाई * भली प्रश्न कीन्हीं ऋषिराई
सबसुखकरणिहरणिअघभारी * पारहोत भव सुनि नरनारी
सोइ इतिहास सुनावों तोहीं * जसकछुसमुभिपरो उरमोहीं
सतयुग माहिंअसुर इकभयऊ * मुरअसनामसबनिदुखदयऊ
शंखासुर सुतपितु बधजान्यो * तब वन जाइतहां तपठान्यो
पदमासन ढिग आइबखाना * मांगुसुवन निजरुचिवरदाना
बोलासुनि सुरमुनि मनुजादा * श्रीधर हर लोकप सह पादा
जहँलगि सृष्टिरची तुम होऊ * हमते समर न जीतै कोऊ
एवमस्तु कहि ब्रह्म सिधायो * मुरवरपाइ वेश्म निजआयो
भुजबलजीतिसकलमहिपाला * पुनिदलसाजिसुरन परचाला
भयो युद्ध अति खेचर हारे * शक्र सहित भागे भयमारे

दनुजराजलखिअतिहरषाना ❋ बैठारे तहँ आपन थाना
दिगपालनपर बहुरि सिधारा ❋ जहांतहां भय मारु अपारा
बरुणकुबेर काल यमराई ❋ लैलै जिय सब गये पराई
सकललोकतप बलवशकीन्हें ❋ निज सेवकन वासतहँदीन्हें
तबसुरसहित इन्द्रशिवपासा ❋ आइनाइ शिरहाल प्रकासा
नाथअसुर भय देव दुखारी ❋ ब्रूहि उपाय मिटै दुखभारी
कहहर श्वेतद्वीप तुम जावो ❋ कमलनाभिकहँबिपतिसुनावो
शम्भुवचन सुनि सुरसुरईशा ❋ आये तुरत जहां जगदीशा
सन्मुख ह्वै लोचन भरिवारी ❋ हाथजोरि अस्तुतिअनुसारी

तो.छं. जयजयजगदीशअजीशपतिं। करुणारससागरशुभ्र मतिं॥ जयदीनदयालकृपालप्रभो। तवपूरिरह्योजगमाहिंबिभो॥ जबहींजबदुःखहमैंजुपरेउ। तुमहींतबसंकटनाथ हरेउ॥ अबनिशिचरएकभयोमुरहै। सुरदीननिकारि लियो पुरहै॥ दिगपालसबैमिलि देवहरी। भयत्रासितआइपुकारकरी॥ तेहितेअबनाथकृपाकरिये। दनुजैदलिमो दुखको हरिये॥ सुनिदीनगिराबद विष्णुतबै। करिहौंकलिकोपन नाशसबै॥ कहियोंविधिसाजिचलेदलका। दिगपालनदेव नकेहलका॥ यहसुद्धितमीचरपाइबली। लैसेनसुसन्मुख आइरली॥ नभपूरिरहीरजरोरकरै। परआपनबाचनबूझिपरै॥

चा.छं. इतउतवीरजयातिजयपुकारिधावहीं। चक्रबाणशक्ति शूलभिरिडलैचलावहीं॥ शीशपाणिपायभूमिखण्ड खण्डह्वैगिरैं। उष्टिउष्टिरुण्डदौरिमारुमारुकैभिरैं॥

तो.छं. पुनिचल्योमुरबलवान। करिक्रोधकालसमान॥ करधनुषशरझरिलाय। सबचलेदेवपराय॥ सुर नाथजूझनलाग। रणत्रसितइन्द्रहुभाग॥ हरिकाग्रस्योमुर

भूप । भयविष्णुक्रोधसरूप ॥ हरिचक्रमारयोताहि । नहिंकी न्हितनिकौंश्राहि ॥ तरज्योतमीचरधाइ । शठहरिहि मारि सिश्राइ ॥ यहिभांतियुद्धकरत्त । भईसहसवरषैंगत्त ॥ मुनि सिद्धहाहाकीन । तजिसमरविष्णुहिदीन ॥ भागतनिशाच रनाथ । धावतभयोहरिसाथ ॥ श्रमबिपुलबद्रीश्राइ । प्रविशे गुहामहँधाइ ॥ रहासिंहवतश्रसनाम । योजनतरणिबड़ताम ॥ यकद्वारतामधितात । मुरदीखविष्णुहिजात ॥ लैसंगनिज भटसर्व । प्रविश्योगुहायुतगर्व ॥ दानवबधनकेलाय । प्रभु कीनएकउपाय ॥ भयेश्रापनिद्रावस्य । कन्याभईउरतस्य ॥ बलविपुलतेजश्रपार । हैजगतजेहिश्राधार ॥ तनदिव्यपट भुजचारि । श्रलंकारश्रायुधधारि ॥ प्रकटीजोमायाश्रादि । जेहिडरतशिवब्रह्मादि ॥ लखिदनुजकरिकैक्रुद्ध । लागोकरन तहँयुद्ध ॥ प्रकटीदशौदिशिश्रागि । कितजाहिंदानवभागि ॥ इमिभयेसबजरिछार । निकसीसुगन्धश्रपार ॥ भाशकुन इन्द्रहिनीक । श्रायेगुहासावीक ॥ कियोकन्दरा परवेश । सुरनारदादिगणेश ॥ देखीसबैजगमात । बैठीप्रफुल्लित गात ॥ बासवसहितश्रनुराग । श्रस्तुतिकरन तब लाग ॥ मदनमोदकदण्डक ॥ जयंतिजगजननि श्रघहरणिमनम गनिकरश्रयुधवरचक्र श्रसिशूलधरणी । सर्वगुणभवनि दुखदवनिदानवसुरभि व्याधजनपद्महरि विश्वकरणी ॥ रागतमतरणिभयहरणि कलिकालिकाशालिका शत्रु पर चंडरूपी । भूतग्रहप्रेतवय शाकिनीडाकिनी विहँगहित जालदुर्गेंश्रनूपी ॥

दो॰ यहिविधि श्रस्तुतिइन्द्रकरि देवनहनेनिशान ।
वरषिसुमन जयजयतिकृत तबजागे भगवान ॥

सुरसुरपतिदिक्पालमुनिविनयकिहिनिसबभांति ।
देखिअसुर बध विष्णुतब बोले मन हरषाति ॥

भु०छं० किह्योदेविकल्याणदेवन्यकेरो । बरैमांगियेजोचहैंचित्ततेरो ॥ कहाशक्तिप्रकटीमैं तनतेतुम्हारे । असुरदुष्ट आवतलखेसर्वमारे ॥ सुनो नाथमोकोनहींयांचिआवै । कृपा कै सो दीजै तुम्हैंजोनभावै ॥ बद्योविष्णुचललोकमेरेमेंराहौ । एकादशिशरीरिन्नुभै नामलाहौ ॥ नवोनिद्धिसंसिद्धिफलतुतैदाता । जुहोवोसदाभयहिरण्याक्षघाता ॥ रहैवर्तपूजैतुम्हैंनेमधारी । मनोकामनापाइहैनरऔरनारी ॥

दो० यहि प्रकार वरदानदै हरिभे अन्तर्द्धान ।
उतपतिएकादशीकी इमि मैं कीन बखान ॥

कह शौनक यहकहौ बखानी ❋ कौनी भांति रहै व्रत प्रानी
सुनि मुनिवचनसूतसुखमाना ❋ तातसुनोअब बरत विधाना
एकादशी व्रतकीन जो चाहै ❋ दशमीते अस नेम निवाहै
मसुरी मांस कास त्रिय संगा ❋ कोदवचणक शयन परयंगा
अल्प अहार बारइक करई ❋ मधु अरुशाक दुशौपरिहरई
उठै एकादशिहोत बिहाना ❋ शुचिकरिमध्यदिवसअस्नाना
केशवकी पूजा पुनि ठानै ❋ षोड़शभांति भजै भगवानै
काम क्रोध मद लोभरुमाया ❋ तप्ततोय मद मैथुन जाया
निद्रा हास्य मदर्शत बोलै ❋ तजि रदधावन झूठन बोलै
राति जागरण करै सुजाना ❋ सुनै कथाहरि कीरति गाना
प्रात क्रियाकरि विप्र बोलाई ❋ यथाशक्ति सनमानै भाई
तैलामिष परान्नपुनि भोजन ❋ मैथुनादितजि द्वादशसोजन
यहि प्रकार जो करै विधाना ❋ ताकर फल सुनिये दैकाना

दो० काशी सेवै अब्दशत अचवै वारि केदार।
उभय सहस गोदान दे तीरथ अटै अपार॥
होम यज्ञकरि शतसहस विप्र जेमावै कोय।
एकादशी ब्रत के रहे सम नहिं कोई होय॥

सो० जोब्रतसहित विधान रहैराखि विश्वास उर।
आवै अन्त विमान बसै बिष्णुपुर जाइसो॥

रो.छं. निराहारफलपूर्णदुग्धतेआधारहई। फलअहारच तुरांशकंदतेअठवांलहई॥ करैउदरभरिअशनअंश शतकाफलपावै। उभयबारतेसहसअंशफलनिगमबतावै॥ एकादशीकेदिवस अन्नखावैजोकोई। अथवादेवैकाहुदोषता कोबहुहोई॥ बरतकरणपरिहरै रहै विषयारसलीना। ग्रास ग्रासपरपरतब्रह्महत्यातेहिचीन्हा॥

दो० दशमी बेधी ना रही करी द्वादशी बर्त्त।
पंचालिसतक चाहिये सठियानी पुनि हर्त्त॥

सो० वरष एकके मायँ एकादशी चौबिस परैं।
सुनौ सबनके नायँ फल समेत वर्णन करौं॥

अगहनअसितएकादशिकेरा * शयनबोधिनी नाम निवेरा
विप्र कोटि शत न्योति जेमावै * यहिव्रतसमफलसोनहिंपावै
मार्गपक्ष सित मोक्षद नामा * जो रहिपुंस पाव हरि धामा
तेहिपर यक इतिहास बखानों * ब्रह्म पुराण केर तुम जानों
गोकुल नगर रहै यक राजा * बैखानस असनाम बिराजा
नरकपरा पितु स्वप्ने देखा * जागत भा उरखेद विशेखा
राजकाज सुखनीक न लागै * मनविचारिकेहिविधिदुखभागै
पुरुषाजासु अधोगत होई * जीवत वृथा पुत्र जगसोई
असकहिमुनिअत्र्याश्रमआयो * करिप्रणामनिजशोचसुनायो

कहि ऋषितव पितुतेइकवारा * ऋतुवन्ती प्रियभोगविचारा
सुनि रतिदान दीन नहिंराई * तेहिअघपरयोअधोमुखजाई

दो० मार्गशीर्ष सितपक्षकी एकादशी व्रत स्वच्छ ।
करिदीजै फलदान तेहि लहै पिता तव मोक्ष ॥

सो० सुनि नृप मन्दिरआइ करि व्रत दीन्हों दान तेहि ।
पुण्यपरम गतिपाइ जयकहि सुरबर्षे सुमन ॥
रहे जो व्रत जसरीति पावेअन्त बिमोक्ष सुख ।
पढ़ैसुनै करिप्रीति बाजपेयफल सोउ लहै ॥
सत्य झूठकी बात जानै निगम कि रामजी ।
मोहिंहरि हेतसोहात अधिक नाम कलिकामतरु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णशुक्लपक्षशयनबोधिनीमोक्षदाकथावर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

दो० सुमिरिराम सियसंतगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं बावनपौराण मत ब्रह्मबैवर्त्त बखानि ॥

कह शौनक कहियेऋषि राऊ * पूस असित व्रतकेर प्रभाऊ
कहा नाम किन पूजन कीन्हा * सुनिसुमंत्र असबोलै लीन्हा
सुफला नाम अहै यहि ताता * जानिअजानिकिहेफलदाता
करै सहस जो कन्या दाना * तुलै न यहि व्रत रहे समाना
यहिपर एक सुनौ इतिहासा * महिषम नृपचन्द्रावलिवासा
तासु पुत्र बड़भयो अधर्मी * लम्पट चोर मदपहत कर्मी
सुनि नरेश वनदीन निकारी * करै निबाह बिहँग मृगमारी
पौषकृष्ण हरिबासर वारा * मिलानकछुत्यहिदिवसअहारा
क्षुधितरह्यो चल दलतर सोई * निद्रालुब्ध भई नहिं कोई
व्रत प्रसादते भा मन पावन * जान्यो आपुहिबंशलजावन

आइभवन पितुपदशिरनायो ❋ समय सनेह राजपद पायो
अनजाने व्रतकर फल ऐसा ❋ जानि किहे नहिं जानी कैसा
जो यह कथा सुनै या गावै ❋ कन्यादान दिहे फल पावै

इति श्रीपौषकृष्ण एकादशी माहात्म्यं सम्पूर्णम् ।

सो० कहशौनक शिरनाइ पौषशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अबम्वहिं देउ सुनाइ सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

यहिकर नाम पुत्रदा कहिये ❋ अवशि पुत्र फल धारैलहिये
लक्ष्मी नारायण हित सेवै ❋ संयम नियम पूर्व लखिलेवै
यहिपर एककहौं इतिहासा ❋ केतुमान नृप भाद्र निवासा
तेहिके तनय न एकहु भयऊ ❋ यकदिनकरिविचारवनगयऊ
देखेतहँ खगमृग तरु नाना ❋ मटत मिले मुनिसोमसुजाना
करिबिनतीनिजदुखसबकहेऊ ❋ सुनिमुनिमब्रवीतजसचहेऊ
पौष शुक्ल व्रत पुत्रद नामा ❋ करहु जाइ पूजी मनकामा
भवन आइ व्रत कीन्हेउ भूपा ❋ हरिप्रसाद सुतलहेउ अनूपा
जो यह कथा सुनै अरुगावै ❋ सुखसम्पति नाना विधिपावै

इति श्रीपौषशुक्ल एकादशी माहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ माघकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अबम्वहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

यहिकर नाम षटतिला अहई ❋ करिव्रतनेम निकरअघदहई
तिलपिंडिन में हरि हि पधारै ❋ विविधि भांति पूजा अनुसारै
तिलपावै तिल विप्रै देवै ❋ तासु पुण्य सुरपुर सुखलेवै
यहि पर यकइतिहास बखानौं ❋ रहैपुरमें शशि ब्राह्मण जानौं
नाना नेम बरत सो ठानै ❋ दान देन भिक्षा नहिं आनै
करि चिन्ता हरि जापै आई ❋ दीन्हीमृतिका द्विजै रिसाई
अन्तकाल त्यहि पुण्यप्रतापू ❋ लहास्वर्ग शुचि मंदिर आपू

तहँधन धान्यकछू नहिंदेख्यो ❋ आपुहि महामंद करिलेख्यो
हरिमत देव बधनते भागी ❋ यकषटतिलापुण्यदुरिमांगी
दरशहेतु व्रत काहू दयऊ ❋ ऋद्धिसिद्धि सब ताके भयऊ
जो यह कथा सुनै वा गावै ❋ तस्य अवश्य पुण्यसरसावै

इति श्रीमाघकृष्णएकादशीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय माघशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अबम्वहिं देहु सुनाय सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

माघशुक्ल हरिवासर केरा ❋ जया नाम अघ हरत सबेरा
यहि पर यकवर्णौं आख्याना ❋ इन्द्र अप्सरा रहै छविवाना
निर्त्तत सो हरिआगे जानी ❋ मालव गन्धव देखिलोभानी
निरखिनिलज्जशाप वृषदयऊ ❋ होहु पिशाचजाय द्वै भयऊ
वनमें रहैं सहैं दुख नाना ❋ माघशुक्लव्रतकिहिनअजाना
हरि प्रसादगे स्वर्गयान चढ़ि ❋ इमिभविष्यउत्तरभाषतिपढ़ि
जो यह कथा सुनी वा कही ❋ करी कृपा तेहिपर प्रभुसही

इति श्रीमाघशुक्लएकादशीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनायफाल्गुनकृष्णाहरिव्रतकथा ।
अबम्वहिं देहुसुनाय सुनि सुमन्त्र बोलेहरषि ॥

विजयानाम याहि श्रुति गावै ❋ याके रहे विजय नर पावै
अवध नगरनृपदशरथकेसुत ❋ पितुबच वन गतबंधुबधूयुत
तहँ जानकी हरी दशकन्धर ❋ मिलिरविसुतहिचढ़ेलेबन्दर
दधितटआपुअनुजमतठयऊ ❋ बकदालय ढिगपूछनगयऊ
नाथ कहौकेहिविधिरिपुजीती ❋ सुनि मुनिवर बोलेकरिप्रीती

दो० फाल्गुणकृष्णविजयअस नाम एकादशिकेर ।
करहुजाय तेहि कृपाते जितिहौ शत्रुघनेर ॥

सो० आयकीन व्रतराम रणचढ़िमार्यो दशमुखहि ।

सिय सोदरयुत धाम पहुँचत पायो रामपद ॥
कल्पभेद यह बात बदअसकन्दपुराण इमि ।
पढ़ैसुनै जो तात सो न सहै यम त्रास पुनि ॥
इति श्रीफाल्गुनकृष्णएकादशीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनकशिरनाइ फाल्गुनसितहरिव्रतकथा ।
अबमोहिं देहुसुनाइ सुनि सुमन्त्र बोलेहरषि ॥

आमर्दकी नाम यहि जानो ❋ गोशतदियेअधिकफलमानो
धात्री तरु पूजै मनुलाई ❋ देइदान बहु विप्र जेंवाई
हरिसुमिरनजनभजनप्रकाशै ❋ आधिव्याधिदुखदारिदनाशै
याही ब्रत कीन्ह्यो सुग्रीवा ❋ तस्यप्रसाद लह्यो सुखसीवा
राजानल दमयन्ती रानी ❋ यहि व्रतकरिभइविपदाहानी
आमर्दकी प्रात दुरवासा ❋ नृपपरतमकरि भये निरासा
जो यह कथा सुनै या गावै ❋ पुष्कर मज्जनकृत फलपावै
इति श्रीफाल्गुनशुक्लआमर्दकीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ चैत्रकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अबमोहिं देउसुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

पाप मोचनी यहिकर नामा ❋ शुभगति लहै किये विश्रामा
यहिपर यक इतिहासबखानों ❋ भविष्योत्तर पुराणको जानों
च्यवन पुत्र मेधावी नामा ❋ करै तपस्या विपिन अकामा
इन्द्र डरपि अप्सरा पठायो ❋ हावभावकरि आयडिगायो
रमत वरष बीत्यो पञ्चासी ❋ बोली अहं जाव नभवासी
कहमुनि एक क्षपाजनिडोली ❋ होत प्रात जायो सुनि बोली
कैवर्षकी तब रात्रि प्रमाना ❋ मुनिहिं चेततब भा दुखनाना
दीन्हशाप तेहि हे अघचरणी ❋ होहु पिशाची तपक्षयकरणी
सुनि कम्पित ह्वै चरणन नई ❋ कीजे कृपा भूलबड़ि भई

कह ऋषि चैतकृष्ण उपवासै ❋ करु हरिवासरतै अघनासै
सुनि अप्सराकीन व्रत भारी ❋ ह्वै पावन सुरलोक सिधारी
जो यह कथा सुनै या गावै ❋ चन्द्रायन व्रत कृत फलपावै

इति श्रीचैत्रकृष्णपापमोचनीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ चैत्रशुक्ल हरिव्रतकथा।
अबमोहिं देउ सुनाइ सुनि सुमंत्र बोलेहरषि ॥

कामद नाम एकादशि येहा ❋ करतहरत जेहिकलुष सनेहा
यहिपर एकसुनौ इतिहासा ❋ पुंडरीक नृप सुतल निवासा
गंधर्वी ललिता त्यहि तीरा ❋ क्रीड़तकरी नृपतित्यहिभीरा
मदनातुर ह्वै गान बिगारा ❋ दीन शाप निशिचरवपुधारा
पातिगतिलखिलज्जितबिलखानी ❋ किंकरोमिकोगच्छकठानी
यकदिन काननकीन पयाना ❋ विध्याशिखरमिले मुनिनाना
पूंछेते निज विपति सुनाई ❋ तिनकहकामदव्रत करुजाई
सुनिव्रतदानताहि करिदयऊ ❋ राक्षसत्वगत गन्धब भयऊ
चढ़िविमाननिजपुर पगुधारा ❋ सुनतकहतअघदहतअपारा

इति श्रीचैत्रशुक्लकामदामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ वैशाखे सित हरिबरत।
अबम्वहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंत्र बोलेहरषि ॥

नामवरूथिनियहिमुनिगायिनि ❋ सबसुखरामभक्तिवरदायनि
विप्र मुंचयक यह व्रत करेऊ ❋ जातजागरण हरिमगधरेऊ
बोला द्विजलौटत मोहिंखायो ❋ शपथखाय हरिमंदिर आयो
करि जागरणप्राततहँगयऊ ❋ व्रतप्रसादमृगपतितजिदयऊ
अन्त समय हरिपुरगा सोई ❋ कहत सुनत गोशतफलहोई

इति श्रीवैशाखकृष्णावरूथिनीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ वैशाखशुक्ल हरिव्रतकथा।

अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमंत्र बोलेहरषि।

मोहनि नाम काम फलदाई * विष्णु चरण सेवै चितलाई
षोड़शभांतिसहितअभिलाषै * करै प्रदक्षिण जय श्रुतिभाषै
विष्णुहि चारिअर्घ हरिकाहीं * रविहि सात चंद्रयक चाहीं
हरि ढिग झूठ विवाद न ठानै * गरभालै पादुका न आनै
अग्रे पृष्ठे उपदिशि वामा * करै न जपतप होमप्रणामा
यहि विधि द्वादश दोष बराई * हरिहि भजै सब पापनशाई
यहिपर यक इतिहासबखानों * कूर्मपुराणकेर तुम जानों

दो० श्रीरघुनाथ वशिष्ठते कह्यो स्वप्नके माहिं।
देखत हौं मैं दशमुखै भयवश सूतत नाहिं॥

कहौसोव्रतजेहिकरिअघजाहीं * सुनि वशिष्ठ बोले प्रभुपाहीं
रामराम तब धारण करई * कैसे कलुषी भवनिधि तरई
प्रश्नलोकहित किहेउकृपाकर * सित वैशाख रहो हरिवासर
सब दुख दोष देत करिहानी * सुनौ एक इतिहास पुरानी
सरस्वती तट सोमवतीपुर * बसैवैश्य धनपाल नामचुर
तासु तनय बड़पापी भयऊ * तस्करजानिकाढ़ितेहिदयऊ
धूर्त कर्मकरि दिवस बितावै * यत्र तत्रगहि पीटो जावै
नृपभयबहुरि बसा वन जाई * खगमृगतहँके वधकरि खाई
यकदिनजाह्नवी चलि न्हायो * कौंडिन्याश्रमलखिशिरनायो
महापतितमैं किमिअघ नासै * कहमुनिकरु मोहनी मुपासै
सुनिव्रतरहतदहतअघभयऊ * दिव्यदेह ह्वै हरिपुर गयऊ
जो यह कथा कहै वा गावै * सो व्रत अर्द्धकेर फल पावै

इति श्रीवैशाखशुक्लमोहनीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ ज्येष्ठकृष्ण हरिव्रत कथा।
अबमोहिंदेहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि॥

ज्येष्ठअसित व्रत अपरा नामा * दोषदलनिदायक मन कामा
यक इतिहास सुनौ श्रुति कहई * सत्यवती यक ब्राह्मणि रहई
हरि मिलनेहित त्यहि त्यहि पूछै * केहि लावे तजि आमद छूछै
लखि लालसा तासु जालच मुनि * बोले सत्यवती मोते सुनि
ज्येष्ठकृष्ण अपराव्रत रहऊ * मिलीसोइ पति जेहि तुम चहऊ
करन लागि व्रत सहित विधाना * द्विजन ज्यँवाइ देइ बहु दाना
तनु तजि अन्तकाल लहि जोई * भई आइ सत्यभामा सोई
कृष्ण कन्त ते पुण्य एक दिन * बूझेसि आपनि वही कही तिन
अस अपरा व्रत भूधृत गावै * पढ़त सुनत गोशत फल पावै

इति श्रीज्येष्ठकृष्णअपरामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ ज्येष्ठशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब मोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

यहि व्रत नाम निर्जला सेवै * हरिपट धेनु विप्र कहँ देवै
दुवादशी दिन पारन करई * सो नर यमयातना न भरई
वरण्यो व्यास भीमते याही * अन्नअशन नहिं व्रत दिन चाही
यहि तन सो चण्डाल समाना * मरे लहै दुर्गति दुख नाना
बोले भीम करिय कस ताता * वृषभ उदर व्रत रहा न जाता
तौ तुम एक निर्जला कीजै * बारो मासकेर फल लीजै
सुनि विधि करन वृकोदर लागे * जात भये हरिपुर तनु त्यागे
जो यह कथा सुनै वा गावै * गया पिण्ड दीन्हें फल पावै

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतचतुर्दशएकादशी माहात्म्य वर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि ।
वरणौं विविध पुराणकी पुनि इतिहास बखानि ॥

सो० कहशौनकशिरनाइ असितअषाढ़हरिव्रतकथा।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोलेहरषि॥

महापुनीत योगिनी नामा * यहि व्रतरहे होइसिधिकामा
यहिपर यकइतिहासबखानों * विधि वैवर्त्तकेर तुम जानों
अलकापुरी यक्षपति पाली * वटुकहेम रह तिनकरमाली
तस्यांगना मृगाक्षी नामा * प्रीत्यासक्त रहै वशकामा
शिवपूजन कुबेर नितजाहीं * यकदिनस्रकपहुँचायसिनाहीं
तबधनपतिनिजअनुगपठावा * रमतदेखि तहँ आयसुनावा
सुनि कुबेर बोले करि रोसा * सुरहेलन कृत देइ भरोसा
यहि अघ कुष्ठहोइँ अष्टादस * कहतै भयोगयो कानन तस
सहै कष्ट तब मन पछिताई * मार्कण्डेयलखिविपतिसुनाई
कह मुनि योगिन्यामुपवासै * कुरु जेहिपुण्यकुष्ठ तवनासै
सुनिव्रत करतभयो वपुनीका * कहतसुनतसुखप्रदसबहीका

इति श्रीआषाढ़कृष्णयोगिनीमाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कह शौनक शिरनाइ सितअषाढ़ हरि व्रत कथा।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोलेहरषि॥

सुरशयनी यहि नाम अनूपा * ज्यहिधरिहृदयतरियभवकूपा
मिथुनस्थे अबहरि हिसोवावै * तुलाराशि गत बहुरिजगावै
तस्यपुरः चतुराब्दकि मासा * करै नेम रहिबरत उपासा
मृदुवादी होवै गुड़ त्यागी * पुष्प तेल गन्धब सौभागी
कटुक कषाय तजै छविवंता * रविगतभयहरिसुमिरणसंता
रक्तकण्ठ तांबूल नेवारै * पदाभ्यांग बसवाहन द्वारै
महिंसापि नृप होय विशोका * पयदधि तजैजाय गोलोका
तजै, अन्न सो सुरपुर वासै * लौनते त्रयतनके अघनासै
हरिमन्दिर मार्जनी जो करई * दीपदान लेपन अनुसरई

काम क्रोध मद लोभ गँवावै * सो सायुज्यमुक्ति नर पावै
जेहितेहि भांति देइ जो दाना * सो प्राणी होवै धनवाना
नृत्यगान कृष्णालय करई * सो नर भक्तिलहै बरबरई
अम्बरीष पतनी पद्मावति * पुरहरही हरिमन्दिरगावति
दीनलगाय चून निज पानी * तेहिफलभई अवधकीरानी
करिहरिभक्ति गई प्रभुधामा * बहु पुंसनकर सारेउ कामा
कहतसुनततेहि प्रभुनिजजानै * इमि नारदीपुराण बखानै

इति श्रीआषाढ़शुक्लदेवशयनीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनक शिरनाइ श्रावणतम हरिव्रतकथा ।
अबमोहिं देहुसुनाइ सुनि सुमन्त्रबोले हरषि ॥

श्रावणकृष्ण कामिका नामा * सेवत दोउ लोक विश्रामा
पूजै विष्णु चरण चितलाई * तासुपुण्य कछु वरणिनजाई
गंगा गया गोदावरि पुष्कर * वाराणसि प्रयाग मज्जै नर
अन्न पटादि दान दे सोई * यहिव्रतसरिसतदपिनहिंहोई
पुण्य बढ़ावनि स्वर्ग निसेनी * यक इतिहास सुनोसुखदेनी
सुभग सुमन रुकमंगदबागा * आवै लेन सुरी सहरागा
यकदिन एक रहिगई भूमा * वृतन्ताककरि लाग्यो धूमा
सुनि नृप मालीते तहँ आवा * देहु पठाय स्वर्ग मोहिंभावा
केहिविधि तव सुकृतसरसाई * कामद व्रत दीजै यकराई
कह नृप यहां न जानै कोई * कीन अजान लयावो सोई
तबनृप नगर पिटाई डौंड़ी * सुनिआईयकबनिककिलौंड़ी
दीनदान व्रतलहि सुरनारी * चढ़िविमाननिजलोकपधारी
देखिप्रभावकरननृपलाग्यो * सुतत्रियप्रजनसहितअनुराग्यो
छलिमोहनीकठिनबरुयांचा * तदपितज्योंनहिंहरिव्रतसांचा
प्रणविलोकिहरिदर्शनदीन्हेउ * खलमोहनिहिथुकेलीकीन्हेउ

इमि ब्रह्माण्डपुराण बखानै * कहतसुनत अघनाशतमानै

इति श्रीश्रावणकृष्णकामिकामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ श्रावणसित हरिव्रत कथा ।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

श्रावणशुक्ल पुत्रदा नामा * लहैंपुत्र यहिकरि अभिरामा
यहिपर यक इतिहास भनीता * माहिषपुररह नृपमहिजीता
पुत्र हीन कछु रुचै न तेका * द्विजनबूझि वनगादिनएका
तहां मिले लोमश कालीना * पूंछे ते बोला ह्वै दीना
तनुलहि कुपथ न पग हमधारे * किहिअघ भयो न पुत्रहमारे
कहमुनि पूर्व बनिक तुमरहेऊ * धर्मवान यकदिनजलबहेऊ
तृषित सबच्छ पेतरहे गाई * पीनताहि तुम मारि भगाई
तेहिअघअंगजमिल्योनदीजै * अब पुत्रदा इकादशि कीजै
सोई श्रवण सुनत गृह आयो * कीन्ह्यो व्रत प्रतापसुतपायो
जो यह कथा सुनै या गावै * गंगा स्नान किये फल पावै

इति श्रीश्रावणशुक्लपुत्रदामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ भाद्रअसित हरिव्रतकथा ।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

अजिता नाम अस्यप्रद क्षेमा * हृषीकेश पूजे युत प्रेमा
यहिपर सुनु इक कथा पुरानी * नृप हरिचन्द्र रहे बड़दानी
विधिवश राज भ्रष्ट भे ताकी * सुततिय देहगई बिकिजाकी
दुर्व्रत जनमृत चलै प्रहारी * बोले लखिगोतम दुख भारी
अजिता बरत करौ हरिचन्दा * मिटैंसकल दुखहोइअनन्दा
सुनि महिपाल तहैंव्रतकीन्हा * सुततियराज्यबहुरिहरिदीन्हा
जो यह कथा सुनै वा गावै * दशगोदान दिहे फल पावै

इति श्रीभाद्रकृष्णअजितामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाइ भादवसित हरिव्रतकथा ।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

यहि हरि वासर पद्मानामा * सबदुखहरणिकरणिसुखधामा
यहिपर एक कहौं इतिहासा * मान्धातानृप अवधनिवासा
धर्मवान गोजीत अमानी * प्रजा अशंक बसै तहँजानी
तीनवर्ष जलमेघ न दीना * भये लोग सब सुखतेहीना
नृपहु दुखितह्वै कच्छ सिधावा * मिलिअंगिरहिसोकष्टसुनावा
कहमुनि यकवृषली तपु करई * तेहिअघमाहिजलछीटनपरई
करुहत ताहिआजजल बरसै * हिंसाकरब न बरुजग भरसै
तेहिते देहु धर्म उपदेशा * नभसित हरिव्रतकरौ नरेशा
भले नाथकहि कीन्हो आई * प्रजजन हित भैवृष्टि अघाई
सहसंस्थित सुतलह्यो नरेशा * कहतसुनततेहिमिटतकलेशा

इति श्रीभाद्रपदशुक्लपद्मामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनकशिरनाइ आश्विनकृष्णहरिव्रतकथा ।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोलेहरषि ॥

नाम इंदिरा यहि सुखदेनी * नरक निवारण स्वर्गनिसेनी
तापर एक कहौं इतिहासा * इन्द्रजीत नृप महिपरवासा
सवितातस्य अधोमुख रहेऊ * नारद आय भूपते कहेऊ
कहनृप किमिहोइहै निस्तारा * बरत इंदिरा रहो भुवारा
देहु ताहि फलकरिनृपदयऊ * त्यागिअधोमुखहरिपुरगयऊ
जो यह कथा सुनै वा गावै * नैमिषक्षेत्र अटे फलपावै

इति श्रीआश्विनकृष्णइन्दिरामाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनकशिरनाइ आश्विनसितहरिव्रतकथा।
अबमोहिं देहु सुनाइ सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

पापांकुशा नाम यहि जानी * अशुभ कर्मनाशिनिसुखदानी

सुनुइतिहासकृष्णजिमिकहेऊ ❋ चेतन नाम विप्र यक रहेऊ
विद्यावित गर्वित नहिं सूझै ❋ आपसमान न आनहिंबूझै

दो० विद्यावाद प्रमादधन शक्ति सुपरदुख हेत।
खलसुसाधु विपरीतकरि ज्ञानदान सुखदेत॥
विद्याविद्या हरण हित पढ़त होतखल ठूंट।
चह्यो निकासनमीनको घुसिआयो गृहऊंट॥

सो० यकदिन सोवतमाहिं कहेउ मनुषयकनगरमें।
भूपरहेउहै नाहिं चलु तहँ मिलिहै राजतोहिं॥
चल्योहर्षिवशमोह मग नदलखि लाग्योहलन।
मध्यमगर सहकोह चाबत जाग्योसहितदुख॥

करि विचारकुम्भजपहँ गयऊ ❋ तिनउपदेश यथोचितदयऊ
पढ़े सुने काफल सुत येही ❋ करिविवेक हरिपदचित देही

दो० दशस्यन्दन नन्दनचरण कमलअमलअनुराग।
जोनबढ़यो वादहि पढ़यो मढ़यो मोहमददाग॥

भवनदकाल मगरतुम देखा ❋ मध्यबयसमहँ खाब विशेखा
पापसंकुला करि अघजारो ❋ हरिपदभजि परलोकसुधारो
कीनआइ व्रत बुद्धि प्रकासी ❋ सुमिरनकरिभा हरिपुरवासी
जो यहकथा सुनै या गावै ❋ व्रतफल चतुरअंश सोइपावै

इति श्रीआश्विनशुक्लपापांकुशामाहात्म्यंसम्पूर्णम्॥

सो० कहशौनकशिरनाइ कार्त्तिककृष्णहरिव्रतकथा।
अबमोहिं देहुसुनाइ सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

रमणी नाम रहै जो कोई ❋ सो नर इन्द्रसमीपी होई
यहि पर एक सुनै आख्याने ❋ नृप मुचुकुंद भले व्रत ठानै
सुतातस्य शशिभागा नामा ❋ शोभनपति आवा पितुधामा
क्षुधितअशननिजनारितेमांगा ❋ सुनतकहेउपतितेशशिभागा

आज अहै हरिवासर नाथा * पशु पत्ती कोइलहै न पाथा
होत हंसगति कौन अकाजू * बड़े भाग मृत्यु पाई आजू
भावीवश त्यागे त्यहि प्राना * हरिपुरगाचढ़िसुभगविमाना
बहुत कहा कहिये विस्तारी * व्रत प्रभाव सबपुरी उधारी
जो यह कथा सुनै वा गावै * अन्नदान दीन्हे फल पावै

इति श्रीकार्त्तिककृष्णरमणीमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनकशिरनाइ कार्त्तिकसितहरिव्रतकथा ।
अबमोहिं देहुसुनाइ सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

परबोधिनी नाम यह नीकी * दायक सकल कामनाजीकी
यहिव्रतसरिसअपरव्रतनाहीं * अघतमजिमिविलोकिरविजाहीं
जनकनगर एक रूपारहेऊ * हरि निशिजागिमित्रमगचहेऊ
तेहि प्रसाद मनभई गलानी * तजिसिदेहभजिशारँगपानी
वितदत्वाखिल भइ सुरबाला * नृत्यगान व्रतकरै रसाला
सहित सनेह जपै हरिनामा * ब्रह्मचर्य्यअस्थितहरिकामा
व्रतप्रसाद सोइ गोप कुमारी * भई अधिकगिरिधरै पियारी
वृन्दावन विहार जग जाना * इत्थंवदति स्कन्दपुराना
कार्त्तिकमें सुनि सुमन चढ़ावै * हरिहितासुफलवरणिनजावै
देवोत्थानी हरिव्रत गीता * सुनतकहतफललहतपुनीता
ये चौबीसौ नाम बखाने * एकादशी के जो मम जाने
विधिवतकरिहरिसुमिरणकरई * गोपदइव भवसागर तरई

गी०छं० भवतरै गोपद सरिस जो शुचि नेमकरि व्रतठानई ।
पावै बरतषटअंशफल जो कथा सुनै बखानई ॥
कलिकाल पापपयोधिजपतप योगमखआश्रमतजे ।
रघुनाथदास प्रतीति ते सतसंग करि रामै भजै ॥

दो० रामभजन बिन कर्म्म जो सोसब तुच्छ लखात ।

यथा सुन्न दश गुन्न बिन अंक गने नहिंजात ॥
एकादशी वरदानि तोहिं मातुयांचि सबकोइ ।
लह्यो काम फल देहु मोहिं रामचरण रतिहोइ ॥

इति विश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागररघुनाथदासरामसनेही कृतचौबीसोएकादशीमाहात्म्यवर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कार्त्तिकमाहातम कथा कहौं इतिहास बखानि ॥

पुनि शौनक बोले मृदुबानी * केहिविधिभईतुलसिकाज्ञानी
विष्णु शीशधारी केहि हेता * यहौकहौ प्रभु कृपानिकेता
कह्यो सूत सुनिये ऋषिराई * विष्णुपुराण कहत इमिगाई
तुलसी नाम रहै यक नारी * तेहिहरिहेत कीन्ह तप भारी
ह्वै प्रसन्न आये भगवाना * बोले सुमुखिमांगु वरदाना
देखिरूप बोली करजोरे * पतिह्वै सदा रहौ उपमोरे
सुनिलक्ष्मी तापर करि कोहू * दीन्हों शाप विटप जड़होहू
कमलहि शापदीन तेहियेहा * बसहु जाइ तुमनीचन गेहा
सुनत वचन तुलसीसे कहेउ * विटपहोउ तुममममप्रिय रहेउ
मैं धरि शालग्राम शरीरा * रहिहौं सुमुखि सदातवतीरा
प्रथमगण्डकीकामिनियकचुर * तपकरिमांगिसिबसीसदाउर
मैं कह सरितहोउ यहि भोरे * शिलारूप बसिहौं उरतोरे
एक कल्प इत्थंश्रुति गाई * दूसरिविधि अबसुनौ सुनाई

गी.छं. इकबारशिवमगजात सुमिरत नामतहँ वासवरहेउ ।
लखिकहेउ योगीहोहुठाढ़े चितै भवमारग गहेउ ॥
तब इन्द्रदर्पितधाइ आइ रिसाइ असबोलतभयउ ।
मानेकहा नहिं मोरतैं शठ हेरिहमतन चलिदयउ ॥
सुनि वक्रवचन महेश क्रोधित नयन तीसरते तहां ।

प्रकटीअगिनिकीज्वालतीक्ष्णजरनहरिलाग्योमहां॥
ह्वै विकलवासव गिरेउचरणन त्राहित्राहिपुकारेहू।
लखिदीनशम्भु कृपालुपावक तोयनिधिमहँ डारेहू॥
त्यहिबृहदतेतहँभयोबालक सिन्धुसुतकरि पालेऊ।
विधिआइ कीन्ह्यो कर्मनामहुँ धरिजलंधरचालेऊ॥
गत कालकछु भा तरुण वृन्दानाम नारी पायऊ।
सोकालनेमिकि सुतामनवच कर्मपतिपद ध्यायऊ॥

दो० भयोजलंधर प्रबलअति जीतिजगतवशकीन्ह।
निशिचरपतिह्वै निशिचरन वासजहांतहँदीन्ह॥

यकदिन सभा बैठ रहै सोई ❋ सकलसमाज आपनी जोई
राहु कबन्ध देखि असकहई ❋ शीशतोरि केहिकाटा अहई

रो.छं. सुनो नाथ इक समय देवदानव सब आये।
मथ्यो सिंधु गिरिडारि रत्न चौदा तहँ पाये॥
कामधेनु गजअश्व कल्पतरु विषशशिजानो।
धनुष धन्वन्तर कम्बुरमारम्भा पहिंचानो॥
कौस्तुभमणि वारुणी सुधा ये चौदा कहेऊ।
दिये बांटि हरि सुरनमांस मधु अमृत भयऊ॥
तेहि हित श्रीभगवान मोहनी रूप बनायो।
निकटआय सुर असुर उभय पांतिनबैठायो॥
बाँटनलागे आपु सुरा दैत्यन कहँ दीन्हों।
देवनि पायो पियुष तहां उठि मोहूं पीन्हों॥
रविशशिदिहिनिबताइ विष्णुकाट्योशिरमोरा।
देवासुर संग्राम भयो सागर तट घोरा॥
ऐरावत सुरधेनु कल्पतरु रम्भाचारी।
लैगे वासवस्वर्ग सम्पदा सकल तुम्हारी॥

सुनि निश्चरपति दूत सूतढिग तुरतपठायो ।
जाइकहा चरदेहु वस्तु जो दधिकी लायो ॥
दूत वचन सुनि शक्रकह्यो जा निजपति तीरा ।
लेई आइ अब वस्तु होइ जो अति बलवीरा ॥
करिमहि मण्डल राजजीत नरभा बरबण्डा ।
अब आवैचढ़ि समर करौंतेहि तन शतखण्डा ॥
दूत जलन्धर पास आइ सब हाल सुनावा ।
यातुधान सुनि कोपि कटक लैआतुर धावा ॥
अमरावती गेरेरि इंद्रबहु कीन लराई ।
मरै न मारे असुर सुरनयुत गयो पराई ॥
तबहरिसम्मुखजाइ विविधविधि विनयसुनाई ।
दुखित जानि भगवान दनुजते कीन लड़ाई ॥
भव्यतीत कलुकाल समरलखि रीझि मुरारी ।
कह्यो जलन्धर मांगुहोइ रुचि जौन तुम्हारी ॥
जो मोपर परसन्न नाथ दीजै वर येहा ।
कमलाके संयुक्त बसौ तुम हमरे गेहा ॥
एवमस्तुकहि कृष्णकीन तेहि गृहा निवासू ।
शोभा तिहुँपुर केरि आइतहँ कीन प्रकासू ॥
तब बासव ह्वैविकलगये चतुरानन तीरा ।
कह्यो सकल दुखरोइ सुनत विधिदीन्हों धीरा ॥
नारद ते तब कह्यो जलन्धरबली अपारा ।
मरण तासु शिव हाथ अपर ते मरी न मारा ॥
जोशंकर ते बधै करै तौ सुरसुख लहई ।
सुनि नारद पितुवचन दनुज जहँ आये तहई ॥
लखि मुनि दीन अशीश नाइ शिरनृप बैठारा ।

बोलो बीणाधरण आजु कितते पगुधारा ॥

सुनि नारद बोले निजकाजू * हम कैलास गये रहैं आजू
तहां करत त्रिपुरारि विहारा * शीश जटा उर नरशिरहारा
नग्न अमंगल रूप विशेखी * तहाँ नारि यक सुन्दर देखी
इंदु वदनि मृगनयनि विराजै * रतिशतकोटिदेखिछविलाजै
जेहिके घर ऐसी त्रियहोई * तेहि समान जगमें नहिं कोई
सुनि नारदके वचन सुरारी * लीन राहुका तुरत हँकारी
बोला शठ शंकर पहँ जाऊ * कह्यो देहुत्रिय जो भलचहऊ
क्षिप्रराहु शंकर पहँ आवा * निजपतिकर संदेश सुनावा
सुनिमहेश कियो क्रोधकराला * कीरतिमुखप्रकटेउ ततकाला
गदापाणि दृग अतिभयकारी * डरपि राहुबहु विनयउचारी
सुनि पशुपति तब दीनबचाई * आवा जहां निशाचरराई
सब वृत्तान्त तहांकर कहेउ * सुनिसागरसुतउरअतिदहेउ

गी० छं०

उरदह्यो तुरतै सयन संग अपारलै शठ धायहू ।
बहुहोतअशकुनगुनतनाहिंसोशम्भुसम्मुखआयहू ॥
षटवदन आदि गणेश भूतपिशाच भिरे प्रचारिकै ।
द्रुम अस्त्रशस्त्र चलाइ एकहि एक डारत मारिकै ॥
कोउपरेकहरतघाववशकोइशीशबिनजहँतहँफिरैं ।
कोउमारुमारुपुकारकोउ यकबाणलागतमहिगिरैं ॥
यहिभांतिकीन्ह्योंयुद्धशिवशशिमासतबहहरयोहियो ।
ह्वैश्रमित गिरिजानाथ हरिको ध्यानसमरैमेंकियो ॥

नाथहरौ मम संकटभारी * तुरतै प्रगटे तहैं मुरारी
बोले हरितुम सुनो पुरारी * पतिव्रता है याकी नारी
तेहिप्रभावखलजीति न जाई * करहु कि काहे न कोटि उपाई
ताते यहि आड़ौ कछु बेरा * मैं व्रतभंग करौं तेहि केरा

असकहि यती स्वरूपबनायो ❋ गुहा निकट वृन्दाके आयो
उदित भूमितरु द्वारे पाई ❋ बैठे आसन रुचिर बनाई
तेहिरजनी रजनिशिचर नारी ❋ देख्यो स्वप्न भयंकर भारी
मनो जलंधर खर आरूढ़ा ❋ मुंडित शिर गा दक्षिण मूढ़ा
चौंकिपरीव्याकुलअतिशोचा ❋ प्रातभये गृहकाज न रोचा
क्षणद्वारे क्षण भीतर जाई ❋ यती विलोकि विष्णुपहँ आई
शीशनाइ निज स्वप्न सुनावा ❋ कहहरिसुरहित अवसर पावा
सुनुवृन्दा पुराण अस कहई ❋ असस्वप्ना दुखदायक अहई
तवपति समर शंभुकर आजू ❋ मरी अनन्दकरी सुरराजू
तेहिक्षण मायाकर धर शीशा ❋ गिराआइ आगे तेहि दीशा
विविधाविलापकिहिसिपतिचीन्हा ❋ जरिहौंसंगचितारचिलीन्हा
कह हरिवचन मानुयक मोरा ❋ तौ अबहीं पति जीवै तोरा
रुंड मुंड धरि वसन ओढ़ाई ❋ सुमिरौंनिजसतघरी अढ़ाई
यहउपायकरिसुनितेहिकिहेऊ ❋ बाणअर्द्धघरि दृगपटदिहेऊ
उठ्यो जलंधर माया केरा ❋ वृन्दहि तब सुखभयो घनेरा
मायाधीश चरण शिरनाई ❋ गईतुरत निज मिलै लवाई
काढ़िअशन कछु ताहिखवाई ❋ पौढ़े दोउ परयंक बिछाई
कीनविहार छूट व्रत तासू ❋ भयो तेजहत दनुज उदासू
तब शिवसमर जलंधरमार्यो ❋ शिरभुजजहँवृन्दातहँ डार्यो
माया का पतिगयो बिलाई ❋ मर्मजानितहँ हरि ढिगआई

घरीछंद ॥ विष्णुचीर । देखिधीर ॥ क्रोधकीसि । शाप दीसि ॥ बरवैछंद ॥ छल्योमोहिं तुमधरिकै यतीस्वरूप । हो उमनुजअबजाय चराचरभूप ॥ तहां मोरपतिहोईप्रबलसुरा रि । यहीरूपधरिहरिहै नारितुम्हारि ॥

दो० असकहि चितासवांरि वर बैठि जरी पतिसंग ।

तासु भस्म लै रमापति लपटाई निजअंग ॥

सो० इहांशक्र सुखपाइ सुरगण मुनिदिग्पाल मिलि। उमानाथ पहँ आइ लागे सब स्तुति करन ॥

तो.छं. प्रणमामिभवंभवभयशमनं। करुणामृतसिन्धुकलिं दमनं ॥ निरपुण्यगुणाश्रमकंकरणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं ॥ अविकल्पकलानिधिवेदविभुं। सर्वज्ञसदापरमीश प्रभुं ॥ चिदकाशकनित्यनिरावरणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं। निरवद्यनिराश्रयसावपुषं। अबलाखँडपारअजाअदुखं। सत शील गुणाकरकञ्जरणं। जयश्री शिवसंकटके हरणं ॥ अतुलित बलवीर्यविरक्तवरं। गुणज्ञान गिरागोतीतपरं ॥ मदमोहनिशा दरणंतरणं। जयश्री शिवसंकटके हरणं॥ हरिकुन्दकपूरसमासुतणं। शवभस्म विभूषित भूरिगणं ॥ छविकेन्द्रप कोटि दिवाकरणं। जयश्री शिव संकटकेहरणं ॥ मृदुमौलि जटामधिगंग बसै। वरबालत्तपाकर भाललसै। त्रय अम्बक शूलकरं धरणं। जयश्री शिवसंकट के हरणं॥ उरमुण्डस्त्रकाम्बर व्यालचर्मं। श्रुति कुण्डललोलकपोलधमं ॥ शुकघ्राणशरीर न मिन्दुब्रणं। जयश्रीशिवसंकटकेहरणं॥ डमरूकरकण्ठभुजंगछजे। चरणाम्बुजचिन्ततदुःखभजे॥ भवआरणतारण कंकरणं। जय श्रीशिवसंकटके हरणं॥ सुरसन्तकबन्धज गोपलनं। भख भाववनागहरिंदलनं॥ भुज दण्ड प्रचण्डत्तयंकरणं। जय श्रीशिव संकटकेहरणं॥ वृषभव्वरवाहन भूतिमिशं। गिरि नन्दिनि राजितवामदिशं॥ प्रणपालक घालक दुष्टजनं। जयश्रीशिव संकटकेहरणं ॥ नहिंध्यावतजीव तुम्हैंजबलौं। दुखपावत जावतहैं तब लौं॥ जगऔढर दानिउमारमणं।

जय श्री शिव संकटके हरणं ॥ रघुनाथकहै सुनिक्रोधगयो । तुरतै गौरीश प्रसन्नभयो ॥ मिदरुद्र एकादशजोपि पढ़ै । दुखदैन्यनशैसुखभूरिबढ़ै ॥

यहिविधिविनयकीन्हअसुरारी ❋ तब तिनते बोले त्रिपुरारी
सुनहुसकल सुरवचन हमारा ❋ विष्णुकृपा मैं निशिचरमारा
चलौचली अब तिनके पासा ❋ आयेचलिजहँ रमानिवासा
अमरण यतीरूप प्रभु देखी ❋ पृथक २ करि विनयविशेखी
रहे अधोमुख तब भगवाना ❋ मनहिं माहिं देवनसनमाना
हरिगति देखि सुरन दुखपायो ❋ तब महेशविधि युक्तिउपायो
बोलि उमा पद्मा ब्रह्मानी ❋ कह्यो प्रसन्न करहुहरिजानी

सो० प्रभु अनुशासनमानि गईं तिहूँ भगवान पहँ ।
लै आरतिनिजपानि कीन्होहरिगुणगान कछु ॥

पुनि भारती भस्मजल लयऊ ❋ धस्यो महीतरु धात्री भयऊ
देखि भवानी वैसे ठाना ❋ यती बेल उपजी जगजाना
कीन इन्दिरा सोइ उपावा ❋ अजगन्धा तुलसी तरुपावा
शीतल छाहँ सुगन्धलही जब ❋ ह्वै प्रसन्न हरिखोले दगतब
वृन्दातनु तुलसीभै आई ❋ हर्षिविष्णु निज शीश चढ़ाई
अधमनिशाचरिपतिव्रतकीन्हा ❋ हरिछलितेहिउत्तमपददीन्हा
देखि देव छविहने निशाना ❋ तुलसिहिअतुलपूज्यअनुमाना
विष्णुप्रियाकलिकलुषनिकन्दनि ❋ जयजयजय तुलसी जगवन्दनि
तब प्रभु सब देवनते कहेऊ ❋ परमप्रीति वृन्दावश भयऊ
तेहि तनु पाय तुलसिकररूपा ❋ गयो विरह सुख भयोअनूपा
लच्मीवास हृदय मम अहई ❋ तुलसी सदा शीशपर रहई
जो मनक्रमयहि सेवनकरिहैं ❋ सो कृतांतपुर पांव न धरिहैं
दलकरप्रीतिजोममशिरराखी ❋ तुलसीमिश्रित भोजनचाखी

दीपदान देई जो कोई * कोटि यज्ञफल तिनका होई
कण्ठलग्न जो तुलसीधारी * सो सबकाल शुद्ध बिनवारी
तस्यदरशभे जानहु मेरो * करौं सदा हौं जनउर डेरो
तुलसी धारिकरी शुभकर्मा * बढ़ीसोअधिककोटिगुणधर्मा
नर वा नारि जो ममव्रतधारी * सोतुलसीस्रककरिअधिकारी
तुलसीसदा नाम मम ध्यावै * तासु पुण्य कहि कापै जावै

दो० तुलसी धारकमात्र जो होई भक्ति विहीन ।
सोऊ पूज्यहै विप्र कहँ और कहा नरदीन ॥

कुं० तिलकदाम धरि देखिकै करी जो निन्दा तासु ।
सो मलेच्छ जाताअसक त्यागी संगति तासु ॥
त्यागी संगति तासु दोष नत लागी भारी ।
ज्यों हरहटके संग जाइ कपिला गो मारी ॥
मारीगोजिमिजाततिमियमगणदेहैंदुखदिलक।
प्रमुदितह्वैजोसुनैसोउजान्योदुष्टनकोतिलक॥

दो० तुलसी स्रक धारे विना करी जो भोजन अन्न ।
परम अपावनि पाथसो लह्यो न जनु नरतन्न ॥
जेहि आदर मैं देउँ जग तेहिनिदरै असकौन ।
भूपवचन परिहरि प्रजा बसै कि सो सुखभौन ॥
श्रीमुखबानी शीशधरि गे सब निज निजथान ।
कार्तिकमहातमकी कथा यह मैं कीन बखान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतश्रीतुलसीमाहात्म्यवर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणों भारतकी कथा कछुक वृतांत बखानि ॥

सुनि शौनक बोले मृदुबानी * राययुधिष्ठिर मख जब ठानी

तामें अचरज भयो जु कौनू * मोकहँ नाथ सुनावो तौनू

क.हं.छं. हँसि कह्यो सूत * जब धर्म पूत ॥
कृतकरण लाग * दै बलि विभाग ॥

तबसबमिलिबोलेअसिबानी * पूरणमखभयकेहिविधिजानी
घंट एक तब कृष्ण बँधायो * भोजनकहँ द्विजविपुलबोलायो
जेंइ विप्र खरिका जब लयऊ * घंट बिषे कछु शब्द न भयऊ
बोले कृष्ण प्रणत हितकारी * यज्ञ हीनभै भूप तुम्हारी
ताहीसमय नकुल इकआवा * लोट्योतहँजहँद्विजनअँचावा
भयो न सर्व वपुष हरितासू * तब तो मनकरि लीनउदासू
बहुरि पुकारि सभामहँ कहई * मिथ्या यज्ञ भूपतव अहई
विप्र एक सेतुवा मखकीन्ही * तेहिसमअपरयज्ञनहिंचीन्ही

दो० सुनतसभाके लोग सब नकुलैनिकट बोलाय ।
पूछ्योद्विजमखकिमिकरी सो अबकहौबुझाय ॥

तनतव अचरजरूप लखाई * सुनि न्योरा बोला हरषाई
सेतुवा यज्ञ भई जेहिरीती * कहौंसुनौ नृपसुनिकरिप्रीती
द्विज एक कुरुक्षेत्र महँ रहई * नामशिलोचनतेहिसबकहई
पूत पतोहू अपना नारी * चरिहुँनका हरिभक्ति पियारी
शीलाकी वृतिकरि तन पोषै * प्रथमै साधु विप्रकहँ तोषै
यहिविधि करतगये बहुकाला * एकबार तहँ पर्यो दुकाला
पशुपक्षी सब भये दुखारी * लंघन करैं निकर नर नारी
कठिन विप्रहूको अति जावै * बीनन जाइ अन्न नहिंपावै
चुनिचुनिधरतमासयुगगयऊ * तीनपाव तब इकठे भयऊ
सोइ भुजाइ सेतुवा बनवायो * तामें चारिउ भाग लगायो
धर्म वैष्णव रूप बनाई * आये तुरत जहां द्विजराई
देखिशिलोचन पद शिरनायो * आदर करि आसन बैठायो

चरण धोय सेतुवाधरे आगे ❋ हितते धर्म खान तबलागे
आपन भाग जेइँजब लीन्हा ❋क्षुधानमिटीद्विजहुँनिजदीन्हा
सोऊपाय पर तृपति न भयऊ ❋तबद्विजशीशनाइनिजलयऊ
चतुरनारिपतिकी गति जानी ❋ बोली वचन धर्म नयसानी
हे पति भाग मोर लै दीजै ❋ क्षुधित न जाइबातसो कीजै

दो० सांची प्रीति पिछानिकै सोऊभाग द्विजदीन ।
भयो न पूरणसन्त लखि बोला पुत्र प्रवीन ॥

रो.छं. अहोपिताअबभागमोरलैसन्तैदेहू । करहुपरणयह पूरजाइचहतनधनगेहू ॥ सुतयद्यपि तुमबड़ेतदपि मोहिंपालनयोगू । भयोंवृद्धमैंतुम्हैंअबैकरनासुखभोगू ॥ताते पोषहुदेहुजियौबहुवर्षलगेजेहि । धर्म विना जो जियेपिताजग मृतकजानितेहि ॥ सधैधर्मतनगयेताहिजीवतपहिचानो । अ सकहिदीन्होंभागभक्तखायेनअघानो ॥ पुत्रवधूजियजानिदी ननिजभागमगनहोइ। भयोतृप्ततबसंतवचनबोल्योऐसेसोइ॥ हेद्विजमैंहौंधर्मलेनआयोतवअंता । देखिगयोहियहारिनहीं कोउतुमसमसंता ॥ अबताजिकैमृतलोकबसोचलिहरिपुरभा ई । घटीनतुम्हरीपुण्यऔरदिनादिनअधिकाई ॥ ताहीसमय विमानदेवगणतहँलैआये । जयजयकहिसुरसुमनसुमनद्वि जपरवरषाये ॥ लीन्होंचहुँनचढ़ायजायहरिपुरमहँराख्यो । दे ख्योधर्मप्रतापकिहेऐसाफलचाख्यो ॥ जितअँचवारहैअति थितहांमैंनिकस्योंधाई। भयोंअर्द्धतनुस्वर्णसर्वजलरहानराई॥

गी.छं. हमरी उमिरिमहँ और दूसरि यज्ञवैसीनाभई ।
जहँहौंलह्योंफलअक्षतआधी देहहरिकीह्वैगई ॥
तबते फिरैं बहु तीर्थ यज्ञन सर्व काहूना कियो ।
इहनौयहीउरधारिलोभ्यौमेटिनहिंखोटपनदियो॥

दो० सुनि न्योराके वचनन्नृप शोच कीन्ह मनमाहिं ।
पूछिनि प्रभुते यज्ञयह पूरण भय कत नाहिं ॥

सुनत कृष्ण बोले हरषाई * यहौ भेद मैं कहौं बुझाई
यहिसमाजवैष्णवनाहिंआयो * ऋषिसमूहमिलिजहँतहँखायो
जो तुम कह्यो भक्त ये नाहीं * हैं परिजातगर्भ इन माहीं
कुलविद्या महत्त्व छवि ज्वानी * पांच कांट ये भक्त के जानी
इनते भक्ति न नेरे आवत * अतिसुकुमारि देखिडरपावत
तेहिते निरअभिमान जो होई * पूरण चहो जेंवावो सोई
ऐसे भक्त कहां हम पाई * तवपुर हों तौ देहु बताई
बालमीकि श्वपचा बड़साधू * लावहु जाइसहितअहलाधू
सुनिप्रभु वचन युधिष्ठिरधाये * करि सन्मान भवन लैआये
परसे अशन द्रौपदी नाना * सो सब भक्त एकमहँ साना
पंचाली लखि कृत अनुमानै * सूपच रस स्वादै का जानै
तेहि जेंवत पर घण्टा बाजा * एकैबार खुशी भा राजा
वासुदेव मन विस्मय आवा * बारकबार शब्दसुनिपावा
ग्रास ग्रासपर चहिये बाजा * अस विचारिबोले यदुराजा
सभालोग सब सत्यहिभाख्यो * यहिअवसरदुराव जनिराख्यो
चोभकीन्ह केहि हृदय विशेखी * बड़िमान्यता भक्तके देखी
निज उर बात द्रौपदी कहेऊ * सुनिहरिउचहुदोषबड़गहेऊ
चलदल द्रोन पुरीषते होई * सुरनर मुनि पूजत सबकोई
तुलसी स्वच्छ चहै तहँ जामै * तिमिममजनपावनसब ठामै
बरत मांझ हरिवासर अहई * नदीमांझसुरसरिश्रुतिकहई
देहमांझ जिमि रमा निवासा * वरणमांझ तिमि मेरे दासा
अच्युतकुलनिजजन्मनिरीचा * मातृयोनि जनुलीन परीचा
ताते ऐसी कबहुँ न कीजै * चलो भक्ति ते पूछे लीजै

सबमिलिआइकहीअसिबानी ❋ डारेउ क्यों एकहिमहँसानी
बोले भक्त भोग भगवाना ❋ लागिगयो सबभयो समाना
पावत परत स्वाद अनुमानी ❋ यहिते मैं सबडारे सानी
सुनिजन वचन हर्ष उरछयऊ ❋ भक्तजेइँ जब अँचवतभयऊ
नकुल जाय परसाद सो पावा ❋ सकल शरीर स्वर्णकर भावा
सकलसमाज देखिअसकहई ❋ अमितप्रभावभक्तिकरअहई
द्वादशकोटि रहे द्विज भूरी ❋ श्वपच भक्त ते भै मखपूरी
बहु मुनिथे पम्पासर कच्छा ❋ शबरी पदरजतेभा स्वच्छा
कुंभज व्यासआदि मुनिनाना ❋ हरिभजिकोनहिंभयोमहाना
तब सुजातरिपु पूछे लीन्हा ❋ केहिगुणइनतुमकहँवशकीन्हा
सुनहु धर्मनंदन करिनेहा ❋ मोहिंजनसमनहिंप्रियनिजदेहा
तवपुर परमभक्त यह त्नेमा ❋ सुनहु तासु वरणों जप नेमा

गी॰छं॰ जपनेम संयमकरहिं ध्यान अमानसदारहावहीं ।
समशीलसतसन्तोष दयाविचारि क्षमागहावहीं ॥
छलहीन इन्द्रीजीत उर वैराग मद मोहेतजै ।
गतकामक्रोधरुलोभभयमोहिंछोड़िआनैनहिंभजै ॥

दो॰ ममगुणगावतपुलकितनमभजनसोंअतिप्रीति ।
तेहिते मैं यहि वशरहत अभ्रासुगकी रीति ॥
यहि प्रकार रघुनाथ हरि भाष्यो भक्त प्रभाव ।
सुनत युधिष्ठिर के भयो तब भक्तन में भाव ॥

सो॰ पुनि बोले करजोरि वर्णाश्रम के धर्म प्रभु ।
सुननेकी रुचिमोरि भक्तिसहित सो वरणिये ॥

बीरछं॰ सुनिप्रश्न । वदकृश्न ॥ द्विजधर्म । करमर्म ॥

दो॰ सन्ध्या मज्जन होमजप श्रुति पठनार्च्चन देव ।
क्षमातोष द्विज धर्म यह अभ्यागतकी सेव ॥

क्षमातेज बलअचलकलि अतिउदार द्विजदास ।
ये गुण क्षत्री केर फुर उर मेरो विश्वास ॥
आस्तिक बुद्धि विनीत व्रत दानोद्यम आरम्भ ।
ये लक्षण वर वैश्यके विप्रभक्त निरदम्भ ॥
तिहूँ वरणकी सेव करि जो पावै सो लेइ ।
सत सन्तोषी कपटबिन शूद्र धर्म है येइ ॥
मिथ्यावाद अशौचअरि नास्तिककुटिलकठोर ।
ये लक्षण नर नीच के कामी क्रोधी चोर ॥
सत्य क्षमा परस्वार्थ रत गदमद मार कुकर्म ।
तृष्णा बिन चहुँ वरणके ये साधारण धर्म ॥
अपने अपने धर्म करि अन्त अमरपुर जाइ ।
वरण भ्रष्ट भोगैनरक अबसुनु आश्रमराइ ॥
ब्राह्मणक्षत्री वैश्यइन तिनहुनकी विधि एक ।
गर्भाधानादिक सकल संस्कार कर नेक ॥
जनौ भये गुरु पास रहि पढ़ै वेद पदसेइ ।
दंड कमण्डलु मृगचरम मालमेखला लेइ ॥
माल मेखला लेइ केशनख बिन्दु न त्यागै ।
सन्ध्योपासन शौच काल तीनों अनुरागै ॥
रागैनहिं जगमाहिंलघु अशनकरैदृढ़आसनौ ।
ब्रह्मचर्य्यके धर्मये मम सममानै गुरुजनौ ॥
ब्रह्मलोक जो चहै तौ रहै यही पथ माहिं ।
कामी कामिनि केर सँग भूलेहु ठानैं नाहिं ॥
भूलेहु ठानैं नाहिं चहै जो होन सकामा ।
तौ श्रुतिपढ़घर आयकरै युवती अरुधामा ॥
धाममांझजप दानमख करतरहै श्रुतिधर्म ।

कुं०

यज्ञ करावन दतग्रहण वेद पढ़ावैं ब्रह्म॥
पर ये तीनों आइइमि जिमि पावकको नीर।
ब्रह्मतेज नहिं रहतहै तेहि त्यागत मतिधीर॥
तेहि त्यागतमतिधीर शिलोकरितननिरबाहै।
मम सुमिरण मम ध्यान अन्त मेरो पदलाहै॥
लाहै क्षत्री यह करै पालन सबकोबरि।
रण सम्मुख मरिजाय नहिं घरघर उपरि॥
गृह वासी को धर्म तिन करै पांचमखमेव।
प्रथम पाठकरिऋषिजजप बहुरिहोमकरिदेव॥
बहुरिहोमकरिदेव भूतबलि श्राद्धते पीतर।
अन्ननीर ते अतिथि कहां शत्रूकहँ मीतर॥
मित्रमानिसबकाहु समुझि काहुइ न दुखावै।
मिथ्याजानै जगत कुटुँब पंथी ठहरावै॥
मिले न मुदगत शोच रहै पाहुन समतासी।
करै सदा मम भजन तरै सो बसि गृहवासी॥
जब जाको विपदापरै वैश्यवृत्तिसो लेइ।
जब मिटिजावै आपदा तब आपनि गहिलेइ॥
तब आपनि गहिलेइ एकसुत भेव न जानै।
चहौ रहै घरमाहिं मुक्ति अस गेही पावै॥
पावै सोइ तमद्वार होय जो जगआसक्ता।
मैं मैं करि कुलसजै भजै नहिं मेरो भक्ता॥
भक्ताके गुणनाहिं आहिं उरखल लक्षणसब।
अन्तसमय पछितात जात किरतान्त तीर जब॥
यहिविधिवरषपचासरहि तब जावै वनमाहिं।
ऋतुऋतुको तपकरैतहँ कचनखनाखै नाहिं॥

कचनखनाखै नाहिं निरस ह्वै भोग बिसारै।
कन्दमूल फलखाइ पोष प्राणामय धारै॥
धारैबलकलवसनरसनहितआवैऋधिसिधि।
छुवै न वानप्रस्थ केर लक्षण है यहि विधि॥
बनवसि होइ पवित्रमन तब लेवे संन्यास।
दण्ड कमण्डलु धारिकै करै इकांत निवास॥
करै इकांत निवास क्षुधा हित पुरमें आवै।
द्विजघर चुटकी सातमांगि सरिसरतटजावै॥
जाइकरै तहँ पाक प्रथम कछु भाग निकारै।
की देवै लखि पशुहि कितौ त्यहि जलमाडारै॥
डारैपगमगदेखि करै मम सुमिरण शुचितन।
यह लक्षण संन्यास नहीं तौ भेषबहतबन॥

दो० परम धर्म संन्यास करि लहै परमपद हंस।
पर दशविधि के विप्रलखि लेइ तीनकरअंस॥

कुं० तत्त्वज्ञान जबहोत तब छूटि जात सब मान।
यदपिहृदय अतिबुधितदपि बरतैबालसमान॥
बरतै बाल समान ध्यान मेरो मन माहीं।
क्षुधातृषा तपशीत तिन्हें कछु ब्यापै नाहीं॥
नहिं मदमाया मोह भय निरंकार दृढ़मत्त्व।
जीवत मृतक समान यह परमहंस करतत्त्व॥

दो० परपददायक धर्म यह परमहंस पद श्रेष्ट।
जो ये लक्षण होइ नतु भयो जानिये भ्रष्ट॥
हे नृप जे मम भक्त हैं रहित वासना चित्त।
तदपि करैं शुभकर्मकिं जगकल्याण निमित्त॥
जैसे सविता के बिषे अन्धकार नहिं लेश।

तदपि करत परकाशजग परसुखहितउपदेश ॥

कह नृप भक्तनके शुभकर्मा * वदहु देव सर्वोपरि धर्मा
सुनिगिरिधरबोले लखिप्रीती * सुनहु भूप भक्तनकी रीती
मेरी कथा सुनै अरु कहई * सहित सनेह नाम मम गहई
पूजा में अति निष्ठाधारै * विविधभांतिअस्तुतिविस्तारै
वन्दन करै प्रदक्षिण देई * साष्टांग चरणामृत लेई
सब भूतन में मोको जानै * ममजन तेहि मेरोतन मानै
मेरे हेतु करै सो करै * मोबिन जौन ताहि परिहरै
मेरे हेतु अरथ सब त्यागै * आठहु भोगन ते वैरागै
योगयज्ञ जपतप व्रत दाना * शयनाशनभोजन जलपाना
इत्यादिक सब ममहितकरहीं * जाते अन्तर सो परिहरहीं
सदा आप को मोहिं निवेदै * प्रेम शस्त्रते ग्रन्थिहि छेदै
मुक्ति भुक्तिकी करै न आसा * तिनके हृदय करौं मैं बासा
ऐसीजब ममभक्तिहि लह्यऊ * तबअवशेषनकछुरहि गयऊ
मेरी भक्ति हृदय जेहि नाहीं * ते सब धर्म अधर्म कराहीं
भक्तिसुतंत्र चारिफल दाता * सकलजीवसुखप्रदजिमिमाता
विरति विवेक ज्ञान विज्ञाना * होततुरतत्यहिकरतसुजाना
सोइशुचि साधसुघर वरसोई * यस्यभक्तिमम किंचितहोई
जिन ममभक्ति हृदय महँधारी * सब सुधर्मके ते अधिकारी

दो॰ वरणाश्रमकर मान यदि तबतक श्रुतिकरदास ।
वरणाश्रम ते त्यक्त जे श्रुति ऊपर तेहि बास ॥
ज्यहिकरिहोत प्रसन्न मैं बिनहीश्रम अतिहाल ।
सो भाष्यो निजभक्तिसुनि पुनि बोले महिपाल ॥
हे प्रभु जो सब धर्ममय है तव भक्त अखेद ।
कर्म उपासन ज्ञान कत किये त्रिकांडी वेद ॥

एकै कस सिद्धान्त न राखा ❋ सोऊ भेद सुनिये प्रभुभाखा
जाको जस देख्यो अधिकारी ❋ त्यहिहित तैसी बातविचारी
जिनजगजालझूठकरिजान्यो ❋ ब्रह्मलोकतकदुखअनुमान्यो
बहुरिहुताकेउद्यमत्याग्यो ❋ विधिनिषेधबिनमोहिंअनुराग्यो
तिनको ज्ञानयोग अधिकारा ❋ अस्थिरह्वै मम करै विचारा
अरुजिन के समता दृढ़नाहीं ❋ राजत कछु प्रवृत्ति के माहीं
परमसगुण सुनिकै सुख मानै ❋ मेरो भजन सत्यकरिजानै
तिनकहँ भक्तियोग सुखकारी ❋ तरै आपु तारै संसारी
अरु जे विषयन के आधीना ❋ तिनके उद्यम में लवलीना
कथासुननको नहिं अवकासा ❋ नहिं ममभजनकेरअभ्यासा
तिनको कर्म योग सुखदाई ❋ गहै न भूलि निषेधै भाई
जो शुभकर्म तजै असगेही ❋ सो सम श्वपच न छुइयेतेही
तन में जोर न घर में दाना ❋ नृपसरिकरिकिलहैकल्याना
जे ततपर तिनहुनमा होहीं ❋ तेअतिशय उत्तमप्रियमोहीं
फल इच्छा सो सकल मिटावै ❋ अन्तसमय ममलोकासिधावै

दो० बहुत जन्म जपयोग तप धर्म ज्ञानरत होइ।
होय हृदय जब शुद्ध तब भक्तिलहै ममसोइ॥
करै कृपा मम सन्त जब तब नहिं दूजै ठौर।
गुरु सो मेरो रूप है सर्व देव शिरमौर॥
दशक्रम में व्रतबन्ध में तीरथ होम सराध।
षटस्थान गुरु विप्रहै दिक्षागुरु मम साध॥
सुनि गिरिधरके वचनवर हरष्यो भूप सुजान।
एकादश असकन्धमत यह मैं कीन बखान॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतयुधिष्ठिरयज्ञवर्णाश्रमधर्महरिभक्तिसाधनवर्णनोनामचतु स्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि ।
स्वसनसमुच्चयआदिबहु सतमत कहौंबखानि ॥

सो० पुनि शौनक शिरनाय बोले द्विजपद नाइशिर ।
नाथकहौ समुझाय सतसंगति महिमा कछुक ॥

सुनत सूत बोले सुखपाई * सतसंगति समकछुनाहिंभाई
सौसहस्र संवत तप करही * अयुतयज्ञनित उठिअनुसरही
चांद्रायण व्रत आदि अपारा * करै योग जप दान निहारा
जहँलगहैंतीरथ फिरि आवै * क्षणसतसंग सरिसनहिंपावै
सातस्वर्ग सुख मोक्षहु केरा * धरै तुलापर एकहि बेरा
सतसंगति लवभरि कर कोई * तेहिसम सुख दूसरनहिंहोई
गंगा पाप ताप शशि हरहीं * दारिद दूर कल्पतरु करहीं
साधु संगमों जो मन लावै * ततकालै तिहुँ पाप नशावै
दोइघरी यकघरी सोहाई * हरिकेजन तिष्ठैं जहँ आई
तीरथ सकल तहांई जानो * महीतपोवन सोइ पिछानो

दो० सन्तनकी वाणी सुनै प्रेमसहित जो कोइ ।
गंगादिकसब तीर्थफल बिन अस्नानहिं होइ ॥

अन्तकालहू जाके पासा * भक्त अकामी करै निवासा
ब्रह्महत्या मय पापी होई * भगवत धाम पाइहैं सोई
सतसंगतिभवनिधिमहँ नावा * चढ़ैसो पारहोइ सतिभावा
साधु संगते शीतल होई * जन्म मरण क्षणमेंजाइखोई
साधु संगते पातक जावै * ज्यों पावकते शीत नशावै
सतसंगति गति पलटै ऐसे * पारसते लोहा हरि जैसे
अधमहु साधु संग जो आवै * पावन होइ वेद असगावै
ज्यों अपवित्र नीर मधुसंगा * गंगमिलत पावन ह्वै गंगा
तिलसँग फूल फुलेल कहायो * सांभरि भयोखेत जो आयो

नीर चीरकी संगति पाई * वर्णमिट्यो सोइमोलबिकाई
वृत्त अनेक भांति के कोई * मलया गिरिसँग चन्दनहोई
वेनु करील होतनहिं जानो * सारहीन हत भाग्य पिछानो
ऐसे जे नर भ्रष्ट अभागी * बैठे साधुन ढिग अनुरागी
संगति फल लागत नहिं कैसे * नागबेलि बिच रमसर जैसे
जिनके भक्ति बीज उरछायो * सतसंगति जलजबहीं पायो
ऊगत तुरत सुनहु मुनितामें * अमी वृष्टिते नभ नहिंजामें
उदय दिनेशसबहिलखिपरहीं * पैउलूक गीदर निशिचरहीं
ताते सतसंगति का करहीं * जो नरवचनहृदय नहिंधरहीं
जिनजिनवचन सन्तकरमाना * तिन तिनका ह्वैगा कल्याना
सो सब वरणि कौनपै जाहीं * तदपि कछुकबरणौं तुमपाहीं
अजामील शठ पातक धामा * साधुसंगमिलिलहेसिरामा
बालमीकि मुनिभे मुनिराई * सप्तऋषिनकी संगति पाई
द्विज धुंधुभी प्रेत यक भयऊ * लहि गोकरणसंगतरिगयऊ

दो० महादेव का संगकरि कीरअण्ड सुनि भेव।
चेतन ह्वै पुनि उड़िगयो भयो आइशुकदेव॥

व्यास संग नारद का कीन्हा * तपनिमिटीभे शीतलचीन्हा
धीमरसंग चिमनका पायो * भूषनसहितसुरलोकसिधायो
व्यास पुत्रके संग समाजा * भे भवपार परीक्षित राजा
पांच हजार यज्ञ सुत जवने * नारदसंग जाइ वन गवने
विप्रएक गृह दुखवश दीना * भिक्षाहेतु जान तन छीना
वैश्यएक निकस्यो मद भरेऊ * रथकाधका लागद्विज गिरेऊ
मरनलाग तापर करि क्रोधा * मातलि देनचले तब बोधा
तुरतै धरेउ सियार शरीरा * आये चलि ब्राह्मणके तीरा
बोले विप्र शोक परिहरहू * नेक विचार हृदय महँ करहू

दुखसुख हानि लाभ संयोगा ॥ कर्मनते पावत सब लोगा
जो जस करे सो तस फलपावै ॥ आनहिं बिरथा दोषलगावै
यद्यपि हम पशुयोनि मँझारी ॥ ऐसा शोच करहिं नहिं भारी
करगथ हीन न संशय ठानो ॥ जो कछु होइ भावई मानो
यद्यपि हम कछु धर्म न करहीं ॥ तद्यपि प्राणघात नहिं चरहीं
जीव बधे बड़ पातक जाना ॥ ताते विप्रदेहु जनि प्राना
देखौ तुम विचारि मनमाहीं ॥ नरतन सम तन दूसर नाहीं
जासु विवश सचराचर सोहा ॥ नरक स्वर्ग अपवर्ग अरोहा
ताते हरिसुमिरण करलेहू ॥ कोह कुबुद्धि याहि तजिदेहू
तन छूटेपर बड़ दुखपावै ॥ नहिंजानीकेहियोनिसमावै
ब्राह्मण तनतैं उत्तम पायो ॥ जगतसुखनलगिबादिगँवायो
खानपानहित द्विजनहिं आयो ॥ तपके कारण ईश पठायो

दो० सुनि जम्बुकके वचन द्विज करनलग्यो तपजाइ ।
मिटिगे सब दुख अन्तमहँ बस्योस्वर्ग सुखपाइ ॥

अस सतसंग अहै मुनिराई ॥ गई तुरत द्विज व्याधिनशाई
अवरसुनहुविधिसुतयकभयऊ ॥ जाजुलऋषि तपहितवनगयऊ
कीन्ह तपस्या तन सुधिटारी ॥ खगन कीनघर जटामँझारी
अण्डा दै पकि फूटि उड़ाने ॥ शिरते निकसतजाजुलजाने
तबऋषिकेउपज्योअभिमाना ॥ मोहिंसमानतपकियोनआना
तुरत भई नभवाणी टेरो ॥ तुलाधार सम तपनहिं तेरो
समता भक्ति जासुउर आई ॥ रहत बनारस देखो जाई
सुनिजाजुलऋषितुरतसिधाये ॥ तुलाधार बनिया घर आये
देखि कीन सनमान अपारा ॥ चरण धोइ आसन बैठारा
पूछ्योक्यहिहितआयहुआजू ॥ आज्ञा होइ करों सोइ काजू
कहऋषियशतुम्हारसुनिमोहीं ॥ भासुख अबकछु पूछबतोहीं

मैं वन तप बहुकाल कमावा * तुम्हरी समसरिनासुनिपावा
कौन धर्म तुम साधत अहऊ * सो हमते किरपा करि कहऊ
तुलाधार कह रामहिं ध्यावों * रामहिं के गुण मुखते गावों
कायवचन मन सन्तहि सेवों * विप्र ज्यँवाय दान बहुदेवों
ताकरफल तनको नहिं चाहों * अरपों हरि हि सुमारगगाहों
चारिखानिजहँ लगितनधारी * सबमहँ व्यापक एक मुरारी
यह विचारि सबकोशिरनावों * ऊंचनीच नहिं मनमें लावों
दुखी दरिद्री होइ जो कोई * सेवों ताहि नरायण जोई
डांड़ी पकरि घाटि नहिं देहूं * झूठ न कहौं परांश न लेहूं
काहुहि शत्रु मित्र नहिं मानो * मैं मेरी तेरी नहिं आनो
आये हर्ष न गये विषादा * दुखसुखसमनहिंकरौंविवादा
गोमन के मारग नहिं बहऊं * पांचहु विषय प्रहारे अहऊं
करि हरि मीन कुरंग पतंगा * एकएक बस बिसरत अंगा
सबकीबस सो किमि सुखपावै * त्यहिते मोमन दूरि रहावै
काहुइ दुख देवों नहिं पावों * रामनाम निशिवासरध्यावों
याते शांति बसी उर आई * दुरमति भ्रमसबगयोनशाई
निजदुखनिजगुणकहानचाही * तुम पूंछेउ मैं वरण्योंताही
कहमुनिशांतिकवनविधिआवै * सुनहुनिगमयहिभांतिबतावै

दो॰ सात भूमिका ज्ञानकी तिन बिनहोइ न ज्ञान।
ज्ञानविनानहिं शांतिसुख सो अबकरौंबखान॥

कु॰ छं॰ प्रथम भूमिकाहै शुभइच्छा दूसरिजानु विचारै।
नित्यवस्तु हिरदयलैराखै और अनित्य निवारै॥
तीसरि तन मानसा कहावै तनमन इन्द्री रोकै।
चौथी सत्यायुत सब जगमें आतमएकविलोकै॥
पञ्चम अंशशक्त निजरूपै तामें निश्चयआनै।

छठईं नाव पदारथ तेरेहोत बुद्धि लगु हाने ॥
सतईं तुरी भूमिका जानो मैं त्वैं जहां न रहई ।
सप्त भूमिका ये कहवावैं बिनगुरुना कोइलहई ॥

ये सातौं साधन बनिआवै ❋ उपजैज्ञान शांति तब पावै
जबते शांति बसै उरआई ❋ कामक्रोध मदजाहिं नशाई
उर वासना रहै नहिं कोई ❋ भय कलेश संशयजायँ खोई
सम चित रंकराव बड़ छोटा ❋ समचितघरबनसज्जनखोटा
समचित शीत उष्ण वरषाना ❋ कञ्चनमृतिका नारि पषाना
सम चित मातु बंधु सुतदारा ❋ समआरि मित्रहुअपनपरारा
ब्रह्मानन्द मगन नित रहई ❋ जीवनमुक्त सोईनर अहई
प्रमहंसी यह ज्ञान कहावत ❋ रामकृपाते कोइ कोइ पावत
अति दुस्तर मारग यह भाई ❋ वरणत सुलभकरतकठिनाई
ताते जौन चतुर नर अहईं ❋ तजिसब रामभक्तियकगहईं
ज्ञान विराग आपही आवै ❋ गोसँगज्यों घृत बच्छहु पावै
ताते मुनि तुमहूं अस करहू ❋ ज्ञानभक्त हिरदय महँ धरहू

सो० जो कोइभक्ति विहाइ ज्ञान हेतु बहुश्रम करहिं ।
मानहुँ तजि सुरगाइ आकदुहैं पयलागि शठ ॥

महारामायणेश्लोकौ ॥

येकेवलाद्वैतमतानुरक्ताःश्रीराममूर्त्तिविमलांविहाय ॥ तेवैमदान्धा हृदयेस्वमूर्त्तिन्त्यक्त्वायजंतिप्रतिबिम्बकुम्भम् १ येरामभक्तिममलांसु विहायरम्यांज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे ॥ आरान्महेन्द्रसुरभींप रिहृत्यमूर्खा अर्कम्भजन्तिसुभगेसुखदुग्धहेतुम् २ ॥

सो० ज्ञानते परपदजाइ करै निरादर हरिचरण ।
गिरैसोपुनितमआइ प्रभुरक्षितनहिंजनकबहुं ॥

भागवते ब्रह्मस्तुतिश्लोकौ ॥

येन्येरबिन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥

आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदङ्घ्रयः १ तथा न ते माधवतावकाः क्वचिद्भ्रश्यन्तिमार्गात्त्वयिबद्धसौहृदाः॥ त्वयाभिगुप्ता विचरन्तिनिर्भया विनायकानीकपमूर्द्धसुप्रभो २ ॥

दो० न सो पुराण न संहिता न सो काव्य इतिहास ।
न सो शास्त्र तीरथ वरत जहां न हरिहरदास ॥
योगकुयोग मखादि गुण अवगुण ज्ञानाज्ञान ।
विद्याविद्या विपति सुख जहँ न राम रतिमान ॥
नारदादि सनकादि मुनि अज शंकर शुकदेव ।
लोमश भृगु सब ज्ञान विधि भक्ति करतहैं देव ॥

सुनिजाजुलऋषिहरषितभयऊ ❋ ज्ञानभक्तिहिरदयधरिलयऊ
तुलाधार कहँ गुरुकरिजान्यो ❋ जैसे गरुड़ भुशुंडिहि मान्यो
बसीशांतिउर भर्म नशायो ❋ तब न भवानी को शिरनायो
ऋषिसब जगमें ब्रह्म निहारो ❋ अस सतसंग प्रभावअपारो

दो० ब्रह्मजीव जग वृक्ष है सतसंगति फलसार ।
चरचा अमृतरस भरी बीजहु तासुमँझार ॥
बीजहुतासु मँझारहै इमिभाषत श्रुतिअंग ।
जो चाहै हरिदरशसो करै सदा सतसंग ॥
पियुषपतालन पाइये पियुष न चन्द्रमँझार ।
पियुषमिलत सतसंगमें इमिकहै अमृतसार ॥
तातेजन रघुनाथनित करुसतसंग विचारि ।
प्रभुपदबढ़ै सनेहज्यहि जन्म मरणजायहारि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतजाजुलतुलाधारप्रसंगवर्णनोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं समुच्चय की कथा कछु एकादश जानि ॥

बहुरिसूत बोले हे ताता ❋ जाजुलिकेरि कही मैं बाता

अपरसुनहु यक नहुषभुआरा ❋ भयो इन्द्रपद लेन विचारा
सौ यज्ञनकरि चढ़्योविमाना ❋ इन्द्रलोक सूनो सुनि काना
वृत्रासुर मार्‍यो सुरईशा ❋ त्यहि हत्या ते दुरेनदीशा
नहुष जाय सिंहासन बैठो ❋ प्रभुतापाइ आइमद पैठो
सहसवरष कीन्ह्यो सुखराई ❋ इन्द्राणी ढिगकभूं न आई
तब नृप तासों वचन सुनावा ❋ अबम्वहिइंद्रजानुसतिभावा
सुनतशचीअतिशयदुखपायो ❋ ध्यायोगुरुहितुरतढिगआयो
शीशनाइ निज विपतिसुनाई ❋ दीनदेखि मुनि युक्तिबताई
नृप ते तुमअस जाइसुनावो ❋ आवाहनचढ़िममढिगआवो
शचीआइ नरपतिते कहेऊ ❋ सुनतनहुषअतिशयसुखलहेऊ
घटजआदि द्विजलीनलगाई ❋ चढ़िपालकी चल्यो हरषाई
कामातुर ह्वै कहेसि रिसाई ❋ सर्प सर्प चलिये ऋषिराई
सुनिअगस्त्य तबदीन्होशापा ❋ होहुसर्प तुम अपने पापा

दो० त्यहिक्षणउतरिपर्‍योपद कर्‍योवचनपरकास ।
शापदूरिकब होइहै कहो जानि निजदास ॥

कह अगस्त्य द्वापरके अन्ता ❋ प्रकटीधर्म तनय यकसन्ता
सो आई तुम्हरे ढिगकबहीं ❋ चरणछुवत निस्तरिहौतबहीं
कौनभांति हम जानबताही ❋ कुम्भजकह्यो चिह्नइकआही
पूंछेउज्ञान उतरु जबपायो ❋ जानि तासुपद शीशधरायो
असकहिमुनिपुनिचलेसिधाई ❋ भये सर्प्प नाहुष तबआई
गिरिकन्दरा रहे बहुकाला ❋ हिरदयउठैअगिनिकीज्वाला
बड़े कष्टकरिद्वापर पायो ❋ बनोवास पाण्डवजब आयो
द्रुपद स्वयंवर रच्योअनूपा ❋ जुरे तहां दिशिदिशिके भूपा
तब खगपतिते कह्योगोपाला ❋ पंडनकहँ लावहु ततकाला
आज्ञाशिरधरि गरुड़ सिधाये ❋ कुंतीयुत पांचौ जनलाये

सोइ गुरुतीर तिन्हैं बैठाई * कृष्ण पास आये खगराई
राजै तृषा लागितहँ जानौं * भीमते कह्योजाइ जलआनौं
देखितड़ागनिकटचलिगयऊ * चापपाइअहिनिकसतभयऊ
योजनएक कुनप विकराला * उरगनहीं जनुमूरति काला
पूंछेउ पासभीम के आई * कहु जगमहँ जीवतको भाई
जो कोइमनुषहोइ बलवाना * सुनिअहिलह्योनयहिउरज्ञाना
खैंचिश्वास लीन्ह्यों मुखडारी * यहांयुधिष्ठिर जानि अबारी
पठयोनरहिसरहि चलिआयो * देखिसर्प अस वचनसुनायो
को जीवत जगमा नर सोई * शरविद्या जाकेकर होई
समुझिसो ज्ञानहीनधरिखायो * तब नकुलैं महिपाल पठायो

स.छं. ताल तीरगे जबै। नाग बोलियों तबै॥
जीव धन्य कौनहै। रूपवान जौन है॥

वी.छं.॥ सुनिसर्प्प। करिदर्प्प॥ मुखबाइ। गयोखाइ॥

यहां युधिष्ठिर कह सहदेऊ * लेउजाइ भाइनकर भेऊ
गये तीनिजन एक न आयो * नहिंजानी कौने बिलमायो
तबसहदेव निकटसरगयऊ * अजगरदेखिकहतअसभयऊ
जीवत जगमें काहि पिछानी * विद्यावान होइ जो प्रानी
भक्ति विहीनज्ञानबिनचीन्ह्यो * तुरतनिगलसहदेवहिलीन्ह्यो
बहुरि युधिष्ठिर आपुहि आये * चक्षुश्रवा लखि वचनसुनाये
किंवार्त्ता अचरज का भारी * पंथकौन मोदित नरनारी
चहूं प्रश्नका उत्तर दीजै * तेहि पाछे नृप नीरहि पीजै
धर्मतनय बोले हरषाई * सुनो यथामति कहौं बुझाई

दो० भट्ठी मोह कृशानु रवि धवनि श्वास मददारु।
निशि दिनघनदरवीवरष क्रमकुट काललोहारु॥

जीव सार सम कूटत जाई * यहै वार्त्ता मोमन भाई

सुनिपन्नगप्रसन्नअतिभयऊ * ततक्षणउगिलिभीमकहँदयऊ
चारिखानि जहँलगितनुधारी * जलचरथलचरनभचरनारी
मरण एक दिन सब कर होई * शेषरहे अचरज है सोई
सुनी भुजंगबात यह जबहीं * उगिलिदिहिसिपारथकातबहीं
पंथसो जाहि महाजन थापै * नकुलैउगिलिदिहिसितबचापै
दुसरे दिन वहु भोजन पावै * परबश होइ न अन्नरहावै
भजै राम तजिकाम कुकर्मा * सोइनरमुदितन संशयभर्मा
कृष्ण बहिर्मुखशवसम प्रानी * होइनकसविधिसबगुणखानी
अस पुनि सुनि सहदेवै दयऊ * बहुरि रावते बोलत भयऊ
महाराज वचनामृत तोरे * सुनिआनन्दभयोअतिमोरे
अब निजचरण शीशपरधरहू * दीनदयाल कृतारथ करहू
कारण कौन भाल पग राखी * हमते भेद कहौ सो भाखी
पूरब भेद नहुष सब बरना * विप्रशापजेहिविधिनिस्तरना
सुनिनृपअहिशिरचरणछुवावा * भै अघहानि दिव्यबपुपावा
आयो तुरत विमान समीपा * चढ़िहरिपुरका गयो महीपा
अस सतसंग प्रभाव घनेरा * जेहिलगिगा दुखनाहुषकेरा
और सुनौ यक मंकी साहू * रह धनहीन दीन सब काहू
धनहितउद्यमाकिहिसिअपारा * होइ नफानहिं घटा निहारा
करजुकाढ़ि युगवृषभहिलायो * नहिकहिजोतनखेतसिधायो
मगमा वृषभ कीनि मचलाई * भागतपरे. ऊंटपर जाई
माचि बीचगर्दन के उरझी * उनमतऊंटउठ्योनहिंसुरझी

दो० चले घसीटत वृषभ दोउ भये मृतक ऋषिराय।
लखि मंकी शोचन लग्यो महितन शीशनवाय॥

ताही क्षण दत्तात्रय आये * दुखितदेखिअसवचनसुनाये
अहोतात मन धीरज गाहौ * वृथाशोचकरि क्योंतनुदाहौ

दुख सुख कर्म भावई हाथा ❋ कैसे मिटै लगी सो साथा
तेहिते चतुर शोच नहिं करहीं ❋ होनहार सो हिरदय धरहीं
बिन दातब्य द्रव्यनहिं पावे ❋ देशविदेश चहौ फिरिआवे
पूरब पुण्य होय जो भाई ❋ बिन आरम्भ मिलै धनआई
बहु नर उद्यमहीन हयाना ❋ ते धनवन्त दुखी बुधिवाना
पाछिल धर्म जानिये आला ❋ और तासुजौने सरिबाता
आदौ दान दिह्यो नहिं ऐसो ❋ अबचाहत धनमिलीनकैसो
तेहिते उर संतोषै धारौ ❋ तृष्णा डाइनि दुष्ट निवारौ
नहिं कछु सुखसंतोष समाना ❋ चौबिसगुरुकरिहमयहजाना

दो० सुनि मंकी बोलत भयो मुनिपद शीशनवाइ।
कौन कौनगुरु किहेउ प्रभु सो मोहिंदेहुसुनाइ॥

वीरछन्द। सुनिदत्त। निजमत्त॥ मृदुबोलि। कह्योखोलि॥

तो० छं० प्रथमैंगुरुजानौभूमिकिह्यों। तेहिते जुत्तमाअरुशांतिलिह्यों॥ जलदूसरसर्वपवित्रकरैं। जिमिसज्जनजीवकेपापहरैं॥ गुरुतीसरवायुअमेलअहे। ममत्योंगतिसंगसमानबहे॥ मृगवेधहिगुरुसुनितानमेरे। तेहिभांतिविषयसुखचित्तहेरे॥ शशिपंचमआतपज्योंहरहीं। हरिकेजनशीतलत्योंकरहीं॥ छठयेंरविज्योंरससर्वग्रहे। नलिपैंपरित्योंजगसन्तरहे॥ भभकैसमतागिनिआज्यपरे। निघटेतिमिकामिनिभोगकरे॥ नभअष्टमपूरणब्रह्मतथा। नवमानददाजनवृत्तयथा॥ दशमोदधिआयघटैनबढ़ै। जनत्योंसुखदुःखसमानबढ़ै॥

भँवर यकादश विरति सुपासू ❋ पुहुप पुहुपकी लेइ सुवासू
नाहिं वृत्तका दोष विचारै ❋ करहिंसन्ततेहिविरतिअहारै
कीटहि शब्द सुनावत ऐसो ❋ सो ह्वैजात भृंगलै जैसो
द्वादश अहिनहिं भौनबनावै ❋ तैसेहि भक्ति बसै जहँपावै

तेरहों गुरुहाथी कहँ कीन्हा * कामविवशपरवशभाचीन्हा
तबते काम नेवारत भयऊ * रामचरणपंकज चितदयऊ
मकर चौदहां रसना स्वादा * आमिषगह्योसहितअहलादा
सुखनहिं भयोगयोपुनिप्राना * तज्योसकलरसदुखदपिछाना
दशशरशलभ दियाकीज्योती * देखत जरत सती ज्योंहोती
तैसेनर लखि त्रियफँसिजाहीं * सो विचारिहौं देखत नाहीं
जेहिदेखों तेहि आतमजानो * और न दूसर भेदहि आनो
षोड़श चील्ह एकलै मांसू * उड़त भई सहमोद अकासू
बहुते विहँग ताहि पछुआयो * दीन्ह्यों छांड़ितबै सुखपायो
तबते वित्त ग्रहण नहिं करहूं * जहांतहां निरद्वन्द विचरहूं
सप्तदशों गुरु अजगर भावै * निरालम्ब आवै सोइखावै
अष्टादश गुरु वेश्या एका * बैठी करि शृंगार अनेका
एकदिवस व्यसनी इकआवा * दै धीरज गथलेन सिधावा
तुरत पिंगला सेज सँवारी * मगदेखतनिशिखटकवोनारी
युगलयाम रजनीचलिगयऊ * वेश्या हृदय बोधतब भयऊ
आशात्यागिभजेसिभगवाना * वही ज्ञान मैं हिरदयआना

दो० गुरू वनैसौं बानकर दीख बनावत तीर।
भूपगयो तेहि अग्रह्वै सहितशब्द अतिभीर ॥

वहुधाय पूंछा यहि ओरा * नृपगामैं न सुनी कछु शोरा
तहँ मैं सिखेहुँ ध्यानका भेदा * रहौंलीनतजि जगके खेदा
विंशम मिथुन कपोता भयऊ * विपिनि कपोती अंडा दयऊ
फोरेसेइ बड़े शिशु भयऊ * इकदिनवधिकदेखिगहिलयऊ
आये दोउ लिहे मुख चारा * पुत्र विना घर सून निहारा
वधिक तीर देखे अकुलाई * गिरी कपोतिनि जारहि जाई
देखिशोचअतिकीन्ह विहँगा * फँसा आपहु सबके संगा

अति बलमोह देखिमैं जाना * तबते तज्यों भज्यों भगवाना
गुरु इकैसवीं मकरी भाई * पूरततारु निगलि फिरजाई
ऐसे ईश जगत करि सोई * अन्त आपु महँ लेतसमोई
उभय विंश जानहुं मधुमाखी * रसरस आनि इकट्ठे राखी
खाइनिनहिंनिजकाजनकीन्हों * आइछोड़ायआनहीं लीन्हों
तैसेहि कृपण दरबिको पाई * पुण्यनकरहिंसकहिंनहिंखाई
विविध भांति राखै महिगोई * करहि भोगतेहि आनहिकोई
तेहिते संग्रह करौं न दामा * नृपभयचोर वधत ठगतामा
गुरु तेइसवां कन्या जानहुं * तासुचरितअबसुनहुंबखानहु
करन सगाई युगजन आये * मातपिता तेहि घरनहिं पाये
कन्या तब कीन्हेउ सन्माना * आप लगी पुनि कूटनधाना
चूरी खटकत भई गलानी * डारेसिफोरिकछुकनिजपानी
द्वैलगरही खटक नहिं जाई * एकराखि कूटिसि हर्षाई
तबते सोइ सीखधरि चित्ता * एका एक रहौं मैं नित्ता
बहुतन संग कलह ह्वै आवै * एका एक परम फल पावै
चौबिसवांगुरु किहेउँ शरीरा * जेहिलगि सबनरसाहतपीरा

दो० पालतषटरस स्वाददै विविधबसन पहिराय।
तेल फुलेल लगाइ नित सेवा करैं बनाय॥

सो० अन्त समयकी बार संग न चालै एकपग।
और सकल परिवार सो आपन किमिहोइहै॥

आपनतन जान्यो नहिं जबते * करनलग्योनिजस्वारथतबते
निज स्वारथ सोई कहवावै * जोकछु रामभजन बनिआवै
भजनविना जीवहि सुख नाहीं * विधिहरिहरसमीपचहुजाहीं
चौबिसगुरु करिजो मतपायों * सोमैं तुमकहँसकल सुनायो
सुनिमंकी उर उपज्यो ज्ञाना * जगतझूठकरितबहिंपिछाना

मुनिपद शीश नाइ बनगयऊ ❋ जपतपकरितनत्यागतभयऊ
हरिपुरबसेउ जाय दुखखीशा ❋ अससतसङ्ग प्रभाव मुनीशा
कहशौनक यक संशय मेरे ❋ दत्तात्रयी पुत्र किन केरे
यहो भेद प्रभुदेव बताई ❋ सुनत सूत बोले हर्षाई

सो० अत्रयऋषि की नारि त्रैदेवनकर अंशलय।
कीन्ह्यों पुत्र विचारि नाम धर्‌यो दत्तात्रयी ॥

इति श्रीविश्रामसागरसपमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतमंफीदत्तात्रयीसंवादचौबिसगुरुवर्णनो
नामषट्‌त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
कहौं समुच्चयचरितकछु कछुजैमिनिमतआनि ॥

बहुरिसूत बोले करि येहा ❋ धन्यधन्य शौनक तवनेहा
जो पूंछेउ सो बरणि सुनावा ❋ और सुनौ सतसंग प्रभावा
सबतेअधिक ज्ञान यहपावन ❋ पुत्र पिता संवाद सुहावन
विप्र एक कश्यप अस नामा ❋ मेधावीसुत अतिअभिरामा
ज्ञानवंत ममता उर नाहीं ❋ यकदिनप्रश्नकिहेसिपितुपाहीं
पिताकहो काकर तप करिये ❋ जाते भवसागर को तरिये
कहकश्यप सुतवेद पढ़ीजे ❋ ब्रह्मचर्य करिगृह सुखकीजे
वानप्रस्थ बहुरि संन्यासा ❋ धारणकरि कीन्ह्यो वनवासा
जपतप योग यज्ञ तहँठान्यो ❋ यहकरतब्यहै तुम्हैं बखान्यो
सुनि मेधावी उत्तर दीन्हा ❋ मृत्युबिवशहमसबकहँचीन्हा
जब चाहै तबहीं संहारै ❋ बाल बृद्ध नहिं तरुण विचारै
तौकिहिविधिचहुंआश्रमकरई ❋ अमर होइ सो हिरदै धरई
लोमशादिमुनिचिरजिवआहीं ❋ टूटत रोम कलपके माहीं
तेऊ डरत मृत्यु ते भाये ❋ लोहड़ा रहतशीश औंधाये

और सुनौ पांडव मखसाजा * कीन्ह्यों जबतब छांड़्योबाजा
अर्जुन कृष्ण हंस वृषकेतू * चले सकल रक्षाके हेतू
ढूंढ़त सिन्धुपार जब गयऊ * दीपएक वन देखत भयऊ
तहँबकदालभ ध्यान लगाये * सबनजाइ मुनिपदशिरनाये
चरणछुवत बकदालभ जाना * नयनखोलिकीन्होंसनमाना
लागे कहन चरित हरिकेरे * बहुविधि जो निजनयननहेरे

दो० चित्रकोटिचत्रलाखपुनिउभयसहस अवतार ।
भये दाशरथि रामके मेरी दृष्टि अगार ॥

सुनि अर्जुन बोले तिनहींते * तुम्हें यहां कितने दिनबीते
कहमुनि सुनहुतात मनलाई * आदिहिते सबकहौं बुझाई
निमिष अठारहु काष्ठाजानौ * तीसकाष्ठकी कला पिछानौ
तीसकलाकी होत महूरति * तीस महूरतिका दिन पूरति
पन्द्रह दिवस केर पखवारा * उभय पाखका मास विचारा
बारहमास विगत जब होई * तेहिका बरस कहत सबकोई
सत्रालाख अठाइस बरषा * सतयुगरहतसकलसुरहरषा
बारालाख छानबे हजारा * त्रेता रहत सुखी संसारा

दो० आठलाख चौंसठ सहस द्वापर रहत समान ।
चारिलाख बत्तिस सहस वर्ष रहत कलिजान ॥

चारिसहस युग बीतत जोई * तब ब्रह्माका इकदिन होई
रातितेतनहीं तब विधिस्वावै * सृष्टिधरे उरकल्प कहावै
तीसकल्प बीतत अजमासा * बारा मास बरष परकासा
ऐसे बरष एकशत जाई * तबलगि ब्रह्मा जीवत भाई
मरे पितहि परलै ह्वै जावै * ब्रह्मकल्प सोई कहवावै
म्वहिं देखत एतेदिन भयऊ * ब्रह्माबीस नाशह्वै गयऊ
एकबार ब्रह्मा इक आये * चारिभुजा मुखचारि सोहाये

करतल चारिवेद तनपीना ❋ रामचरित गावत लवलीना
मोते कहिनि ध्यान तजिदीजै ❋ हमते कछुक चतुरता कीजै
तेहिसमय बौंड़रइक आई ❋ हमैं वाहि ले चला उड़ाई
उलटतपलटत नांघतखण्डा ❋ देखाजाइ आन ब्रह्मण्डा
तहँ विधिबैठ आठमुख सोहा ❋ आठभुजा वसुदेवहु जोहा
कोभवान विधिते विधिभाखा ❋ ब्रह्मअहं इत्थं सुनिमाखा

दो० अबतककह्यो सोकह्योपर अबनकह्यो अजनाम।
ब्रह्मा ये मय आठमुख जेहिकरतल सब काम॥

इतनी कहत पवन पुनि घूमी ❋ उभयलपेटि चली नभभूमी
उहांतेउड़ेन आनमहँ गयनू ❋ सोरामुख विधि देखत भयनू
पुनिबत्तिस चौंसठि छानावा ❋ दुगुन २ मुखका विधिपावा
जेहि देखा सोऊ उड़ि जाई ❋ गगन पार सब निकसे जाई

दो० तहांपुरुष इकदीख वर जेहि तनु अति विस्तार।
वदन अनन्त अनन्तभुज वेद अनन्त अपार॥

कीनबन्दना तिन सनमाना ❋ सब ब्रह्मनका गा अभिमाना
कछुकबाररहि आयसुपाये ❋ फिरनिजनिजआश्रमकहँआये
सुनिअर्जुनअतिशयसुखपावा ❋ बहुरिजोरिकरवचनसुनावा
हे प्रभु कत उजार महँ रहऊ ❋ शीतउष्ण बरषा शिर सहऊ
लेत्यो इक मन्दिर बनवाई ❋ सुनत वचन बोले ऋषिराई
लघुजीवन जग कौने हेता ❋ धनसंची अरु करी निकेता
मृत्युखड़ी शिर सम्मुख हेरै ❋ जब चाहै तबहीं मुखगेरै
जोकोइसुरी चढ़ावा जावै ❋ क्षणरहिगये कौन सुख पावै
सुनौ पिता ऐसे जे अहईं ❋ तेऊ डरत मृत्यु ते रहईं
औरेनकी अबकौन चलावै ❋ जेनित जन्मिजन्मिमरिजावै
तेहिते तात मोह तजिदेहू ❋ करहु राम पद पंकज नेहू

निशिवासरऋतुजेहिविधिजावै * त्योंतुम्हरीनितआयुसिरावै
देखतजात सचेत न होवै * ढहते महल माहिं कत सोवै
प्राण अन्त कछु बनैन भाई * उठीहाट जिमि वस्तु न पाई

श्लोक ॥ यावत्स्वस्थमिदंदेहं यावन्मृत्युश्चदूरतः ।
तावदात्महितंकुर्यात् प्राणान्तेकिंकरिष्यति ॥

गी॰ छं॰ मुनिपुत्रकेअसवचन विमल विरागकश्यपकेभयो ।
दोउत्यागितृणसमधामधन सुतवामवनकाचलिदयो॥
जपयोगसंयमसहितकरि हरिभक्ति तनमन जीतिकै।
गयअन्तसमयविमानचढ़िप्रभुधामबस्योप्रतीतिकै॥

सो॰ ऐसा है सतसंग जाके करतैअघ नशत ।
लागत हरिका रंग भागत संशय शोक भ्रम ॥

और सुनो विश्वावसु नागा * मन्दालसा सुता सुठि भागा
तालकेतु लयगा हरिताही * ऋतुध्वजगालवमखगतचाही
वधकरिताहि सुतासोइलीन्हीं * विश्वावसुहिआयपुनिदीन्हीं
ब्याह युक्ति तिन नृपते ठानी * गहिपद बोली कुँवरिसयानी
तीनि वचन मोहिं देवैनाहू * ताके संग करबहौं ब्याहू
इकतो जो ममद्वारे आवै * मंगन विमुख जाननहिंपावै
दूसर मोहिं जीवत नरनाहा * करैन अपर रवनिसँगब्याहा
तीसर जो बालक हौं जावों * द्वादश संवत महीं खेलावों
असप्रणकठिनसमुझिमनमाहीं * अबतकमोहिंवरीकेहुनाहीं
रतिध्वजवचन देइतहँ परणी * धूमसुतहि लाये घर घरणी
कछुक कालबीते सुत भयऊ * चेरिउका नहिं कबहूँ दयऊ
आपु खेलावै दिन अरु राती * देइज्ञान तनुजे यहिभांती

श्लोक ॥ शुद्धोसिबुद्धोसिनिरञ्जनोसि संसारमायापरिवर्जितोसि ।
संसारस्वप्नन्त्यजमोहनिद्रांमन्दालसावाक्यमुवाचपुत्रम् ॥

बड़े भागसों नरतनु पायो * सुरदुर्लभ पुराण श्रुतिगायो
ताहि पाय निज राम न ध्यावा * धृगजीवन जगबादिगवांवा
ताते सुत हरिसुमिरण करहू * ज्ञानविराग हृदय महँ धरहू
क्षुधातृषा सुखदुख अपहारी * काम कोह मद मोह नेवारी
सुत पितु मातु बन्धु अरधंगी * ये सब हैं स्वारथ के संगी
अन्तसमयकोउकाम न आवै * बीचहि मिलैं बीचरहिजावै
तिन्हैंत्यागि वन गवनहिंकीजै * अहनिश राम रसायन पीजै
क्षण क्षण तेरी आयु सिरावै * ज्योंकरतलजलनिघटतजावै
काल अचानक सबका मारै * बालवृद्ध नहिं तरुण विचारै
ताते बालपनहिंते चेतौ * वेगि लगायो हरिपद हेतौ

दो० बहु प्रकार मन्दालसा दीन सुतै उपदेश।
भयोज्ञानहिरदय विमल गयोविपिनमुनिवेश॥

सो० यहि भांतिन षटबाल पठये वन उपदेशकरि।
सप्तमभये भुवाल आइनिकट बोले बिलखि॥

हेभामिनि सुनिये मम वाणी * भयनवृद्ध हमतुम दोउप्राणी
बालक वन पठयो सब आछे * करीराज्य को हमरे पाछे
तेहिते यहि राखौ गृहमाहीं * बारबार विनवों त्वहिं पाहीं
सुनिपतिवचन पुत्रघरराख्यो * तासों ज्ञान कछू नहिंभाख्यो
पर नित शोचहि करै अपारा * परी नरक यह पुत्र हमारा
तबयकयंत्रबांधि भुजदीन्ह्यो * बिपतिहोइयामें सोइकीन्ह्यो
कछु दिनबीतेदोउ मरिगयऊ * पाछे अलरक राजा भयऊ
सुनि वन बन्धुगये ते आये * तजहु राज बड़ दोष सुनाये
सो महीप मानेसि नहिं राई * बखरा मांगन दीन खेदाई

दो० तबते काशी राजपहँ फिरिआदी भे आय।
निज निज हीसा देन कहिलाये ताहि चढ़ाय॥

कछुकदिवसअलरकनृपलरेऊ ॥ भयोत्रसित तबरणपरिहरेऊ
गयोभागिवनबिपतिविचार्यो ॥ खोलिमुद्रिका ताहिनिहार्यो

दो॰ जगतजाल में मतिपरै केवल दुख यहि माहिं।
सत्यकहौं सति २ कहौं सुत सुख सपन्यो नाहिं ॥

सो॰ रामविमुख नरजौन किह्यो न संगति तासुकी।
साधुसंग सुखभौन मिलत ज्ञानहरिभक्ति जहँ ॥

दो॰ खग मृग किन्नर नाग नर दैत्यासुर समुदाइ।
युग युग में जे तरे ते सकल साधु सँगपाइ ॥

अस मुद्रिकामांझ जबदेख्यो ॥ खोजत दत्तात्रयका लेख्यो
पर्योचरणनिजबिपतिसुनायो ॥ मुनिवरबहुविधिज्ञानसिखायो
गयोमोह सुखभयो अपारा ॥ करिहरिभक्ति भयो भवपारा
अससतसंग अहै ऋषिराई ॥ गइत्तणमें भवव्याधि नशाई
ताते साधुसंग नितकीजै ॥ मनक्रमत्यागि कुसंगतिदीजै

कुं॰ भक्ति लता सतसंग जल सनधा पल्लव पाइ।
शाखाज्ञान विरागगुरु लघुत्तमादि समुदाइ ॥
लघुत्तमादि समुदाइ प्रेमसों सुमन सुहावन।
हरिप्रापति फल मधुर महा दुख दोष नशावन ॥
प्रथम अजाते रक्तिये बड़े भये नहिं शक्ति।
बँधेरहैं करइमि कहै कल्पलता हरि भक्ति ॥

दो॰ जनमै कन्या जनकते रहै जनकके गोद।
होइपुत्र तबविवि सुखद इमि कहै भक्ति विनोद ॥
प्रभु पयोधि घन संतहै हरि २ जन योंमान।
मुशकिलते रघुनाथ इमि करत साधु आसान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृतपुत्रपितासंवादअलर्कप्रसंगवर्णनोनाम
सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
सांख्यशास्त्र मतकहौं कछु कछुवेदान्त बखानि ॥

सुनि शौनक बोले हरषाई ❋ सतसंगति महिमा कछुगाई
और एक वरणौं इतिहासा ❋ जेहिते होइ ज्ञान परकासा
सयनजीत यक भूपति राहै ❋ नीतिवान परजै बहुचाहै
तेहिके पुत्र बरष दशकेरा ❋ भयो मृतक सो करमन घेरा
राजाशोच कीन अतिभारी ❋ प्राण तजनकी बात विचारी
तेहिअन्तरलोमशऋषिआये ❋ नृपहिदुखितलखिवचनसुनाये
हे नृप शोककरै तू काको ❋ तेरो सुत नहिं तैं पितु वाको
पुत्र शरीर परा तव आगे ❋ रोवत मृषा जीव के लागे
जनमै मरै न भयो न होई ❋ नित्य अरूप अचलहै सोई
शस्तरकाटि सकै नहिं ताही ❋ पावक जारिसकै नहिं जाही
नीर भिजोय सकै नहिं वाको ❋ मारुत शोषि सकै नहिंताको
ऐसायहि आतम कहँजानो ❋ मनमहँतासु शोचमतिआनो
याको मृतक कहै जो कोई ❋ महा मूढ़ अज्ञानी सोई
नाशवन्तहै देह पिछानौ ❋ जीवात्मा अविनाशी जानौ

दो० देहअंग न्यारे करौ जहँतक होत विनास ।
उतपति भय जेहि भांतिते करत नरककोवास ॥

प्रथम ब्रह्मअज खंडअमाया ❋ इच्छाकरि पूरुष उपजाया
पुरुषेच्छाते प्रकृति प्रभेवा ❋ प्रकृतिते भयो महाततदेवा
महातत्त्व ते भो निरंकारा ❋ निरंकारते प्रणव निहारा
प्रणवते भये तीनि गुण राऊ ❋ सतरज तामस प्रकट प्रभाऊ
त्रयगुण की भाषौं औलादी ❋ जिनतेभातनु अनित उपाधी
सतते वासुदेव चित जानो ❋ और चौदहो देव पिछानो
रजगुण ते ब्रह्माबुधि भयऊ ❋ दशोवायु इन्द्री दश जयऊ

तामस ते शिव जानौ राई * आहं अन्तःकरण लखाई
अहंते भा अकाश लहिपोला * उपजे श्रवण सुनत जे बोला
नभते भई पवन अस्पर्सा * तासों भुक दृग रूपहि हर्सा
अग्निते जल रसना रस चाहै * जलते पृथिवी गन्ध जो लाहै
यकते एक प्रकट ह्वै आई * जब सिमटै सब जाइ समाई

दो॰ सत रज तम बुधि चित अहं शब्द अस्परश रूप।
रसन गन्धमिलि गांठिपरि तब उपज्यो मन भूप॥
तेहिते अन्तष्करण नृप गने जात हैं चारि।
मनबुधिचितअहङ्कारअब विरतीकहौंविचारि॥

ज्ञान विचारिशील विश्वासा * धीरजनिश्चयमतिद्युतिभासा
सुरतिचपलता अगिनउमंगा * रागआदि चितवृत्तिप्रसंगा
मैंतें मान मलिनता दोषा * अहङ्कारकी विरति सरोषा
दुखसुख भय संकल्पाविकल्पा * लाजउच्चाटन मनवृतिथल्पा
एकवस्तु बहुनाम कहाये * अन्नचून जिमि रोटी गाये
अब इनके इन्द्रिनके देवा * जेजे हैं वरणों सो भेवा

कु॰ छं॰ मनकेदेवचंद्र बुधिब्रह्मा वासुदेव चितकेरे।
अहङ्कारशिव दिशाकरणके नयन भानुसुरहेरे॥
रसनावरुणत्वचाकेमारुत नासाअश्विनिजानौ।
मुखकेअग्नि इन्द्रहाथनके देव गुदायममानौ॥
लिंगदेवपरजापतिसिरजतचरणनविष्णुविराजैं।
चौदहदेवरहत यहितनुसँग नितनिर्भयह्वैगाजैं॥

दो॰ नाड़ी चौदह सहसहैं यहि शरीर के माहिं।
तिनमा चौबिस मुख्यहैं सबकोइ जानत नाहिं॥
कमलनाभि ते दश उरध दशौ गई अधजान।
युग दक्षिण उत्तर उभय तिनमा दश परधान॥

तिन दशहुँनके नाम बखानौं * जहँ जहँबसैं सोऊतुम जानौं
बायें इड़ा पिङ्गला दायें * मध्य सुषमना तीन गनायें
बाम चक्षु गन्धारी रहई * हस्ती जिह्वा दहिने अहई
पूषाकर्ण दाहिने अहई * पुनि यशस्विनी बायें लहई
नाभी माहिं अलम्बक राजे * कहुलि नासिका माहिं विराजे
मुख अस्थान शङ्खिनी केरा * ये नाड़िनके नाम निवेरा
दश पवनौहैं यहि तनुमाहीं * निजनिजथलमें सोउरहाहीं
प्राणपवन हिरदयमें वासा * जेहितेनिशिदिननिकसतश्वासा
गुदा अपान नाभि सामाना * कण्ठ उदान सर्वतनु व्याना
नाग वायुते उठै डकारै * कूरम नयनन पलक उघारै
देवदत्त आवै जमुहाई * किरकिल छींक लगावै भाई
मुये धनञ्जय देह फुलावैं * ये दश पौन शरीर रहावैं

दो० इन्द्रिय दश तत्त्व पांचते प्रकट भई यह जानि ।
उभय उभयसों प्रीतिहै सोऊ कहौं बखानि ॥

मुखते श्रवण कहत यकसुनई * त्वचापाणि असपरसै गुनई
नयन चरणते प्रीति रहावै * नयन फँसै पदलय पहुँचावै
रसन उपस्थ भोग दोउचाहैं * गुदा नासिका नेह निबाहैं
मन इनइन्द्रिनके सुखलागी * भूल्यो ब्रह्मक्रान्ति सबभागी
ताते भयो दीन मतिहीना * मन वासा अबकहौं प्रवीना
हिरदयबीच कमल यकअहई * पखुरी आठकेरि तहँ रहई
जेहि दलपर मन बैठत धाई * तब तहँ तैसी विरति लखाई
पूरबदल पर जब चलिजावै * दया धर्म्म धीरज उपजावै
दल अगनेय माहिं पग धरतै * क्षुधा तृषा निद्रालस बरतै
दक्षिण मद मत्सर छलछोहा * अहङ्कार उपजै अरु कोहा
नयऋति दलेमाहँ हठ माया * आशा तृष्णा शङ्क गनाया

पश्चिम दल समता उपजावै * आनँद निरभय चित्तरहावै
बायब उच्चाटन सन्तापा * भय लज्जा बरतै उर पापा
उत्तर दलपर जब मन तिष्टा * हँसी विनोद कामकी चिष्टा
ईशाने सुधि बुधि सन्तोषा * क्षमाशीलसतविरतिअदोषा
मन आठौ पखुरिनपर धावै * पवन समान बार नहिंलावै
तेहि मनका शंकत कोइसन्ता * पकरिलगावतचरणअनन्ता
नातरु जगत सिन्धुमहँ भङ्गा * बाहत कर्म्म बीचिकन सङ्गा

कुं० और सुनो तत्त्व पांचते जो प्रकटे तनुमाहिं ।
काम कोह मद मोह भय बोलन नभते आहिं ॥
बोलन नभते आहिं वायुते बाढ़ै काया ।
बलकरनासुनि चलनपरसिसंकोच बताया ॥
पावकते आलसक्षुधा तृषा नींद सँगब्यौर ।
जलते मेदरु रक्तकफ बिन्द पसीना और ॥

दो० महीतत्त्वते जानिये अस्थि मांस अरुचाम ।
नारी रोमा सर्व मिलि भा शरीर बेकाम ॥
तनु झूठा झूठा करत झूठा सब संसार ।
तनु सच्चा सच्चा जगत सच्चा कर्म्म विकार ॥

तनुमें तुर्य देह है मूला * व्यापकसूक्ष्म लिंगअस्थूला
तिनकीचारि अवस्थाकुरिया * जाग्रतस्वप्न सुषोपति तुरिया
बानिहुं चारिभांति की करी * परापसन्ती मध्य बैखरी
दशइन्द्री अरु पांचौ तत्त * तिनते तनु अस्थूल अनित्त
बाल युवा वृद्धापन रोगा * सोवत जागत सीतत योगा
मल डारन नवद्वार निहारा * थूलसंग ये लगे विकारा
जाग्रत तासु अवस्था जानौ * देखतजो कछु करत पिछानौ

दो० दशौवायु अरु तीन गुण पांच मातरा भास ।

चौदह स्वर अंतःकरण यामें करत विलास ॥
पांचतत्त्व इन्द्री दशौ और पांच सँगबाय ।
सतगुणहूँ दश देवता सोइ रहा सुख पाय ॥

सोवत स्वप्न दोष कत जोई ❋ लिंग देह तुम जानो सोई
लिंग देह जे तत्त्वन केरा ❋ सोमैं तुमते करौं निबेरा
प्राण अपान समान उदाना ❋ व्यान वायु सररजतम जाना
अन्तःकरण चारि स्वर चारौ ❋ पांच मातरा सोउ निहारौ
बीस तत्त्वते लिंग शरीरा ❋ स्वप्न अवस्था तासँगबीरा
जीव नाम ताहीको परही ❋ लिये मना सोई अवतरही
कर्म करत तस भोगत भाई ❋ स्वर्गनरकमहिमण्डलआई

सो॰ जन्म मरण सुखशोग क्षुधा पिपासा जानिये ।
येषट उरमी रोग जीव संग लागे रहत ॥

लिंग शरीरनाम तब पावै ❋ जब नर अजपामें मनलावै
अजपाकिंजो सोस्मिउसासा ❋ सुमिरैनाम सहित विश्वासा
श्वास लेत राजत तमकारै ❋ जागत सोवत नाहिं बिसारै
होइ वासना तब सब नासा ❋ मिलैब्रह्ममहँजिमिजलवासा
आनँदप्राण मनोमय कोसा ❋ तिहुँन केर तनु सूक्षम पोसा
अधिक नींद सोवै जब प्रानी ❋ रहै न ताको कछू पिछानी
सूत्रातमा प्रकाशित भोपति ❋ तस्यअवस्थाआहिसुषोपति
तीनि अवस्था नासत चीना ❋ सतसँग तुरिया नित्त नवीना
ईश्वर जीव भेद मिटि जावै ❋ तुरी अवस्था सोइ कहावै
कोइ कोइ सन्त लहतहैं याको ❋ लक्षण सुनो बतावों ताको
प्रेमविवश तनुकी सुधिभूली ❋ गदगद कंठ रोम रहै फूली
कहुं उठि चलत बैठि कहुंजाई ❋ कहुं नाचत करताल बजाई
बोलत वचन औरको औरा ❋ समुझिपरतमानहुं मतिबौरा

जर्द वदन तनु चढ़त न मासू ❋ नहिंलागत जेहिक्षुधापिपासू
बूझिपरत नहिं पर्वत गाऊं ❋ कोहम कहां जात केहि ठाऊं
समचित शत्रु मित्र नरनारी ❋ समचित पुत्र पिता महतारी
हौं तू बन्धु गई सब खोई ❋ त्याग अत्याग तहां नहिंकोई
दोष अदोष मिटी भ्रमकाई ❋ निजस्वरूप सुखरहे समाई
मनचित अहंकार नहिं जावै ❋ बुधिपहुंचतपहुंचतनशिजावै

दो० जैसे पुतरी लोनकी दधिथाहत गलि जाइ।
त्यों आतम के खोजते सुधिबुधि जातहेराइ॥
ज्यों सूरज के तेजते देखिपरत रवि जात।
त्योंआतमके तेजते आतमरूप लखात॥
ऐसोमत जिनका मिल्यो तेनर जीवनमोष।
ज्योंचाहै त्योंहीरहै तिन्हैं न दोष अदोष॥

चारि अवस्था वरणि सुनाई ❋ जहँ जहँ बसैं कहौं सोगाई
जाग्रतको चक्षुनमें वासा ❋ लिंगदेह कर कण्ठ निवासा
कारण तनु हिरदै महँ राजै ❋ तुरी अवस्था गगन विराजै
परमातमा ब्रह्मको जानो ❋ सबतेपृथकजोआदिपिछानो

दो० पुरुष प्रकृति महतत्त्व निरं औगुणअन्तःकर्म।
इन्द्री सुरतत वायुतनु इनते परे जो ब्रह्म॥
परकाशक चरअचरका परमात्मा सो एक।
जैसे बहुजलकुम्भमें रविलखि प्ररत अनेक॥
आदिअन्तमधिमीशसोइ पश्यतिजेमतिधीर।
जिमिमृतपात्रअनेकविधि बसनतत्त्वगोक्षीर॥

श्लोकः॥

एकंचमृत्पात्रमनेकरूपमेकंचक्षीरम्बहुवर्णधेनुः।
सुवर्णमेकम्बहुभूषणानिचैकःपरात्माहिशरीरभिन्नः॥

दो० सो शरीर अनित्य है नित्य आतमा ब्रह्म ।
तू ताही को अंश है भूल्यो ह्वै के भर्म ॥
जैसेमन्दिर कांच के जातभयो कोइ श्वान ।
आपनि छांही देखि कै भूंकत भा हैरान ॥
जैसे मूरख सिंह ने आपन रूप निहारि ।
कूदि परेउ जल कूपमें दूजो भर्म सम्हारि ॥
यथाशचानउड़ाननभ निकसाजहँ गचकांच ।
निजतनुछांहविलोकिजड़ टूटभग्नभयच्वांच ॥
तेरेही अज्ञान ते दूजो भासत आइ ।
ज्योंबिचफूटी आरसी मुख बहुपरतलखाइ ॥
अपनेही अज्ञानसों सब से कीन्हों वैर ।
तेरो दुख तोको भयो और न दूजो गैर ॥
तातें तूही एक है नित्य अखण्ड अनूप ।
जीव ग्रन्थिको छांड़िकै लखौ आपनारूप ॥
काम क्रोधमद मोहभय रागद्वेष अभिमान ।
मैं तैंहिंसा शोक श्रम जीव लक्ष परमान ॥
जबतक इनके वश रहै गाहै गो मननाहिं ।
तबतक सपनेहुँना मिलै निजस्वरूपके माहिं ॥
जीव आतमै कर्म है परमातमा विशोग ।
जनिराखो यहि भेदका जानतज्ञानी लोग ॥
कर्म उपासन ज्ञानमत तीनि वेदके माहि ।
जो ततपरहै तिनबिषे कहियत ज्ञानी ताहि ॥
ज्ञानभानु हरिभक्ति चख कर्ममुकुर लैहाथ ।
देखिपरै निजरूप तब कहत दास रघुनाथ ॥
गी.छं.॥ शुभकर्म ज्ञानरुभक्ति तिहुँबिन जन्ममरणनछूटई ।

चहुँ जाइसुरपुर नागपुरमहि गिरतयमगणकूटई ॥
सुनिभूपऋषिके वचनत्विप्रै पुत्रशोक बिहाइकै ।
लागेकरन जप योग संयम ज्ञानमुक्तिहि पाइकै ॥

दो० कह्यो सूतशौनक सुनो ऐसा है सतसंग ।
सेनजीत नृप ब्रह्ममें भयो लीन तजि अंग ॥
सत्यदृढ़ावन मोक्षप्रद कुमति हरणत्रैशूल ।
सतसंगतिअसजानिनर कसनकरैं सुखमूल ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदाससराम सनेहीकृतसेनजीतप्रसंगवर्णनोनामअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणप गिरासुखदानि ।
श्रीहरिवंश पुराणकी कहौं अब कथा बखानि ॥
पुनिशौनक बोलतभये नाइ सूतपद भाल ।
सतसंगति महिमा कछुक कहिये औरकृपाल ॥

कह्योसूत सतसंग समाना * और न दूसर वस्तु जहाना
जो सतसंग करै मनलाई * उपजै ज्ञान मिटै भ्रमकाई
मोक्ष आदि सुख चाहै कोई * सतसंगति करि पावै सोई
जपतप योग करै व्रतदाना * सतसंगतिबिनलघुफलजाना
सतसंगति क्षणमात्रहु होई * तेहिसम तुलै न तपलखकोई
सुनौ एक इतिहास पुरानी * जाते परै महातम जानी
मुनि वशिष्ठ यकबार सुभाये * गाधिसुवनके आश्रम आये
विश्वामित्र बहुत सनमाना * रहेतहां कछुदिन सुखमाना
चलनलगे जब विधिसुतगेहा * कीन्ह विचार गाधिसुत येहा
पूजा इन्हैं दीजिये काहा * जेहितै सुखी जायँ ऋषिनाहा
लाख बरष जो तपमैं साधा * तेहिमामुनिहिंदेउँअबआधा
करि संकल्प दीन ऋषिराई * पाइ वशिष्ठ चले हरषाई

दो० यकदिन विश्वामित्रहु गे वशिष्ठके भौन ।
तिन दीन्हों सतसंग फल उभयघरी करजोन ॥

गाधिसुवनमुनि कह्यो रिसाई * मैंतोहिं तप दीन्ह्योंअधिकाई
तेहिसमयुगलघरीकिमिकीन्ह्यों *न्यावचुकावनदोउचलिदीन्ह्यों
आये शम्भुतीर कैलासा * तिन पठयो ब्रह्माके पासा
तबदोउऋषय ब्रह्मपहँ गयऊ * सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
चतुरानन अस कहा विचारी * जाहु दोऊ हरिपास सिधारी
सुनिविधिवचनदोऊमुनिनाथा * जाइ विष्णुपद नायो माथा
गाधिसुवन बोले हरषाई * नाथ न्याव इकदेहु चुकाई
हमरे भवन गवन इन कीन्हा * जसकछुबनासोआदरदीन्हा
बिदाहोत तप सहस पचासा * इनदीन्ह्यों मैं सहित हुलासा
हौं चलिआयों इनके धामा * कछुकदिवस कीन्ह्योंविश्रामा

दो० चारिघरी सतसंग इन कीन्ह्यों स्वप्न मँझार ।
तेहिमाते युगदंड मोहिं दीन्ह्यों चलतीबार ॥

दुइमाते काहे अधिकाई * यहै न्याउ प्रभु देउ चुकाई
सुनिमुनिवचनविष्णुअनुमाना * ऋषिसतसंगप्रभावनजाना
जो मैं बहुविधि कहब बुझाई * तबहुँ न इनकी संशयजाई
असमनसमुझिकह्योश्रीनाहू * दुइमा एक शेष पहँ जाहू
तिनका लावहु इहां लिवाई * पुनि प्रभु सहित चले हरषाई
जाइ शेष पहँ भाष्यो हाला * कह अनंत जो तुम यहिकाला
धरहु धरणि दुइमाते कोई * देहुँ चुकाइ न्याव मैं सोई
कहऋषिलाखबरषतपकीन्ह्यों * तेहिमा अर्द्ध वशिष्ठे दीन्ह्यों
आधारहा हमारे पाहीं * तेहितप तेज मही रहिजाहीं
धारेउ शीशशेष शिरटाला * सधीनक्षितिऋषिभयेविहाला
तब विधिते हरिकह्यो बुझाई * सुनि वशिष्ठ बोले हरषाई

चारिघरी स्वप्नेके माहीं * साधुसंग कीन्ह्यों बहु नाहीं

दो० उभयघरी ऋषिका दिह्यों रही उभय मम पास।
ताके फल बल भूमि यह घटपर करौ प्रकास॥

सुनिशिरखैंचिलीन्हअहिराऊ * महिरहिगै सतसंग प्रभाऊ
संगप्रताप देखि अधिकाई * गाधिसुवन तब रहे लजाई
योग तपस्या त्यागन कीन्ह्यों * सतसंगतिमें तनमन दीन्ह्यों
अस सतसंग अहै ऋषिराई * और सुनो अब कहौं बुझाई
द्विज इकरहा बड़ा अविचारी * तस्करकर्म करै सहिगारी
सो इकदिवस नर्मदा पासा * गयो तहां निवसै हरिदासा
तिनकी चोरी करिबे हेता * बसतभयोनिशिसन्तनिकेता
कथा भई कछु बार तहांहीं * अनमन बैठिरहा तिन पाहीं
जब रजनी बीती युग यामा * तबहरिजनकीन्हेनिविश्रामा
सोवत जानि विप्र अरु गाई * चोरी करनलाग हरषाई
लखियमराजक्रोधअतिकीन्हा * बोलि दूत अस भाषै लीन्हा
यहिं भक्तनकी कीन्हेसि चोरी * लावहु वेगि नरक महँ बोरी
वह द्विजहै सन्तनके ठाईं * ताहि लेन कौनीविधि जाई
कह्यो धर्म्म जौनीविधि पावो * तौनी भांति यहांतक लावो
सुनत दूत यक तक्षक भयऊ * हरिजनधामतहांचलिगयऊ
मन्दिर निकटरहा लगिबाटा * निकसाद्विजचोरायअहिकाटा
जलपतजानि सन्त सब धाये * चरणोदकतुलसी मुख नाये
रामराम कहु राम बखाना * इतने माहिं मुक्त भे प्राना
मुदगर मारि डारि गर फांसा * दूत लैआये यमके पासा
लखि द्विजधर्म्म तेलऔटायो * बरत कराहमांझ डरवायो
भयो सनेह सुरभिसम ताहीं * करै अनन्द परा तेहि माहीं
बहुरि बरत खम्भा भेंटवायो * शीतलभा गोला औटायो

पियत सीसभा अमीसमाना * अमियनागभैसलिलकृशाना
लोहा कांट सुमनसम भयऊ * तबतो डारि नरकमहँ दयऊ
विष्ठा पीब कीट सब भागा * धर्मराजलखिअचरजलागा
करत विचार मनहिंमन लाये * ताहिसमयऋषिनारदआये
बोले वैवस्वत करजोरे * नाथ एक बड़ि संशय मोरे
यह पापी अतिचोर लबारी * ताहिदीनहम सांसति भारी
याके दुख कछु भयो न राई * सो कारण मुनि जानि न जाई

दो० धर्मराजके वचन सुनि बोले ऋषि हरषाय।
याहि मँगायो कहां ते सो मोहिं देहु बताय॥

तब रविसुत सबहालबखाना * जेहिविधिसंतनढिगतेआना
सुनियमवचनकहा ऋषिराजू * बड़ अपराधकीन तुम आजू
संत महातम तुम नहिं जाना * जिन्हैं बखानत वेद पुराना
जगमहँनाहिंकोइसन्तसमाना * जिनवशसदा रहतभगवाना
दासी शिशु मैं पाइ उछिष्टा * विधिसुतभयोंऋषिनमहँशिष्टा
बूझेहुँ हरिते संग प्रभावा * तिनमोहिंजलचरपासपठावा
देखत मरेउ धरेउ वपु आना * पुनिशुकपहँपठयो भगवाना
सोऊ निज शरीर तजि दयऊ * तब नृप सुतते बूझत भयऊ
देखत आवा दिव्य विमाना * तेहिचढ़िबोलासुवनसुजाना

दो० प्रथमै मैं जलचर रह्यों जहां दरश तुम दीन।
तेहि फलपायों कीरतनु तहौं कृपा तुम कीन॥
शुकतनुतजि नृपसुत भयों पुनि भे दरश तुम्हार।
अब नभ जात विमान चढ़ि इतना लखा हमार॥

सो० सम्भाषण अस्पर्स करै धरै जो सेव उर।
तस्यसुकृतफलसर्स कहिनसकतश्रुतिसहसमुख॥

सुनि मोरे मन आनँद छावा * संतप्रभावअमितलखिपावा

रहे विप्र यह तिनके पासा * तुमअहिवनकतकीन्ह्योग्रासा
साधुन राम राम जब टेरा * काहेन छांड़ि दिह्यो तिहिबेरा
अब ते कहा मानि मम लीजै * याको पठै धाम हरि दीजै
अस शौनक सतसंग प्रभावा * बड़पापी परधाम सिधावा
वायुपुराण केर इतिहासा * यह मैं तुमते कीन प्रकासा
नलिनीदलगत जललवजैसे * नर जीवन है चंचल तैंसे
क्षणही सज्जन संगति करई * तेहिनौकाचढ़िभवनिधितरई
चहुँयुगचहुँश्रुति कहबुधलोई * बिन सतसंगति तरै न कोई

ह॰छं॰ सतसंगबिननहिंतरतभवनिधि दानव्रतबरुबहुकरै ।
अस जानि जे नर चतुर करि सतसंग हरिनामैंररै ॥
जगआइ नरतनु पाइ सपनेहु साधुके ढिग ना गयो ।
तेहि जानिये पशुसरिस मानुष देह भै तौका भयो ॥

दो॰ साधुन के सतसंग की महिमा अगम अपार ।
वरणी जन रघुनाथ कछु निजमति के अनुसार ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतसत्सङ्गमाहात्म्यवर्णनोनामएको
नचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

दो॰ सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं नवमअस्कन्धमत कछु ब्रह्मांड बखानि ॥

बहुरि सूत बोले मृदुबानी * सुनो कथा ऋषि कहौंबखानी
एकबार यमराज प्रवीना * आपन दूत बोलि सब लीना
कह्यो कि मृत्युलोकके माहीं * तुम्हरा कोइ दुसरिहा नाहीं
एक बात यह जाने रहियो * साधुनको कर कभूं न गहियो
वे तो हैं परमेश्वर प्यारे * रहैं राम कर बाना धारे
वैष्णव सबठां पूज्य सदाहीं * स्वर्ग रसातल भूतल माहीं

स्वर्गदेव अहितल अनुसरहीं ❋ मनुजपूज्यमाँहिनिजहितकरहीं
तेहिते जो तुमहूं लखिपायो ❋ तुरत दूरिते शीश नवायो
जो मम आपनि चह्योभलाई ❋ तो न सतायो संतहि जाई
साधु दुखावै त्रैफल पावै ❋ तन धन कुटुँब नाश ह्वै जावै
जिन जिन वैर भक्त सों ठाना ❋ पायनि दुख बहु सुनौ प्रमाना

दो० हिरणाकुश प्रह्लादते दुर्योधन पंचालि ।
कंस उग्र रावण अनुज भे सुकंठ अरु बालि ॥

दुरवासा ऋषि बहुदुखपायो ❋ अम्बरीषते वैर बढ़ायो
नृपनृग भे गिरगिट जगजाना ❋ श्वपच भक्त को मरद्यो माना
धृष्टबुद्धि गा आपुइ मारा ❋ चन्द्रहास का मरण विचारा
सुरति सुधन्वा ते गस ठानी ❋ शंखलिखितमुखछविभैहानी
सुनत दूत बोले करजोरी ❋ कहो नाथ विस्तारि बहोरी
केहिविधि दुर्वासा गे जारे ❋ धृष्टबुद्धि गे केहिविधि मारे
नृगगिरगिटभेकेहिविधिआई ❋ पृथक पृथकसबकहो बुझाई
कह रवितनय कहौं मतियथा ❋ प्रथमै अम्बरीषकी कथा
राजा अम्बरीष बड़ साधू ❋ तिनके उरमें क्षमा अगाधू
सब मन कृष्णचरण में राखै ❋ मुखते रामकथा नित भाखै
करसों हरिमन्दिर वर झारै ❋ नयननते प्रभुरूप निहारै
शिरसिश्यामपदकरतप्रणामा ❋ रसनै प्रियप्रसाद प्रभुनामा
श्रवणनि सुनै चरित हरिकेरे ❋ अपरकाजके जात न नेरे
कहँलगिकहौंचरितमैंतिनके ❋ व्यजनाहरिहिडोलायोजिनके
तिनके भवन गये दुर्वासा ❋ तादिन व्रत नृप रहे उपासा
ऋषिहिदेखि भूपतिसुखपायो ❋ दीन निमंत्रण सबै टिकायो
रैनि जागरण करि उत्साहू ❋ होत बिहान उठे नरनाहू
प्रातक्रिया करि आइ महीशा ❋ जान्यो दुवादशी पल तीशा

बूझा गुरुहि बोलि का कीजै * पारणहमअबकेहिविधिलीजै
मुनिकी पूजाहै युगयामा * होत विरोध किहे दोउ कामा
भृगुमुनिकहा शिला हरिधोई * करहुपान कछु दोष न होई

दो० गुरुकी आज्ञा पाइके नृप चरणोदक लीन।
दुरवासाऋषि जानि तहँ आइ क्रोध अतिकीन॥

रे नृप हमैं निमंत्रण दीन्हे * तोहीं प्रथम पान जल कीन्हे
क्रोधअगिनिते तवकुलजेता * करहुँ भस्म शठ तोहिं समेता
असकहिपटक्योजटाविशाला * प्रकटी तुरत अगिनिकी ज्वाला
सम्मुख चली भूपके जबहीं * नरपतिरामहिं सुमिरेउतबहीं
चल्योसुदर्शनचक्रकराला * अगिनिखाक करिमुनितबचाला
भागे ऋषिगे अज शिरनाई * तेहिक्षण बृहद ब्रह्मपुर छाई
कीन्ह बिदा ब्रह्मा बरिआई * हरिद्रोही को सकै बचाई
तब गे ऋषि शंकरके पासा * देखिशंभु अस वचन प्रकासा
पढ़्यो पुराण शास्त्र सब वेदा * जान्यो नहिं भक्तनकर भेदा
महाप्रलय महँ बचत न कोई * तबहुँ न नाश भक्त कर होई
अचल धाम साकेत विहारी * निवसत तहां दिव्यवपु धारी

श्लोक ॥ मार्कण्डेयपुराणेसदाशिववाक्यंदुर्वाससंप्रति ॥ महति प्रलयेब्रह्मन् ब्रह्माण्डस्तुजलप्लुतः । न तत्र नाशो भक्तानां सर्वेषां च विशिष्यते १॥

ताते जाहु यहांते भागी * नाहितजरी नगर ममआगी
तब वैकुण्ठ गये दुर्वासा * व्याकुलगात वचनपरकासा
हे ब्रह्मण्यदेव आरतिहर * शरणपाल पूरण करुणाकर
हाय हाय प्रभु लेहु बचाई * चक्र सुदर्शन देहि जराई
सुनु द्विज कहा रमापति टेरी * म्वहिं नहिं शक्ति बचावनकेरी
हैंयहिविधि अगणित गुणमेरे * भक्तवसलता के सब चेरे

यथा तमारि तेजके पासा * दीपोगणनहिं करत प्रकासा
भक्तन पराधीनहौं कैसे * पत्ती बँध्यो डोरिमहँ जैसे
साधुन मेरो उर अस कहेऊ * तिनतजि त्तणहूंजातनरहेऊ
दारागार पुत्र अपताना * तनधन मोह मानि कल्याना
सकल त्यागि मम शरणै आवैं * ते हमते कैसे तजि जावैं
प्राणतेअधिक भक्तप्रियमोहीं * दुरवासा समुझावों तोहीं
तिनते वैर कीन्ह तुम जाई * भागो यहां न रहे भलाई
होत कसूर मोर कछु भाई * तों मम कहे माफ ह्वै जाई
सदा दास मम की रखवारी * फिरहि चक्र को सकै उबारी
ताते जो निज चहौ उबारा * तो फिरि जाउ भूप दरबारा
बड़े दयालु दीन दुखहारी * देखत तुमकहँ लेहैं उबारी
ऐसे वचन कहे जगदीशा * सुनिऋषिचलेकाटिजनशीशा
अम्बरीष ढिग पहुँचे जाई * भे शीतल नृप लीन बचाई
पदपखारि भोजन करवाये * तिनपाछे उठि आपहु पाये

दो० लज्जित ह्वै ऋषिराज तब कीन्हों तप वन जाइ।
भावै सो वर मांगिये कह्यो रमापति आइ॥
दुरवासा बोले विहँसि यह वर दीजै मोहिं।
दशसहस्र अँबरीषही जन्म धरन कहँ होहिं॥

सो० सुनि बोले भगवान अम्बरीष मम भक्त है।
सो न धरी तनु आन देन कह्यों सो लेहु तुम॥

जन्म हजार आनके जोई * मम अवतार एक सम होई
ताते अम्बरीष हित लागे * दश अवतार धरब हम आगे
सहजस्वभावप्रणतअनुरागी * नरतनुधरेउ दासहित लागी
असप्रभु प्रणतपालकोआही * भजिबेयोग्यभजियजगजाही
अपर देव आपै वर देवै * आपै मरण मांगि मुद लेवै

रामभक्ति बिन केवल ज्ञाना * सोउ निरस श्रम साधन नाना
जैसे विना पुरुष की नारी * केहिते दुख निजकहै बिचारी
पदबेलन्द परे जो पाऊं * तो लोकौ परलोक न ठाऊं
सौभागिनी करै कर्म खोटा * तऊताहिबड़ि पतिकी ओटा
गोपीगोप पाण्डु सुत पांचा * कौनकुकर्म्मकरत तिनबांचा
कृष्णकृपा सबठां जयपाई * यज्ञऋषभ निज देह जराई

दो० भगवतगीता में कह्यो अर्जुन ते गोहराय।
भक्ति योग छीजे नहीं सब दिन वर्द्धत जाय॥
भ्रष्ट भये पन्थी सरिस कीन पन्थमें वास।
भोरभये पुनिचलि मिल्यो तिमि मोकोममदास॥
दैवी माया गुणमयी महादुरत्यय पात।
मम आश्रय ह्वै अधमसो बिन प्रयास तरिजात॥

इति विश्रामसागरअम्बरीषकथावर्णनोनामचत्वारिंशोध्यायः ४०॥

दो० सुमिरिरामासिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
वरणौं जैमिनिकी कथा कछु नृपनीति बखानि॥

पुनि यमराज कह्यो मृदुबानी * अम्बरीषकी कथा बखानी
अब सुनु दूसरि कथा सुनाऊं * भूप एक केरलपति नाऊं
तिनके तनय भये चँद्रहासू * मूलनक्षत्र जन्मभा तासू
कछुदिनबादिविपतिअसिजागी * शशिहासै धाही लैभागी
कुन्तलपुर कुन्तलय नरेशा * जेहि नृप सब करदेहिं हमेशा
तस्य देवान धृष्टबुधि नामा * रही आइ धाही तेहि धामा
करि किंकर पालत सुत सोई * तिनकर भेद न जानत कोई
यहिविधि भये वरष षट केरे * बुद्धिमान अतिरूप घनेरे
तेहियकदिन ब्रह्मभोज प्रकासा * जुरेऋषयतहँगे शशिहासा
विषया नाम सुता निज लीन्हे * बैठ देवान चिह्न द्विज चीन्हे

यहि कन्याका याही बालक * बरी विशेषि कह्यो उद्दालक
अहंसुतापति यहिविधिचाही * दुष्टबोलि वन पठयो ताही
जाइ तुरन्तर बोले सोई * लेउ धाइ जो तुम्हरे होई
पिता मात पाये इत आयो * तिन हमका वध हेत पठायो
है यक गोली सुखद हमारी * भजिलीजै पुनि डारोमारी
रहे गण्डकी सुत मुख बीचा * पूज्यो मानस शिर करि नीचा

दो० तदाकार ह्वै हतन हित दई नयन की सैन।
लखि जल्लादन के कठिन भई दया उरऐन॥
हरि प्रेरित रघुनाथ खल बोले आपुस माहिं।
ऐसो सुन्दर बाल यह वधन योग्य है नाहिं॥
छठी आंगुरी कर रहै काटि लिहिनि सोइ चीन्ह।
शशिहासै वनछांड़िकै जाइ देवानै दीन्ह॥

सो० छांहकिये खगभाल चहुँदिशि बैठे घेरिमृग।
आयो इक महिपाल नाम कुलिन्द अपुत्र सोइ॥

चन्द्रहास लखि लीनउठाई * प्रमुदित मनहुँ रंकनिधिपाई
गा लै भवन कीन उतसाहा * दिहिसिदानजाकोजसचाहा
निजसुतसमुझिपढ़ावतभयऊ * पुनिनृपराजतिलकसोदयऊ
लागे करन राज हरषाई * पालहिं प्रजहिं सुखीसब भाई
मनक्रम करै भक्ति हरिकेरी * सन्त समागम प्रीति घनेरी
गृहगृह प्रति हरिगुणगण होई * रामनाम सुमिरत सब कोई
जो कोइ भक्त भवन चलिआवै * करि प्रणाम आसन बैठावै
षोड़श भांति पूजि सनमानै * हरिहर जनमें भेद न आनै
एकबार निज कटक बनाई * सुदिन साधि नृपचढ़ा बजाई
जहँतहँ परी मारु नृप जीते * कोइकोइ आइ मिले भयभीते
सबसों रामभक्ति कबुलाई * करन कहै तब देवै जाई

यहि प्रकार नृप जीति बसाये ॥ पुनिनिजपुरचँदनावतिआये
पितै पूंछि अरु मानि बड़ाई ॥ नृप कुन्तलपै चौथि पठाई
पहुँचे भृत्य भूप दरबारा ॥ दीन देवान खजाने डारा

सो० उतरे ताही धाम हरिवासर तेहि दिनरहे।
रामराम सियराम कहि निशि कीन्हों वाससब ॥

भोरभये जागे सब प्राणी ॥ आइ देवान कही कटुवाणी
का कुलिन्द राजा तब पायो ॥ हायहाय करि राति बितायो
बोले सेवक राजै कोई ॥ मराकहै मरिगा सोइ होई
हमरे नृपकर सुत अस भयऊ ॥ सब भूपन ते कर निजलयऊ
इन्हें जानि जन चौथि पठाई ॥ सुनि देवान मन संशय आई
सुत कुलिन्द के रहै न कोई ॥ भयो कबै सुनि बोले सोई
भूप शिकार गयो यकबारा ॥ मिल्योतहांयकसुभगकुमारा
आनिभवन सुतमानि पढ़ायो ॥ दीनराज्य तिन भक्ति बढ़ायो
सुनि देवान विस्मय उपरेजा ॥ सोइ न होइ जेहि मारन भेजा
तुरतै गयो महीपति पासा ॥ हाथजोरि असवचनप्रकासा
नाथ सुता मम भई सयानी ॥ नृपसुत यक ठहरत वर जानी
जो राउरकी आज्ञा पावों ॥ महूंदेखि निजनयनन आवों

सो० सुनि नृप आयसु दीन तुरत भवन निज आयहू।
बोलि मदनसुतलीन कहेसि जाव वर खोज हित॥

ह्वै तयार चँदनावति गयऊ ॥ चन्द्रहास लखिआदरदयऊ
धृष्टबुद्धि सोइ बालक देखा ॥ बहुरिविचारेउ मरणविशेखा
दुखद दुष्ट अहिमंत्राधीना ॥ खलवशहितविधिकछूनकीना
ऊपर हित अन्तर कुटिलाई ॥ बोला वचन निकट बैठाई
खरच भूरि तुम्हरे लघु लाभा ॥ बहुरिचहत मोहिं देवै काभा
जो इहवां आवे मम बस्ता ॥ तौ करि देहुँ तुम्हैं मैं सस्ता

कह चँद्रहास कौन विधि आवे * तुम बिन वहां न कोऊ पावै
ताते तुमहीं जाउ सिधाई * चीन्हत वहां तुम्हैं सबभाई

चा.छं. और एक काम धाम लोग बाग यों कहीं ।
जात चंद्रहास को पठाय दीजियो सहीं ॥
देखिबे किं लालसा देखाइ देइ आइये ।
कग्दही मदन्नते जु वेगि मांगि लाइये ॥

असकहिखलइकचीठीकीन्हों * तामेंयह श्लोक लिखिदीन्हों

श्लोक ॥ विषमस्मै प्रदातव्यं त्वया मदन शत्रवे ॥
कार्य्याकार्य्ये न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं किल मे प्रियम् १ ॥

लैखत चन्द्रहास चलिभयऊ * मारत हय कुंतलपुर गयऊ
भूप वाटिका देखि सोहाई * उतरि नहान्यो सर सुखपाई
हरिपूजन करि वसन बिछावा * बांधि अश्व सोये तेहिठांवा
ताही समय महीप कुमारी * सखिनसहित आईफुलवारी
चम्पकमालिनि नाम सुधन्या * विषया नाम देवान कि कन्या
चन्द्रहासको देखि लोभानी * पाग पत्र खोल्यो निजपानी
बांचि पितहि खीझी मनमाहीं * मारन योग कुँवर ये नाहीं
काजरुपोंछि दृगन ते लीन्हो * विषजहँतहँविषयालिखिदीन्हो
शम्भु शिवा बारेते सेई * होहु प्रसन्न मिलैं वर येई
छविमय मूरति हृदय बसाई * नृपजासहितभवननिजआई
चन्द्रहास जागे लखि बारा * आये क्षिप्र देवान दुवारा
भेटि मदन कर पाती दीन्ह्यो * बांचि वेगिबड़आदरकीन्ह्यो
तुरत पुरोहित लीन्ह बोलाई * दई ब्याहि विषया सुखपाई
हरषित युवतिन मंगलगाये * विप्रनदान विविध विधिपाये
बाजैं बाजन राग मिलावैं * नाचैं नटी चटपटी लावैं
दुसरे दिवस देवान सिधावा * वेगवन्त निज पुरका आवा

भाटन कीरति विरचि सुनाऊ * श्रवणसुनतजनुलागतघाऊ
भवनजायसुत दूलह देख्यो * राग रंग बहुभांति परेख्यो
जरे अंग सुत बोलि रिसाना * किहे कहा जस तव परवाना
बांचि पत्र शिर पीटन लागा * लिख्यों कहामैंमन्द अभागा
पुनिमारनहित रचेसि उपावा * सुता अनाथ रहे मोहिंभावा
चन्द्रहास यद्यपि पग परेऊ * तद्यपि दुष्ट दया नहिं करेऊ

दो० दुष्ट न छांड़त दुष्टता कैसो होय अधीन।
ज्यों जलकोमल में चलै जोंक वक्रगतिलीन॥

पुत्रै नृप दरबार पठायो * आपु उभय जल्लाद बुलायो
बोला जाउ शक्ति मठ दोऊ * डारेउ मारि जो आवै कोऊ
तब शठ चंद्रहास ते बोला * आवहु पूजि देवि कुलमोला
सुनत चले करतलधरि थारा * त्यही समय कुंतले भुवारा
बोला गुरुते शीश नवाई * होइ सुगति जेहि कहौ उपाई
कहगालवऋषिसिखसुनिलीजै * राजसुता चँद्रहासै दीजै
सबसों नेह गेह तजि राई * सीतापति सुमिरो वन जाई
सुनि नृपकहा अबै कोउ जावै * चन्द्रहास ममपास लै आवै
मदन विचारि तुरतउठिधायो * पूजन जात पंथ में पायो
बोला चलो भूप बोलवाया * देई राज्यकाज निज आया

शि.छं. देवी पूजे हौं जावों। राजापै कैसे आवों॥
थारी मोको लावोजू। राजातीरा जावोजू॥

देवी पूजे मदन सिधाये * चन्द्रहास राजा ढिग आये
देखतब्याहि सुता निजदयऊ * राजतिलककरिवनका गयऊ
इहां मदन गे शक्तिनिकेता * दुष्टन मारो खड्ग सचेता
धड़ते मुंड बिलग करि दीन्हे * असफलखलसंगतिकेकीन्हे

दो० दुष्ट संगती जो करै ताहूको दुख होय।
देह जीव खोरिया घरी शिर रसना मति जोय॥
देखि हाल काहू कहो धृष्टबुद्धि सों जाय।
आयनिरखिसुतशिलाशिरपटकिमराकहिहाय॥
जो जनका अनभल तकै सोइ जाय शठ खीश।
ज्यों रजते मारै रविहि उलटिपरै निजशीश॥

चन्द्रहास सुनि यह सबहाला ✱ निरवैरी सम सन्त कृपाला
आयो चलि देवी के धामा ✱ कीनशक्ति लखिदंडप्रणामा
बोली ये दोउ शत्रु तुम्हारे ✱ महीं क्रोधकरि आजु सँहारे
मांगहु वर जो तुम्हैं सुहाई ✱ देहुमातु फिरि इन्हैं जियाई

छ. छं. तस्करके कुत धर्म दुष्टके कुत गम खाना।
किरपिनके कुत दान मूढ़के कुत विज्ञाना॥
कसबी के कुत लाज शान्ति कुत नरकामिनिके।
व्यसनीके कुत द्रव्य धाम कुत खल भामिनिके॥
हिंसकके कुत दया दिल कपटीकेकुत मित्रसग।
कहैरघुनाथसनाथइमिहरिजनकेकुतशत्रुजग॥

दो० दुर्जन तजै न दुष्टता सज्जन तजै न हेत।
कज्जल तजै न श्यामता मोती तजै न श्वेत॥

सुनि जियाय देवी दोउ दीन्ह्यो ✱ सन्तसतायेकर फल चीन्ह्यो
कीन राज जल पंकज नाई ✱ दीनि भक्ति भुवमें फैलाई
हैनजनै वृष दवजल जारै ✱ यथा भूप तस प्रजा प्रचारै
जो यह कथा सुनै वा कहई ✱ धन वृधि होय हर्ष में रहई
फल जैमिनिमें बहुविधिराखा ✱ याते हौं संक्षेपै भाखा
देखो हरिजनते करि द्रोहा ✱ आपुइ दुखपायो वश मोहा
असिहरिभक्तिसुखदछलत्यागी ✱ तनुधरिकरै सोइ बड़भागी

दो० यस्य न विद्या दान तप जप न शील गुण धर्म।
ते मनुष्य महि भार हित प्रकटे नाहक ब्रह्म॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृत चन्द्रहासआख्यानवर्णनोनाम
एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं उत्तरा अर्द्धमत कछु धर्मोत्तर जानि॥

पुनि रविसुत दूतनते कहेऊ * चन्द्रहासगुणसुनितुमलहेऊ
औरसुनो यक भयो भुवारा * नाम निरगजानत संसारा
चक्रवती नृप नीति निधाना * ठानै धर्म अनेक विधाना
हरि विषाण खुर रजत मढ़ाई * जलजलूमगहिवसनओढ़ाई
सुरभी सहस विप्रकहँ देवै * तेहि पाछे जल अन्नहिं सेवै
तेहिपुर श्वपचभक्त यक रहई * देवक नाम ताहि सबकहई
सुजन जानि हरि दाया कीन्ही * कामधेनु तेहिका प्रभु दीन्ही
पुरवासी विप्रन लखि पाई * आइ भूपते बात चलाई

सु० छं० महाराजहै डोमके एकगाई। नहींदूसरी तासमाभूल खाई॥ सुनीस्वर्गकेमाहिंहै धेनुऐसी। नजानीश्वपच ने लहीभांति कैसी॥ भली भांतिते जो इसे दानदेवै। मखैको टिहूते परेपुण्यलेवै॥ सोताते गऊआनि विप्राहिदीजै। अमितपुण्यकोफल इसीयोसलीजै॥ महीपालसुन्तै हियेलोभ कीन्हों। कहीमोललावो अभीदामदीन्हों॥ गयेविप्रबोलेबि कल धेनुतेरी। जुबेचौकहाहौं नहींगाइमेरी॥ प्रभूकीअहैमो गपयको लगावौं। बचैजौनिजूठन्महूंताहिपावौं॥ भयोक्रोध विप्रैगयोभूपपारी। कह्योनाथशूपचकेहै मानभारी॥ गऊको दुहैक्षीरघृतआपुखावै। तुम्हैंलेतजानी प्रभूकीबतावै॥ पशु

शूद्रनारी शठंढोलयावत । विनादंडदीन्हे नहींठीकआवत ॥

दो० कह महीप विप्रहु सुनो शूपच है हरिदास ।
ताहि सतावै सोइ जो चहै निरयको वास ॥

ताते हौं न सतावब साधू * पुण्यकरत होई अपराधू
बोले विप्र बहुरि हरषाता * स्वारथ रत अधर्म की बाता
सुनहु भूप यहहै चण्डाला * कहाभयो पहिरे गलमाला
श्वानखाल गंगाजल होई * ताहि पवित्र कहै नहिं कोई
चीर धरै मदभाजन माहीं * होत कबहुँ सो पावन नाहीं
तैसे भक्ति शूद्रकी राजा * ताहि सताये कछु न अकाजा
मानहु पितर विप्र सुर गाई * होत महाफल जिन सेवकाई
यहिविधिद्विजनकहासमुझाई * सुनिनृपके मन दुर्मति आई
बुद्धिमान कैसो होइ कोई * कहे सुनेते मति भ्रम होई
तब नृप सेवकते अस भाषा * लावहु छोरि धेनु करि माषा
आयसुपाइ तुरत जन धाये * बरबस सुरभि भक्तकी लाये
भक्तद्रोह लखि श्रीपति आपू * द्विजमुख नृपै देवायव शापू
निजअपराधप्रभुजात बचाई * भक्तदोष सो नहिं सहिजाई
सोइ सुरभी अरु गऊ हजारा * दई विप्र कहँ एकै बारा
मुदित महीसुर ल्यायो धामा * फिरि आई सुरभी तेहि ठामा
दूजेदिन नृप दान जो कीन्ह्यो * सहस संग ताहूको दीन्ह्यो
हांकिविप्र निजभवनसिधावा * हेरत फिरत प्रथम जेहि पावा
बोला प्रथम मोरि यह गाई * दूसर कहै आज मैं पाई
झगरत ये गे नृप दोउपासा * क्रोधितह्वै असवचनप्रकासा
रे नृप तू अतिहै अन्याई * धेनुदिहेसिफिरिलिहेसि फिराई
बोले भूप क्रोध जनि कीजै * सहस धेनु यहि बदले लीजै
बोला प्रथम विप्र सुनु राई * मैंतो लेब यहै निज गाई

अपरदेउ तुम कोटि समाजा * तदपिहोइनहिंयहिसमराजा
दूसर कह्यो मोहिं का कहई * दैके दान लीन अब चहई
दुविधा परि नृप शोच बढ़ावा * मूड़ हलावत वचन न आवा
शीशतोरि गिरगिटसमकांपा * गिरगिट होउ हमारे शापा
कहनृप वचनअमोघ तुम्हारा * होई किमि उद्धार हमारा
करुणाकरि सो देउ बताई * सुनि बिनती बोले द्विजराई
द्वापरयुग यदुवंश मँझारा * कृष्णचंद्र लेहैं अवतारा
सुनु नृप तिनके चरणसनेहा * छूटी तव गिरगिट की देहा
असकहि द्विजनिजमंदिरगयऊ * काल पाइ यमगण गहिलयऊ
लैगे दूत धर्म दरबारा * पापपुण्य का कीन विचारा
पुण्यते पाप भयो अधिकाई * प्रथमै कहा भुगतिहौ राई
बोले भूप बहुत जो होई * प्रथमै मोहिं भोगावो सोई
इतना कहत न लागी बारा * गिरगिटका तनु धर्यो भुवारा
द्वारावती निकट इक कूपा * लाग्यो रहन तहां नरभूपा
दिव्यवरषशतजबचलिगयऊ * तब अवतारकृष्णकरभयऊ
बालचरित कर कंसै मारी * बसे आइ द्वारका मँझारी
तहँ इकदिन प्रभु यदुनसमेता * आये वन शिकार के हेता
लागि तृषा सब भये दुखारी * ढूंढ़हु जल अस कह्यो मुरारी
खोज करत पावा सोइ कूपा * किरिकिल देहधरे जहँभूपा
लागे सब काढ़न यदुवीरा * तबहुँ न निकसै अधमशरीरा
विप्रशाप अरु हरिजन कोपा * निकसै किमि पापनते तोपा
यदुन आइ तब हरिते कहेऊ * सुनिआये जहँ नृग नृपरहेऊ
वामचरणअसपरश्यो जबहीं * दिव्यस्वरूप भयो नृपतबहीं
देखि चरित बोले यदुराई * को तुम अहौ कहौ सो गाई
कह नृप मैं हौं निरग नरेशा * जाकरदान विदित सबदेशा

महिरजजलकणनभउड़जाना * गनिनजातजिमितिमिममदाना
कह हरि कीन्ह्यो दान अपारा * कौनहेतु गिरगिट तनुधारा
तब नृप सब वृत्तान्त सुनावा * जेहिकारणगिरगिटतनुपावा

दो० दान विभूषण लोकमें दान स्वर्ग सोपान।
दानदलै दुख दोष नहिं दान सरिस हितुआन॥

सुनि बोले गिरिधर करिछोहा * अब जनि कर्‍यो भक्तते द्रोहा
ममजन मोहिं प्राणते प्यारे * सदा रहत जे शरण हमारे
करहुँ सदा मैं तिनकी रच्छा * सँगसँग फिरौं यथागोबच्छा
ममजन दिशितिरछेलखकोऊ * लेहुँनिकारि तासु दृग दोऊ
जो ममजनहिं चलावै हाथा * डारौं काटि तासुकर माथा
जो ममजनते वैर बढ़ावै * देहुँ मिटाइ रहन नहिं पावै
पत्त मास संवत त्रय पांचा * मध्यविनाश वचनममसांचा
तेहि पाछे यम दुख चौरासी * खरकूकर शूकर तनुपासी
जो मम जनकी सेवा करई * मानहु मम सेवा अनुसरई
यद्यपि हौं स्वतन्त्र सब भांती * तदपिरहतजनवशादिनराती
भक्त हमारे बांधव प्यारे * हम भक्तन के बंधु पियारे
मेरे भक्त गुरू हैं मेरे * हौं गुरु उनकर वे मम चेरे
जहँममभक्त सकलसुखतहँवां * गंगादिक तीरथसब जहँवां
मेरे भक्त लगत जेहि प्यारे * ते वल्लभ हैं परम हमारे
विषयिउ भक्त होइ जो कोई * अहै पवित्र तबहुँ जन सोई
जिमिमाशिशुहिसँवारिसभीती * देतदिठोना तिमि ममरीती
भक्तदोष जो मनमें लावै * सो नर नीच निरय दुखपावै
कीट पतंग आदि जो कोई * मुक्तिक्षेत्र सबकी गति होई
वैष्णव द्रोही सुगति न पावै * आगमशास्त्रवचनअसगावै

श्लोक ॥ मुक्तिःकीटपतङ्गानां सर्वेषामिहदेहिनाम् ॥
मुक्तिःक्षेत्रमिदंप्राप्यवैष्णवद्वेषिणोविना १ ॥

भक्तनकी निन्दा जो करई * सोनर प्रकट कोललखिपरई
निन्दा विष्ठा उदर न भरई * साधुन को पावन सितकरई
जो वैष्णव की करै बड़ाई * निश्चयसोभवनिधितरिजाई
वैष्णव परम धर्म मय जानो * परम धर्म मय वैष्णव मानो
वैष्णव परमाराधन हेरे * परम गुरू वैष्णव सब केरे
वैष्णवसंगति करै जो भोजन * विमलहोइकलिमलतेसोजन
वैष्णवकर चरणामृत पावै * कोटि जन्म कर पाप नशावै
सन्त उच्छिष्ट सहित जो खाहीं * ब्रह्महत्यादि पापनशिजाहीं
श्वपचहोइ ममभक्तिहि करई * सोइउत्तमसोइभवनिधितरई
जाको दीजै तासों लीजै * मोहिंसम ताकी पूजन कीजै
भक्तिहीन जो होइ कुलीना * पण्डितजपतप ज्ञानप्रवीना
वाके सब गुण जानहु ऐसे * मृतक देहके मण्डन जैसे

दो० विचरत सन्त जो अवनिपर तीरथ पावनहेत ।
देखिडरै जो जगतको तिन्हैं परमसुख देत ॥

सो० संसृतसिंधु अपार तामधि बूड़त जीवसब ।
तिन्हैं उतारनहार बोहित सन्त स्वरूप मम ॥

मेरो संग सन्तको जानौ * सन्तसंग मेरो करि मानौ
हे नृप मैं अरु वै द्वै नाहीं * मैंहीं हौं सन्तन के माहीं
काहुइ अस तनुधरि उद्धारौं * काहुइ सन्तरूप ह्वै तारौं
सन्तन के चरणन के रेनू * मुक्ति भुक्ति दायक सुरधेनू
भक्त कहै सोई मैं करहूं * सन्तनकेहित नरतनु धरहूं
भक्त मोहिं हैं परम पियारे * सुनिनरेश तब वचनउचारे
प्रभुतुमजेहि आपन जनकहहु * जिनकेविवशादिवसनिशिरहहु

तिनके लक्षण मोहिं सुनावो * जिनकीमहिमा निजमुखगावो
ह्वै प्रसन्न बोले प्रभु तत्क्षण * सुनहु भूप सन्तनके लक्षण
परम कृपालु द्रोहनहिं जानै * क्षमावन्त अरु सत्य बखानै
निन्दारहित द्वन्द्वउर समता * पर उपकारी सुहृदन ममता
आये काम बुद्धि थिर रहई * इंद्री जीति नम्रता गहई
अल्प अशन एकांत निवासी * सदाचार संग्रहनमें वासी
शीतलचितयुतविरतिविचारा * धर्मसहितनिजरहितविकारा
दयावन्त षटउरमी जीता * मोहमान अपमान अतीता
ज्ञानमान प्रद परम प्रवीना * परसुखसुखलखिपरदुखदीना
मित्र मित्र हित मित्रहि खावें * तेहिप्रकार नित मोकोध्यावें
चारि प्रकार मुक्ति नहिं लेहीं * सबतजि मम सेवा मनदेहीं
दृढ़ विश्वास न लाभ न रोषा * यथा लाभ तामें सन्तोषा
जो कोउचलि शरणागत आवै * ज्योंत्योंकरि तेहिज्ञानउपावै
अनघअजाति अशत्रुअचाही * आसनत्रासनसद्गुणग्राही
प्रेमनेम दृढ़शांति स्वरूपा * समचितसुखदुखनिर्द्वंदनभूपा
दृष्टिपूतकरि महिपगु धरहीं * वस्त्रपूत जलपानहि करहीं
सत्य पूतकरि वचन उचारें * मनसि पूतकरि कारज सारें
यद्यपि वेदरूप मयगाये * वरणाश्रम के धर्म दृढ़ाये
सोउ शुभाशुभ ते सब तजहीं * कायवचनमनमोकहँभजहीं
मम आधीन सदाहीं रहई * साधनको बलभूलि नगहई
मोहींको करता करिमानैं * स्वपनेहुँउरआपानहिंआनैं

दो० बैठे जहँ जब सन्त मिलि सात पांच इकठौर ।
तहँ मम बात चलावहीं करैं न चरचा और ॥

कोउ कह दश अवतार मुरारी * धरे सकल सुन्दर सुखकारी
मीन बराह कमठ पहिचानो * नरहरि बावनभृगुपतिजानो

रामचन्द्र नँदनन्दन लोने ❋ नवम बोध निकलंकी होने
दशमा है अवतार विशाला ❋ मनमोहनरघुपतिनँदलाला
इन युगमा को बड़ सुखरासी ❋ बोले तब रघुनाथ उपासी

दो० राम हमारे बड़े हैं लघू तुम्हारे कान्ह।
केहि विधि जानेजाइँ निज प्रभुताकरौ बखान॥
प्रथमसोमकुलकृष्णतव शशिसमतेजप्रकास।
भानुवंश श्रीरामजी रवि समान द्युतिभास॥
जन्म समय श्रीरामके भयो महा आनन्द।
तब बसुदेव दुराइकै डारिगये गृह नन्द॥
राम हमारे भूप हैं रैयत तुम्हरे लाल।
यशुमति सुत नाथे वृषभ राम अस्थिअरुताल॥
बकी न मोही देत विष असुर न मोह्यो कोइ।
मातु न मोही बांधती मोही युवतिन लोइ॥

सो० युबतिनकी यह रीति पुरुष मनोहर देखिकै।
कराहिं कामवश प्रीति बहुरि बजाई बांसुरी॥

दो० मोहन हमरे राम हैं कछू न करतब कीन।
देवदनुज मुनि नागनर मोहि विलोकत लीन॥
जोकहो केकयि दीनवन तासु भेद घटिजात।
कह्यो संहितामें सुनौ एक समय सुतत्रात॥
वचनबद्ध करि मातुते कह्यो चतुर्दशवर्ष।
राजसमय मोहिं दिह्योवन सोइकीन्हो तजिहर्ष॥
कंसहिमार्‍यो कृष्णतब सोनरपति दुखदाय।
रावणवश सुरअसुर सब ताहिवध्यो रघुराय॥
वेदवती दशशीश ते कह्यो रहै मैं तोहिं।
तवपुर पैठि विनाशिहौं हेतुगई तेहि सोहिं॥

कृष्णछोड़ाये मातुपितु निज निज का सबलोग ।
रामनेवाजे देवमुनि मनुज आनतजि भोग ॥
प्रथम खबरि लगवाइके कूबरदीन सुधारि ।
चरण परसि पावनकरी रघुपति गौतमनारि ॥
जरासंध के समरमा गये भागि गोपाल ।
पीठि न दीन्ही रणबिषे काहुइ रामकृपाल ॥
चोरी कीन्हीं कृष्णतव परभामिनि में प्रीति ।
राम न बोले झूंठ कछु भूलि न चले अनीति ॥
ब्रजपति विधि वृषभेषकर हरेउ मान अवधेश ।
विष्णुअङ्ग भृगुनाथहू कीन्हें सुवश विशेश ॥
कृष्णगोवर्द्धन करधरेउ यह सेवक कोकाम ।
सोइ कारज सबकपिनते करवायो श्रीराम ॥
कृष्ण पीन दावानलहि नाथ्यो कालीनाग ।
रामसेतुकरि अरिसमर अमित निवारे नाग ॥
विप्र सुदामा मित्रते तंदुल लै धन दीन ।
रामकपीश विभीषणहिं दुर्दिन में नृपकीन ॥
सरवस दीन्ह्यो गोपिकन तदपि तज्यो यदुराउ ।
ऋणी भये हनुमानके अस रघुवीर सुभाउ ॥
कृष्ण शरण उद्धव भये पुनि पठये तपहेत ।
तिन्हैं हमारे रामजी राज परम पद देत ॥
दशसहस्र दशसै वरष कीनि अवध बसिराज ।
फिरियादी वकश्वान द्वै भे इतती दिशिसमाज ॥
अहिमहिअंशसुअनुजसियदीन्ह्योजगहितत्यागि ।
आपुस्वपुरगे यानचढ़ि कृष्णसकृत शरलागि ॥

असहैं राम हमारे स्वामी ✱ अखिलरूप के कारणनामी

अपर कहै सिद्धांत हमारा * पूरण हैं सकलौ अवतारा
समभ्कत में सबएकै अहईं * रूपधरे चौबिस श्रुतिकहईं
हैंसबएककनक जिमि यद्यपि * होतनराशि रतीसमतद्यपि
बोले अपर सकल श्रुतिसारा * राम नामहै इष्ट हमारा
सुखदायक दुख पातक हरता * सब इष्टन को पूरण करता
ब्रह्म बहाबिन रामा होई * राबिन रघुपति कहै न कोई
माबिन महादेव ना कहिये * रेफबिंदुबिन प्रणवन लहिये
कृष्णरहित रा कसन कहावै * महावीर बिन मा न रहावै
राबिन राधा धा रहिजावैं * आबिन सीता सीत कहावैं
दुर्गारमा शारदा भयरौं * गवरिगणेशआदिहरिगयरौं
करि विचारि देखै बुधकोई * सब मंत्रन महँ अत्तरदोई
जीवयथालघु तेहि बलजागै * देव सरिसफल देतजो मांगै
जेहि जानेबिन कछू न जानै * पशुसमान तेहि वेदबखानै
नाम विवशहै रूप सदाहीं * रूप नाम बिन आवत नाहीं
विनानाम पुरधाम न पावै * जानतनाम कहतमिलिजावै
अगुन सगुन युग ब्रह्मकहावै * सुखप्रद परितामें नहिं पावै

दो० ब्रह्मसोव्यापकसकलघट आनँदअमलअखंड।
तदपित्रसितजगजीवसब सहतविविधविधिदंड॥
प्रीति सहित जो नाम कहँ रटै राखि विश्वास।
यहां सदा सुखमें रहै अन्त रामपुर वास॥
निरगुनते बड़नाम यश सो मैं कह्यो बुझाइ।
अब सरगुनते कहतहौं सुनौ सुजन मनलाइ॥

रामरूप धरि असुर सँहारे * सुरनर मुनि सबकियेसुखारे
नाम जपत ते सुखी सदाहीं * औरनके दुख देखि मिटाहीं
कृष्णकुनपधरिगिरिकरलीन्हेउ * व्रजवासिनकी रत्ता कीन्हेउ

नामजपतअहिपतिमहिलीन्हें ✽ भुवनचारिदशरजसमकीन्हें
राम कामअरि कर धनुभंजा ✽ भृगुपतिसहितनृपनमदगंजा
नामरसिक तृणसम संसारा ✽ तोरहिंकलिखिसिआइविचारा
कृष्ण एक दावानल पीन्हा ✽ ग्वालबाल सब बाहरकीन्हा
नामसुमिरि शिवविषकियोपाना ✽ जड़रुजीवजेहिसबजगजाना
राम गीध शबरी मुनि नारी ✽ ह्वै प्रसन्न भवभयते तारी
नामसुमिरि शठतरे अपारा ✽ अजहूं जपत होत भवपारा

दो॰ रामसुकण्ठ विभीषणै दीन्हिराजि निजकाज ।
नाम सुमिरि सज्जनतजहिं बात सरिसजगसाज ॥
राम सिंधुमा सेतु करि भये पारलै सैन ।
नाम सुमिरि हनुमानगे कूदि पियो घटज्वैन ॥
राम रावणहिं रणनिधनि कीन्हिराजि बसिबास ।
नाम जपत युत मोहदल होत बिनहिं श्रमनास ॥
राम कामकरि अनघ इक अवध जात लैधाम ।
नाम उधारत तिहुँ भुवन जो सुमिरै सहसाम ॥

हनुमत्संहितायांहनुमान्वचनश्रीरामप्रतिश्लोक ॥
रामत्त्वत्तोधिकंनाम इतिमेनिश्चितामतिः ।
त्वयैकातार्यतेयोध्या नाम्नाचभुवनत्रयम् ॥

असहै इष्ट हमार महाना ✽ शिरधरिसबहिंनकीनप्रमाना
जे अबूझ ते बाद बढ़ावैं ✽ जाननहार महासुख पावैं
एक कहैं सबहैं अभिरामा ✽ नाम रूप अरु लीला धामा
यहि प्रकारकी बातें करहीं ✽ मेरेहित आपस महँ लरहीं
सो बातें मोकहँ अतिभावैं ✽ सुनौंजाय मैं तिनके ठावैं
जैसेविपुल सुतनकी बानी ✽ सुनिहरषतपितुनिजसबजानी
तैसेमैं सुनिसुनि हरषाऊं ✽ जाइँ जहांजहँतहँचलिजाऊं

दो० प्रेम प्रशंसा विनय युत वेग वचन ये आहिं।
तेहितेहोत अनन्द चुर फुर उर लागत नाहिं॥
भक्तनके लक्षण सकल सुखद सुनाये तोहिं।
जिनकरिकै पक्षीसरिस निजवश कीन्हेनिमोहिं॥

सुनिनरेशअतिशयसुखपायो * संतनपद पुनिपुनिशिरनायो
देवदूत तेहि अवसर बीरा * लैविमान आये नृपतीरा
कृष्ण चरण शिर नाइ नरेशा * चढ़ि विमानगवन्योसुरदेशा

गी० सुरलोक गवन्यो भूपनृप तमकूपके दुखनाशेहू।
लखिदेव वरषि प्रसूनप्रभु तवयदुनते परकाशेहू॥
करिदान वश अभिमानके नृपद्रोह हरिजनतेठयो।
तेहिपाप पायोताप द्विजकीशाप दरशनतेगयो॥
असजानि मनअनुमान कबहूं संतको न सताइयो।
बनिपरै कीजै सेव नहिं बनिपरै तौ शिरनाइयो॥
यहिभांतिकेसुनिवचनयमकेगणनअतिसुखपायहू।
शिरनाइ दंडउठाइतब सबमृत्युलोक सिधायहू॥

दो० संतनको उतकर्ष जो कहै सुनै नित नेम।
बढ़ै भाव भक्तन विषे कहै रघुनाथ सुक्षेम॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतनृगप्रसंगसंतलक्षणवर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः४२॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि।
धर्मशास्त्र मतकहौं कछु मनुस्मृति जुबखानि॥

सुनि सन्तनकी विपुल बड़ाई * पुनि शौनक बोले शिरनाई
नाथ कहौ अस कौन उपाई * जो करिजीव सुखी ह्वैजाई
कौन देव के सुमिरण जूटै * जेहिते पितर नरकते छूटै
कौन देव है सब फल दानी * सुनत सूत बोले मृदुबानी

शौनक सुनो सत्य मोहिं पाहीं ✱ राम समान आन सुरनाहीं
जिनके सुमिरण ते सुरसारे ✱ बिन प्रयासही होत सुखारे
जिमि तरुमूल निषेचन माहीं ✱ डारपातफल सबहरियाहीं
असजियजानिसकलविधिदासा ✱ रामहिंभजहिंतजहिंसबआसा
तीन प्रकार भजन हरि केरा ✱ व्याससुवन शुकदेव निवेरा
निष्कामी जो रामहि ध्यावै ✱ तासु विवशप्रभु आपुरहावै
मोक्ष काम करि कोई सेवै ✱ ताको राम मोक्षपद देवै
सर्व काम करि सेवै दासा ✱ ताकी हरिपूजहिं सब आसा
ऐसे प्रभुके शरणै आई ✱ जासुकृपा अनुकृपा भलाई
अपर देव सेवै करि दुःखा ✱ होइ प्रसन्न देहि जगसुःखा
जो सेवा विधि बनै न कोई ✱ कोपि विनाश तासुकरै सोई
ताते नारायण सम देवा ✱ नहिंतिहुँकालसत्ययहभेवा

दो० सर्व शास्त्र अवलोकिकै पुनिपुनि कीन विचार ।
ध्यान योग मंगल करन हैं रामै ततसार ॥

जो निज पितर चहै निस्तारा ✱ तौ हरिभक्ति करै विस्तारा
जैसे क्वास महीपति तारे ✱ सुनिशौनकपुनिवचनउचारे
हे प्रभु केहि प्रकार नरहारी ✱ तारे पितरकहो विस्तारी
केहिविधि भक्ति करी हरिकेरी ✱ बोले सूत सुनो मनफेरी
शेषरपुर इक बस्ती कहेऊ ✱ क्वासनाम तामें नृप रहेऊ
अन्तसमययमगणचलिआये ✱ मारिबांधिनिजलोकसिधाये
देखि भानु सुत लेखा लीन्हा ✱ पुनिदूतनकहँ आयसु दीन्हा
डारौजाय नरक नृप येहू ✱ चौदह लाख वर्ष दुख देहू
आयसु पाय नरक ढिगलाये ✱ पीब रक्त जामें कृमि छाये
चाकल षोड़श योजन केरा ✱ सोरह योजन गहिर निवेरा
परे जीव बूड़ैं उतराहीं ✱ एको पल सुपास जहँ नाहीं

तरे कीटतन करैं बेहाला ❋ जारहिंमध्य अग्निकीज्वाला
ऊपर यमगण मारहिं नाना ❋ देखि त्रास नृप कास डराना
ताही नरक मांझ नृप केरे ❋ पुरिखा रहैं एकोत्तरि हेरे
भूपहि लखिरोदन तिनठाना ❋ सुनिमहीपअस वचनबखाना
को तुमहौ जो हमहिं निहारी ❋ लागेहु रोदन करन पुकारी
हे नृप हमहैं पितर तुम्हारे ❋ तुमहौ पुत्र हमारे प्यारे
बोले भूप बहुरि तिन पाहीं ❋ काहे परेउ नरकके माहीं
कीतुम दान कबहुँ नहिंकीन्हा ❋ कीतुम विप्रनकहँ दुखदीन्हा
कीसंतहि बोलेहु कटुबानी ❋ बोले बहुरि पितर सुतजानी
दीन्हपुत्र शय्यादिक दाना ❋ गज रथ वाजि पालकी नाना
पूजे देव विपुल बहु भांती ❋ विप्र जेंवाये दिन अरुराती
ये सब कीन्ह द्रव्य पर आनी ❋ तासे भई पुण्य की हानी
जीवमारि बहु कीन्ह अहारा ❋ ताते पावा नरक अपारा
जीव वधे कर पातक भारी ❋ गावतकविकोविदश्रुतिचारी
पुनि गुरुते हरिमंत्र न लीन्हा ❋ ताते नरकवास यम दीन्हा
जेहिंप्रभुनखशिख देहसवाँरी ❋ जहँतहँ रत्ता कीन्हि हमारी
तासु भजन हम कीन्ह न भूली ❋ काहे न पुत्र अधोमुख भूली
अबलग रही तुम्हारी आसा ❋ कबहुँक ह्वैहैं हरिके दासा
तब हमार होई निस्तारा ❋ बसबजाइ सुरलोक मँझारा
सो तुमहूं हरिभक्ति न कीन्ह्यो ❋ आइ निरैमहँ वासा लीन्ह्यो
कह नृपजो अब छूटन पावहुँ ❋ तौ तुमका सुरलोक पठावहुँ
ह्वै हरिभक्त भजहुँ भगवानहिं ❋ जाते पावहु पद निर्वानहिं
सुनि बोले यमगण रे बंगा ❋ प्रथमैं क्यों न रँगेहु हरिरंगा
अब यमजाल परेहु जब भाई ❋ तब हरिभजनकेरि सुधिआई
जैसे कोउ गृह पावक लागे ❋ कूप खनावत अति अनुरागे

परतधार जिमि बबुर बवावै * होत युद्ध गढ़नीव डरावै
तथा तुम्हार मनोरथ कारन * असकहिलगेनरकमहँडारन
तेहिअवसरइकहरिजनआये * तिनहिं देखि यमके गणधाये
पदशिरनाइकीन्हअतिआदर * लाये वैवस्वत ढिग सादर
देखि कृतांत उठे हरषाई * करि दण्डवत लीन्ह उरलाई
कनकसिंहासनआसनदीन्हा * पद पखारि पादोदक लीन्हा
धूप दीपकरि दोउ करजोरी * लागे अस्तुति करन बहोरी
देखिप्रभाव नृपहु ढिग आवा * रामभक्त सों बिनती लावा
नमोनमो तुम पतितन तारन * नमोनमोप्रभुविपतिनिवारन
नमोनमो तुम परउपकारी * मोहिं नरकते लेहु उबारी
सुनि बिनती भे सन्त दयाला * रविसुतते बोले ततकाला
याको छांड़ि फांसते दीजै * इतना कहा हमारो कीजै
करहि जाइ हरिभक्ति नरेशा * मिटहिंजाहितेसकलकलेशा
संतन कहा मानि यम लीन्हा * तुरतहिंछांड़ि नरेशहिंदीन्हा
ऐसे हैं हरिभक्त कृपाला * सहजनिकसिनरकरहिं निहाला
छूट भूप मृतलोकहि आवा * मृतकदेह निज प्राणसमावा
उठत नृपति भे लोग सुखारे * सकल कहैं बड़भाग हमारे

दो० तब महीप यमलोककी कथाकही सब गाइ ।
जेहिविधि देखे पितरनिज दीन्हों संतछोड़ाइ ॥

यमपुरहम निजनयनन देखा * बिनहरिभक्ति महादुख पेखा
ताते भक्ति करब अब हमहूं * जाते नरक न जाई कबहूं
विप्रबोलि शुभघरी शोधाई * केहि दिन शरण रामकीजाई
पत्रालखि द्विज वचन उचारा * प्रातहि गुरुमुख होहु भुवारा
असमुनि भूपदानबहु दीन्हा * करिसनमानबिदातबकीन्हा
जबतेनृप हरिशरण विचारी * तबते भे सब पितर सुखारी

बैठे निकरि नरकके पासा * कहैं कि सुत होई हरिदासा
कबहम जाब अमरपुर भाई * असकहिहुलसहिंहँसहिंठठाई

दो॰ तावत भरमत पित्र जग पिण्डहेत हरबार ।
यावत कुलमें कृष्णकर भक्तन होत कुमार ॥

पद्मपुराणे श्लोक ॥

तावद्भ्रमन्तिसंसारे पितरः पिण्डतत्पराः ।
यावत्कुलेसुतः कृष्ण भक्तियुक्तोनजायते ॥

स्कन्दपुराणे ॥

पचन्तिनरकेपितरो नृत्यन्तेचमुहुर्मुहुः ।
मद्वंशेवैष्णवोजातःसमेत्राताभविष्यति ॥

इहां पुरोहित कीन्ह विचारा * सब विधिगा रोजगारहमारा
जब राजा हरिका जनहोई * ज्योतिष मन्त्र न मानी कोई
नहिं अब धेनु बेढ़ाई कबहीं * पांच सातका देई हमहीं
सुनी ज्ञान जब सन्तन केरा * भाई नहीं वचन तब मेरा
हरि सेवामें मनचित देई * आनदेवको नाम न लेई
ताते सो अब करौं उपाई * जाते होइ न वैष्णव राई
सुनिबोलीद्विजभामिनितबहीं * नृपके भवनजाहुतुम अबहीं
रानीते अस कहउ बुझाई * शय्या निकटराउ नहिंआई
सुनि द्विज लै पंचांग सिधाये * तिसरे पहर भूपगृह आये
रानी लखिउठि माथ नवावा * आशिर्वाद दीन बैठावा
पत्राखोलि कही द्विज बाता * फर्योविधितुम्हारअहिवाता
सबविधि बनारहै तवसाजा * पैअबचाहत होन अकाजा
कौन अकाज भूप जो काल्ही * लेई गुरुदिक्षा प्रणपाल्ही
तबतुम्हार सबभांतिअकाजा * राजपाट सब छोड़ी राजा
भक्तिज्ञानमें मन चितलाई * घरको कामसकल बिसराई
तुम्हरे निकट न आई कबहीं * चलिहोई तीरथ जब तबहीं

तातै करहु यतन तुम सोई ॥ जाते भूप न वैष्णव होई
कौनियत्न कीजै सो गावहु ॥ रूप मोहनीकेर बनावहु
करिकटाक्ष मोह्यो नृप आजू ॥ कामविवशलखिकीन्हेउकाजू
विप्रहि बिदा द्रव्य दै कीन्हा ॥ अपना रूप रचनमनदीन्हा
जहँलग त्रियन केर शृंगारा ॥ अंगअंग अतिसकलसँवारा
निशापाइ पतिसेज सिधाई ॥ हासविलास कीन्ह सुखपाई
जब अनंगवश भूपहि जाना ॥ पकरिखूटकरि वचन बखाना
स्वर्गलोकते तुम फिरिआयहु ॥ हमहिंनकछुदीन्हेउसबपायहु
बोले नरपति मांगहु प्यारी ॥ जो कछु इच्छा होइ तुम्हारी
विधिहरिहरको साखी दीजै ॥ तौ हम कन्तमांगि वरलीजै
तब महीप त्रयदेवनकेरी ॥ खाई सौंह हरषि बहुतेरी
सुनिबोली पति यहवर दीजै ॥ जहां राज तहँ भक्ति न कीजै
भक्तिकिहे बड़होत अकाजा ॥ तातै मैं बरजतहौं राजा
दानपुण्य भल करहु भुवाला ॥ जाकरफल पावहु ततकाला
सुनि महीप बोले अकुलाई ॥ बनेहु न मांगत वरदुखदाई
जपतप यज्ञ दान बहुकरहीं ॥ भक्तिज्ञानबिन जीवनतरहीं
किहिनिदानतिनभक्ति विहाई ॥ तेगिरिगिटअहिगजभेआई
तातै अब मोहिं आयसु देहू ॥ कीजै भक्ति परमफल येहू
रानी सुनि पुनिवचन उचारा ॥ प्रथमैं क्योंवाचा तुम हारा
देखहुशिबिदधीचिकसकीन्हा ॥ वाचावश आपनतनु दीन्हा
नृप हरिचन्द्र बड़े रजधानी ॥ वाचाभरिनि डोमघर पानी
मधुकैटभ जिनकी महिमाटी ॥ वाचावश दीन्हेनिशिरकाटी
असुर गयासुर दानव अहई ॥ वाचावश्य अधोमुख रहई
दशरथ देन कह्यो वरदाना ॥ वचननतजेहुतजेहुसुतप्राना
विष्णुबचन चपला मतहारा ॥ तेहिते आपनदाधिसुत मारा

सोतुम छांड़तनिजमुखभाखी ❋ ब्रह्माविष्णुशिवहिकरिसाखी
परेहु भूप दुबिधामहँ कैसे ❋ गहिमुख सांप छछूंदरि जैसे
तजहुँ भक्ति तौ नरकहि जैहौं ❋ वाचा तजे अधिक दुखपैहौं
यहिविधिनिजमनठीकजोआनी ❋ दीन्हिसिछांड़िभक्तिअज्ञानी

दो० कल्पलता तजि मूढ़जिमि किंशुक लावै कोइ ।
सोइ कीन्ही नृप क्षासहू समुझै चहुँभल होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतराजाक्षासआख्यानवर्णनो नामत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं भारतकी कथा कुचितान्यो मतआनि ॥

तजतहि भक्ति दूत यमकेरे ❋ पुरिखा बहुरि नरकमहँ गेरे
ऊपरसे मुद्गर शिर दयऊ ❋ विंविशतयोजनभीतरगयऊ
जब उछरत तब मारत धाई ❋ कहैं किअबक्योंउछरतआई
जेहि सुतकी तुम आश लगाई ❋ द्विज रानी तेहि छला बनाई

दो० जानिबूझि नृप रामकी दीन्हिसि भक्ति बिहाइ ।
आपुहि परिह मन्दमति यही नरकमो आइ ॥

यह सुनि नरकी करहिं पुकारा ❋ केहि खल भुरयो पुत्र हमारा
द्विज हत्या ताके शिर दीन्हा ❋ वैष्णव होत मने जेहि कीन्हा
तेहिसम पापी अपर न पावा ❋ हरषमाहिं जेहिं हमैं रोवावा
ऐसेवचनसकलमिलिबोलहिं ❋ उछरहिंकबहुँ२ शिरखोलहिं
तेहि अवसर तहँ नारद आये ❋ नरकिनते अस वचन सुनाये
परे अधोमुख पतित अपारा ❋ तुम काहे बहु करत पुकारा
हे मुनि हमरे कुल नृपक्षासा ❋ होन चहत राहे हरिदासा
दीन्हो बरजि ताहि अब कोई ❋ तेहिते हमैं महादुख होई

अजहूं जो ताको समुझावै ॥ कोटि यज्ञ कीन्हें फल पावै
सुनि नारद के लागी दाया ॥ नरकिनते असवचनसुनाया
जो मैं सुत समुझावों तोरा ॥ सत्य वचन नहिंमानी मोरा
जे जड़ जीव हवें जगमाहीं ॥ सन्त कहा ते मानत नाहीं
कहैं कि धनहित करहिं प्रबोधा ॥ समुझै नहिं भक्तन का बोधा
नरकिन कहा सुनहु महराजा ॥ ऐसे वचन न बोली राजा
प्रथम देखिगा दशा हमारी ॥ सुनतै अस्तुतिकरी तुम्हारी
जो कुजाति नहिं मानहिं बाता ॥ गगरा खोदि देखायहु साता
गाड़े बीच अजिरके माहीं ॥ मोहर भरे नृप जानत नाहीं
इतना सुनि मुनि तुरत सिधाये ॥ वेगि भूपके मन्दिर आये
मुनिहिंविलोकिदण्डवतकरेऊ ॥ हाथजोरिअस्तुतिअनुसरेऊ
धन्य आजु हम धन्य मुनीशा ॥ तुम्हरो दरशदीन जगदीशा
जीवहि दुरलभ वस्तु अनेका ॥ दुरलभ सन्त समागम एका
अब भोजनका कहिये भेवा ॥ केहिविधि मिलै रसोई देवा
कह नारद आदिक्षित केरा ॥ शशिविष्ठासम जल मधुहेरा
शास्त्र न कानि केहूकी राखै ॥ पद्मपुराण वचन अस भाखै

गौरीतन्त्रश्लोक ॥

कृष्णमन्त्रविहीनस्य पापिष्ठस्यदुरात्मनः ॥
श्वानविष्ठासमंचान्नं जलश्चमदिरासमम् १ ॥

पद्मपुराणे ॥

अवैष्णवास्तुयेविप्राश्चाण्डालादधमास्स्मृताः ॥
तेषांसम्भाषणस्पर्शसोमपानादिवर्जयेत् २ ॥

स्कन्दपुराणे ॥

अवैष्णवगृहेभुक्त्वा पीत्वावाज्ञानतोपिवा ॥
शुद्धिश्चान्द्रायणेप्रोक्ता इष्टापूर्त्तंवृथासदा ३ ॥

राममन्त्र तुम सुना न काना ॥ आज्ञा मांगत कौने ज्ञाना

नरतनलहिहरिभक्तिनकीन्ह्यो * झूंठे जगतमाहिं मन दीन्ह्यो
देख्यो तुम नृप यमपुर सासति * तदपि हृदयनहिं आई दहसति
बड़े भागते छूटन पायो * इहां आइ पुनि ज्ञान गवाँयो
प्रसवसमयजिमित्रियपतित्यागै * दुख बीते फिरि तासों पागै
तेहिप्रकारतवमतिभइराजा * जानिबूझिनिजकिहेउअकाजा
पुरिखादेखिनरकमहँआयहु * भक्तिकौलकरिसुधिबिसरायहु
बोले भूप सुनहु मुनिज्ञानी * रूप सँवारि छला मोहिं रानी
मांगिसि वर करिकौल करारा * कहिसिकरौजनिभक्तिभुवारा
तब मैं ताहि बहुत समुझावा * वाके मन तनकहु नहिं आवा
वाचाकी सुनि कानि बिसारी * तेहिते हम हरिभक्ति बिसारी
कह नारद सुनिये नृप भेदा * नारि सुभाव कहत अस वेदा
रहित अचार विचार विहीना * परमभयाकुल छलबलपीना
चंचल बुद्धिचपलअवगाही * सदाअकच्छलागिमुखस्याही
श्रवण नासिकाभेद अभङ्गा * विगतप्रसादमलिनसबअङ्गा
इतने अवगुण नारिमँझारा * कस न करे नृप तव अपकारा
दुष्ट नारि मत मानै सोई * तव सम जनी चेर जो होई
जेजे भे भामिनि वश राजा * तिनसबहिनकाभयउअकाजा
शशि शृंगीऋषि विधिसुरराई * अपरप्रसंग सुनो मनलाई
कुण्डल नामरहे द्विज एका * उग्रबुद्धि घर द्रव्य न नेका
निर्द्धन जानि तासुकी नारी * नितउठि देहि हजारनगारी
इकदिनद्विजनिजपुस्तकलीन्हा * उठि परदेश पयानाकीन्हा
तेहिमगइकतड़ागलखिपावा * करिमज्जनशिरतिलकलगावा
पुनिहरिकथाकहनद्विजलागा * बांबी मध्य रहै इकनागा
तेहिहरिकथा सुनी सुखमाना * तपनिमिटीकछुहृदयजुड़ाना
लागेकरन विसर्जनजबहीं * आवानिकटनिकसिअहितबहीं

मोहर एक धरि बोला बानी * कोतुमअहउकहउसुखदानी
कुण्डल कहा विप्र हम होई * विद्याधर जानत सब कोई
विधिअनकृपापरमदुखपायन * अबधनहित परदेशसिधायन
बोला सर्प दूरि जनि जावो * हमका हरिकी कथा सुनावो
मोहर एक देबे नित तोहीं * काहुइ पै न बतायहु मोहीं
यहसुनिद्विजमनहर्षित भयऊ * निकटहिरामलाभकरिदयऊ
लागसुनावन विविध पुराना * पावहि एक मोहरनितदाना
भा धनवान महल बनवावा * सुभगवाजि निजद्वारबँधावा
भूषण वसन अनेक प्रकारा * पहिरै आपुसहित सुतदारा
यकदिन भवनपरोसिनिआई * बोली करकल ते हरुगाई
तुमतौ रहिउदुखित धनहीना * किनतुमका यहसम्पतिदीना
बोली विप्रवधू सुनु माई * को जानै कहँवा पति पाई
जो तुमते पतिभेद न गावा * तौ केहिकाम धाम धनपावा
पुरुष नारिते अन्तर करई * तौ सम्पति पावकमहँ परई
तेहिते पूछेहु आजु सँभारी * असकहि चलीगई सो नारी
द्विज भामिनि तबरहीरिसाई * दीन्हेसिअभरणसकलचलाई
द्विजपुस्तकपढ़िघरजबआवा * दुखितदेखिअसवचनसुनावा
कौनि व्यथा तोरे मनमाहीं * सोसबकहहुप्रियामोहिंपाहीं
कैयो बार विप्र जब बूझा * बोली तब तुमका नहिंसूझा
रहेउरंक अब सम्पति लहेऊ * कितसों हमते भेद न कहेऊ
सुनिबोला द्विज शिरकरधारी * याहीहित कीन्हेउ रिसभारी
भूषण सजहु तजहु मनखेदा * सुनोकहउँ मैं धनकर भेदा
पुरदक्षिण है एक तड़ागा * तेहि तट रहतहवै यकनागा
दिनप्रति ताहि पुराणसुनावों * मोहर एक तहां मैं पावों
इतनासुनि उठिभोजनकीन्हा * पतिसुततिन्हैं जेंवावै लीन्हा

निशापाय द्विज सोवनलागा ॥ बोली सुतते करिअनुरागा
सरकेनिकट आजु तुम जावो ॥ सर्पहिमारि द्रव्यखनिलावो
सुनिपोथी कुदारि गहिलयऊ ॥ भोर होत सरके तट गयऊ
तत्क्षक दीख विप्रसुत आवा ॥ लखिकुदारिमनशोचबढ़ावा
कीन्ह विप्र जब कथा प्रसंगा ॥ निज बांबीते सुनहि भुजंगा
तबद्विज विविध रागिनीफेरी ॥ तदपि न लागिघाततेहिकेरी

दो० करनविसर्जन लागजब तब निकसा सो व्याल।
मोहर एक चढ़ायकै बहुरि फिरा ततकाल॥

भीतर भवन हलन नहिंपावा ॥ ऊपर दुष्ट कुदारि चलावा
कछुक पूंछ कटिगै अहिकेरी ॥ काटिसि घुमरि मरातेहिबेरी
इहां विप्र जाग्यो परभाता ॥ सुतकितगा पूंछी यह बाता
बोली त्रियकछुकामहि गयऊ ॥ सुनिब्राह्मणके विस्मयभयऊ
उठातुरतद्विजअहिढिगआवा ॥ मृतकतहां निजबालकपावा
रोदन कीन्ह लीन उरलाई ॥ कीन्हाक्रियाविधिवतघरआई
कछु दिनबादि सर्पढिगआयो ॥ धरिधीरजअसवचनसुनायो
आयपुराण सुनहु यजमाना ॥ केहिकारण हमते दुखमाना
बोला अहि अबसोरसगयऊ ॥ जबतेतुमबनितहिकहिदयऊ
तुम्हरे सुतकर शोच अपारा ॥ हमरे लूमकेर दुख भारा
तेहिते जाहुघूमि निज धामा ॥ अब हमते तुमते नहिंकामा
यहसुनि विप्रपलटिगृहआवा ॥ सुतकरदुखकछुधनदुखपावा
देखहु भूप नारिवश भयऊ ॥ द्रव्यलाभ सुत दूनहु गयऊ
जैसे विप्र कीन्ह निज हानी ॥ तेहि प्रकार तवमतिबौरानी

दो० भगवत भजन छोड़ाइ निज धर्मदृढ़ावै कोइ।
ताहि त्यागिये शत्रुसम परमहितू किन होइ॥
तज्यो पितै प्रह्लाद मा भरत विभीषण भाइ।

गुरुबलि ब्रजवनिता बरनि भे सबमंगलदाइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृत कासनारदसंवादकुण्डलप्रसंगवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
महभारत सद्ग्रंथ की कहौं इतिहास बखानि ॥

अपर सुनो परसंग सुनावों * जनीचेरिका रूप लखावों
जब भारतकर भा आरम्भा * चले पाण्डुसुतगाड़नखम्भा

दो० बोले तब सहदेव ते प्रमुदित चारो भाइ ।
होइ जीति जेहिभांति सों साइति देहुबताइ ॥

कह सहदेव सुनहु बलवाना * प्रथमैं उनते कीन बखाना
अब तुमका केहिभांति बताई * तेहिते शकुन सुनहुयकभाई
स्त्रीचेरि पुरुष जो पावो * ताहिआनि कुरुक्षेत्र गड़ावो
ऐहैंचलि जम्बुक तहँ दिनते * सकल भेद तुम पैहो तिनते
यह सुनि ढूंढ़न भीमसिधाये * घूमत एक नगरमहँ आये
तेहिपुर रहतरहे यक तेली * सुनहु तासुकी रीति नवेली
बैठी पलँग तासुकी वामा * अपना करहि धामकरकामा
झारिपोति घर जल भरिलावै * कूटिपीसिपुनि अशनबनावै
ताहि पवायखाय तब अपना * बहुरिकरैसबटहल अलपना
एक दिवस गे आगि बुझाई * रविदिनमांगि फिरानहिंपाई
तब वनिता बोली ताकेरी * है पगलाग महाउर मेरी
जो तुम कन्धचढ़ावहु मोहीं * आनिदेउँ मैं पावक तोहीं
सुनतहिलीन्हेसि कन्धचढ़ाई * चलामुदितमन लाजविहाई
मांगै जाय अग्नि जेहि द्वारे * तालबजावहिं बालक सारे
प्रमदासबहँसिहँसिअसबोलैं * भले आगि ये मांगत डोलैं

कोउनिलज्ज कहिदेवै गारी * कोउकहै नीच डारिदे नारी
करहिंकुबुद्धिनिइहिविधिबाता * हमैं न असवर दीन्हविधाता
पुरुष देखि पुरुषन ते कहईं * ये दोऊ निलज्ज बड़ अहईं
जो हमि होती नारि हमारी * डरतेन ताहि जानते मारी
एक कहै अस दैव न करई * दुष्ट नारि नर पाले परई

दो० दुष्टा भार्य्या मित्र शठ उत्तरदायक भृत्यु।
सर्पसहित गृहवास रिपुसबलसों जीवतमृत्यु॥

यहसब चरित भीमजबदेखा * जनीचेरि निश्चयकरिलेखा
नारिउतारि ताहि धरिलायो * कुरुक्षेत्र के माहिं गड़ायो
आपुरहे छिपि चढ़ितरुडारा * आये तहँ तब बहुत सियारा

दो० तेहि तेली के अंग सब सूंघे एक सियार।
बोला मांस अशुद्धहै हम नहिं करब अहार॥

जो हम याको भक्षण करिबे * कोटिनवर्ष नरक महँ परिबे
तब जम्बुक सब पूँछन लागे * है अशुद्ध केहिकारण पागे
सुनि जम्बुक तब उत्तरदीन्हा * यहिंकबहूं शुभकर्म न कीन्हा
नारिहिके डर डरत डरावा * हरिगुरुजन पदशीशननावा
तेहिते शिर अशुद्ध है भाई * जानिबूझिहमकेहिविधिखाई
श्रुतिअशुद्धगुरुमन्त्रनलीन्हेसि * दृगमलीनजनदरशनकीन्हेसि
मुखअशुद्धहरिनाम नटेरिसि * गरअशुद्धतुलसीनहिंगेरिसि
करअशुद्धकछुकिहिसिनदाना * उरअशुद्ध दण्डवत न ठाना
उदरअशुद्धप्रसादन खाइसि * पगअशुद्धतीरथनसिधाइसि
सुनि सियारसुत बोला ताता * कीन्ह्यो तुम अशुद्धसबगाता
हमें लागि है भूख अपारा * कहो काहि अब करी अहारा
तबजम्बुकसबशिशुनप्रबोधा * आजुकेदिनसुतकरहुसमोधा
कालिह युद्ध होई यहि ठांवै * खायहु पल जितना मनभावै

चलिहैं अस्त्रशस्त्र विधिनाना ❋ जुझिहैं बड़ेबड़े धर्मवाना
भत्तण कीन्हे जिनकर मांसा ❋ होई हमहिं देवपुर बासा
पुनि सियारसुत बोले बाता ❋ को जीती को हारी ताता
जम्बुक कहा जीतिहैं सोई ❋ प्रथमै ध्वजा रोपिहैं जोई
लखि यहशकुनभीमघरआये ❋ बालकसहित सियारसिधाये
देखहु नृप त्रियके वश भयऊ ❋ डरकरिरामभक्ति तजिदयऊ
जम्बुकहू नहिं खाइनि ताही ❋ तैसीगति नृप तुम्हरी आही
अतिअकाज रानी तव कीन्हा ❋ भक्तिमाहिं बाधा करिदीन्हा
करै कहा अबला कर सोई ❋ तोहिंसमान पतित जो होई
यह सुनि राजा बहुत लजाना ❋ माथनाइअसवचन बखाना
सांचहु मैं निज कीन्ह अकाजू ❋ असप्रभु नामसुनावहुआजू
नारद कहा तयारी कीजै ❋ तबतो राम मन्त्र हम दीजै
यह सुनि नृप मंत्री हँकरावा ❋ भीतर बाहर भवन लिपावा
कुम्भपुरान सकल करि दूरी ❋ नूतन कलशधरे जल पूरी
विप्र वैष्णवन सकल बोलाये ❋ गुरुमुख होतजानिसबआये
भई भीर नृपद्वार अपारा ❋ बाजहिं तालमृदंग सितारा
गंध्रब करहिं रामगुण गाना ❋ लखिसमाज भूपतिहरषाना
तब बोले ऋषिते करजोरी ❋ अब का आयसु होत बहोरी
कह नारद रानी ढिग जावो ❋ ताहूते आयसु लै आवो
जो न मुदित मन आज्ञा देही ❋ लाग्यो मारन तुरतै तेही

दो० भले नाथ कहि भूप तब गे रानी के पास ।
बोले आयसु देहु अब होई हरिके दास ॥

सुनि रानी अस वचन उचारा ❋ नृप हरिगाहै ज्ञान तुम्हारा
हमतुमका बहुविधिसमुझावा ❋ तदपितुम्हारे मननहिंआवा
इतनासुनि नृप मारनलागा ❋ बोली तुरत सहित अनुरागा

हे पति मैं यहिविधि परकासा ❋ हमहूँ तुम होई हरिदासा
वैष्णव कंथ अवैष्णव नारी ❋ ऊँट बैलकर जोत विचारी
पुरके लोग सुनत डरपाये ❋ गुरुदिक्षा हितसबचलिआये
तब नारद अतिकरुणाकीन्हा ❋ बाहु मूल रामायुध दीन्हा
ऊर्ध्वपुण्ड्रपुनितिलकलगायो ❋ द्वादशमंत्रसहित सो न्हायो
धर्यौबहुरि हरिमिश्रितनामा ❋ पहिराई तुलसी की दामा
तेहिपाछे कछु आहुति कीन्हों ❋ राममंत्र महिपालहि दीन्हों

दो० रामसंत्र गुरुवदनते जेहिउर करहि प्रवेश।
होत शुद्ध सो तुरत इमि कहत संहिता शेश॥
सर्व मंत्रते अधिक है वैष्णव मंत्र अखेद।
विष्णुमंत्रहू ते अधिक राममंत्र वद वेद॥
ब्रह्महत्या गुरुतल्पगा स्वर्णचौर मदिराप।
सर्व पाप विध्वंसक राममंत्र को जाप॥

जब हरिमंत्र सुना नृप काना ❋ पुरिवासब चढ़िगयेविमाना
पुनि रानीको मंत्र सुनावा ❋ तेहि पाछे आवा सोइ पावा
तबनृप द्विजन दक्षिणादीन्हा ❋ सबविधितोषसबनकरकीन्हा
सो शोभा सुख वरणि न जाई ❋ रही भक्ति सब पुरमा छाई
जहँतहँ होहिं चरित हरिकेरे ❋ जपैं नाम सब सांझ सबेरे
कह नारद मैं देखौं जाई ❋ तब पुरिखन कैसी गतिपाई
सुनिमुनिवचनबिदानृपकीन्हा ❋ तब सातो गगरा कहिदीन्हा
तवपितरनहैं मोहिंबताये ❋ असकहिऋषियमलोकहिआये
दूतन ते अस पूछा जाई ❋ नरकी वे कितगये सिधाई
सुनि दीन्हेनि उत्तर यमदूता ❋ रामदास भा उनकर पूता
तेहिते वे सुरलोक पधारे ❋ छूटे परे हैं नरक हमारे
सुनि नारदके भा सुखभारी ❋ आये चलि वैकुंठ मँझारी

बैठे रहैं तहां यमराजा * दूतन सहित आपने काजा
जबमुनीश हरिपद शिरनावा * तबप्रभु ऋषितेवचनसुनावा
आये हैं रविसुत फिरियादी * कहैं कि हम बैठे हनुवादी
नारदभक्ति दृढ़ाइ तुम्हारी * खाली कीन्हेनि पुरी हमारी
जगमहँ सबहोइहैं तव दासा * को आई फिरि हमरे पासा
तेहिते अबहम जाब न तहँवां * पापी सब आवतहैं जहँवां
केतनो मैं इनका समुझावा * तदपि न मानत मोर मनावा
कहनारद हम कीजै काहा * जेहिते मानिजाइ यमनाहा
बोले धर्मराज तुम जाहू * जगमें भरमायो सब काहू
जेहिते रामभक्ति तजिसारे * आवहिं तब सब लोकहमारे
कह नारद हमते नहिं होई * कोटिउपाय करहु किन कोई
तुम चाहो भरमावो जाई * हरिहू कहा भला है भाई
जे होइहैं दृढ़ भक्त हमारे * ते नाहिं लगिहैं कहे तुम्हारे
तजिहैंभक्ति मोरिनहिं कबहीं * सुनिचालिभे रविकेसुततबहीं
आये भूपकास के ग्रामा * नाउतरूप बना यक तामा
लागहलावन दोउ करशीशा * अपर बजावहिं बाजनबीसा
कौतुकदेखि लोग जुरिआये * माथनाइ अस वचन सुनाये
किमिहोवे हमारि कुशलाता * देहुबताइ कृपाकरि दाता
बोला जो चाहौ कल्याना * तौ तुम सेवहु वीर मशाना
पूजहुशक्ति भक्तिकरि भारी * पावहुतुरत पुत्र धन नारी
की भैरवँ मरहीका सेवो * अजयापुत्र महिष बलिदेवो
इनते मनवांछित फलपैहो * जेहिकोपिहौतिहितुरतनशैहो
खेतरपालहि पूजहु कोई * तेहिके विघ्न न कबहूं होई
पांचहु पीरन में मनदेहू * जिनते मनवांछित फललेहू
महावीरहैं शंकर देवा * मिलहिनकछुफलइनकीसेवा

दानवर्ति बहुहैं जगमाहीं ❁ कोजानहिंफलमिलै किनाहीं
रामभक्ति जो वेदनगाई ❁ सो तौ है अतिशय दुखदाई
जो नर हरिकी भक्ति प्रकाशै ❁ सुतवितनारि तासु की नाशै
रोगभोग बहुभांति सतावै ❁ जहँ निकसै तहँ हँसी करावै
यहिविधि कष्टसहै बहुकाला ❁ तबकबहूं हरिहोइँ दयाला
तेहिपर ताहि कछू नहिं देहीं ❁ मूरख यहिमत का मन देहीं
सुनिसुनि दूतनकी असबानी ❁ हरिते विमुखभये बहुप्रानी
रामभक्त जे रहैं सुजाना ❁ तिनतनको विश्वासनआना
जेमतिमन्द विषय रसपागे ❁ ते प्रभुका तजि पूजनलागे
बनितनका देहीं इमिसीखा ❁ गलिन२ मिलिमांगहुभीखा
लूटिबजार भक्तिकहँ पूजौ ❁ मिटहिसकलदुखसुखनितभूजौ
काहुइ यन्त्र मन्त्र सिखराये ❁ काहुइ भूत चढ़ाय छोड़ाये
काहुहि दीन्ह सुता सुतनाती ❁ काहुहिदीन्हेनिधनबहुभांती
एकहु बात कबहुँ फुरहोई ❁ सकलसत्यकरि मानहिंसोई

दो० यहिविधि जगभरमाइकै गे यमपुर यमदूत।
सोई रीति संसार में अजहूं है कहसूत॥

छं० कहसूत अजहूं रीति सोई रही जगमें छायकै।
सचमानिनर सबकरत जेहिते परतअघमें आयकै॥
मतिधीर जे गम्भीरजन ते झूठ मनमें जानिकै।
तजि भर्म नाना धर्म हरिकी शरणभे सुखमानिकै॥

दो० रामभक्ति दृढ़करनहित हरनभर्म तमरूप।
बरणीजन रघुनाथ तेहि यहइतिहास अनूप॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागर श्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतराजाकासकथावर्णनोनामपंच
चत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

दो० सुमिरिरामासियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
भक्ति रत्नमतकहौं कछु पातंजलि जुबखानि ॥
कहशौनक नवधा भगति कहौ योगयुत मोहिं ।
जो वरण्यो ऋषि क्रासते सोइसुनावौं तोहिं ॥

भाजब शिष्य नारदकर राजा ❋ बोलातबहितसहितसमाजा
नाथभये सब शरण तुम्हारी ❋ बिनगुरु होत न दृढ़ताभारी
जिमिशिशुअम्बदूधबिनपीन्हें ❋ मरै न भरै चीणता लीन्हें
कह नारद सुनु भूपप्रसंगा ❋ हैं हरिभक्तिकेर नव अङ्गा

दो० श्रवण कीरतन अस्मरण पदसेवनअरचन्य ।
वन्दन दास्य सखात्मनय वेदन नवयेगन्य ॥

दशईं प्रेम लक्षणा जानो ❋ पृथक् २ अससकलबखानो
जो हरिकथा सुनै मनलाई ❋ तासुश्रवणमग हरि उरआई
बसि पंकज अघनाशैं कैसे ❋ शरदकालजल मलहरै जैसे
विषयी विरत विमुक्तउमाही ❋ हरिगुणसुननसबनकहँचाही
वीत राग हरि चरिततेकोभा ❋ है करिकोइकिलहैं कहुँशोभा
अजगिरीश योगेश्वर आदी ❋ अपरभये जे मुनिश्रुतिवादी
रामचरितसुनिकोउनछकन्दा ❋ अबनरुचै तेहिजानहुमन्दा
जो नर हरिगुण सुनै न काना ❋ सो खर ऊंट कोल समश्वाना
भयो निरादर भाजन भारी ❋ तेहिते श्वान कह्योनिरधारी
असदबात बहुविधिके परणा ❋ चरत ऊंटसम ताते वरणा
वहै भार गृहको दिन राती ❋ तेहिते खरसम कह्योंकुजाती
अमितअनन्द कथाके माहीं ❋ श्रवण समेत सुनै को नाहीं

दो० प्रवरा चातक हंसशुक मीन मक्षिका बैल ।
श्रोता द्वादश भांतिके मधुव्रक तमचुरशैल ॥

द्वादशमें षटउत्तम जानो ❋ अपरअधमअबदोषबखानो

अन्यमान हगलोग अधीरा ❋ पदछेदक असमञ्ज शरीरा
वादरसिक निद्रावश मानी ❋ बिनविश्वासअहितअज्ञानी
रुद्धदोष बिन श्रोता होई ❋ चरितामृत तब पावै सोई
ताते भूप दोष तजि सारे ❋ सुनौ कथा हरिकी निरवारे

दो० कथा प्रीतिते सफल है मोक्ष हेतुको कर्म।
कथारहित जो कृतकरै सो केवल पयशर्म॥

श्रवणपरीक्षितभल करिजाना ❋ अबसुनुकीर्तनभक्तिसुजाना
प्रभुके जन्म कर्म बहुतेरे ❋ मंगलप्रद जे अहैं घनेरे
लज्जा रहित तिन्हैं जो गावै ❋ सोनिश्चयअभिमतफलपावै
नारदादिऋषि जहँलगरहेऊ ❋ मनुहरहरिगुणसबहिनकहेऊ
रामचरित वरणयो सोइबानी ❋ सुभगसत्यशुचिमंगलखानी
हरि बिन विषमवादि सबधंधा ❋ इमपिप्रोक्त द्वादश अस्कंधा
वक्तापांच प्रकृति के जाना ❋ रविशशिउडुमणिदीपसमाना
वक्ताहू में दोइक होहीं ❋ तजिये योग सुनावों तोहीं
पक्षपात धन चाह अधीना ❋ श्रोता नहिं समुझै परवीना
प्रश्नकरै तेहि उतर न देवै ❋ सारवस्तु सुनि तर्क न लेवै
मूर्ति बांधिकै वचन उचारै ❋ मूरख सो कैसे उरधारै
प्रेम प्रतीति प्रीति बिनतोषा ❋ पूछत बातकरै अतिरोषा
बहुत पाप श्रोता जब करहीं ❋ तब ऐसे वक्ता शिर परहीं

दो० पढ़िगुणि वेद पुराण हरि भक्ति न कीन्हीसार।
ज्यों पशुचन्दन भारधरि भरमतजेहितेंहिद्वार॥

श्लोकआदिपुराणे॥

यथाखरश्चन्दनभारवाही भारस्यवेत्ता नतु चन्दनस्य।
तथा च विप्राः श्रुतिशास्त्रयुक्ता मन्त्रफिहीनाःखरवद्वहन्ति॥

दो० ज्यों विधवा के शीशमें सोहै नहिं सिंदूर।

गुण चतुराई राम बिन त्योंही जानो कूर ॥
गावैविधवा अपनकहि बनरा दुलहिन केर ।
पतिसुखलहै न स्वप्नहू तिमिहरिजनबिनभेर ॥
विद्या गोधन वेद चहुँ भक्तिदूध जब भक्त ।
पावै बरतावै तनुज लहै किलन बिनअक्त ॥
तेहिते रसिक अनन्यह्वै कहै रामगुणग्राम ।
तबपावै शोभा यथा बलित चंद्रनिशियाम ॥

कीर्तनशुकमुनि भलकरजाना * अबसुनुसुमिरनभक्तिसुजाना
श्रीपतिको सुमिरन जो करई * गोपदइव सो भवनिधि तरई
गणिकायमनगयन्दअजामिल * कीरआदिकविकटुउधरेकिल
विषयिन भजै विषयको पावै * रामैसुमिरि राम ढिग जावै
विधिहरिहरगणपतिअहिराई * सुमिरन ते पाई प्रभुताई
हरिसुमिरनसब सुखको मूला * हरिसुमिरे नाशै सब शूला
हरिसुमिरनकीजैजिमि गाई * चरतफिरतशिशुबिसरिनजाई
हरिसुमिरनकीजै जिमिकामी * तजिहियहोतनारिअनुगामी
हरिसुमिरनकीजै जिमिलोभी * निशिदिनरहैद्रव्यहितक्षोभी
हरिसुमिरनकीजैजिमिचातृक * गनैनहानिलाभ निजमातृक
रामनामजिनसुमिरनकीन्हेउ * तिनजनुसकलधर्मकरिलीन्हेउ
रामनाम जिन हिरदै धारा * तिनका कहा करै संसारा
रामनाम कर सुमिरन सांचा * जेहियांचे जगहोइ अयांचा
बहुत जन्मको पुण्य विहीना * रामनाममुख जात न लीना
दम्भौते जो नाम उचारै * पावक सम अघ तूलहिजारै
शत्रुभाव करि जो कोउध्यावै * सोऊहोय मुक्त श्रुति गावै

दो० भृङ्गी भयते कीट ज्यों होत भृङ्ग तन अन्त ।
तैसे अरिअघ त्यागिवपु धरतरूप भगवन्त ॥

राम नाम के बीच में मनका देइ मिलाय।
करिहरिसमरघुनाथसों सहजमाहिं छुटिजाइ॥
कलिके कलुषी नरननहिं आनधर्मअधिकार।
रामनाम इति वर्णयुग जपि ह्वैहैं भवपार॥
ते बड़भागी जीव जे कलियुग में हरिनाम।
सुमिरैं सुमिरावैं सुखद सकल कृतारथ धाम॥
पाप दहन हरिनामसे इतनी शक्ती आहिं।
जितनी पापी नरनको पाप करन की नाहिं॥
चण्डाली जो राम इति रसना करै बखान।
तासँगबैठियबोलिये भोत्रिय श्रुतिपरिमान॥

श्रुति यश्चाण्डालोरामेति वाचंवदेत्तेन सहसंव-
सेत्तेनसहसंवदेत्तेनसहसम्भुञ्जीयात्॥

दो० रामनाम कलिकामतरु कहतसकल श्रुतिसाध।
लहै कामफल जोधरै उरतजि दशअपराध॥

सो० दश अपराधसो कौन नाथ कृपाकरि वर्णिये।
सुनो कहौंमैं तौन सनकसंहिता माहिं जस॥

कुं० गुरूअवज्ञा एकहरि जन हरि निन्दा ताप।
गनै ब्रह्म में भेद पुनि करै नाम बल पाप॥
करै नाम बल पाप नाम परताप न जानै।
बिनसरधा उपदेशि दोषि श्रुतिशास्त्र न मानै॥
मानै ठगि रघुनाथभजै निज इन्द्री कटुउर।
ये दश तजि अपराध जपै तब नाम फलैगुर॥

दो० तेहिते तुमहूं दोषतजि जपहुनाम निरशंक।
ब्रह्मलोक सुख नहिंरुचै और कहा नृपरंक॥
सहित दोष निरदोषहू राम नाम जोलेइ।

तबहूं ताकी भाग्यकी को अस उपमा देइ ॥

सुमिरन भलेकीन प्रहलादा * अबसुनु सेवन भक्ति सवादा
सेवन भक्तिकीन श्रीनीके * तेहिते बसी विशद उरपीके

दो० देव यक्ष गन्धर्वनर असुर इतर कोइ होइ ।
जो सेवे हरिपद कमल सदसुख पावै सोइ ॥
हरिपद सेवन बिनमनुज जहांजहां चलिजात ।
तहांतहां भययुत रहत मृत्यु न छोड़त खात ॥

तेहिते रामचरण नित सेवो * अर्चन भक्ति छठी सुनिलेवो
परमानंद दानि हरिपूजा * इहिते सुगम उपाय न दूजा
केवल हरि अर्चन के कीने * लहत तोषसुर सकल प्रवीने
जिमिसींचे जर सब तरु तोषै * हरितन होइ पात जो पोषै
मुखते अशन प्राणही खावैं * सब इन्द्री तिरपित ह्वैजावैं
प्रभु आनंदसिंधु सुखधामा * करुणाकर परिपूरण कामा
सो निजपूजा चहै न कबहीं * निजकल्याण हेतुकरै सबहीं
हरिहिपूजि पूजित ह्वै येहू * पावै सुख सम्पति निज गेहू
ज्योंनिजमुखतिलकादिलगावै * सोइ दर्पण प्रतिबिम्ब सुहावै
श्रीपति मान दिहे बिन प्रानी * लहै न कतहुँ मान अज्ञानी
प्रभुकर मान करै नर जबहीं * हरिहुताहि सन्मानत तबहीं
प्रभु आदरेउ धन्य नर सोई * तेहिसम बड़भागी नहिं कोई
सकल देवमुनि ताहि सराहैं * चरण रेणु तेहि पावन चाहैं
ऐसी है हरिपूजन ताता * पुनि पैसरे केरि नहिं बाता
दम्भ सहित मद दुष्ट धनादी * करहिंयतनसो श्रमसबबादी
जल अंकुर दल दूब चढ़ावै * बिन मद सो उत्तम गतिपावै

दो० मारुदारु हरि चित्रपवि पुरट मनोमय रत्न ।
ये प्रभु प्रतिमा आठविधि पूजे जन करि यत्न ॥

तोटकछन्द ॥ हरिपूजन षोड़श भांतिकही । प्रथमै आवाहन कीनचही ॥ पुनिआसन पादर्घाचमनं । अस्नान पटाहुति सूत्रतनं ॥ शुचिचन्दनपुष्प सुधूपदिपं । नैवेद्य तँबूल विनय अधिपं ॥ परदच्छिण षोड़शभांतिइथं । चरणामृत नाशतकोटिबिथं ॥

दो० जलदल चन्दन चक्रदर घंटशिला हरिताव ।
अष्टवस्तु मिलि होतहै चरणामृत सुखदाव ॥
फल चरणोदक लिहेकर कहँतक करौंबखान ।
भूमि परे पातक तथा अब सुनु दीपविधान ॥
चारि चरण युग देशकटि मुखमंडल इकबार ।
सप्त चक्र सर्वांग पर इमि आरती उतार ॥
श्रीहरिपूजा अमितफल परमपुण्य सुखदानि ।
ताते संतत कीजिये प्रीतिसहित हितमानि ॥
अबसुनुदूसरि विधिकहौं जाहि करतसनकादि ।
अगजगरूप अनूपहरि आसन देइअनादि ॥
पाद पुष्टता अर्घ अपि शुचिसनेह अस्नान ।
वसनविनयमखसूत्रगुणचितचन्दनसिकज्ञान ॥
धूप वासना दीप निज बोधहरै अविवेक ।
अशुभाशुभ तूलासघृत गोवर्त्तिका अनेक ॥
विरति वह्निकरि अर्पिये विविधभाव नैवेद ।
प्रेम तांबूल सुगन्धपन पाइमिटत भवभेद ॥
सदन सत्य पर्यंकपर रामहिं शयन कराइ ।
क्षमा दया परचारिका तत्र सुदेइ लगाइ ॥
यहिविधि जो पूजन करै हरै सकल सन्ताप ।
निरवर्ती की रीति यह केवल हरि का जाप ॥

पूजन भले कीन्ह पृथुराजा * पूरब पश्चिम सनकसमाजा
छठईं वंदन शक्ति अनूपा * प्रभुवंदन सबका सुखरूपा
वंदनकरै जोरिकर जबहीं * मङ्गल सो नर पावत तबहीं
सुकृतजीव हरिसम्मुख आवै * मनवचकर्मकरि शीशनवावै
सो हरिधाम मोक्ष सुखलहई * इमिभागवतमाहिंविधिकहई
सकृतप्रणाम प्रभुहि करकोई * तेहिसमदशअश्वमेधनहोई
दशअश्वमेधी पुनि जगजावै * कृष्णप्रणामी बहुरि न आवै
मगखसिगिरे व्यथावशपरई * विवशनाम हरिवंदनकरई
तासु महाअघ संचित नाशै * प्रीतिसहितफलकौनप्रकाशै
वन्दन कीन दानपति आछे * अपरभये बहु आगे पाछे

दो० हरिप्रणाम महिमा अमित कोकरिसकै बखान।
तेहिते वंदन राम की करहु मानि कल्यान॥

सतयें भक्तिदास्य असनामा * दास भाव है सेवै रामा
जासुनाम सुमिरत अघजरई * जासुचरणजल भवरुजहरई
जासु कटाक्ष चहैं विधि ईशा * भजैंजाहि सनकादि मुनीशा
तेहि प्रभुकेर दास जबभयऊ * कौनकर्म बाकी रहिगयऊ
तिनका कछू न चाही कबहीं * दास भये परस्वारथ सबहीं
दासभाव बिन जरनि न जाई * इमि दुर्वासा कह्यो बुझाई
जो यावतहरिजन नहिंतावत * सुकृतसदन रागादिचोरावत
दासभये धनहर्त्ता जेते * लगहिं भक्तिसाधन महँ तेते
भगवत हेत सकल ब्योपारा * होतसुखदशुचिमिटतविकारा
दाससरिसप्रियप्रभुहिनकोई * रघुपतितिलकसांझहमजोई
बैठेजहँ सबसबविधि चीन्हा * तिलकदास हनुमानै दीन्हा

दो० काय वचन मन कर्मकरि सो अरपै भगवान।
विधि निषेधनहिं नाथवश दासभाव सोजान॥

नारायण को दास जो भयो न लहि वरवृत्ति।
जियतसोशवसमकहतइमिपाराशरअस्मृत्ति ॥

अष्टम भक्ति सखत्व कहावै * रघुपति सखा परमसुख पावै
नन्दगोपिका अरु ब्रजवासी * भये मित्रता करि सुखरासी
निशिचरपति सुग्रीव निषादा * भये सखाकरिरहित विषादा
अपरमित्रप्रति स्वारथ चाहै * रामसखा सुखते सुख लाहै
अपरसखा कोउजाइ विदेशा * तेहिवियोग दुखहोइअँदेशा
अन्तरयामी राम कृपाला * निकटरहत संतत सबकाला
अपरमित्र में असगुण नाहीं * जसगुण है रघुनन्दन माहीं
यहिते सबसुख तुच्छविचारी * श्यामसुँदर ते कीजे यारी
मन मलीन पूरबकृत दोषा * पुनि तामें डारत करिरोषा
ताते संसृति पुनि पुनि लहई * किमि उद्धारहोइ श्रुति कहई
जिमिकोइकेतुपकरिनदगहेऊ * किमिउतरै फिरिफेनुइगहेऊ
बासुदेव बोहित सुख धामा * सकल विश्वदायक विश्रामा
जबलग तिनमेंप्रीति न करई * तबलग कर्मसिंधुनहिं तरई

दो० प्रभुपद प्रीतिसोहोतही मिटतत्रिविधदुखदोष।
सकल सुसाधन केरफल यतनै करियन मोष ॥

नवईं भक्तिसुनो मोहिं पाहीं * आतमअर्पनसम कोइनाहीं
जो निज देहादिक प्रभुपासा * करै समर्पनतजि सबआसा
सोनिश्चिन्तरहत सबकाला * तासुफिकिरिप्रभुकरतकृपाला
जिमिकोइवृषभअश्वनिजबेचै * तासुयत्नहित करत निशोचै
राम मया भाजन सो अहई * हरिऐश्वर्य मोक्ष ते लहई
तर्कशास्त्र अरु नयविधिचारी * अहै जीवकहँ सब सुखकारी
तेसब निगमनीति अनुकूला * करैंभलीविधिनहिंप्रतिकूला
परमपुरुष श्रीपतिगुणसागर * अन्तरयामी राम उजागर

तिनका आतम करै निवेदन * तौ सबसांच जानिये खेदन
तनमन हरिहिहिअर्पनकीना * तौ धर्मादिक फल परवीना
गुणातीत सोइअहै विवेकी * नृपबलिकेरि टेक जिनटेकी

दो० तेहिंते सर्वसु अर्पिकै निर्भय हरिगुण गाव।
आखिरइकदिन छूटिहै अबसुनु शरणप्रभाव॥
देव पितरऋषि भूतकर ऋणी अहै सबकोय।
हवनश्राद्धअध्ययनबलि करनित्ततबमुचहोय॥
नाहिंत सबविधिकर्मतजि गहै शरणहरिकेरि।
तब छूटै ऋणपाप कोइ तेहितन सकै न हेरि॥
अथवाऋण दीन्हे विना रहै ब्योहर आधीन।
सोनरइमिदिनभरैजिमिऋणीधनिकवशदीन॥
याते कृष्ण कृपाल के युगपद सब सुखदानि।
परमकृपालय जानिकै शरणगहौ प्रणठानि॥

जे नर रामचरण सुखकारी * शरणगह्यो जबदृढ़ब्रतधारी
प्रबलकालतेहिलखिइमिकहई * यहअब हमरेवशनहिंअहई

दो० देखौ सुर नर असुर अहि किन्नर खगगंधर्व्व।
काल कलेवा ह्वै रहे ब्रह्मादिक जगसर्व्व॥
बचत न कोई कालते जहँ तक आवत दृष्ट।
करत ग्रासबड़वाग्नि ज्यों यों कह योगवशिष्ट॥
ऐसो कालकराल सो डरत जासु दिशि देखि।
जे हरिशरण न गहैंते शठसम पशु के लेखि॥
प्रेमलक्षणा प्रेम करि रहत न देह सँभार।
दशधा भक्ति कहाव सो यहसबते अधिकार॥
दश भक्तिन महँ एकहू जिनराखी उरधारि।
सोइबल्लभ श्रीरामकहैं कहापुरुष कहनारि॥

संतदास अरु शिष्यता पुनि वात्सल्य शृंगार।
जलमहि मरुभुकनभसुये भक्तिपंचरस सार॥
श्रीगुरु देवादास के चरणकमल धरि माथ।
कहे भक्तिके अंगसब सुखप्रद जन रघुनाथ॥

इति श्री विश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतनवधाभक्तिवर्णनोनामषष्ठचत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
योगशास्त्र मतकहौं कछु हंसोपनिषद् जानि॥

बोले भूप बहुत सुखपाई * बिनगुरु को सद् पन्थ बताई
पातंजली शास्त्र के माहीं * कह्योयोगकिमिसोमोहिंपाहीं
कहमुनिभले सुनो मनुलाई * सघनस्वल्प करिकहौं बुझाई

दो० आठ अंग हैं योग के यम नेमासन साधि।
प्राणायाम प्रत्याहारअरु धारण ध्यानसमाधि॥

प्रथमयमअंग॥

सत्य अहिंसा पुण्य धृति क्षमा अचाह असंग।
ब्रह्मचर्य्य निरभय भवन गुण भुक थिर यम अंग॥

द्वितीयनेमअंग॥

शौच धर्म जप तप अतिथि हरिगुरु सेव सँतोष।
सौम तीर्थ उपकार पर निर्छल नेम अदोष॥

तृतीयआसनअंग॥

चौरासी आसन कहे तिनमा उभय विशाल।
एकपदुम दृगशुद्ध मनि सो साधे शशि शाल॥

चतुर्थप्राणायामअंग॥

चतुर्थ प्राणायाम करै षट चक्कर को शोधि।
इकाधार स्वधिष्ठान पुनि मनिपूरक को बोधि॥

चौथा अनहद चक्रकहि पँचवां नाम विशुद्ध ।
छठवां आज्ञा समुझि के जपै मंत्र रा शुद्ध ॥
पूरक में षोड़श जपै कुम्भक में चौंसट्ठि ।
रेचक में बत्तिस कहै हरे हरे जनि हट्ठि ॥
ज्यों ज्यों ठहरै पवन उर त्यों त्यों मंत्र बढ़ाय ।
कुम्भक आठ प्रकार की सुनो कहौं अब गाय ॥
प्रथमैं सूरज भेदनी पूरै पिंगल बात ।
रेचै बायें रोंकि कछु हरै वायु रुज गात ॥
उभय उजाई पवन की पूरि धरै उर माहिं ।
ईड़ा ते रेचन करै कफ रुज ले घर जाहिं ॥
तीसरि शीत जो कारणी पेय घ्राणते पौन ।
शीशी कहि मुखते तजै भजै क्षुधा तिरषौन ॥
चौथि शीतली पूरई जीह वदन ते प्रान ।
रोंकि निवारै नाक तेहि करै वृद्ध ते ज्वान ॥
पँचईं भास्त्रिक श्वास ते भरै तजै अति शिघ्र ।
थकेकरै रवि शशि ठहरि मिटै त्रिविध रुज विघ्न ॥
छठी भ्रामरी भृंग धुनि भरै श्वासते वाय ।
रेचै ताही शब्द ते मन चंचल ठहराय ॥
सतईं मूर्च्छा नाम को सुमिरै श्वास उसास ।
प्रभुइ मिलावै दुख हरै करै पेट दुखनास ॥
अठईं केवल जो कही प्रथमैं मंत्र गनाय ।
सो कुम्भक मो सिष्ट है जिमि मनुषन में राय ॥

पंचमप्रत्याहारअंग ॥

पंचम प्रत्याहार जो विषय ओर मन जाइ ।
घेरिलगावै ध्यान में ज्यों निज सुत को माइ ॥

तब आपुइ वश होइ है जिमि बनियाकर भूत।
तदपि सजग रहिये सदा रिपु सम जानि कपूत॥

षष्ठधारणाअंग॥

षष्ठम धारै धारणा पांचों तत्त्वन केरि।
प्रथमैं गुरुगोविन्द की प्राणपवन हियहेरि॥
काल ज्ञान तेहिलखै जो वरण्यो विविध प्रकार।
चक्षु चक्र छाया पुरुष दीप गन्ध ध्रुवतार॥
भ्रूअदिष्टि नौदिन जपै घ्राण अलख दिनसात।
तालू लौं जपि पांच दिन एक रसन सुखबात॥
प्रश्नय विविध प्रकार की हैं सुरही में लेखि।
जो सब समुझा चहै तो लेइ स्वरोदय देखि॥

सप्तमध्यानअंग॥

सतवां अंगहै ध्यानका सोउ चारिविधि मीत।
पदस्थपिण्डस्थरुपस्थवा चौथारूप अतीत॥
पदस्थ जो श्रीराम के चरण कमल उरलेइ।
नखशिखलौं छविनिरखिपुनि पायँनमें मनदेइ॥
करते करते ध्यान यह हरिको प्रापत होइ।
कीकुम्भककरि प्रणवयुत जापत पावै सोइ॥
दूजा ध्यान पिण्डस्थहै शोधै पिण्ड सरोज।
भ्रमरगुफाचढ़ियुक्तिते त्रिवलीकोलहै खोज॥
रूपस्थध्यान तीसरसदा चितवै भृकुटी ओर।
लखैज्योतिउड़मालशशि रविप्रकाश सब ठौर॥
चौथा रूपातीत सो ध्यान शून्य का होइ।
करत शून्य ह्वै आपहू रहै न भवरुज कोइ॥

अष्टमसमाधिअंग ॥

अठवां किहे समाधिके आपा जात नशाइ।
ध्याता ध्यान जु एकहै मिलै तुरी में जाइ॥
अष्टांगयोगजो मैंकहो सो तुम समुझेउ तात।
अब सुनु जो षटकरममें प्रथमैं कीन्हें जात॥
प्रथमैं तानों नाक ते डारि दुहै मुख ओर।
दूजा धोती झीन पट निगलि निकारै कोर॥
तीजा वस्थी गुदाते नीर खैंचि तजि देइ।
चौथागजजलयुक्तियुत शोचिउदरभरि पेइ॥
पैंचवां न्योली कर्म ते नलै विलोई जाहिं।
छठवां त्राटक हगनकी पलक लगावै नाहिं॥
अब सुनु मुद्रापंचविधि प्रथम खेचरी होय।
मुखमें तासु निवासहै बढ़वै जीभविलोय॥
दुसरी मुद्रा भूचरी नासा जासु निवास।
प्राण अपान जुदी जुदी करि देवै यकपास॥
तीजी मुद्रा चाचरी बसै हगन बिच सोपि।
नासा आगे दृष्टि धरि देखै अचरज गोपि॥
चौथी मुद्रा गोचरी करत श्रवण में बास।
ज्ञानसुरतियक होतहै अनहदशब्द प्रकास॥
पँचईं मुद्रा उनमुनी बसै सो दशयें द्वार।
पावै सिद्ध समाधि तहँ होय बासनाक्षार॥
बन्धन चारिप्रकार सुनु महाबन्ध पुनि मूल।
जालन्धर उड्यान चहुँ हरै हृदयकी शूल॥
योग क्रिया रघुनाथ सब बरणी मति अनुसार।
गुरुबिनसधतनसमुझितेहि कीन्ह्योंनहिंविस्तार॥

योगतपस्या के किहे मिलै ऋद्धि अरु सिद्धि।
तिनमें बहै न चतुरसोइ अब सुनिकिनकीवृद्धि॥
प्रथमें अणिमा लघुकरै दूसरि महिमा मोट।
तीसरि लघिमा तूलसम गरिमाकरै बड़ोट॥
पँचई प्रापतचहुँ तहां फिरि आवै अतिहाल।
छठी प्रकाम सुबपुधरै सतई ईशता जाल॥
वशीकरन सिधिआठवीं करै चहै तेहिवश्य।
रामभजनबिनबादिअब सुनयककमनिधिदश्य॥
महापद्म अरुपद्मपुनि कच्छप मकर मुकुन्द।
शंखखर्व नीलाठये नवई निद्धि जुकुन्द॥
ऋधिसिधिभई तौक्याभयो जो नभज्योरघुवीर।
खगबहुउड़त अकाशमें कृमि बहु नांघत नीर॥
लोक रिझाये हानिबड़ि लाभतुच्छ सन्मान।
वाह वाह कहि भांड़ के सर्प डसनगे प्रान॥
तेहिते त्रयविधि कीजिये हरिको सुमिरनसार।
सत्यसत्य मितिनाथ फिरि कहौं सहित विस्तार॥

चौ.छं. सुनुसुमिरनकीबात कहौं अबतोहिंरे। जेहितेइन्द्रिनसहित अचलमनहोहिंरे॥ पदमासनकोकरै नतौसिधजानिकै। मेरुदण्डसमराखिचिबुकउरआनिकै॥ नासापरकीदृष्टि तिकुटीटामको। सुमिरैसांसउसास रामही नामको॥ रटतौमिलैमिठासआशआगेपरै। अग्निफूलसे प्रथमपुरहलागतझरै॥ कछुदिनमेंलखिपरै दीपकीज्योति जू। पुनितारनकेमाहँ बिंदुद्युतिहोतिजू॥ शनइरशनइरसो मसूरबहुदेखई। सहसकमलपरपरमआतमहिंपेखई॥ बड़ी विरहकीलायपायसुखरासही। झिलमिलझिलमिलजगत

तेजमेंभासही ॥ ज्योंजलनिधिमेंबूड़िबिलोकैमाहिंजू । दशदि
शिदरशैजलै औरकछुनाहिंजू ॥ बाजैअनहदनादतहांदश
भांतिजो । वरणोंतिनकीरीतिरहनिह्वैजातजो ॥ प्रथमभँवरगुं
जारअंगपुलकावई । पुनिसुननेपरनादसुआलसआवई ॥
तीसरिधुनिसुनिशंखप्रेमपीड़ाजगै । चढ़ैअमलसुनिघंटशी
शघूमनलगै ॥ पंचमबाजततालअमीबरसावही । षष्ठमुरलि
तजिकंठतरेसोइपावही ॥ सप्तमभारीसुनतबढ़ैछविमूरकी ।
अंतरयामीहोयलखैगतिदूरकी ॥ अष्टमअकनिमृदंगनाद
अनहदसुनै । अपरनजानैकोइ काल यहतिहुँगुनै ॥ नवम
नफीरी सुनतअगोचर होइजू । चहैतहांचलिजाय नदेखै
कोइजू ॥ पुनिहोवैअस्थूलदशासबदेवकी । दशईंकेहरिनाद
सुनतअहमेवकी ॥ गांठिकठिनखुलिजाय होयसोब्रह्मही ।
सत्चित्आनँदरूप मिटै सबकर्महीं ॥ जिमिहिमहिलिमि
लि उदधिकहावैउदधिही । होयवह्निसँगवह्निदहतजोसं
गही ॥ करैसदायहध्यान बैठिएकान्तमें । अल्पअशनअनु
रक्तरहैरसशान्तमें ॥ नाहिंतनिजपगपानिमूंदिनवद्वारको ।
सुनै सुरततेशब्द अनेकप्रकारको ॥ भाषतजनरघुनाथस
नेहीरामके । भयेयही करिसन्त निवासीधामके ॥ जोचाहै
हरिभक्ति भजैअवतारसों । करैंध्यानसबअंगसमुझिगुरु
द्वारसों ॥ जपैइष्टकोनाम प्रेममनठानिकै । सदासर्वगतईश
सर्वकोजानिकै ॥ सुन्दरश्यामस्वरूप इषदउरआवहीं । ब्र
ह्मलोकका सुःख न तब तेहिभावहीं ॥ अन्तभावनासरिस
लहैभगवन्तको । प्रभुताकरप्रभुपुनि प्रतिपालकसन्तको ॥
अल्पइष्टको अल्पभूरिकोभूरिहै । चाहवन्तकोनिकटचाह
बिनदूरिहै ॥ कहतउपनिषदवेदसोईश व पारहै । जोजन

करणीकरै करणिहीसारहै ॥ करणीहीहैऋद्धि करणिहीसिद्धिहै। बिनकरणीनहिंहोतकिसीकीवृद्धिहै ॥ तातेजनरघुनाथसुकरणीकीजिये। अशनविनानहिंहोततृप्तसुनिलीजिये ॥

दो० सिफत करैको खांड़ की धरै न मुख अभिराम।
लहेस्वाद रघुनाथकिमि तिमिसुमिरनबिननाम ॥
हरि सुमिरन कीन्ह्यों नहीं कैसे सुख सरसाय।
हरदी जरदी तब चढ़ै जब मरदी भल जाय ॥
सुमिरन बिन जानै कहा कोइ हरिनाम प्रभाव।
जिमि माणिकके मोल को मानिक परखै पाव ॥
कुटिल कृतघ्नी कूरते राम तत्त्व जनि गाय।
अन्धे कर हीरा परी देई दूरि चलाय ॥
राम तत्त्व गुरु भक्त ते कहिये जानि कृतज्ञ।
पदिक पारखी लेइगो होइ न क्योंकर अज्ञ ॥
वेदरु शास्त्र पुराण कर कहेउँ जो व्यापक मत्त्व।
अबसुनु भाषों स्वल्पमें तिन सबहिन को तत्त्व ॥

कुं० चारि वेद के अंगषट ग्राह्य सूत्र व्याकर्ण।
शिक्षा ज्योतिष छंदविधि पुनि निरुक्त निजवर्ण ॥
पुनि निरुक्त निजवर्ण वेदके चहुँ उपवेदा।
ऋगका आयुरतस्य चिकित्सा शास्त्र अखेदा ॥
यजुर्वेद कर धनुर्वेद तत युद्ध शास्त्र कहि।
साम केर गन्धर्व तस्थ संगीत शास्त्र सहि ॥
सही अथर्वण को अरथ शिलपशास्त्रयुत धारि।
अपर मिमांसा आदि हैं हैं षटशास्त्र विचारि ॥

चरपटछंद ॥ तत्त्वमसीकहै सामवेद। ब्रह्मजीवहैप्रकृति भेद ॥ प्रज्ञानदऋग्वेदबयन । शीवस्वयंआनन्दअयन ॥

ब्रह्मअस्मिपदयजुरभाखि । चेतनसबमेंहैभरतसाखि ॥ अं आतमाअथर्वणआह । मेरीसबकोइभरतचाह ॥ सकल वाक्यकोयहीअर्थ । ब्रह्मजीवमायाअनर्थ ॥ अबसुशास्त्र मतसुनुसुजान । जेहिविधिमुनिवरकरतगान ॥

दो० प्रथम मिमांसा शास्त्रके जैमिनिमुनि आचार्य्य ।
धर्म्मबिषे रघुनाथभनि स्वर्गादिक फलकार्य्य ॥
दुतिये वैशेषिक शास्त्र तस्याचार्य कणाद ।
शून्य पदारथ ज्ञानफल भावाभाव विवाद ॥
न्याय शास्त्र गौतम ऋषय भाष्योतर्क विशेखि ।
प्रमानादि षोड़श अरथ बोध प्रयोजन लेखि ॥
चतुरथ पातंजलि लियो योगशास्त्र सुखमूल ।
विषय निरोधन चितविरति नाशक संसृत शूल ॥
पँचवांशास्त्र जु सांख्यके कर्त्ता कपिलयोगीस ।
प्रकृतिपुरुष निर्णयबिषे हेतु त्रिविध दुखबीस ॥
षष्ठम शास्त्र वेदांत के आचारय मुनि व्यास ।
ब्रह्मजीव की एकता विषय मोक्षफल तास ॥

सो० सर्ग विसर्ग अस्थान पोषण ऊक्ति मनोतरपि ।
मुक्ति निरोध इशान आश्रय दश पुरानमत ॥

दो० वेद स्मृति पुनि संहिता आगम निगम पुरान ।
एक वाक्यता सबन के वेद्य एक भगवान ॥
एक नगर के बहुत पथ सरल सूध चलिजात ।
अन्त प्राप्ति एकै नगर त्यों शास्त्रन की बात ॥
वेद शास्त्रन सहित जो लखै काव्य की रीति ।
तौ न होय सन्देह कछु ज्यों पुत्रन की प्रीति ॥

अरिल्लछन्द ॥ चौहटहाटसमानवेदचहुँजानिये । विविध

भांतिकीवस्तुबिकततहँमानिये ॥ जोजेहिरुचै सोलेइदेइधन धामको। परिहां लीन्ह्योजनरघुनाथरतनहरिनामको॥ पावन पर्वतसरिसवेदअरुशास्त्रहैं। विविधभांतिकीधातुरहततिनमाश्चहैं ॥ जोजेहिरुचैसोलेइभलेहितमानिजू । परिहां सन्तन लीन्हीभक्तिमणिनकीखानिजू ॥

दो० वेद विपिन बूटीवचन हरिजन किमिश्राकार ।
खरी जरी तिनके कने खोटी गहत गवांर ॥
श्रीगुरु देवादास के चरणकमल धरि माथ ।
इतिहासायन ग्रन्थ यह पूर कीन रघुनाथ ॥

गी॰छं॰ रघुनाथगुरुपदमाथधरिकह्योरामयशहितमानिकै ।
कल्याणकर्त्ता पुण्यमत तो पापहर्त्ता जानिकै ॥
कहिहैं जेसुनिहैं सहितनेह विदेहगतिपैहैंसही ।
मनकामकरुणाधामको शुचिनामसोदृढ़करिगही ॥

दो० रामचरितगावत सुनत विघ्नकरत जो कोइ ।
जन्मजन्म तेहि उदरमें रोगजलंधर होइ ॥
विश्रामोदधि ग्रंथमें तीनि अयन हैं तात ।
इतिहासायन कृष्णायन रामायन सुखदात ॥

प्रथमायन परमान गनाई * उनइससै सत्तर चौपाई
दोहा छसै पचास सोहाये * उनहत्तरि सोरठा गनाये
कुण्डलियाचौबिसपहिचानौ * तोटकछन्द अठारह जानौ
कुकुभा चारि मालिका दोई * अष्टपदी तेरह हैं जोई
तोमर उनइस चरपट साता * हरियक आठ भुजङ्गप्रयाता
सुनिमधुभार सरपिका बारा * रोलामनु अश्लोक अठारा
बरवै तीनि सवैया चारी * युग पंकजवाटिका निहारी
शशि समानिका यच सुन्दरी * दोधकतीनि सुप्रियादुन्दरी

यकइस छप्पय तारकचारी ❋ हैं छब्बिसगीतिका करारी
हरिगीताकुक रहत मराली ❋ चिन्तामणिमधुहिरणिगोपाली
कामाकमल विजयहरि लीला ❋ निशिपालिकामनोहरशीला
श्री अमृतगति अमृत युक्ता ❋ एक एक ये छन्दें मुक्ता

दो० अर्द्धभुजंगी संयुता करषा द्वै द्वै धीर।
शशिमुखदीपक पादकटि चारि चारि पुनिबीर॥
बीसचतुष्पद हंसकल उभयअरिल्ल औसान।
चारिसहस पुनिपांचशत हैं अश्लोकप्रमान॥
हरिप्रेरितरघुनाथजन जो कछुकीन बखान।
विश्रामोदधिके बिषे सो जानी विद्वान॥
विद्वन बिन जाने कहा विद्वन की पैशर्म।
जैसे बंझा इस्तिरी प्रसव पीरको मर्म॥
दुर्जन देखै दोषपर पेखै नहिं गुण शील।
लक्ष मुहरके महलमें खोजत छिद्रपिपील॥
संस्कृत प्राकृत फारसी विविधदेशके बैन।
भाषाताको कहतकवि तथाकीन मैं ऐन॥

इति श्रीविश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेइतिहासायनखंडंसमाप्तम्॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर

श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतकृष्णायन
खण्डप्रारम्भः ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ नमोशारदानारदाज्ञानबुद्धिं। नमो गुरुगणेशंहरंविघ्नसिद्धिं ॥ नमोरामघनश्यामकामंस्वरूपं। नमोजानकीजक्कमाताअनूपं ॥ नमो भारतंजयलषणशत्रु आरी। नमोकेसरीनन्दनंसुक्खकारी ॥ नमोदीनदानी सदा शिवभवानी। नमोविष्णुकमलं नमोब्रह्मबानी ॥ नमोमीन बाराहनरसिंहकूरम्। नमोबावनम्परशुरामातिशूरम् ॥ नमो कृष्णबलविर्ष्यभानंकिशोरी । नमोकालिकेदेवत्रयतीसको री ॥ नमोसारयूगंगभूमानुधर्मं । नमोवेदव्यासंनिगमहर्ए भर्मं ॥ नमोऋद्धिआशीसहसबुद्धिराशी । नमोसन्तआनं तमुक्तिप्रकाशी ॥ कहतदासरघुनाथयुगहाथजोरे । करौसर्व ऊपरकृपादृष्टिमोरे ॥

दो० जाते कृष्ण कृपालके कहौं चरित चितचोर।
अर्थअमितआखरनमितहोइरमितलखिथोर॥

रामभक्तिकी सुनि प्रभुताई * मुनिशौनक बोले शिरनाई
नाथवचन तव अमी समाना * तृप्त नहोत उदधि ममकाना
तेहिते अब करुणाकरि गावो * कृष्णचरितकछुमोहिंसुनावो
सुनि सुमन्त बोले हरषाता * भली प्रश्नकीन्ह्यो तुमताता
सुनों कहौं हरिचरित सुहाये * जौन परीक्षित ते शुकगाये

सो सबकरि संक्षेप बखानो ✲ आदिहि ते तामें मनआनो
द्वापर कृष्ण लीन अवतारा ✲ कीन्हें चरित अनेक प्रकारा
कलिआवतगवने निजलोका ✲ सुनिपांडवनकीनअतिशोका
राज्य परीक्षित को सौंपाई ✲ अपना गले हेवारे जाई
विष्णुरात जबते नृप भयऊ ✲ परजनकहँबहुविधिसुखदयऊ
एकदिवस का सुनो हवाला ✲ विजयहेतनिकसा महिपाला

दो० एक ठौर देखतभयो वृषभ एक यक गाय।
भयवश भागे जात दोउ यकनर मारतजाय॥

तेहिके चिह्न नृपनके ऐसे ✲ करतब करतनीचजन जैसे
तबतौ भूपनिकट चलिगयऊ ✲ वृषभ धेनुते बूझतभयऊ
को तुम अहौ जात कितभागे ✲ यहकोहै मारत केहिलागे
कह्यो वृषभभलनिश्चयनाहीं ✲ बोली तब सुरभी नृपपाहीं
येहैं धर्म धरणि हम आनू ✲ कलिके भयते भागे जानू
कलिमलमलिनकरीसबप्रानी ✲ बरणाश्रम के धर्म न जानी
विप्र सुमारग पगनहिं देहैं ✲ बेचिहैं वेद धर्म दुहिलेहैं
विबुध कुपंथनिरत दिठियारे ✲ केहिअवलंबहि अंध विचारे
क्षत्रीछलमय कलिमल मूला ✲ बंचक विप्र वेद प्रतिकूला
बणिक महाजन साह सुनामा ✲ वचनमधुरअतिकरतबबामा
शूद्ररहित निज धर्म विचारू ✲ अशुभजीवकाअशुभअहारू
धर्म सुतीरथ संत समाजी ✲ तहँविशेषकलिकुटिलविराजी
काई सुरसरि विमल तड़ागा ✲ फूलबफरब समयबिनबागा
तिनकरफलपुनिदुरितदुकाला ✲ विविधव्याधिवशजीवविहाला
सुकृतीलघुजीवन खल नाना ✲ दाता निधन कृपणधनवाना
याचकबहुजग कोइ इकदानी ✲ होइहैं अगणितवाचकज्ञानी
भूमिबीज बिन षटरसस्वादा ✲ पाटथोर बड़बाद बिवादा

नृप सरोष सब प्रजा दुखारी * कबधौं मिटी देव सब गारी
काल कर्म महिपाल अधीना * वरणत वेद सोई मतिहीना
प्रीति सकपट अकारण कोहा * करब मातु पितु गुरुते द्रोहा
दोहगासुतियसोहागिनि चेरी * गुनव ज्ञाति अच्युतकुलकेरी
ठाकुर क्रूर सचिव मतिहीना * ह्वै हैं पुरुष नारि आधीना
धनी कुलीन गुणागर सोई * धनीसुसाधु यदपि खल होई
साधु सुशील सुजाति सुजाना * धनबिन सहिहैंदुखअपमाना
बक्ता विपुल सुनी नहिं कोई * गुरु शिष अंधबधिरमतिहोई
उपदेशक आचरण मलीना * बेचिहैं धन हित नाम नगीना
चतुर चोर भट जे बटपारी * सब नरनारि सुमनरुचिकारी
गिरही रंक यती धनवाना * शूद्र पुराणिक विप्र किसाना
निरबलसाधुसकलखलकामी * दाससुजाति नीचजनस्वामी
मृतिका पात्र अभूषण केशा * परिकर वसन बिछौना शेशा
जटिल कुभक्षक सिद्ध शरीरा * परधन पचवैं ते बड़ धीरा
जीवन थोर दुराशा भारी * सत्य कहब ते होब लवारी
चलिहैं सुरुचि अनेकन पंथा * होइहैं लुप्त सुभग सद ग्रंथा
सोइ सदग्रन्थ जहां हरिनामा * धर्म विवेक भक्ति अभिरामा
सुत पितु दूषक कर बिनब्याहे * पुनिरिपु होब नारि मुखचाहे

दो० तीस वर्षकी आयु नर होई कलि अधिआइ।
अष्ट अब्द की कामिनी जनमी सुत पति पाइ॥

सुरुचिकुसंग अरुचिसतसंगा * तुलसिहि हँसबसराहबभंगा
पति विरोध परपति रत नारी * पण्डित बाजब परम लवारी
कविकरिशाखी शब्द बखाना * निंदिहैं हरिहर वेद पुराना
तजि कुल कुटुँब होब वैरागी * तिनहुन माहिं ईर्षना लागी
वेष विशद बातन में शूरा * भक्ति भजन में कादर कूरा

जो कोइ हरिसुमिरन परकासी ❋ करि हैं सब मिलि तिनकी हासी
गांजा चरस तमाल उड़ाई ❋ होई कलि तेहिकेरि बड़ाई
जोतिहैं हर नहिकै इकबर्धा ❋ रही न नेकु धर्म की सर्धा
विद्या वणिज कृषी सेवकाई ❋ होई फल लघु श्रम अधिकाई

दो० तरु बड़ झाऊ विटप सम सुरभी अजा समान ।
मेघ वर्षिहैं ओस सम बये न जमिहैं धान ॥

कलिके दोष कहे कछु गाई ❋ सुनहु जे अहैं गुनौ सो राई
कलियुग मनकर पातक नाहीं ❋ पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं
वाचक पाप जाइ पछिताये ❋ सरयू सरि हरिपद जा न्हाये
काया ते पातक जो होई ❋ बिन भोगे छूटत नहिं सोई
सतयुग देश ग्राम त्रेताही ❋ द्वापर कुल कलिमें कर जाही
कलिमें रामभक्त तनु धरिहैं ❋ ते बहु जीव कृतारथ करिहैं
रामभक्ति करिकरि नर नारी ❋ भवसागर तरिहैं यह भारी
कालकर्म गुण प्रकट स्वभाऊ ❋ भक्तिसमीप जात नहिं काऊ
कृतयुग जो गति ध्यान किहेते ❋ त्रेतायुग मखदान दिहेते
द्वापर युग हरि पूजन ठानी ❋ पावत रहैं जौन गति प्रानी
सो गति कलि हरिके गुणगाये ❋ पैहैं नर जपि नाम सुनाये
कलि केवल परमारथ हेतू ❋ रामनाम भवसागर सेतू
साधन नाम सिद्धफल नामा ❋ जेहिनप्रतीतिताहिविधिवामा
धर्म चारिप्रद कलि यकदाना ❋ जेहितेहिभांतिकिहेकल्याना
जब शुभपंथ सकल मिटिजाई ❋ तबकहुँ हरिअवतरिहैं आई
सुनिनृपकोपिचलाकलिओरा ❋ रे खल नाम सुने नहिं मोरा
तब कलिडरपि चरणमें परेऊ ❋ बहुतभांतिअस्तुतिअनुसरेऊ
जो कछु आयसु होइ तुम्हारा ❋ सो हम करिहैं याही बारा
जबतक हम जगराजकरीजे ❋ तबतकआपनअमलनकीजे

देहु मोहिं अस्थान बताई ❋ जहँ हम बसनु कटकयुतजाई
द्यूत चौर गणिका मद पाना ❋ कनक बसहु इतने अस्थाना
सुनि नृप मुकुट बैठ सुखपाई ❋ सुरमतिमिटीअसुरमतिआई
चला भूप कछु तृषा सतावा ❋ शृङ्गीऋषि के आश्रम आवा
ध्यानास्थितलखिमनअनुमाना ❋ हमैं देखिठानिसिबकध्याना
मृतक सर्प धनुकोर उठाई ❋ कंठ लपेटि चल्यो हरषाई
सुन्यो सुवन शृङ्गीऋषि केरे ❋ आवा तुरत पिता के नेरे

दो० पन्नग कंठ विलोकिकै दीन्हेसि शाप रिसाइ ।
सतयें दिन नरपाल को काटै तक्षक जाइ ॥

काढ़िउरग तब पितहिजगावा ❋ भूपति को वृत्तांत सुनावा
शापदीनसुनि अतिरिसियाने ❋ कीन्हें निपट अकाज अयाने
जेहिकेचलतविविधसुखकीजै ❋ ताहि कि चही दंड अस दीजै
शुचिसेवक कछु चूकै कबहीं ❋ चतुरस्वामितेहितजतनतबहीं
धर्मवान जाई नृप ऐसा ❋ नाहिं जनियतअब आवैकैसा
असकहिऋषिचलिभेचितचेता ❋ भूपहि बोध देन के हेता
यहां महीपति मुकुट उतारा ❋ तबमनशोचकीन्हअधिकारा
कौन कर्म कीन्ह्यों मैं आजू ❋ होई कछु बड़दोष अकाजू
जो याकर फल मोहिं विधाता ❋ देइ अछततन तौ भलि बाता
तेहिअवसरऋषि पहुँचे आई ❋ लखिनृपपर्य्योचरणअकुलाई
बोले ऋषि भइ तुम्हें शरापू ❋ सजग होउ अबहीं ते आपू
कह नृप अति बड़ दोष हमारा ❋ थोरेहिमा तव तनय निवारा
नृप तुमकछु अपराध न कीन्हा ❋ होनहारहै परबल चीन्हा
सुर मुनि दनुज नाग नरमाहीं ❋ होनी टारि सकत कोउ नाहीं
हिरण्यकशिपुदशकंधर कंसा ❋ औरौ भये भूरि दितिवंसा
जीवनहित बहु किहिनि उपाई ❋ कालपाइ कोउ बचे न राई

गरुड़ कपोते चह्यो बचायो * अजगर के मुख में धरि आयो
होनहार जो सुन्दर होई * तौ जग मारिसकै नहिं कोई
कनककशिपु प्रह्लादै डाटा * का करिसकै ठाट बहु ठाटा
बालि वधन सुग्रीवै चाहा * कहौ वैरकरि कीन्हिनि काहा
चंद्रहास का सब जग जाना * काकीन्हिसिकरियलदिवाना
अंबरीष पर रिस अति कीन्ही * मुनिवर कौनि बड़ाई लीन्ही
सचिव सुधन्वै चह्यो जरावा * शंखलिखितफलआपुइपावा
सुरुचिचह्यो ध्रुववरहिविनासा * रामकृपाअविचलभयोदासा
पांडुसुतनकहँ बहुत सताइनि * दुरयोधन कछु कीन्हें पाइनि
ब्रह्म अस्त्र तव ऊपर प्रेरा * द्रोण पुत्रका कीन्हेंसि तेरा
जाकी मौत निकट जब आवै * तेहि रजुकेर सर्प ह्वै जावै
तेहि ते होनहार है जेती * नीकि जबूनि होति है तेती
सन्त चहैं कछु देहिं मिटाई * अपर न टारि सकै कोइ राई
असकहिऋषिनिजआश्रमआये * भूपतुरतसुनिसहजसुभाये
राजकाजतजिसकलअवासा * आइ कीन गंगातट वासा
व्यास पराशर आदि मुनीशा * जुरे आइ तहँ बहु अवनीशा
कोउ कहै करो भूप गोदाना * कोउ मुनि बरत बतावै नाना

दो० तेहि अवसर शुकदेवजी आये नंग धड़ंग ।
ताल बजावत बाल बहु डारत लै रज अंग ॥

शुकहि देखि जे रहे अखाड़े * ज्ञानवृद्ध लखि भे सब ठाढ़े
आसनदीन भूप सनमाना * आपन जन्म धन्य करि जाना
बोले बहुरि जोरि युगपानी * कहौ भद्र की बात बखानी
हे नरेश मन शोच न कीजे * नृप खट्वांग बात चित दीजे
उभय घरी में भइ गति जाकी * तुम्हैं सप्तदिन जीवन बाकी
हरि चरितामृत पान कराई * तुम्हैं तारि देहौं मैं राई

असकहि कहनभागवतलागे * लागे सुनन भूप अनुरागे
प्रथमैं कछु कामना देखाई * पुनि प्रभुचरित कहे हरषाई
जग उतपाति स्थिति संहारा * ब्रह्मनिरूपण ज्ञान उचारा
भक्तियोग वैराग विवेका * भा अस्कंध समापत एका
तब दूजे में लागलगावा * पुनिकछुयोग कृपाकरिगावा
विधिनारद की कथा बखानी * चौबीसौ अवतारहि जानी
जगउद्धव कहि पूरण कीन्हा * तबअस्कन्ध तीसरो लीन्हा
ऊधो मिलन प्रभास विषादा * कह्यो विदुर मैत्रेय संवादा
सप्तविकार सहित ब्रह्मण्डा * रूप विराट कहतभे अण्डा
सूक्ष्म स्थूल काल की करणी * पुनि ब्रह्माकी उत्पति वरणी
वधिहिरण्याक्षधराजिमिआनी * वाणी की उत्पत्ति बखानी
शंभू मनु शतरूपा केरी * कही कथा त्रैसुता निवेरी
पुनि कर्दम का कह्यो विहारा * नवकन्यन ते सृष्टि अपारा
देवहुती अरु कपिलक ज्ञाना * वरणिचौथअबकरतबखाना
दक्षयज्ञ जेहि विधि भइ भंगा * सतीमरणकर कह्यो प्रसंगा
ध्रुवचरित्र पुनि तिनकर वंशा * कही कथा पृथुकेरि प्रशंशा
पुनिप्राचीनमखै जिमिकीन्हीं * कहिनिसीखनारदजो दीन्हीं
तूर्य पूजि पंचम गहि पानी * वरणी प्रियव्रतकेरि कहानी
ऋषभकेर आख्यान सुनावा * भरतमृगीकरि जोदुखपावा
पुनि जड़भरत रहूगण ज्ञाना * कह्यो भूप भा नारिअजाना
द्वीपसिंधुगिरि सरिता धरणी * रविशशिउडुमर्यादा वरणी
ज्योतिचक्र पाताल प्रमाना * वरणे नरक महादुख नाना
षष्ठम अजामील इतिहासा * धर्म दूत संवाद प्रकासा

दो॰ सहस यकादश पुत्र वर दक्ष किये उत्पन्य।
नारद ज्ञान सुनाय कै विपिन पठाये धन्य॥

तब तिन साठि सुता उपजाई * तिनते सृष्टिभई अधिकाई
कश्यप के जन्मे सुत नाना * सुरगुरुहरिका वैर बखाना
विश्वश्रवै वध वासव कीन्हों * हत्यालागिबांटिजिमिदीन्हों
इंद्र वृतासुर युद्ध बखाना * नहुषभये जिमि पन्नगयाना
चित्रकेतुकी कथा सुनाई * भे उनचास पवन जिमिआई
सप्तमकहि प्रहलाद चरित्रा * वर्णाश्रम के धर्म पवित्रा
अष्टमकहे मन्वन्तर चौदा * गजनारदकी कथा मसौदा
कूरमकर अवतार सुनाइनि * सागरमथतरत्न जिमिपाइनि
समरअसुर सुर मच्छ कहानी * बलिवामनकी कथा बखानी
नवममाहिं रविवंश बखाना * नृपकी कथा कीन तहँ गाना
च्यवन शंकुकी कथा सुनाई * अम्बरीषकी कीन बड़ाई
सगर भगीरथ अतिमनभाये * रामचरित प्रमुदित कहुगाये
निमि प्रसंग निर्णय जगकेरी * परशुराम की कथा निवेरी

दो० रवि शशिवंश मिलाप कहि इलाबुद्धसंयोग ।
वरणी शंतनुकी कथा पुनि ययाति कर भोग ॥

पुनि यदुवंश कहा विस्तारी * जामें प्रकटभये गिरिधारी
दशयें कहा कृष्ण अवतारा * बकी शकट तृणवर्त्तहि मारा
यमलार्जुनतिनकागतिदीन्हों * वत्स्यबकासुरजिमिवधकीन्हों
कंसनिधन विद्या जिमिपाई * जरासन्ध की कही लड़ाई
रुक्मिणि हरण द्वारकै आये * औरौ चरित दशम बहुगाये
गेरहें कहा यदुनकर नासा * नवयोगेश्वर जनकविलासा
हरिउद्धवका ज्ञान सुनायो * दत्तात्रय द्विजका यश गायो
बहुरि भये प्रभु अन्तर्द्धाना * सो चरित्र सबकीन बखाना
द्वादशयें युगलक्षण गायो * निकलंकी अवतार बतायो
होई सम्भरगढ़ अभिरामा * विष्णुदत्त ब्राह्मणके धामा

दलिमलेच्छपुनि सतयुगहोई ✽ कुमति सबनकी जाई खोई
उत्पति तीनि तरहकी भाखी ✽ परलय चारिभांतिकी राखी

दो० इतनी कथा सुनायकै शुक मुनिकीन्ह पयान।
तुरतै अहिकाट्योन्नृपहि आयो दिव्य विमान॥

चढ़ि नरेशहरिलोकहिगयऊ ✽ जयध्वनि देवकरतसबभयऊ
तब शौनकते मुनिवर ज्ञानी ✽ जनमेजय की यज्ञ बखानी
वेदन की शाखा उपसाखी ✽ मारकण्डेयकी परलयभाखी
द्वादश रविकी कथा सुनाई ✽ सूत्तमसकल भागवत गाई
जो नरपाठ नेमयुत करिहैं ✽ तासु दोष दुखश्रीपतिहरिहैं

दो० श्रीगुरुदेवा दासके चरण कमल धरि माथ।
अखिल भागवतकेरमत बरण्यो जनरघुनाथ॥

पुनि शौनक बोले शिरनाई ✽ नाथ सकल भागवत सुनाई
अब अभिलाष एक उर आई ✽ कृष्णकथा सुन्दर सुखदाई
दशमबहुरि किरपाकरि गावो ✽ करि विस्तारपूर्वार्द्ध सुनावो
जो उतरार्द्ध नाथ तुम गावा ✽ इतिहासन महँ सो सुखपावा
तेहिते बालकृष्णलीला अब ✽ कहो मोहिं करिकृपानाथसब
केहिकारण प्रगटे गोपाला ✽ केहिविधिमास्योकंसभुआला
बहुरि रुक्मिणीमंगल गावो ✽ भाविवाह केहिभांति बतावो
औरहु किहिनिचरित बहुतेरे ✽ सो सबबदहु देव हितमेरे
बोले सूतसुनहु मुनि ज्ञानी ✽ प्रथमैं ते सबकहौं बखानी

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतकृष्णायनप्रबन्धबर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १॥

दो० सुमिरिरामसियसन्त गुरु गणपगिरासुखदानि।
भारत मतकरि कंसकी उत्पति कहौं बखानि॥

नगर एक मधुपुर असनामा * कालिन्दीतटअतिअभिरामा
उग्रसेन रहे तामें भूपा * पवनरेख रमनी रति रूपा
देवक उग्रसेनको भ्राता * तिनहुँ कि त्रियामनोहरगाता
इकदिन उग्रसेन की नारी * सकलशृंगारकिहिसिढविभारी
सखिन संगलै उपवन देखन * गई पृथकह्वै लागी पेखन
तेहिअवसर दानव इकआवा * भूपरूपधरि हाथ चलावा
बोली पति ऐसो मत कीजै * दिनरति किहेपुण्य सबछीजै
तेहि मानानहिंकछुअपयोगा * बरबसकिहिसितासुसँगभोगा
तेहिपाछे निजवपु प्रकटावा * नृपपत्नी लखिवचन सुनावा
रे खल नीच छले तैं मोहीं * को हसि शापदेतिहौं तोहीं
बोला मैंहौं दनुज जुझारा * कालनेमि है नाम हमारा
सतयुग समर विष्णुते ठाना * शाप न देहु लेहु वरदाना

दो० तुम्हरे हमरे अंशते होई बालक एक।
महाप्रतापी भुजबली जीती भूप अनेक॥

राखी असुरनिकर बल भारे * बिन भगवन्त मरी नहिंमारे
सुनत प्रसन्न भई तब रानी * आई जहँ सब सखीसयानी
हँसि बोलीं बनिता तब ऐसे * बिगलितभये वसनतवकैसे
धावाकपि यक निकट हमारे * आइन भागि तासु भयमारे
तेहिते अबचलियेनिजधामा * सुनिआईगृहनिजनिजवामा
गर्भअवधि सुखसहितबिताई * माघशुक्ल कुजतेरसि आई
जन्मा सोइबालक अधराती * भये उपद्रव नाना भांती
उग्रसेन बहुद्रव्य लुटाई * कंसनाम बुध राखिन आई
भा जब बड़ा बालकन संगा * खेलनजाय करै तहँ दंगा
फोरै कूप भरत जल देखै * भुजबल मस्तन काहुइ लेखै
मगधदेश यकरोज सिधावा * जरासंधको जाय हरावा

तिनके रहीं सुतायुग आछी * लावा तिन्हैं परणि सहसांछी

दो० नाम अस्ति प्रापतिमनहुँ मन्मथ की करबाल।
लग्यो करन सुखसदनबसि तिनयुतकंसभुवाल ॥

एक दिवस भूपति ते बोला * तोहीं करैगो राज्य अडोला
असकहिकीन्हिसिकैदअभागा * अपनाकरनराज्यसुखलागा
असुर मयावी बिपुल बटोरे * जे रिपु समर मुरैं नहिं मोरे
तिन्हैं संगलै यकदिन धावा * जीतिनिकरनृपपुरफिरिआवा
अपर सुनो देवक की बारी * नाम देवकी रहै कुमारी
तिनको ब्याह करन के काजा * खोजवाये वर जहँ तहँ राजा
सूरसेन के सुत बसुदेऊ * सबहिन कही इन्हैं बरिदेऊ

दो० तब नरेश वसुदेव को दीन्हीं सुता विवाहि।
दोउ दिशिभा उतसाह अति सो कापै कहि जाहि ॥
हय गज स्यंदन हेम पट रत्न अनेकन दीन।
याचक सब परितोषिकै बिदा बहिन कर कीन ॥

पठवन चला आपु सुखमानी * तेहिक्षणभईगगन इमिबानी
यहि कन्या के बालक होहीं * अठवांसुत मारी नृप तोहीं
सुनिनृपडतरि केशगहिलीन्हों * खड्गकाढ़ि मारन को कीन्हों
तब बोले वसुदेव पुकारी * प्रमदा बध पातक है भारी
तेहिते याहि छांड़ि नृप दीजै * बोला तुम कछु शोच न कीजै
आगे तरु विषफल फलै कोई * डारै ताहि काटि भल सोई
यहि हति तुम्हैं परणिहों आना * सुनि बोले वसुदेव सुजाना
नृपकछुतवभगिनीनहिंघालक * रिपु तुम्हार है इनकरबालक
जबहीं सुत प्रकटी जग आई * देहौं तुम्हैं तुरत में लाई
सुनिविनतीदीन्हिसितबत्यागी * आयेदोउनिजगृह अनुरागी
कछुदिन गये समय जबआवा * प्रथमैं पुत्र देवकी जावा

लै वसुदेव गये नृप पासा * जानिसि हैं सांचे हरिदासा
बाल विलोकि दया उर आई * कहिसिशोचनिजसुतलैजाई
तेहि अवसर नारद तहँ आये * त्रिप्रनिधनहितवचनसुनाये
कंसकहा लरिकाई कीन्हों * जानिबूझि निजरिपुतजिदीन्हों
सुनि महीप अस वचन उचारा * अष्टम सुत है काल हमारा

दो० तब नारद लिखि वक्रगणि सकलभये वसुसोइ।
को जानै नृप शत्रु जो प्रथमैं आवा होइ॥

असकहिकंसशिशुहिधरिमारेउ * यहिविधिषटबालकसंहारेउ
तब देवकी महा दुखपावा * मनहींमन श्रीपतिको ध्यावा
कंस वंश मम कीन्हेसि खीशा * यह विपदा हरिहौ कब ईशा
बढ़े पाप पृथ्वी गरुआनी * शिव विरंचि ते विनती ठानी
सबमिलिगये जहांभगवाना * अस्तुतिकरतभयेविधिनाना
सुनिबोले लखिदीन मुरारी * निर्भय होउ देवमुनिभारी
धरिहौं मैं नरतन अब आई * हरिहौं सकल भूमि गरुआई
करिहौं पूर मनोरथ सबके * भावविवश कारज जबतबके
आयसु सबहिं दीनपुनि एहू * गोकुल जन्म जाइ तुम लेहू
वेद ऋचन का दीन्ह रजाई * गोपी होउ सकल तुम जाई
पायरजायसबनसोइ कीन्हा * आपुबोलिनिजमायहिलीन्हा

दो० कह्यो देवकी के गरभ है सतवां मम अंश।
ताहि रोहिणी के जठर करिआवो निरसंश॥

सुनि सोइ करतभई हरिहांसा * जाना सबन गर्भ भा नासा
अठयें बास आपु हरि लयऊ * वदनप्रकाशचन्द्रसमभयऊ
अंग सुगंध बढ़त छवि जाई * कंसदिहिसि लखिबंदिढ़राई
कर हथकरी निगड़ पगडारे * जड़ि कपाट पहरू बैठारे
तिनसेकहेसि होय सुतजबहीं * सुनि तुम हमैं जनायो तबहीं

यहिविधिगयेकछुकदिनबीती * जेहिहरिप्रकटसुनहु सोरीती
भादौं मास पक्ष अँधियारा * उडुपरोहिणी अरु बुधवारा
तिथिअष्टमीरैनिअँधियारी * झिमिकिझिमिकिवर्षतवरवारी
प्रभुआगमनजानि सुरआये * करि बिनतीपुनिगगनासिधाये
खुलिगे सकल पटलके तारे * भे निद्रावश सब रखवारे
अरु वसुदेव देवकी दोऊ * छूटि गये बन्धन ते सोऊ
जबप्राचीदिशि शशि हर्षाना * प्रकटभये तब श्री भगवाना
क्षीरसिन्धु गोलोकनिवासी * शोभासदनसकल सुखरासी
शीशवसन श्रुतिकुंडललोला * उरविशालवनमालअमोला
शङ्ख चक्र गद पद्म विराजैं * मणिभुजचारि विप्रपदभ्राजैं

दो० पीत वसन उपवीतउर राजत नयन सरोज।
अँग अँगपर रघुनाथजन वारत अमितमनोज॥

लखिवसुदेव ब्रह्मकहँ चीन्ह्यो * अंजलिजोरि दंडवतकीन्ह्यो
पुनिउठिकह्यो तुम्हें मैं जाना * परमपुरुष हौ तेजनिधाना
परमज्योति अद्वैत अविकारी * निर्गुणब्रह्म त्रिगुणतनुधारी
कंसासुर त्रासत निशि भोरा * हरहु नाथ ममसंकट घोरा
पुनिमुनि प्रभुहि देवकीजानी * बन्धु त्रासयुतविनयबखानी
अहो पुराणपुरुष अविनाशी * निजानन्द निर्गुणगुणराशी
काल व्यालते मनुज डराने * सर्वलोक कहँजात पराने
तजतन मृत्युजहांचलिजाहीं * निरभयहोत कतहुँ सो नाहीं
तव पद पद्दुम प्राप्त जो होई * पदरक्षा सुख पावत सोई
मृत्यु डेरन लागी तब ताहीं * सेवत चरणकमलजो आहीं
ऐसे तुम मम उदरनिवासी * है नरलोक बड़ी उपहासी
बोले तब श्रीपति सुनु माई * जेहिते तव मन संशयजाई
पूरब जन्म मोहिं तुम जोही * यांचेहुवर तुमसम सुतहोही

भक्तवत्सल मैं विरद विचारा ॥ भयउँआइतेहितनयतुम्हारा
कंस महाखल सुनतै आई ॥ तौमोहिं गोकुल देहु पठाई
यशुमतिके उपजी मम माया ॥ लावहुतेहि उठाय करिदाया
कछुदिननन्द भवनकरिलीला ॥ मिलबतुम्हैं पुनिबंधुसमीला
असकहि शिशुह्वै रोवनलागे ॥ देखिमातु पितुअतिअनुरागे
नार बेवार समेत उठावा ॥ लै वसुदेव चले तम छावा
कालिंदी जबलगे मँझावन ॥ यमुनाबढ़ी छुवन पदपावन
गुल्फ जंघकटि गरतक आई ॥ शिरधरि ठाढ़रहे डरपाई
लखि प्रभु पाछे पाउँ पसारा ॥ परसि बही मुरवन तक धारा
ऊपर शेष सहस फण छाये ॥ इतउत हरितरिगोकुलआये
प्रविशे महरि भवनके माहीं ॥ प्रकटीसुता तिन्हैं सुधिनाहीं
शिशुसोवाइतिनआगेदीन्ह्यों ॥ लैबालकी गवनपुनिकीन्ह्यों
निवसत निलै बहुरि पटलागे ॥ बन्धन परे पौरिया जागे
सुनि कन्या का रोदन जाना ॥ भासुत नृपते जाय बखाना
सुनत कंस आपुइचलिआवा ॥ तब देवकी बहुत समुझावा
तदपिनखलमानिसिपरतीती ॥ लीन्हेंसिछीनि सुताविपरीती
पटकन लाग शिलापर नीचा ॥ करते तड़पिगई नभबीचा
बोलत भई कंस तवहंता ॥ प्रकट ह्वै चुका है कहुँ अंता
सुनि नभगिरा उठा अकुलाई ॥ गिरा देवकी के पग धाई
मैं अपराध कीन सुत मारे ॥ होनहार सो टरत न टारे
कंस ज्ञान उपदेशत कैसे ॥ दीप प्रकाशत आनहिं जैसे
कह देवकी सुनो हे भाई ॥ निज कृत कर्म न तोरि लगाई
जोजस करै सो तस फल पावै ॥ बिन समझे परदोष लगावै
दुखसुखप्रद जगमें नहिं कोई ॥ मन मानेकर संभ्रम होई
यहसुनिउठिनिजमन्दिरगयऊ ॥ सचिव बोलिअसबूझतभयऊ

कहौ कहा अब करै क होई ❋ जन्मा कहुँ अन्ते अरि सोई
बोले दुष्ट सुनो महराजा ❋ याकी तो है सहज इलाजा

दो० एक वर्ष के बीच मा जो सुत जनमें होइ ।
डारहु सकल मराय तुम आपुइ बची न सोइ ॥

सुनत बोलाइसि असुरसमूहा ❋ कह्यो किमारहुशिशुकरिहूहा
चले जहां तहँ आयसु पाई ❋ लागे करन पाप अधिकाई
यह इतिहास कही मनमानी ❋ अब गोकुल की सुनो कहानी
रोदन तहँ जब कीन मुरारी ❋ जागी महरि शोर सुनि भारी
बालक देखि परम सुख पावा ❋ गोमय चन्दन भवनलिपावा
गोपुर कलश विचित्र धराये ❋ नवलवधुनमिलिमंगलगाये
ध्वज पताक तोरण पुर छाये ❋ देवन हरषि सुमन बरषाये
नन्द सहस दश धेनु मँगाई ❋ विप्रन कहँ दीन्हीं हरषाई
मुदित नारिनर वीथिन डोलैं ❋ जयति २ जयसुत की बोलैं
उड़तगुलालसकलतनुसींचा ❋ मारगमध्य मची दधिकीचा
बाजहिं बाजन नाचहिं नारी ❋ हँसिहँसि देहिं नन्दकहँ गारी
नारदादि सनकादि मुनीशा ❋ कौतुकलखतफिरतअजईशा
बहुत कहांतक कहौं उछाहू ❋ प्रकट भये जहँ त्रिभुवन नाहू
जातककर्म्म वेदविधि कीन्हा ❋ बहुविधिदानयाचकनदीन्हा
पुनि लै नन्द छीर दधि छेगू ❋ कंसै देन चले मिलि नेगू
मधुपुर आइ चढ़ाइनि भेंटा ❋ सबन कहा इनके भा बेटा
बहुत नीक कहि भीतर तेरे ❋ तहँ बैठाय गयो उठि डेरे
तुरत लिहिसि पूतनहिंबोलाई ❋ आवहु मारि नन्दसुत जाई

दो० चली तुरत नव नारिबनि सजितन भूषणचीर ।
जहर उरोज लगाइ के आई यशुमति तीर ॥

पुरपतनी भौचकि रहीं रूपवान लखि तासु ।

बिनबूझे आसनदयो बरणिभागि निज आसु ॥

सो० लालहि लखि हुलसाइ देखि दुचित्ती महरिको ।
लीन्ह्यों गोदलगाइ दीन्ह्योमुखविषसहितकुच ॥

लागे पियन कृष्ण करि जोरा * भागी करत छुड़ावत शोरा
लीन्हेसि खैंचि प्राणपुर पासा * योजन डेढ़माहिं वपुभासा
दीन्हीं गति जननी की ताही * को कृपाल असभजिये जाही
कौन पुण्य या कीन्ह्यो भारी * जाते पीन्ह्यो दूध मुरारी
रतनदाम दुहिता बलिकेरी * बावनवपुछलिलखि बहुतेरी
मनमें चहिसि पियावों छीरा * सोइ इच्छा पूजी यदुवीरा
कृष्ण तासु कुचपर इमि राजैं * जिमिवनशिशुगिरिशृङ्गविराजैं
भयवश लोग निकटनहिं जावैं * दूरिहि ते पाषाण चलावैं
हाइहाइकरि यशुमतिधाई * लिहिनिललहिलखिगोदउठाई
भवन आनि दीन्ह्यों बहुदाना * कह्यो बचायो हरि भगवाना
पुरवासी सुनि देखन धावैं * बकिहिविलोकिविधिहिशिरनावैं
करि रक्षा मोहन तन केरी * कहें कि केहुँइ दिहेउमतिफेरी
यहां नन्द नृप आयसु पाई * मित्रै मिलन चले हरषाई
कुशलप्रश्नकहिकरिसनमाना * बोले पुनि वसुदेव सुजाना
कालाधीन देहनहिं नेमा * बिछुरि मिलेसमअपरनक्षेमा
भले कृपाकरि दर्शन दयऊ * अतिसुखमिलासुनासुतभयऊ
जाहु वेगि निज मंदिर ताता * करतफिरत तमचरउतपाता
रक्षाकरत सुतन की रहियो * करुणादृष्टि राम की चहियो
गोकुलआइ दीख सोइहाला * लगे बतावन सब नर बाला
खण्डखण्डकरि ताकर अंगा * जारत कढ़ी सुगन्ध प्रसंगा
एकदिवस कागासुर आवा * पकरि तासु शिरतोरिबहावा
पूर्व विप्र वादी यह रहेउ * भइगुरुशापभुगतिगतिलहेउ

जन्म नक्षत्र परा पुनि आई ❋ पूजन हित बटुरे कुल भाई
श्यामहिं शकट तरे पौढ़ावा ❋ महरि काममें चित्त लगावा
गईभूलि मोहिं निपट बिसूरा ❋ मारी लात शकट भो चूरा
सुनिलरिकनमुखपितुअरुमाता ❋ दौरिलगाइनिपुत्रहिगाता
अचरज मानि कहैं नरनारी ❋ टरी कान्हकी करिवर भारी
तृणावर्त तेहि पाछे भेजा ❋ प्रभुहि परे देखा सुठि सेजा
गरूगोपालहिं लखिमहतारी ❋ जागति दिहिसिरहै तहँपारी
बौंड़रह्वै कीन्ह्यो अँधियारा ❋ लीन्ह्योगहिगागगनमँझारा
गरू भये प्रभु सधा न भारू ❋ गिरा महीतलभा संहारू
दलथंभन नृप पंडुर देशा ❋ दुरबासादत मिट्यो कलेशा
छातीपर खेलत सुत पाइनि ❋ नन्दमहरिनिजभाग्यमनाइनि
विप्रन बोलि दान बहु दीन्हा ❋ गोपवधुन तब लेता लीन्हा
दइउ दीन सब के घरबारा ❋ तुम्हैं कामहै बहुत पियारा
चौथेपन देख्यो सुत आंखी ❋ तदपिन प्रीतिप्राणसमराखी
कहैरघुनाथ निरखिप्रभुओरी ❋ थकितहोहिंजिमिचंद्रचकोरी

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतश्रीकृष्णजन्मउत्साहपूतनाकागासुर
तृणावर्त्तवधवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं दशमकी रहसि कछु कृष्णखंडकी आनि ॥
कभूं महरि मुख चूमिकै वदन पयोधरदेत ।
कभूं झुलावत पलने कभूं लाय उरलेत ॥

यहिसुखमें कछुकाल बितायो ❋ अन्नपराशनको दिन आयो
नन्द बहुत सामा मँगवाई ❋ मधु मेवा पकवान मिठाई
खाइतिलमुझिश्यामसुखदीन्ह्यों ❋ विप्रबंधुपुनिभोजनकीन्ह्यों

दिनदिन बढ़न लगे हरि कैसे * शुक्लपक्ष कर निशिकर जैसे
प्रकटीतनु अतिचंचलताई * गहै न एकौ क्षण थिरताई
अगिनिकीशशुकनखीशृंगारण * धरतकरततहँमहरिनिवारण
वत्स पूंछ गहि कभूं भगावैं * पुरजनपकरि मातुढिगलावैं
एक दिवस आये द्विज एका * किहिनिरसोईसहित विवेका
पुनितहँ भोगलगाइनि ओटा * पावत दीख नन्द का ढोटा
कह्यो महरि ते बहुरि कराई * भोगलगत पुनि पहुँचे आई
तब यशुमति दबकी सुनिलेहू * पुनिपुनिमोहिं बोलावतयेहू

दो० यहि झूठे संसार को भावत झूंठी भक्ति।
फुरअहिलखिरघुनाथजिमि भागहिंत्रियासुशक्ति॥

कछुदिन गये गर्ग ऋषि आये * नाम धरन वसुदेव पठाये
लखिब्रजपतिपूज्यो सबभांती * कहिनिजभागधन्यदिनराती
सुरसुखदुखप्रद तुममुददाता * आजु गोद देखे दोउभ्राता
संकर्षण बलभद्ररु रामा * कहे तीन अग्रज के नामा
वासुदेव अरु कृष्ण कन्हाई * इनके नाम अपर बहुराई
मातुलरिपु परतियरत चोरा * होइहैं निलज निडरबरजोरा
साधुविप्र गोपालनकरि हैं * अभिमानिनकीअहमितिहरि हैं
मात पिताको आनँद देहैं * नृपसुखसहितजगतयशलेहैं
औरौ फल बहु कहे बुझाई * आये भवन दक्षिणा पाई
एक दिवस खाई हरिमाटी * लरिकनकहामहरि सुनिडाटी
मुखपसारिदेखरावतभयऊ * उदरविलोकि बिसरितनगयऊ
देखा सकल विश्व मुखमाहीं * कौनिसो बात जो वामें नाहीं
सुरनर असुर नाग नभचारी * रविशशिउडुसरिसरदधिभारी
स्वर्ग नरक यमकाल निहारा * विधि हरिहर वैकुंठ विहारा
इहिविधिसकलवस्तुदिखराई * मूंदिलिहिनि पुनि बदन कन्हाई

चकृत भई स्वप्न मैं देखा ❀ सांचो सांच कि नयनन पेखा
भा विवेक सुत ईश्वर चीन्हा ❀ बहुरि कृष्ण मायावश कीन्हा
कहै रघुनाथ धन्य ते प्रानी ❀ जे ऐसे प्रभुसों रति मानी
इकदिन इक ग्वालिनि घर जाई ❀ लागे माखन खान चोराई
निजपरछाहँ मुकुरलखिबोले ❀ तुमहूँ खात कह्यो जनि खोले
सुनि मृदु वचन हँसी सोइ बाला ❀ भीतर ते भागे नँदलाला
इकदिन गये अपर घरबारा ❀ छीके ते नवनीत उतारा
तेहिक्षण धनि आइ निचलि आई ❀ बोले तासों वचन बनाई
कूदत रही एक मंजारी ❀ मैं उतारि कीन्हीं रखवारी
भले करत तुम दोष लगावा ❀ जानि पड़ा अबहीं कलि आवा
तेहिं तब कहा खाय तुम लेहू ❀ मोहिं नीक नहिं लागत येहू
इकदिन गे इक भवन बहोरी ❀ सींके लखि दधि पेंदी फोरी
आवत तासु वचन सुनि चीन्हा ❀ निकसे तुरत पकरि तेहि लीन्हा
पूछत भइ कस भागे जाहू ❀ बोले तब तेहि ते सुरनाहू
कहिये कह दुख में दुख होई ❀ भै नर मुंडित की गति सोई

दो० स्वेदज दुख बिनकच भयो लग्यो घाम अकुलाइ।
धर्‍यो बाग शिर बेलफल गिर्‍यो अधिक दुख पाइ॥

मैया मोहिं उठि मारन धाई ❀ तेहि आयनु तवभवन लुकाई
तहँ देखी दधि खात बिलारी ❀ सोइ डरइहौं ते भागे न प्यारी
सुनि तेहि दीन तुरतही छांड़ी ❀ दौरि उतारिसि आइ दुधांड़ी
इकदिन धाम अपर के गयऊ ❀ माखन घट लै भागत भयऊ
ते सब दिनप्रति देहिं उरहना ❀ महरि न मानै तिनकर कहना
इकदिन गे कमला के धामहिं ❀ धाइ धरिसि तेहिं देखत श्यामहिं
गोपी कहैं चलो जहँ माई ❀ नितकी कसरि निकारी जाई
बोले श्याम मोहिं नहिं शंका ❀ बिनकीन्हें नहिं लगत कलंका

यशुमति निकट देखावनलाई ❋ भये तासुपति तुरत कन्हाई
बोली महरि भई हँसिबौरी ❋ खसमै पकरि देखावन दौरी
पतिमुखलखिलज्जितह्वैभागी ❋ कह्यो कहा मैं मन्द अभागी
इकदिन पकरि लैआई आना ❋ ह्वैगे तासु तनय तब कान्हा
खातखसमसुत सब के चीन्हा ❋ हमरैपुत्र निबलकरि लीन्हा
यकदिन प्रभुसबसखाबोलाये ❋ तिनते कौतुक वचन सुनाये
अहोमित्र गोपिनघर चलिये ❋ खाइयदधिभाजनदलिमलिये
जो वै मिलि पकरैं बरजोरी ❋ तुम सहाय ह्वैज्यो तब मोरी
यकमतिलखिकोउसकतनजूटी ❋ जिमिबुधिसेनविहँगगाळूटी
एकमते ह्वै पंगुल अन्धा ❋ बच्यो अग्नितेचढ़िपरकन्धा
असकहिकृष्णचलेअभिलाषी ❋ लागे संगसखा भलभाषी
बदहिं परस्पर सुनिये मीता ❋ चलत महीपर लागत भीता
एक कहैं तुम कादर भारी ❋ हम हरि हैं करि हैं कह नारी
अपर कहैं भागब भय देखी ❋ शून्यसदन प्रविशे इकपेखी
सौंजखाइ अरु कपिन लुटाई ❋ निकसिगये तबसोतियआई
देखि विनाश करत भइ शोरा ❋ दिनहीं में को आयो चोरा
निकटजाइ बोली इकबाला ❋ मैं पैठत देख्यों नँदलाला
मनमें भई पुकारों तोहीं ❋ गूंगी केहुँकर दीन्हीं मोहीं
इतने में ताहू के धामा ❋ हरिगोरस खायो घनश्यामा
लगी पुकारन घर जब आई ❋ नाहक मैं तव भवन सिधाई
जो कोइ बीच जबर के परई ❋ लोमड़िसम दुख सोऊ भरई
दधि माखन पकवान अनेका ❋ खाइगयो राख्यो नहिं नेका
पुनि काहू के मन्दिर धसेऊ ❋ देखिलीन तेहिसबका ग्रसेऊ
कह हरि साधु हमारे आये ❋ बांबा भोजन हेत टिकाये
मैया मोहिं पठयो तवतीरा ❋ मांगिलाव दधि माखनक्षीरा

आये हमैं भई बड़िबारा * मांगों कासों शून्य अगारा
सखा बुलावन आये अबहीं * चलो चह्यों तें आई तबहीं
जो चितचहै देहु अनुरागी * धन्यभाग परस्वारथ लागी
साधु सिंह सम चरित रहावै * भावहीन लखि मृतकनखावै
लाल बदनकी सोसुनि बानी * बोलीहँसि मनमें सकुचानी
प्यारे जो ऐसी है बाता * तो मेरो सो तुम्हरो ताता
संचितघृत दधिमाखन चीरा * हरषितआनि धर्योहरितीरा
चले सबनके शीश धराई * लागे सब मिलि चौहटखाई
यह कौतुक सब गोपिन देखा * वञ्चक धूत छली अतिलेखा
बोली एक तासु घरआई * आजु भली तू गई ठगाई
सुनिसो कहत भई हे बाला * मति बौराय गयो लै लाला
जाय श्याम ढिग बोली बानी * झूंठबखानि वस्तु कतआनी
लाल कही हम झूंठ न भाषा * मैं महन्त ये सब शिषिसाषा
ढीठजानि सो मारन दौरी * भागे दधिमुख मारि हथौरी
इकदिन गये भवन में आना * जड़िकपाट लागे दधिखाना
ताही क्षण धनिआइनि आई * टेरत बारबार अकुलाई
कह्यो श्याम भल टेरन देहू * निरभय वस्तु खाइ तुम लेहू
तेहिजबद्वार खुलतनहिंजानी * तब परमांगि निसेनी आनी
भीतिलगाइचढ़ी छति जबहीं * कृष्ण खोलिपट भागे तबहीं
नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई * लगी देखावन सखी बोलाई
बाहर कढ़त भयो यह दाहू * कहौइहांकिमि करियनिबाहू
जो यशुमति ते जाइ पुकारैं * लखि नदान तहँ हमहींडारैं

दो० जिमि अबूझ नृपके रहै बातन केर निआउ ।
यतिहि चढ़ावत सूरिपर चढ़्यो बात सुनिराउ ॥

जो प्रथमैं मोहिं होतो ज्ञाना * मेरे घर आयो है कान्हा

तोगहि भवन यशोदै लौती ❋ सुतकी सब लीला दिखरौती
तबजागी ममसाथिनि रामा ❋ बीते समय बुद्धि किसकामा
यकदिनयककर पकरिलुटावा ❋ सुनिजननीमृदुवचनसुनावा
तुम्हरी कृपा लह्यो सुत मोहू ❋ देहु अशीश करो सब छोहू
मोहिं प्राणते बहुत पियारो ❋ बिन अपराध जात नहिंमारो
निजनयनन देखिहौंजबवीरा ❋ देहौं दण्ड धरहु मन धीरा
और दण्ड तुम कछू न कीजै ❋ यक दुइबर धमकी दै दीजै
नृप बिननीति प्रीति बिनसारे ❋ बिगरि जात सुत बहुतदुलारे
नीति निपुण नर बातते लाजै ❋ सूप बजाये सुत रण भाजै

दो० यक दिनगे गृह एकके बैठे देख्यो ताहि ।
पाछेते मूंदे नयन सो सांगै को आहि ॥
दई सयन सब सखन सों लै गोरस समुदाय ।
गये निकरि जब दूरि तब आपहुभगे बिराय ॥
जिनके घर नहिं जाइँ ते विधिते कहैं निहोरि ।
कब ऐहैं हमरे भवन खैहैं माखन चोरि ॥

तब ताहीके मंदिर जाहीं ❋ प्रीतिसमुझिदधिमाखनखाहीं
खटक सुनत तुरतै भजिजावैं ❋ उरहन के मिस देखन आवैं
सुनिसुनिश्यामबदनकीबानी ❋ प्रमुदितहोयँ बातसोइ ठानी
एकदिवस मिलि गोपलुगाई ❋ भवन आइ बोलीं सुनुमाई
अबै तो कान्ह बरष षटकेरे ❋ करत रहत छलबल बहुतेरे
बड़े भये धौं करि हैं काहा ❋ यही अँदेश बड़ो है राहा
चितवतजेहितनमृदुमुसक्याई ❋ सो बिनमोलै जात बिकाई
डटीवस्तु फिरि ताहि न छांड़ै ❋ माखन हित सबके घरमाड़ै
करिजानै बहुभांति बहाना ❋ कोधौंगुरू मिला नहिं जाना
बँधे बच्छ तजि धेनु पियाई ❋ सोवत लरिकन देत जगाई

दो० कभूं अँधेरे भवन में आयो रहत दुराय।
पाछे दीप जगाइकै भाजत ताल बजाय॥

बोली महरि सुनो हे भैया * तुम्हरे विधि दीन्ही बहु गैया
दधिमाखन भावै सो खाहू * परघर कत चोरन को जाहू
माखनचोर कहैं सब नारी * सुनितोकोंनहिंलागतख्वारी
फिरत धरावत मेरो नामा * मातु न देत होइगी धामा
पर अकाज कीन्हें का पावत * नाहकनिर्मलपितहिंलजावत
मातुवचन करि श्रवणकन्हाई * बोले तब नम्रता जनाई
हे मैया मैं खेलन जाहूं * काहू के घर कछू न खाहूं
येई मोहिं पकरि लै जावैं * नारिवेषकरि संग पिसावैं
कबहूं गोमय हेल धरावैं * कबहूं घरकी टहल करावैं
कबहुंक जुरिमिलि ठाढ़ीहोहीं * गावैं आपु नचावैं मोहीं
मारि गुलिच्छन मेहनति लेहीं * तेहिपर आइ उरहना देहीं

दो० सत्य कहत बुध वाम को पलटत लगै न देर।
तियइलख्यो पति कुपथमें पतिहिकरेउतेहिजेर॥
हमहूं निरबल विप्रसम करैं काल गुदरान।
आखिर अहि रघुनाथ भनि हैन भेककर जान॥

औरौ सुनो कर्म इनकेरे * मलैं सुअंग अंग मा मेरे
कबहुँक पकरि मिंजावैं पीठी * कबहुँ तकैं तिरछी करि दीठी
कबहुंक हमैं द्वार बैठाई * आपु सहित पति पौढ़ैं जाई
सुनिबोली गोपी मुसक्याते * सुनो महरि निजसुतकीबाते
कहतीहो जानति कछुनाहीं * भरे सकल गुण इनके माहीं
तुम्हरे निकट साधु से दीसै * हैं खोटे अति बिस्वाबीसै
झूठ कि सांच सांच की झूठी * करत रहत यह विद्या मूठी

दो० सुना रहै कोउ चतुर नर नृप की मेटि प्रमान।

बचिआयो घर वधत इन तेहि के काटे कान ॥

सुनियशुमतिकहसहितसनेहा ❋ तुम जानो की जानै येहा
तुम्हरी इनकी बात अगूढ़ी ❋ बूझि न परत मोहिं मतिबूढ़ी
यकदिन महरि श्याम को लेके ❋ परी पलँग पर तकिया देके
लागी कहन कथा सुखदाई ❋ जिमि अवतार लीन रघुराई
बाल विनोद विवाह उछाहू ❋ विपिन गवन भूपतिकर दाहू
भरत सनेह लषण सेवकाई ❋ कहि खरदूषण केरि लड़ाई
कहेउ जानकी केर हरण जब ❋ कहँधनुशरकहिकृष्णउठेतब
यशुमतिडरपि उछंग लगायो ❋ बोलि सयानेहि फूंक डरायो
कबहुँ करावैं भोजन नाना ❋ कबहुँ शृँगारैं रूप निधाना
कबहुँ वस्तु मांगैं हठठानी ❋ जेहि तेहि भांति देतसो रानी
कबहुँ धेनु रचि पसरु चरावैं ❋ कबहुँ भूपबनि नीति सिखावैं

दो० जाके कुलकी रीति जस गहत शिशुहि सोइबाट ।
नृप सुत सुत्री के गयो तहउँ ठटे नृपठाट ॥

यकदिनकह्योमातुमोहिंदाऊ ❋ आजुसखनबिचबहुतखिजाऊ
मोसे कहैं मोलको लीन्हों ❋ नन्दबदलि वसुदेवहि दीन्हों
मात पिता गोरे तैं कारो ❋ वे सूधे तैं कुटिल लवारो
सुनिमा हँसि अंचल मुखगेरो ❋ मैं जननी तव तैं सुत मेरो
बहुरिकहेउमोहिंविपिनलवाई ❋ कहिहाऊ आवत कुलल्याई
होंडरि रोइ भगत तव तीरा ❋ सखहु न नेक धरावत धीरा
बोली मातु बुरो तैं जानै ❋ फिरिक्यों खेल तासुसँगठानै
अबतैं कहो रहब घरमाहीं ❋ तौ मैं पकरि पिटावौं ताही
तबकछु कान्ह न उत्तर दयऊ ❋ कहैंरघुनाथ हरषि उर लयऊ
ब्रह्मादिक यशुमति मुख देखैं ❋ सर्वाराध्य धन्य करि लेखैं
कह नृप कौन धर्म इन कीन्हा ❋ कृष्णबाललीला सुख दीन्हा

कहशुक बसुबसु द्रोणप्रधाना * धरा सप्रिय राधे भगवाना
विधि आये तिनते इन काहा * सर्वाराध्य होय शिशुलाहा
एवमस्तुकहि विधितेहि भावा * नन्दमहरि सोई सुख पावा
प्रथमरहे दशस्यंदन भ्राता * अबलीन्हेउँनिखवखसुखताता

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतकृष्णदधिचोरीवाक्यविलासवर्णनो
नामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं दशमकी रीति कछु ब्रह्मवैवर्त्तक जानि ॥

यक दिन सुनौ नन्दकी रानी * मथतरही दधि लिये मथानी
पृथुकटि अति उत्तम पटधारे * तापर किंकिणि जाल सँवारे
सुत अनुराग स्रवत कुचक्षीरा * करवर कुण्डल लोल शरीरा
श्रमकनतनप्रकंठअतिलसहीं * सुमनमालती शिरते खसहीं
आइ कृष्ण तहँ भोजन मांगे * मथिलीजै तब दीजै लागे
ताही समय दूध उतराना * दौरी तुरत उतारन जाना
तबप्रभुनिजमनकीन्हविचारा * हमते भा पय बहुत पियारा
गहिपाथरु मेटुकी महँ दयऊ * फूटिसकल गोरस बहिगयऊ
यशुमतिदेखिक्रोधकियोभारी * श्रमकरि पकरत भई प्रचारी
ऊखलमें पुनि बांधन लागी * खँगीयुगांगुलरजु पुनिमांगी
यहिप्रकार रसरी बहु जोरी * युगअंगुल घटिरही बहोरी
गोपी खड़ी कहैं सब नेरे * देख्यो आजु चरित सुतकेरे
अब तक कहो मोर सुत सूधा * काढ़त आजु छठीकर दूधा
जानाश्याम मातु खिसियानी * लीन बँधाय एक रजुमानी

दो० करनगई अस्नान तब महरि मुदित मन होइ ।
यमलार्जुनकी सुरति करि चले घसीटत सोइ ॥

धनपति के सुत जानिये नल कूबर मणिकण्ठ।
नारद केरे शापते भये दोऊ तरु ठण्ठ॥
जल विहार युवतिन बिषे देखि नगन मतवार।
होउविटप कहि पुनिकह्यो हरि करिहैं निस्तार॥

निकसे प्रभु तिनतर में जाई * ऊखल भिरत गिरे अरराई
दिव्यपुरुष प्रकटे तहँ दोई * लागे करन विनय इमिसोई

रोलाछन्द॥ जयति जयति जगदीश ईश तव चरित अनन्ता। सुनतकहत अघदहत कहत इमि सब श्रुतिसन्ता॥ जयतिमच्छ वपुधरण सत्यव्रत प्रलयदेखावन। जयवराह बनिनाथ कनक हगदलि महि लावन॥ जय कूरम गिरिधरत रतन चौदह उद्धारन। जयनृसिंह हति हिरण्यकशिपु प्रह्लाद उबारन॥ जय वामन बलिछलन चरणनख सुरसरिजावन। जयति परशुधर सहसबाहु अरि विप्ररिझावन॥ जयतिराम सुरसुखद सन्तमुनि दशमुख गंजन। जयति कृष्णकंसारि असुर प्रणतारत रंजन॥ जयति बोध श्रुतिदोष दनुजकृत पुण्यछुड़ावन। जयति कलंकी निधन नीचछिति करिहौ पावन॥ जयति व्यासवेदार्थ शोधिकृत विविधपुराने। जयपृथु पृथ्वीदुहन पूजिप्रतिमा सब ठाने॥ जयतिहंस विधिसुतन प्रश्नकर उत्तरदीन्ह्यों। जयशम्भू मनुआदि अजय जिन परघट कीन्ह्यों॥ जयति ऋषभ अद्वैत मार्गजरि बुधन देखाई। जयहय गरदर दनुजमारि निगमान्योराई॥ जयति धेनुप्रद काम प्रकटभे मुनिजन काजे। जयध्रुवकरि हरिभजन अचल अस्थान विराजे॥ जयति धन्वन्तरिरूप जगतआमै निरवारक। जय बद्रीपति शक्रकेर मदमान प्रहारक॥ जयति कपिलसुत सगर दहन

गंगीदधिवासी । जयदत्तात्रय ज्ञानभक्ति वैराग्यके राशी ॥ जयतिदेव ऋषिजानि रमापति इच्छाठाने । जयसनकादिक ब्रह्मनिरत गुण सुनि सुखमाने ॥ जय इतिचौबिस वपुष धस्यो निज भक्तन हेता । औरौहोत अमापमापि को पावै तेता ॥ जय प्रभुयाहीरूप ममहृदय बस्यो छविसिन्धु । शीश नाइ रघुनाथ निजलोक गये दोउबन्धु ॥

दो० जासु नाम जगजालते देत विनय श्रम छोरि ।
सोइ प्रभु जनवश मातुकी तजत न बांधी डोरि ॥
खग मृगादि शठ आपुते कीन्हें अधिक महान ।
अस प्रभुको निज ईशता तजिराखी जनमान ॥

सुनियशुमतिबिलखतिढिगआई * बन्धनछोरिलिहिनिउरलाई
कीरतिआदि लगी सबदूषण * गोरसहित बांधे ब्रजभूषण
धनगोरस अरुजन्म तुम्हारो * जाते सफल ताहि तुम मारो
रामजननि कछु कह्यो न तेहू * मैया इनबिच दखल न देहू
ताही समय नन्दघर आये * सुनियशुमतिकोबहुरिसवाये
तबसबहिनमिलिकीनविचारा * इहां होतहैं विघ्न अपारा
चलौ बसी वृन्दावन माहीं * सकलसुपाससहितसोआहीं
चले सकल वृन्दावन आये * बसे सुथल जेहिका जो भाये
श्रीवृषभानु खबरि यह पाई * सहित समाज रहे तहँ आई
वृषरवि कुँवरि नन्दघर आवै * नन्दलाल कीरतिपुर जावै
बालक प्रीति परस्पर देखी * तात मात सुखलहे विशेखी
तहां एक दिन नन्द कन्हाई * गये खरिक लगवावन गाई
आई तहँ वृषभानु दुलारी * नाम राधिका छविअधिकारी
जासु जठरते भयो विराटा * दीन चलाइ कृष्ण तेहि डाटा
कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई * भली बात ब्रज विहरत सोई

जाके नयनन मध्य निहारा * चौदह रत्न दशौं अवतारा
चारिचारिखगमृग फलफूला * लजतजासु वपुदेखि समूला

दो० भजत विविध अवतार जब बहुत जन्म करियंत्र।
तब राधापद मिलत इमि कह हरिलीला तंत्र॥

जे राधा राधा अस कहईं * रामकृष्ण तिनके वश रहईं
हरि ब्रह्माण्डपुराण मँझारी * कह्यो राध आराध हमारी
तेहि प्यारीको जब हरि देखा * भये मुदित इत प्यारिउ पेखा
तेहिक्षणझुकिआये घनकारा * नन्ददीखजबअतिअँधियारा
राधा ते बोले घर जाहू * श्यामैदिहौ सौंपि सब काहू
करगहि चलत भई धरिधीरा * आये दोउ यमुना के तीरा
तहँ लखि मायाकी प्रभुताई * मणिमंदिर शुचिसेज सुहाई
श्याम सहित पर्यंक पधारी * परत पेखि तेहि तरुणविहारी
कह्यो कृष्ण ऐसी जनि कीजै * मानुषजन्म पालि सुखलीजै
इतनी कहत स्वयंभू आये * सुनि समस्त सामग्री लाये
मंगलमय मंडप तहँ छायो * वेदरीति सब कर्म करायो
विधिवतब्याहहोन तब लागा * गावैं सुरीसहित अनुरागा
कन्यादान विधाता दीन्हा * विधिवतकृष्णचन्द्रसोलीन्हा
सबविधिब्याहिचलनजबलागे * टारहु भूमि भार वरमांगे
कहि जब गये भये प्रभुयोवन * पूज्यो प्रिया मनोरथ को मन
बालरूप ह्वै पुनि गृह आये * श्रीजयदेव चरित ये गाये
इकदिनकृष्णबूझिदिनअच्छा * ग्वालन साथ गये लैबच्छा
लागे विपिन चरावन जबहीं * आयो असुर बच्छ बनतबहीं
कृष्ण पूँछगहि महि दैमारा * मरिगाजबतबसखननिहारा
एक दिवस यमुनाके कूला * रहे चरावत बच्छ समूला
धरिबकरूपबकासुरआवा * लिहिसिलीलिश्यामहिंसहचावा

दीनिसिउगिलिअग्निउरजारी ❁ निकसेतुरत चोंचगहिफारी
बालविलोकि सकल हरषाने ❁ गावतगुण निजघरनतुलाने
इकदिन खेलत रहे मुरारी ❁ आवा निकट प्रलम्बसुरारी
खेलनलाग बालकन सङ्गा ❁ जब तब करै सखनते दङ्गा
जानि गये बलदेवकुमारा ❁ पकरि ताहि पुहकरते मारा
दिव्यरूप है हरिपुर गयऊ ❁ मुनिदुर्लभ कैसे पदभयऊ
इनके पूर्व्वजन्मकर हाला ❁ कहौं सोऊ तुम सुनो भुवाला
बक प्रलम्ब केशी वत्सासुर ❁ गन्धमदन गन्धबकेसुत फुर
मुनिदुर्वासा शिष्यकिये सब ❁ हितउपदेशदियो तिनकोतब
पदुम सहस्र बरत तुम धारौ ❁ विष्णुलोकमें जाइ विहारौ
लगेकरन सोइ धरिउरमाहीं ❁ हरिमें प्रीति जननमें नाहीं
मिले न तब शिवशरते लाये ❁ दीन्ह्यो शाप उमा लखिपाये
होउ असुर तुम चारौभाई ❁ पतिमुखक्रतसुनिकरुणाआई
बोली हरिकर मृत्युइ पैहौ ❁ असुरयोनि तजिहरिपुरजैहौ
तेई असुर है यह गति पाई ❁ अबसुनु अपरकथा सुखदाई
इकदिनसखनसहितनँदनन्दा ❁ रहे विपिनफाँदत फरफन्दा
तहँअहिरूप अघासुर आवा ❁ इकइकयोजन अङ्ग बनावा
वदनपसारि रहा तिनतीरा ❁ करि विचार प्रविशे सबबीरा
श्यामगये जबतब मुखचापा ❁ बाढ़तभये कृष्ण करिदापा
उदरफारिपुनिबाहरनिकसे ❁ सखनसहितविषधरलखिविकसे

दो० भूप वन्तिकापुरी को पुण्यकार मृग बद्ध।
कीनदेखि गौतम दियो शापहोइ असुरद्ध ॥
करी बीनती भाँति बहु वारे तन धन प्रान।
दीनदुखितलखि लोलपुनि बोले ऋषैसुजान॥
ऐहैं जब गोलोक ते ब्रजमें कृष्णकुमार।

मृत्यु पाइ तिन हाथ ते होई तव उद्धार ॥
सोई भयो अघासुर आई * अपरकथा सुनिये ऋषिराई
एक दिवसगे पुलिनमँझारा * निजनिजभोजनसबनउतारा
लागेखान स्वाद मुखगाई * सोसबचरितदेखि विधिआई
चहुँदिशिउडुइवबालअनन्ता * मध्य विराजतशशिभगवन्ता
देतश्याम सबका सब श्यामैं * तबतौ ब्रह्मरह्यो दुबिधामैं
जिमिभुशुण्डिसँगखेलतगेहा * भये अमित तिमिकृतसन्देहा
ये अवतार कवनविधि आहीं * सबहिनकी जूठनि जेखाहीं
हमहुँ विवाहि गयन इकबारा * अबकछु चही प्रभावनिहारा
अस विचारि बछराहरिलैगे * ढूँढ़नचले कृष्णसब हरिगे
बालनहूँको तब हरिलीन्हा * जानाश्यामचरितअजकीन्हा
तुरतबच्छ बालक रचिलीन्हें * ज्योंकात्योंकछुजात न चीन्हें
माता करैं अधिक अस्नेहा * धेनु पियावै तजि नवगेहा
सन्ततकरैं चरित प्रभु सोई * जाना राम अपरनहिं कोई
वर्षएकयहिविधिचलिगयऊ * इतउतलखिअजाविस्मितभयऊ
पुनि सबबाल लखे हरिरूपा * सेवतपद विधि भव सुरभूपा
व्रजवासी सब विबुधसमाजा * बहुरिदीख प्रभु आपविराजा
वस्तुगई सो चिन्ता भारी * लज्जितह्वै अज हृदयविचारी
देखो अति मेरो अज्ञाना * त्रिभुवनपतितिनतेछलठाना
निकटआइ शिरनाइ विधाता * लागे करन वरण पुलकाता
नमोनमो त्रिभुवनपतिस्वामी * नमो सकलउर अन्तरयामी
श्यामशरीर पीतपट काँधे * गुञ्जाभूषण दोउकर बाँधे
बिम्बाधर आननछविसीवा * जलजमालकौस्तुभमणिग्रीवा
शीशमुकुट श्रुतिकुण्डललोला * अङ्गअङ्गप्रतिवसनअमोला
अरुणअंघ्रिपदुमाच्छविशाला * करिकरभुजतिलकावलिभाला

कुंचित कच नासिका सुहाई ❋ वेणुवादपर पालक गाई
अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा ❋ भयो अनुग्रह हेतु हमारा
अहै सो इच्छामय वपुमाहीं ❋ पंचभूत की रचना नाहीं
असिसमर्थ्यनहिंमोहिंमँभारी ❋ जानीमहिमा अगमतुम्हारी
यावत अस वपु हृदय न धरहीं ❋ आतमरूप विचारैं करहीं
तावत ज्ञान परिश्रम आही ❋ असविचारिबुधत्यागतताही
सुनियसदायशविमलतुम्हारा ❋ साधुनमुख निकसतजोसारा
काय वचन मन तुमको ध्यावै ❋ तुम्हरे जन मनमें अतिभावै
जीवनमुक्त अहैं ते प्रानी ❋ जे तव पदपंकज रतिमानी
यद्यपिहौ तुम स्ववशअजीता ❋ तद्यपि इन तुमका प्रभुजीता
तावत हैं रागादिक चोरा ❋ यावत गृह के बंधन घोरा
तावत मोह निगड़ परै सोई ❋ यावत कृष्ण न तव जन होई
भक्तितुम्हारिसकलसुखदायिनि ❋ हैकल्याणकरणमनभायिनि
तेहि तजि केवल बोधइ लागी ❋ करतयत्न अनुदिनअनुरागी
तिनकर रहत परिश्रम शेखा ❋ तरु अस्थूलसघनकसलेखा
हौ स्वतंत्र तुम अपनी माया ❋ करि विस्तारतभुवननिकाया
तुमहीं शोभित हौ जगभूपा ❋ सृष्टिकाल तहँ ब्रह्मस्वरूपा
तुम जगपालन काल मुरारी ❋ संहारण हित तुम त्रिपुरारी
भरजकन नभ नखत जे आहीं ❋ कालपाइ मा पति होइजाहीं
हितकारी तुम्हरे अवतारा ❋ तिनके चरितनकेर न पारा
तेहिते करुणा दृष्टि तुम्हारी ❋ है सब पर सामान्य मुरारी
आपन कीन कर्म हैं जैसे ❋ अनायास भुंजत नर तैसे
नमस्कार तिनका बड़भागी ❋ जिनकरमनतवपदअनुरागी
ते अनित्य भवसागर एहा ❋ तरत वत्सपद सरिस सनेहा
तुम अनादि मैं आदि अजानी ❋ मायापति ते माया ठानी

तुम्हरे आगे का मैं तनका ❁ बृहदसमूहकेरिजिमिकनका
कहँ मम सात बिता की काया ❁ कहँतुमअगणितअंडउपाया
सकल सृष्टि तव उदर मँझारी ❁ तेहिते क्षमिये गुनह हमारी
बाल गर्भगत चरण चलावै ❁ मातु सोचि अपराध न लावै
नहिं यह मिथ्या बात मुरारी ❁ है तुमते उतपत्ति हमारी
जब मैं नाभिकमल ते भयऊं ❁ तब फिरि ताके भीतर गयऊं
वर्ष एकशत खोज्यों तोहीं ❁ तबहुँ न देखि परेउतुममोहीं
तपकरि तहँ देख्यों तव रूपा ❁ कोटिभानु समतेज अनूपा
तमकरि अन्ध चक्षुअभिमाना ❁ तुमते पृथक ईश मैं जाना
तुम मम नाथ दास मैं तोरा ❁ क्षमहुदेव अब अवगुणमोरा
दया योग्य मैं अहौं तुम्हारी ❁ ईशन के तुम ईश खरारी
सुनि बिनती चतुरानन केरी ❁ पोंछे दृग प्रभु निजपट फेरी
जाहु धाम कह कृपानिधाना ❁ तजिमदमोह तर्कविधिनाना
सुनिअजपदरजधरिशिरगयऊ ❁ बच्छबाल लै आवतभयऊ
जहँतहँ धरि निजलोकसिधाये ❁ वरष बटोरि कृष्ण तब आये
बोले बालक सुनिये ताता ❁ तुमबिननहिंखावादधिभाता
लागे बहुरिसकलमिलिखाना ❁ विधिछलबलकाहूनहिंजाना

गी.छं. जाना न काहू मरमभोजन खायअस बोलतभये।
फलताललागहैंसबसखामिलिखानकेहितबलिगये॥
धरिरूप रासभकेर धेनुक असुर यकतहँ आयहू।
पगपकरि पटकेहु विटपपर बलिराम सबहुनपायहू॥

सो० बलिसुतसहसिकनाम हरिजनबन अप्सरालखि।
भा मुनिथल वशकाम दीन शाप उद्धार कहि॥

दो० सोई यह धेनुक असुर भयो गयो गति पाइ।

मातनते रघुनाथ सब कही कथा घरआइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतकृष्णबलबन्धनयमलार्जुनउद्धार
राधिकाविवाहनब्रह्मावच्छहरणधेनुकवधकरन
कथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं दशमकी रीतिकछु गर्ग अदित मतआनि ॥

बालचरित वरणे अतिपावन * और सुनो जे हैं मनभावन
इकदिन रामै भवन विहाई * अपना गये चरावन गाई
पहुँचे जब कालीदह तीरा * पियत भये गोबालक नीरा
मरे तुरत पुनि कृष्ण जियाये * सुरभिननिजनिजबच्छापियाये
लागे खेलन गेंद कन्हाई * चढ़े विटपशिशुमारिसिधाई
उछरिगेंद कालीदह गिरेऊ * ताही संग कूदि प्रभु परेऊ
गये सपदि काली के तीरा * निरखिंचिपटिगासकलशरीरा
निबुकि चढ़े ताके शिर कूदी * गरुये ह्वै डारे फन खूंदी
चला रुधिर मुख चक्षुन तेरे * शिथिल अंगभे बिन मदकेरे
नाथिलीन तब कृष्ण कृपाला * विनवत भई तासुकी बाला
नौमि कृष्ण भंजन भय भारी * नटवर वेष सुभग सुखकारी
पतिअपराधक्षमिय भगवाना * मोहविवशमहिमानहिंजाना
सुनि बिनती बोले यदुराई * रौनक देश बसहु अब जाई
है हमते खगपति ते शारी * अनत गये डरि हैं सो मारी
सबअहि देतरहैं भोजन तेहि * वसरीपरहमदीननहितयहि
भिरत भिरेन हमहूं धरिधीरा * हारिपराय दुरेन यहि तीरा
इहां शाप सौभरि ऋषिकेरी * तेहिते गरुड़ करत नहिंफेरी
कबहुँबैठितरुडागिली मांजरि * कहमुनिपुनिआवतजैहोजरि
मेरो चरण चिह्न तवमाथा * लखिअबबोलीनहिंखगनाथा

दो० पूर्वजन्म को भूप तैं मदवश ममपद माथ।
लिख्योंदिख्योतजिशिरसितेहि भयोसर्पमदमाथ॥

इहां निकट ठाढ़े ब्रजलोगा * रोदनकरहिंसकलवशशोगा
यशुमति नन्द न धीरजधरहीं * संकर्षण उपदेशहि करहीं
धरहु धीर गुणगुणि मनमाहीं * कतहुँ जाइ कृष्णहि भयनाहीं
तेहि अवसर उछरे यदुनाथा * कालीसहित चढ़े तेहिमाथा
लागे करन निरतपुनि कान्हा * हरषे सकल मिले जनुप्राना
उतरे जबतब अहि शिरनावा * कुटुँबसहितरौनकहिसिधावा
कृष्णहि सब भेंटे पुरवासी * तात मात प्रमुदित चरदासी
तेहिदिन रहे सकल तेहिघाटा * असुर एक यकठौरे डाटा
चहुँदिशिझांखररूँधिबनाई * तेहिवनदीन्हिसिआगिलगाई
भये विकल सब शरण पुकारे * करि दवपान तुरन्त उबारे
रोहित चिह्न न नेकु लखाना * आये भवन करत गुणगाना
तेहि अवसर वरषाऋतुआई * सचराचर सबकै सुखदाई
निजनिज गृहसबछावनलागे * जिमिचेतहिंबुधजरपनआगे
उमड़िघुमड़िनभजलधरआये * दानदेनुजनु सुधनिकधाये
बगुलपांतिसोहतयहिभांती * जिमिसुकृतिनउरटेकसोहाती
निर्त्तहिं मोरमुदित घन देखी * गृहीविरक्तजिमिहरिजनपेखी
वर्षतजलथलअलभयचीन्हें * जिमिसम्पति रघुपतिकेदीन्हे
भईकीचनर चलत निहारी * जिमिसज्जनजगमाहिंविचारी
बोलतदादुर नहिं अलसाता * जिमिशठकरतअकारणबाता
तड़ितचमकिफिरिजातबिलाई * जिमिजगतनधनसुततियभाई
बटुरि नीर आवत सरमाहीं * जिमिसदगुणसबसज्जनपाहीं

दो० जोतहिं बवहिं किसानमहि ऋतुकर बीजप्रमान।
जिमि शुभसाधनकरिकरहिं युगकरधर्म सुजान॥

प्रविट पाइ तृण संकुल जामा ❋ विषयसंगजिमिबहुविधिकामा
विविध जीव प्रकटे महि आई ❋ प्रजाबढ़त जिमि नृपवरपाई
जरत जवास आपने दोषा ❋ जिमिकुलनाशहोतद्विजरोषा
फलफरिविटपअवनि झुकिआये ❋ जिमिसुसाधुसुखसम्पतिपाये
लागत मधुर वचन पिक केरे ❋ जिमिहरिचरित संतमुखतेरे
प्रकटत कबहुँ छिपत इमि भानू ❋ यथा सुसंग कुसंगत ज्ञानू

दो० बरष्यो जल पर ना जम्यो ऊषर में तृण कोइ ।
हतभागिन के ज्ञान जिमि कथौ सुने नहिं होइ ॥
चलीं क्षुद्र सरिता उमड़ि जिमि थोरे धन नीच ।
अचलहोत जल जलधिमहँ यथाजीव हरिबीच ॥
द्वै महिना की वृष्टि ते भयो अन्न सम्पुष्ट ।
राम नाम के रटे जिमि होत भक्त जन तुष्ट ॥

यहि विधि वरषाऋतु के माहीं ❋ वनबछरूतिन समकुदलाहीं
कबहुँ तोरिफल खेलैं गोली ❋ बोलैं कबहुँ द्विजन की बोली
कबहुँ करैं षटपद गुंजारा ❋ कबहुँ कीशबनि कूदहिं डारा
कबहुँ वक्र ह्वै बेणु बजावैं ❋ देवनारि तन सुधि बिसरावैं
गो वृषभादि विपिन पशु जेते ❋ मुख तृण दाबि सुनैं धुनि तेते
वत्सगहे मुख थन रहि जावैं ❋ नचहिंमोर मुद थोर न पावैं
खग सब शब्द सुनैं अनुरागे ❋ यमुनाजलबहिसकतनआगे
आतप ते पावस ह्वै जावैं ❋ पावस से आतप दरशावैं
उठे फूलितरु शिला पसीजे ❋ मुनिजनसकल प्रेमरसभीजे
व्रजबासी सब रहैं निहारी ❋ फरकिउठहिंशिरशिवशिरधारी
बन्द करहिं जबतब सब जागैं ❋ प्रमुदित ह्वै निजकारजलागैं
यकदिनश्याम सखनयुतभाये ❋ चलत चलत मुंजावन आये

चहुँदिशि ते दावानल लागी ❋ जाइँ कितै गो बालक भागी
शरण भये तब नयन मुँदाये ❋ देखैं सब दव बाहर आये
मास दिवस भरि गोपकुमारी ❋ देवी की पूजा अनुसारी
कात्यायनी कृपा अब कीजे ❋ नन्दसुवन हमका पति दीजे
खातपियतअरुसोवतजागत ❋ हरिपरिहरिचितअन्तनलागत
अजहुँजासुमनहोइमगनअस ❋ कृपासिंधु हरिहोइँ तासु बस

दो० यकदिन सब करतीरहैं यमुना में अस्नान।
चीरहरे तहँ आइ कै औचट श्यामसुजान॥

लटकाये पट कदम कि डारी ❋ मांगहिंसबमिलिगोपदुलारी
चीर देब तुम्हरो हम तबहीं ❋ जल ते बाहर ह्वैहौ जबहीं
निकसीं सब करतलकरिओटा ❋ बोले विहँसि नन्द के ढोटा
दोउकरजोरि विनय रविकीजे ❋ करतभईं सबतब अबलीजे
पूजेहु तुम जेहि हेत भवानी ❋ सोहम प्रकट भयन वरदानी
जबतक जगकी लाज न खोवै ❋ तबतक मोहिं न प्रापत होवै
असकहि अमित बनायेअंगा ❋ कीन्हों केलि सबन के संगा
कमलाललिता विमलविशेषा ❋ चन्द्रावलि सुखमादिक शेषा
जबतक सबके सदन विहारी ❋ जातकहत यकएकहि प्यारी
सयन बयन सुनि गोपिन केरे ❋ करिओढ़र आवहिं चलि नेरे
यकदिन गे राधिका निकेता ❋ बैठारिनिनिज ढिगकरि हेता
श्यामवदनलखिआपनिछाहीं ❋ अपर नारि जानी मनमाहीं
कानमान हरि नेह जनावा ❋ दूतीबनि बहु भांति मनावा
कबहुं बैठैं पनिघट जाई ❋ काहू को शिर धरैं उठाई
काहू कर घट डारैं फोरी ❋ ते यशुमति ते कहैं निहोरी
यकदिन दधि बेचन के हेता ❋ चलीं सकल ब्रजवधू सचेता
सखनसहित यदुनंदन हेरी ❋ मारगबीच लिहिनि सबघेरी

दीजै दान जान तब पैहौ * हठ कीन्हें पीछे पछितैहौ
डगर डगरमें चलहु कन्हाई * समुझि न लागै बहुतमोटाई
शिरपरकंस कबहुँ सुनिपाई * सकुलतुम्हैं बँदिमाहिं डराई
कंसहि मारि मिलैहौं छारा * उग्रसेनको करहुँ भुवारा
हरिहौं सकल भूमिकर भारू * याहीहितभा मम अवतारू
झूठबात मतबोलो लाला * धेनुचरावत फिरत विहाला
लकुटी हाथ कमरिया काँधे * मांगिखात दधि सबके राँधे
ते तुम ईश बनतहौ सोई * बातनते नहिं भूपति होई
यकयुवती पुनि अहिर गवाँरी * तुम काजानो भूति हमारी
ब्रह्मा शिव ध्यावैं नित हमहीं * ऐसीदशा भई मिलितुमहीं
तुरत चतुर्भुज रूप देखावा * लखिविश्वास सबनके आवा
बोलीं सब हमहैं तव दासी * भावै सो कीजै अविनासी
प्रमुदित कीन विहार विहारी * फिरिआईं निजभवननिहारी

दो॰ एक सखी उनमत्त ह्वै टेरै सबके द्वार।
ले कोइश्यामै मोल दधि लीन्हीं नन्दकुमार ॥

अति बहुकेलि गोपिकन केरी * संक्षेपै मैं कछुक निवेरी
सुनहु एकदिन एक ठिकाने * गये चरावन सखा भुखाने
चौबे करत रहैं तहँ यागा * पठये लावहु मांगि विभागा
जाय सखन जब भोजनमांगे * सुनिकटुवचनकहनसबलागे
आये घूमि कहिनि सब खोले * अबतुमजाउतियनढिगबोले
द्विजबनितनते भाषिनि जाई * विपिनभुखाने राम कन्हाई
तुम्हरेढिग पठइनिहैं हमको * सुनिआनन्दभयोअतिसबको
विविधभांतिके भोजन कीन्हे * क्षिप्रै चलीं थारकर लीन्हे
आइ कृष्णके आगे राखे * प्रेमसहितसबहिनामिलिचाखे
एककेरपति रोंकेसि धाई * पतितजिमिलीप्रथमसोआई

दरशनपाइ छकितभइँ सारी * कहतभये तब विपिनबिहारी
जाहु भवन अब डरेहु न काहू * तवसेवा करिहैं तव नाहू
सुनिसमोद आईं अस्थाना * तबसबद्विजलागे पछिताना
हमरे सकल यज्ञ धिरकारा * धृकहमरे बल बुद्धि विचारा
धृकविद्या पढ़िबो सब जानो * धृकहमरे जपतप व्रतदानो
धृककुलमद अभिमाननिछमनू * होइकृष्णतेविमुखजोभयनू
धनिपत्नी ये हरि मनभावन * इन्है परशि हम ह्वै हैं पावन
धेनुचराय जाइँ जबधामा * अवलोकहिंछबिमिलिसबबामा
कार्त्तिक बदी चतुर्दशि आई * घरघरव्यंजन करहिंलोगाई
यशुमतिभोजन विविधबनाये * कृष्णचन्द्रलखिवचनसुनाये
आजुकौन उत्साह तुम्हारे * सुरपतिकी पूजनहै प्यारे
ब्रजबासिन के इष्ट बिड़ोजा * जासुकृपा सुख बाढ़त रोजा
वर्षतजल तृणजामत जाते * चरतधेनु पय प्रकटत ताते
रहियो दूरिछुयो जनिलाला * रूसि रहैगो देव विशाला
बोले मनमोहन सुनुमाई * यामें हरिकी कौन बड़ाई
ईश रजाइ जाहि भय जोई * शिरधरि सदा करत सबकोई
कोइ सिरजै पालै संहारै * कोइ बरषै करषै कोइ जारै
इंद्रकहा करि सकत विचारा * नीक जबून हाथ करतारा
बहुदिन ते पूज्यो सुरराई * काहुइकबहुँदिहिसिकछुआई
तेहिते अबछांड़ौ सुरदूजा * गोवर्द्धनकी ठानहु पूजा
जेहिके ऊपर धेनु चरावत * सदाताहितुमसब बिसरावत
निकट रहत सबते बड़ देवा * तेहितजि करत आनकीसेवा
जबहीं तुम पुजिहौ मनमाना * ह्वै प्रसन्न देई वरदाना
याही बात चतुर्भुज रूपा * कही स्वप्नमें पुरुष अनूपा
निजनिज कर्म वचनका अन्ता * ताते तुम्हैं चही गोरक्षा

सब व्रज में यह बात प्रकासी * कौंसल करन लगे पुरवासी
सब के मन आई सुनि लीजै * जो कछु कृष्ण कहैं सोइ कीजै
श्याम समान हितू नहिं कोई * प्रभुताई निज नयनन जोई
सुनिसबनिजनिजआश्रमआई * शकटन में सब सौंज भराई
नानाविधि पकवान मिठाई * विविध मूल फल फूल खटाई
सालन शाक अनेक सोहाये * जोतिजोतिसबशकटसिधाये
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * चले सकल मन आनँदभारी
बाजैं बाजन विविध प्रकारा * गावहिंगीत वधू मिलि सारा
पहुँचे जब गोवर्द्धन पाहीं * टिके सप्तत्रय योजन माहीं
समाचार सुनि जहँ तहँ तेरे * आये औरौ लोग घनेरे
कार्तिकसुदी प्रतिपदा के दिन * बोले कृष्ण नन्दते यहिविन
प्रथमै तुम पूजौ गिरिराजा * तेहि पाछे सब गोप समाजा
पूजत भये नन्द हरषागे * पाछे सकल चढ़ावन लागे
प्रकटे कृष्ण रूपधरि दूजा * थूल विशाल अनेकन भूजा
श्याम शरीर मुकुट शिरनीका * कुंडल माल मनोहर हीका
पीत वसन पहिरे सुठिआंगा * चक्षुचपल अलकैं जनुनागा
लागे खान उठाइ उठाई * लखि हरषे सब लोग लुगाई
तिनते कृष्ण कहतभे तबहीं * देखे तुम ऐसे सुर कबहीं
जो प्रत्यक्ष तव पूजन खाता * तुम्हरी कृपा मिले अबताता
ललितासखी गई सब जानी * राधा से बोली मृदुबानी
देखो श्यामकेरि चतुराई * आपु पुजावत आपुहि खाई

दो० भली वस्तु रघुनाथ सोइ जो लागै हितश्याम।
नतरु भई बादिहि गई ज्यों पानीके दाम ॥

एक सखी गृह भोग लगावा * करपसारि ताहूकर खावा
भोजन करि बोले प्रभु याही * मांगहु वर जो भावै जाही

जोजेहि रुचा सोई तेहि मांगा ❋ बोले नन्द सहित अनुरागा
नाथ देहु वर यह मम कामा ❋ नीके रहैं कृष्ण बलरामा
सुनहु नन्द तव पुत्रन केरा ❋ सदा होय कल्याण निवेरा
सहित समाज रहौ तुम आछे ❋ एकबात होई मम पाछे
ताको तुम तनकौ मत डरियो ❋ जोकछु कृष्णकहैं सो करियो
असकहिदिहिनिबांटिपरसादा ❋ अन्तर्द्धान भये सहलादा
हनुमत वचन लागि यदुराई ❋ परसि परब तजिदीन बड़ाई

दो० सेतु करत भा पूरसुनि दीन्ह्यो ब्रजमें त्यागि।
मिले न दरशन मोहिं तोहिं द्वापर में यकलागि॥

ऐसे प्रभु निज जनकी बानी ❋ करतसांचसुनि कोन प्रमानी
जयतिजयतिकहिकरतबड़ाई ❋ आये पुरलखि लोग लुगाई
तब वासव अतिकोपत भयऊ ❋ बोलि मेघ परलयके लयऊ
ब्रजवासी सब गये मोटाई ❋ देहु बहाइ सहित गिरिजाई
टूकटावरके कहे हमारी ❋ दिहिनित्यागिमखगिरिहिजोहारी
कौनिबात बड़ि बरनि सिधाये ❋ बनवत बात वज्र ब्रज आये
घेरिघुमरि जल छांड़न लागे ❋ सकल गोप हरिपद अनुरागे
तुरत गोवर्द्धन लीन उठाई ❋ ब्रजपर दिहिनि छत्रसमछाई
नखपर धरे देखि ब्रजनारी ❋ एकएक ते कहैं विचारी
चोरिचोरि तब माखन खायो ❋ सोसखिश्यामकामअबआयो
यशुमति कहै निहारि निहारी ❋ सबपर शक्र विपति यहडारी
केहू नहिं गिरिराजहि धारा ❋ हमरे सुत भारूकह ठहरा
लेहुलेहु अब ते कोइ लेहू ❋ लालहि नेक उसासी देहू
हौं अहीरको है कछुदाया ❋ तब मोहन मातैं समुझाया
सप्त दिवस मुदिरन वन पीटा ❋ काहूके तनपरी न छीटा
त्रिभुवनपति जिनकररखवारा ❋ को करिसकै तासु अपकारा

गोवर्द्धनलीला

तुरत गोवर्द्धन लीन उठाई । व्रज पर दिहिनि छत्रसम छाई ॥
नख पर धरे देखि व्रजनारी । एक एक ते कहैं विचारी ॥ (पृष्ठ ३२६)

वृतसबघन चलिगये लजाई * सहसअक्ष सुनि उठाडराई
आयो तुरत कृष्ण के पासा * चरणनाइ शिरवचनप्रकासा
नमो कृष्ण भञ्जनमहिभारा * अखिललोकनायककरतारा
जगतपितागुरुअजभगवाना * रक्षक धर्म दलन खलनाना
मैं अपराध कीन अतिभारी * क्षमहु नाथ अब चूक हमारी
जाना नहीं तुम्हैं मैं ईशा * ताते करन चह्यो व्रज खीशा
जो जाते कछु पावत होई * मिलै न ताहि करै रिस सोई
हम तुम्हार सबभांति बसाये * कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये
बोले कृष्ण तजहु सब शोका * धेनुसमेत जाहु निजलोका
भोग्यो निजअधिकारसदाहीं * भूले मोहिं बहुरि सुख नाहीं
आये सुरपुर आयसु मानी * देखि प्रभाव सभाहरषानी
सब मिलि कहैं कृष्ण हैं रामा * इन्द्रहु जासु करत परनामा
गोवर्द्धन की आहि कृपारी * भुजचूमति यशुमतिमहतारी
कहै रघुनाथ चरित हरि केरे * भवसागर के बोहित बेरे

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतकृष्णायनेचतुर्मासाचीरहरणदानलीला गोवर्द्धनलीलावर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं दशमअस्कन्धकी रहसरीति कछुजानि ॥

इन्द्रहिश्यामस्वर्गपहुंचायो * व्रजवासिनलखिअतिसुखपायो
बसेबहुरिसब निज निज गेहा * यकदिन तहां चरितभा येहा
नंदहि वरुण दूत लै गयऊ * कृष्णजायपुनि लावतभयऊ
सुनीसबन प्रभुता अभिरामा * अबसुनियेजिमिजीत्योकामा
यकदिनदेखि शरदउजियारी * वनमें आवत भये मुरारी
हरिहितगुनिऋतुगणतहँआये * सफलविटपनहिंजाहिंगनाये
डोलतत्रिविध पवनसुखदाई * लखि तहँ प्रमुदित है यदुराई

तिरभंगे ह्वै वेणु बजाई ❋ सुनि गोपी सब आतुर धाई

दो० कोइसुततजिकोइसेजतजि कोइभूषणकोइचीर ।
कोइपयतजिकोइपाकतजि आईंजहँ बलवीर ॥
बोले लखि ब्रजराज तुम कौन नरक को काम ।
सासुससुरपितुमातुपति तजिआइउ यहिठाम ॥

तेहिते अबहीं जाहु पराई ❋ सुनि गोपी बोलीं अकुलाई
यहतौ दोष नाथ तेहि लागै ❋ अपर पुरुष ते जो अनुरागै
हमरे पति तुमहीं महराजा ❋ यामें कहौ कौन की लाजा
त्रिभुवननाथ प्राणपतिदेवा ❋ फुरामिलि तजिये झूंठी सेवा
जो इमि रहै हिये निठुराई ❋ क्यों वंशी तुम फूंकि बजाई
आवै कोइ आसरा लगाई ❋ लागै दोष देइ ढुदलाई
तेहिते नाथ रहस अब कीजै ❋ सूधे सूध जवाब न दीजै
बिलपतरुदतवदतइमिबाला ❋ देख्यो कृपासिंधु छविजाला
मायाते तब कह्यो गोपाला ❋ रचहु रहसमंडल ततकाला
योजनपांचमाहिं अभिरामा ❋ रचत भई वंशीवट धामा

गीतिकाछंद ॥ छविधाम वंशीवट जहां मणि जटित कंचन की नही । तहँ रासमंडल रच्यो मोहन जात सो कापै कही ॥ नवसातसहस जु गोपिका सजिसाज सब ठाढीभई । यक एक के मधि एक मूरति काम की शोभा मई ॥ रघुनाथ तिनके बीच जोड़ी राधिका नँदलाल की। वपु एक रूप अनेक कीन्हे खबरि नहिं यहि हाल की ॥ मिरदंग ताल सितार बहु मुरचंग वेणु सरङ्गिका । स्वर मंद बाजत बांसुरी गतिमिलत उठत तरङ्गिका ॥ करजोरि निरतत छोरि कहुँ मुखमोरि शिर नीचे करैं । पगभूमि पटकनि बाहु झटकनि ग्रीव लटकनि मनुहरैं ॥ मृदु

हँसहिंहेरहिं घुमरिझुकिगतिघूंघुरुनकी लावहीं। तततांथे-ई तततांथेई तततांथेई कहिगावहीं॥ कोइडारिकर गरश्या-मके मुरली छिनाइ बजावती। कोइतान पूरनकान्हसँग कोइ पकरिउर चपटावती॥ हँसिलेत गोदउठाय मोहनहाथ अङ्ग-निपैधरैं। लखिदेवनभ परसूनबरषैं हरषिसब जैजैकरैं॥ मणि-कंठउर वनमालवर शिरमोरमुकुट विराजहीं। पटपीत किं-किणिकाछनीकटि कानकुंडल छाजहीं॥ अँगअंगप्रति बहु विधिविभूषण अलक श्रमकन झलकहीं। पदकंज नूपुरवेणु करमुख पानभरछवि छलकहीं॥ यहिभांति नाचत गोपिका सबथकित ह्वै झुकिझुकिरहीं। कहिंमाल पायल चन्द्रिका खसिपरी नकबेसरिकहीं॥ अतिश्रमितलखि नँदलालतिन पर सुपट पवन ढुरावहीं। उरझे विभूषण हारबेनी कमलकर सुरझावहीं॥ असप्रीतिकेवश श्यामलखि सुरअंगनामनमें कहैं। धनिधन्यगोपी धन्यजिनकेसंग हरिक्रीड़तरहैं॥ कर जोरिहृदय निहोरि विधितेकहैं यहवरदीजिये। हमहोहिं दासी व्रजवधुनकी कृष्णपदरत कीजिये॥

दो० कृष्णहि मारुत करत जब देखत सब व्रजवाम।
मनमें भा अभिमान तब हैं हमरे वश श्याम॥

जानिलये सो मद भगवाना * तुरत भये तहँ अन्तर्द्धाना
जेहिपरहोतअधिकअनुकूला * दलत तासुहरिमद दुखमूला
एक सखीका करगहि लीन्हा * गोपी वेष संग वन कीन्हा
त्यहितब निज मनमांझविचारी * मैंहौं श्यामहिं बहुत पियारी
बोली पगते चला न जाई * लेहुमोहिं निज कन्ध चढ़ाई
लीजै चढ़ि बैठे मुसक्याई * चरण उठावत गये हेराई
बिन प्रभु बाल विकल भै कैसे * जलचरबिनजलव्याकुलजैसे

शोचत हरिहि न पावत वामा ❋ विकल पुकारत आरत नामा
हे ब्रजराज राज दुख मोचन ❋ हे गोपीपति वारिज लोचन
चरण शरण में दासी तेरी ❋ कृपासिंधु लीजै सुधि मेरी
यहिविधि रुदतपरीतरुबाला ❋ पछिलिनकाअबसुनोहवाला
ढूंढ़त फिरहिं सकल उनमस्ता ❋ जड़ जीवनते बूझहिं रस्ता
हे वट हे पाकरी करीला ❋ तुम देखे मोहन गुणशीला
हे चलदल हे नींब पियारी ❋ तुम कितहूं देखे बनवारी
हे रसाल हे पनस सुजान्हा ❋ तुम आवत देखे इतकान्हा
हे जामुनि हे गूलरि तूता ❋ तुम देख्यो यदुपति के पूता
हे दाड़िम हे कुन्द चमेली ❋ तुम देखे गिरिधर अलबेली
हे गुलाब बेला कचनारा ❋ हे बदरी हे हरसिंहारा
हे नींबू अँबरूत सरीफा ❋ तुम देखे गोपाल हरीफा
मोमसिरी के कदम तमाला ❋ तुम देखे नरहरि नँदलाला

दो० हे कृष्णा उषणाद्विजा पथ्या क्रमुका कन्द।
हे बेश्वा लंगूल अब तुम देखे नँदनन्द॥

यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे ❋ भेंटि भेंटि पूछैं हरि हेरे
जब न कछू उत्तर तहँ पावैं ❋ निदरितिन्हैंबांसहिंगरिआवैं
हे वंशी तैं बड़ी गँवारी ❋ अपने कुलकी रीति बिगारी

स० वेमगदापगअंधनकोतुम चालिबो आछेनहूकोनिवारेउ।
वेजलथाह बतावतहैं तुम प्रेमअथाहके वारिदपारेउ॥
वेवरवासबसाइभले तुमवासछोड़ाइ उजारिमेंडारेउ।
काकहियेहरिकीबँसुरीतुमआपनवंशकोनामबिगारेउ॥

दो० विरह वह्नि तो में भरी है तू वंशी सांच।
फूंकि फूंकि हरि गहत परि तदपि आंगुरी नांच॥

जो तैं श्यामैं ते न हेरानी ❋ तौपरपीर जाइ किमि जानी

आगेचलि सो सखी निहारी ※ भेंटिकह्यो कितगये विहारी
त्यहितबआपनि कथाबखानी ※ कितधौं गये हमहुँ नहिंजानी
बोलीनव ललिता मुख जोई ※ श्यामसरिससखिनिठुरनकोई
कहराधिका श्यामकाकीन्हा ※केहिअभिमानदुःखनहिंदीन्हा
विधिकरि गर्वविपुल विधिदेखे ※ शंकरभये कामवश लेखे
लोमशलखि सिमरीकी माला ※ बसे विपिनमें दशरथ लाला
नारद वानरकर मुख पावा ※ धीमरकर हनुमान बँधावा
हरिके कहे कथा नहिं सुनेऊ ※ गरुड़भुशुण्डिपुरहशिरधुनेऊ
दशमुख दरपि पराजय पाई ※ कुशते निजबल रामजुभाई
ज्ञानगर्व सनकादिक परेऊ ※ शापदेइ जगमें अवतरेऊ
गिरे ययाति स्वर्गते भूमा ※ गजवशग्राहबहुतदिनभूमा
गिरिअरिगुणयोनमोसमदूजा ※ हरी तस्य गोवर्द्धन पूजा
तापस धरी शिला शिरफेरे ※ जरे पंख सम्पाती केरे
वसु वशिष्ठमुनिते मद कीन्हा ※ तेहि गांगेय मनुजतन लीन्हा
द्रुपद द्रोणते अहमिति ठानी ※ भइतेहि अर्द्धराजकी हानी
विद्यामद जब कीर्ति विमाते ※ रिसकरि रम्भ जरायो ताते
शुक्रसुता अरुनृपतिय ओड़ी ※ मदते भइ शरमिष्ठा लौंड़ी
करि कंदर्प दर्पतनु जरेऊ ※ जह्नुपान गंगाकर करेऊ

दो० प्रभुहि दुखित लखि लषणके भयो गर्व तेहिठाम।
बिछुरत नारि सनेहवश जरत निवास्यो राम ॥

त्यहिते श्यामहिं दोष न दीजै ※ जसमदकिह्योतैसफललीजै
बोलीअपरसखी चलिकै अब ※ रहसकरो मिलिहैं मोहनतब
आइ सबन कीन्ही सोइ रचना ※ विविध भांतिके बोले वचना
कोई कृष्णबनी कोइ प्यारी ※ आदिहिते लीला विस्तारी
लागीं प्रेमसहित जब गावन ※ तुरतहि प्रकट भये मनभावन

अपरकर्म तुष्टत चिरकाला ❋ प्रेमते प्रकट होत ततकाला
छवि अनपार सकै को गाई ❋ लखि ब्रजवधू उठीं हरषाई
काहू प्रीतम करगहि लीन्हा ❋ काहू बाहु कंध निज दीन्हा
काहू कटिपट पद उरधारे ❋ तृप्त न हो अस वचन उचारे
महाराज तुम व्यास बनोअब ❋ संशय चित हम प्रश्न करैंसब
तीनि भांति प्राणी जग बीचा ❋ यक उत्तम मध्यम यक नीचा
बिन सेवा जो करै सनेहू ❋ उत्तम प्रभु कर लक्षण येहू
सेवा लखि जे प्रीति बढ़ावैं ❋ ते मध्यमकी पदवी पावैं
अधम अनन्य दास बिसरावैं ❋ बिन सेवा तेहि कौन चलावैं
इनके लक्षण कहौं बुझाई ❋ जेहि सुखलहैं न संशय जाई
गूढ़गिरा सुनि गोपिन केरी ❋ कृपासिंधु बोले हँसि हेरी
बिन सेवा जे प्रीति बढ़ावैं ❋ ते सुकृती उत्तम गति पावैं
उभयहिये जहँ स्वारथ जानो ❋ तहां न धर्म सनेह पिछानो
जो सेवालखि अरु बिनसेवा ❋ प्रीति न करै सुनो तिनभेवा
तिनमहँ जानो चारि प्रकारा ❋ आतमराम एक निरधारा
दूसर जानहु पूरण कामा ❋ लहैं वस्तु तद्यपि निष्कामा
तीसरअतिशय मूढ़बखाना ❋ भलअनभलजेहिपरतनजाना
चतुरथ गुरुद्रोही दुखपावै ❋ जो शठ कृत उपकार मिटावै
तूर्य सुनत गोपी मुसक्यानी ❋ समुझिश्याम बोले मृदुबानी
अहोप्रियेतुमजसचितआन्यो ❋ तथा मोहिं कबहूं मतिजान्यो
मोहिं सेवक प्रिय प्राणसमाना ❋ करौं वियोग तासु हित जाना
लखतरहौं मुखरुख जब तबहीं ❋ तुमते उऋण नहीं मैं कबहीं
तजि दुर्जन गृह बन्धन घोरा ❋ कीन्हों आय भजन तुम मोरा
कौन वस्तु असिहै संसारा ❋ जाहि दिये होई उद्धारा

दो० यहि प्रकारके वचन सुनि पुनि गोपी हरषाय ।

लागीं सोइ लीला करन कृष्णसहित सुखपाय ॥
कीन्हीं विविधभांतिते क्रीड़ा * सोइवर्णतमोहिंलागतव्रीड़ा
भैयामिनि अरधावधि केरी * शिथिलभईसबभामिनिफेरी
आईं भवनहोत भिनुसारा * वरणाकछु है चरित अपारा
जो यह चरित सुनै तजिमोहा * लहै सो प्रेमभक्ति संदोहा

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतकृष्णरासलीलावर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपागिरा सुखदानि ।
वरणौं श्रीभागवत की कथा मनोहर जानि ॥
रहसचरितसुनिकह्योनृपश्रुतिअविहितयहबात।
कहीहरी परतिय बरी सत्य सुनौ सोइ तात ॥
समरथको नहिंदोष कछु रविबुध गंग समान ।
जिमिविष कीन्ह्यो पानहर पचैसकत कोउआन ॥

सो० भाववश्य भगवान कृपासिन्धु निष्काम चित ।
तजि कुतर्क मतिमान सुनौचरित हरिकेसुखद ॥

केहूभाँति हरिपद चित लावै * श्याम धाम सो निश्चय पावै
यकदिन सुनो गोपमिलि सर्बा * गये रहे हरपूजन कर्बा
तहां एक आयो चलिनागा * नन्दराय को लीलन लागा
परो शोर हरि मारी लाता * छुवत भयो विद्याधर ताता
करिदण्डवत कथा निजभाखी * गा सुरपुर उर मूरति राखी
एक दिवस मोहन व्रजबाला * करहिंकेलि आवा तेहिकाला
शङ्खचूड़ धनपतिकर दूता * लैभागा यक सखी अधूता
वधकरिहरितेहित्रियसोलीन्ही * छीनसुभगमगरामहि दीन्ही
यकदिन कंस असुर यक प्रेरा * आवा धरिवपु बिरषभ केरा
डहँकत फिरत उड़ावत छारा * पकरि सींग तुरतै प्रभु मारा

पुनि केशी आवा हयरूपा * देखिडरे ब्रजलोग कुरूपा
घरबाहर निकसै कोइ नाहीं * तब गिरिधर आये तेहि पाहीं

दो० लागचलावन चरणदोउ पकरिलीन्ह पग श्याम।
दिहिनि फेंकि शत धनुषपर गिराजाइ जनु धाम॥

पुनि रिसकरि धावा मुखबाई * कृष्ण दीनि निजबाँह चलाई
बाढ़ीभुजा तलफि मरिगयऊ * लखिसबग्वालनकेसुखभयऊ
यक दिन श्याम सखनके सङ्गा * खेलत रहे तहां धरिअङ्गा
बालकबनि व्योमासुर आवा * खेलन लाग न जाने पावा
वृकबनि शिशु यक एक उठाई * सब गिरिगुफा दुराइसि जाई
तब यदुनाथ गये जिय जानी * लरिमारा तुरतै अभिमानी
सुनिसुनिवधसुभटनकरकाना * तबसुभोजपतिअतिअकुलाना
बोला सकल सभाते ऐसा * रिपुवध हित अब करियेकैसा
कहत भये सब मल्ल सँघाता * लेउ बुलाय यहां दोउभ्राता
ऐहैं रङ्गभूमि चलि जबहीं * मल्लयुद्धकरि मारब तबहीं
सुनि बारता भूप मनभाई * तुरत लिहिसि अक्रूर बोलाई
मधुवन जाउ तात ममकामा * लावहु बोलि कृष्ण बलरामा
धनुषयज्ञ देखनके काजा * कह्यो बोलाइनि तुमका राजा
सपदिसाजिनिजस्यन्दनदीन्हा * करिबहुविनयबिदापुनिकीन्हा
कार्तिक वदी त्रयोदशि भोरा * चढ़ि अक्रूर चले व्रजओरा
करत विचार आजु हरिचरणा * देखिहौंजायसकल दुखहरणा
अंकुशकुलिशसहितध्वजरेखा * ध्यावततिन्हैंशम्भुअजशेखा
प्रथम शीश मैं नावब जाई * लँबकि मोहिं उर लेहैं लाई
दहिने मृग विलोकि हरषाने * करत मनोरथ व्रज नियराने
नित्य निरामय निरमल नीका * परपद ते प्रिय त्रिभुवन टीका
उतरपरे रथते तेहिंबारा * लागे लोटन धूरि मँझारा

यामें परे कृष्ण पदपावन ※ निकसे ह्वैहैं धेनुचरावन
भेंटहिं पादप अस जियजानी ※ इनके तर विहरे सुखदानी
चलिनसकततनसुधिनपरेखी ※ दृगजलबहत चहतकबदेखी
प्रेम विचारि कृष्ण बलरामा ※ लै गौवें आये तेहि ठामा
परे चरण अक्रूर निहारी ※ उरलगाइ तबलीन विहारी
रूपनिहारिकितभयोनयना ※ अतिसुखदीनबोलिमृदुबयना
लाये भवन हर्षयुत लीन्हा ※ नंदमहरि बड़ आदर कीन्हा
सेज बिछाइ सुभग बैठाये ※ षटरस भोजन महरि बनाये
जेंवत भये बैठि सब संगा ※ अँचै बहुरि आये परयंगा
बोले तब दम्पति हरषाता ※ गमनकवनहितकीन्ह्योताता
सकुचे कहत रहत नहिं राखा ※ पठवा भूप हमें असभाखा
सहित गोप नन्दहि लैआवो ※ दधि घृत चीर जहांतक पावो
पुनि धनु मख देखन के काजा ※ हरिहलधरहिबोलाइनिराजा
सुनि असवचनबाणसमलागे ※ यशुमतिदीखकालजनुआगे
बोलत भई विकल ह्वै बानी ※ हे अक्रूर भूपमख ठानी
तहां कहो मम बालन केरा ※ कौन काम है जो नृप टेरा
वहां चही भुजबल निज माहीं ※ त्यहि ते मो सुत जैहैं नाहीं
बोले कृष्ण जाब मैं माई ※ धनुषयज्ञ देखी नहिं काई
आवब वेगि बबा के साथा ※ असकहिनिठुरभयेयदुनाथा
विकल महरि बहुवचनबखाने ※ एको अंक रहत नहिं जाने
ब्रजपति ते बोली बिलखाई ※ लायो संग फेरि दुउ भाई
यहिविधिभईसकलनिशिनाशा ※ कृष्णपिताते वचन प्रकाशा
लै दधि दूध चलौ तुम आगे ※ गोपनसहित सखासँगलागे
चले नन्द शकटन चढ़ि गोपा ※ बालवृन्द पथ तकैं सचोपा
कछुक बार बीते दुउ भ्राता ※ रथ पर भे सवार हरषाता

त्यहि क्षण शोक रहा पुरछाई ❋ महरिदशा कछु वरणिनजाई
ब्रजवनितन जबसुना हवाला ❋ धाई सब ह्वै निडर बिहाला
आइ निकट बोलीं कित जाहू ❋ चलहुघूमिजोनिजभलचाहू
सुफलकसुत इनका का कहिये ❋ नीति विचारि मष्ट ह्वै रहिये

दो० कामदार कामी कृपण कन्या मांगन लोय।
ये परपीर न पेखई होनी होय सो होय॥

सुनि गोपिन के वचन विहारी ❋ समयसाध्यसुरमुनिहितकारी
बोले विहँसि वनज कर जोरी ❋ एकअरज अब सुनियेमोरी
धनुषयज्ञ कबहूँ नहिं पेखी ❋ जो तुम कहौ तो आई देखी
सुनि सबके मन करुणा आई ❋ आवहुदेखिकहेनिअकुलाई
चले तुरत रथ हांकि विहारी ❋ सकल चित्र सी रहीं निहारी
पादप ओट होइ रथ जबहीं ❋ एक एक ते भाषैं तबहीं
देखौ वो हरि को रथ जाई ❋ कमलनयन कर पट फहराई
जब नभ गरद परी नहिं देखी ❋ फिरींसकलमनशोचविशेखी
पुनिपुनिनिरखहिंदिशिवनमाली ❋ कहवृषभानुसुतासुनुआली

कवित्त ॥ पीछेहिक चितवत नयनमम बारबार पाछे न परत पग काहि मन दीजिये। पवन न भई हो पताकहू अवर नाहिं रथकेनभईअंग कैसीअबकीजिये॥ धूरिहू न भईहरित नलागिजातीसंगखगहू न भई जोउड़ायदर्शलीजिये। आई बिलखात जिमि माखीमधुजातछोड़ि जियोनहिंजात पैदरश आशजीजिये॥

गोपिन की कछु विरह बखानी ❋ अबसुफलककीसुनहुकहानी
कृष्णहिंलखियुवतिनआधीना ❋ तब अक्रूर विचारहि कीन्हा
इन्हैं सुन्यो हम हैं अवतारा ❋ गोपिन के वश निपट निहारा
यहि प्रकार की संशय आनी ❋ जानि गये प्रभु अन्तर्यामी

लागे जब अक्रूर नहाई * यमुनामें निज मूर्त्ति दिखाई
जल भीतर जब डुब्बीमारी * देखिपरे तहँ रामबिहारी
शिरनिकारि पुनि रथपर पेखे * कैयोबार यही विधि देखे
भये निमग्न द्वऊ करजोरी * दिव्य दरश तहँ दीख बहोरी
सेवत सुर मुनि सिद्ध विधाता * लागे विनय करन पुलकाता
नौमि कृष्ण अद्वय अविनासी * व्यापकब्रह्म सकल घटवासी
माया व्यक्त विरज वागीशा * श्रुतिकह सर्वपाणिपदशीशा
यहिविधिकीन्हविनयबहुजबहीं * भयेअदृश्यबहुरिहरितबहीं
व्याकुल ह्वै आये रथतीरा * कहहरि कियो स्नानगँभीरा
तबसुफलकसुतगहिदोउचरणा * बोलेप्रभु मैं तुम्हरी शरणा
तव प्रभाव प्रथमैं नहिं जाना * तेहिते मैं अभाव मन आना
करत नाथ तुम लीला कैसे * बहुविधि स्वांग सलूका जैसे
तबप्रभुदान पतिहिसमुझावा * चलेआय मधुपुर नियरावा
सुफलक सुत बोले करजोरे * प्रथमैं चलौ नाथ गृह मोरे
आउब एक दिवस तव धामा * असकहिउतरिपरेत्यहिठामा
सहित समाज रहे पुरबासा * तेहिदिनतहांभईनिशिनासा

दो० भोर भये प्रभु नन्द ते बोले प्रेम जनाय।
मधुपुरआई देखि अब सखन सहित दोउभाय॥

आवहु देखि तात हरुगाई * काहू ते जनि कर्‌यो लड़ाई
आयसुपाय चले हरखाता * श्रीदामादि सखा सँगभ्राता
नवल नारि समपुरी निहारी * भयेमुदित नखशिखश्रृंगारी
जात रजक ते कहा कन्हाई * देउ हमैं वर पट पहिराई
बोला निज मुख देखौ नीरा * भूपवसन तुम जाति अहीरा
सुनिबलभद्र विघन करिडारा * पहिरिनिपटसबनिजअनुहारा
दरजी बायक नाम विलोकी * वसनसाजितनभयोअशोकी

आगे मिला सुदामा माली * रचिपहिरायसि हारसुजाली
लीन्हिसिमांगिकमलपदप्रेमा * ज्ञान विशुद्ध भक्ति दृढ़ नेमा
आगे लखी कूबरी जाता * कंसहि खौर लगावन गाता
कहत भये तेहिते यदुराई * देहु हमारे खवरि लगाई
छकितभईछविदेखिगोपालहि * निरभयखवरिलगायसिभालहि
तब मोहन पग ते पग चापी * चिबुकसुकरगहिऊपरआपी
मिटिगा तुरतहि कूबर तासू * भयोदिव्यतनविमलप्रकासू
बोली चलहुनाथ मम गेहा * रौरे योग्य भयो वपु एहा
पूरण प्रीति देखि कर जोरे * कह्यो अपरदिन आउबतोरे
आगे चले नगर की नारी * अवलोकहिंछविचढ़ीअटारी
भूषणपट पहिरे विपरीता * कोइअँगअघटकोइअँगरीता
एक एक ते प्रमुदित कहई * ये देखो यशुमति सुत अहई
इनसमसुभग न कोउ संसारा * धनिगोपीसँगकिहिनिविहारा
कोइ वसुदेव देवकी केरे * कहत दुरायनि यशुमति सेरे
चहुँविधिविधिपूजीनिजइच्छा * श्रवणचित्रअरुस्वप्नप्रतिच्छा
एक कहैं अब कंस कुचाली * मल्लयुद्धहितबोलिसिआली
कहँ मुष्टिक चाणूर विशाला * कहँ ये मृदुल नन्द के लाला
अपर कहैं बल में अतिभारी * विपुल असुर इन डारे मारी
भले प्राण कंसहु के हरहीं * आपुराज्य मधुपुरकी करहीं
यहिविधि आपुस में बतलाहीं * बरसैं सुमन जहां चलिजाहीं
कोइ लच्चण नायक के तूला * दच्चिण धृष्ट संग अनुकूला
द्वादश हाव भाव कोइ करहीं * निजस्वरूपकोइरतिमदहरहीं
सखा जो रसिकशिरोमणिकेरे * निरखहिंतियन भांतिबहुतेरे

कुं० कोइ स्वकीय परकीय कोइ कोइ सामान्यानारि ।
वयःसंधि मुग्धा कोई मध्या, प्रौढ़ा चारि ॥

मध्या प्रौढ़ा चारि कोई श्रेष्ठा अनश्रेष्ठा ।
कोई ज्ञाताज्ञात कोई ज्येष्ठा आज्येष्ठा ॥
कोइ धीरा आधीरलक्षिता कोइ गुप्तायन ।
मुदित विदग्धाकोइ कोइकुलटाअनुसायन ॥
कोइउत्कास्वाधीन बासशय्या कोइदुखिता ।
कलहन्तरिताकोइ विप्रलब्धा कोइरुखिता ॥
कोइ खंडिता भिसारिका आगतपतिकाहोइ ।
प्रोषित पतिका धीनपति गर्वित देखी कोइ ॥

यहिविधिलखियुवतिनकेलच्चण ❋ आपस में बतलाइप्रतच्चण
रंगभूमि आये यदुराया ❋ शक्र धनुषगहि तोरि बहाया
मारि निकारे रहे रखवारे ❋ आये बहुरि टिके जहँ सारे
नन्द गोद लै अशन कराये ❋ पुनिसुनिदोउभाइनसमुझाये

दो० करो अचगरी मति यहां निरदै नृप को गाउँ ।
भले तात रघुनाथभणि मुख मन औरै दाउँ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतकृष्णमथुराआगमनवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं दशमस्कन्धकी केशव कथा बखानि ॥
रजक निपातन धनुदलन असुर शरण बरजोर ।
सुनि जहँ तहँ रघुनाथ जन परो नगर में शोर ॥

यह सब खबरि कंस जब पाई ❋ तबतौअधिक उठाअकुलाई
लीन्हेसि बोलि मल्ल बलभूरी ❋ आवैं तब तुम डारयो चूरी
द्वार कुबलया गज ठढ़िआवा ❋ अयुत नागबल तामें पावा
कहिसि महावत ते गोहराई ❋ प्रविशत तैं डारे चपवाई
असुर सकल बैठाय ठिकाने ❋ आपु बैठ उत्तम मंचाने

तब बोलवाइसि राम गोपालू * नन्द सहित सब आवैंग्वालू
समाचार सुनि सकल सिधारे * आये रंगभूमि के द्वारे
बोले कृष्ण टारिले पीला * सुनितेहि दृष्टि सामने ढीला
लागेताहि खेलावन दोऊ * दूरिहि ते देखत सब कोऊ
कबहूं तर ऊपर चलिजावैं * कबहुँक पाछे ताहि हटावैं
एकबार हनि मुष्टिक मारा * गिराअवनिकरिघोरचिकारा
मस्तक विथकि हंसगतभयऊ * राम उपारि एक रद लयऊ
रंगअवनि तब भये सुभेखा * जेहिजसभाव तैसातिनदेखा
मल्लन मल्ल तियन रसरूपा * गोपन सजन नृपन नरभूपा
पितृन शिशु कोविदन विराटा * भोजराज निजु कालहिडाटा
योगिनतत्त्व वैष्णवन इष्टा * यामें कही भावना श्रिष्टा
बैठे सकल शुभासन पाई * बोला तब मुष्टिक ढिगआई
हे बलकृष्ण अखाड़े आवो * भूपहि निज करतब देखरावो
ममतव धर्म यहै है ताता * भूप प्रसन्न करी सोइ बाता
बोले प्रभु जानत सब कोई * मल्ल युद्ध बिन मेर न होई
जो विचार बिन भूप करावै * अवशिराज्यताकी मिटिजावै
देखै ताहि महा अघ लागै * देइ छोड़ाइ न तौ उठि भागै
हम बालक तुम मेरु समाना * कुश्ती केर मर्म तवजाना
पुनि गरीब गो चारन हारे * केहिविधि लरिये संगतुम्हारे
हमैं कहा भटकावत इतही * खेलत रहत पुलिन में नितही
सभा बीच काहे कदराता * ठाढ़ भये तब दूनौ भ्राता
हरि चाणूर भिरे भुज ठोंकी * मुष्टिक संग राम रिस रोकी
लागे लरन पेंच करि नाना * लचकतकटिहरिपदमुरझाना
अति सुकुमार देखि पुरनारी * कंसहि देहिं अनेकन गारी
हाय दुष्ट के दया न आवत * मृग सिंहनकर युद्ध करावत

सभामध्य ऐसो कोइ नाहीं ❋ समुझावै कंसहि छुटिजाहीं
इतने माहिं कृष्ण चाणूरहि ❋ पटकिदीन महि मरा हजूरहि
देखि राम मुष्टिकहि पछारा ❋ शल तोशल तब भये तयारा
पटकिनितुरत तिन्हैंतेहिलागे ❋ अपरमल्ल सब देखत भागे
बोला कंस निरख भयपाई ❋ करहु नगर बाहर दोउभाई

दो० नंदसंग जे गोप हैं लूटि लेउ तुम झारि।
उग्रसेन वसुदेव को अबहीं डारो मारि॥

सुनत कृष्ण ढिग पहुँचेजाई ❋ पकरिशिखा महिदीनगिराई
काढ़े प्राण घसीट घसीटी ❋ डारे सकल निशाचर पीटी
लखि सुर हर्षि सुमन वरषाये ❋ कढ़िलावत यमुनातट ल्याये
तहँ विश्रामकीन मन भावा ❋ सोइ विश्रामघाट कहवावा
पुनि पुरआइ पिता अरुनाना ❋ छोरि वन्दिते अतिसनमाना
आपु आपु को धृगता दीन्हीं ❋ मात पिताकी सेवा कीन्हीं
सुनि वसुदेव देवकी हरषे ❋ गोदलगाइ सकलसुख करषे
दीन्हीं उग्रै राज बहोरी ❋ तब यदुपति बोले करजोरी
कीजै राज्य कृपाकरि आपा ❋ हमरे है ययाति को शापा
तरुणअवस्था पितहिन दयऊ ❋ तेहितेयदुकुलमहिबिनभयऊ
कीजै तुम निधरक सुखभारी ❋ मैं लेहौं सब काम सँभारी
बहुरि नन्द ते बोले आई ❋ ग्वालनसहितआपुव्रजजाई
हम कछुदिन रहिकै यहिग्रामा ❋ आवब चले तुम्हारे धामा
निजसुतसरिस हमैं तुमपाला ❋ तेहितेनहिंबिसरबतिहुँकाला
जननी ते कहियो परनामा ❋ बिसरिजायजनिगिरिधररामा
हमतिनको बहुभांतिखिझावा ❋ उनकेकबहुँ अभाव न आवा
गोपिन ते कहियो कुशलाता ❋ कछु दिन में ऐहैं दोउभ्राता
सुनिअसवचन नन्ददुखपावा ❋ ठगिसे रहे वचन नहिं आवा

श्रीदामा बोल्यो तब बानी ❋ कृष्ण कहा तव बुद्धि हेरानी
अपने मात पिता को त्यागी ❋ परघर रहियो रोटिन लागी
कौन वस्तु कमती घर तेरे ❋ जो नौकरी करौ नृप केरे
धरवैहौ निज पितुकर नामा ❋ तेहिते चलौ आपने धामा
भल कीन्हो जो कंसै मारेउ ❋ उग्रसेन कर काज विचारेउ
राज्य पराई देखि लोभान्यो ❋ यहीएक अनरथ मनआन्यो
जो सुख है हमरे ब्रज माहीं ❋ सो सुख तीनलोक में नाहीं
तन धन जाइ जाइ बरुप्राना ❋ तबहूं ह्वै परवश नहिं रहना
बोले कृष्ण तात तुम भाखी ❋ सोइ सत्य हम हिरदे राखी
पर यह राज्य न है परकेरी ❋ सब प्रकार तुम जान्यो मेरी
आगेचलहु सकल तुम आछे ❋ सहितराम हम आवत पाछे
सुनत गोप व्याकुल भये कैसे ❋ गइमणिछीनिफणिककीजैसे
यद्यपि घटपट बहु पहिराये ❋ तदपि विरहवश एक न भाये
तब प्रभुकरि उच्चाटन दीन्हें ❋ चलेसकलमन आनँदकीन्हें
आये जब वृन्दावन माहीं ❋ यशुमतिदीखकान्हबलनाहीं
लागी करन विलाप घनेरा ❋ नन्दकह्यो कछु जोर न मेरा
जोजो यदुपति कहा सो गावा ❋ तदपि न मनमें धीरजआवा

दो० यहां कृष्ण बलराम कहँ यदुपति दीन जनेउ ।
पुनि पठये दोउ पढ़न को पुर्य्यवन्तिका भेउ ॥

आये चलि संदीपन गेहा ❋ लगे पढ़ावन सहित सनेहा
प्रथम वेद विधि दीन विचारी ❋ पुनि पढ़ाय विद्या दशचारी

कुं० ब्रह्मज्ञान यक जानिये उभय रसायन कूर्य ।
तीसर स्वर धारण निपुण वेद पाठ है तूर्य ॥
वेदपाठ है तूर्य पंच ज्योतिष पहिचानो ।
छठी कहत व्याकरण धनुष विधि सप्तम जानो ॥

जानो वसु जलतरण नवम वैद्यक दिशिकृषिपर।
रुद्र कोक रवि वाजिचढ़न तेरहीं जुन्नृत्यकर॥
बोध चतुरई चतुरदश विद्या पाय अशर्म।
पढ़ी कृष्ण रघुनाथ अब कहत कला विधिब्रह्म॥

चामरछंद॥ वाद्यगीतनृत्यनाट्यलेखवज्रवेधनं। तंदुला मेषालिरंगकर्षि पर्षिकंधनं॥ पुष्पतल्प गंध्रकल्प दंत चपल रागजू। दामधर्षि सेजकर्णिवारिवाद्यवागजू॥ नीरघातचित्र जातमालइंद्रजालजू। पट्टपानिभूषणानिग्रन्थकीटभालजू॥ पाककार कौंचुमार बीनवेणुयोगजू। कर्णवेधनी शृंगार पानरस प्रयोगजू॥ सूचिकर्म धातुमर्म सूत्रकीड़नोलिजू। वाकदत्त कवललत्त दुष्टवंचिकालिजू॥ ग्रन्थपाठ छिन्नकाठ नृत्यज्ञान दायकं। काव्यपूरकंनेवार रज्जुरीतिनायकं॥ तर्क रीति वास्तुप्रीति स्वर्णकारकारजू। रंगज्ञान वृत्तवान मेखमुर्गमारजू॥ कीरशालिका प्रलाप शत्रुधी उचाटनं। केशमार्जनं मकर्ष मुष्टिबरतुडाटनं॥ देखभाषिनी मलेच्छ फूलसंदनानिको। यंत्रमंत्रका विरोध मानसी पिछानिको॥ पिंगला विधानकोश शोसकार्यसाधनं। छलउपाय रत्नकाय जयददेव राधनं॥ द्यूतखेल बालभेल और वैरतोषनं। वासदादिकृत विचार सर्वसार कोशनं॥ चौंसठेकलाकही मुनीशआदि मासजू। सोलिखी विश्रामसिंधु मध्यदेवदासजू॥

चौंसठि दिनमें विद्यासारी ✽ पढ़त भये श्रीकृष्ण मुरारी
विद्या निधि विद्या अभिलाखी ✽ संप्रदायकी सींवा राखी
बिदा होत बोले हरियेहू ✽ गुरुदक्षिणा मांगि प्रभु लेहू
कहत भई तब गुरुतिय बानी ✽ पुत्र हमार दीजिये आनी
बूड़चो सुनि सागरमें गयऊ ✽ पंचजन्य कहँ मारत भयऊ

मिला न तब कीन्हों पछितावा ❋ चले बहुरि यमपुरमें पावा
दीन आइ सोइ बालक श्यामा ❋ लहि अशीश आये निज धामा
भक्तवसल त्रिभुवनद्युतिदीपति ❋ सबउर अंतर्यामी श्रीपति
एक दिवस कुबिजाके गयऊ ❋ अति अद्भुत गृह देखत भयऊ
विविध वस्तु संयुक्त सोहावन ❋ धूप दीप मंडित मन भावन
चंद वसन उपधान विशाला ❋ पानदान पुनि विपुल मसाला
श्यामहिं देखि उठी हरषाई ❋ सखिन सहित उठि सेज हि लाई
आपु सुतन पट भूषण सजिकै ❋ तकत खड़ी षोड़श विधि भजिकै
प्रथम समागम समुझि लजानी ❋ अपर अली गहि प्रभु पहँ आनी
प्रमुदित करि तेहि सँग भगवाना ❋ रमे कृपाकरि कृपानिधाना
कोककलाकरि सरस विहारी ❋ कामतपनि ताकेरि निवारी
पुनि प्रसन्न ह्वै वचन उचारे ❋ रमौ कछुकदिन संग हमारे
प्रभु प्रेमाशिक रूप न गुनके ❋ वचन विचारि प्रीतियुत उनके
एवमस्तु कहि निज गृह आये ❋ उद्धव सहित तस्य गुण गाये
शूर्पणखा रामहिं लखि मोही ❋ कामसहित कुबरी भइ सोही
कौनेउँ भाव प्रभुहि जो ध्यावै ❋ लहै सही फल मृषा न जावै

दो० जो कछु लीला जगतमें सो सब रघुपति केरि।
कला अंशकहुँ स्वयं वपु धारि करत हियहेरि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतकृष्णखण्डकुबरीगृहआगमनो
नामाष्टमोऽध्यायः ८॥

दो० सुमिरि रामसिय संतगुरु गणप गिरा सुखदानि।
भँवरगीत हरिमीत मत शुक्रकृत कहत बखानि॥

हे नृप जानि यदुनमें श्रेष्ठा ❋ सखा श्यामको भाग्य बरेष्ठा
शिष्य बृहस्पतिको बड़ज्ञानी ❋ कृपासिंधु व्रजकी सुधि आनी

तिन उद्धव कहँ लीन बोलाई * ज्ञानमान सोवन मनआई
बोले तात जाहु ब्रज माहीं * लावहु खबरि मिली सुधि नाहीं
नंद बबाके गहियो पाऊं * बिसरि जाइँ जनि हमरो नाऊं
पालागन मैया ते कहियो * कृपाकरत बलकन पर रहियो
गोपिनते सुठि योग सँदेशू * वरणयो तुमतजि सकल अँदेशू
जोवै कहैं वचन सुनि सहवी * करि विवाद पुनि जरीन दहवी
चरणपरशि चढ़ि रथहि सिधाये * ब्रजरवि अस्त समय चलि आये
रजमंडितपुर सुरभिन पाछे * वृषडोलत खग बोलत आछे
रामकृष्ण गुणगावैं पुरजन * धूपदीप करिपूरित लखिवन
प्रमुदित ह्वै प्रविशे पुरमाहीं * खबरि पाइ निज पुत्रनपाहीं
पुर नरनारि परम सुखमाना * रामकृष्ण आवतहैं जाना
वैसै स्यन्दन वृषभ विशाला * वैसै मुकुट पीतपट माला
निकट जाइ उद्धव को चीन्हा * हरष शोक मनमें तब कीन्हा
नन्दपवँरि पहुँचे सुनि जबहीं * निकसि महरि आईं ढिग तबहीं
श्यामसखा लखि चरणपखारे * सुन्दर अष्ट शिला बैठारे
मुदित बनाय अशन करवाये * अचवन करि जब सेज हिलाये
तब यशुमति बोली जल डारी * हैं नीके बल कुंजविहारी
पालिपोषि हम कीन्ह बड़ेरे * बाजत पुत्र देवकी केरे
जबते गये सुधिहु नहिं लीन्हीं * धाइउके नाते तजि दीन्हीं
लीन्हें छीनि प्राण वसुदेऊ * तबते तात न आने केऊ
हमहीं जाइ तासु घर रहतीं * दासी ह्वै सुख देखन चहतीं
वैरीभये कुटुम्बी मेरे * जानन दीन्हि नि निरखिनि वेरे
शूल होत नवनीत निहारी * मोहनके मुख योग विचारी
प्राते खात रहे दधि रोटी * को अब देत होइगो ओटी
कीन्हे चरित लाल मन जोई * सुमिरि सुमिरि अब आवत रोई

निशिननींददिनलगतनभूखा ❋ हंतबदन ब्रजपति कररूखा
गौन स्रवैंपय तृणनहिं चरहीं ❋ बछरनसहित सकलहुंकरहीं
बालकतरुण जरठ सबलोगा ❋ भयेक्षीणतनु श्याम वियोगा
हमआपनिकिमि दशाबखानी ❋ दीन्होकाढ़िनयन निजपानी
ऐसे दुख देने को रहेऊ ❋ तो कत दावाते निरबहेऊ
इन्द्र कोपते नाहक राखा ❋ गिरिहि छांड़ि देतेकरिमाखा
कठिन शोक निशिवासरकेरा ❋ दीन लालकरि मधुपुर डेरा
जीवत सकल दरशके लागे ❋ पुनि कबहूं देखब हरिआगे
कह्यो तात कब ऐहैं भैया ❋ कब मोहिं गोहरैहैं करि मैया
कबगहिकै दधि मथत मथानी ❋ कब मँगिहैं माखन हठठानी
एक दिवसमैं रिसवश बांधा ❋ सोसुधिकरिदुखहोतअगाधा
कह्यो जाइ आवैं घर अपने ❋ अब कबहूं नहिं बांधब सपने
माखन खात न बरजबरोसी ❋ उरहन देत न सुनब परोसी
जलसुतारिजापति करजाना ❋ तासु मातु सँगपठवब नाना
मैं जानत सुख तिन्हैं न होई ❋ हठिराखत ह्वैहैं सब कोई
काहकरों परवशभे ताता ❋ कहुँ कहुँ गुणहुँ होतदुखदाता
शुकसारिक जो पढ़ते नाहीं ❋ तौ कत परत पींजरे माहीं
शब्दवेध शर जो न चलौते ❋ अन्ध शाप कत दशरथ पौते
रविशशिजोनहिंकरतप्रकाशा ❋ तौसन्ततकतफिरत अकाशा
जो न होत रघुपति के दाया ❋ तौवनदुखकतसहत निकाया
जो न लालको आवत जान्यो ❋ तब देवै ते वचन बखान्यो
जो रखतीहौ हम पर नेहू ❋ तौ सुत पठइ हमारे देहू
जो कोइ कोटिन लाड़ लड़ावै ❋ तदपि लाल हमते सचुपावै
तुम्हरे पुत्र सही सुनुमाई ❋ एकबार मुखजाइँ देखाई
यहिविधिवचनकहतबहुभाये ❋ तेहिक्षण नंदखारिकते आये

भेंटे उठि उद्धव पुलकाई * लीन्हें निजआसन बैठाई
लागे बूझन कुशल सप्रीके * हैं वसुदेव देवकी नीके
नीके रहत कृष्ण बलरामा * कछुआगमनकहिनिनिजधामा
तोतलवचन बोलि सुखलागी * बड़े भये सुखदीन्हिनित्यागी
हमहूंते कछु बना न जाना * जगतपिता बालक करिमाना
कोमलचरण खरकअधिकाई * तहँ उनते हम गो चरवाई
उन वाहू में करेउ न रोषा * गुणगहिजुखमछिपाये दोषा
हरिकी बात हरीते बनई * थोरेहि में जरिउठते मनई

दो० नामलेइ जेहि युवतिको नहिं सुहाइ सुनितासु ।
रामजानकी के कहे तुष्टत तेहिपर आसु ॥

यहि विधिनंदकरत पछितावा * तब उद्धव असवचनसुनावा
अहो नन्दयशुमति तुम दोऊ * शील सुकृतकी मूरतिहोऊ
क्योंकि राम कृष्णभगवन्ता * प्रणतपाल दुष्टनके हन्ता
तिनकेचरणकमल चितलायो * यहितेअधिकनकछुश्रुतिगायो
हरिहिं आपु सुमिरतहौ जैसे * तन मन धन वारणकरि तैसे
तुमते तात न बाहर वोऊ * बेचौ जहां बिकें तहँ दोऊ
जब तब बात तुम्हारी गावें * कहत कहत गदगद ह्वै जावें
चलत कहिनिपालागनबाता * उऋणनहम तुमते पितुमाता
प्रतिपालन तुम कीन हमारा * होइहै युग युग सुयशतुम्हारा
देखौ त्रिभुवन पति गिरिधारी * चाहत करुणादृष्टि तुम्हारी
बातन होइ बोध केहि भाती * जाको रहै सकल सुखजाती
हरिगुण कहतभईनिशिनासा * बोलेद्विज अलिलीनसुबासा
दीप जोरिगृह गोप लुगाई * लगींमथन दधिहरिगुणगाई

दो० तब उद्धव वृषभानुपुर चले रजायसु पाइ।
मारगमें अवलोकिरथ मिलीं गोपिका आइ ॥

गिरिधरकी अनुहारि निहारी * बोलीं तब गोपन की बारी
आपगवन इत कितते कीन्हों * जानिपरत मोहन सुधिलीन्हों
बोले तब उद्धव हम आये * मधुपुरते ब्रजनाथ पठाये
परम मित्रहैं कृष्ण हमारे * हमहैं उनके बहुत पियारे
सुनि सब बैठिगईं तेहिठौरा * बोलींकहौ कान्हकर ब्यौरा
उद्धव नन्दनँदन हैं नीके * हम सबहिनके जीवनजीके
कबअइहैंकछुकहिनि बखानी * शोभाशील गुणनकी खानी
गिरिअरिसुतरिपुपुरी बिताई * अजहूं नहिं आये सुखदाई
उद्धव हमसब श्याम विहीना * बिकलरहतजिमिजलबिन मीना
निशिननींददिनअशननभावैं * नयनपलकसम कलप बितावैं
हरिबिन सेज भयानक लागै * कारागार सरिस गृह जागै
शीतल मन्दसुगन्धित बाई * लागत मनहुं अग्नितेआई
विरहवह्निसब अंग जरावत * जरिनजातलोचनजलनावत
हमते श्याम करी है ऐसे * बधिक करैं पत्तिनते जैसे
प्रथमै प्रीति आपही जोरी * पाछे नाव मांझ सरि बोरी
तुम उद्धव आये भलकीन्ह्यो * हमसबकाअवलम्बन दीन्ह्यो
सुनियत रहै सन्त परमारथ * करत रहतसोइदीखयथारथ

दो० सजन स्वारथी नरनकी स्वारथही तकप्रीति।
खगमृगजारअसारलखितजतसुथलसखिरीति॥
बहुरंगीजित तितहिसुख यकअंगीकर अन्त।
जिमिगणिकानिधरकरहत दहतसतीबिनकन्त॥

तिमि उद्धव हमहरिको जानैं * श्याम चहै मानैं नहिंमानैं
सुनिउद्धव गोपिन की बानी * योगसँदेश न सकत बखानी
सुफलकसुतै परी कठिनाई * उत आज्ञा इत प्रेम अघाई
धरिधीरज पुनि काढ़ी पाती * बोलेबांचि जुड़ावो छाती

हमते नाहिंन बनी बनाई ※ चितवतगलीछुवतजरिजाई
आपु कृपाकरिबांचि सुनावो ※ श्याममुखामृतवचनसुनावो
सुनि उद्धव तब बांचनलागे ※ लागींसुनन बैठि सब आगे
गोपीसकल सुनौ मम वचना ※ भूलहुमति मायाकी रचना
जो कछु गोगोचर में आवै ※ मायाकृत सो थिर न रहावै
छांड़ि देहु तेहि ते असनाई ※ निरगुणब्रह्म जपहु मनलाई
पूरण है सब घट में सोई ※ कौनसे ठौर जहां नहिंहोई
पांच पचीस तीन घटतेरे ※ पृथकरहत पुनिविमलबसेरे
सो हमतुम तुमसे अरु मोसे ※ क्षणहूमात्र वियोग न होसे
आत्म आत्मसे हमप्रकटावैं ※ पालनकरि पुनि नाशकरावैं
रचत सकलनिजमाया जाते ※ कार्य अन्त पुनि कारणताते
कारज तजि कारण मन लावो ※ जेहितेसकल परमपद पावो
निरमल नीर भरातव नेरे ※ मरत पियासन तेहिबिनहेरे
तजि कुसंग एकान्तपसीजे ※ द्वादश संयम नियमकरीजे
सूक्षमभोजन स्वल्प पियासा ※ करहुत्यागिवसुभोगविलासा
पद्मासननिरमलकरि मनका ※ शोधतरहौ सदानिजतनका
पूरक कुम्भक रेचक करहू ※ उलटिध्यान त्रिकुटीकोधरहू
सोहंशब्दमाहिं चित राखो ※ मनतेसकल कामना नाखो
दशप्रकारअनहद सुनिपावो ※ कौतुकविविधदेखि छकिजावो
यहि विधियोगज्ञानजबगावा ※ तबगोपिनअधिकोदुखपावा

दो॰ यथा वैद्य औषध करै बिन पहिंचाने रोग।
सो औषध लागै नहीं उलटि बढ़ै तेहि शोग॥
तेहि अवसर इक मधुप तहँ आयो करिगुंजार।
बैठिगयो राधिका के चरण कमल लखि सार॥

तब सब गोपी मधुपरढारी ※ लगीं कहन उद्धव ते सारी

मधुकर तुम पगते उड़ि जाहू * श्याम शरीर निठुरसब आहू
पहुँचत तहां फूल जहँफूले * सूखी लतन जातनहिं भूले
रूप रहासि सब गिरिधर केरी * है रौरे में गुप्त न हेरी
आई बकी पियावन चीरा * डारिनि ताहि मारिबलबीरा
शूर्पणखा रघुपति पहँआई * नाककानतेहिलिहिनिकटाई
बलिबावनहिं सुसर्वसु दीन्हा * तबहुँ तासु तनु बंधनकीन्हा
ब्याहुकिहिनिहरिहरकागांसी * पुनिआपुहि मिलिठानिनिहांसी
कोयल सुतहिंकागप्रतिपालै * ऋतुवसंततेहितजिउड़िचालै
उरगैदूध प्रीति ते प्यावै * उलटि अमीसो विषह्वैजावै
केचुलित्यागिनसुधिफिरिलीन्हीं * तैसे श्यामहमैंतजिदीन्हीं
यामें भूल न उनकी भारी * कारेनकी करनी है कारी
परकट जिनकीन्हे युगताता * क्यों नकहैं यहिविधिकीबाता
तथा तुमहुँकछुअघटितनाहीं * रूपछुड़ाय गहावत छाहीं
उद्धव श्यामहिंलाजनआवत * तेहिपर सुनियतदत्तकहावत
हमका ज्ञानयोग लिखिभेजा * आपुरहत कुबरी कीसेजा
जिमिगणिकानिजकसबै ठानै * औरेन ते वैराग बखानै
तेहिके वचन कहौ कोमानै * तैसे श्याम देतहैं ज्ञानै
यकतौ अन्ध कूपमें डारी * हेरत पन्थ न परत निहारी
तेहिपर तुम निजज्ञानसुनावा * मानहु मुख ऊपरते तावा
उद्धव तुमहौ चतुर सुज्ञानी * देश काल लखिकहियेबानी
जाकेमलै अनल समतावै * तेहिके कहा गरल लगवावै
हमबनितन को चाहियभोगा * तिनकाआयसिखावतयोगा
धरत मरालन सुतशिर मेरू * जिनते चलै न पग भरिसेरू
उद्धव कछु तुम्हरी न लगाई * संगति केर दोष लागिजाई
रसलम्पट गिरिधरन लवारा * क्योंन होउतिन संगखुवारा

कुं० लम्पट की संगतिकिहे द्वादश गुण नशिजात।
प्रथमसत्य पुनि स्वच्छता अरु संयमकी बात॥
अरु संयमकी बात मौन व्रत माया जानौ।
शमदमदया सुबुद्धि सहन शीलता पिछानौ॥
प्रभुता यश नाहिंरहत बसतहिरदयमहँलम्पट।
कपिल वचनबुधजान करतनाहिं संगतिलम्पट॥

दो० जोकहो ऐसे पुरुषते क्यों तुम कीन्ह्यों प्रीति।
कर्मलिखा तेहिकाकरै जरै शलभ की रीति॥
प्रेमहिं मरन न लखिपरै करै हरषि तनु अर्प।
जिमिगजकुरँगपतंगअलिझषपिकपरिवासर्प॥
मित्रहि चैन न मित्र बिन कैसोकरै बिगार।
जिमिगृहजारै अग्निपुनि होत अग्निकोप्यार॥

बोली अपरसखी सुनि लेहू * नाहक दोष श्यामकर देहू
उन में कछु लम्पटता नाहीं * प्रीतिपाय परवशह्वै जाहीं
तदपि रहत निरलिप्तविशेखा * पथ लहियमुना में तुम देखा
जो कहोअबकाप्रीतिनहममें * रहतनकोउइकरस हरदममें
जो कोइहै प्रभुता श्रीवानै * ते परवेदन सुनै न जानै
देखौ शीशधरे महि भारी * सोये तेहि पर जाय मुरारी
अब नँदनंद भये महराजा * जोकछुकरैं उन्हैं सब छाजा
दिनप्रातिपावकसरिससुहावन * बोलीअपरसखी यहि भावन
प्रभुताकी कछुलाग न होई * चेरी संग गई मति खोई
कैसो चतुर होइ किन कोऊ * नीचसंगकरि बिगरत सोऊ
परम प्रवीण केकयी रानी * चेरि संग ते मति बौरानी
गृहजलगदपदपवन समाना * पाइकुयोग न को बिनशाना
उद्धव ब्रह्म सबै तुम कहेऊ * अबहीं भयो कि आगेरहेऊ

कुं० ऊधो जबजब पापते उठति धरणिअकुलाइ ।
तबतबक्योंसुरमुनिसकलहरि हि पुकारत जाइ ॥
हरि हि पुकारतजाइ आपुकिन धरिधरिरूपा ।
हरैं विश्व को भार होइँ जो ब्रह्म स्वरूपा ॥
तेहि ते वाद विवाद त्यागि कहिये पथ सूधो ।
बिन प्रभुसेवकभाव तरयो भवनिधि को ऊधो ॥
माया वाद मदांधकरि भूषित भो जेहिज्ञान ।
सोहंअस्मि ब्रह्म सो पुनिपुनि करत बखान ॥
पुनिपुनि करत बखान कुत्र ऐश्वर्य्य मतीते ।
कुत विभुता कुत भूमि कुत्र सरवज्ञ गतीते ॥
तेहिते ब्रह्म न जीव अहौ तुम सुखवशकाया ।
बुन्द कहै मैं सिन्धुहोइ किमि बिन हरिमाया ॥
दो० जो कहौ पृथ्वी ब्रह्मसम घटसम जीव अनेक ।
ताहि लखौ वा ना लखौ अन्त होव सब एक ॥
एक भयो तो क्याभयो पुनि नहिं गदीकुखाल ।
तेहिते मायावाद तजि भजो नन्दको लाल ॥
उद्धव तस्कर कयद में परो कहै हौं भूप ।
तौ का छूटै करम वश त्यों तुम ब्रह्म स्वरूप ॥
ईश्वर आप स्वतंत्र है जित चाहै तित जाइ ।
सर्व शक्ति जाके बिषे भाव सरिस दरशाइ ॥
सोहं सोहं जपत हैं जहँ तक अग जगजीव ।
राम कृष्ण सुमिरे विना लहै न कोई पीव ॥
उद्धव तुम्हरी बातइमि जिमि रोगीहितमाड़ ।
जो जेंवत है सेर भरि सो किमि होवे चाड़ ॥
कर्म योग तबतक करै जबतक प्रेम न होइ ।

प्रेमपाठ पढ़ि क्योंपढ़ै कका किकी सोइ ॥
उद्धव तुम्हरी बात सुनि भयो न हमरे रोष ।
अपनोइ खोटो दाम तौ परखैये का दोष ॥

बोली अपर सुनाहम ऐसा * कहत श्याम हैं व्रजधौं कैसा
गोपिनको सुनि नाम लजाहीं * चित्रधेनुलखिसकुचतआहीं
भूलिगई माखन की चोरी * खातरहैं घर सकल ढिंढोरी
जो यह बातरहै मन माहीं * तौकत/किहिनिरहसहमपाहीं
प्रथमै ज्ञान विराग सिखावत * जिहिते कछु मनहूं मेंआवत
जब हमरँगी श्याम के रंगा * तबलिखिपठवाज्ञानप्रसंगा
मधुकरको तजि सुरसरिवारी * कूप खोदि जलपीवै खारी
गोतजि आक दुहै को बौरा * कोतजि पारस माँगै कौरा
कोतजिश्यामसगुणमणिचारू * खनतफिरैकलिअगुणपहारू
रूपरेख कछु जाके नाहीं * तौ का करब शून्यके माहीं
अगुणसगुणयुगब्रह्मकहावत * सोतेहिभजतजाहिजोभावत

दो० यथा विरोचन कुमुद दोउ हैं विराट के नैन ।
काहुइ भावत दिवसपति काहुइ शशि में चैन ॥

तेहिप्रकार हम श्याम उपासी * हैं सबही विधि उनकी दासी
मुक्तिभुक्ति हमको नहिं चहिये * प्रेमभक्ति किरपाकरि कहिये
जोकल ज्ञान कहे बिन नाहीं * तौ चलिजाउ बनारस माहीं
हमरेतौ मन एक रहावा * गयउश्यामसँग बहुरिनआवा
को अब अगुण ईश अवराधै * को एकान्त में आसन साधै
तलफतदृग बिनलखेकिशोरा * को चितवै भृकुटीकी ओरा
जरत रहत निशिवासर अंगा * कीन्हेबिनगिरिधरण प्रसंगा
तुमजोकहतहरि हिरदयमाहीं * शीतलहमैं करत कत नाहीं
ब्रह्मअंश कैसे हैं कान्हा * मातै भुवन उदरमें नान्हा

मुखपसारि देखरावत भयऊ ❋ तबकाब्रह्म पृथक रहिगयऊ
कारणते कारज है नीका ❋ यथा कन्दते दूर रस फीका
कारण अगर रहतहै संगा ❋ कारजअतरबिकतसोमहँगा
तुमहीं कारणमें मन लावो ❋ हमैं श्याममें प्रीति दृढ़ावो
जोहरितजिकरिघासहि चरहीं ❋ तौ हमहूं जपयोगहि करहीं
भक्षहि हंस मीन तजि मोती ❋ तौ हमहूंसब ध्याइय ज्योती
जो रण शूर तेग तजिदेवैं ❋ तौ हमहूं तुम्हरो मत लेवैं
अडल विहंग महि बैठेंहारी ❋ तौ हमहूं निर्गुण मतधारी
जो चातक सरकर जलपावैं ❋ तौहम ब्रह्मश्याम तजिध्यावैं
पशु पक्षी निज टेकहि करहीं ❋ हम मानुष कैसे परिहरहीं
ऊधो तुम विरही हो नाहीं ❋ नहीं दास नहिं मित्रन माहीं
विरही मीन जलहि अनुरागे ❋ बिछुरत प्रीतमके तनुत्यागे
दास भाव पपिहामें जाना ❋ बिन स्वाती जल करैनपाना
गरजि तरजिरवि डारत मेहा ❋ तदपिबढ़तादिनप्रतिनवनेहा
मित्र कमल बिन लखे तमारी ❋ तुरत जातहै सम्पुट मारी
मधुकर हम चातक समअहईं ❋ विनाश्याम हम औरनचहईं
या तनको विधि फेरि बनावै ❋ तबहूं मोहन मोह न लावै
जो त्वच काढ़ि दुन्दुभी साजै ❋ सोऊ लाल लाल कहिबाजै
गाड़िदेइ मृतिका है जामें ❋ बिरछ फूल फल उचरैनामें
मुये अंगकी है यह रीती ❋ जीवत किमि छूटतहै प्रीती
बोली अपर भली विधि हेरे ❋ कठिन लोगहैं मधुपुर केरे
जिनकी संगतिपरि नँदलाला ❋ सीखत भयो योगकर हाला
हमहूंको आये बहकावन ❋ फूंकन चहत सुमेरु उड़ावन
मधुकर आपन योग दुरावो ❋ हम पूंछें सो वरणि सुनावो
ब्रजमें कब ऐहैं बनवारी ❋ कबहरिदैं चूनरी हमारी

कब दधिदान मांगिहैं रोकी * हमहूं अब हठ करब न कोकी
करिहैं रहसकेलि कब आई * खैहैं माखन कबै चोराई
कब बजाय मुरली मन म्वैहैं * कब दुरिकै हमरे घर स्वैहैं
जेहिसुखहितहमभइनकनौड़ी * सो सुख अब लूटतिहै लौंड़ी
कीन्हिसि कौन तपस्या भारी * ज्यहितेपाइसिपतिगिरिधारी
कब अब सुनब हमारे लागी * दीन्हो श्याम कूबरी त्यागी
कहियो मधुप श्यामते जाई * कहां गई व्रज की चतुराई
किहे सनेह सयानपटुक्खा * रहतनसुमतिसयानपसुक्खा
हमयुवतिनकहँलिखतविरागा * आप परे चेरी के रागा
अपना गुरूभये संयोगी * केहि प्रकार हम होई योगी
जो गुरुही निजभद्र न चीन्हा * तिनशिष्यनकोकबसुखदीन्हा
जो गुरु कुटुँब जाल में बांधे * तौ शिष्यके किमि काटै फांदे
जो गुरु काम क्रोध में जरई * तौ शिष्यको कबशीतलकरई
जो गुरु है तृष्णावश लोभी * सोशिष्यकोकिमिकरै अछोभी
जो गुरु है पाथर की नावा * सो शिष्यको कब पार न पावा
जो गुरुको कछु पढ़ि नाहिं आवै * तौ शिष्यकोकेहि भांतिपढ़ावै
त्यहिते आपु दशा पर आवैं * तब हमको लिखियोगपठावैं
ज्यहिते कछु लागै उपदेशा * करहिं सकल योगीकर भेशा
जो जल जरन आपही लागै * तौ तजि मीन कहां को भागै
लखि गोपिन को प्रेम प्रमाना * बिसरि गयो उद्धव को ज्ञाना
करत भयो गुरु गोपिन कैहां * पाइनि एक अनन्य व्रत तैहां
रहे मास षट तिनके पासा * देखत डोलैं कुंजविलासा
भे मधुवन की प्रीति बहोरी * बोले गोपिन ते करजोरी
तुम सब अहौ प्रेम की खानी * क्यहिविधिहमउतकर्षबखानी
चातक मीन चकोर मृगाऊ * चारणकिहिनितुम्हारस्वभाऊ

हमते जब तब प्रीति तुम्हारी ॐ वर्णत रहैं मुदित बनवारी
उद्धव हम तनु कोटि बनाई ॐ ॐ करैं गोपिकन की सेवकाई
तबहूँ कछु उद्धार न मानी ॐ ऐसी ममसेवा उन ठानी
ज्ञानकेमिसितिनमोहिंपठावा ॐ आई तजि हरिरूपहि पावा
अब करिकृपा देहु वर एहू ॐ बढ़ै कृष्ण पद नित नवनेहू
खग पशु विटप लता तनुपाई ॐ जन्म जन्म ब्रजबासिये आई
तुम्हरे चरण कमल की धूरी ॐ प्रापत होइ भागते भूरी

दो० जो मैं कीन्हीं ढीठता हरिको आयसु मानि।
करेहु चमा अपराध सो अनुग आपनो जानि॥

उद्धव तुम जानत सुखदायक ॐ हम हैं कौन बड़ाई लायक
लोक वेद तजि करतब ठाना ॐ त्यहितेनिन्दतसकलजहाना
तुमहो तात सराहन योगा ॐ चमावन्त सबभांति विशोगा
हम अहीर बहुभांतिन केरे ॐ कहे कठोर वचन बहुतेरे
तुम्हरे माष न तनकहु आवा ॐ धन्यधन्य जननी जिनजावा
उद्धव कृपा श्याम की चाही ॐ निकटहुदूरिउभयभलआही

दो० वन बरही वारिद वियत लचान्तर रविपद्म।
विलखकुमुदशशिसुखलहतलखिसनेहनिजसद्म॥

बिन सनेह उपदूरि विशेखी ॐ युग अंगुल श्रुतिपरतनदेखी
चिरंजीव रहैं दोऊ भाई ॐ मधुपुर करहिं राज सुख पाई
उद्धव हमरे दोउकर लाडू ॐ मिलैतौअनिभलहरितजिआडू
जो न मिलबतबहूं भलजानौ ॐ भयोसुयशतिहुँलोकपिछानौ
कहँ हम जाति वरण कुलहीना ॐ श्रुतिमर्य्याद सोउतजिदीना
कहँहरि श्रीपतिपालक सगरे ॐ सो सबविधि कहवावतहमरे
इतउतफिरिफिरिब्रजहीभावै ॐ जिमि परिवा छतुरी पर आवै
सत्य वचन तव भूंठ न आहीं ॐ हरिनिजजनवश सदारहाहीं

कह उद्धव अब आज्ञा दीजै ❋ तौ हम गमन मधुपुरी कीजै
तीनिदिवसकर आयसुभयऊ ❋ त्यहिकेबीति मासषट गयऊ
हमरी सुधि न बिसारब देवी ❋ सबविधिजानि आपनोसेवी
बिछुरन विरह सबनकेजागा ❋ कीन्हेनिबिदासहितअनुरागा
रथचढ़िचलिनिजआश्रमआये ❋ समाचार यदुनन्दन पाये
पठवत भये दूत यदुनाथा ❋ आये भवनतुरत त्यहिसाथा
भेटे श्याम सखै मनलाई ❋ बूझतभे व्रजकी कुशलाई
सुनिउद्धवसब बात प्रकासी ❋ तुमबिनदुखितरहतव्रजवासी
यकदिन आवो दरश दिखाई ❋ सुनत वचन बोले यदुराई

गीतिकाछंद ॥ यदुनाथबोले सुनहुउद्धव घोटावासीजे अहैं । तिनपासमैं नितरहतहौं वे नेकुन्यारे नारहैं ॥ ममश्वास वेदनकीऋचाहैं गोपिकनके दुखकहा । सुनिहैं जे कहि हैं चरितनके नाशिहैं संकटमहा ॥ जोकहौरहत वियोगक्यहिहित सुनहुसोउनिकामहूं । यकदिनगयो यकसखी घरहौं द्वारराखिसिदामहूं ॥ तहँआइप्यारी चहतप्रविशो सखा रोकतरिसठई । नहिंमिलहिंहरि शतवर्षतोहिंत्यहुँकहीसोइसोईभई ॥

सो० यद्यपिहौं तिनतीर तदपि न देखत शापवश ।
धरिहौं विविध शरीर करन चरित बहुभांति के ॥

दो० उद्धव गोपिन केरकछु कह्यो ज्ञान दृढ़नेम ।
पढ़ै सुनै रघुनाथ तौ बढ़ै इष्ट पद प्रेम ॥
प्रेम विना पावै नहीं प्रीतम को दीदार ।
ताते जन रघुनाथ ते करु उद्यापन सार ॥
प्रेम न वारी ऊपजै दिये न आवै दाम ।
प्रेम जगत रघुनाथ तब जब सुमिरै हरिनाम ॥

इति श्रीविश्रामसागरेकृष्णायनगोपीउद्धवसंवादेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
दशमस्कन्ध भागवतकी अबकहौंकथा बखानि ॥

गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा * पूजालहि कहि सहितसनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो * बोधदेय कुन्ती को आवो
असमय परे पांडुसुत छोटे * परवशपरि सुखलहतनपोटे
चले पांडुघर आये सोई * देखिमिली कुन्ती उठिरोई
आसन देत भई अनुरागी * पूछन गति नैहरकी लागी
नीकेहैं पित मात हमारे * भाभी भ्रात कृष्ण बलप्यारे
करत कबहुँ सुधि भाइन केरी * देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी
सुनिबोले अक्रूर बिहारी * सुखीसकलसुधिकरतलिहारी
कहिनि कृष्ण फूफू से कहियो * चिंताकछुचितमेंजनिगहियो
आवतहैं हम कछु दिनमाहीं * चलीगयरि तिनकीतबनाहीं
पुनिधृतराष्ट्र पासचलिगयऊ * सुहृदवचनजसबोलतभयऊ
पाण्डुमरे तुम गद्दी पाई * पालहुसबहि एक सम भाई
चले अनीति अयश जगपैहौ * देहतजे ध्रुव नरक सिधैहौ
करै जो पाप सुमति असपाई * त्यहिफलहोत ताहिदुखदाई
अपर जे अहैं कुटुम्बी सारे * अन्त रहतहैं सबही न्यारे
खलभल पापपरत शिरअपने * त्यहिते पापकरेहु जनिसपने
इमि बहु कह्यो तासुहितबानी * सुनिधृतराष्ट्र न हियेसमानी
बोला तबै अन्ध बेइमाना * होई जो करिहैं भगवाना

दो० यहिविधिसुनिसमुझाइपुनि पँचहुँनकादुखहेरि ।
बिदा भये धृतराष्ट्र ते आये मधुपुर फेरि ॥

समाचारयदुपतिहिसुनाये * त्यहिक्षणअपरविघ्नझुकिआये
रथचढ़ि उभय कंसकी वामा * मगधदेश आईं पितुधामा
विविध भांतिते रोदन कीन्हा * जरासंध सुनि धीरज दीन्हा

यदुनसहित सब हरिबलरामा ॥ पठवों कंस निकट तब नामा
असकहि दल तेइस अछोनी ॥ लैके चला प्रबल है होनी
अछोनी द्वै भांति बखानी ॥ लघु दीरघ सोउ लीजै जानी

लघु अछौहिणी प्रमाण ॥

कुकुंभीछन्द ॥ यकइससहस आठसौसत्तरिरथीहोयँजहँ जानौ । तेतनेहीगजनाथ अश्वपतिछांछठिसहसपिछानौ ॥ एकलाखनवसहसतीनिशतसाढ़ेपैदरजोई । जनरघुनाथबिचारिकहततबएकअछौहिणि होई ॥

दीर्घ अछौहिणी प्रमाण ॥

दो० अयुत नाग त्रै अयुतरथ योधा लख दशलक्ष ।
तुरग कोटि छत्तिस कहत पदचर यह दिरघक्ष ॥

आइ मधुपुरी लीन्हिसि घेरी ॥ सुनिपहुँचे हरिबलत्यहिबेरी
देखतै कहनलगो कटुभावा ॥ बंधवधिकसुनि वचनसुनावा
तात सुनहु तुमनीति निधाना ॥ हमसमक्षमावन्त नहिंआना
निज बहुवार कंस के टारे ॥ अपने पाप गये पुनि मारे
पर अपकार किहे दुखभारी ॥ खनतगाढ़ तेहि कूपतयारी
त्याहिपर आपुचढ़े अतिरोसी ॥ हानिछांड़िकछु लाभनहोसी

दो० कीन्हिकुनहबिनगुनहजिन तिनसुखसुनानपाव ।
सहसबाहु सुरनाथ भृगु अत्रै सुत नृगराव ॥

त्यहितेस्वपुरजाहुफिरिअबते ॥ बोला मूढ़ साधुभय कबते
शूरसमुख नहिं सुयश सुनावैं ॥ पुरुषारथकरि प्रकट दिखावैं
जाना काल निकट तव आवा ॥ ताते बोध विपर्यय पावा
कहहलधर यह सबकोइ जानै ॥ लातक मनइँ बात नहिं मानै

कुं० सुर तुष्टत हैं भक्तिते द्विजतुष्टत लखि दान ।
सुहृदतुष्ट उपकार लखि खल तुष्टत पद त्रान ॥

खल तुष्टत पदत्रान प्रीति ते तुष्टत नारी।
सेवावश शुचिस्वामि साधु आदरवशभारी॥
नृपतुष्टतगुणगणकथनरिपुतुष्टतभुजबलप्रचुर।
त्यहिते यहि परतोषिये समरयुद्ध करि सुरेसुर॥

सुनत जरासुत उठा रिसाई * डारहु मारि सैनकहँ शाई
चहुँदिशिघेरिलिहिनिरिपुकैसे * रविहि धूमघन पावक जैसे
लागे चलन विविध हथियारा * शक्तिशूल असि बाणकुठारा
इतउतभिरत गिरनकोइलागे * कोइभटमुरतजुरतकोइआगे
चढ़ीं अटारिन पुर नरनारी * लखिलखिशोचकरैंअतिभारी
कोइक्षण इमपि खेलाये योधा * पुनि दोउबंधु करतभे क्रोधा
क्षण में दलि सब सैन सोवाई * जरासन्ध को दीन बचाई
ज्यहि ते बहुरि लयावे पापी * बही रुधिरकी सरितअनापी
रथ सुरेथ भुजमीन समाना * शिरकच्छप गजग्राहप्रमाना
कच सेवार सम धनुष तरंगा * आयुधपरे विटप जनु भंगा
भवँर चर्म्म मणि कङ्कण भारी * प्रकटीसरि बलकृष्णबिहारी
दै दै ताल योगिनी नांची * प्रमथनकी परबीसी मांची
गृहप गोध गोमायक लोलैं * छांड़त मूड़ कपाली डोलैं
इमिदलदलिप्रभुमथुरहिआये * मागधसूत विजय गुणगाये
वरषि सुमन सुरपुर नरनारी * बहुबलकरि आरती उतारी
मगधाधिप की लूटि जो आई * सो सब यदुपति पास पठाई
नृप जो जाहि दीन सो लयऊ * मुखियासुखसमचहीसोभयऊ
जरासन्ध निज नगरहि आवा * दल बटोरिपुनिलरनसिधावा

दो० तेइस तेइस क्षोहिणी लै लै यकइस बार।
आवा चढ़िबल कृष्ण सब करतभये संहार॥

यहयश कालयमन सुनिपावा * तीनिकरोरि यमन लै धावा

तब विश्वकर्मा ते यदुराई ❋ सागर बीच पुरी बनवाई
द्वादश योजन मधि हेमाले ❋ त्रिविधबतासकालतिहुँचाले
चौहट हाट सुगन्धन छिरकीं ❋ लागे जहँतहँ फाटक खिरकीं
दामिनिसों पताक फहराहीं ❋ जलथलवरणिजातसोनाहीं
वन उपवन वाटिका अनेका ❋ रतन सुसर्व एकते एका
सोवत यदु सब तहां पठाये ❋ अपना रामयमनपहँ आये
कृष्णे जब देखिसि निजआगे ❋ काढ़ि खड्ग धावा प्रभु भागे
धवलागिरि कन्दर में जाई ❋ मुचकुन्दहि पटदीनओढ़ाई
आपुरहे छिपिसो चलिआवा ❋ पीताम्बरलखिचरणचलावा

दो० जोनहिं जानत जासुगुण सोशठ निदरत ताहि ।
सबजगपूजहि यतिहिजिमि श्वानदेखिघरिखाहि ॥

लागतलात खोलि हगदयऊ ❋ कालनेमि तुरतहिजरिगयऊ
दरशदीन तब यदुपतिआई ❋ जटितवसन भूषण छबिछाई
अद्भुत रूप निरखिनृपबोला ❋ नाथअहौ तुम कौनअमोला
की त्रयदेवन में कोइ होऊ ❋ की रवि अग्नि चन्द्रमा कोऊ
पूजन के तुम योग गोसाईं ❋ मैंहों निशिदिन तवशिरनाईं
मोहिं जगाय जरा कोइ प्रानी ❋ भयो हमार परम हितजानी
कह प्रभु हे नृप प्राण पियारे ❋ जन्म कर्म में बहु विस्तारे
नाम अनन्त न संख्या कोई ❋ गनतथके बहु कविता सोई
मेरे उगति गनने की नाहीं ❋ कहतसुनतऋषिभवतरिजाहीं
अब जनहितभंजन महिभारा ❋ भयोंआइ वसुदेव कुमारा
कंस आदि बहु शत्रु निपाते ❋ यमनेशहि लायो तेहि नाते
रिपुजराइ पुनितुम्हैं निहारेउँ ❋ एक पन्थ द्वै कारज सारेउँ
अब बरु मांगु रुचे जो तोहीं ❋ नाथ भक्ति दीजे निज मोहीं
भे निद्रा विषयासन करिकै ❋ बादि वयस खोई अवतरिकै

तब प्रभु भजन भाव समुझाई * पुनि बद्रीवन दीन पठाई
कह नृप कौनरह्यो बड़भागी * बोले व्यास सुवन अनुरागी
नृप मुचकुन्द अवध के जानो * पर उपकारी एकहि मानौ
कीन्हि देवतन केरि सहाई * बहुदिन गये रहा कोइ नाई
इन्द्र मुदित ह्वै कह बर लीजै * बोल्योमहिप मुक्तिम्वहिंदीजै
भूपति मोक्ष कहां हम पावैं * एतो हरिके पास रहावैं
तौ फिरि नींद घनेरी देहू * जरै जगावै सो सुनि लेहू
सुनितिन एवमस्तुकहिदीन्हा * तबते यहां शयन इन कीन्हा

दो० निद्रहि कस सुखसेजमहि तृषितहिकह घटशुद्धि ।
कामिहिंकसभयलाजजग क्षुधितहिकसबलबुद्धि ॥

सोवत कालयमन पग मारा * त्यहिअघअधमभयोजरिछारा
पुनि प्रभुगेमधुपुर मिलिदोऊ * मारे मुसलमान सब सोऊ
तेहिक्षणजरासन्ध चढ़िआवा * रामकृष्णसो दल लखिपावा
लरे कछुक पुनि भागत भयऊ * गौतमगिरिऊपरचढ़िगयऊ
गेरा योजन केर निहारी * जरासन्ध तब दीन प्रजारी
निकरि द्वारकै गे दोउ भाई * ह्वैगा भूधर भसम बनाई
जरिगे जरासन्ध असजाना * आवा बहुरि भवन हर्षाना
इहां सकल यदुवंशिन काहा * चहीकीन हलधरकर ब्याहा
शहर अरुणती रेवत भूपा * तासु सुता रेवती अनूपा
ताके संग होत भा ब्याहू * वेद विधान सहित उत्साहू

दो० संसकार जाकर जहां मिलत सो ताहि विशेखि ।
त्रेता की कन्या बरी द्वापर में वर लेखि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतकृष्णायनजरासन्धसमरवर्णनो
नामदशमोऽध्यायः १० ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
नीतिसहितरुक्मिणिहरणहरिकृतकहतबखानि ॥

अब विवाहरुक्मिणिकरसुनहू * रमत सुभये कृष्णहरिउनहू
कुण्डिनपुर भीषम नृप हेरे * जनमी एक सुता तिनकेरे
रुक्मिणिनामज्योतिषिनराखा * सबगुणधामश्यामपतिभाखा
दिन दिन कन्या वर्द्धत कैसे * शुक्लपक्ष कर चन्द्रा जैसे
खेलन संग सखिन के लागी * इकदिनयकबोली अनुरागी
रुक्मिणि तैं नितखेल बिगारा * लुकतिकिठौरकरतउजियारा
सुनिहँसिगृहगमनीसुखपाये * त्यहिक्षणतहँनारदऋषिआये
देखि रूपगुण मन में जाने * कृष्णचन्द्र से आइ बखाने
कुंडिनपुर महँ भीष्मकुमारी * रुक्मिणिहै सो योग बिहारी
तबते बसी हृदयपति सुरकी * सुनहुकथापुनि कुंडिनपुरकी
इकदिनसुयश याचकनगावा * कृष्णकेर भूपति सुनिपावा
तबनिजभवनगवावतभयऊ * सुनिरुक्मिणिनिजउरधरिलयऊ
करत भई संकल्प अनंगा * बरिहौं मैं इनहीं के संगा
इकदिन भीषम देखि बिचारी * भई बिवाहन योग कुमारी
सब भायन ते पूंछसि बोली * बरियेकाहि रुक्मिणी खोली
तब सब लोगन भूप गनाये * नाना देशन के नहिं भाये
तब छोटा बालक नृप केरा * रुक्मसेन बोला यहि बेरा
तात रुक्मिणी कृष्णहिं दीजे * नवलनात वसुदेव ते कीजे
सुनिनृपसहितसकलपुरवासी * बोले बात कही इन खासी
सेवक सुत बड़ छोटहु जानी * हितकी बात कहै सो मानी
आदिपुरुषजिनके घर जनमें * मारिनिकंस असुरबहु वनमें
को मिलिहै इनते बल भाई * सुनि बोला बड़पुत्र रिसाई
बोलहु वचन सँभारि सुनीती * जानत तुम न कृष्ण की रीती

षोड़शवर्ष नन्द के राहा * तब अहीर सब काहू काहा
ओढ़ी कामरि गाय चराई * जातिहु तासु न जानी जाई
कोऊ नन्दकेर सुत गावै * कोई यदुपति केर बतावै
अबतक भेद न काहू पावा * यह धौं कृष्ण कौन को जावा
प्रभुता वेश न लेशमवासी * उग्रसेन की करत खवासी

दो० तिनके संग विवाह करि कहौ मिली फलकौन।
लायक ते कीन्हों चही वैर प्रीति अरु गौन॥

लोभसोभलजहँफलअधिकाई * चाटेओस पियास न जाई
नगनन्हायसो काह निचोवै * ज्यहिधननाहिंसोकाकोउखोवै
त्यहि ते भूप चँदेली केरा * है शिशुपाल प्रतापी हेरा
ज्यहि घर परमपराते गादी * आवत होत राज्यनहिं बादी
ताको ब्याहि रुक्मिणी दीजै * कृष्णकेर अब नाम न लीजै
सुनिनृपसहितलोगपछिताने * रहे साधि चुप सकल डराने
सबलशत्रु नृपनीच गोसाईं * इनते हठकीन्हें न भलाईं
मूरख ते न कही हरिगाथा * गिरि खोदे परे पाथर हाथा
असमनगुणिगमनेकहिबीशा * जबरकिराह कहत फुरशीशा
तबतहँ रुक्मबोलिबटु लीन्हा * लगनशोधाइ पठैपुनिदीन्हा
जाइविप्र शिशुपालहि दीन्हा * टीका बड़े भाव ते लीन्हा

दो० यदपिकह्यो बहु भीष्मनृप चह्यो कृष्ण को देन।
तदपि न बूझेउ वैरथल लालच ग्रसित सुखेन॥

तब शिशुपालब्याहहितफूली * लोक वेदविधि करी ससूली
दैकर भेंट बिदा करिताही * न्योत्यो बड़े बड़े नृप चाही
आइ विप्र भीषमैं सुनावा * बड़ी धूम ते आवत तावा
वेगि ब्याह की करहु तयारी * तुरत गुणीजन लीन हँकारी
अति विचित्र माड़ो तनवावा * मंगलगान सकलपुर छावा

एकसखी बोली मृदुबानी * रुक्मिणिभई बड़ी तुम रानी
असमुनि कहत महीपकुमारी * मनवचकर्ममोपतिगिरिधारी
क्षिप्रहि विप्र बोलियक लीन्हा * लिखिकै पत्र तासुकर दीन्हा
दीजै जाइ कृष्ण के हाथा * बहुरिउन्हैं लायो निजसाथा
तौ मैं बड़ तुम्हार हितमानौं * शौरेदीन कृष्णपति जानौं
यह सुनि चला द्वारकै आवा * कृष्णचन्द्र को पत्र दिखावा
महाराज सुनि सुयश नवीना * तब ते मैं तुमका पति कीना
मिलनकेर आशा दृढ़भावा * वेदनहूं याहीविधि गावा
जाकर प्रेम सत्य है जामें * सोत्यहिमिलतन संशययामें
अबम्वहिंलेनचहतशिशुपाला * जिमिमृगपतिकरभागशृगाला
त्यहितें सत्यवचन अविनासी * कीजे मोहिं आपनी दासी
जो नहिं लेहौ खबरि हमारी * तौतनत्यागब शपथतुम्हारी

दो० जिमि रघुरत्नी सुरभिवन रत्नी मृगपति भेख।
त्यहिप्रकार म्वहिंरत्नियै प्रणतपाल प्रभुलेख॥

ऐसे वचन बाँचि बनवारी * आवाभरि नयनन में वारी
तुरत उग्रते आयसु लीन्हा * रथचढ़िगमनसहितद्विजकीन्हा
पहुँचे जब कुण्डिनपुर जाई * उतरे भूपति की फुलवाई

त्रिभंगीछन्द॥ देखीबनवारीजनुतपनारीअचलअगारी थिर न रहै। परिरहतदिगम्बरपुष्पवतीवर निरखिरूपनरमोह लहै॥ लहैगर्वितगभैंदिनप्रतिअभैअर्पतसर्वैपर्सकरै। परसतपतिपावैतदपिसुहावै सबहिनभावैभाग्यबरै॥ बोलहिंबहुबोलानिजनिजटोला घरिघरिचोलाविपुलसखी। श्यामहिं जनुसारीरहीहँकारी हर्षितप्यारीप्रेमलखी॥

इहां रुक्मिणी करत विचारा * अजहूं नहिं आये करतारा
पुनिपुनिचढ़िमहलौंपरजावै * चहुँदिशिचितैविकलफिरिआवै

इतने में द्विज आइ बखाना ॥ मनहुँलह्योजलशालिसुखाना
प्रमुदित ह्वै दीन्ह्यो वरदानू ॥ जाहु सदा रहिहौ धनवानू
बहुरि कह्यो हरिते डर धरियो ॥ देवीपूजन में त्वहिं हरियो
पाछे ते आये बलदेऊ ॥ छप्पन कोटि यादवा तेऊ
सुनिमहिपालमिलनचलिआवा ॥ सोसबह्वालरुक्मसुनिपावा
बोला नृप ते ऐसे दिनका ॥ कौने इहां बुलायो इनका
जहांजात तहँ करत बखेरा ॥ भीष्मकह्या कछुमोहिं न बेरा
तिसरेपहर नगर दोउभाई ॥ आयेलखि कहैं लोगलुगाई
जस गुणरूप तैस सम्बंधा ॥ जिमिसुठिसोनेमाहिं सुगंधा
इनके दरश माहिं सुख जैसो ॥ मुक्तिहुमाहिं न होई ऐसो

दो० गौरश्याम सुषमासदन वदन विलोचनचारु।
सहितवसनभूषणबसहु उरसिअहंजिमिहारु॥

यहिविधिकहिसबहिनसुखपावा ॥ शिशुपालहितबरुक्मजनावा
अब सब खबरदार ते रहना ॥ आये हैं उपाधि के गहना
तब शिशुपाल समूह सिपाही ॥ पठैदिये रक्षाहित ताही
इतउत गई कनात तनाई ॥ देवीपूजन कुवँरि सिधाई
संग सखी सोहैं विधि बारा ॥ कीन्हें तन षोड़श शृंगारा

कुं० मंजनपट अंजन तिलक स्रककुंडल ताम्बूल।
बेसरि अँगिया किंकिणी कंकन पायल मूल॥
कंकन पायल मूल सुनूपुर कुंकुम बेनी।
यह षोड़श शृङ्गार त्रियन के औरहु श्रेनी॥
श्रेनी मानहु मदन केरि निकसी मद गंजन।
गीतसाथ रघुनाथकरत सुनिमुनि मन मंजन॥

रोलाछंद॥ कोइपद्मिनिसुकुमारिलाजयुतसहितसुगंधा।
कोइचित्रिनिसमरूप चहतउपबोधप्रबंधा ॥ कोइशंखिनि

युतरोषदयाबिनवेगिप्रचारै । कोइहस्तिनिबड़उदरपयोधर कमरकरारै ॥ कोइस्वकीयसुखदुःखमाहिंनिजनाथहिजानै । कोइपरकियपरपुरुषकेरसँगछिपिकैठानै ॥ कोइगुणरूपासक्त प्रेमवशकोइरसध्यावै । कोइसामान्याद्रव्यलोभवशप्रीतिबढ़ावै ॥ संधिभयःकोइअंकुचजनतियौवनकोइमुग्धा । कोइ ज्ञाताअज्ञातवपुषवयभोगनिरुग्धा ॥ कोइमध्यासामान्यकामयुतलाजजनावै । कोइप्रौढ़ापरवीनअधिकरसकेलिसुहावै॥ कोइधीराहतव्यंगकोईआधीररिसाती।कोइज्येष्ठापतिपीयकनिष्ठाकोइकमचहती ॥ कोइगुप्तागतिअलखकोईपरतीतिलक्षिता । कोइमुदितासिकमिलनविदग्धाकोइसुरक्षिता ॥ कोइ अनुशयनादुखितजासुसङ्केतनशान्यो । कोइकुलटाआतृप्त चित्तचिरठौरलोभान्यो ॥ कोइस्वाधीनास्ववशकीननाहैनिज गुणते । कोइउत्काकेहेतनआयोप्रीतमसुनते ॥ वासकशय्या कोइकन्तकोआगमदेखै । कोइकलहन्तरितादि निदरिकरि शोचविशेखै ॥ कोइखण्डिताअपरपास लखिपतिहिरिझावै। द्विजलब्धाकोइजोनपतिहिसङ्केतनपावै ॥ कोइअभिसारिनि आपुजाइकीहरिहिहँकारै। प्रवृत्तिपतिकाकोइजासुपतिगमन विचारै॥ कोइप्रोषितपतिकाहिकन्तपरदेशमजाको। आगमपतिकाकोइहोइउतकण्ठाताको ॥ कोइदूषितादुखितहोतलखिबाधकजानै।कोइगर्वितपतिरूपअधिककोइजठरप्रमानै॥ आईकरतकलोलसकलदेवीकेपासा।पूजनकीन्हीकुवँरिकृष्ण कीकरिउरआसा ॥

दो० और सखी जे सङ्गकी करिप्रणाम कहैं बात।
यहि कन्याको कृष्णपति देहु दयाकरि मात ॥
पूजनकरत न पतिहिजब पेख्यो महिपकुमारि।

लगीकरन अतिशोचतब यहिविधिहृदयविचारि ॥

कुं० बीसन बुड़की मैं दई मुकता लग्यो न हाथ।
सागरकेर न दोष यह निजअभाग रघुनाथ ॥
निजअभागरघुनाथ नाथऋतुसबहि फुलावै।
पात न लहै करील ढीलको ताको गावै ॥
गावत सुनै न बधिर भानुद्युति तमचुरदीसन।
रहतगन्धबिनफेनुमलयढिगयहिविधिबीसन ॥
मनचाहतहै मिलनको मुख देखन को नैन।
श्रवणचहतसुखप्रदसुन्यो श्यामसुँदरके बैन ॥
श्यामसुँदरके बैन सैन वश होन न पावत।
हाय दई काकरौं यतन एकौ न लखावत ॥
आवत एकप्रतीति अहैं प्रभु प्रणतपालघन।
शरणसमुझिसुधिलेहैं लेहैं पुनिलेहैं ठीकमन ॥

दो० यहिविधि मनमें ठीकदै चली चहूँदिशि हेरि।
इतने में हरि आइ तहँ परदा दीन्ह्यो घेरि ॥
कुवँरिकुवँरको रूपलखि भे मूर्च्छित भटसर्व।
करगहि रथ बैठारि प्रभु चले गाजि नृपगर्व ॥
जोरावरते नहिं चलत छलबल बुद्धि उपाइ।
टटकन टरै न गाजजिमि मेषनते मृगराइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतकृष्णायनरुक्मिणीहरणवर्णनोनाम एकादशोऽध्यायः ११ ॥

दो० सुमिरि रामसिय संतगुरु गणप गिरा सुखदानि।
नीतिसहितरुक्मिणिकथा हरिकृतंकहतबखानि ॥

यहिविधि जब श्रीकृष्णमुरारी ❋ हरिचलिभे भीषमककुमारी
तबतौ जरासन्ध अस कहई ❋ धृग धन्वी हम सबको अहई
जिनके जियत गोप नृपबारी ❋ हरिलैगोजिमि शिवहरिनारी
यशी पुरुष कहँ अपयश होई ❋ मरणनीकभलजियब न सोई
असकहिगहि आयुधसबदौरे ❋ धरु धरु मारु मारु कहि बौरे
इत हलधर यादव लै धाये ❋ भिरिगे ठौर ठौर भट पाये
पैदर ते पैदर हय ते हय ❋ रथिन ते रथी जुटे गय ते गय
छूटे चक्रबाण विकराला ❋ तोमर परशु शक्ति समकाला
मुद्गर शूल भुशुण्डि सुहाई ❋ पुनि कृपाण ते मची लराई
कोटिनमुण्ड धरणिपर गिरहीं ❋ धरुधरुकहिकबन्धबहुफिरहीं
भूत प्रेत योगिनी कराला ❋ मुदितभयेखगश्वानशृगाला
यहि विधि सैन नृपनकी नाशी ❋ शङ्ख शब्द कीन्ह्यो बलराशी

दो० जरासन्ध शिशुपाल दोउ गये तुरतही भागि ।
धीरजदै शठरुक्म तब चढ़ा रुक्मिणी लागि ॥
जैसे पांखी की दशा देखत पांखी आन ।
तद्यपि कूदत दीपमें अस विमोह बलवान ॥

आगेबढ़ि कृष्णहिं ललकारा ❋ जात कहां करिविघ्न हमारा
रह्यो डहँकि कदरन के बीचा ❋ जानहु आजु आपनी मीचा
असकहिनिकटआइप्रभुपाहीं ❋ मारिसि गदा मांझ उरमाहीं
पकरि कृष्ण शिरकाटन लागे ❋ कह रुक्मिणी जोरिकर आगे
बन्धु भीख मोकहँ प्रभु दीजे ❋ इतना कहा चेरिकर कीजे
मोछमुड़ाइ राखि पुनि चोटी ❋ पाछेबांधिलिहिनिनिजजोटी
कटक निधनि आये बलभाई ❋ सनोमान करि दीन छुड़ाई
बोले हरिते उचित न कीन्ह्यो ❋ बन्धुविरूपविराचिदुखदीन्ह्यो
राजा सुत दुख पावा होई ❋ लघुमति हमैं कहब सब कोई

बन्धुकरै जो वधकर कामा ❋ तदपि न हतिये हितपरिनामा
जो बहुलाभ कुसंगम होई ❋ तदपि न कीजे संगति सोई
होइधनी धनरहित जो कीजे ❋ तदपिताहिलघुप्रकृतिनलीजे
जो न होइ बल देनको दाना ❋ तदपिन तजियेसमसनमाना
घटै प्रीति जो मित्रते कबहूं ❋ मुखते उघरि न जूटिय तबहूं
जोनिशिदिवसनहरिभजिपैये ❋ तदपि न सांझ सुबू बिसरैये
जो नर नारि होइँ दोउ त्यागी ❋ तदपिरचियेजिमितृणआगी
परहित करत प्राण जो जाई ❋ तदपि न तजिये कबहुँ भलाई

दो॰ रारि रोग रिपु अग्नि नृप करत तपोधन व्याल।
जो ये होवैं लघु तदपि सजग रहिय सब काल॥
वणिक वाम वैरी विकल व्यसनी चुगुल अजान।
करैं कोटि सौंहैं तदपि इन विश्वास न आन॥
जो कामी नर कृपण कहि करै आपनी रिन्द।
तदपि अकार्थ न दीजिये विद्या विन्दरु जिन्द॥
जो सुर भूसुर साधु की सधै न सेवा भाव।
तदपि न निन्दा कीजिये नाहिं सुनिय करिचाव॥
उत्तम विद्या नीचते मिले जो दीन्हे मान।
तदपि तासुते लीजिये शिरपर धरि अहसान॥
जो कबहूं सतसंग ते उदय होइ वैराग।
तदपि एकही बार कुल धर्म न कीजे त्याग॥

जो सब तीरथ मिलै करारी ❋ तदपि न तजिये हरिपदवारी
जो कबहूं गुरुरहे रिसाई ❋ तदपि निहोरि चूक बखशाई
जो धनहित विद्या लघुकेरी ❋ पढ़ि तद्यपि लीजै निजहेरी
जो शुचिदास कबहुँ फिरिजाई ❋ तदपि ताहि कै नर्म मनाई
जो अपने ते बनै न नेकी ❋ तदपिअपर को करत न छेकी

जो श्रुतिशास्त्रसुखागरचहिये ❋ पढ़तसुनत नितत्तद्यपिरहिये
जो अतिकष्टहुते सतसंगा ❋ मिलैतदपिनितकरियप्रसंगा
सुरसुसन्तकछुकहैं न यद्यपि ❋ करियेअदबमानलखितद्यपि

दो० कविबुधगुरुतियसुतसुहृद द्विजमरमीशठभाय।
जो यह करैं अनीति कछु तदपि तरह दैजाय ॥

पुनिरुक्मिणि ते गिराउचारी ❋ तजहुशोच निजवंशविचारी
क्षत्रीकुलविधिअसनिरमायो ❋ अवनिरवनिधनधामलोभायो
भ्राते भ्रात हते करि कोहा ❋ भूपकने अस पातक मोहा
सो गुण हममें एकौ नाहीं ❋ सबकर हित चाहैं मनमाहीं
हितू प्राणतेप्रिय अधिकाई ❋ शलभजरै नहिं दीपलगाई
बहुरि विवाह आठविधि तेरे ❋ धर्म्मशास्त्र में मुनिन निबेरे

दो० ब्राह्मदेव परजापती आर्ष असुर गन्धर्व्व।
राक्षसबहुरि पिशाचअब सुनहुब्याहविधिसर्व्व ॥

कुकुम्भीछन्द ॥

सालङ्कारदानकन्याको ब्रह्मकहावैसोय। दानदक्षिणामें कन्याको देतदेवसोहोय ॥ तुमदोउमिलिसबधर्म्मकरौ कहि देइप्रजापतिजानौ। लैद्वैधेनुदेतदुहिताजोसोईआर्षपरमानौ॥ सुप्तप्रमत्तनकीकन्यनको हरिबोसोइपिशाचा। बरैकुवँरिवधि बन्धुसोराक्षस नृपैपरतयहराचा ॥ द्वैसकामकन्याकरपकरै ब्याहसोगन्धबकहिये । असुरअनीतिप्रीतिनहिं पौरुष यह उत्तमहि न चहिये ॥

तेहिते हम क्षत्रीकेबालक ❋ कीनिअनीतिननिजकुलचालक
सुनि वैदरभी अतिसुखपायो ❋ मोहजनितविषाद बिसरायो
रुक्मलाजवशभवन न गयऊ ❋ निजदासनते बोलत भयऊ
पहिलेपुरुषते बात जो कहिये ❋ कृतबिनमुख न देखावैचहिये

ताहीठौर नगर यक डारा ❋ नाम भोजकट ताकर धारा
सबजाती सनमानि बसाई ❋ रह्योतहां सुतनारि बुलाई
इतशिशुपाल कह्योबिलखाई ❋ अबहमजाब न निजपुरभाई
हँसी कि बात कही नहिंजाई ❋ मूरुखचन्द बने इतआई
जरासन्ध कह भूपन तीरा ❋ हानि लाभ रहते है वीरा
हमनहिं प्रथमे इनते हारे ❋ पुनि दोउबन्धु शैलपरजारे
त्यहितेतातजहुगतिमनकी ❋ दारुयोषितासमगति तनकी
समुझिसोकविसुखशोकनगहई ❋ वर्त्तमान सब बर्तत रहई
मूरुख गई वस्तुको शोचैं ❋ द्रव्यपाय जेहिधर्म्म न रोचैं
मूरुख करी कृत्यको मानैं ❋ हितकी बात न मनमें आनैं
मूरुख पन्थ चलतमें खावैं ❋ मूरुख हँसतमाहिं बतलावैं
मूरुख शठते करैं विवादा ❋ खरचैं द्रव्य वित्तते जादा
मूरुख करैं सबलते बैरू ❋ मूरुख घरराखैं अनगैरू
मूरुख बिनमतलब कटुबोलैं ❋ मूरुख पाप अपरके खोलैं
मूरुख द्वै बिच तीसर फाँदैं ❋ मूरुख बात वामकी काँदैं
मूरुख निर्द्धनके धन धरईं ❋ मूरुख वृद्धमाहिं तिय बरईं
मूरुख बहिनि सार सँग भेजैं ❋ मूरुख जाइँ पराई सेजैं
मूरुख कर्म्म क्रियाते हीना ❋ मूरुख चलैं न पतिआधीना
मूरुख मद मांगतमें करईं ❋ मूरुख प्रीतिजोरि पुनिलरईं
मूरुखनिजमुखनिजगुणगावैं ❋ मूरुख बालक मुँहें लगावैं
मूरुख त्यागी ह्वै धनजोरैं ❋ मूरुख बिनमतलब फलतोरैं
मूरुख दखलदेइँ बिनजाने ❋ गहैं चपलता गुरु अस्थाने
सबतेबड़मूरुखत्याहिचीन्हा ❋ नरतनजिनहरिभजननकीन्हा
त्यहिते तुम मूरुखके लेखे ❋ मिली न मिलीवस्तुअनमेखे
यहिविधिसबभूपनसमुझावा ❋ तबलजातनिजभवनसिधावा

पहुँचे कृष्ण द्वारका तीरा * सुनिकै उग्रलई बहुभीरा
आगे लिहिनि धूमते आई * राजमहल लाये सुखपाई
कीन्ह विवाह वेदविधितेरे * लागे रहन सकल सुखसेरे
कहनृप रुक्मिणि पूर्व मँझारी * करीपुण्य असिकौनिउबारी

दो० तीनि अंशते जानकी लीनरहे अवतार।
वेदवती स्वइ रुक्मिणी सतभामा महिभार॥

कृष्ण रुक्मिणीकेर शृँगारू * कहत शेष नहिं पावहिंपारू
तौमैं किमपिकहौं मतिथोरी * पायपिपील कि सागरबोरी
कछुदिन बादि रुक्मिणीजावा * बालक नाम प्रद्युमनपावा
शोभासदन मदन अवतारा * हरिप्रतिबिंबमनहुँअतिप्यारा

दो० सम्बर राजा पवन ह्वै हरिलैगा रिपुजानि।
दीन्हेसि डारि समुद्रमहँ लीललीन मीनानि॥

धीमर मीनपकरि स्वइलीन्हा * जाइभेंट सम्बरको दीन्हा
चीरतसुतनिकसा महिपाला * सौंपिदीनरतिका तेहिकाला
पांच बरष का भा जबबारा * भेदपाइ सम्बर को मारा
लै रतिसंग द्वारके आये * मानहुँ प्राण रुक्मिणी पाये
भातब आनँदसहित विवाहू * बसीसदन रतिसह नरनाहू

दो० श्रीगुरुदेवादास के चरणकमल धरिमाथ।
कृष्णायन यह अयन को पूरकीन्ह रघुनाथ॥

द्वितिया अयनकहौं समुझाई * पन्द्रहसै पचास चौपाई
दोहाएकसै सत्ताइस जानों * सोरठचारि सोऊ पहिंचानों
रोलाछन्द नवै हैं सोई * नवै कुँडलिया यामें जोई
कुकुभाछन्द तीनि हैं आता * तीनिगीतिका यामें ताता

दो० भुजँगप्रयाता एक है एक सवैया छन्द ।
एक कवित चामर सुयक एक त्रिभंगी कन्द ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतकृष्णायनरुक्मिणीमंगलप्रद्युम्नउत्पत्तिअरु
रतिसंगविवाहवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

इति कृष्णायनखंडस्समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

❀ अथ विश्रामसागर ❀

श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतरामायण

बालकाण्डप्रारम्भः ॥

श्लोक ॥

वपुवनजविनीलं लोकलावण्यधामं
सुखनिधिसमशीलं लोहिताक्षंविशालम् ॥
करधनुशरधारीकीटकंपिंगवस्त्रं
विधिहरिहरमीशंजानकीशंनमामि ॥ १ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं ब्रह्मांडपुराण मत रघुपतिखंड बखानि ॥
श्रीगुरुदेवादास के चरणकमल धरिमाथ ।
वर्णत सीताराम गुण सुखप्रद जनरघुनाथ ॥
कथा अलौकिक कुशल सुनि करै न मनसंदेह ।
राम अनन्त अनन्तगुण कतहुँ होयगो येह ॥
हाथ जोरि बोले वचन पुनि शौनक अभिराम ।
क्यहि कारण अवतार जग लीन परात्पर राम ॥

सो० सुनि सुमंत सुखपाय बोले मुनि हरिगुण सुनहु ।
जो वरणे गिरिराय गिरिजा प्रति सोई कहब ॥

एक समय कैलास मँझारी ❀ बैठे रहे उमा त्रिपुरारी
मन प्रसन्न शंकरकर जानी ❀ बोलीं शिवा जोरि युग पानी
राम सच्चिदानन्द निकेता ❀ नरतनधरेंनिनाथक्यहिहेता

कीन्हेनिचरित कौन विधिकेरे * सो सबनाथ कहौ हित मेरे
ज्ञानहुतेपि श्रवणसुख भारी * सनकादिक जहँ रमेविचारी
सुनि शंकर बोले मृदुबानी * धन्य धन्य तुम धन्य भवानी
राम चरित पूछेउ सुखदाई * सो अब सुनो कहौं मैं गाई
कीनचहत लीलाहरि जबहीं * ठाढ़ करतहैं कारण तबहीं
जैसे विशिख चलावै कोई * प्रथमै धरत निशाना सोई
उभयदेव जाने अभिमानी * अरिकरिशरणभये भयमानी
तीसरहेतु मनुहि वरदाना * दीनरहे प्रभु कृपानिधाना
तूर्ययुद्ध जानकिहि देखावन * पंचमजग विरागउपजावन
षष्ठमुनिजन सुमिरणकीन्हा * भक्तवछललखिदरशनदीन्हा
सप्तम देखि धरम की हानी * अष्टमप्रीति जनककी जानी
नवम वचन विधिके बहुतेरे * कीन्हे चहैं सांच त्यहितेरे
दशम दशानन सबै सताया * वधनहेतु प्रकटे रघुराया
यहिविधि हेत हजारन जानौ * इतनेही हित जन्मन मानौ
पुनि गिरिजा बोलीं करजोरी * राम कथापर प्रीति न थोरी
नाथकहौकेहिविधि जगदीशा * वपुधरि निधनकीन्हदशशीशा
केहिविधि भवनबसेसुखकारी * सुनिलागे तब कहनपुरारी

दो० इकरावण जय विजय में युगल जलंधर आप।
तीसर रावण शम्भुगण चतुरथ भानुप्रताप॥

यहिविधिकल्पकल्पप्रतिरावन * होतकरत हरिवपुधरिपावन
ज्यहि कारण साकेतविहारी * प्रकटे तासुकथा सुनुप्यारी
नामप्रताप सखा प्रभुकेरा * महिअवतरेउ आइप्रभुप्रेरा
सत्यकेतु नृप केकयदेशा * तस्यभवनजनुउयउ दिनेशा
नाम प्रतापभानु बलधामा * कीन्हराजरिपुदलअभिरामा
एकबार वनगयो शिकारा * तहांकपटमुनि असुरनिहारा

तिन्हैं लोभवश चीन्ह्यों नाहीं ❋ गुरुबनिकिहेसिपाकघरमाहीं
गोपलअशन भई नभबानी ❋ विप्रनशाप दीन्ह दुखमानी
राक्षस होउ कुटुम्ब समेता ❋ ते जहँ भये सुनो सो हेता
ऋषिपुलस्त्य सुतब्रह्माकेरे ❋ रहे तपकरत मेरुके नेरे
तहँतृणबिन्दु राजऋषिरहेऊ ❋ कन्यातासु क्रांतिकर कहेऊ
सखिनसहितसोदिनप्रतिआवै ❋ कलबल मुनिके निकटमचावै
सुमिरण ध्यानबनै नहिंराई ❋ तबपुलस्त्य असकहारिसाई
आसपास जो हमरे आवै ❋ प्रमदा पुत्रवती ह्वै जावै
कन्या गई रहा अवधाना ❋ जबतृणबिन्दुध्यानकरिजाना
तबसोइसुतामुनिहिंबरिदयऊ ❋ त्यहिते विश्रवाको सुतभयऊ
बड़ो भयोपितु आयसु पाई ❋ करनलाग तपकानन जाई

दो० भरद्वाज मुनि के रहै कन्या सुयशा नाम।
विश्रवसहिबरिदीनातिन नेहसहित अभिराम॥

तिनके भये कुबेर विधाता ❋ कीन्हेउ ताहि यक्षपतिताता
तदपिएलबिलदिनप्रतिआई ❋ करहिंमातु पितुकी सेवकाई
यहिविधि बीते बरष अठारा ❋ तबकुबेर निज हृदय विचारा
जो ममपिताअपर त्रियबरहीं ❋ तो दुनहुँन की सेवा करहीं
मयदानव याच्यो अभिरामा ❋ माया देवि सुवक्षा नामा
तिनकेहित निजदूत पठावा ❋ सुनिमयदानव वचनसुनावा
विप्रै भिक्षा मांगन चाही ❋ हमनिजसुता विवाहब ताही
औरौ वचनकहे कटुनाना ❋ दूत धनदते आइ बखाना
सुनिकुबेर निजसैन बटोरी ❋ चढ़े तहां भै मारु न थोरी
लाये तिनहिं जीतियहिरीती ❋ दीन्हींपितहिपरणि सहप्रीती
विविधभांति कीन्हीं तिनसेवा ❋ देखि प्रसन्न भये मुनिदेवा
सांझसमयलीन्हेंनिरतिदाना ❋ यद्यपि मुनिवरदोष बखाना

भई गर्भसंयुत यहिभावा ❋ जन्मसमयकर अवसरआवा
उलकापात होन तब लागे ❋ गर्जैमेघ समय बिनआगे
रविशशिग्रहणपवनचलिजोरा ❋ दिनकीराति भईअतिघोरा
कांपिउठी महिदेव डराने ❋ सब विप्रनके पेट पिराने
दुष्टमुदित मुनि भये मलीना ❋ अग्नितेजहतनखद्युतिछीना
उदितकेतु नभ जम्बुक बोले ❋ श्रुतिदलकोरलखेविधिखोले
प्रथमैं सुत देवी युगजाये ❋ रावण कुम्भकर्ण कहवाये
कहुँकहुँ कहत केकसीमाता ❋ सोजय विजय समयकीबाता
भये सुवक्ताके सुतपाछे ❋ त्रिजटाअग्र विभीषणआछे
मायासुत जन्मेकर लेखा ❋ खर दूषण त्रिशिरा सुपनेखा
जब कछु भये सयाने नीचा ❋ करैं उपद्रव कानन बीचा
खगमृग एकहु वचन न पावैं ❋ तपतमुनिन कहँ जाइसतावैं

दो० मारन मोहन बशाकरन उच्चाटन अस्तम्भ।
आकर्षण सब भांतिके पढ़ैं सदाकरि दम्भ॥

निशिचर प्रथम सुरनरणभाने ❋ बचे ते रहे पताल दुराने
तिननिजवंशअवनिपरजान्यो ❋ छिपिकरि आवागच्छ सुठान्यो
यकदिनदनुजपूज्यअसकहेऊ ❋ करहुतपस्या जो सुखचहेऊ
अमर विना जगस्वप्न सरीखा ❋ लागेतपन सकलसुनिसीखा
अर्द्धअंघ्रिरविदिशि दृगदयऊ ❋ दिव्यसहसदश संवतगयऊ
महाकठिनतपलखिविधिआयो ❋ दशमुखखललखि वागबुलायो
बैठिगिरा तेहिजीह मँझारा ❋ तब विरंचि वरमांगु उचारा
बोलासुनि रावण हमनाहू ❋ नरहरितजि न मरैं करकाहू
एवमस्तुकहि अजतहँ आये ❋ जहांविभीषण ध्यानलगाये
सुजन जानि बोले अनुरागी ❋ भावे सो लीजै वरमांगी
कह्यो विभीषणदोउ करजोरी ❋ हरिपद प्रीतिबढ़ै प्रभुमोरी

एवमस्तु कहि पुनि धरिधीरा ❋ पहुँचे कुम्भकर्णके तीरा

दो० ताहिदेखि वागीश निज मन में कीन्ह विचार।
जो यह नित भोजन करी नाशी सब संसार॥

सो० करि यहि भांति विवेक प्रेरिगिरा फेरी उपल।
मांगेसि वासर एक जागहुँ सोवहुँ मास षट॥

कहितथास्तु बहुरि विधिडोले ❋ खर दूषण त्रिशिराते बोले
तिन मांगा हमहोई वीरा ❋ अन्त समय जाई हरितीरा
देखि सोत्रिजटा शीश नवावा ❋ होइ प्रीतिहरिपद वरपावा
पुनि लंकिनी नवायो शीशा ❋ बोले तब त्यहिते वागीशा
शाखामृग तुमका जब मारी ❋ तब छूटी यहदेह तुम्हारी
दिव्यरूप धरि हरिपुरवासा ❋ होई तब निशिचरकर नासा
यहिविधिविधिसबकावरदीन्हा ❋ पुनिनिजलोकपयानोकीन्हा
दशमुखजो अजते वरपावा ❋ प्रमुदितह्वैसोइकविहिसुनावा
कह्यो शुक्र ह्वैगै बड़ि भूला ❋ नरवानर क्योंतज्यों समूला
बोला कौन चूक इनलागी ❋ डरैंवृथा तृण दारुहि आगी
असकहि लाग करन ठकुराई ❋ निशिचर निकर रहे तहँआई

दो० मयतनया मन्दोदरी हेमाते संजात।
बरिदीन्ही तेहिरावणै समुझिसबल भलनात॥
नारि मनोहर पाइकै उठा अधिक हरषाइ।
कुम्भकरण त्रिशिरादि पुनि ब्याहे पांचौभाइ॥

सानंदनि वृकदंत कुमारी ❋ सो भइ कुम्भकरणकी नारी
नगदन्ती केहरि मखजाई ❋ सोवल्लभा विभीषण पाई
रदभखके कन्या त्रैवरणी ❋ खरदूषण त्रिशिराकी घरणी
वनितन सहित सो पांचौभाई ❋ करहिंभवनसुख शोकविहाई
यकदिनदशमुखपितुपहँगयऊ ❋ त्यहिक्षणधनपतिआवतभयऊ

बैठेधनद पितहि शिरनाई * मुनिकीन्हो आदरअधिकाई
कछुककालरहि आयसुमांगी * गये कुबेर भवन अनुरागी
आदर अधिक पिताकृतदेखी * रावण उरभा क्रोधविशेखी
खलनकेर ये लच्चण आहीं * परप्रभुतालखिजरिबरिजाहीं
उठिऋषिढिगते मंदिरआवा * जननीते वृत्तांत सुनावा
त्यहितबकहा धनदये अहहीं * कंचनकी लंकामें रहहीं
चारोतरफ सिंधु है जाके * अमरपुरी नहिंसमसरिताके
सो लंका तव नानाकेरी * बसे आपु ममपितहि खदेरी
सुनिदशमुखअतिउठारिसाई * दललै लंक गशेरिसि जाई
प्रथमकुबेर युद्ध अति कीन्हा * पुनिह्वैश्रमितत्यागिगढ़दीन्हा
भागत देखि निशाचरराई * लीन्हेसि पुष्पकयान छिनाई
लंकविलोकि परमसुखमानी * कीन्ही तहँ रावण रजधानी
यथायोग्यपुनि निशिचरनाहू * दीन्हे भवनबांटि सबकाहू
तबकुबेर निज कुटुँब समेता * अलकापुरी बसाइ सचेता
आपुगये सुरपतिके तीरा * सकल व्यवस्था कहीअधीरा
सुनिसुरेश सबदेव बुलाये * हनिनिशानलंकहिचढ़िआये
दशमुखलै निकसा कटकाई * होइ इन्द्रते लगी लराई
अस्त्रशस्त्रछूटैं विधि नाना * अगणितअसुरहोइँबिनप्राना
वासवकोपि वज्र यकमारा * गिरामूर्च्छितबअवनिमँझारा
निजगजते तनुमर्दनलाग्यो * मानहुश्रमित जानिअनुराग्यो
कुंभकर्ण तब भिरेउ प्रचारी * व्याकुलभयेअदितिसुतभारी
रविसुतसैनाविचलनिजजानी * झपटि दंड मारेउ उरतानी
रावण अनुज दंडगहिलयऊ * सहजैनिजमुख मेलतभयऊ
राखिउदर शठ सोवनलागा * षटमहिना बीते पुनि जागा

दो० भयो तासुउर दाहतब उगिलिदिहिसियमदण्ड ।

तमकिलीन महिषेश पुनि मारेउ दण्डप्रचण्ड ॥

लागतशिरतेहि पीर न व्यापी ❋ भयो नींदवश पुनिखलपापी
तब हरिहने दण्ड अधिकाई ❋ सोवत सो अधिकहुसचुपाई
मुरछा ते तब रावण जागा ❋ पुनि देवन ते जूझन लागा
नवभुजदण्डधनुषशर लीन्हें ❋ मारिविबुधसबव्याकुलकीन्हें
लखिदिग्गजचिक्करिढिगआये ❋ धनुषबाण सब काटिबहाये
गहेसि तिन्हें तब भुजा पसारी ❋ मरिद्वीरदन दशन परचारी
दशमुख के उर लागहिं कैसे ❋ शिलामांझ बिनफरशरजैसे
लखिरावण तनकी कठिनाई ❋ तब सब दिग्गज चले पराई
धनद इन्द्र तब गे विधिपासा ❋ शीशनाइ सबहाल प्रकासा
कह विरंचि सुनु शक्र सुजाना ❋ रावण है तपबल बलवाना
त्यहिते तुमजनि करहुलराई ❋ गिरिखोहनमा जाहु पराई
सुरनसहित सुमिरहु करतारा ❋ बिनहरि को दुख मेटनहारा
स्रष्टा वचन सुनत मनमाने ❋ देवन ते तब आइ बखाने
सीख पुरंदरकी लहिकाना ❋ सबहुँनगिरिवनकीन्हपयाना
जाय दशानन सैन समेता ❋ शोधिसि देवन केर निकेता
जो सुरपुर घर मारग पावा ❋ तिन्हैंपकरिनिजलंकहिआवा
रावण लंकहि गा सुनिकाना ❋ बसेअमरपुनिनिजनिजथाना
सुरपुरविबुध बसे सुनिपावै ❋ तब खल दल लै आतुरधावै
रहैं सजग जब आवत जानैं ❋ भागिजाहिं सुर समर न ठानैं
एकदिवसअहमितअधिकाई ❋ श्वेतद्वीप में पहुँचा जाई

दो० युवतिन ते बोला बलकि कहांगये सुर बंक ।
तिन्हैं जीति संग्राम में तुम्हैं जाहुँ लै लंक ॥

सो० सुनि इकजरठरिसाइ पकरि पछारिउबारिनभ ।
दीन्हेसि सिंधु बहाइ ह्वै अचेत निकसा सुतल ॥

पुनिधरिधीर ठोंकि भुजबीशा ॥ बलिढिगजायनवायहुशीशा
वैरोचन सुत आदर दयऊ ॥ कुशलबूझितबबोलतभयऊ
तव प्रसाद सब आनँद होई ॥ सुर सम्मुख ह्वै सकत न कोई
तुमहूं निज शत्रुहिगहि लीजै ॥ चलिमहिलोकराजनिजकीजै
कहबलि कनककशिपुकेमंडन ॥ पहिरिलेहुतुमसुतदुखखंडन
लाग उठावन उठा न कोई ॥ याही पौरुष ते जय होई
जिन ये अल सब अंगन धारे ॥ ते भट गे इक क्षणमा मारे
तेहिते भवनजाहु लै प्राना ॥ चलातुरत मनमाहिंलजाना
वामन दीखजात अभिमानी ॥ लीनधराइ शिशुन के पानी
मारत लात जात गरिआवत ॥ निजनिजद्वारे फिरैं दिखावत
दीन देखि प्रभु दीन छुड़ाई ॥ पम्पापुर तब गर्जा आई
प्रथमैंबालि बहुत समुझावा ॥ सुनेसिनतबगहिबगलचपावा
संध्याकरि घर बांधिसिआनी ॥ छोरिदीन लखि तारा रानी
तब हरिपुर रेवातट गयऊ ॥ सहसबाहु तहँ क्रीड़त रह्यउ
जलअस्तंभकिहिसितेहिजाना ॥ पकरिपाणि हयशालेआना
शिरन दीपधरि नृत्य करावा ॥ सुनिपुलस्त्यमुनिजायछुड़ावा
लज्जितह्वै कुलगुरुढिगगयऊ ॥ निज वृत्तांत सुनावत भयऊ
कह कवि नरहरि दिहेउ बराई ॥ तेहिते तुमवर विजय न पाई
तासु शोचचित धरहु न ताता ॥ मैं जो कहौं करहु सो बाता
अबतुमनिजउराशिवपदधरहू ॥ जपतप जालभालमखकरहू
अभिमतवर शंकर ते लीजै ॥ विश्वसुवशकरिपुनिसुखकीजै
सुनि तुरतै गा सिंधु समीपा ॥ लागकरन तप दनुजमहीपा
बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा ॥ मालयज्ञ में पुनि मन दीन्हा
वर्ष पांच शत निजकर नीचा ॥ हुने शीश पावक के बीचा
यहिविधि मखकृतदेखिपुरारी ॥ कहेनिमांगुवररुचि अनुहारी

सुनिवाणी बोला दशभाला ❋ अजरअमरमोहिंकरहुकृपाला
कहशंकर सुनुवचन हमारे ❋ विधिके अंकटरहिं नहिंटारे
त्यहिते जो तपकीन्ह्यो भारी ❋ तुवतनबल होई अधिकारी
शीशसमर्पि दिह्यो तुम मोहीं ❋ एकते कोटि देव मैं तोहीं
शिववर अचलपाइ मनभावा ❋ हर्षसहित निजमंदिरआवा

हरिगीतिकाछंद ॥ आवाभवननिजकटकसाजिसुरेशपर धावतभयो । गयभागिहरिवैकुंठतजि लखिक्षीरदधिबलि ढिगगयो ॥ सोइपहिरिभूषणसकलतनमनमाखिकपिपतिपुर ढस्यो । मिलिचालिजोरामित्रतासुनिसहसभुजहूसोइकस्यो ॥

सो० अमर नाग नर यक्ष गंध्रब किन्नर वरसुता ।
जीति बरेसि परतक्ष बचे न लागे हाथ जे ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतरावणोत्पत्तिअरुयुद्धविषेजयपराजयवर्णनो नामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं बृहदसम्मतकछुक कोकिलकाव्यबखानि ॥

यहिविधिरावणविगतवियोगा ❋ करैलाग सुरदुर्लभ भोगा
पल भक्षै अरु मदिरापावै ❋ सन्ततसुरमुनि मनुजदुखावै
मयजहिपतिकृत रुचै न लेशा ❋ जबतब करे नीति उपदेशा
सोसिख दशकंधै नहिंभावै ❋ नीच नीचही कर्म सुहावै
एकदिवस नारद तहँ आये ❋ प्रथमैं दशमुख सभासिधाये
दण्डदोय ताकी रुचिगाई ❋ पुनि मयजाघरगे ऋषिराई
करिप्रणामसबविधिसनमानी ❋ आसनदै बोली मृदुबानी
देवदेखिमोहिं निजपतिकरणी ❋ संशय होतजात नहिंवरणी
ताकर होई कौन हवाला ❋ त्रिकालज्ञ फुर कहौ कृपाला

बोलेमुनि तपबल विबुधारी ✻ करत और करिहैं सुखभारी
पुनिसुरमुनिहित त्रिभुवनराई ✻ सूर्य्यवंश अवतरिहैं आई
पितुनिदेश करिहैं वनपावन ✻ तिनकीरमणि हरी तब रावन
लंकहि जब जगदम्बा आई ✻ तूलसरिस कपिलंक जराई
सेतु बांधि ऐहैं प्रभु पारा ✻ कुटुँब सहित करिहैं संहारा
होब सुखी सुरविप्र समाजू ✻ करिहैं अभय विभीषणराजू
असकहिकुंभकरणढिगगयऊ ✻ सुनिमयजाउर अतिदुखभयऊ
करि विचार मन राखिसि गोई ✻ हरिइच्छा होई सो होई
कुम्भकरणतेहिअवसरजागा ✻ मुनिहिदेखिउठिचरणनलागा
कछुहरिगुणऋषिताहिसुनाये ✻ पुनिमुनिवर विधिलोक सिधाये
कुम्भकरण पुनिसोवतभयऊ ✻ यहिविधिकछुककालचलिगयऊ
विपुल पुत्रभे रावण केरे ✻ सब विद्या बल बुद्धि घनेरे
वारिदनाद जेठ सुत ताका ✻ प्रथमजासुसुभटनमहँशाका
सोजब बीसअब्दकर भयऊ ✻ तब तप करनहेतु वनगयऊ
वर्षसहस्र किहेसि तपभारी ✻ आयशक्ति तब गिराउचारी
मांगुतात वर निज मन भावा ✻ मेघनाद असवचन सुनावा
यानलोप सबसाज समेता ✻ देहु एक मोहिं कृपानिकेता
जेहिपर चढ़िकरि मैं मैदाना ✻ जीतहुँ सकल वीर बलवाना
सुनिस्यन्दन तबदीन्ह्यो देवी ✻ बोली वचनजानि निजसेवी
यहिरथ का तुमधरेउ छिपाई ✻ अतिरण कठिनपरैजबआई

दो० तब यहिपर आरूढ़ ह्वै जायहु ब्योम मँझार ।
युगल यामकरि युद्ध तहँ जितिहौ सुभट अपार ॥
जो त्यागी द्वादश वरष नींद नारि अरुअन्न ।
सो सुतमारी तोहिंजग अपर न मारी जन्न ॥

सुनिशिरनाइ मुदितगृहआवा ✻ रथ दुरिधरिपुनिबनहिंसिधावा

तपकरिवरलीन्ह्यसि शिवतेरे ॥ समर समय भयहोयनमेरे
एवमस्तु कहिगे गिरिराई ॥ पुनिआवा गृह सोच विहाई
एकदिवस लै सुभट अपारा ॥ सुरपतिकेवनठनिसिशिकारा
सुनिवासवअति बहुतरिसाना ॥ चढ़िऐरावत कीन पयाना
मेघनाद लखि चापचढ़ाई ॥ मारे शर सजके बहुघाई
लागतशर विद्रुमकरि क्रोधा ॥ धावा पटलमरे तहँ योधा
पुनिगजझपटिधरणितेहिगयऊ ॥ वारिदनादतुण्डगहिलयऊ
सुरपति मारे वज्रघनेरे ॥ लागत मनहुँ कुसुम करिकेरे
नागशूंड़ि तेहिछांड़ी नाहीं ॥ लावागहि लंकहि पितुपाहीं
देखिपराक्रम निजसुत केरा ॥ दशमुखके सुखभयो घनेरा
बोलि सकल बाजन बजवाये ॥ उत्सवकरि बहुरत्न लुटाये
लंकहिगे हरि विधिसुनिकाना ॥ आये जहँ रावण बलवाना
हंसारूढ़ बिधातहि देखी ॥ दशमुखउरभा हर्ष विशेखी
पुत्रसहित उठि नायो माथा ॥ दर्शनदै मोहिंकियो सनाथा
अबसोकहौ आयो जेहिहेता ॥ तबबोले अज कृपानिकेता
वारिदनाद धन्य बलधामा ॥ अबते इन्द्रजीतभा नामा
शक्रहिदेउ अमरपुर जाई ॥ अबतुमते नहिं करी लराई
ब्रह्मवचन सुनि कह्यो सुरारी ॥ वचन तुम्हार सकैको टारी
कहिसिजाउसुरपति निजगेहू ॥ प्रभुप्रसाद कछु पुत्रहिदेहू
तबबिधि बाणशक्तियकदयऊ ॥ निष्फलहोबनअसकहिगयऊ
सुनि घननाद बहुतहरषाना ॥ नागलोकतब किहेसिपयाना
जहँबासुकी तहांचलिगयऊ ॥ देखिनगर अतिगर्जतभयऊ
सुनिधुनिअहिपतिव्यालबटोरी ॥ आइघेरिलीन्हेनि चहुँओरी
दोउदिशिते शर छूटनलागे ॥ भीजे सकल रुधिरते बागे
चौदह दिन तहँ भई लराई ॥ तब सब पन्नग गये पराई

रहेअकेले अहिपति जाना ❋ गहिसिझपटिलघुदामसमाना
तुरतहि निजलंकहि लैगयऊ ❋ रावणका दरशावत भयऊ
पुनिलावा निज मंदिर बीचा ❋ बांधेसि सेजसिराने नीचा
बासुकिउर भइ पीर अपारा ❋ तबफणीशअसवचनउचारा
दण्डचहौ सो हमसे लीजै ❋ जीवतमोहिं छाँड़िअबदीजै
कहघननाद सुनहु अहिनाहू ❋ कन्या दण्ड देहु घरजाहू
उरगराज तेहि जानि प्रचण्डा ❋ देनकही निज दुहितादण्डा
सुनिघननाद छांड़ि तब दयऊ ❋ हर्ष बासुकीके कछु भयऊ
लैआये निज लोकहि ताही ❋ दीनसुलोचनि सुताबिवाही
अति सुन्दरि घरनी जबपाई ❋ आवातब लंकहि हरषाई
मातपिता पद शीश नवावा ❋ पुनिपत्नीयुत निजगृहआवा
लाग करन सुख शोच विहाई ❋ अपरसुनो अब ताकर भाई
अक्षयकुमार सघनवनगयऊ ❋ महाकठिनतप साधतभयऊ
सहसवर्ष बीते हर आये ❋ मांगुताततवर वचन सुनाये
तबतेहिं कहा सुनहु भगवाना ❋ देहु मोहिं यक तीक्षण बाना
जेहिते रणरिपु जीतहुँ भारी ❋ दैकरशर अस कह्यो पुरारी
यहि बिशिखै लैघरसुतजाहू ❋ कपियकताजिजितिहौसबकाहू
सुनि समोदनिज मंदिरआवा ❋ त्यहि क्षणमंदोदरि सुतपावा
बीसव्यालयुत सुनिविभुधारी ❋ राखनयोगनमनसि विचारी
श्वानाननते कहेउ बुलाई ❋ आवहुयाहि गाड़ि कहुँजाई
दूत दाबि नैऋत्य सिधावा ❋ पृथ्वीखोदि तोपि तरआवा
रघुपतिचारित करनहितआगे ❋ मरा न सो बालक तेहिलागे
खायसि खनिमाटीयकमासा ❋ पुनिगानिकरिनीरनिधिपासा
त्यहिलखिराहुजननिअनुरागी ❋ भवनलाइनिजपालनलागी
यकदिनतहांशुक्र चलिआये ❋ बोले पुत्र कहां यह पाये

छाया गृहणि कह्यो तब आई ❀ ज्यहिविधिउदधितीरते लाई
दनुज पूजि पुनि वचन उचारा ❀ यह है रावण केर कुमारा
आदिहिते सब चरित सुनाये ❀ अहिरावण धरि नाम सिधाये
निजउत्पत्ति सुनीत्यहिजबहीं ❀ कूदिपरा सागर महँ तबहीं
निकसा तुरत वितल महँ जाई ❀ तहां रहै अहिपुरी सुहाई
सत्तरियोजन बसत ललामा ❀ चामीकरके अतिसुठिधामा
दर्वीकर तहँ रहै भुवारा ❀ सो वासुकी केर सग सारा
तासु पुरी लखि कौतुक नाना ❀ पुनिगा जहँ नित होत पुराना
तपप्रभाव तहँ सुनि अधिकाई ❀ सपदि विपिन पहुँचा हरषाई
वनमें लखी नदी यक बहई ❀ कामदना देवी तहँ रहई
सुथलसमुझितहँध्यानलगावा ❀ संवत चौदहसहस बितावा
सबविधिदेखिसमाधिअडोली ❀ वरम्ब्रूहि तब देवी बोली
इष्ट वचन सुनि बहु करजोरी ❀ मांगिसिवरकरिविनयबहोरी
अमरनते अधिकी सुख करहूं ❀ जीतहुँत्यहिज्यहिकेसँगलरहूं

दो० शेश महेश दिनेश सुर ईश अजेश अनन्त ।
मरौं न काहूहाथ मैं होउँ निशाचर कन्त ॥

पितहि कीन्ह अपमान हमारा ❀ सोऊ मोहिं याचै यकबारा
सुनि देवी बोली सुनु ताता ❀ करिहौतुमबहुविधिसुखगाता
त्रेता शेष समय दशशीशा ❀ याची तोहिं जोरि भुजबीशा
मारी तुम्हें न कोउ जगमाहीं ❀ कपि यक मम वाचावश नाहीं
तेहिप्रभुतेजनिकिह्योकुचाली ❀ तौतू अजर अमर कहिचाली
रहन लाग तहँ दनुजकुमारा ❀ अगणित खगमृगकरैअहारा
यहिविधि वर्ष पांचशत बीती ❀ तबखलकरनलाग अनरीती
विविध वेषधरि अहिपुर जाई ❀ अजगजहयखर डारहिखाई
एक दिवस दर्वीकर राजा ❀ धरनगयेत्यहिसहितसमाजा

अहिरावण करि कठिन लराई ❋ दीन्हे सकल नाग विचलाई
तब दर्विक अनन्त पहँ गयऊ ❋ सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
सुनि बोले करि शेष विचारा ❋ अहिरावणतपबलअधिकारा
त्यहिते नहिं ऐहौ बरिआई ❋ कन्यादै मिलि रहौ जाई
तब दर्विक बुलवावा ताही ❋ दीन्ही विधिवत सुता विवाही
कुन्दनि नाम पाय वर नारी ❋ हस्तिनिते तब गिरा उचारी
अब सब होउ विगत सन्देहू ❋ करिहौं मैं कानन महँ गेहू
असकहिकामदनाढिगआवा ❋ योजन नवकर नगर बसावा
असुरनसहित रहै त्यहि माहीं ❋ करनलागसुख सांगिनजाहीं
वासव चरित जौन मैं गावा ❋ आदिरमायण में सो पावा
जो रिपुकर प्रभाव कह कोई ❋ सो त्यहि घातक करयशहोई
त्यहिते राम लषण हनुमतकर ❋ वरणयोवीर्यन असुरनकरवर
यहिविधि सुत दशकन्धर केरे ❋ भये भूमिरिपु देवन केरे
जो सबहिन के चरित सुनावों ❋ बाढ़ै कथा पार नहिं पावों
औरौ निकर निशाचर वीरा ❋ मेघनाद आदिक रणधीरा
कुरुमुख खरमुख करिवरनादा ❋ जम्बुक भालु कुमुद करबादा
कुलिशदन्त श्वानानन पापी ❋ अधमकेतु शूकर सुखदापी
कुम्भ निकुम्भ अकम्पन शूरा ❋ केश प्रकेश महिषभष कूरा
कूट प्रहस्त समान नरोषी ❋ तारा अस्त बखत भषदोषी
खरदूषणत्रिशिरा मतिअन्धा ❋ बकविराध अतिकायकबन्धा
कालनेमि सुबाहु मारीचा ❋ ऊर्ध्वकेश मञ्जारा नीचा
धूम्रकेतु लवणासुर सारे ❋ एक एक जग जीतनहारे
इन सबके संयुत दशभाला ❋ करै लङ्कबसि राज विशाला

इति श्रीविश्रामसागरेमेघनादअहिरावणविजयोद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।

बृहदरमायण कहौं कछु कौशलचरित बखानि ॥

एकबार सँगलै कटकाई ❋ विश्वविजयहित चलाबजाई
फिरिआवा तीनों पुरमाहीं ❋ सम्मुखसमर कीन केहुँनाहीं
तब रावण मन कीन गुमाना ❋ हमसमसुभट न जगमेंआना
तब सब योधा लिहिसिबुलाई ❋ आदरकरि निजढिग बैठाई
त्रिभुवन भेद लेनके हेता ❋ बाँटन लाग्यो देश निकेता
निशिचर अर्ब पचाससमेता ❋ काशमीर पठवा खरकेता
सोरठदेश दशानन गयऊ ❋ नब्बेअर्ब असुरसँग दयऊ
मूकरेश करनाटक दीन्हा ❋ खर्बसवाव असुरसँग कीन्हा
मञ्जारा मालवै पठावा ❋ उभय अर्ब तमचर लै धावा
वक्रबक्त्र निशिचरणाधीरा ❋ खर्ब अढ़ाई सँगलै वीरा
मारवाड़कर कानन बीचा ❋ आयरहा अधमाधम नीचा
भेषासन भटलै दश अर्बा ❋ चला कलिंगदेश सहगर्बा
गेरहअर्ब असुरलै तारा ❋ बंगदेशकहँ मुदित सिधारा
बीससहस्र अस्थिभष लयऊ ❋ अरुणमृत्तिकादेशहि गयऊ
अर्ब ऊर्ध्वकच नरभष पाई ❋ मगहदेश आवा हरषाई
चौदहअर्ब खुर्जनख पाये ❋ मुखविषलै गुजरात सिधाये
असितकोटिषोड़शखललीन्हेउ ❋ आरबदेश पयानाकीन्हेउ
अयुतकोटि भटलै मारीचा ❋ संग सुबाहु ताड़का नीचा
गाधिपुरीढिग कानन भारी ❋ रहेआयतहँ खल अघकारी
लक्षअठारह सहस छियासी ❋ लवणासुरलै खलबलरासी
घनवन कोलपुरी के पासा ❋ हर्षसहित तहँ कीन्हेउवासा
मनसहस्रलै भट बलवाना ❋ दण्डकवन इनकीन पयाना

दो० प्रथमै खर दूषण उभय तीसर त्रिशिरा वीर ।
चौथ विराट कबन्धकहि पंचम सब रणधीर ॥

शतशतयोजन वन विलगाई ❋ रहे कटकलै पांचौं आई
यहिविधिसबलदेशदशशीशा ❋ दीन्हेबांटि अधम रजनीशा
जहँतहँ विविधवेषधरि चरहीं ❋ हिंसाकरत न नेकहु डरहीं
कौनिउ बात कतहुँ लखिपावैं ❋ तुरतआइ रावणहिं सुनावैं
भुजबलविश्वस्ववशकरिमाखा ❋ सुभटस्वतन्त्रनएकहुराखा
मण्डलीकपतिपायप्रकासा ❋ कीन्हिसिसकलदेवनिजदासा
आयसुजासुदिहिसिकरिजोई ❋ सन्ततसभय भजै तेहिसोई
सादर वेद विरञ्चि सुनावैं ❋ दर्शन देन पुरान्तक आवैं
यमप्रतिहार पाकभष करई ❋ शक्रापयद छत्रशशि धरई
झारूदार पवन बलरासी ❋ महामृत्यु धोवत पग दासी
वरुण कुबेर नाग नर देवा ❋ आयकरैं सब यहिविधिसेवा
एकबार कैलासहि गयऊ ❋ सुमनसमानसुकरधरिलयऊ
मनहुँजोखिभुजबलथलराखी ❋ आवाभवनगवनअभिलाखी
यहि प्रकार बीते बहुकाला ❋ एकदिवसकर सुनहु हवाला
घननादादि रहैं जे वीरा ❋ तिन्हैं बोलि बोला रणधीरा
सुनौ रहैं सुर शत्रु हमारे ❋ तेतौ भे सब विवश बिचारे
विष्णुविबुध दिशि बारकबारा ❋ आये तहँ मैं मुष्टिक मारा
शतयोजन पर गरुड़ समेता ❋ गिरेजाइ फिरफिरे न खेता
सुखसहाय बिन सम्मुख तेऊ ❋ कबतक रहि हैं दुरे दुखेऊ
अबयक बचारहत भगवाना ❋ जाहिजपतमुनिसन्तसुजाना
सो न परत कहुँ दृष्टि हमारी ❋ त्यहिजीतनहितबातविचारी
साधुन वश सोरहै श्रुतिगावै ❋ जो वै अर्पत सो वो पावै
त्यहिते सन्त सतावो जाई ❋ जप तप करन न पावैं भाई
जबह्वैहैं यहि बलते हीना ❋ तबतेउमिलिहैं आइअधीना
तब मरिहौंकी छँड़िहौं देखी ❋ कीनचहीरिपुस्ववशविशेखी

सुनिधाये जहँ तहँ तमचारी * लागे करन उपद्रव भारी
योग यज्ञ कोइ करन न पावैं * विप्रधेनु जन धरिधरि खावैं
हरिहर घरपुर देहिं जराई * श्रुति पुराण कोउ सकै न गाई
जे जन दान पुण्य परकासैं * पकरिताहिखलबहुविधित्रासैं
जेहिविधिहोय धर्म कै हानी * सोइकरैंअहनिशिअभिमानी
बाढ़े पतित पाप समुदाई * तबतौ अवनि उठी अकुलाई
धेनुधामधरिगइ विधिलोका * कहतभईनिजविपतिसशोका
धीरजदै अज कह्यो बुझाई * यामें कछु नहिं मोरि बिसाई
तेहिते सकलदेव यकबेरी * करहु सप्रेम विनय प्रभुकेरी
दीनदयालु दीनजन जानी * करबकृपामिलिअस्तुतिठानी
जयजयजयजगपतिसुखकारी * जयजय करुणासिन्धुमुरारी
जयजय मायारहित अनन्ता * जयजय दुराधर्ष भगवन्ता
जयजयअविगतअलखअनूपा * जयजयसतचित आनँदरूपा
जयजय वेद भूमि उद्धरता * जयजयविबुधसन्ताहितकरता
जयजय सृष्टि उपावनहारे * जयप्रभु संकटहरो हमारे
रावण असुर देत दुखभारी * पाहि नाथ हम शरणतुम्हारी
इमि अमरनजबविनयसुनाई * गई गिरा तब गगन सुहाई

दो॰ अब सब निरभय होउ सुर भसुर सन्त सुभाय ।
तुम्हरे हित कौशलपुरी धरिहौं नरतनु आय ॥
कौशल्या दशरथ भवन लै स्वछन्द अवतार ।
करि तहँ बालचरित्र पुनि मरिहौं शत्रुतुम्हार ॥

सुनिनभगिरासकलसुखदाता * हरषेसुरसुनिसहित विधाता
तब ब्रह्मा देवनते भाखा * अब सब होउजाइमृगशाखा
हरिहितसदल विविधहरषाई * धरतभये कपि वपु जगआई
जो अवतार सबनके कहऊँ * बाढ़ै ग्रंथ पार नहिं लहऊँ

रहे पूरिमहिं गिरि वन नाना ❋ प्रभु मारग चितवैं बलवाना
यह सब चरित सुना विबुधारी ❋ जन्मतही हत करब विचारी
बसत सकल ममवश रविवंसी ❋ ते का सकिहैं मोहिं विध्वंसी
तद्यपि सजग रहे का हानी ❋ दियेअसुरकरि कछुतहँथानी
उत्पति मरण आदि कछु होई ❋ करिसम्मत पहुँचावै सोई
भये दिलीप भूप जब आई ❋ जानि असुर सब दिये उठाई
सुनि रावण बल देखन आवा ❋ द्विजलखि सबरानिन बैठावा
पूजत पद प्रकटेसि निजरूपा ❋ भागी भवन भीरुमणि भूपा
तब रावण सरयूतट आयो ❋ अर्चत तंदुल नृपति चलायो
पूंछा लोगनते तब कह्यऊ ❋ धेनुहि हरि इकमारन चह्यऊ
सुमिरत सपदि शालिहौं प्रेरे ❋ शत शर ह्वै लागे हरिकेरे
सुनिदशमुखमनअचरजआवा ❋ देखाजाय मृतक वन पावा
समुझिप्रतापगयो निजधामा ❋ नृपते हाल कहा नृपवामा

दो० रावणकृतसुनि अवधपति चंगुलभरिजललीन ।
पवनमंत्रपढ़ि क्रोधयुत दक्षिणदिशितजिदीन ॥
भये विशिखदशलाखलखि कहनृपलंकहिजाहु ।
सहित त्रिकूट समुद्रमहँ बोरि फिरहुतेहि नाहु ॥

सो० चले पवन गति मोरि जाते उलटावन लगे ।
मयतनया करजोरि दीन दुहाई नृपतिकी ॥
इहां न कोउनृप आहिं सुनिआयेमहिपालढिग ।
अकनिकह्यो गुरुपाहिं वइमुनि रहौचुपाइ अब ॥

इमि दशसहसवर्षचलिगयऊ ❋ रघुराजा तब परचो दयऊ
मारुतबाण दहन गृहलागे ❋ वनिताविनयवचनसुनित्यागे
बहुरिभयेअजअवनिपकानन ❋ मांझदेखिरणरच्योदशानन
अनिल असते कटकसमेता ❋ दीनताहि पहुँचाय निकेता

तेजवान लखि रहा चुपाई ❋ तेहि पाछे भे दशरथराई

दो० दश सहस्र रविकर लखै दशौं दिशा रथ जाहि ।
दशशिर रिपु प्रकटे सुवन कहिये दशरथ ताहि ॥
सुनि रावण निज दूतमुख मांगि पठायो दण्ड ।
हरि शर प्रेरे भूप कहि जड़्यो कपाट प्रचण्ड ॥

जो रावण पट लेइ उघारी ❋ तौ हम कर देई बिन रारी
मन्दिर द्वारगये सब मूंदी ❋ रहा उघारि असुरपति खूंदी
टसक्यो पट न भटक मुखमोरे ❋ मिली मार्ग मयजा करजोरे
तब रावण नभ बात विचारी ❋ विपिनजाइकीन्हिसितपभारी
वरम्ब्रूहि ब्रह्मा जब भाषा ❋ बोलातबदशमुखअभिलाषा
दशरथ नृप बीरजते सोई ❋ जग में पुत्र न प्रकटै कोई
सुनि स्रष्टा मनमें दुख माना ❋ एवमस्तु कहि कीन पयाना
तब दशमुख कोशलपुर गयऊ ❋ कौशल्यै हरिलावत भयऊ
सहित मँजूषा सागर जाई ❋ राघव मच्छ दिहिसि सौंपाई
चतुरानन धरि रावण रूपा ❋ लाये मांगि सुता सोइ भूपा
वनमें धरि विधि गे निजलोका ❋ तहँसुमंत पटखोलि विलोका
कन्या ते बोले मृदु बानी ❋ तुमहो किनकी सुता सयानी
तब कौशल्या गिरा उचारी ❋ हम हैं कोशलराजकुमारी
नहिं जाना को वनमें लावा ❋ सुनि सुमंतु तुरतै उठवावा
लै आये कोशलपुर तामा ❋ रोदन होत रहै नृपधामा
जाय मँजूषा भूपहि दीन्हा ❋ जेहिविधिमिलासोवर्णनकीन्हा
बोले नृप तुम कोहौ ताता ❋ कह सुमंतु सुनिये प्रभु बाता
अवधपुरी नृप दशरथ नामा ❋ धर्म धुरंधर सब गुणधामा
बलनिधिलैनिधिरघुकुलदीपा ❋ तासुसचिवहमअहनुमहीपा
सुनि राजा बोला कहि धन्या ❋ तव नृपकी बरिहौं मैं कन्या

तुरतै नाऊ विप्र पठावा ❋ नृपके टीका आइ चढ़ावा
चली बरात विपुल नरनाहा ❋ बड़ी धूमते भयो विवाहा
बिदा कराइ फिरे सब धामा ❋ मगखरादि रोंक्योसुनिनामा
कौशल्यैपलमुनिथलराख्यो ❋ शिववरदानअभयगुरुभाख्यो
आपसमरकरिअसुरबिडाख्यो ❋ देखिविजयसुरजयतिउचाख्यो

दो० तहँ बिरधासन सुत सुता नाम सागरा आनि।
दीन्हीं ब्याहि सुमंतु कहँ सुभग गर्गकुल जानि ॥

दीन्ह्यो दायज विविध प्रकारा ❋ भयेमुदितमुनिसहितभुवारा
पुनिह्वैबिदानिलयनिजआये ❋ बहुविधि दान याचकन पाये
तब कैकयी सुमित्रा परनी ❋ तिन पाछे ब्याही बहुघरनी
करहिं सदा सेवा सब रानी ❋ पालैं भूप प्रजहि सनमानी
नव सहस्र संवत चलि गयऊ ❋ तब नृपके मन विस्मय भयऊ
त्रयपन गे चौथो अब जाता ❋ हमैं पुत्र नहिं दीन विधाता
बिन बालक सुख कौने काजा ❋ सकलजानि दुखकेर समाजा
जलबिनसरजिमिगृहबिनदीपा ❋ तिमिबिनअङ्गजमलिनमहीपा
यहिविधिकरि विचारमनमाहीं ❋ आये चलि वशिष्ठके पाहीं
माता पिता गुरू बड़भाई ❋ साधुन के ढिग आपुइ जाई
चरणनाइ शिर आयसु मांगी ❋ निज कामना कही अनुरागी
दुख सुख मन्त्र ओषधी दाना ❋ सुहृदविनानहिंकरियबखाना

दो० सुनि वशिष्ठ बोले मुदित भूप धरहु मनधीर।
ह्वैहैं तुम्हरे चारि सुत गुणआगर वरवीर ॥

अबतुमसुत विभाण्डके जावो ❋ शृङ्गीऋषै इहां लै आवो
हैं नृप निकट प्रागमें आये ❋ लोमपाद मख हेत बुलाये
पठै अप्सरा कानन माहीं ❋ छलकरि सो लाई नृपपाहीं
रहै अदृष्टि तासुके देशा ❋ मख कराइ भे सुखी नरेशा

ऋषिहिशापडरजेहिविधिचाही ❋ दीन्हीं शांता सुता विवाही
सुनतै नृप निजमंदिर आये ❋ हयगजवाहन विपुलसजाये
रहीं सातसै साठिउ रानी ❋ द्वादश तीनि तायफा जानी
मन्त्री मित्रसेन अवगाहा ❋ सबके सहित चले नरनाहा
पुर बाहर निकसे नृप जैसे ❋ लागे होन सगुन तहँ ऐसे
देखा नकुल निडर दधि मत्सा ❋ विप्रतिलकयुत गोसहवत्सा
पूरण घट पटपीत निहारा ❋ बायें मधुप करत गुञ्जारा
दीपअन्न गणिकाकृत गाना ❋ अहिवाती तिय खाये पाना
नारि ससुवन फूल फल देखे ❋ दहिने पग बक ठाढ़े पेखे
चील्ह श्वान मुखभच्चसमेता ❋ श्रुतिधुनिआनँदहोतनिकेता
दहिने मृग मिल तीतर कागा ❋ सारस मोरशोर भललागा
खञ्जन उत्तर दच्चिण प्राची ❋ बायेंदिशि खर जम्बुकराची
मनमहँ हर्ष चलतपर होई ❋ त्यहिसमसगुनऔरनहिंकोई
हरि उत्पति कर कारण पाई ❋ मानहु सांच भये सब आई
यहिविधिदशरथप्रागहिआये ❋ लोमपाद मुनि लेन सिधाये
लाये निजमन्दिर सनमानी ❋ तब नृप नृप ते बातबखानी
लोमपाद सुनि अतिसुखपावा ❋ शृंगीऋषिते जाइ जनावा
तुम्हैं लेन आये अवधेशा ❋ जाहु नाथ अब इनके देशा
रामजन्म कर आगम जानी ❋ भूपसंग चलिभे मुनिज्ञानी
अवध नगर आये ऋषिनाथा ❋ पुरवासी सुनि भये सनाथा
सरयूतट तहँ भा मखसाजा ❋ जुरे विपुल वैखानस राजा

गीतिकाछंद ॥ नृप सरयूके तट कियो आरम्भ जब मख केरजू । सुनिरत्ननानाभांतिहयगजभूपलायेढेरजू ॥ तहँलिये अगणितहेमघट द्विजभरेउदकललामजू । यज्ञांतकेअस्नान कारक महामङ्गल धामजू ॥ अरु ओषधिन को सुरस दीन्ह्यो

ओषधीशपठाइजू । विधि विष्णुश्री सलिलेशसिद्धी शम्भुगण सुखपाइजू ॥ दिशिपूर्व पश्चिम और दक्षिण सिन्धुको वरवारि जू । नवरत्न खचित सुकुंभ आये भरे सहसन भारिजू ॥ धन दियोधनद पठाइबहु रहे यदपि इतकमनाहिंजू । अमरेश पठये देवता सब गुप्तरक्षक ताहिंजू ॥ अतिऋद्धिमें महिपाल शोभित भयो वरुण समानजू । जब तब यथोचित कर्मकृत किय गुरुनिदेश प्रमानजू ॥ महिदेव भोजन रत्न दान सुदेइ आहुतिपर्मजू । यजितृपित कीन्ह्यो सुरनकहँ सब भांतिसों सहधर्म जू ॥ सुर विप्रआदिक वरणचारों भरे मोद ललामजू । वसुअन्नदान महान आहुति पाइकै अभिरामजू ॥ ऋषि नारदादिक वेदविद बहु लसत वेदीपासजू । लखि पूर्ण मख दिन अग्निकी नृपकरी विनय प्रकासजू ॥ जय यज्ञपति तुमदेवतनके वदनहौ अभिरामजू । तुमकरत पावन जगत ताते अहै पावक नामजू ॥ हौ बहत हव्य सुकहत ताते हव्यवाह समर्थजू । पुनि जातवेद सनाम याते भये वेद त्वदर्थजू ॥ हरि चित्रभानु सुरेश अनल हिरण्यरेता रामजू । हौ स्वर्गके तुम द्वारदाता ज्वलन शिखि सुख धामजू ॥ बिंगेश विश्वानर प्रवर्ग सुभूरितेजस सर्वजू । सुकुमारसू भगवान रुद्र हिरण्यगर्भ अखर्वजू ॥ ऋषि विप्र देवता दनुजके तुम यज्ञकारक आमजू । जग धूमकेतुवहेतुहै तबपाप नाशक नामजू ॥ हे सारभुक तुम देहु हमका सुमन वाञ्छित फल्लजू । करैं होम जो मन्त्र पढ़ि यह होय तो कर भल्लजू ॥

दो० श्रृङ्गीऋषि तब प्रीति ते दीन्हीं आहुति सार ।
प्रकटे पावक तेजनिधि लीन्हे हवि कर थार ॥

बोले रवि नृप हवि यह लीजै ॥ यथायोग्य निज रानिन दीजै
ह्वै हैं बालक चारि अनूपा ॥ जो प्रथमैं वरण्यो ऋषि भूपा

असकहि भे भुक अन्तर्द्धाना * सुनिसमाजसकलौसुखमाना
तबनृपलीन्ह्योबोलिविचित्रा * कौशल्या कैकयी सुमित्रा
गुरु वशिष्ठ हरि बाट बताये * चारि भाग भूपाल लगाये
उभय दीन कौशल्यै तहियां * तीसर भाग कैकयी कहियां
चौथ भाग के युगल बनाये * कौशल्या कैकयी गहाये
तिनमनमुदितसुमित्रहिदीन्हें * निजनिजभागपाइसो लीन्हें
यहिविधि रूपशीलगुणखानी * भईं गर्भ संयुत तिहुँ रानी
दिनदिन तेज बढ़त तनजाई * मनहुँ उगे विधु मन्दिरआई
सुखसमेत कछु काल बितावा * रामजन्म कर अवसर आवा
भे अनुकूल सकल शुभयोगा * प्रमुदितविश्व चराचरलोगा
वन उपवन फूले तरु नाना * शीतलमन्द चलै पवमाना
ब्रह्मादिक नभचर नभआई * वरषि सुमन दुन्दुभी बजाई
गावहिं गुण गन्धर्व सुरागा * अस्तुतिकरहिंदेवमुनिनागा
चैतशुक्ल शशि कर्क प्रमाना * नखतपुनर्वसुअभिजितजाना
मध्यदिवस विश्रामद जानी * प्रकटेतब त्रिभुवनसुखदानी

चौबोलाछन्द ॥ चैत्रमास सितपच्छपाकरवारजू । नौमीदिन श्रीरामलीनअवतारजू ॥ नीलजलदतनश्यामकाम छविकोटिजू । अरुणअलकबिचसुमनधरेजनखोटिजू ॥ शीशमुकुटमणिजटितजगमगतजालजू । श्रुतिमें कुण्डलललिततिलकदिहेभालजू ॥ कमलनयननासिकासमेतबुलाकजू । जनुकविकुजगुरुराहुवसेशुकहाकजू ॥ बिम्बाधरवरवदनरदनदमकैंघने । भृकुटीकुटिलकपोलगोल गहवरवने ॥ कम्बुकंठकलवचनविशदकौस्तुभलसै । उरमोतिनकीमालमनहुँघनमेंबसै ॥ भुजगभोगभुजदण्डचण्डधनुशरलिहे । कटिनिषंगसबअंगअलंकृतहैं किहे ॥ परदेहींपटपीतपिछौरीपाट

की । युगलजरकसी जामदामञ्जनघाटकी ॥ चरणकमल मुनिविमल जिन्हैंनितध्यावहीं । अंकुशादिबहुचिह्नसदामोहिं भावहीं ॥ देखिअलौकिकरूप भूपकोशलसुता । बोली जय जगदीशचरिततवअद्भुता ॥ वरणि न जानैंवेदभेदबिलखे दजू । प्रणतपाल सबकाल कुटिलकृतछेदजू ॥ जयअनंत सुरसंतकंतभगवंतजू । जनमनमानसहंसवंसविचरंतजू ॥ कोटिकोटिब्रह्माण्ड रोमप्रतिजासुजू । सोममजठरनिवास बड़ी उपहासजू ॥ तबप्रभुपूरबकेरि कथासकलौ कही । पुनि ह्वैबालकरूप लगेरोदनसही ॥ सुनि नृपरानी सकलउठींहर षाइकै । कौशल्यापहँ तुरत पहूंचीं आइकै ॥ दीखसुवनसुख राशिसकल सौंदर्य्यकी । कीनकृतारथहमैं कृपामुनिवर्य्यकी ॥ खबरिपाइ अवधेशपरमआनँदलह्यो । बाजहिंबाजनबोलिब जनिहनतेकह्यो ॥ आपसुमंतुसमेतगयेचलिधामको । शिशु मुख सुखदविलोकि करेउ परनामको ॥ पठयेकुलगुरुबोलिस हितमुनिआयहू । त्रिभुवनपतिहिनिहारि महासुखपायहू ॥ करि मज्जन महिपाल लीन कुश हाथमें । मुदितलगायोति लक द्विजनके माथ में ॥ नन्दीमुख निजपितरपुजायेहि तवरे । गुरुजनद्विज पहिराइ पायँसबकेपरे ॥ गो गज हय रथ हेम रत्न वाञ्छितदये । बहुरि बन्धुवर मित्रमान मंडत भये ॥ मागध वन्दी सूत जाहि जिन याच्यहू । सोइसोइदी न्ह्यो ताहि न कोई बाच्यहू ॥ विप्र वैश्य नृप शूद्र निधन वा धन मये । रामनिछावरिलेन भिखारीसबभये ॥ नगर नारिनर वृन्द विलोकनधावहीं । सहजशृंगार सँवारि मनोजलजाव हीं ॥ अंतःपुरधुर जाइ उतारे आरती । निरखिपुत्रकोरूप स्वरूप बिसारती ॥ धन्यआजुको दिवस धन्य अबकी घरी ।

धनिरानीकी कोखि जहां जन्मेहरी ॥ धन्य हमारे भाग लागफ लफूलमें । करैं निछावरि छोरिगहन अनुकूलमें ॥ पुरुषोत्तम परसाद चुकैनाहिं नेकहू । याचक ह्वै ह्वै भूप गये बहुते कहू ॥ बाजैं बाजन विपुल अप्सरा नाचहीं । गावैं गंध्रव गीत समय सुषमा चहीं ॥ देव दुंदुभी देइँ सुमन बरसावहीं । मृगमद कुंकुमसीर अबीर उड़ावहीं ॥ बंदनवार पताक केतु सजवायहू । गोपुर कलश सुरङ्ग अधिक छवि छायहू ॥ बालक वृद्ध जवान जहां तहँ डोलहीं । सुरधरि मानुषरूप भूप जय बोलहीं ॥ तेहि क्षण डावरकेर ढाढ़ियक आयहू । राजहि शीशनवाय सुवचन सुनायहू ॥ सुनि रौरेकर सुयश पैज हमहूं करी । निजभूषण सब देहु रुकुम गेराधरी ॥ चलत देखि बड़पुत्र कह्यो अस टेरिकै । दशदंती ममहेत लयायो हेरिकै ॥ बोला माँझिल तनय तुरँग तेंतीसजू । लायहु ममहित मांगि ग्राम गुरु बीसजू ॥ पाछे छोटाडिम्भ कह्यो डँडभरनको । लायहु महिषी मांगि बयालिसलरनको ॥ तब बोली माता सु ऐसही आयहू । ममहित तेरहुथान पालकी लायहू ॥ पानदान परधान टहलुई तीनिजू । सुनि नृप हर्षसमेत सोंज सब दीनिजू ॥ यहिविधि दानी देखि दास रघुनाथजू । लीनि भक्तिवरमांगि लागिगे हाथजू ॥ जोयह मङ्गलगावे सुनै सप्रीतिजू । बसैसो हरिपुरजाइ मिटै भवभीतिजू ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतरामजन्मउत्सववर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं भुशुंडी चरित कछु लोमश भणित बखानि ॥
राम जन्मके समय को उत्सव शोभा सुक्ख ।
वरणिसकैं नहिं शेष मैं कहा कहौं यकमुक्ख ॥

जो यह नवमी रहै उपासा ✻ सो नर बसै रामके पासा
वेद पुराण कहत सब कोई ✻ यहिसम बरत अपर नहिंहोई
जन्मस्थान दरश जो करई ✻ सो रविसुतपुर पांव न धरई
जन्मभवन के उत्तर कोना ✻ बीस धनुषपर महल सलोना
तामें पुत्र कैकयी जावा ✻ दशमीके दिन परम सुहावा
दक्षिण ओर सुमित्रा धामा ✻ तीसधनुषपरअतिअभिरामा
जन्मे उभय सुवन तिन तामें ✻ रुचिर दिवस हरि तिसरे यामें
षट तिल यव त्रै अंगुल होई ✻ चतुरांगुल कर मुष्टिक सोई
षट मुष्टिक का दण्ड बखाना ✻ अष्टदण्ड का धनुष प्रमाना
कैकयि भवन सुमित्रा केरे ✻ भई भीर मग मिलत न हेरे
यहि अवसर मुदमङ्गल शोभा ✻ कहि को सकै देखि मन लोभा
दशस्यंदन उर भा सुख जैसा ✻ वरणि सकै को जगमें ऐसा
तेहिक्षण जो जन मांगत जोई ✻ ताहि देत हँसि भूपति सोई
देश देश के याचक आये ✻ हय गय रत्न अनेकन पाये
भये रंक ते सब धनवाना ✻ जहँ तहँ करैं बड़ाई नाना
अतिप्रसन्न ह्वै देहिं अशीसा ✻ जियें सकल सुत कोटि बरीसा
अवधपुरी शोभा अधिकाई ✻ जनु देखन वरषाऋतु आई
अगर धूम घन घटा समाना ✻ बाजत बाजन गरजत जाना
वन्दीगण गुण वरणत मोरा ✻ भवन वेदध्वनि दादुर शोरा
वर्षत सुमन देव रँग भूरी ✻ कर्दम मन कुंकुम कस्तूरी
विविध जीव नर संकुल राजें ✻ विपुलविटपतृणहरितविराजें
जहँतहँ कलश दामिनी चमकें ✻ मन्दिर मणि खद्योती दमकें
मुदित धेनु सुर नर मुनि घरनी ✻ आकजवासअसुरक्षयकरनी
सम्पति पाथ बटुरि पुर लागा ✻ याचक पूरण भये तड़ागा
वचन वदन सब जहँ तहँ डोलें ✻ झन्न झन्न जनु झींगुर बोलें

यह सब चरित जाय तबजाना * जब उरबसैं आय भगवाना
निज निज नगर देव मुनि भूले * देखत फिरैं बीथिकन फूले
नाचहिं चपल अप्सरा नाना * हर्ष समेत देहिं नृप दाना
रत्न जटित पलना लैआवा * बढ़ई नेगु सुइच्छित पावा
कजरौटा लै दीन लुहारा * देखि भूप नग दये अपारा
मालाकार अग्रधरि डाली * पाये जलज थारभरि माली
नृपकर बाल सुबनिकम माला * मन भावत वर दीन भुवाला
यहि प्रकारते सब पुरवासी * पायनि नेगु दास अरु दासी
कौतुक देखि भूलि रवि गयऊ * मास एककर वासर भयऊ
खबरि पाइ उरधरि नृप ढोटा * विमनगयेरवि परबत ओटा
अस्त भये रजनी तब आई * बाजहिं घर घर अवध बधाई
गई रोशनी सब पुरसाजी * लागी छूटन आतशबाजी
जरे कमल फनूसैं झाड़ैं * मानहुं भयेन दिनमणि आड़ैं
स्वांग अनेक विदूषक करहीं * सबनरमगनविलोकतफिरहीं
जासु उदर बस भवन अपारा * सोवत सो प्रभु सूप मँझारा
सपनेहु जेहि मन खेद न होई * कहां कहां करि रोवत सोई
पालतविश्वसकलसुखपावत * कौशल्या त्यहि क्षीर पियावत
महिमा जासु जात नहिं जानी * तिन्हैं गोदलै बैठत रानी

दो० जाहि महेश विरञ्चि मुनि सुमिरत ध्यान लगाइ।
तिनके तन नित सरगरी तेल लगावति आइ॥

सुनो शिवा सन्तन सुखदाई * भक्ति बछलता प्रभु दिखराई
यहिविधि बासर पांच बितायो * छठवें दिवस छठी करवायो
जाति बंधु नृप नेवति जेंवाये * भूसुर सकल दक्षिणा पाये
देखिमहोत्सव सुर मुनिसारे * प्रमुदितनिजनिजभवनसिधारे
बरहें दिवम जो बरहो कीन्हा * पुनिबहुदानद्विजनकहँदीन्हा

कछुककालसुखसहितबितावा * नामकरण का अवसर आवा
गुरुवशिष्ठ नृप बोलि पठाये * विप्रनसहित तहां चलिआये
उठि नरेश सबहिन शिरनावा * षोड़श भांति पूजि सुख पावा
लोक वेद विधि मुनि करवाई *शिशुनसहिततिहुंरानिबुलाई
आईं मुदित सुवासिनि संगा * उमा रमा शारदधरि अंगा
मिलि ललननमा भईं शरीका * देखैं बालविनोद हरी का
चारु चौक बैठीं सब रानी * शोभाशील सुकृत की खानी
गोद मोद निधि बालक लीन्हे * चितवत बड़ भागी मन दीन्हे
रक्षा ऋचा ऋषिन उच्चारी * गणप गौरि द्विज साधु पुरारी
सबसबविधिपुजाइअनुरागे * गणिगुणिनामधरनमुनिलागे

दो० जासु तेज चर अचर में व्यापक व्योम समान ।
तासु राम असनाम जो सुखसागर भगवान ॥
विश्व भरत सोइ भरत भनि भवभञ्जन गुणजासु ।
जेहि सुमिरे रिपुहोइ हत नाम शत्रुहन तासु ॥
सब लक्षण युत होइ जो जानै जियके काम ।
रामानुज प्रिय भूमि धर तस्यलषण अस नाम ॥
ते बड़ भागी जीव जे करि हैं इन ते प्रीति ।
पैहैं बिनश्रम सकल फल जैहैं जग रिपुजीति ॥
यहि विधि सुन्दर नाम सुनि हरष्यो सब रनिवास ।
दीन दान सनमान निज गे मनमुदित निवास ॥

सो० पुनि कछु दिनमें आइ पहुँच्यो प्राशन अन्नकर ।
सुनि पुरलोग लुगाइ हर्ष सहित सबसे कहैं ॥

छंद। सखिआजुश्रीअवधेशसुतकोअन्नप्राशनआहिजू। चटचलहुचलिअवलोकिये चषचकृतचाहतकाहिजू ॥ सुनिसकलसाजिशृँगारआईं अमितमुदमंगलजहां । लखिललकि

लीन्ह्योलाइरानिनदीनआसनजसचहां ॥ बहुभांतिकेभये सकलव्यंजनबिबिधबिधिमिष्टानजू । नृपजातिबंधुबोलाइ पठयेपरतपहुँचेकानजू ॥ तबकौशिलाकेकैसुमित्रासुवननि जनिजउबटिके । अन्हवाइतनपहिराइभूषणबसन सुंदरडुप टिकै ॥ पुनिकनकथार भराइजाउरिधरीघृतमधुलाइके । म हिपाललैलैमुखजुठारतउठींयुवतिनगाइके ॥ परकारषटर सकेरजहँलौं सकलअधरछुवायहू । पुनितनकजलतेपोंछि आननजननिढिगपहुँचायहू ॥ हियहरषिशिशुमुखचूमिसुं दरिसकलदुलरावैलगी । अनपारभैजेंवनारनिजरुचिसरस तहँरहैकाखँगी ॥ यहिभांतिसुखदिनरातिभोगतधन्यपुरनरना रिजू । रघुनाथकोशलनाथसुतछविनामपरबलिहारिजू ॥

दो० बरष गांठि पाछे भई गई दगाई बाढ़ि ।
बिप्रन दीन्हीं द्रब्य बहु लीन्हीं कीरतिगाढ़ि ॥
बारेहिते पतिभृत्यज्यों रामलषण के प्रीति ।
भरत शत्रुहनकी रहत तेहीतरहकी रीति ॥

श्यामगौर जोरी दोउ देखी * जननिजनकसुखलहैंविशेखी
लै उछंग बहुविधि दुलरावैं * छविविलोकि तृणतोरिबहावैं
रूप शीलनिधि चारोंभाई * तदपि राम शोभा अधिकाई
मेचक मुदित कलेवर पीना * पहिरेपीत झंगुली झीना
उनमुख चिकुर चिक्कने सोहैं * शिर चौतनी अमोलिक मोहैं
ललितभालमसिबिंदुबिराजैं * भृकुटीकुटिलश्रवणअतिभ्राजैं
कठुला कंठ बाघनख नीका * नीरज नयन मयन शरसीका
द्वैद्वै दशन कपोल अनूपा * बिम्बाधर आनन द्विजभूपा
चिबुकचारु नासिका सुहाई * लटकनकीलटकनिमोहिंभाई
पंकजपाणि पहुँचियां राजैं * नखद्युतिलखिमुक्ताहललाजैं

उरवर बालविभूषण पेखा ❋ नाभि गँभीर उदर त्रैरेखा
कटिकिंकिणी कुधरिडगडोलैं ❋ झुनुझुनुझुनुझुनु नूपुरबोलैं
पदपाथोज जनित तल जोहैं ❋ चारु चिह्न अरतालिस सोहैं
स्वस्तिक अष्टकोण श्री केरा ❋ हलमूसल पन्नग शर हेरा
नभ नीरज रथवज्र अघाता ❋ ऊर्ध्वरेख सुरतरु सुखदाता
अंकुशध्वजअरुमुकुटछबीला ❋ चक्रसिंहासन दण्ड नवीला
चमरछत्र नर यव अरु माला ❋ दक्षिणपद ये चिह्न विशाला
गोपद पृथ्वी कुम्भपताका ❋ जम्बूफल अरधात्रक बांका
दर षटकोण त्रिकोण गदारा ❋ जीवबिन्दु सरजू सरिधारा
शक्तिसुधाथल त्रिबली मीना ❋ पूरण विधुबंशी वरबीना
धनुष तूणचन्द्रिका मराला ❋ बायेंपद ये चिह्न विशाला
एकएककर अमित प्रभावा ❋ महारमायण में शिवगावा
सन्त सहाय करन के हेता ❋ दृढ़करि धारे कृपानिकेता
इनसब चिह्नयुत रघुराई ❋ विचरतअजिर जननिसुखदाई
जानुपाणि किलकततहँडोलैं ❋ कलबलवचनमधुरहँसिबोलैं
कहैं मातु कब चारिउ भैया ❋ हमैं बुलैहैं कहिकहि मैया
कबकरबाण धनुहियांगहिहैं ❋ कब चलि राजसभामें जहिहैं
कबहुँक करमोदक पकरावैं ❋ जो मांगैं हँसि ताहि खवावैं

दो० जासु शक्तिते चराचर चलत खात हरियात।
तासु पाणिगहि आंगुरी अजिर चलावतमात॥
कलारूप धरिधरणि जिन लीन्हएक पगनापि।
सोइ चढ़िसकतन पलँगपर रहत देहरी चापि॥

कबहुँक हँसि नृप गोदे आवैं ❋ कबहुँकीकिलकिमातुढिगजावैं
कबहुँक परिपेलना में झेलैं ❋ कबहुँक बिबिध खेलौनाखेलैं
जिन्हैं काल सब काल डेराई ❋ सो प्रभु देखि डरत निजछांई

जासुअजावशशिवचतुरानन ❋ नाचतसोप्रभु नाचतआंगन
दम्पति प्रेम विवश भगवाना ❋ बालविनोद करत विधिनाना
एक दिवस करि मातु विवेका ❋ अशन सवांरे भांति अनेका
इष्टदेव श्रीरंग सभावा ❋ वसन ओटकरि भोग लगावा
तेहिक्षण तहँ शिशु पावतदेखा ❋ पेलना निकट गई तहँ पेखा
पुनिइतलखिपुनिउतलखिपावा ❋ कौशल्याकेमन भ्रम छावा
मातहि विकल जानि रघुवीरा ❋ दिखरावा निज थूल शरीरा
साढ़ेतीनि कोटि बपु बारा ❋ कच कचप्रति ब्रह्मांड निहारा
अण्डअण्डप्रतिआनविधाता ❋ अपरविष्णुशिवसुरदिशित्राता
अगणितरविशशिसरिततड़ागा ❋ किन्नरखगपशुनरमुनिनागा
पितरपिशाच निशाचर जाती ❋ काल कर्म गुण नाना भांती
देखी माया सबै नचावै ❋ लखी भक्ति जो तिन्हैं छुड़ावै
देखे द्वीप उदधि तरु खण्डा ❋ देखी अवधि सकल ब्रह्मण्डा
अण्डकोश प्रति आपन रूपा ❋ देखासोइ शिशुचरित अनूपा
हाथजोरि तब विनती ठानी ❋ जय प्रभु गुणातीत गुणखानी
जगतपितातुमअजभगवाना ❋ मैं बिनज्ञान पुत्रकरि माना
सुनि विनती बोले रघुराई ❋ हमैं छांड़ि केहि पूजत माई
हम तव भक्ति विवश तवतीरा ❋ गइउभूलि लखि बालशरीरा
तेहिते मैं निज भूति दिखाई ❋ काहूते जनि दिह्यो बताई
कौशल्या तब वचन सुनाया ❋ अबमोहिंजनिव्यापैतवमाया
एवमस्तु कहि पुनि भगवन्ता ❋ ह्वैगे बालक रूप तुरन्ता
देखि मातु फिरि दूध पियावा ❋ ईश जानि अति प्रेम बढ़ावा
कबहुंक लै पौढ़ै सुठि सेजा ❋ कबहुंक लेहि लगाय करेजा
कबहुंक कहै नींद किन आवै ❋ हितकरि मेरो लाल बुलावै
कबहुंक करि सब तन शृंगारा ❋ पठवै जहां भूप दरबारा

देखि नरेश लेहिं उरधारी ❋ चितवैं नरसब पलक बिसारी
जो कोई निज निकट बुलावैं ❋ प्रीति परखि ताके ढिगआवैं
मुनिजनध्यान लगावतजाही ❋ पुरजन अछत खेलावतताही
सबैसुलभ तिनका सब तीरा ❋ जिनपर कृपा करैं रघुबीरा
यकदिन कागभुशुण्डी तेरे ❋ कियेचरित अतिअद्भुतहेरे
कछुदिन में कनछेदन आवा ❋ हरषिसखिनतेसाखिनजनावा

गीतिकाछन्द ॥ सखिआजुनृपसुतकेरहैकनछेदनोचलि देखिये। दमदानहरिगुणगानजीवनजन्मकरफल लेखिये॥ नवसातसाजिशृंगारआईअयनजेहिरचनारची। चहुँभाइ करनगहाइदीन्ह्योमालपूरीगुरसची॥ हरिहँसतबिहँसतब्रह्मलखिधकधकीमातनकेहिये। भरदेतरोचनसींकतेश्रुति नीरधूरैकरि लिये॥ अतिचतुरलीन्हे छेदिदिप्रै उठे शिशु अकुलाइके। भरिनयन नीरजनीरजननी लीनहृदयलगाइकै॥ मणिवस्त्रमुक्ताकरि निछावरि दीनमहिदेवन घने। पहिराइपुरजनसकलमानहुँमाररतिवपुबहुबने॥ सुर अङ्गनाभीअवधवासी सरसदासीकेनहीं। रघुनाथउपमादेइतब जबहोइत्रिभुवनमेंकहीं॥

यहिप्रकार ज़ब चारिउभ्राता ❋ बड़े भये परिजन सुखदाता
चूड़ाकर्म आइ गुरु कीन्हा ❋ नृपबहुदान द्विजनकहँ दीन्हा
अनुजसखासबमिलनिजसेरे ❋ खेलैं खेल महीपन केरे
भूप रसोईं जेंवन आवैं ❋ जब तब मातु बुलावन जावैं
क्रीड़ासक्त देखि सब भाई ❋ बोली तब कौशल्या माई
अहो लाल हे लक्ष्मण भैया ❋ भरतबत्स रिपुसूदन कैया
अबक्रीड़ा दिशिचित्त न दीजै ❋ देरभई चलि भोजन कीजै
बैठे बाट बिलोकत राजा ❋ क्षुधितभये सब सखा समाजा

इमिसुनिप्रेमवचनचलिआवैं ❋ बैठि भूप ढिग भोजन पावैं
कौनेउ दिन आवैं नहिं टेरे ❋ जननी धरन जात तब नेरे

दो० मातहि आवत देखि प्रभु ठुमुकु ठुमुकु चलिदेत।
झपटि कहत तब भूप पहँ लैआवत करिहेत॥

सुभग शरीर सुरभि रज लागी ❋ झारि सुअंचल ते अनुरागी
लखि नृप निकट लिये बैठाई ❋ मिलि जेंवत तब चारिउ भाई
इतउत चितै चले पुनिभागी ❋ अरुणअधरहँसिजाउरिलागी
पुनि आवैं जहँ बालक सारे ❋ देखि मातु पितु होहिं सुखारे

दो० नृप रानिन कर भाग सुखसम्पति सुयश सुभाउ।
मैंका बरणौं एक मुख कहि न सकैं अहिराउ॥

खेलत देखि नारि पुर केरी ❋ जाइ भवन भजि आवैं फेरी
पुनि घरघूमि सखिनते कहईं ❋ जे कोइ पवँरि परोसे रहईं
जबते मैं नृप तनय निहारा ❋ तबते रुचत न जग ब्योहारा
असमनहोय खेलावहि करहूं ❋ टरौं न परि गुरुजन कहँडरहूं
कबहुँक निकसि दुवारे आवैं ❋ लै उछङ्ग पुरजन धरिलावैं
बदनचूमि कर राखि मिठाई ❋ रुखलखि महलदेइँ पहुँचाई
कबहुँकचुनतबिहँगलखिपावैं ❋ हाथपसारि धरन तबधावैं
उड़िजबजात करत मचलाई ❋ शुकसारिक दै राखत माई

इति श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतश्रीरामचन्द्रबाललीला
बर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
कहौं भुशुण्डी के चरित कछु रघुवंशबखानि॥

यहिविधिबालचरितप्रभुकरहीं ❋ देखिलोग उर आनँदभरहीं
यकदिन एक सलूका आवा ❋ नृप के द्वारे कीश नचावा
देखिराम ठानी मचलाई ❋ कहैं किम्वहिंकपि देहुमँगाई

भूप मँगाय देन बहुलागे ❋ तदपि न लेतरुदतपुनिआगे
तब नृप भाष्यो गुरुते जाई ❋ सुनि वशिष्ठ बोले हरषाई

दो० जेहिहित रोवत रामजी सो मरकट है आन ।
सुनो तासु उत्पत्ति मैं तुमते करौं बखान ॥

उत्तरदिशि सुमेरु गिरिभारी ❋ तहँ केसरी रहत बनचारी
तासु परम पतिबरता नारी ❋ नामअंजनी छबि अधिकारी
तेहिं यकबार कीन्ह शृंगारा ❋ ठाढ़ी गिरिपर पवन निहारा
बपुधरितन अस्पर्श सुकीन्हा ❋ लखिमोचही शापकटुदीन्हा
बोले तब नभसुत सुनु प्यारी ❋ ममअस्पर्श सकल तनुधारी
तेहिते मोहिंशाप जनिदेहू ❋ हम बरदान देइँ सो लेहू
होई तुम्हरे सुत बलवाना ❋ रामभक्त गुणरूप निधाना
असकहिअनिलअदर्शितभयऊ ❋ सुखयुतकछुककालचलिगयऊ
कार्तिकबदी चतुर्दशि बारा ❋ शनि के दिनभाप्रकट कुमारा
लखिपितुमातु कीन्हउत्साहा ❋ लागे सुत सेवन जसचाहा
प्रातअरुणरविनिरखिफलङ्गा ❋ ग्रसतभयो फलसरिसपतङ्गा
झपटि वज्र मारा सुरराई ❋ चिबुकमध्य तिहिमूर्च्छाआई
देखि पवनसुत लीन उठाई ❋ राखीरोंकि समीर रिसाई
चढ़े उदर सब देवन केरे ❋ आये तब आशुग के नेरे
करिविनती सुरसकलसुजाना ❋ लागे देन सुतहि बरदाना
कह ब्रह्मा होई बजरंगी ❋ लगी न ममशरशक्तिअभंगी
बोले बृहद जरी नहिं आगी ❋ इन्द्रकह्योममकुलिशनलागी
हरत्रिशूल यमदण्ड सुनावा ❋ बारि न बूड़ै बरुण बतावा
बोलीशक्ति भक्तिलखि नेकी ❋ वचन मोर यहि सकै न छेकी

दो० यहि विधि सब बिबुधन दये बर बरदान निहोरि ।
सुनि प्रसन्नभे श्वसन तब छूटी पवन बहोरि ॥

प्राणदान देवन जब पाये ❋ महाबीरकहि भवन सिधाये
हनूमानहनि दुरमतिनासा ❋ लागे रहन मातुपितु पासा
जबतबजाइ मुनिनके तीरा ❋ डारै फोरि कमण्डलुनीरा
बिटपतोरि गिरि शिखरढहावै ❋ बलअतिभूरि अंगधुनिहावै
ऋषिनशापतबदीन्हबिचारी ❋ भूलिजाहु निज पौरुष भारी
जब जब कोई सुरति कराई ❋ तब फिरि तुम्हरे बलह्वैआई
रहे तहां कछुदिन हरिआसा ❋ पुनिगे पढ़नसहसगो पासा
लागे पढ़न जोरिकरआगे ❋ करतमुखागर उन्मुखभागे
विद्यासकलपाइ असभाषा ❋ मांगो जो तुम्हरे अभिलाषा
बोलेरबि ममसुत सुग्रीवा ❋ ऋष्यमूकपर रहत सदीवा
तिनके तीर रहो तुम जाई ❋ मिलिहैं तहां तुम्हैं रघुराई
गुरुअनुशासनमानि बिधाता ❋ रहत भानुसुतके ढिगताता
रामलषण बोले तिहि हेता ❋ लेहु मँगाइ ताहि करि चेता
तुरत भूप भट भूरिपठाये ❋ सकलसुकंठपास चलिआये
जोनृपकह्योसोबर्णन कीन्हा ❋ सुनिसुकंठ तुरतै कपिदीन्हा
लै आये मन्दिर हरषाई ❋ देखिराम उरलीन लगाई
हनूमानके अतिसुखभयऊ ❋ मिलिलघुरूप तहां ह्वैगयऊ
जहँ जहँ खेलैं रामसुरंगा ❋ तहँ तहँ कपिराखैं निजसंगा

दो० यकदिनयकशिशु अन्धको डारी रजप्रभुपृष्ठि ।
उरहन दै रघुनाथ तिहि देखरायो दैदृष्ठि ॥

एकदिवस यकबानिकआवा ❋ बेंचनहित नगनृपहिदिखावा
लै रघुनाथ कूप में डारा ❋ देहु वहै हँसि भूप उचारा
तुरतै वृक्ष कूपते जामा ❋ लागे लाल अमोलिक तामा
फरतभरतपुनि लागतभारी ❋ लैलै जात सकल नरनारी
सातदिवस भा लूट बिशेखी ❋ पुनिसोबिटप परा नहिं देखी

यह लीलालखि भूपतिशाहू ❋ चकितरहे मनपरम उछाहू
यकदिनएकबधिकचलिआवा ❋ अद्भुतपत्तीनृपहि दिखावा
देखि राम लै दीन्ह उड़ाई ❋ बोला खग स्वइ देहु मँगाई
सुनिप्रभुतासु पत्तमहिगाड़ा ❋ भा तरु तुरत जमें जड़ डारा

दो० लागत फल फूटत तुरत निकसत उड़त बिहंग।
बैठत महलनपर घरन धावत बालक संग॥
पुर बासिन पाले सबनि देखे बिहँग अनूप।
सुनि सुनि तहँ लैलै गये देश देश के भूप॥
बधिकै दीन्हीं द्रव्यबहु भा सबके सुख सोत।
यह प्रभुता कछु बहुत नहिं इच्छाते जग होत॥

यहिबिधिसानुजरामसुशीला ❋ आठबर्ष कीन्हीं शिशुलीला
जब पौगण्ड भये सब भाई ❋ पढ़न हेतु पठये रघुराई
गुरुपद जाइ नवाये शीशा ❋ लगे पढ़ावन मुदित मुनीशा
पढ़तभये प्रथमैं बिनखेदा ❋ सामदाम अरु दण्ड विभेदा
मिलि सनेहकीजे स्वइसामा ❋ खान पान धन दीजै दामा
भेदसोसबलहि फेरि मिलावै ❋ दण्डमारदुखत्रासहि दिखावै
राजनके लक्षण ये जानौ ❋ तिन पाछे अस पढ़ौ बखानौ

दो० वर्णवेद उपवेद अँग आदि शास्त्र उपशास्त्र।
सकल पुराणै संहिता तन्त्र सुमन्त्र कलास्त्र॥
निकस्यो नहीं तवर्ग के अन्तक अक्षर शुद्ध।
जान्यो तब रघुनाथ सुनि हैं गुणबिषे विरुद्ध॥

अचिरकालसबविद्यालीन्ह्यो ❋ बहुविधिगुरुहिदक्षिणादीन्ह्यो
भयेमुदितमन पितुअरुमाता ❋ खेलनजाहिं जहां सब भ्राता
देखिलोग सब होहिं सुखारी ❋ थकित बिलोकैंछबि नरनारी
यौवन जरठ अपर जे बारे ❋ लागहिं सबन प्राण ते प्यारे

सुदिनसमुझियकदिननरनाहा * दीनजनेऊ सहित उछाहा
नित्यानन्द निरोधि अपारा * त्तणत्तणबाढ़तअवधमँझारा
पुरबासी सब ताके माहीं * रहैं निमग्न सुरति कछु नाहीं
नारदादिमुनि दिनप्रतिआवैं * चारुचरितचहिचहुँदिशिगावैं
सुनिसुरसकल सराहहिंप्रेमा * सुमन चढ़ावैं हितनिज त्तेमा

दो० यक दिन ध्यान वशिष्ठमुनि करतदेखि ऋषिदेव।
कह्यो विघ्न करवायकै प्रकट मोद किन लेव॥

एक दिवस प्रभु सरयू माहीं * अनुजसखनयुतमुदितनहाहीं
असुर एक रावण कर प्रेरा * मगर रूप धरि मुख में गेरा
निकसे सपदि ताहि हरिमारी * सुनिपुरजन सब भये सुखारी
जिनजिनकेबालकत्यहिखाये * दीन्हेंकाढ़ि मनहुँ धरिआये
मातन दीन्ह्यों दान अपारा * गुरुप्रसाद कल्याण हमारा
इमि पौगण्ड अवस्था माहीं * कियेचरित्त बहुबरणिनजाहीं
पुनि सब बन्धु भये कैशोरा * रूपराशि पुरजन चितचोरा
दिनप्रतिसरयू करिअस्नाना * बहुविधिदेइँ द्विजनकहँदाना
कबहुँकचढ़िनिजनाउमँझारा * खेलैं इगजा मध्य निवारा
कबहुँकसानुज सखा सुजाना * खेलैं गेंद जाइ चौगाना
करकर कंदुक घूमत कैसे * हरिपद विमुख जीवजग जैसे
कबहुँकचढ़ि बरबाजि नचावैं * पुरबासीलखि अति सुखपावैं
कबहुँक बदिठाने घुड़दौरा * धरि निजनिज मोहैं यकठौरा
भरतसङ्ग जब बाजी लागैं * तब प्रभुकसे रहैं निज बागैं
कहैं सकल हारे रघुराई * जीते भरत भावते भाई
सुनि बकसतहयगय पटहीरा * प्रमुदित होइँ पाइ सब बीरा
कबहुँक अनुजसखनकेसाथा * विचरहिंपुरधनुशरगहिहाथा
यकदिन यकमज्जन कृतनारी * देखनलगी तासु महतारी

बोली बसनविना कोइ देखी * कोअसइन्हें छांडिमोहिंपेखी
तें नृप तने न अबै निहारे * दरे दृष्टि तेहि अंग हमारे
कबहुँकजाइअखारन लरहीं * अनुजसखनयुतकसरतकरहीं
कबहुंक राखि निशानामारैं * मज्जनकरि पुनिगृहपगु धारैं
देखिमातु अतिशय सुखपावैं * नृप युत भोजन हेतु बुलावैं

मञ्जुछन्द ॥ जेवनबैठेभूपमौलिनिजसङ्गसुवनलैचारी जी । सहितसनेहपरोसनलागीलषपलालमहतारीजी ॥ मोहनभोगमखानेकीहबिमधुरमलाईधारीजी । खोवा खांड़खरि कखरजूरी खाजा खुरमा खारीजी ॥ मालपुवामाधुरि मधु मिश्री मलिमाखनमें डारीजी । पन्नी पूप पटपरी पापर पाक पिराकपनारीजी ॥ मोतीचूर मूरके मोदक ओदककी उजियारीजी । सेमईसेवसैंजनासूरनसोवासरससोहारीजी ॥ उज्ज्वलभात भटाकरभरता भांतिभांतितरकारीजी ॥ मूंगमाखमरहटकीपहिती चनक कनक समदारीजी । बरी बरीक बरा बहुविधिके ककरो कटुकटहारीजी ॥ पाकरि कली फली मुनितरुकीकूषमाण्डकचनारीजी । परवर पोइपकौरी पालकपेठामनरुचिकारीजी ॥ अरुईआंबअँबिरतीअदरखअँवराअमितअचारीजी । रोटी रुचिरमिहीं मैदाकी घृतमेंबोरिनिकारीजी ॥ मेथीभरससेमिदलसरसो सोवाशुचिसुरवारीजी । चौराईतोराइतोरई मुरइमुरब्बाभारीजी ॥ डुभकौरी मुँगबौरी रिकवछ इँडहर चीर बँबौरीजी । खट्टीकढ़ीकरेला कुँदरू केलाफल फलहारीजी ॥ गरीवदाम छुहारा किशमिश पिस्ता दाख अपारीजी । खेखसा खीचचचेड़ा घेवरघन गुंभागुदियारीजी ॥ फेनीफूल निमोना डिंडसारूपरतालू ग्वारीजी । जलितजलेब अँदरसा कुकुनू दधिचटनीचटकारी

जी ॥ यहिविधिचारिभांतिषटरस के व्यंजनविपुलसँवारी जी । कनकथारमणिजटितकटोरिन भरिभरिधरे अगारी जी ॥ पंचकवरकरिजेवनलागेलखिहरषींनृपनारीजी । शीतलजल सरयू करबासितपीवतबारहुबारीजी ॥ कहतकौशलाभोजनकीजै बहुरिनपीजैबारीजी । गयनअघाइमाइ अबहमतेतनकौटरतनटारीजी ॥ दशस्यन्दननन्दनसुखरुखलखिउठेउतिष्ठविचारीजी । अनुगआइअँचवनकरवाये करअँगुछायोभ्फारीजी ॥ दीनतँबूलअरगजा कुमकुमलीन्होंअवधविहारीजी । सीयप्रसाददासदासिनि मिलि पायोसरबपछारीजी ॥ जेहिजूठनिकोसुरमुनितरसतपरसतक बहुँनडारीजी । सोईजनरघुनाथमाथधरि पावतबारहुबारी जी ॥ देवदनुजनरनागशगयुतजनजगदीश अगारीजी । जोजेवनाररामकीगावैतामुखकीबलिहारीजी ॥

तोटकछंद ॥ कबहूंवनजाइशिकारठनैं । मृगयादिकसाउजनाहिंहनैं ॥ जबशूकरनाहरदृष्टिपरैं । तुरतैंनिजबाजिनते उतरैं ॥ लखिरामकहैंहथियारधरो । यहितेअबएकहिएक लरो ॥ करियुद्धपछारतजोनसखा । तेहिदेतइनामश्रीरामलखा ॥ निजधामपठावतसाउजसो । घरआवतगावतराउजसो ॥ रघुनाथकहैंयहिभांतिप्रभू । नवनित्तचरित्रकरैंवरभू ॥

यकदिन यकशूकर वनआवा ✻ घुरघुराइ प्रभु सम्मुख धावा
गहिपदपटक्योभूमि भुजासू ✻ छूटत भयो दिव्य वपुतासू
अस्तुतिकरि असवचनउचारा ✻ पूरब प्रभु मैं रह्यों भुवारा
एकदिवस तवजन लखिपाया ✻ वशअभिमान नशीशनवावा
निन्दाकरि निजमंदिर आयों ✻ तेहि अपराध कोलतनुपायों
अब तवदरश दूरिदुख भयऊ ✻ असकहिपरमधामकहँगयऊ

यकदिन भै नाहर ते भेटा * तिहिशठ प्रभुपरकीनझपेटा
साधिबाण मारा रघुराया * तनुतजिसोहरिलोकसिधाया
यहिविधिवनशिकारमिलिजाई * पावनकरैं जीव रघुराई
खगमृगनिरखिनिकटचलिआवैं * तिन्हें न कबहूँ भूलिसतावैं
जे उतपात करैं गतिहेता * तिन्हें देइँ हति कृपानिकेता

दो० एक दिवस इकसिंहने बधी विप्रकी गाय।
गरजतडोलै पुरनिकट कोइपास नहिं जाय॥

सुनिरघुपतिकसिकटिपटबांधा * धनुषचढ़ाइ पाणिशरसाधा
मुदितजाइ सम्मुख ललकारा * खलहो सजग तोहिं मैं मारा
इतनासुनि सम्मुख सो धावा * पंचबाण मुखमारि गिरावा
तुरतभयो सो गन्धब रूपा * बिनतीकरि निजहालनिरूपा
महाराज मैं गन्धब अहऊं * इन्द्रसभा नित गावत रहऊं
एक दिवस नारद तहँ आये * नाथचरित तव वरणि सुनाये
तेहिसमाज मैं हँस्यों ठठाई * सुनिमुनि बोलेवचन रिसाई

दो० सिंहनाद सम करत शठ होउ जाइ हरि हार।
मरिहैं निज कर राम जब तब होई उद्धार॥
यहि तन पायों अमित दुख अब सबनाशेशोक।
अस कहि पदशिरनाइकै जातभयो निजलोक॥

तब नृपपहँ आये रघुराई * तहां विप्र ठानी मचलाई
कहतसुरभि सोई मम दीजै * भूपतिभनत अपर बहुलीजै
तब राघवबोले सुन ताता * झरितरुबहुरि न लागै पाता
गईबीति वय पुनि कहुँ आवै * समयचूकि फिरिकापछितावै
तेहिते तजहु आश तिहिकेरी * अपरधेनु लीजै बहुतेरी
तदपि न विप्रतजी हठताई * देखा चहत राम प्रभुताई
तब प्रभु कहा लषण ते जावो * विप्रसमेत ढूंढ़ि गो लावो

चढ़िरथगये प्रथम यमलोका ❋ लखिउरभांतिनकेसुखशोका
षोड़शभांति पूजि सनमानी ❋ हाथजोरि बोले मृदुबानी
नाथ कौनहित आयहुआजू ❋ आयसुहोय करियस्वइकाजू
बोले लषण विप्रकी गाई ❋ दीजै आनि होइ जो आई

सो० सुनि बोले यमराय पांचकोसतक अवध में।
जो कोई मरिजाय सो नहिं आवत धाम मम॥

करम करत भलपोंच घनेरे ❋ तिनकर न्याय हाथ हरि केरे
जैसे राजसभाकर कोई ❋ तेहितेकछुभलअनभल होई
तासुनिसाफकरै स्वइ राजा ❋ नाहिंनकछु कुतवालतेकाजा
सुनिरथचढ़िचलिभेततकाला ❋ जाइविलोके सकलपताला
पुनि चढ़ि सातो स्वर्ग ढुँढ़ाये ❋ तिहि पाछे वैकुंठहि आये
रहत जहां श्रीपति भगवाना ❋ कीन दंडवत तिन सनमाना
पूंछेते वरणा निज हेता ❋ तिन तब कहा जाउ साकेता
योजन कोटि पचास अगारा ❋ रहत राम इच्छा आधारा

दो० जहां न पावक पवन पवि चन्द्र सूर्य नहिं कोय।
रहत एकरस सर्वदा राति दिवस नहिं होय॥

सुनि चलिभे देखा स्वइजाई ❋ बसतरतनमयछविअधिकाई
चारि द्वार त्यहि पुर के हेरे ❋ बाजत बाजन भांति घनेरे
उत्तर बसत महा वैकुण्ठा ❋ महाविष्णुजहँरहतअकुण्ठा
विरजा विमल बहतपुरतीरा ❋ मज्जतसन्त सकलमतिधीरा
ज्योतिएकजहँ जरतनिराशा ❋ कोटिभानुसम तेज प्रकाशा
योगीजन जिहि सादरध्यावैं ❋ अन्तसमयत्यहिमाहिंसमावैं
पूरब द्वार जनक पुर सोहै ❋ दक्षिण चित्रकूट मन मोहै
पश्चिमदिशि गोलोकनिहारा ❋ जहां करत गोपाल विहारा
षोड़श संवत केरि अवस्था ❋ वपुछविलखिकोहोयनमस्था

पहिरे भूषण वसन अमोला * मृदुमुसक्यानिमनोहरबोला

दो० पीतवसनवनमाल उर कर मुरली मुख पान ।
परिकरसहितसमूहसखि सोहतइमिभगवान ॥

रहती हैं सुरभी त्यहि माहीं * पूंछा जाइ लषण तिनपाहीं
ब्राह्मण की कपिला इतआई * सुनिदीन्हीं गिरिधरनमँगाई
मुदित मध्य साकेतै आये * मन्दिरविपुलविचित्र सुहाये
जो रचना निरखी कहुँ नाहीं * सो सब देखी ताके माहीं
दिव्यरूप सब तहां के वासी * षटविकारबिन नित्यसुपासी
आगे सीतहि देख्यो जाई * रूप अनूप अमित प्रभुताई
जासु अंश उपजें गुणखानी * अगणितलक्ष्मिउमाब्रह्मानी
अगणितसखीकरैं सुठिसेवा * अगणितअलीलिहेकरमेवा
अगणित अनुगकरैं परणामा * अगणितसंतउचारहिं नामा
अगणितशक्ती हरिगुणगावैं * तिनमा तेंतिस मुख्य कहावैं

रोलाछन्द । श्रीभूलीलाक्रांतिकृपायोगीईशाना । उत्कृषणाभीषनीचंद्रिकाकूराज्ञाना ॥ पुण्यापरवीकला कीर्त्ति अहलादिनिक्रांता । भाविन्याशोभनालंबिनीविद्याशांता ॥ ईलानुग्रहमहोदयाउन्नतीसुविमला । ज्ञातानंदनि शुभदसत्यसोकाहितविमला ॥ येशक्तीतेंतीससदासियभृकुटीदिशिलखि । करैं विश्वकरकाज सबनकेसहससहस सखि ॥

इनसबहिनकी कीरतिकरणी * महारमायण में शिववरणी
सहितविप्रलक्ष्मण शिरनावा * करि सनमान निकट बैठावा
प्रीतम के गुण पूंछन लागी * कहे सकललक्ष्मणअनुरागी
हाथजोरि द्विज बूझतभयऊ * स्वामी कौन कहां तव गयऊ
हमरेपति महि अवधमँझारा * लीनजाय नृप गृह अवतारा
कछुदिन में हमहूं तहँ आई * जनकनगरप्रकटब अँगनाई

सुनिशोभनअतिशयहरषाना ॥ रामै सकललोकपति जाना
अबतुम जनिभरमौ सबधामा ॥ मूंदहुनयन जाहु निजग्रामा
नयन मूंदि देखैं तहँ नाहीं ॥ बैठे राज सभा के माहीं
बोले राम धेनु निजपायो ॥ तबशोभन चरणनशिरनायो
धन्य धन्य तुम धन्य नृपाला ॥ धन्य तुम्हारे चरित कृपाला
प्रथमे मैं तव सुना प्रभावा ॥ जड़मतिमनविश्वासनआवा
ताहीते ठान्यों हठ भारी ॥ देख्यों प्रभुताअमिततुम्हारी

दो० तव समईश न ईश कोइ तव पुर सरिस न ग्राम।
तवचरितनसमचरितनहिं तवजुनामसमनाम॥

मैं प्रभु कीन ढीठता भारी ॥ सो क्षमिये जनजान अनारी
सुनिहँसिप्रभुबहुविधिसनमाना ॥ तातकरेहुजनिअनतबखाना
भलेनाथकहि निजगृहगयऊ ॥ पुरवासी सब हर्षित भयऊ
यहिविधि रामचरित्र निकेता ॥ करतचरित भक्तनसुखहेता
यकदिनसुरऋषिआवतरहेऊ ॥ मगमिलिलोमशसेअसकहेऊ
चलौ आजु श्रीरामहिं देखौ ॥ जीवनजन्मसुफलकरिलेखौ
सुनिमुनिकह्योसहितअभिमाना ॥ थिरह्वैकरौ ब्रह्मकरध्याना

दो० यहिविधिआवतजातबहु विश्वविषयरघुराय।
इनते तौ हमहीं भले अचल ब्रह्मरहे ध्याय॥
परब्रह्म श्रीराम हैं हरण अखिल दुख भार।
सुन्यो न जब तब देवऋषि आये अवध मँझार॥

त्यहिक्षण तहाँ रामकी माया ॥ व्यापी लोमशको यहिभाया
उमड़े सिंधु सकल दिशितेरे ॥ बहे ऋषै परि तिनके फेरे
प्रथमप्रलयसमबच्योविचारा ॥ पैरत आये प्राग मँझारा
लख्यो अक्षयवट में हरिरूपा ॥ कह्यो मोहिं राखौ सुरभूपा
बोले हरिराखन हित तुमका ॥ है न राम की आज्ञा हमका

इतने माहिं लहरिके साथा ❋ अपर अंडमें गे ऋषिनाथा
तहीं अक्षयवटपर हरि पाई ❋ त्यहूं कह्यो नहिं रामरजाई

दो० इमिअगणित अंडनबिषे गे लखिकह्यो न कोय ।
यमयातना शरीरसम पायो दुख अतिसोय ॥
तब मुनि कह्यो कि रामको जिनकी आज्ञानाहिं ।
लीन्ह्यो जिन साकेतपति जन्म अवधपुरमाहिं ॥

तिनकीजायविनयजबकरिहौ ❋ तबतुम दुखसागरते तरिहौ
नाम रूप अरु लीलाधामा ❋ रहत नित्य ये होत न खामा
हमैं न ढूंढ़े मिली कृपाला ❋ लहरि संगपठयो तब काला
जल आवरण अवध चहुँफेरा ❋ तम्बू सम तानो तहँ हेरा
पुरवासी सब सुखसों जहँवां ❋ रहतचहतनहिंदुखकसकहँवां
तबलोमशऋषि रघुपतिकेरी ❋ कीन्हीं विनय भांति बहुतेरी
सुनि प्रभु सेवकते बुलवायो ❋ रामहिंलखिमुनिशीशनवायो
कह्यो नाथ बिनकृपा तुम्हारी ❋ कोउ करतूति न सकै उबारी
तुम सब नाथन के हो नाथा ❋ जीव दशा सब तुम्हरे हाथा
चहो मशकको ब्रह्मबनावो ❋ विधिहिंमशककरिलोकभ्रमावो

दो० असकहिलहिआनन्दमुनि गौनेनिजथलफेरि ।
पंथस्वयं शिर लखि कियो नारदको गुणहेरि ॥

सो० राम मंत्र को पाइ आइ चरित रघुनाथ के ।
वरणे तब ऋषिराइ अस प्रभाव श्रीराम को ॥

यकदिन राम पतंग उड़ाई ❋ देवलोक सो पहुँची जाई
तहँ हरिसुत जयंत की नारी ❋ अतिविचित्रत्यहिचंगनिहारी

दो० मनमेंकिहिसिविचारइमि जासुगुणीअसिआहि ।
सो पूरुष कसहोइधौं हँसि गहिलीन्हेसि ताहि ॥

तब प्रभु हनूमानते भाखी ❋ देखौ क्यहिं पतंग गहिराखी

तुरत पवनसुत जाइ निहारी * देहुछाँड़ि निज गिराउचारी
बोली जासु चंग यह आही * दरशन तासु कीन हम चाही
ताही ते याको हम गह्यऊ * आइअनिलसुतप्रभुतेकह्यऊ
सुनि हरिकहा कहो तुम जाई * चित्रकूटमहँ देब दिखाई
हनूमान चलितासोंभाषा * दिहिसिछाँड़िमनकरिअभिलाषा
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्ही * निशिगृहआयबियारूकीन्ही
मणिमय पलँगा गयो बिछावा * चीरफेनु सम वसन स्वहावा
कीनशयन तापर जगत्राता * प्रात जाय बोली ढिग माता
भोरभये जागहु रघुराई * मुखछविपर जननीबलिजाई
रविहिविलोकिगयोतमभागी * ज्ञानउदयजिमि मोहविरागी
शशिनछत्र भे मलिन सुभाये * जिमि सबगुण दारिदकेआये
लागे लुकन निशाचर कैसे * हरिसुमिरण ते पातक जैसे
उठे फूलि सरसिज रविदेखी * जैसे सुजन सुजनकहँ पेखी
तिनपर मधुप करत गुंजारा * जनुतम वपुधरिशरणपुकारा
बोलतविहँग विविधविधि टेरे * मानहुँ मुनि बहु गुणगणतेरे
प्रमुदितकोक कुमुदबिलखाने * हानिलाभ जिमिपाइअयाने
अनुजसखाबोलत यहिभांती * जिमिचातकचाहैजलस्वाती
बन्दीगण विरदावलि भाषैं * याचक द्वारखड़े अभिलाषैं
सुनत उठे तब अवधविहारी * देखिमातु आरती उतारी
मित्र बन्धु सेवकन पदवंदे * दान पाइ याचक आनंदे
पुनि सरयूतट जाइ नहाने * सबविधि साधुविप्र सनमाने
जहँतहँ सुनैं कथा करिनेहा * करिप्रणाम आवैं पुनि गेहा

दो० एक बार रघुनाथ लै संग सुजन समुदाइ ।
तीर्थाटन करि सबनको दीन्ही विशद बड़ाइ ॥

इतिश्रीवि० श्रीरघु० राम० कृतरामचरितवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
घटजसंहिता केर मत कहौं कछु गरुड़बखानि॥
यकदिन प्रभुलागे करन निजस्वरूपकर ध्यान।
पवनतनय अवलोकि इमि मनमेंकृतअनुमान॥

इन्हें सुना हम सबके स्वामी * ब्रह्मादिक जाके अनुगामी
सुमिरण ध्यान करतहैं सोऊ * इनहुनके ऊपर है कोऊ
पूंछत प्रभुते तिन हँसिकाहा * परब्रह्म किमि जावै चाहा
निकटौ दूरि निबाहु न होई * जैहौं चिप्र न मग कटुकोई
मुँदरीदै उत्तर दिशि तेरा * कुधर खण्डवन हले घनेरा
लोकालोक अद्रि के आगे * अन्धकार पावकथल त्यागे
शतसंवत पर गये निकेता * बुढ़िया एक मिली तहँ सेता
ब्रह्म कहां मृतलोक पधारे * सहसमाज भे दशरथ बारे
पुनि देखे रघुपति आसीना * विधिहरिहर सेवत पदलीना

दो० करत दण्डवत पुनि तहां कोई पर्यो न देखि।
पीताम्बर को खूंट लै आये अवध विशेखि॥

करतप्रणाम राम हँसि कहेऊ * आयो देखि ब्रह्मकस रहेऊ
कहकपि तुमहींहो सब ठौरा * तुमते परे न है कोइ औरा
बोले प्रभु तुम पहुँचे नाहीं * अबहींफिरआयो म्वहिंपाहीं
तब पवनज पटचिह्न देखावा * रघुपति कर खंडित तसपावा
गिरेचरण कहिधनितवलीला * जनमनसंशयशमनसुशीला

दो० यकदिन पदचापत गुन्यो इन श्रुतिकहै अरूप।
है अरूपपुनि सुनि विनय दिखरायो निजरूप॥

यकदिनसखनसहितरघुवीरा * खेलतभे सरयू के तीरा
विहँगरूपधरि रावण आवा * घातपाय शठ चहत उठावा
जानि राम बिन फर शर मारा * गिराजाइ निज लंकमँझारा

सात दिवसपर मुरछा जागी * समुझिप्रताप लाजउरलागी
तब दूतन ते कहिसि बुलाई * तपसिन ते लावहु कर जाई
आयसुपाइ आइ हठकीन्हा * सुनिभरिकुम्भरुधिरतिनदीन्हा
कह्यो जाइ रावण के पासा * यहि घट ते होई कुल नासा
गणनजाइ दशमुखै सुनाई * आवहु गाड़ि जनकपुर जाई
शंभु सभा श्रुति वाद मँझारा * प्रथमै रहा जनक ते हारा
तेहि गसते तहँ कुम्भ पठावा * दूतगाड़ि मिथिलापुर आवा
हरिइच्छा तहँ परेउ दुकाला * बिनजल भे सबजीवविहाला
लखि विदेह बुध लीन बुलाई * बूझे ते तिन युक्ति बताई
उदक हेतु शुभ यज्ञ करावो * कनककेर लै हल बनवावो
जोतौअजिरसहितनिजरानी * होई वृष्टि सकल सुखदानी

दो० सुनि नृप कीन्हीं युक्तिस्वइ जोतत अजिरमँझार।
प्रकट्यो सिंहासन सुभग अद्भुत तेज अपार॥
चारि सखी चारों तरफ लीन्हे मुरछल हाथ।
मध्य विराजत भूमिजा रूपराशि रघुनाथ॥
वेदवती रिपुवधन हित तजन होत महि अंश।
एकरूप ह्वै प्रकट भइ आदिशक्ति निमिवंश॥

देखि विदेह विनय तब ठानी * भई तुरत कन्या लघु जानी
सखिन सहित सिंहासन सोई * अन्तर्द्धान गयो तब होई
रोदन सुनत सुनयना रानी * लीन उठाय गोद सुख मानी
सुनिपुरजन सबभयो सुखारी * देखन उठि धाये नरनारी
भूपतिदान दीन विधिनाना * यथा मनोरथ जाकर जाना
दिन दिन कन्या बर्द्धत कैसे * शुक्ल पक्ष कर चन्द्रा जैसे
छठी बारहीं अन्नपरासन * कीननरेशनिगमअनुशासन
नामकरण दिन नाम कढ़ावा * बुधन जानकी नाम बतावा

नारदआइ धस्यो तब सीता * जगतजननिसबभांतिपुनीता
सुर रञ्जन भञ्जन खलहेता * प्रकटभई नृप तव संकेता
सकललोकपतिप्रभुसुखराशी * मिलीइन्हें बरजो अविनाशी
औरौ लक्षण युक्ति समेता * कहि मुनिवर गे ब्रह्मनिकेता
सुनिऋषिवचनमालगुहिलीन्हीं * सोनिजउरसियधारणकीन्हीं
जनक बंधुजा सखिन समेता * खेलै जहँ तहँ रूप निकेता
बालवृद्ध यौवन नरनारी * लागहि सबै प्राण ते प्यारी
पुनि नृप निपुण पढ़न बैठाई * अचिर काल सब विद्या पाई
यह चरित्र भाष्यो भव सेतू * अबसुनु सिया स्वयंवर हेतू

दो० एक समय मिथिलेश अति शंकर कर तप कीन।
आइ कह्यो हर मांगुवर तब नृप बोलयलीन॥
नाथ इष्ट जो आपकर ज्यहि श्रुति नेति बखान।
तेहि देखौं भरि नयन मैं यह वर देहु न आन॥
सुनि शिव दीन्ह्यो धनुषजो मिलारहै बिवसाथ।
कह्यो कि पूज्यहु याहिते मिली आय ममनाथ॥

सुनि विदेह प्रभुहित अनुरागे * नित्य नेमकरि पूजन लागे
यकादिन सिय सेवा ढिगजाई * लीलै लीन्ह्यो धनुष उठाई
देखिजनकअतिअचरजमाना * त्यहिक्षणतहांकठिनप्रणठाना
जो लेई शिव चाप चढ़ाई * सो नृप मम कन्या बरि पाई
लिये बोलि कारीगर भूरी * रंगभूमि विरची तिनरूरी
चहुँदिशि चामीकर अस्थाना * तासुमध्य मणिमय मंचाना
दशसहस्रमिलिमल्लविशाला * लावतभये धनुष मखशाला
देश देश प्रति पत्र पठाये * सुनिसुनि भूपअनेकनआये
वन उपवन पुर पंथ निकेता * उतरे निजनिज सैन समेता
सुनिदशमुख बाणासुर आवा * प्रथमै निजनिज पौरुषगावा

रावणधस्यो धनुष तब जाई ❋ बहुविधि बलकरि रहा उठाई
उठा न नेकु चप्यो कर गाढ़े ❋ अतिबल कीन कढ़ा तबकाढ़े
सभामध्य करि कपट बहाना ❋ जातभये निजनिज अस्थाना
भूपहु दिनप्रति विपुलउठावें ❋ टरै न जब तब दुन्दि मचावें
यहि विधि बीते कैयो मासा ❋ अबसुनुमुनिवरकीइतिहासा
गाधिसुवन नन्दनवन रहहीं ❋ यज्ञारम्भ कीन जब चहहीं
तबतबअसुरकरहिंअपकारा ❋ लखिमुनिवरनिजहृदयविचारा
भानुवंश प्रकटे रघुराई ❋ लोचन सफल करहुँ तहँजाई
लावहुँमांगि सुभगदोउभ्राता ❋ ते दलि खल ह्वैहैं मखत्राता
क्वारकृष्णऋषिदिवससिधाये ❋ नौमीदिन कोशलपुर आये
देखी बननि अवधपुर केरी ❋ तीनि लोकते सकल अनेरी
पुर चहुँओर कनककर घेरा ❋ उपवन बाग मनहुँ मधुसेरा
वसुदिशि वसु दरबार विराजें ❋ आठ आठ सेनापति राजें
रहैं वेद घटिका परमाना ❋ जाहिं भवन जब आवें आना
विधिहरिहर धनपतिरदएका ❋ बसत मनोधरि रूप अनेका
वापी कूप तड़ाग घनेरे ❋ मणि सोपान मधुर मधुनेरे
विष प्रसून विकसे बहुरंगा ❋ कूजत खगगण गुंजतभृंगा
मणिमयमहलविशालअपारा ❋ मानहुँ नभ तिन ऊपर धारा
चित्र विचित्र अनेकबनाये ❋ कनककलशशशिसरिसस्वहाये
ध्वज पताक तोरण नवठाटा ❋ देहरी विद्रुम कुलिश कपाटा
चहुँहट हाट फराकनहींची ❋ वीथीसकल सुगन्धिन सींची
आवत जात निकर नरनीके ❋ गज रथ वाजि भावतेजीके
बाजन विविधभांति के बाजें ❋ मत्त गयन्द अनेकन गाजें
कतहुँ मल्लगण भिरैं प्रचारी ❋ कतहुँ गीतगावें मिलिनारी
कतहुँ विप्रवर वेद विचारें ❋ कतहुँ सन्तजन नाम उचारें

कतहुँ हंस शुक सारिक बोलैं ॥ कतहुँ केकि पारावत डोलैं
मध्यग्राम नृप धाम अनेका ॥ बननि विशाल एकते एका
भूपसभा शुचिकी रुचिराई ॥ देखत बनै बरणि नहिं जाई

दो० आवैं जाइँ अनेक नृप झुकिझुकि करैं प्रणाम ।
राजत कोशलराज जहँ सुरपति ते अभिराम ॥

उत्तरदिशि सरयू सरि बहई ॥ अमलअपाप आप सो अहई
आपअधोगतिकुचितबचालै ॥ औरहि देत ऊर्ध्वपद हालै
बांधे घाट मनोहर नाना ॥ जहँ तहँ जीव करैं अस्नाना
निकट निवास मुनिनके रूरे ॥ सुमनबाग तुलसिका हजूरे
देखत मुनिवर पुरकी शोभा ॥ सरयूतट आये मनलोभा
मज्जनकीनमुदितजलखावा ॥ ऋषिआगमननृपतिसुनिपावा
सचिवसहिततहँआवतभयऊ ॥ करिसनमान सदनलैगयऊ
नाये सब रानिन पद शीशा ॥ दीन्ही मुदितमुनीशअशीशा
गहे चरण पुनि चारों भाई ॥ पृथक पृथक ह्वै आशिषपाई
भये प्रेमवश रामहिं देखी ॥ चपलदृगन परिहरी निमेखी
षोड़शभाँति पूजि महिपाला ॥ बोले वचन नाइपद भाला
भूरिभाग हम तुम्हैं निहारा ॥ आपुकहौ केहिहित पगुधारा
सुनहु नरेश तपोवन माहीं ॥ करनदेत मख निश्चर नाहीं
त्यहिहित याचनआयों ताता ॥ दीजै रामलषण दोउभ्राता
सुनिमुनिवचन बाणसमलागे ॥ बोले भूप बहुरि भयत्यागे

दो० याचक जन नाहक किये जगतपिता संसार ।
हित अनहित न निबाह कछु मांगनहीको कार ॥
विविध यतन कीन्हे मिले चौथेपन सुतचारि ।
निपटनिठुर निरमोह तुम मांगेहु नाहिं विचारि ॥

कहँ सुकुमार सुवन ममबारे ॥ कहँ गिरिसरिसअसुरभयकारे

जे धनुशरगहि जानतनाहीं ※ ते कैसे लरिहैं रणमाहीं
राम सनेहसहित सुनि बानी ※ ह्वै प्रसन्न पुनि कह मुनिज्ञानी
तव देखतहैं राम नदाने ※ अहहिंसबलअतिचतुरसयाने
इनकर रूप प्रताप जहाना ※ जानत तवगुरुसरिसमहाना
त्यहिते देहुलेहु करि नामा ※ याही हेतु धरेउ वपु रामा

दो० तुमकहँ याचकजगतमें बादि विधाताकीन ।
सोनहिं भूषण दानि के को वरणत लघुपीन ॥

कहनृप सत्य झूठ कछु नाहीं ※ राम प्राणप्रिय दिये न जाहीं
हम तवसंगचली सजिसाजा ※ तुमते नहिं होई यह काजा
धरणिधाम धन चहोसु लीजै ※ केवल त्यागि रामकहँ दीजै
मोह विवश ह्वै करत विषादा ※ त्यागत निजकुलकी मर्यादा
इतना कहत क्रोध उर जागा ※ महिपतालनभ हालनलागा
सुर नर अहि सब उठे डराई ※ चाहत होन प्रलय का भाई
तब वशिष्ठ मृदुवचन प्रकासा ※ कीजे कृपा जानि निजदासा
राजा ते बोले सुनि लेहू ※ बालक इन्हैं मुदित मन देहू

दो० इनहीं के तप तेजबल बधि तमिचर मखराखि ।
ऐहैं अलमंगल सहित सर्वविजय शिवसाखि ॥

सुनि नरेश तब सहित सनेहा ※ दीन्हे सौंपि सुवनकहि येहा
नाथ हाथ घर वन मग जाता ※ तुमहीं हौ इनके पितु माता
विश्वामित्र लहे दोउभाई ※ मानहुं रंक महानिधि पाई

छंद ॥ मानोमहानिधिपायतब मुनिरायह्वैसंतुष्टजू । बोलेअहोतुमधन्यनृपनिजराजनयमेंपुष्टजू ॥ हैअर्थसबतवसिद्धयाते धर्मरक्षतिजोअहौ । पुनिसुखासीनस्वधीनदीनमलीनपथनाहींगहौ ॥ जो पूर्व पितृ पितामहादिक की रही सदवृत्तिजू । सोअर्थधर्मसुकाममेंतवभईनहिंनिरवृत्तिजू ॥

मोहिंदेतरामहिं किहेउकष्ट सोनष्ट पथनाहीं रहै । रघुनाथ प्रेमविहीनकौनेधर्म्मफलपायोअहै ॥ तुमगहतहौनहिंकाल कौन्योमूढ़मूढ़नकीदसा । पल्लवतफूलतफलतसुखसों सर्व्व रसतुम्हरीरसा ॥ सतशौचधीरजदयामृदुतपतोषक्षमागँ भीरहौ । निरमानमति बलवान ज्ञाननिधान हरपरपीरहौ ॥ वशकरनभीति दिखाइ भीरुइ श्रेष्ठहित गहै विनयहौ । सम नूनकोकरि तेजराखत स्ववशतुम दिनदिनयहौ ॥ तुमभ्रात पितुगुरुमित्रको रिपुओरलखि वधकरतहौ । अरिअन्ततकस मसन्तसन्तति वचनप्रिय अनुसरतहौ ॥ तुममारिप्रतिपक्षीन पाछे कृपाकरिकृतबोधहौ । पुनिचपलपथकोकर्मलायक देत फलकरिशोधहौ ॥ विश्वासहूके नरनतेनहिं रहतकबहुँ निश ङ्कहौ । हैजासुनहिं विश्वासतासों सदाशङ्कितअङ्कहौ ॥ जे चारलायक तिन्हैंकरिकैचारभेजत देशहौ । बहुवेषधरि तेख बरिलावतलखततेहितुमवेशहौ ॥ तुमसदारहतप्रसन्न सबसे निठुरकारजकालहौ । करिमन्त्रराखत गुप्तसन्तत सावधान नृपालहौ ॥ तुमजात दीनन दीनपै कृतकार्य्य चहतनसाथ हौ । निःशेषकार्य्य न करतपरको रखत कछुनिज हाथहौ ॥ तुम प्राप्तभयको देखि तासों होत अभय सँहारिहौ । जो कार्य्य आगे होइगो तेहि प्रथम लेत विचारिहौ ॥ पुनि देश काल स्वभाग्यमाफिक कार्य्यमें मनदेतहौ । करिसाधुविप्र नतोषआशिरवाद तिनसों लेतहौ ॥ तुम त्यागिमतनास्ती कतालस लखत आमदखर्चहौ । गज अश्वगढ़ भट काम कारक आदिस्वरकी अर्चहौ ॥ श्रमथोरफल बहुविधि सो जानत प्रजनकेपुरनामहौ । रघुनाथ मालाकारसमतुमकरत जगको कामहौ ॥ जलअशन घनपट अस्त्रअनुपम कियेबहु

अर्जितसहौ । हैंभूपजे तव वश्य तिनको संगनित लीन्हेरहौ ॥ निरबंधु पंगु अनाश्रयिन को करत नित पालन अहौ । बुधवेद मंत्रन काभिवादन करतकरि लालन चहौ ॥ करलेत बनिकन ते तिन्हें घर कुशल पहुँचावत अहौ । रणदानमें नहिं गहत ला-लच चपलता मनमें गहौ ॥ हौलेत कारज जासुसे त्यहि देत संपति भूरिहौ । हरिभक्त मन वच कर्म रहत अधर्मते नितदूरि हौ ॥ निज कुटुँब पाल समान सुखप्रद भये सुत जिनके हरी। हौं सकत त्यहि न प्रशंसि देत अशीश जीवहु बयचरी ॥

पुत्रनहित करुशोच न किनका ✻ कोउ न है दुखदायक इनका
सुनिकै सकल मातु अकुलानी ✻ करिहैं विघ्न राम जिय जानी
तुरतै प्रभु निज माया प्रेरी ✻ तेहिं तब हरी प्रीति सबकेरी
दुवादशी दिन पारण करिकै ✻ पुरवासिन को धीरज धरिकै
पहिरि वसन भूषण प्रति अंगा ✻ कटि तरकस कर शर शारंगा
जननि जनक पद शीशनवाई ✻ पाइ अशीश चले हरषाई
चलत दीन हनुमानै छोरी ✻ कछुदिनमें वन मिलब बहोरी
कहत सुनत इतिहास हरीका ✻ देख्यो आइ तपोवन नीका
परिवा दिवस ताड़का धाई ✻ रामहिं मुनिवर दीन दिखाई
रुकिके प्रभु अवलोकत नारी ✻ द्विज द्रोही वध दोषन मारी
वैरोचनजा दीरघ जिह्वा ✻ सुरपतित्यहिमार्‍योलखिलिह्वा
भृगुभामिनिनिशचराहितकारी ✻ नारायण त्यहि आपु सँहारी
परशुराम गंजी निज माता ✻ तिमितुमयाहिहतौगतिदाता
गुरुआयसुसुनिनीतिनिधाना ✻ बरजि त्रोणते काढ़्यो बाना

दो० कढ़त एक धनुचढ़त दश कर्षतभे शतबाण ।
तजत सहस तन लागहै लक्षगये त्यहिप्राण ॥

तनु छूटत भे सुन्दर भामा ✻ अस्तुति करतगई हरिधामा

लखिप्रभाव मुनि मायाकीन्ही ❋ विद्यानिधि का विद्या दीन्ही
ज्यहिते लाग न क्षुधा पियासा ❋ अस्त्र शस्त्र विधि तेज प्रकासा
पुनि मुनिते बोले रघुराई ❋ निरभय यज्ञ करो तुम जाई
आयसु पाइ करन मखलागे ❋ बैठे प्रभु रक्षाहित आगे
खबरि पाइ सुबाहु मारीचा ❋ धावा बिपुल संगलै नीचा

गीतिकाछन्द ॥ धावा विपुललै नीच बीचहि राम बिनफर शरहयो । शतयोजनाग्र विचारि कारज पार सागरके गयो ॥ पुनि अग्नि अस्त्र सुबाहु जारयो लषण सब सेनाहनी । हरषे सकल सुर सन्त वरषि प्रसून कहि रघुकुल मनी ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतविश्वामित्रमखरक्षणोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दो० सुमिरिराम सिय सन्त गुरु गणपगिरा सुखदानि ।
अगिन वेष मत कहौं कछु पद्मपुराण बखानि ॥
करिअविघ्न मख ऋषै दोउ भैयन दीन अशीश ।
रहे तहां निज दूत सुनि पठयो तिरहुत ईश ॥

दूत आइ मुनिवरै सुनायो ❋ सहितसमाज विदेह बुलायो
हेतु समुझि बोले मुनि बाता ❋ देखनचलहु धनुषमख ताता
भले नाथ कहि कृपानिकेता ❋ चलेगाधिसुत ऋषिनसमेता
हरि दिन एकशिला लखिपाई ❋ कह मुनिपद प्रभु देहु छुवाई
कारणकौन सकल मुनिवरणी ❋ गौतमशाप पाकरिपुकरणी
यक दिन इन्द्र सुरनते कहेऊ ❋ ममात्रियते वरतियकहुँचहेऊ
देवनरविरविशशिहिबतायो ❋ अधिकअहल्यासुनितहँआयो
सुनिमुनिगे तमचुरसम बानी ❋ गौतम वपु वासव रतिठानी
कहेउ गंग छल तुम्हरे गेहा ❋ भवनआयलखिकहवचनेहा
यक भगहित तुमआयो हमरे ❋ होइँसहसभग सबतनतुम्हरे

कहेउ अहल्याते पविरूपा ❋ ह्वै सब कष्टसह्यो सुरभूपा
विनय सुनत बोले हरिचरणा ❋ छुवत तोर होई निस्तरणा
इन्द्रस्तुतिसुनिकहमुनिभाखी ❋ धनुधुनिसुनिहोइहैंसबआंखी
बहुदिनते पथ लखतबिचारी ❋ सुनिप्रभुपदरजदीन निहारी
परसत चरण भई वरनारी ❋ सम्मुखह्वै अस्तुतिअनुसारी

दो० जय जगदीश्वर सर्व्व पर प्रेरक प्रकृति प्रभाव।
अहै ब्रह्म अनादि सुर राम अकाम सुभाव॥
त्वत्पद पल्लव महत्पद पुण्य यशाश्रित येषु।
भवधि वत्सपद परम्पद पद विपदा नहिं तेषु॥
जे विषयिक जगजीव जड़ कर्मक्रियायुत मान।
ताही के मद ते छके माया मोहित ज्ञान॥
ते नर आश्रित होतनहिं तव पदपङ्कज नाथ।
भूली सुधि शुभपन्थकी विषय कुपन्थ सुहाथ॥

इमिकरि विनयभक्ति वरपाई ❋ हर्षसहितपतिलोक सिधाई
मुदितसकललखिगतिअभिरामा ❋ जायगङ्गतटकीन्हप्रणामा
पूँछाप्रभु किमिआई गङ्गा ❋ कौशिकमुनिकहसकलप्रसङ्गा
भूप भगीरथ तपकरि लाये ❋ पुरिखाजेहिविधिस्वर्गसिधाये
जासुप्रभावमुनिन बहुगावा ❋ सोइसुबोधिताक्यहिनहिंपावा
मुनि ससमाज सप्रेम नहाने ❋ दीनदान भूसुर सनमाने
पुनिसबऋषिनसहितरघुवीरा ❋ पहुँचे जाइ जनकपुरतीरा

दो० देखे वन उपवन विविध वापी कूप तड़ाग।
मणि सोपान पियूष जल पान करत श्रम भाग॥
चामीकर घर सबन के चौहट हाट अनूप।
धनिक वणिक बैठे मनहुँ धनद धरे बहुरूप॥
मिथिलापतिके महलकी शोभा किमिकहिजात।

जहँ विहरत श्रीजानकी अखिल लोककी मात ॥
दमयन्ती रति विधुमती जातरूप श्रुति गात ।
लाजत मदन मयङ्क लखि सीताजूकी मात ॥
रविते मणि शशि शम्भुते ज्यों पाँवनते गङ्ग ।
लहीअधिकछवित्योंलही निमिकुलसीयप्रसङ्ग ॥
जहँ तहँ टिके नरेशबहु बलवाहन जिनसाथ ।
शुचिआश्रमलखिमुनिनयुत उतरेतहँऋषिनाथ ॥

सो० खबरिपाइ मिथिलेश सहितसचिवभटभूरि द्विज ।
आये जहां ऋषेश नाये मुनिपद शिर सबन ॥

दीन अशीश निकट बैठाये * बूझी कुशल दरश तव पाये
रामलषणकर रूप निहारी * जनकसहित सबभयेसुखारी
जोरि पाणि बोले मुनि तेरे * नाथ कहौ ये सुत किनकेरे
मुनिकुलतिलककिनृपकुलजाये * की दोउब्रह्मरूपधरिआये
इन्हें देखिमोहिंभा सुख जैसा * नहिं प्रियलागब्रह्मसुखतैसा
की भरिजन्मयोगहमकीन्हा * ताकाफलविधिवतविधिदीन्हा
कह मुनि सत्यकह्यो तुमताता * ये प्रियसबै जहांलगगाता
कौशलेश दशरथ बलजाका * जानतदशमुखसुरपुर शाका
तिनके तनय मनोहर चारी * लक्ष्मण राम भरत रिपुआरी
उभय रहे अवधेश निकेता * लायोंमांगि मिथुन मखहेता
असुरमारि मम यज्ञ कराई * पदपरसतमुनितियगतिपाई
धनुषयज्ञ सुनि तवपुर आये * भलेनाथ दृग सफल कराये
निजसमाजते पुनि सुखदानी * गाधिसुवनकी कथा बखानी
इनकर विभव जात नहिंजाना * तेजपुञ्ज अतिक्रोध महाना
जासुसमुझि तपतेज विधाना * अजहूँ डरत रहत सुरताना
मुनि वशिष्ठके पुत्र अनेका * जिन मारे नहिं छोड़े एका

जन्मि क्षत्रिकुल भे द्विजवरणा * सृष्टि दूसरी लागे करणा
तपबल ते जिन नदी अमाना * करी कौशिकी पुण्य महाना
गो त्रिशंकु करि गुरुअपराधा * दियो शरण ताको निरबाधा
ऐसे जिनके कर्म अनेका * सुनिमुनिबोले सहितविवेका

दो० एक लोक परलोक नहिं यक परलोक न लोक ।
एक सुखी दोउलोक में तिनमा तुम गत शोक ॥

सुनहु भूप सब भूप कहावैं * निज रक्षा कोइकरि न सकावैं
तुम साधे नृप दूनहु लोका * करत भयो सब प्रजा विशोका
नाथकृपा कहि सहित समाजा * आनि उतारे शुभथल राजा
षोड़श भांति पूजि सहचेता * हरषसहित तब गये निकेता

दो० पहर तीसरे कह्यो प्रभु मुनिपद शीश नवाइ ।
लषण दीख चाहत नगर आवहु तात देखाइ ॥

आयसु पाय चले दोउ भाई * खबरि सकलपुरवासिनपाई
बालक वृद्ध तरुण नरनारी * धायेनिजनिजकाज बिसारी
देखैं जब रघुपति वपुआई * अंग अंग प्रति रहे लोभाई
करहिं बात सब आपुस माहीं * इनसम रूपवन्त कोउ नाहीं
विधि हरिहरहैं विश्व विशाला * तेमुखचारि भुजा विकराला
मदनअतनु शशि रहत न पूरा * अपरजीव अस को है रूरा
कोइ कह धन्य नगर इनकेरा * संतत जहँ ये करत बसेरा
धन्यसकल पुरवासी अहहीं * जबतब जे अवलोकतरहहीं
कोइकह धन्य मातु जिन जाये * कोइकह धन्य दरशहमपाये
कोइकह भागवती नृप जाई * विधिजसकातसदेतमिलाई
कोइकह अबै कठिन है कामा * कोइकह धनुष तोरिहैं रामा
कोइकह ये बालक महिगोरा * देखत छोट अहैं बरजोरा
जिनमग शिला उधारी एका * मखहितमारे असुर अनेका

कोइकह ऐसहि करै विधाता ❋ तौहमका सबका सुखदाता

दो० वाणी रूप अनूप वर वरण वामते वाम।
कहैं वामविधि विधिकरी वामदेव धनुवाम॥

कोइकह इन्हैं भूप जब देखी ❋ तजिप्रणकरीविवाहविशेखी
कोइकह प्रथम नरेश निहारे ❋ प्रण नहिंतजी लाज के मारे
कोइकह धर्म कर्म भलसोई ❋ ज्यहिपाछे पछिताव न होई
कोइकह मन में करौ उछाहू ❋ होई रामसिया कर ब्याहू
कोइकहजो विधिवशअसहोई ❋ तौ कृतकृत्य होइ सब कोई
बार बार नृप सुता बुलैहैं ❋ देखब जब तब चालन ऐहैं
कोइ कह हम चाहैं नृप ढोटा ❋ होइँ न कबहूं नयनन ओटा
कोइ कह भागचही अस माई ❋ सूतीमें नहिं सिंधु समाई
जो न होत बड़िभाग्य हमारी ❋ तौनमिलतमिथिलापुरप्यारी

दो० फिरकीसी थिरकी फिरैं खिरकिन प्रति नवनारि।
सिरकिनतजिरघुनाथछविनिरखैंपलकबिसारि॥

जबज्यहिनयनओटचलिजावैं ❋ भई हानि अस वचन सुनावैं
एक कहै तुम भले निहारे ❋ भइ सखि बैरिनि लाज हमारे
आवत निकट वदन पट दीन्हा ❋ भरिनैननअवलोकिनलीन्हा
एक कहै बरबस मनमोरा ❋ हरि लीन्हों साँवरो किशोरा
एक कहै अस जगमें कोहै ❋ इन्हैं विलोकत जो न विमोहै
कोइ कह सत्य वचन सखि तेरे ❋ इन चितचोरि लिये सबकेरे
अबधौं विधि कब दरश देखाई ❋ रंगभूमि फिरि देखब जाई
कोइ कह सपनेकी निधि जानौ ❋ बिन सम्बन्ध बादिसुखमानौ
कोइकह जो विधि होई दाहिन ❋ तौ इनते धनु उबरै चाहिन
नाहिंत दरश दूरि इन केरे ❋ अबला वपु कछु होत न हेरे
यहिविधिनिजनिजमतिअनुहारी ❋ करैंबात जहँ तहँ नरनारी

शोभासागर अनुज समेता * सुलभ दरश सबकाहुइ देता
रंगरास पुनि देख्यो जाई * अतिविचित्र रचना मनभाई
बालक जो ज्यहिओर बुलावैं * प्रेमविवशप्रभुत्यहिदिशिजावैं
सबके नाम कहैं मृदु वचना * तुम भलि तात देखायो रचना

दो० जाकी इच्छा ते रचत माया अण्ड अनेक।
सोप्रभुचितवत चकितचित भक्तबछलहितएक॥
लोचन सबके सुफलकरि लषण सहित रघुनाथ।
उतरे जहँ तहँ आइके मुनिपद नायो माथ॥
अर्द्ध निशा सोये सकल शौचक्रियाकरि प्रात।
समय पाय आयसु चले सुमन लेन दोउ भ्रात॥

त्रिभंगीछन्द॥ पहुंचे नृप बागा सह अनुरागा देखतला-
गा अतिनीका। जामें ऋतुराजा सहित समाजा रहत विराजा
नितहीका॥ नाना तरु फूले सकल समूले मधुकरभूले गुंजा-
रैं। खग विविध कलोलैं जहँ तहँ बोलैं जनु निजटोलैं हंकारैं॥
सरमध्य सोहाना मणि सोपाना जलचर नाना कमल लसैं।
त्यहितट अतिनीका सदन सतीका छविजन जीका चोरिबसैं॥
अद्भुत फुलवाई सकल मँझाई पुनि दो भाई प्रेमपगे। माली
गण जेता पूछि सचेता मुदित सुमनदल लेनलगे॥

दो० त्यहि अवसर सीता तहां आई सखिन समेत।
मातु पठाई मुदित मन गिरिजा पूजन हेत॥
मज्जन करिसर सखिन युत गई गौरिके धाम।
पूजि यथोचित मनहिंमन मांग्यो वर अभिराम॥

सो० एक सखी तजि संग देखे बालक जाय दोउ।
आई सहित उमंग बूझे ते बोलत भई॥

सुनहु सखी यहि बाग मँझारा * आये हैं द्वै सुभग कुमारा

गौर श्याम छविधाम किशोरा ❋ चितवतचितचोरयोजिनमोरा
रूप अनूप सकौं किमि भाखी ❋ नैन अबैन बैन बिन आंखी
कह्यो एक है हैं सखि सोई ❋ जिन मोहे पुरजन सब कोई
वर्णत जहँ तहँ रूप विशेखी ❋ देखन योग चलहु सखि देखी
आगेकरि सोइ सखी पियारी ❋ चलींसकल चहुँओर निहारी
विटप ओट जब देखे जाई ❋ गईं अपनपौ सबै भुलाई
वैदेही जब रामहिं देखा ❋ गिरीमूर्च्छि महि प्रेम विशेखा
रूपविशिखविषबिछुरनलागा ❋ जोन गिरै अघ तौनहिं लागा
धरिधीरज तब सखिन उठावा ❋ लेहु देहु नृपसुत सुनि भावा
पुनि सम्मुख दरशे द्वौ भ्राता ❋ सहज सोहावन पावन गाता

दो० शारँग दृग सुख पाणि पद शारँग कटि वपुधार ।
शारँगधर रघुनाथ छवि शारँग मोहनहार ॥

अंगअंगछविदेखिजुड़ानी ❋ पितुप्रणसमुझिबहुरिपछितानी
सकलसखिननिजमनअसचाहा ❋ हठपरिहरिनृपकरैविवाहा
तौ सबके मन होइ अनन्दा ❋ अपरअधिपसँगकारजमन्दा
इतजानकिहि देखि रघुवीरा ❋ बोले लक्ष्मणते धरिधीरा

दो० तात तकहु छविराशि यह जनकसुता है सोइ ।
ज्यहिहितधनुमखहोतसुनि बटुरे नृप सब कोइ ॥
जासुअलौकिकरूपलखि सहजस्वच्छमनमोर ।
भयो क्षुभित निजसींवतजि सो गति जानै कोर ॥
कह्यो लषण होतंव्य जो सो प्रथमै दरशात ।
करतबातइमितातसन मनअटक्यो सियगात ॥
इतैसखिनलखि गहरुनिज उरहरिमूरतिलेखि ।
आईगौरिनिकेतपुनि खगमृगमिसिदिशिपेखि ॥
यथा पुत्र पितु प्रोक्तते चिन्तामणि म्वहिं देह ।

दरशौ दीरघ धामकहु फिरि आवै कह येह ॥

कमलछंद॥तिमिसीया।लखिपीया॥हितवर्ण।लगिकर्ण॥

त्रिभङ्गीछंद ॥ जयजयभवभामिनित्रिभुवनस्वामिनि मृगपतिगामिनिज्ञाननिलं । तड़िताङ्गअनूपंअद्भुतरूपंमुखद्विजभूपंपाकदिलं ॥ भुजचण्डचिकालंधृतकरबालं कृतजनपालं कामप्रदं।सुरनरमुनिवन्दनिअसुरनिकन्दनिभूधरनन्दनिकूटकृदं ॥ जयजलजविलोचनि रतिमदमोचनि परहितशोचनि कङ्कविधे । भवविभवप्रकाशिनि कलिमलनाशिनि स्ववशविलासिनिनीतिनिधे ॥ अतिअमितप्रभावा वेदनगावातदपिनपावतपारकुतं । विघनेशषडानन ममप्रतिमानन ऋधिसिधिशासननेमयुतं । जेजे तवचरणं स्मृतिनिरणं तेवरवरणं लब्धफलं । पतिपदरतिलागी तियअनुरागी सोबड़भागी होतहलं ॥ अबमोपरदाया कुरुमहमाया प्रकटनगाया गुणजानी । सुनिइत्थंवचनं गौरिसुरचनं बोलीवचनंमृदुबानी ॥

जयजयश्रीमिथिलेशदुलारी ❋ जयजगजननिजनभ्रमनुहारी
जयजगमगत विभूषण चीरा ❋ तड़ितवरणवपुछवि गम्भीरा
जय जगदुस्तर दरशतुम्हारे ❋ करि करुणा विचरतनृपद्वारे
जय भवभयभञ्जनि सुखदेनी ❋ विधिहरिहर वन्दत सुरसेनी
जय जपतपकरिसुगतिजेचहहीं ❋ बिनतवकृपानसपनेलहहीं
सबके परे वेद ज्यहि गावै ❋ सो तव सुमिरण ते कर आवै
दिव्य वर्षशत शङ्कर ध्यायो ❋ रामगुरू ह्वै पन्थ बतायो
तब तवदरशनते सुख लहेऊ ❋ इमपि अगस्त्यसंहिताकहेऊ
शेष सहसमुख दशमुख बानी ❋ तवमहिमानाहिंसकतबखानी
हमसमान तव कोटिन दासी ❋ नयन निरखिनितकरैंखवासी
सो तुममातु विनयममकीन्ही ❋ निजजनजानि बड़ाई दीन्ही

चतुर काछुकाछै जब जैसा ❋ तब तहँ नाच देखावै तैसा
त्यहिते लेहु अशीश हमारी ❋ पूजै मन कामना तुम्हारी
नारदवचन सदा उर धरेऊ ❋ पाइ परीक्षा पुनि परिहरेऊ
सुनिसियसकुचसहितउरराखी ❋ चलीपूजिपुनिगृहअभिलाखी
सीतहिजात जानि रघुराई ❋ चित्र चारु हृद लीन बनाई
अनुजसहित आये गुरुपासा ❋ सुमनदीन सबहालप्रकासा
अर्चनकरिमुनि वचन उचारे ❋ होइँमनोरथ सिद्धि तुम्हारे
सुनि मनमुदितभये दोउभाई ❋ भा गतदिवस निशातबआई
प्राचीदिशिशशिदेखिसोहाना ❋ सियमुखसरिसनपुनिअनुमाना

दो० बढ़तघटत नित मढ़तनभ दिनमलीन रिपुराहु ।
सियमुखसमकिमिहोइशशि दीनदुखदसबकाहु ॥
गौरि गिरा सम कहिय किमि शैलसुताबाचाल ।
रतिअनङ्गपति सिन्धुजा चपलानुजजेहिकाल ॥
छविपयोधि गिरि प्रेमअहि सामासुर सबजोइ ।
इमि मथिकाढ़ै लच्छि जो सोउ न सियसम होइ ॥
इहि विधिते अँग अंगकी उपमा करत विचार ।
भई निशा सब नाश पुनि देखिपरा भिनसार ॥
बोले लछमण ते लखहु अरुण उदयभे तात ।
काहुइतौ अति सुखदहै काहुइ दुखद लखात ॥

सुनिसौमित्र कह्यो मृदुबानी ❋ प्रभुप्रताप पूषण पर आनी
जिमि रवितमगंज्योकरिदापा ❋ तिमितवबलविदलीभवचापा
उठिहैंफूलि कमल सबसन्ता ❋ होइहैं पुरजनमुदितअनन्ता
भृगुपतिगतिमयङ्कद्युतिछीना ❋ नृपगणह्वैहैं नखत मलीना
खल उलूक दुरि हैं तजिधीरा ❋ ह्वैहैं चक्रवाक यक तीरा
गूढ़गिरा सुनि प्रभुमुसक्याने ❋ एक दिना वनजाइ नहाने

नित्यनेमकर सहित समाजा * त्यहिक्षण बोलि पठाये राजा
सतानन्द तहँ आइ बखाना * ऋषिनसहितमुनिकीन्हपयाना
लागे लोग अनेकन संगा * धाये विपुल प्रथम महिरंगा
चहुँदिशिफिरतविचारसमेता * त्यहि अवसर आनंदनिकेता
रंगभूमि आये दोउ भाई * जनु शोभामधि शोभा छाई
जिन जेहिभांति भावना आनी * तिन तस देखे शारँग पानी
योगिन तत्त्व नृपन नृप श्रेष्ठा * बुध विराट भक्तन निजइष्टा
सुरननाथअसुरनसमकाला * शिशुनसुहृदमनसिजवपुबाला
जनक जनक रानिन जामाता * मिथिलापुरवासिन बहुनाता
वैदेही देख्यो ज्यहिभांती * उरअनुभवतिनसोकहिजाती
सबके मन भरोस अस आया * अवशि चाप त्वरिहैं रघुराया

दो० भईभीर अतिजनक लखि सेवक दिये पठाइ।
यथा योग सबकाहु तिन आसन दीन्ह्योंजाइ॥
रंगभूमि मुनिनाथ कहँ सकल दिखाई भूप।
बोले कौशिक धन्य नृप रचना किह्यो अनूप॥
सब मंचनमें मंच यक अद्भुतबननि विशाल।
त्यहि ऊपर सब मुनिन युत बैठाये नरपाल॥
धनुष ध्वंस नभ रंगमहि उडुगण लोगअपार।
राम लषण युग चन्द्रसम ऊगे सभा मँझार॥

चितवैं सकल रामकी ओरा * जिमिमयंकदिशिविपुलचकोरा
कोइकोइनृपननृपनतेभाषा * चलहुभवनपरिहरिअभिलाषा
धनुदलि सिय बरिहैं रघुराई * तुम कत तजिहो मान बड़ाई
बिनहुँ दले पैहैं जयमाला * सुनिबोले तब कुटिल नृपाला
टूटे धनुष कठिन है ब्याहू * बिन भंजे को बरी कुजाहू
कालहु कस न होइ यक जोरा * सियहित समरकरबहमघोरा

सुनि बोले तब सज्जन राजा * गाल बजावत तुम्हैं न लाजा
कनककशिपु स्वरनावकबीरा * सहसबाहु मधुकैटभ धीरा
जिनते विजय न काहू पाई *तुमजितिहौअबबलअधिकाई
परम सुभट अवधेश कुमारा * बरिहैं सिय मथिमान तुम्हारा
जीतनहार न कोउ जग जावा * करै चहै सो गाल बजावा
जगतपिता रघुपति कहँ जानौ *जगजननीजानकिहिपिछानौ
त्यहि ते दुरबासना नेवारी * भरिलोचन छविलेहु निहारी
नहिं मानौ तौ खंधक जाहू * हमैं मिला नर तन कर लाहू
त्यहिअवसरमिथिलेशपठाये * सभा मध्य बंदीगण आये
भुज उठाइ बोले तहँ दोऊ * सुनहु सुप्रण नृपकर सबकोऊ
भुवन चतुर्दश केर भुवारा * बैठे हैं यहि सभा मँझारा
जो लेई शिवचाप उठाई * सोवर विजय सहितसियपाई
सुनि हरषे अविवेकी भूपा *कसिकसिकमरचलेअहिरूपा
निज निजइष्ट सुरन शिरनाई * हुमकि धरहिं धनु उठै न राई
बल विवेक गरुवातम शोभा * फिरहिंहारि धनुकरवशलोभा

दो० लज्जितह्वैदशसहसनृपमिलिकरिकिहिनिविचार।
लावहु डारी तोरि धनु पुनि लखिलेब पछार॥

दश सहस्र यक संग भुवाला * रहे उठाय न नेकहु हाला
हँसन योग भे ते नृप कैसे * बिन विराग संन्यासी जैसे
जे नृप रहैं चतुर मतिधीरा * ते नहिं जायँ शरासन तीरा

गीति०छंद॥ नहिंजायँ ते धनुतीर देखिविदेहवद गह्वरहियो। सुर नाग नर नृप असुर आये सुनत जो हम प्रणकियो॥ को कहै कर्ष निकेर काहु न अवनि अल्पछोड़ायहू। वर विजयकी रतिकुवँरि पावनहार ब्रह्म न जायहू॥ त्यहिते सकल तजि आशनिज निजभवन गवनहु सर्वजू। भटहीन महिकहि अब न को

ईवीरठानैगर्वजू ॥ जो बातयहजनत्यों प्रथमतो नेमनहिंकर त्योंमिदं । किनरहे कुवँरि कुमारिकर्मनधर्म त्यागतकोविदं ॥
सुनतवचनपुरजन अकुलाने * सकलसभाके नृप सकुचाने
शरसम वचन लषणके लागे * बोले उठि रघुपति के आगे
नाथजनकअतिअनुचितभाखी * काहूकी कछुकानि न राखी
त्यहिते जो तव आयसु पावों * तौ इनको वीरता देंखावों
कन्दुकइव करगहि ब्रह्मण्डा * धनुषसमेत करहुँ शतखण्डा
नाथशपथ जो असनहिं करहूँ * तौ फिरिहाथ न धनुशरधरहूँ

दो० यहि प्रकारके वचन जब बोले लषण सरोष ।
डगमगानिमहि कुधरसुनि पायो सुरमुनि तोष ॥

जनमनमुदित जनकसकुचाने * सियसमेत पुरजन हरषाने
सैननप्रभु अनुजहि चुपवावा * सहितसनेह निकट बैठावा
तब बोले ऋषि प्रभुते बाता * अबउठिशिवधनुतोरहुताता
उठे तुरत गुरु आयसु पाई * सहजस्वभाव चले शिरनाई
हरषे सुनि मुनिजन प्रभुकेरे * देखि विदेह कही ऋषितेरे
नाथ राम जीते मनलोभा * त्यहिते भई अधिकतनशोभा
धनुके कर्षणयोग न आहीं * बरजिलेहु त्यहिते जनिजाहीं
भूप करहु मति विस्मय कोई * इनते कठिन कोदण्ड न होई
रामहिं चितै जनककी रानी * बोलीबिलखि सखिनते बानी
देखो सखियहि सभा मँझारा * बैठे हैं बुधिवन्त अपारा
यहि अवसरसबकी मतिखोई * उठिरघुपतिहि न बरजतकोई
गरुव कठोर कहां शिवचापा * हारे सकल भूप करिदापा
त्यहि हित अब बालकै पठावैं * हंस सुत्रनकहुँ मेरु उठावैं
सुनि बोली गुरुतिय तिनपाहीं * तेजवन्त लघु गने न जाहीं
कहँ पावक वन दहत प्रचण्डा * कहँ वामन नाप्यो ब्रह्मण्डा

कहँ रवि कहँ तमतोम विनासै * कहँ अंकुश कहँ करिहि सत्रासै
प्रणवमन्त्र यक अक्षर जाके * विधि हरिहर सुर सब वश ताके
भृगुसुत च्यवन पेटते कढ़िकै * असुर पुलोमहि जार्‍यो बढ़िकै
बालखिल्य अंगुष्ठ प्रमाना * सुरपतिको मर्‍यो तिन माना
जिमि कुंभज दधि पीन पिछानो * त्यहि विधि तुम धनु रामहिं जानो
सुनि भरोस रानी मन आवा * तब तहँ लखि सीता दुख पावा
कमठपृष्ठिसम धनुष कठोरा * कहँ साँवल मृदु गात किशोरा
प्रथम जाइ धीरज उर आना * कहत तात प्रण दारुण ठाना
हे गणेश गिरिजा गिरिराई * राम भुजन पर होउ सहाई
हे पिनाक तव काज विशेखी * होउ हलुक रघुपति तन देखी

दो० जो हमरे मन क्रम वचन गति न अपर सुरकेरि ।
तौ करि हैं भगवान म्वहिं रघुनन्दनकी चेरि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसप्तमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतरामरंगभूमिआगमनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० वेदन मुख रघुनाथ सुनि करी निवेदन देह ।
वेदन मग भेदन करों जो वेदन सों नेह ॥

जो निज चेरि करब प्रभु नाहीं * तौ तजि तनु मिलिहौं तुम काहीं
यहि विधि सिय प्रण कीन्ह्यों जबहीं * धनु दिशि प्रभु अवलोके तबहीं
लषण लख्यो अब चाहत तोरा * दियेस जग करि कुधर कठोरा
आपु चापि महि व्योम सुहावा * तब रघुपति हरचाप उठावा
प्रथम सो शशिमंडल सम भयऊ * पुनि त्यहि तीनि खंड ह्वै गयऊ
एक गयो नभ एक पताला * एक गिर्‍यो त्यहि ठौर कराला
गहत उठावत तोरत माहीं * रहे सब ठाढ़ लखा कोउ नाहीं
यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू * पलमा करैं विश्व चहु नासू

पाछे तासु भई धुनि घोरा ❋ रह्यो पूरि त्रिभुवनमहँ शोरा
गड़गड़ानगिरितरुमहिखसेऊ ❋ कमठकोल अहिपतिकसमसेऊ
दिग्गजगिरन भिरननभलागे ❋ सुरविमान रविचलतनआगे
चपिगेमहिलखिसकलभुवारा ❋ जनकहृदय सुखभयोअपारा
हरषे सब पुरजन नर नारी ❋ सियहियभाअतिआनँदभारी
जयजयजय कहि सुरसमुदाई ❋ बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई
तब विदेह रामहिं सहप्यारा ❋ सिंहासन ऊपर बैठारा
पुनि तहँ तनया बोलि पठाई ❋ सखिनसमेत सभा महँ आई
पहिरे वसन विभूषण नाना ❋ दहिने कर जयमाल सोहाना
सियशोभालखिसकलभुवाला ❋ भये अपनपौरहित बिहाला
रामै चकृत चितव वैदेही ❋ कहां गये मम परम सनेही
रघुपतिढिग लैगईं सहेली ❋ देहुमाल प्रीतम उर मेली
प्रभुछविलखिसियकंकनमाहीं ❋ रही टेकि कर टारत नाहीं
धरिधीरज पुनि माल उठाई ❋ सकुचसहित हरिउरपहिराई
देखि देखि रघुपति उर माला ❋ सुरनरमुनि सब भयेनिहाला
पुनिसिय करगहि कंचनथारी ❋ हर्षसहित आरती उतारी
सखिनकह्योपतिपदगहुबाला ❋ छुवतनमुनिगुनितियकरहाला

दो० पहिरेकर नवरतन प्रिय तियभय धरत न हाथ।
प्रीति अलौकिक समुझिकै मनविहँसे रघुनाथ ॥

सखिनसहितपुनिचलीनिकेता ❋ तब सब भूपन के भा चेता
कुटिलमहीप श्वान ज्यों जागे ❋ जहँतहँ गाल बजावनलागे
कोइकह सीतहि लेहु छिनाई ❋ कोइकह धरिमारो दोउभाई
जो विदेह बरजै कछु लेशा ❋ लेहुलूटि तिनहूं कर देशा
सुनिअनन्तकरिसरिसमतकहीं ❋ सरिसबन्धुभयबोलिनसकहीं
बोले तब नृप साधु सयाने ❋ समुझिबूझिमतिहोउअयाने

जो लक्ष्मण सुनि पैहैं कबहीं * भये न रहौ मनो तुम तबहीं

दो० वारण ते वारणकहूं होइ जु वारण नाहिं।
लागी वारण वधन रिपु इन्हैं सुवारण माहिं॥
द्युतिदिमाकबलबांकपन मानसहिततवनाक।
कीन्ही नाश अनाशही दैकै हांक पिनाक॥

त्यहितेतजि कटुवचन उछाहू * देखो रामसियाकर ब्याहू
यहिविधिवादैं विपुल नृपाला * अबसुन परशुरामकर हाला

रोलाछन्द॥ गाधिराजकीसुतारूपकेशीअसनामा। भृगुसुतऋचिकहजाइअश्वदेबरीललामा॥ भृगुबोले वरमांगु उभयसुतदीजैदेवा। यकहमकायकपितहिभलेकरियज्ञकरेवा॥ हविकरकरिद्वैभाग कह्योयाकोतुमखायो। होईसुत द्विजप्रकृतिमातुकेनृपगुणगायो॥ देतभागगाबदलिबहुरि तपसीवरमांग्यो। सोईभयेजमदग्निजननिकेकौशलराग्यो॥ तिनकोसदलवशिष्ठजेंवायोनन्दनिबलते। गोमांगतगेहारि भयोतापसत्यहिचलते॥ तपप्रभावऋषिराव ऋषिनमेंप्रकटकहाये। रच्योस्वर्गमखहेतमांगिरामैजेलाये॥ जमदग्निहिपरसेनरेणुकासुताविवाही। भेसुतशरमेंबड़े परशुधरविष्णुकलाही॥ यकदिनतिनकीमातुचित्रसेनहिलखिमोही। कह्योपिताशिरकाटुकेहूनहिंकाट्योवोही॥ होउसकलजड़रूप रामसुनिशीशनिपाता। वरलैचेतनबन्धुकरेज्याईपुनिमाता॥ यकदिनसहजसुभायहरीगोरामहत्योत्यहि। पितुअरिभोसुततासुतेहीतेविपुलबारमहि॥ बिनक्षत्रिनकेकरी बरीविप्रनकहँसोई। रहिमहीन्द्रगिरिमध्यसिंधुतेसुनतचलोई॥

इत नृप मूढ़नकी गलमँदरी * मिटन न पाई जबतक सगरी
यहि अवसरआये भृगुनाथा * लीन्हे धनुशर फरसाहाथा

गौरवर्ण शिरजटा विशाला ❋ अरुणनयनउरतुलसिकमाला
सहजहु चितवैं जासुकि ओरा ❋ सो जानै जिवलीन्हेसि मोरा
जहँतहँ देखि देखि नृपभाजे ❋ बहुतेन रूप नारिके साजे
बहुत सभय चरणन शिरनावैं ❋ पितासहित निजनामबतावैं
जनकसहित सियनायोशीशा ❋ भृगुनन्दनलखिदीनअशीशा
कौशिकऋषिलै दोनों भाई ❋ मुनिपद मेले नाम बताई
रामहि देखिरहे ठगि ऐसे ❋ बोले पुनि अनजानत जैसे
जनक जुरी केहि हेत समाजा ❋ सीय स्वयंवरहै महराजा
आगे धनुष टूट महि देखा ❋ बोले तब करिक्रोध विशेखा

छप्पय ॥ रे जड़जनक बताउ धनुष कौने यह तोरा। सो तजि सपदि समाज निकसि आवै ममओरा ॥ नाहिंत नृप सबमारि देश सब चौपट करिहौं। तीनिलोकमें ढूँढ़ि तासु कर मद संहरिहौं ॥ सुनि विलखे पुरनारि नर हरषे कुटिल नरेश सब। हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्रीरघुनाथ तब ॥ सुनहु नाथ सब साथ प्रबल भावी लखि परई। जो कृत तिनुकै कुलिश कुलिश तिनुकासम करई ॥ कहां शम्भु कोदण्ड कहां हम बालकबारे। होनहार कर रोष दोष शिर पर्यो हमारे ॥ यथा तारफल पाकिकै पतितहोत खग नाम भव। जो भावै सो कीजिये सबप्रकार हम दास तव ॥ सुनहु राम सोइ दास सदा जो सेवाठानै। करै शत्रुकर काम ताहि को दास बखानै ॥ त्यहिते हरकोदण्ड आजु जेहिं खण्डा होई। सहसबाहु सम समुझि तासुगति करिहौं सोई ॥ भृगु पतिकेर स्वभाव सुनि भई सिया अति शोचवश। तब तिन ते मुसक्याइकै बोले लषण कुमार अस ॥ सुनहु विप्र पन बाल बहुत धनुहीं हम तोरी। तब न किहेउ रिस कबहुँ आ

जु केहिहेतु न थोरी ॥ तव जननीकर पाप पाप त्रिपुरासुर केरा । अपर नृपनकर पाप चाप चितचेति सबेरा ॥ रघुपति-भुज तीरथ बिषे तजेसि प्राण रतिहेतु त्यहिं । बिन समुझे रघुनाथ पर करत रोष परितोष नहिं ॥ रे बालक मति मन्द मोहिं तू ज्ञान सिखावत । सब धनुहिनकी सरिस शम्भु कोदण्ड बतावत ॥ सहित राम सिय तोहिं खेदि वनमांझ जुझैहौं ॥ नृप दशरत्थै मारि सकल पुरजनहिं रोवैहौं ॥ मरतै भूतल तोपिकै बहुरि तपैहौं ताप बहु । जो न करहुँ अस शिवशपथ तौन कहावौं नामयहु ॥ सुनि बोले पुनि लषण मृषा कत मारतगालै । ईश चहै सो करै अपर तेरो मन हालै ॥ सब धनु एकसमान कौन यामें अधिकाई । छुवतै टूट पुरान घुनन डारारहे खाई ॥ जो नहिं प्रिय यह नाम तौ लीजै अपर धराइ मुनि । विप्रनकी कछु कमी नहिं सुनि बोले भृगुनाथ पुनि ॥ रे नृपबालक मन्द देखु परशा की ओरा । ज्यहिते वधि बहु भूप छीनि छोनी बरजोरा ॥ को जानै कैबार सौंपि विप्रनकहँ दीन्ही । तोको बालक समुझि ढील यतनी हम कीन्ही ॥ अबते परखु प्रभाव मम यम जनि पितर रोवाउ निज । नाहिंत डरिहौंमारि फिरि निपटहि जान न मोहिं द्विज ॥ हे मुनिकत हरबार देखावत मोहिं कुठारी । फूँकन ते तृण उड़त उड़त नहिं भूधरभारी ॥ जो तुम होतिउ सुभट तदपि हमरेकुलमाहीं । विप्र धेनु सुर साधु लरत इनते कोइ नाहीं ॥ वधे पाप हारे अयश सब विधि भला जो खाइ गम । अस बिचारि मनमारि तव सहियतहैं कटुवचन हम ॥ गाधिसुवन सुनिलेहु अहै या बालक खोटा । जान चहत यमलोक ललित परिहरि निजजोटा ॥ त्यहिते लीजे बरजि

कछुक कहि सुयश हमारा। नाहिंत सबके अछत आजु खल जाई मारा ॥ कौशिक समुझ्यो मनबिषे मुनि जानत हैं बाल ये। अस न विचारत जगतपति हैं कालहुके काल ये ॥ हँसि बोले पुनि लषण सुनत मुनि सुयश तुम्हारा। तुम्हें अछत को कहै अहै असको सरतारा॥ जो न एकमुख चुकै करो दश बीस मँजूरा। ज्यहिते सब सुनि लेइँ सपदि ह्वैजावै पूरा ॥ शूर न वरणत शूरता कादर करत कलाप घर। समुझि परत म्वहिं कछुक दिन कीन सरहँगी आप वर॥ सुनि लक्ष्मण के वचन जनक मनमाहिं डेराहीं। पुरवासी ह्वै विकल बदैं आपु सकेमाहीं ॥ देखौ भूप किशोर गोर जेतनो है छोटा। तेतनो खोट लखात डरत नहिं मनकर मोटा ॥ भृगुनन्दन करिकोप तब परशु सुधारेउ हाथगहि। रे बालक करु समर इत नाहिंत धरु धनुबाण महि॥ कह अनन्त यहिभांति हमैं जो अपर प्रचारत। तौ फिर दिखत्यो समर चहै सो ह्वैमा हारत ॥ पूजेपर रिसकरै गुरू कर पदलोपै पुनि। पदपरि रोपै पांव नीचके करम मिदंसुनि॥ बोले विश्वामित्र तब क्षमहु जानि अज्ञानजू। बालक के गुण दोष दोउ गनत न जे बुधिमान जू ॥ सुनि बोले भृगुनाथ याहि जो अब तक राखा। सो सब शील तुम्हार भारते कीन न माखा ॥ नाहिंत काटि कुठार उऋण होतेउँ गुरु तेरे। तब मनमें सुख होत शोक मिटते उरकेरे ॥ गाधिसुवन मनमें कह्यो मुनिसम अज्ञ न आन कोउ। इन्हैं विचारत खाण्डमय अयमय जानत नाहिं दोउ ॥ कहेउ लषण पितु केर करज जननी शिर दीन्हेउ। गुरु कर ऋण रहिगयो चहत हमते सो लीन्हेउ॥ गये बहुतदिन बीति ब्याज बढ़िगा बहुभाई। लीजे ब्योहरु बोलि तुरत मैं

देहुँ गनाई ॥ चरहि सकतकरि अचर प्रभु अचरहि जो करि
देतचर। तासु अनुजपर परशुधर कैसेसके चलायकर ॥ सुनो
जनक मुख तनक अहै बालक कटुवादी। मरन कहत ममहाथ
चहत नहिं देखन शादी॥ वेगिकरो दृगओट चहौ जो याहिबचा
वा। पाछेदिहेउ न दोष काल याकर चलिआवा॥ परम कठिन म
मनाम सुनि गर्भ स्रवैं नृप रवनि सब। ताहि जरावत जन्तु जड़
सुनिबोले हँसि लषण तब॥ सुनो विप्र जो तुम्हैं नीक उतसाहन
लागे। तौ लीजै दृगमूंदि देखि कोइ परै न आगे॥ नाहिंत वन
भजिजाहु बोलि पठवा नहिं काहू। जरत होय जो गात पैठि ज
लमांझ नहाहू॥ वैदहि बोलि देखाइये ज्वरकर होइ न दोष
उर। सुनि कोपे भृगुनाथ अति डरे नारि नर जानिफुर॥ लखि
बोले तब राम काम हौं नाथ बिगारा। मोपर कीजै रोष दोषबि
न बालक बारा॥ देखिधरे धनुबाण कहिसि कटु जात सुभाय
न। जो औत्यौ मुनिवेष परत प्रमुदित तव पांयन॥ हमरे कुल
कीरीति यह कालहुते नाहीं डरैं। त्तमहु चूक अनजानकी संत
सदा दायाकरैं॥ सुनिबोले भृगुनाथ रामरिस जावै कैसे। अबहूं
तक तव बन्धु विलोकत टक्कर जैसे॥ जो न याहि फलदीन की
न करिरोष कहा हम। गर्भस्रवै नृपनारि निकट ठाढ़ो वैरीमम॥
बहत न करवर दहत तनु कटु कुठार कुंठित भयो। किधौं बसी
करुणा हिये की स्वभाव सो फिरिगयो॥ सुनिबोले पुनि लष
ण नाथ मैंदास तुम्हारा। टूट धनुष नहिं जुरी किहे रिस बारहिं
बारा॥ जो अतिशय प्रियहोइ कछुक तौ करिय उपाई। बो
लिगुणी द्वैचारि बहुरि दीजै जोरवाई॥ बैठिजाहु करिकृपा
अब पायँनके रिपु होउजनि। नयन तरेरे राम तब गेगुरुपहँ त
जि कटुबकनि॥ सुनि भृगुपति तब कोपि वचन रघुपति ते भा

खा। इतशठबिनवतमोहिंभुरैउतसोदरराखा ॥ करुममसम्मु खसमरनतौत्वहिंडरिहौंमारी । निपटै विप्र न जानुअहौंमैं रिपुमदहारी ॥ धनुषतोरिअहमितिभई मानहुँजीत्योजग त सब । सोतवअकड़मिटाइहौं सुनिबोलेरघुनाथतब ॥ हे मुनिकहौबिचारि बढ़ौजनि अब अधिकाई । जो हमनिद रबविप्र अपरको शीशनवाई ॥ परसत टूटपिनाक करब हममदक्यहिहेता । स्वामिहिंसेवकसमरकहो कसहेत नि केता ॥ यहप्रभुताप्रभुवंशकी अभयहोय तुमतेडरैं । गूढ़ गिरासुनिरामकी भयोज्ञान परशाधरै ॥ तब बोले हेराम धनुषश्रीपतिकरयेहू । आकर्षहु गहिपाणिमिटैजेहिममसं देहू ॥ छुवतैचढ़चापिनाकदेखिभृगुपति पछिताने । मारहु ममगतिकूटछूटशरसकलनशाने ॥ जान्यहुरामप्रभाव तब पुलकिगातयुगजोरिकर । लागेपुनिअस्तुतिकरनजयरघु कुलमणिमानहर ॥ जयजगदीशदयाल जयतिसुरद्विजप्र तिपालक । जयमुनिमानसहंसजयतितमचरकुलघालक ॥ जयशोभासुखसिंधु जयतिकरुणागुणआगर । जयबल विपुल वितंश जयति रघुवंशउजागर ॥ जय जग यावत जीवकी तवण्द्प्रीति न होइहै । तावतसंसृतिशोकतेछूटि न सुखमें सोइहै ॥

दो० जो मैं अनजाने कहा सो क्षमियो दोउ भ्रात ।
असकहिशीशनवाइ मुनि मुदितभये वनजात ॥
हरषे लखि पुरलोग सब वरषे खेचर फूल ।
बाजे बाजनविविध विधि भाजे प्रति अनुकूल ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतपरशुरामयलथाआयणोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौंमानसमतकछुक नाटक चरितबखानि ॥
तबविदेह मुनितेकह्यो होय जो आयसु नाथ ।
करौंसोसुनिकहगाधिसुत भयोब्याहुधनुहाथ ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥ भयोब्याहयद्यपि साथधनुके तदपि दूतपठाइकै । लीजैदशरथहिबोलिसहितबरातब्याहैंआइकै ॥ भलदेवकहि लिखिभेव दीन्हों पत्रलैधावनचले । कातिकबदीप्रतिपदादिनलियबोलिकारीगरभले ॥ तिनते कह्योपुरसकलसाजहुसुभगभवनवितानजू । शिरराखिम नअभिलाषलागेकरनगुणनिरबानजू ॥ विरचेकनकमय रम्भखम्भअचम्भमरुमणिपातजू । तिमिघँवरिघनिफणि बोहिलोहितसुमनमंजुलखातजू ॥ सुरचित्रमित्रसरोजधा रेद्रव्यकलिअलिधेनुजू । असतारबन्दनवार मुक्ताहारह रितसुबेनुजू ॥ चहुँओर दीपअजोर कुलकिरि गुलिकचौक पुरायहू । ध्वजकलशचामरछत्रसौरभपरिसितरणतुरायहू ॥

दो० जिमिसुरगतसोपानमणिजटितलसेदिशिचारि ।
विधिवतकीन वितानतिमि तिष्ठनहितनरनारि ॥

कहँतक कहौं तहां की सामा ❋ जहँ दुलहिनदूलहसियरामा
नृपगृहसरिससबननिजसाजे ❋ शोभा निरखि देवपतिलाजे
बसतलच्छि जहँ कपट सरूपा ❋ तहँकरविभवकिजाइनिरूपा
कौशलनगर सकल नरनारी ❋ रामलषण बिन रहे दुखारी
कौशल्यादि कहैं नृप रानी ❋ वीरजननिसुत बादिबियानी
राजहुकेरहैं प्रिय अधिकारी ❋ मुनि लैगयो ठगौरि सिडारी
तबते मिली न खबरियथारथ ❋ दलनदोष दुखप्रदपरमारथ
यकुतौवनपुनि अनुगनलीन्हे ❋ ऋषिप्रसन्नहितहमहुँनदीन्हे

क्यहिपठई जो खबरिलयावै ॥ भेदिन बहु अब कछू न भावै
त्यहित्तणदूतअवधपुरआये ॥ फणिदिनसुनिनृपनिकटबुलाये
करि प्रणाम पाती तिनदीनी ॥ लागे पढ़न प्रेमरस भीनी

चौबोलाछन्द ॥ स्वस्तिश्रीश्रीपत्रीशुभस्थानजी। कौशलपुरधुरपहुँचे नृपकर कानजी ॥ लिखीविदेहनगरते विश्वामित्रकी। मिलिबांचनै अशीशसहित सुरपित्रकी ॥ कुशल चेमतवतनयअहैंसमनाथजू। तिनहूँकेरप्रणामचरणधरि माथजू ॥ रौरेपुण्यप्रतापअचल मम मखकरी। तारिनि पदरज डारिअहल्याअघभरी ॥ धनुषयज्ञपुरजनकजुरे नृपभूरिजू। गजइवपङ्कजरामसो डार्योतूरिजू ॥ सीताहूजयमाल तिन्हैं पहिरायहू। भृगुपतिकरिअभिवादन वनहिंसिधायहू ॥ अब शुभसाजिबरातआइसुतपरणिये। सुनिनृपमुदयशलह्यो सो कैसेवरणिये ॥ जिमिकाहूके चेत्रछीनसबलैलये। ह्वै प्रसन्न तिनसहितग्रामकैयो दये ॥ धरिधीरजपुनिकह्यो जनक कैसे लखे। महाराज कहुँ छिपतकुमुद पङ्कजसखे ॥ सुनत भरत रिपुदवन दौरिआये तहां। पूछतप्रियदोउबन्धुकुशलयुतहैं कहां ॥ तबभूपतिपत्रिकादई सो बांचेऊ। भयेप्रफुल्लितगात अधिक सुखमाचेऊ ॥ लगे निछावरिदेन मुकुर काननदये। लखि सुमोद नृपसचिवसहित गुरुपहँगये ॥

दो० दीन पत्रिका वन्दि पद बांची मुनि सहमोद।
कह्यो कि सुकृती नरनकहँ अवनि अम्बकी गोद ॥
जिमि सब सरिता सिंधुमें जाहिं यदपि अनयास।
तिमि सुख सम्पति आवहीं धर्मवानके पास ॥
तुमसम सुकृती पुरुष को भयो अपर तनुधारि।
रामसरिस सुत जासु युग कौशल्यासी नारि ॥

सपदि सजाइ बरातवर चलहु भले कहि तत्र ।
पुनि आये रनिवास सब बोलि सुनायो पत्र ॥
भईं मुदित रानी सकल दीन्हिनि विप्रन दान ।
पुरवासिन के हरष सुख को करिसकै बखान ॥

हरिगीतिकाछन्द ॥ करिसकैकौनबखान सरिस विमान गृहसबहिनसजे । रचनाअलौकिक देखि निजचितलेखिच तुराननलजे ॥ नृपधाम अतिअभिराम तामधि बन्योदिव्य वितानजू । विधुवदनि शोभासदनि सुन्दरिकरहिंमङ्गलगान जू ॥ कतहूँपढ़ैंबटुवेद कतहूँ वन्दिगण विरदावली । कतहूँटि केअवनीपआये नेवतनृत्यकरावली ॥ देखतफिरैं पुरलोग वन्दनयोग सुरमुनिगातको । तब अवधनाथ बोलाइसचिवन कह्योसजौबरातको ॥ त्रिभङ्गीछन्द ॥ दीन्ह्योजब आयसु मन्त्रिनकायसु पाइरजायसुसबधाये । लागेहरषातहिसजन बरातहि वरणिनजातहि जो ल्याये ॥ कुञ्जरबहुकारे बड़मत वारेपरेवहारेलकलकैं । गजघंटजोबाजैं जनुघनगाजैं अतिछ विछाजैं धकधकैं ॥ कञ्चनकीढारी कसीअँबारी मणिमय सारी पँचरङ्गी । बैठेतिनमाहीं नृपहरषाहीं देखिलजाहीं निर अङ्गी ॥ वरवाजिअनेका एकतेएका चलनिविवेका जिनमा हीं । कबरेकोइकारे श्वेतलखारे विविधसँवारेठहनाहीं ॥ छम छम्मछमकैं छुवत चमकैं फुरकिधमकैं पग भूमैं । भरतादि नवीले कुवँरछबीले धनुशरकीले चढ़िघूमैं ॥ गजरथबहुतेरे अश्वनकेरे वृषभघनेरे अतिसोहैं । सुखपालअपारा शुतर सवारा परेवहारा मनमोहैं ॥ भालेबरदारे भंडिनवारे अगणि तधारे फुलवाई । लीन्हेबहुताजी आतशबाजी विपुलसमाजी गनगाई ॥ सुन्दरचौपाला एकविशाला जलजप्रवालामणिन

मयो। तामध्य विराजैं बालक छाजैं चमर ढराजैं इत उतयो॥ बाजैं बहुबाजन विविध अवाजन आणिकताजनपै धमकैं। बांधे हथियारा वीर अपारा तुपकतयारा असि चमकैं॥ पकवान मिठाई रुचिर बनाई शकट लदाई निजसङ्गा। चोपैसमियाना तंबूनाना छकड़न पाना अरु भङ्गा॥ रेशमी गलीचा दीरघबीचा छकड़नबीचा लदवाये। कंचनके घैला अतर भरैला सुमन सजैला खँधवाये॥ धन विपुल सँदूखन भरे विभूषन वसन अदूषन अतिनीके। अप्सरा अनेका नृत्यकरेका भांड़ भड़ेका इढ़जीके॥ यहिभांति बराता सजिभे ताता चली समाना नहिं मगमें। सुनि सुनि नर धावहिं देखन आवहिं शीश नवावहिं नृप मनमें॥ भये सगुन अनंता हितभगवंता सुर मुनि संता तिनमाहीं। गुरुसहित नरेशा मनहुँ सुरेशा लसत विशेशा लघु नाहीं॥

क०॥ करत बरातको पयान नरनाह जब सुरगण आसमान देखत बहार हैं। डेढ़कोटि हैं मतङ्ग औ तुरङ्ग तीसकोटि पालकी पचीस कोटि पैदर अपार हैं॥ भारबरदार सवासात कोटि ऊंटजाति सेवक समूह पांचकोटि बाजदार हैं। रथ सवातीन कोटि दशरथरायजी के साठिलाख नौहजार सांड़ियासवार हैं॥

दो०॥ जहँ तहँ करत निवासमग पहुँचे पुर मिथिलेश।
लेनचले अगवान सुनि साजि समाज सुवेश॥
कनक कलशकोपरन भरि भोजन विविध प्रकार।
दधि चूरा भूषण वसन लैलै चले कहार॥

वर बरात अगवानिन देखी ॥ इत उत भये अनन्द विशेखी
हर्षि परस्पर भे यकमेला ॥ पुनि कछु दूरि चले बगमेला
जनु पश्चिम पर सागर भारी ॥ आवत ताहि चला लैटारी

सकल सौज नृप आगे कीन्हीं * लीन्हीं हर्षि याचकन दीन्हीं
पूजनकरि सबभांति सुहावा * जनवासे महँ आनि टिकावा
सुनिसियसिद्धिनसकलबुलाई * भूप पहुनई करन पठाई
सुरपुर के जे भोग विलासा * दिये पूरि तिन सबके पासा
सिय प्रभुता रामहिं लखिपाई * अपर जनककी करैं बड़ाई
पितु आगमन जानि दोउभाई * मुनिवर संग चले हरषाई
आये जहँ जनवासे भूपा * चलेविलोकि तृषित जनुकूपा
कीनप्रणहुमुनिपदधरिशीशा * नृपहिगाधिसुतदीनअशीशा
पुनि पितुचरण परे दोउभाई * मुदित भूप उर लिये लगाई
विप्रन सहित वशिष्ठहि वन्दे * पाइ अशीश भये आनन्दे
भरत सबंधु मिले सुखमानी * सकल समाज भेंटि हरषानी
कुशलप्रश्नकहितिष्ठतभयऊ * सहित देव जनु मंदिर नयऊ
नाकनटी नृत्यहिं करि गाना * कौतुक करहिं विदूषक नाना
भूप निकट सोहैं सुतचारी * मुदित भये लखि पुरनर नारी
विधिके वेद भये कोउ कहईं * अपर बदैं अब आये अहईं
दहिनेदिशि हैं लच्मण रामा * बायें भरत शत्रुहन नामा
धन्य भूप भल देव मनाये * जो सुत चारि मनोहर पाये
धन्य विदेह सुनयना दोऊ * धन्य सुता सुत हम सब कोऊ
जिनसियसहितसुवनचहुँहेरे * पुनि देखब विवाह इनकेरे

दो० उनतालिस दिन लगनते आई प्रथम बरात ।
त्यहिते पुर आनन्दअति सकललोग हरषात ॥

विधिते विनय करैं यहिभांती * देहु बढ़ाय दिवस अरु राती
गये बीति वासर यहि भावा * लग्नकेर दिन जादिन आवा
हिमऋतु मार्गमास सुखमूला * ग्रहतिथिनखतयोगअनुकूला
लगनशोधि विधि नारदहाथा * पठैदीन जहँ तिरहुतनाथा

गनीजनकके गनिकनखोली ❋ हर्षिकही तिन अहै अमोली
सुनि विदेह बोले सुखपाई ❋ अवधपतिहि लै आवहु जाई
शतानन्द तब साजि समाजा ❋ आये जहँ जनवासे राजा
कौशलेशकर विभवविलोका ❋ अतिलघुलागतिन्हैंसुरलोका
भयो समय पगधरिये नाथा ❋ साजिसमाजचले तिनसाथा
लखिसुरसकल सुमनबरषाये ❋ चढ़िचढ़ियानजनकपुरआये
पुरशोभा लखि देव लुभाने ❋ निजनिजलोकसबनलघुजाने
विधिहिभयोअचरजअतिभारी ❋ निजकरणीनहिंकतहुँनिहारी
शम्भुकहेउ जनि भर्म भुलाहू ❋ देखहु रामसियाकर ब्याहू
जासु किये हम तुम सब कोई ❋ यहिपुर आजु विराजतसोई
सुनिसुवचनसुखलह्योविधाता ❋ आगे दीख दशरथै जाता
सबनबीच नृप सोहत कैसे ❋ अमरनमध्य अमरपति जैसे
चढ़े तुरंग तवेरन माहीं ❋ बिबिकरकनकलुटावतजाहीं
चौपालेमधि रघुपति सोहैं ❋ विधिहरिहर सुरदेखिविमोहैं
विष्णुविधिहि विधिभवैसराहैं ❋वसुदृगलखिदिशिसुरमुनिकाहैं
बड़भागी भे चक्षु हजारा ❋ असकहि मिलेबरातमँझारा
रामहिं देखि नगर नर नारी ❋ करहिं आरती हाथ पसारी
आवतजानि बरात सुनयना ❋ लागी साजसजावन अयना
विबुधवधू धरि कपट स्वरूपा ❋ मिलीं आय रनिवासे भूपा
देखि सबन सनमान्यो रानी ❋ चीन्हे विना प्राणसम जानी
समयसमुझिसबसखिंनसमेता ❋ चलीमुदित बरपरछन हेता
गावैं गीत मनोहर नाना ❋ सुनि छूटैं तपसिन के ध्याना
दुलहैदेखि अधिक हरषानी ❋ भई प्रेमवश प्रफुलितरानी
लोक वेद विधिकरि सुखपाई ❋ अर्घ्यदेत तर मंडप लाई
प्रीतिसहित आसन बैठारी ❋ कनकथार आरती उतारी

मणिमयमाड़वछवियहिभांती ❋ देखिपरीतहँ अगणितबाती
भूषणवसन निछावरि करहीं ❋ याचकपाइ मोद उर भरहीं
मिले मुदितमन समधी दोऊ ❋ सो उपमा कहिसकै न कोऊ
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये ❋ सादर जनक मंडपै ल्याये
आसनदीन्ह सबहिंसनमानी ❋ पूजे विप्रवृन्द मुनिज्ञानी
सहित बरात दशरथै पूजा ❋ मानि ईश सम भाव न दूजा
रामचन्द्र मुखचन्द्र सुहाना ❋ चितवैंसकल चकोर समाना
समयसमुझि बोले ऋषिराई ❋ वेगिकुवँरि अब आनहुजाई
सुनि उपरोहित की वरबानी ❋ चली सियै लै सखी सयानी
पदकसनारमना रव छाई ❋ मनहुँ मदन मोहनी सुहाई
चंद्रमुखी तड़िइव मृगनयनी ❋ सकलमनोहरकोकिलबयनी
सियशोभा नहिंजाय बखानी ❋ जगदम्बिका रूप गुणखानी
आवत देखि बरातिन सीता ❋ कीन मनहिंमनप्रणतपुनीता
सुतनसहित दशरथ हरषाने ❋ बरषिसुमन सुर हनेनिशाने
पहुँची जब मंडप वैदेही ❋ लागे शांति पढ़न मुनि तेही
कुलगुरु गौरि गणेश पुजाये ❋ प्रकट लेन पूजा सुर आये
सुरपुजाइशुभआसनदीन्ह्यो ❋ पुनिमुनिबोलिसुनयनैलीन्ह्यो
जनकसव्यदिशि सोहतसोई ❋ मनहुँ सुकृत छविमूरतिजोई

दो० कनककलशकोपररुचिर भरिपियूष निजपानि ।
लागे धोवन बरचरण नृप रानी सुखमानि ॥
जे पद बसत महेश उर ध्यावत मुनिजन ढेर ।
ते पदपद्म पखारहीं धन्यभाग नृप केर ॥

करतल जोरि कुवँरिबर दोऊ ❋ शाखोच्चार कीन मुनिसोऊ
पाणिग्रहण त्यहिपाछे भयऊ ❋ कन्यादान भूप वर दयऊ
करिसुहोम गठिबंधन रागीं ❋ प्रमुदित होन भाँवरी लागीं

मणिमयथम्भ रही छविपूरी * निरखतमनहुँ मदनरतिभूरी
भये छकित सब देखनहारे * फेरा फेरि ऋषिन बैठारे
राम सियाशिर सेंदुरदीन्हा * मनहुँउरगशशिभूषितकीन्हा
पुनि दोउ यकआसन बैठारी * देखिलोग सबभये सुखारी
कह रघुनाथ तहांकी शोभा * वरणिसकैजगअसकविकोभा

दो० बनी बनी जाकी जनी लगत जनी दधिकेरि ।
बनो बनो जाको जनो कृष्णजनो जनु हेरि ॥

तब विदेह मुनि आयसु पाई * लीन्ही तीनिहुँ कुवँरिबुलाई
नाममाण्डवी गुणमयचीन्ही * सोनृपब्याहि भरतकहँदीन्ही
परमसुशील उरमिला नामा * सो लक्ष्मणहिंबरीअभिरामा
श्रुतिकीरतिछविजाइ न वरणी * रिपुसूदनहिं भूप सो परणी
रामसरिसभे सकल विवाहा * त्रिभुवनमें भरिरहा उछाहा
सवर सुन्दरी राजहिं कैसे * जिययुतविभुन अवस्थाजैसे

कुं० वपुष वितान विचित्रमधि जीव अवध अवधेश ।
जाग्रदवस्था श्रुतिसुयश विभुविश्वक रिपुदेश ॥
विभुविश्वकरिपुदेश स्वपनमाण्डवीविमलमति ।
विभुतेजैकसो भरत उरमिलाउदित सुखीपति ॥
उदितसुखीपतिकेर विभु प्रागैके लक्ष्मणअदुष ।
तुरी सियाविभु रामजी अन्तरयामी दिविवपुष ॥

कुवँरि कुवँर अनुरूप निहारी * मुदितभये सुरनरमुनि नारी
अवधराजलखिअतिमनभाये * क्रियनसहितजनु चहुँफलपाये

दो० अर्थ क्रिया आधीनता धर्म्म कि श्रद्धा शक्ति ।
कामक्रिया करतव्यता मोक्ष कि केवल भक्ति ॥
श्रुतिकीरति रिपुहन अरथ भरत माण्डवी काम ।
धर्म्म धरणिधर उरमिला मोक्ष जानकी राम ॥

नृपमणि दायजु दीनअति हय गजरथ हथियार।
भूषण पटगो रतनगण दासी दास अपार॥
लीन अवधपति मुदितमन दीन जाहि जो आस।
उबरि रह्यो याचकन ते सो आवा जनवास॥
तब विदेह तहँ सबनकी बहुविधि बिनती कीन्ह।
सुनिसनमान्योअवधपतिमुनिनआशिषादीन्ह॥

पुनि दशरथ जनवास सिधाये ॥ देवन दीख सुमन बरषाये
तबवनिता मुनि आयसु पाई ॥ लरिकनकोहबरचलींलिवाई
गौरश्यामछविअमितअनंगा ॥ ब्याह साज सोहै सब अंगा
कमलनयनच्चितवतचितचोरैं ॥ देखि देखि युवती तृणतोरैं
कोहबरलाय सकलअनुरागीं ॥ लौकिकरीति करनतहँ लागीं
प्रभुइ उमा लहकवरि सिखावैं ॥ सीतै श्रीशारदा बतावैं
निजकरमणि बहु रूपनिहारी ॥ प्रेमविवश सियसकत न टारी
हास विलास भयो बहुभांती ॥ पुनि आये जहँ सकल बराती
बहुरि रसोईं भई तयारा ॥ बोलि पठाये जनक भुवारा
परत पांवड़े मन्दिर आये ॥ चरण छालि चौकिन बैठाये
सुतन सहित दशरथ पगधोये ॥ आसन देइ सुवारन जोये
लागे ते परसन पनवारा ॥ षटरसव्यञ्जन विविधप्रकारा
नानाविधि पकवान मिठाई ॥ दधि गोरस फल फूल खटाई
वरणि न जात देखि अनुरागे ॥ पञ्च कौरकरि जेवन लागे
वधू विलोकि लगीं गरियावन ॥ सुनहु राम दूलह मनभावन

दो० बने फिरत जो आपके गुरुही विश्वामित्र।
तो क्यहिविधि रघुनाथ तुम कारजकरौ पवित्र॥
जनकसुताके जनकको जनक कहत सब आहु।
कौन कौनके जनक ये याको करहु निबाहु॥

सुनियतअजकेसुतदशस्यंदन ❋ दशस्यंदनके भे अजनंदन
यह अवरेव परी क्यहिभांती ❋ समुझिपरतअससकलबराती
मुदितहोय सब सुनिइमिगारी ❋ अमुके परसौं कहैं पुकारी
यहिविधिसबहिनभोजनकीन्हा ❋ आदरसहितआचमनलीन्हा
देइपान पूजे मिथिलेशा ❋ जनवासे आये अवधेशा

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतरामचन्द्रविवाहवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु गणपगिरा सुखदानि।
कहौं कलेऊमत कछुक कौशलखण्ड बखानि ॥

निशानिरखि सब सोवनलागे ❋ बड़ेप्रात कौशलपति जागे
प्रातक्रियाकरि आयसुपाई ❋ चारिलाख वर धेनु मँगाई
विप्रनका दीन्हीं नरनाहा ❋ गजरथवाजिजाहिज्यहिचाहा
कीन्हे याचक सकल सुखारी ❋ यथा अभ्र दै चेत्रन वारी
त्यहिअवसर नृप मंत्री आये ❋ करन कलेवा भूप बुलाये
उठे कुवँर पितु आयसु पाई ❋ चढ़िचढ़िघोड़न चलेसिधाई
कोइ अरबी जंगली पहारी ❋ चिरचेंचक चम्पा कन्धारी
कोइकबुलीअँबोजकोइकच्छी ❋ बोत मेमना मुंजी लच्छी
कोइ किसमी भुठार फुलवाई ❋ गर्रा गुण्ठ जुमिल्ल दरियाई
श्यामकरण कुम्मैत पठानी ❋ टांघन तुरकी पचकल्यानी
मुसकी सबज इराकी पोषे ❋ पीन नवीन विशाल अदोषे
सकलअलंकृतचलनिसुठीका ❋ सबते तुरग रामकर नीका
विश्व विमोहन हेतु विचारेउ ❋ वाजिवेषजनु मनसिज धारेउ
पहिरे पट भूषण तनमाहीं ❋ चपल तुरङ्ग नचावत जाहीं
मनहुँ मेघयुत उडुगण दामा ❋ जातनचावतशिखिअभिरामा
देखैं जहँ तहँ लोग लुगाई ❋ कहैं जातहैं चारो भाई

पहुँचे जब सब जनक अगारे * कनक पलँग रानिन बैठारे
बहुविधिके भोजन धरिआगे * नेग पाइ निज जेवनलागे
अचवनकरि बैठे तिन पासा * लगींकरन तियहासविलासा
एक सखी बोली तुव माई * क्यहिहितसुतजनमेहविखाई
कह्यो राम कत बूझत येहू * निकट नरेश परीक्षा लेहू
अपरवसन करष्योनिजओरा * मिलेचोर तुम सब चितचोरा
त्यहिक्षणलक्ष्मीनिधिकीनारी * सिद्धिनामले सखिनसिधारी
सहजानन्दनि मदनमंजरी * चन्द्रकला कमलाक्ष अंजरी
चन्द्रमुखी चन्द्रावति योगा * विमलाउतकर्षिनिप्रियभोगा
चित्रा चितरेखा ईशाना * कृपा कांचनी सत्या ज्ञाना
सुदंकसा चन्द्राननि हंसी * सुधामुखी मुख मंजुप्रशंसी
माधुर्या उज्ज्वल विषदाक्षी * चरुशीला अतिशीलासाक्षी
औरौअली अनेक अनूपा * सहितसिद्धि आई अलभूपा
रघुपतिछविअवलोकिजुड़ानी * बोलीं बिहँसि हासकी बानी
सुनियतलालकामअतिनीका * तवअंबनिकीन्ह्योत्यहिपीका
हम चितचोर सासुपहँ आयो * तुमही देखत वदन दुरायो
बोली सिद्धि रावरे भगिनी * ऋषिकिमिबरीहरीनतमगिनी
कह्योलषणजसलिख्योलिलारा * तैसे होत टरत नहिं टारा
हम नरेशसुत जनक योगीशा * भयो ब्याह भावीवश दीशा
कबते राजकुमार कहाये * पाल्यो ऋषे ऋषे उपजाये
हमते भल तापस सब दिनके * लेबोलाल हमहुं सिख तिनके
बोलीकलावतीसिधिभगिनी * लक्ष्मीनिधिकीसारिसुलगिनी

दो० इककुमार पुनि मुनिन सँग रहियहि रसकीबात ।
सिख्योकहां ऋषितियनपहँ कीदारक ढिगतात ॥

कहेउ शत्रुहन सत्यपर तुमहुँ कुमारी आहु ।

तुमकहँ पायोज्ञान यह की कोइकरि असनाहु ॥
बोली चंद्रकला करि टेकी ❋ तुम साधुन के बंधु विवेकी
रौरे को रस हास न चाही ❋ परस्वारथी संतगति आही
हमहूं सुनि अस्नेह तुम्हारा ❋ दरश हेतु द्वारे पगुधारा
सइउ चीन्हि बिनकहे पतीजै ❋ तनधन ते सेवा अब कीजै
सर्प डसितको जो नहिं झारै ❋ लगै दोष नत मंत्र बिसारै
यहिविधि बदिबातैं सुखलेवैं ❋ निजनिजरुचिसबरामहिसेवैं
कहेउसिद्धि हमनारिअपावन ❋ परयकगुणहुदीनजगजावन
ज्यहिते नेह करैं अनुरागी ❋ सर्वसुजाहु सकें नहिं त्यागी
तिमि तुमते ठानी हम प्रीती ❋ करौंनिबाहसमुझिनिजरीती
कहप्रभु मोहिं सनेह समाना ❋ प्रियन कछू यहजानजहाना
तुमप्रियप्राणसरिसमोहिंभासे ❋ मांगि बिदा गमने जनवासे
बोलीबहुरि जीतहमलीन्हा ❋ दिहलफेरिमुखहमतजिदीन्हा
यहि विधि बातन सबन हराई ❋ जनवासे आये सब भाई

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउआगरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतरामविवाहकलेऊकरणविधिवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

दो० रामरमत जो सबन में सब जहँ रमैं सो राम।
रामहिंलखिरघुनाथजन लहतस्ववाञ्छितकाम ॥

नितनव आदरकरै नरेशा ❋ भूपै चलन देत नहिं देशा
कौशिककही जनकसुनिलीजै ❋ बहुदिनभये बिदा अबकीजै
भले नाथकहि सभामँझारी ❋ जहँतहँ लागी होन तयारी
सुनिनिश्चयपुरजनअकुलाने ❋ जिमिचकवाकजातरविजाने
जनक विविध मेवा पकवाना ❋ दीन्हे पठै पंथ अस्थाना
बीससहस सिंधुर सजवाये ❋ स्यन्दन सहस पचीससुहाये
तुरँगलाख सुरभी युगलाखा ❋ महिषी लक्षसवाई भाखा

कनकवसन मणिभूषण भूरी * अनगनभाजनशिबिकारूरी
औरौ वस्तु अनेक प्रकारा * प्रथम पठाई अवध मँझारा
तब विदेह गुरु सचिव बुलाई * कह्यउ लयावो भूपहि जाई
सुनिमंत्री तित जाइ सुनायो * बिदाहेत मिथिलेश बुलायो
दशरथ सुनि लै दूलह संगा * तथा बरातसाजि बहुरंगा
राजभवन गवने लखि लोगा * हर्ष शोचवश भये वियोगा
एक एकते कहैं विशेखी * आजुलेहु भरिदृग छविदेखी
भूरिभाग विधि दरशन दीन्हे * सो अब जात तयारी कीन्हे
भूप भवन जब पहुँचे जाई * बैठारे सबहिन सचुपाई
बिनती भई परस्पर नाना * समसमधीतिनसमकोआना
जनकबिदाहित सौजमँगायो * देखिसभासब अचरजपायो
मणिअनमोल अनेकअपारा * कनकगनै को कितने भारा
भूषण सुभग एकते एका * भरे मँजूषा चित्र अनेका
वसन रूम पट पाट अपारे * परमरम्य अतिशयगुणभारे
भाजनमणि हाटक रजुकेरे * अतिविचित्र बहुभांतिघनेरे
मेवाचिर उत्तम पकवाना * धरे कूट इव सुखप्रद नाना
शस्त्रसकल स्यंदन गजपाँती * शिबिकासुतर सुहैं सबजाती
औरौवस्तु भांति बहु राखी * हाथजोरि अस्तुतितबभाखी
हे अवधेश विमलयश केतू * सकल काम परिपूरण सेतू
मैं निलज्ज यह सौज दिखाई * जिमिकोइस्वर्णसुमेरुहिलाई
परप्रभु ईशबड़े जे अहई * तिनकी रीतिवेद इमिकहई
दास फूल फल जल जो देहीं * प्रभुत्यहिअधिकप्रीतितेलेहीं
असविचारिम्बहिंदृढ़विश्वाशा * पुजिहौममनकीतुमआशा
सुनिनरेश निजकर शिरधारी * गद्गदह्वै अस गिराउचारी
करियकहा मिथिलेश बड़ाई * जिनघर हमहुं प्रतिष्ठापाई

निजसमसबविधिम्वहिं करिलीन्हे ❋ उभयलोकअनवधियशदीन्हे
यामें अचरज अहै न कोई ❋ मलयसमीप कुतरु हरि होई
जो गुरु लघु लघुता न नेवारी ❋ सोउ छोट कछु होत न भारी
मिले परस्पर कंठ लगाई ❋ जय जय धन्य धन्य धुनिछाई
यथातथाविधि बिबिबिलगाने ❋ बरषे सुमन देव सुख माने
तब विदेह लहि आनँद भारे ❋ निजकर सब दूलह शृङ्गारे
मणि भूषण पट परम सुहाये ❋ नखशिखकुवँरविचित्ररचाये
यद्यपिसब अनप्राकृतसामा ❋ तदपिलगतलघुतनअभिरामा
पुनि नरेश प्रभुपद सद गहेऊ ❋ नर तन धरे केर फल लहेऊ
मनमें कहत लोग सुत चाहैं ❋ कन्याका कछु कमती आहैं
जो जानकी न होत हमारे ❋ रामचन्द्र किमि आते द्वारे
विप्र वेदधुनि करि हरषाने ❋ दान मानदै नृप सनमाने
सकल बराती तब पहिराये ❋ यथायोग्यजोज्यहिजसभाये
बंदीजन गण गुणी अपारा ❋ रुचिलखि दानदीनअनपारा
ते तहँ सकल अनूप सुहाहीं ❋ लोकपाललखिजिन्हैंलजाहीं
रघुपति छवि माधुरी अनन्ता ❋ रहे देखि सुर नर मुनि सन्ता
बहुरि सुनयना धाम हँकारे ❋ मित्र मण्डली सहित पधारे
रानिन देखि लहेउ सुखभारा ❋ बैठारे सब करि सतकारा
दिव्यजलजमणिकनकाभरना ❋ वसन रम्य उत्तम वर बरना
नखशिखदूलह सकलसजाये ❋ सखन समेत विचित्र सुहाये
नारिवृन्दजिमिशशिहिचकोरी ❋ निरखहिंप्रभुछविपलकनमोरी
सिया मातु करजोरि रसाला ❋ कहेउवत्सतुमदोउकुलपाला
सुनिये जीवन प्राणअधारा ❋ बिनती यह मम बारहिंबारा
भूपसचिव हम सब चरदासी ❋ जाति बंधु जहँतक पुरवासी
सबहिं प्राणप्रिय सुता हमारी ❋ कबहूं लागि न ताति बयारी

दृगपुतरीइव सब दिनपाली * निरखतरहिनयथामणिव्याली
तुम्हरे कर निबाहु तेहिकेरा * करहु सो मोद लहै मनमेरा
अस कहि कुवँर लगाये छाती * कीन निछावरि नानाभांती
परी चरण समुझाय सुभाये * पाइ अशीश मण्डपै आये
तब नृप बिदा किये शिरनाई * जनवासे आये हरषाई

दो० अन्तःपुर रानी सकल विकल नारिलै संग।
मणि पट दिव्य अमापवर सजे सुतनके अंग॥
नखशिखसाजि स्वरूपसखि लखिवारे तनप्रान।
चलन निकटगुणि लहैंदुख कोटिनमरणसमान॥

सो० सासु श्वशुर गुरुदेव भूसुर सन्त अनन्त हित।
करेहुसुपतिकीसेव असकहिलिहिनिलगाइउर॥

जे मतिधीर नारि वयभारी * तिनमन अतिकठोरता धारी
कीन्ही बिलग सुतामहि तेरे * रोवैं मिलैं अपर स्वरटेरे
सुनि धुनि द्रवैं दारु पाषाना * चेतन की को करै बखाना
सुता कहै मेरी महतारी * लीजै सुधि लखि दीन हमारी
सुनि महिमातु गिरी मुरझाई * दौरि रवनि टेकिनि समुदाई
शुक शारिक जे पिंजर भीरा * हाय सिया कहि तजें शरीरा
तिनकी दशा अनैसी देखी * दिये संगकरि प्रेम विशेखी
पुरजन विकल वियोग घनेरे * मृत्यु मिलै मांगैं विधि तेरे
जनकहि देखि मिली लपटाई * ह्वै अधीर धरि धीर छुड़ाई
मन्त्रिन दिव्य विमान सजाये * मनहु महिपगृह अपरसुहाये
अशनवसनआदिकबहुसामा * सेज पीठिलो वर सुखधामा
वस्तु समस्त अनूपम सारी * आनि यान महँ धरी सुधारी
तिनमा आनि कुवँरि बैठाई * त्रयलखनृप जाहित सेवकाई
अरु दीन्हे बहुदास पुनीता * विकललोगगावहिंगुणगीता

उठे विमान देखि सुर हरषे * हनिनिशानकुसुमावलिबरषे
पाछे भूप चले पद चारी * पठवन कन्या प्राणपियारी
मन्त्री पुरजन जे गुण भारे * नृपसँग सकल जात मनमारे
आवत पुरपथ चले विमाना * शिबिका करिहरि घेरे नाना
नगर नारि नर निरखि मनावैं * हे विधि कुवँरिबेगि फिरि आवैं
बाहर नगर रुक्यो जब याना * नृपढिग जाय कीन सन्माना
वत्स न रोवहु रहो चुपाई * बेगि लेब मैं तुम्हें बुलाई
ज्यों त्यों करि धीरज उरधारा * बिदाकीन मन कष्ट अपारा
पूजिविप्र अवधेश सिधाये * मंगलमूल सगुन बहुपाये
जय जय कहि सुर वर्षहिं फूला * बाजे बाजन विविध समूला
नृपकरि विनय महाजन फेरे * याचक सब परितोषि निवेरे
तब विदेह बोले अनुरागी * नाथ मोहिं कीन्ह्यो बड़भागी
कोशलेश समधिहि सन्माना * पुनिप्रभुतेमिलिवचनबखाना
राम करहुँ किमि सुमुखबड़ाई * चिदानन्द तुम सब सुखदाई
सेवकसमुझिदरशम्वहिंदीन्ह्यो * सबविधितेआपनकरिलीन्ह्यो
तदपि एक वर दीजै अबहूं * मन तवपद परिहरै न कबहूं
सुनिरघुपतिश्वशुरैसन्मान्यो * पितुवशिष्ठकौशिकसमजान्यो

दो० भरत लषण रिपुसूदनहिं मिले विनयकरि राय।
शीश नाइ वरपाइ सब बन्धु चले हरषाय॥
कौशिक मुनिपद नाइ शिर बोले तिरहुतराज।
नाथ कृपा तव दास के भये सिद्ध सब काज॥

सो० सकल मुनिन शिरनाइ पाइ अशीश विदेह तब।
फिरे भवन पछिताइ प्रमुदित चली बरात इत॥

गीतिकाछन्द॥ इत मुदितचली बरात बालकवाजिजात नचावहीं। मगलोग लखिरघुनाथ छवि निजजन्मको फल पा

वहीं ॥ वरवास करत निवास शुभदिन अवध पहुँचे आइकै । पुरनारिनर सुनि सकल जहँ तहँ चलेदेखन धाइकै ॥ नृपधाम अतिअभिराम कौशल्यादि रानिन जानेहू । अनुराग वशह्वै शिथिल मंगलचारपुनि सब ठानेहू ॥ दधि दूब तंदुल तुलसिदल फल फूल घन निशि आरती ॥ धरिथार रवनि अपार गावत चलीं मानहुँ भारती ॥ जब द्वारगई बरात प्रमुदित मातु सब परछतभईं । करि वेदविधि कुलरीति पावँड़ देत मन्दिर लैगईं ॥ तहँ चारिसिंहासन सुतिनपर कुवँरि कुवँर पधारेऊ । पगधोइ करि आरति निछावरि विविध वस्तु उतारेऊ ॥ अवलोकि सुतवर वधुनयुत आनन्दवश जननी भई । जिमि मूकपावै वाक्य पारस रंक अंधांखीगई ॥ मिलिकरैं लौकिकरीति तब सुत अस्नुषा सकुचावहीं । सुर पितर पूजि पुजाइ मांगैं नीक सकल रहावहीं । महिपाल बोलि बरात दीन्हे यान पट भूषण भले । शिरनाइ पाइरजाइ रामै राखि उर निजपुर चले ॥ पुरनारि नर पहिराइ सेवक छकित सब याचक भये । तब भूप सहित वशिष्ठ भूसुर सन्त अन्तःपुर गये ॥ शिरनाइ सब अन्हवाइ रानिन विविध अशन जेंवायहू ॥ करिदान अति सनमान देत अशीष सकल सिधायहू ॥ पुनि पूजि गुरुहि नवाइ शिर सुत सम्पदा आगे धरेउ । निजनेगु मांगि वशिष्ठ रामहिं राखि उर घरका ढरेउ ॥ तब भूप रानिन सहित विश्वामित्रकी पूजा करी । करजोरि दीन निवास भीतर भवन निरखब हरघरी ॥ पुनि पूजि प्रिय पाहुन अमरगण सुमन बरषि सिधायहू । तब बोलि द्विज गुरु ज्ञाति सुतनसमेत भोजन पायहू ॥ गावैं वधूमिलिगीत अचवनकीन निज धामन गये । तब भूप रानिन ते सकल मिथिलेश गुण बरणतभये ॥ भये मुदित सब तब कहेउ

लरिकाश्रमितउनींदे अहैं । करवाइये अबशयनगेविश्रा ममंदिरजहँरहैं ॥ मणिजटितपलँगबिछाइपटुमृदु शुभ्रसींचिसुगन्धसों । पौढ़ाइचारौभाइबोलीमाइकरुणाकन्दसों ॥ किमितातमारेहुअसुरगण किमि विप्रवनितहितारेहू । किमिकठिनभंजेहुशम्भुधनु किमि परशुधरहिं नेवारेहू ॥ भे काजसबमुनिकृपाते बलिजाहुँ भुजचापनलगी । परतोषि प्रभुसबमातुपुनिभे नींद वशते रँगरँगी ॥ वरवधुनले सब सासुसोईं नागमणि समगोइकै । भैभोरलागेपढ़नबंदी रामजागेसोइकै ॥ करिशौच विप्रनदानदै सहबन्धुनृपजहँतहँगये । अवलोकिविधिसुतगाधिसुत सबसभायुतहरषत भये ॥ शिरनाइबैठेगुरुपितै इतिहासमुनिलागेकहैं । यहि भांतिनितनवहोतमङ्गल बरणिको पारैलहैं । मांगी बिदा ऋषिनाथ दितिकरि विनयरघुपतिराखहीं । समुझिविशेषि तयारतब करजोरिनृपअसभाषहीं ॥ सुतधामधनतवनाथ रानिन सहितमैं सेवकसदा । प्रभुकरतरहियो छोहसबपर दरशदेबयदातदा ॥ पुनिपरेचरणसनेहसहित अशीषमुनिसबकोदई । सियरामछविउरराखिऋषि वनचलेबरणत पहुनई ॥ रघुवीर पन्द्रह बरषके षटअब्दकीश्रीजानकी । भये ब्याहद्वादशवर्ष रहि पुर रामलीला आनकी ॥ महिदेव सन्तनहेतसो समुझतसुखदमनभावनी । अविवेकवन्तन मोहप्रद कोविदनविरतिबढ़ावनी ॥ सियरामजन्मविवाहमंगल मुदितसुनहिंजेगाइहैं । रघुनाथ तेंपरकृपाकरि हरिजगहमेंसुखपाइहैं ॥

दो० श्रीगुरुदेवादासके चरण कमल धरिमाथ ।
बालकाण्ड संक्षेप करि बरणाजन रघुनाथ ॥

दधिसुतभगिनीपतितनय तासुत जननीअन्त।
शैलसुतापतिआदिभुज कह राघव सुतसन्त ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतबालकांडसमाप्तंनामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

इति ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथविश्रामसागर

अयोध्याकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं मानस मत कछुक अध्यातमहि बखानि ॥
जबते आये ब्याहि प्रभु नित नव मंगल होत ।
मुदित रहत पुरनारि नर तात मात गुरु गोत ॥
इक दिन विश्वावसु तहां कियो गान गन्धर्व ।
सुनिप्रसन्नह्वै स्वपुरतेहि कह्यो रहन हित सर्व ॥
तेहिकह इन्द्र निदेशबिन मैं नसकतरहिअन्त ।
कह्यो केकयी बसत है हमरे बल सुर कन्त ॥
हमरे आवत रिस करत अस तुमगये मुटाइ ।
पठइ पत्रिका बानकर लखि नृपरहे चुपाइ ॥
मनमें समुझे केकयी लिखिपठये वच बंक ।
हमरिउ लागी घात तब हमहूं देब कलंक ॥
लिखिपठयोविश्वावसुहि कह्यो जो काहैभूप ।
यह सत्योपाख्यान की मैं कहि कथा अनूप ॥

यहिविधि द्वादश बरषैं बीती * एकसमय की सुनिये रीती
केकयनृप सुत केकय नामा * अवधआयकह्यो नृपतेकामा
खरमुख देश हमार उजारा * त्यहिहित दीजै भरतकुमारा
गुरुनिदेश सुनि भरतै दीन्हा * केकयसुवन गवन तबकीन्हा
बिदाहोतपररामलषणदोउ * सचिवसुवनसँगसुखानन्दसोउ
गे कछुदूरिपठै फिरि आये * सानुज भरत नगर नियराये
केकय चलि आगे लैगयऊ * लखिआनन्दसबनउरभयऊ

विप्रनते तब होम करावा * खरमुखसुनत सयनलैधावा
भरत समरकरि मारो ताही * निरभय भये देशजसचाही
नेहविवश ह्वै मातुल केरे * रहत तहां सो चरित निबेरे

दो० यहां राम सियलषण लखि सगुनकहै यहबात।
समुझि परत आवत भरत भयेबहुत दिनजात॥
वरष अठारह की सिया सत्ताइस के राम।
कीन्हीं मन अभिलाष तब करनो है सुर काम॥
ताहीच्चण तहँ देवऋषि विधिसँदेशकह्योआय।
पूजो प्रतिमा सहितप्रभु बिदाकिये समुझाय॥
एक दिवस श्रीअवधपति मनमें कीन विचार।
रामहिं दीजै राज अब भा पन चौथ हमार॥

गुरुहिं पूंछिनृप कीन तयारी * मंगल सामा सकल सवाँरी
जोकछु नृपअभिषेक मचाही * फलदलजल मँगवायोताही
बाजहिं पुर गहगहे निशाना * नाकनटी नाचैं करि गाना
सेवकसचिव कहैं नरनारी * धन्यभूप भलिबात विचारी
प्रमुदित बदैं एकते एका * देखहु कालिहराम अभिषेका
अमरनसो उत्साह न भाई * बोलि बिघनहित बाकपठाई
नाम मन्थरा केकयि चेरी * आय गिरा ताकी मति फेरी
पुररचना त्यहि दीख नवीनी * पूछेते काहू कहि दीनी
रामराज्य सुनि शरसम लागे * अनमन गई केकयी आगे

दो० ममसोदर की राज जिन वामन ह्वै हरिलीन।
करौं विघ्नतिमि महूँ अब ज्यहिलगिसेवाकीन॥

यहिविधिकरतविचारकुबुद्धी * तजतआँसुकरिप्रथमाकिसुद्धी
भरतमातुबोली का भयली * जानिपरतलछमणसिखदयली
हमैं सीखदेई कत कोई * तवदुखलखिभाम्वहिंदुखसोई

बरत अग्नि शिर ऊपर आई * सोतुम अभयजानि नहिंपाई
कौन बृहद् बीते दिन आजू * पैहैं काल्हि राम युवराजू
सुनि रानी अतिशय हरषानी * लगीदेन भूषण निजपानी
जो तव वाक्य सत्य यह होई * फिरिदेहौं जो मँगिये सोई
हमें रीझ तुम देहौ काहा * तुमहींका नहिं होई लाहा
रामचन्द्र जब राजिहि पैहैं * कौशल्या तब तुम्हें सतैहैं
जिमि कद्रू बिनतै दुख दीन्हा * चित्रकेतुतियअनभलकीन्हा
सुरुचि सुनीता को सुत वनमें * पठैदीन सुख नाहिं सपनमें
शुक्रसुता शरमिष्ठैं कष्टा * दीन कीन निजपतिको नष्टा
सहित गरल भेसगर सयानी * भईबांझ सब शशिकी रानी
यदपिसवतितवसरलस्वभाऊ * करपरिकुअसिकरतघनघाऊ
भूप करत तव आदर भारी * देखिसकीनहिंसवतितुम्हारी
तव सुत पठै नन्योरे दीन्हें * लेत राज निजपुत्रहि लीन्हें
सुवन सहित करिहौ सेवकाई * नाहित रहिहौ पितुघर जाई
समुझिपरतम्वाहिंबिश्वाबीसा * परी बिपति सब तुम्हरे शीसा
जो कहौ राम चहत अतिमोहीं * निरबलमें रिपु मित्रहु होहीं

दो० जिमि वनजारत अग्नि तब पवनसखा होइजाइ।
सोइ मारुत कृश देखिकै दीपै देत बुझाय॥

सो० सुखददुखदशशिहोइलहिरविवसुश्रुतिचौथग्रह।
मृगमधुजहिबिनतोइ दहतकहत मगळतजजम॥

त्यहिते अबहीं करहु उपाऊ * ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ
द्वैवर नृप थाती सो लेहू * सुतहि राज्य रामै वन देहू
एकतौ दुखित काज मुखडारी * दूसर सुरसंग्राम मँझारी
सुनि प्रतीत रानीमन आई * हरिइच्छा तुम जानहु भाई
कोपभवन पहुंची तजि साजा * भावीवश आये तहँ राजा

कोपभवन मंथरहि बतावा * सुनि नरेश मनमें भयपावा
सुरपति सुहृद दनुज अरिजोई * कालहु ते न डरहिं रण सोई
त्रिय रिससुनि भे कंपितगाता * कामकृपाननिशितअतिताता
धरिधीरज रानीढिग गयऊ * शीशपरशिकर बोलत भयऊ
क्यहिकारणकीन्ह्योरिसप्यारी * को तव दूसर है तनुधारी

दो० कहु क्यहि रंकहि नृपकरौं नृपै रंक करिदेउँ।
तव अरि अमरहु होइत्यहि वधकरि पाथैपेउँ॥

कहौखोलि निजकोप प्रसंगा * भूषण सजहु मनोहर अंगा
ह्वैप्रसन्न चितवहु मम ओरा * आजु भयो मनभावत तोरा
ह्वैहैं कालिह राम युवराजा * हरष समय तुम दुख उपराजा
सुनिनृप वचनभयो दुखभारी * दिहिसिपाणिनिजशिरतेटारी
पुनि धरिकर बोले अनुरागी * जो भावै सो लीजै मांगी
तव हित कछु न अदेय हमारे * सुनि केकयि तब वचन उचारे
मांगु मांगु वर जब तब कहऊ * लेत देत फिरि कछू न अहऊ
आगे देन कह्यो वर दोई * अबतक मोहिंमिले नहिं सोई
सुनि नरेश हँसि बोलै लीन्हा * कबमांगेहुकबहमनहिंदीन्हा
हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा * वचन न जाइ जाइ बरु हंसा
झूठे दोष देहु जनि प्यारी * लेहु मांगि किन द्वैकै चारी
जो पति शपथ रामकी कीजै * तौ हम मांगि उभयवर लीजै
हँसि नृप राम शपथ तब खाई * सुनि विगसरिस उठी हरषाई
प्रथम देहु वर यही समाजा * भरतहि बोलि करहु युवराजा
दूसर राम धाम तजिराई * चौदह वर्ष बसैं वन जाई
सुनि नरनाह मूर्च्छि महिपरेऊ * मनहु तरङ्गिनि ते तरु गिरेऊ
धरिधीरज पुनि आंखिउघारी * पुरहकिरातिनि सरसनिहारी
बोली बहुरि सुनो नरनाहा * भरत तनय तव होइ न काहा

जासुराज सुनिभा दुखभारी ❋ प्रथम देन कतकह्यो पुकारी
कहनृप सत्यकहौं तोहिंपाहीं ❋ भरतराजसुनिदुखम्वाहिंनाहीं
दूसरवर मांगेहु दुखरासी ❋ सांचहु सांचकि कीन्ह्योहांसी
त्वहिंप्रियरामरहैं अतिआगे ❋ आजकठिनक्यहिकारणलागे
जोकृत बैरिहु कर उपकारा ❋ सो किमिकरी मातु अपकारा
ज्यहिदुख दुसह देत सबकाऊ ❋ मैं तोसे निजकहौं स्वभाऊ

दो० रहै भानु बिन दिवस बरु रहै मीन बिन नीर।
राम विना ममप्राण नहिं रहिहैं सुमुखि शरीर॥

कुं० नारद ऋषै प्रभाव नृप सञ्जयसुत मल हेम।
होत जानिहरिहरि हतन करिकछुलह्यो न नेम॥
करिकछुलह्यो न नेम तरकि तलफे पुनि मलते।
हरिपरिभवहित गोपगृहप पाल्यो गोपलते॥
तेश्वासिंहहिं देखिदबकि बिलमाहिं लुकान्यो।
मिल्यो सुरभिको पाप समुझिपाछेपछितान्यो॥
पछितान्यो तिमि तुम्हैं शोचतौपरी विशारद।
मूरख की रघुनाथ इमपि कृत होत न नारद॥

त्यहितेपुनि मांगहुम्वहिंपाहीं ❋ रहैं रामपुर वननाहिं जाहीं
ज्यहिते हमहुं वरषदुइ एका ❋ देखैं भरत राज्य अभिषेका
सुनिबोली ओदर जनिकरहू ❋ निजकुलरीति हृदयमहँधरहू
देखौ शिबिदधीचि हरिचंदा ❋ सहे धर्महित दुखअतिमंदा
मधुकैटभशिर विष्णुहिदयऊ ❋ विटबहुलै कछुकष्ट न भयऊ
बोलिवचनजिननहिंप्रतिपारे ❋ कहत वेद तिनके मुख कारे
त्यहितेतजहु सत्यजनिनाथा ❋ पठवहु जाहिंविपिनरघुनाथा
जो न प्रात जैहैं मुनि वरणा ❋ तुमहिं अयश होई ममभरणा
सुनिपुनिनृपबहुविधिसमुझावा ❋ होनहारत्यहितनकनभावा

गिरयोभूमि ह्वैविकलभुवाला ❋ जानेहुतियमिसआयहुकाला
हृदयमनावत शम्भु विधाता ❋ करहुकृपाज्यहिहोइ न प्राता
गुरुगणेश शारदा भवानी ❋ रहैं रामतजि घर मम बानी

दो० भेषजसुर अभिषेकजन नेक न निरफलजात।
कालविवशजगजालजिमिनौचढ़िजलबहिजात॥

यहिविधिबिलपतभयोबिहाना ❋ बाजे जहँतहँ द्वारनिशाना
बंदीगण गुण गावनलागे ❋ प्रमुदितप्रिय पुरवासी जागे
सुनिनरपतिहि न नेकुसुहाई ❋ समरसमय जिमिगारी गाई
प्रात वशिष्ठ सभामहँ आये ❋ लखिसुमंतु ते वचन सुनाये
सदा प्रथम आवत नरनाहा ❋ आजु गहरुभै कारणकाहा
बेगिखबरि तुम लावहु जाई ❋ चले सुमन्त परम चपलाई
गये कोपमन्दिर सुनिबाता ❋ सभय उलंघी ड्योढ़ी साता

दो० प्रथम तरुण युग जरठपुनि बालक क्षीवाचारि।
पंचम यौवन बिरध षट सप्तम गौरी नारि॥

आगेजाय केकयिहि देखा ❋ परे विकल तहँ भूप विशेखा
शीशनाइ बोले मृदुबानी ❋ भूप परे कस विवरण रानी
रामहिं प्रथम लयावहु जाई ❋ भूपकुशल तब बूझयो आई
नृप रुखपाय सुमन्त सिधाये ❋ बेमन रामके मंदिर आये
देखि पितासम प्रभुसनमाना ❋ पूछेते तिन हाल बखाना
चले तुरत प्रभु अंग उघारे ❋ देखिलोग सब भये दुखारे
पहुँचेजाइ जहां नृपरानी ❋ बोले राम जोरि युग पानी
जननिजनकक्यहिहेतुदुखारी ❋ करियसोकृतिज्यहिहोइँसुखारी
सुनहु राम दुखमूल सनेहू ❋ बढ़ीनसुख यदि कढ़ीनयेहू
हानिलाभसुखदुख किनहोई ❋ कहिय देन त्यहिदीजै सोई
बिबिवर मैं मांगे इनपासा ❋ भरतहि राज तुम्हैं वनवासा

धर्मकेतु कछु कहत न बानी * तुमते सधै करो सोइ जानी
सुतसोइ जो पितुसुयश बढ़ावै * अयशदेइ त्यहि सुतकोगावै
सुनि केकयि के वचन कठोरे * बोले राम अमी जनु बोरे
अतिलघु बात पितै दुखभारी * अपरहेतु कछु है महतारी
भरत शपथ मैं सत्य बखाना * कारणआनमोर नहिं जाना
तबरघुपतिगहि नृपहिउठावा * हाथजोरि असवचनसुनावा
ताततरकितन तजहु गलानी * मङ्गल समय मोद उरआनी
जो जननी याँचे वरदाना * तामें अति हमार कल्याना

दो० यकतौ वन मुनिजन दरश भरत प्राणप्रिय राज।
पुनिनिदेशपितुमातुकर म्वहिंविधिदाहिनआज॥

ऐसेहुपर निज करहुँ न काजा * जानेहु म्वहिं मूढ़नकर राजा
मूढ़ सो सत्रहविधि के जानो * कहे पूर्व्वमनु तैस बखानो

महिषरीछन्द॥ कहैं इमपिपूरबमनुस्वयम्भूमूढ़सत्रहहो तजू। जनजोअशिष्यहिकरत शिक्षा तौन पहिले पोतजू॥ हैजौनसेवतदारदिहि धनदेतदूजोतौनजू। करि तौन तीजो रक्षिशत्रुहि कुशलचाहत जौनजू॥ हैसोचतुर्थ जोकथत निजमुख कर्मकारज पूर्वजू। जोवैरठानतप्रबलसों है निबल पंचममूर्खजू॥ मूढ़छठवोंकरतकुत्सित कर्म जो गुरुज्ञानजू। गुणकहतश्रद्धाहीनसों सोमूर्खसतवों ख्यातजू॥ गुरुगोत्रतियसों करतनिन्दित कर्मआठवों तौनजू। जोपुत्रतियगति मानचाहत नौमसो अघभौनजू॥ निजबीजजो परखेतडारै दशममूरखखेदजू। हैसोयकादश मूर्खतियसों कहतजोनिजमंत्रजू॥ अरुदेनकहिनहिंदेतजो सोमूढ़ द्वादशगंथजू। जोभेदजानेविनाजलपत तौनतेरहों अन्यजू॥ जोचतुर्दशवों मूढ़ गुणतन कर्मकोफल पायजू। अरुपंचदश जो याचकन

सों कहत कटुरिसछायजू ॥ जो दान भोगनकरत सोरहों मूढ़ सो धववानजू । निजबंधु भागहिहरणचाहत सप्तदशमन दानजू ॥ जो लखत लोक प्रलोकनहिं सोमूढ़सबमें श्रेष्ठजू । सोउपाइ ऐसोसमय तजबनभजबहै असपष्टजू ॥

दो० धृतिशमदमशुचितादया सतिप्रियसुवचननेम ।
आनँदवर्द्धन शमनअघ दोउदिशिदायकक्षेम ॥
मोह दीनता भूप के करत सकल गुण नास ।
तातेदोउ तजिराखिये स्वधरम सहित हुलास ॥
सुततियतनधन धामसोइ जासों सधैस्वधर्म ।
तातेदेहु निदेश म्वहिं वनहित परिहरि भर्म ॥

सुनिनरेशअतिशयअकुलाने ❋ मोह विवश रघुनायक जाने
करि प्रबोध पर्य्यङ्क सोवाये ❋ बिदाहोन हित हर्षि सिधाये
आये प्रथम जानकी धामा ❋ देखिदीन आसन अभिरामा
बोलेप्रभु म्वहिं पितु अरुमाई ❋ आयसुदीन बसहु वनजाई
धर्म हेतु धर्मज्ञ नृपाला ❋ प्रकटसुआयसुचाहियपाला
चौदह वर्ष वासकरि प्यारी ❋ ऐहौं फिरि तुमरह्यो सुखारी
सासु श्वशुर की सेवा करेऊ ❋ नारि धर्म मो हिरदय धरेऊ
कानन भयदुख नानारङ्गा ❋ नाहिंत लैलेत्यों निजसङ्गा
जो हठवश चलिहौसँगप्यारी ❋ तौ गालव समहोब दुखारी

दो० गालव कौशिककेर शिषि कह्यो दक्षिणा लेहु ।
सेवा ते संतुष्ट हम हमैं तुष्ट नहिं येहु ॥
श्यामकरण हय आठशत हठलखिबोले लाउ ।
सुनिमुनिगयोययातिनृप निकटविचारिनभाउ ॥
पूंछि प्रयोजन तिन दई कन्या सो लै विप्र ।
नृप हरश्वते कह्यो यह लेहु देहु हय क्षिप्र ॥

एक सुवन जनमाइतिन दीन्हें दुइशत बाज ।
तिमिकाशीशउसीर्णपति अरप्यो अर्भककाज ॥
दुइशतमिले न तेहुपर तब मुनि मानिगलानि ।
रोये विश्वामित्र ढिग अस है हठ दुखदानि ॥

सुनिबोली तब जनक दुलारी * सुनहुप्राणपति विनयहमारी
अनुजअम्बपितुसुतसुखनाना * पियबिन प्रमदे प्रेत समाना
त्यहिविधिनाथमोहिंजगमाहीं * तुमबिनसुखदकतहुँ कोइनाहीं

दो० रहै चन्द्र बिनचन्द्रिका रहै मीन बिनपाथ ।
तौ घरमें मोहिं राखिये बहुत कहौं का नाथ ॥
देखि प्रीति बोले चलहु सङ्ग चली हरषाइ ।
सुनेहु लषणवनजातप्रभु ढिगआये बिलखाइ ॥

शीशनाइ शोचत मनमाहीं * म्वहिंप्रभु सँगलेहैं की नाहीं
देखि विकल बोले रघुराई * धरि उरधीर रहौ घर भाई
भवनभरतनहिंरिपुआरी * तातमातु मम विरह दुखारी
जो मैं तुमहिं चलौंलै साथा * ह्वैहैं पुरजन निपट अनाथा
ज्यहिनृपराज प्रजा दुखपावै * अवशिअधिपसोनरकसिधावै
असविचारि रहिये गृह भाई * करहु मातु पितु की सेवकाई
भवभयहरण मातु पितु सेवा * विमुखनिरय भाषतमहिदेवा
सुनिलक्ष्मणअतिशयदुखपावा * पदशिरधरिअसवचनसुनावा

दो० नाथ बात जो कही तुम ताहि करैं नर सोइ ।
कीरतिसुगतिविभूतितिय तनुजजाहि प्रियहोइ ॥

मोहिं एकप्रभु तुम ते नाता * अपरनजानहुँ गुरुपितुमाता
त्यहिते तजौ न किंकर जानी * सुनि रघुपति बोले मृदुबानी

दो० तात मातुते बिदा ह्वै आइचलौ ममसाथ ।
जाय सुमित्रा के चरण भययुत नायो माथ ॥

बोलीदेखि दुखित कस ताता ॥ तबतहँलषण कही सबबाता
सुनिगइ सहमि सुमित्रा रानी ॥ धरिधीरज बोली मृदुबानी
तातराम सिय तव पितुमाता ॥ रहिहैं जहां अवध सुखदाता
जो वनजात राम सुकुमारा ॥ तौ घरमें का काज तुम्हारा
त्यहिते वन तिनके सँग जाहू ॥ लेहु वत्स जग जीवन लाहू
मोहिं समेत भयो बड़ भागी ॥ जो तव रामचरण रतिजागी
करेहु तात सोइ बात विचारी ॥ ज्यहि न रामसियहोइँदुखारी
सुनिलक्ष्मणउठिशीशनवायो ॥ पाइअशीश राम ढिगआयो
तबप्रभु सहित जानकी भ्राता ॥ आये जहँ कौशल्या माता
चरण छुवत निज उर बैठारे ॥ भई गहर कत वचन उचारे
बोले तब रघुपति सुनु माता ॥ वनकीराज्य दीनम्वहिं ताता
आयसु देहु मुदित मन ताते ॥ कुशलआइपद देखिय जाते
कौशल्यहिसुनिअतिदुखभयऊ ॥ मनहुछीनिसुखसरबसु गयऊ
बोली क्यहि अपराध भुवारा ॥ राजदेनकहि विपिन निकारा
सचिव सुवन तबबातबखानी ॥ सुनि व्याकुल ह्वै बोलीबानी

दो० सुरअरिते दधिभक्षते रण वन पिता निकेत ।
हे विधि राखे मोहिं तू यही देखावन हेत ॥
धरि धीरज बोली बहुरि तात कह्यो अतिनीक ।
पितु आयसु सब धर्ममय बकत वेद दै ठीक ॥

जो मैं कहौं रहो सुत घरमा ॥ बढ़ै वैर शिरचढ़ै अधरमा
त्यहिते अवशि जाहु वनभैया ॥ आयहु बेगि जाइ बलि मैया
सिय एकहु दुख जानत नाहीं ॥ इनकर लाड़ सह्यो वनमाहीं
मैंबहुभांति सिखावनदीन्हा ॥ तदपिचलनहितहठप्रणकीन्हा
लषणलालअतिशयसुकुमारे ॥ रहतन तेउसँग जात तुम्हारे
रूखभूखमुख इनकर देखी ॥ सहिनसक्योसुधिलिह्योविशेखी

है स्वतंत्र वन दूनौ भ्राता ※ करेउ न कबहुँ जीवकर घाता
चलेहुसोइ जितनाचलिजावै ※ कहेउसँदेश इतै कोइआवै
म्वहिंसमनारि अभागिनकोई ※ भई न अहै न आगे होई
जोजनतिउँ आगे दुख येहा ※ तौ नहिंकरतिउँ नृपते नेहा
जातविपिन ममबालक बारे ※ देखि न निकसत प्राणहमारे
असकहिअवनिगिरीमुरझाई ※ प्रभुजननीबहुविधिसमुझाई
पुनि धरिधीर भाषिसुतबच्छा ※ लागिकरन अङ्गनकी रच्छा

रोलाछन्द ॥ नमो विष्णु पदपातु जानुतिविंक्रमवीरा। कटिहिरक्षगोविन्द नाभिअच्युतरणधीरा ॥ गुल्मपातुपद माक्षउदरहरिउरश्रीनाथा। भुजमधुसूदनपातु कुक्षिपृथ्वी धरसाथा ॥ कंठजनार्दनपातुकृष्णमुखमंडलसोहै। करण मूलवाराहघ्राणदामोदरजोहै ॥ नेत्रनिरंजन पातु भालल क्ष्मीनारायन। केशवपातुकपोल सर्वतन चक्रधरायन ॥ पूर्वपातुपुरुषोत्तम सदाग्नेय गरुड़ध्वज। दक्षिणदिशिनर सिंहपातुनैर्ऋत्यचतुर्भुज ॥ वासुदेववारुणयपातुवायव्यवि श्वम्भर। रामरक्षकौवीर्यशंखईशानगदाधर ॥ कमलनाभि अधऊर्ध्वपातुजलगिरिवरबावन। व्याघ्रसिंहतेपातु सदा शंकरमनभावन ॥ भूतप्रेतवेताल ब्रह्मराक्षस छलकारी। अग्निचौरविषबीछसर्प्पतेपातुमुरारी ॥ परविद्या उरयन्त्र मन्त्रपरतन्त्रजहांलौं। माधवसकलनिवारुमारुरुजशूलत हांलौं ॥ यहिविधिरक्षाकीनि दीनिपुनि सुखद अशीशा। सहितलषणसियचलेनाइजननीपदशीशा ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतवनयात्राऽनृपविषादवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु गणप गिरा सुखदानि।

बरणौंमानससहितकछु अगिनिवेसकृतआनि ॥
कछुकशोचचितकछुकउछाहा * आये बहुरि जहां नरनाहा
भेसुनिविकलसकलपुरवासी * मनहुँदशहुदिशिलागिदवासी
करशिरधुनहिंभागिबिनजानी * मनमलीन तनदशाभुलानी
कोइकह भलनकेकयी कीन्हा * कोइकहनृपकाहेक वरदीन्हा
कोइकह विधिचाहै सो करई * कोइ निजकर्मनके शिरधरई
कोइकह भरतहुकर मत होई * सुनिकर कानराखि कहकोई
लागतअघ असकियेबखाना * रामभरतकहँ प्राण समाना
अगिनिहोइजलबरुनभफूला * भरत न होब रामप्रतिकूला
यहिविधिकहतसुनतसबधाये * विरहविकल नृपमंदिरआये
भइ अतिभीर भूप दरबारा * बरणि न जाइ विषादअपारा
त्यहिअवसरकैसुधिजबआवै * अजहुँ दरार अवनिउरजावै

दो० तबरघुवर सियलषण युत नृपपदशीशनवाय ।
कह्यो बिदा म्वहिं कीजिये तात विषाद विहाय ॥
निरखि भूप शिशुरूपउठि लीन्हे हृदयलगाय ।
ह्वै वशधर्म सनेह कछु कह्यो न रह्यो चुपाय ॥
देखि केकयी तमकिकै मुनि पट भाजन दीन ।
बोली पहिरहु जाहु वन जो चाहौ हित कीन ॥
अनुजसहितवलकलपहिरि करिपितुमातुप्रणाम ।
कृष्ण पक्ष वैशाख दिन छठे चले वन राम ॥
विप्र वधू वर केकयिहि रहीं बहुत समुझाय ।
ते नहिं कीन्ह्योकान तब चलीं अधिकदुखपाय ॥
कह्यो भूप तब सचिवते रथ पर लेहु चढ़ाय ।
वन देखाय अन्हवाइ सरि लावहुतातफिराय ॥
तुरत बाजिरथ साजि के गये रामके तीर ।

भेसुनिविकलसकलपुरवासी * मनहुँदशहुदिशिलागिदवासी

सुनि बिनती आरूढ़भे सिया सहित द्वौवीर ॥
चले अवध शिर नाय सब पुरजन लागेसाथ ।
प्रभुफेरतनहिं फिरतसो खगमृगविकलअनाथ ॥
जाइ रहे तमसा निकट प्रथमदिवस बिननीर ।
करुणामयभे दुखित तब देखि सबन के पीर ॥
लोग श्रमित गे सोइ तब कह्यो सचिवते राम ।
खोजमारि रथ हांकिये नाहिंत बिगरतकाम ॥
आयसु पाय चढ़ायरथ हांक्यो खोजदुराइ ।
जागिलोगभे विकल तब जब न लखे रघुराइ ॥

रामरामकहि खोजन लागे * रथकरचिह्न न देख्यो आगे
फिरिआये धिकआपुहिजानी * करदम मीन धन्यकरिमानी
रामदरशहित जप तप नेमा * लगे करन पुरजन युत प्रेमा
इहां राम सिय सचिव सभाई * शृङ्गवेर पुर पहुँचे जाई
उतरिकीन सुरसरि अस्नाना * इतने माहिं भीलपति जाना
लै फल फूल भेंट तहँ आवा * कीन्हदण्डवतलखिसुखपावा
उठि रघुनाथ लीन उर लाई * पूंछी कुशल पास बैठाई
नाथ कुशल सब बात हमारे * पदपंकज दुखदलन तुम्हारे
आपु कहां इत कीन पयाना * तबरघुपति सबहालबखाना
सुनिनिषादमन भयो विषादा * बोल्यो बहुरि सहितअह्लादा
तुम प्रभु होउ यहां के राजा * हमसब सेवक सहितसमाजा
चलहुभवनप्रभुकहतिनपाहीं * ग्रामजानकी आज्ञा नाहीं
तब शिंशपातीर लै गयऊ * कुशसाथरी बिछावत भयऊ
त्यहितरउतरि सबनफलखाये * शयनकीन पुनिसहजसुभाये
सोवत प्रभुइ निषाद निहारा * दुखितलषणते वचनउचारा

दो० जेसोवतरहैं मणिपलँग पुरटमहलके माहिं ।

ते पौढ़े कुश साथरी विधि जुवामक्यहिनाहिं ॥
सुनिबोलेसौमित्र कछु विधिकर दोष न होय ।
निज कृत कर्म अभङ्ग फल भोगतहैं सबकोय ॥
राम सच्चिदानन्द घन रहित समस्त विकार ।
करतचरितसुरसन्तहित धरिस्वतंत्र अवतार ॥

असविचारि दुखपरिहरिनेहा * करहु राम पद पद्म सनेहा
मृगतृष्णासम जगव्यवहारा * सत्संगति हरिसुमिरनसारा
तात परम परमारथ सोई * जो रघुवीर चरण रति होई
यहिविधिकहतसुनतभाभोरू * जागे सकल सुनतखगशोरू
करिस्नान शिर जटाबनाये * लखिसुमन्त्रतबवचनसुनाये
नाथकह्योम्वहिं कोशलनाथा * वन दिखाय लै आयो साथा
कहप्रभुतात सकल तवजाना * धर्म न दूसर सत्य समाना
सो मैं सत्यतजहुँ किमिजानी * अयशहोय पुनि धर्मकिहानी
त्यहिते तात जाहु घर आजू * नाहिंत होई अवध अकाजू
कह्यो पितासन विनयहमारी * ममहित करैं न संशयभारी
जननिनते कहियो शिरनाई * आवत सपदि फिरे द्वउभाई
कह्योभरत जब मंदिरआवैं * करहुराज्यज्यहिसबसुखपावैं
गुरुपितुमातु वचन अनुहारी * करतकछू तेहिलागिनखवारी
यदु जमदग्नि गणेश हरीके * चरितचारु जगप्रचुर परीके
तुमपितुसमममविनयतुम्हारी * करेहुसो ज्यहिनृपरहैंसुखारी
असकहि चले सबै शिर नाई * सुरसरितट आये रघुराई
मांगी नाव न केवट लावा * कहै तुम्हार मरम मैं पावा
पाहनते कीन्ह्यो मुनिनारी * त्यहितेकठिन न नाव हमारी
यहिते पलत मोर परिवारा * नाथ न जानहुँ अवरप्रकारा
सुरसरि पार जान जो चहहू * तौ प्रथमै कलेश कछु सहहू

लेन देहु म्वहिं पदरज धोई ❋ मानुष करण मूरि है सोई
धोये बिन न देहुँ जलयाना ❋ लषणकोपिकिनमारहिंबाना
सुनि वाणी प्रभु केवट केरी ❋ बिहँसे सियलक्ष्मणतनहेरी
बोले पुनि लीजै परछाली ❋ कमठपृष्ठ लावा जल हाली
पदपखारि जल कीन्ह्यो पाना ❋ सुरनदेखि बड़भागी जाना
नावचढ़ाइ पार तब कीन्हा ❋ शीशनाइ जब चाले लीन्हा
सिय मुद्रिका देन तब लागे ❋ बोला सहित जोरिकर आगे
तुम केवट भव सागर केरे ❋ नदी नारके हम बहुतेरे
हमरी तुम्हरी कसि उतराई ❋ नापित नापितकी बनवाई
सुनिप्रभुताहि भक्तिवर दीन्हा ❋ पुनिसुरसरिमहँमज्जनकीन्हा
करि बिनती सियनायहुशीशा ❋ दीनमुदितमन गंगअशीशा
तब प्रभु सखै कह्यो घरजाहू ❋ बोला तब भीलनकर नाहू
जैहों जहँ तहँ तक पहुँचाई ❋ फिरिहौं तव प्रभु कुटीबनाई
सुनिचलिभेप्रभुसहितहुलासा ❋ त्यहिदिनभयो पंथमें वासा
नौमी दिन तीरथपतिगयऊ ❋ तिरबेनी जल मज्जत भयऊ
विप्रवृन्द सनमानि सिधाये ❋ भरद्वाज के आश्रम आये
कीनदण्डवत सहित समाजा ❋ उरलगाय बोले ऋषिराजा
आजुसुफल ममजपतपज्ञाना ❋ तीरथबरत योगमख दाना
धन्यजन्म जगजीवन भारी ❋ भयों कृतारथ तुम्हैं निहारी
अब करि कृपा देहु वर मोहीं ❋ काय वचन मन सुमिरौंतोहीं
जबतक तवपद प्रेम न होई ❋ तबतक सुख न लहै नरकोई
असकहि मधुरमूलफलदीन्हे ❋ सबनसहितप्रभुभोजनकीन्हे
त्यहि निशिरहिकरिप्रातस्नाना ❋ मुनिहिंनाइशिरकीनपयाना
ग्रामनिकटज्यहिनिकसहिंजाई ❋ थकितहोहिंलखिलोगलुगाई
एकएक ते कहैं विचारी ❋ ये बालक वनयोग न प्यारी

दो० कोइकह इनके मातु पितु हैं कठोर ममजानि ।
कोइकहहोयँनहोयँहरि निकसे मानि गलानि ॥

कोईकह नृपसुवन शिकारी * वनविचरत मिलिगे सुरनारी
कोइकह बरबस भूपकुमारी * वरिभागे वन भवन बिसारी
कोइ कह काम वाम लै रूरी * चढ़े शम्भुपर वैर बिसूरी
कोइकह विप्रशापवश आहीं * सिद्धिसमेत सिद्धकोइजाहीं
कोईकह ठगलिये ठगोरी * ठगतफिरतमनमतिकरिभोरी
कोइ कह ये सुकृती हैं कोई * निज परलोक सुधारत सोई
उदयभये कछु भाग हमारे * भरिनयनन जो इन्हैं निहारे
यहिविधिकी तरकैं करिभूरी * पूंछैं निज निज जाइ हजूरी
कह्यो राम सतिवचन तुम्हारे * फलतभाव जस ओर हमारे
त्यहिअवसरतापसयकआवा * करि बिनती हरिधामसिधावा

दो० मग वासिन सुख देत इमि उतरे यमुनाजाइ ।
मज्जनकरि हरिसखहिंतब बिदाकीन बरिआइ ॥
चलेलषणसिय सहितप्रभु करियमुनहिंपरनाम ।
उतरेसीतहि श्रमितलखि वटतरुतर ढिगग्राम ॥

एकअलीलखिगइ निजगेहा * कहतसखिनसे सहितसनेहा
सखियहिग्राम पथिकद्वैआये * गौरश्याम छविधाम सुहाये

दो० तिनसँग सुन्दरिएकजेहि लखि लाजतजगमेव ।
चारिसुमनफल चारिपशु विहँगचारि श्रुतिदेव ॥

सुनिपुरजन सब देखन धाये * उतरेप्रभु जहँ तहँचलिआये
नखशिखसुभगस्वरूपनिहारी * सीता ढिगआईं मिलिनारी
पूंछहिं हे स्वामिनि सुकुमारे * ये दोउ बालक कौन तुम्हारे
देवरलषण कह्यो सियबैनन * निजपतिप्रभुहिबतायोसैनन
कौशलपुर है इनकर धामा * नृपदशरथकेसुत अभिरामा

कारणकौन फिरत बनमाहीं * कोमलपद पदत्राणहु नाहीं
सासु सवति कीन्ह्यों उतपाता * दियवनवर्ष सात अरु ताता
सुनिसियवचनसकलबिलखानी * बोलींविधिगतिजातनजानी
निपटनिठुर चितकरतजोभावै * नीके माहिं जबून लगावै
शशि शीतल घटबढ़सकलंकी * कोमलकुवलै किहिसिकटंकी
रूपकल्पतरु जलनिधि खारी * नीचधनिकबड़विप्र भिखारी
इनकर रूप अनूपम कीन्हा * त्यहिपाछेकाननलिखिदीन्हा
जोपै इन्हैं दिहिसि बनवासा * तौकतकीन्हिसिभोगविलासा
यहविधिकहिसबआपुसमाहीं * बोलीं पुनि रघुपति के पाहीं
आजुरहौ चलि हमरे धामा * आखिररहा दिवसयकयामा
कह प्रभु हमैं दूरिहै जाना * असकहिउठिवनकीन्हपयाना
लखि सबलोग उठे अकुलाई * मनहुँ गई गृह सम्पति आई
दृगजल पूरि कहत करजोरी * फिरत करेउ इतकृपा बहोरी
हरिइच्छाजस समयविलोकी * करब तथा थल पठये रोकी
प्रभुसियलषणजातइमिलागा * भक्तिसहितंजनुज्ञानविरागा
मग में देखि ज्योतिषी कहई * राज चिह्न सब तुम्हरे अहई
सो वन विचरत बिनपदत्राना * ज्योतिष झूठ हमारे जाना
बहुरि विचारकरहिं गनिआछे * होई राज कछुक दिन पाछे
जो देखैं सो संग सिधावैं * घूमहिं तब जब बहु समुझावैं
जिन सियराम बटोही हेरे * भवदुख दूरिभये तिनकेरे
अजहुँ जासुउर वहछविआवै * निश्चय सो परधाम सिधावै
मग निवासकरि प्रात सिधाये * बालमीकि के आश्रम आये

दो॰ कीन्ह दण्डवत मुनिहिप्रभु लीन विप्र उरलाय।
लषणराम सिय रूपलखि भयेमुदित ऋषिराय॥
कंदमूल फल अमीसम दीन्हे करि सनमान।

भोजनकरि परि भृत्य ते बोले राम सुजान ॥
नाथ चतुरदश बरष मो वन दीन्हो महिपाल ।
सुथल बतावहु निरविघन तहां रहौं कछुकाल ॥
कहमुनि नाम नरेश शिर धरहुकरहु निजतंत्र ।
अद्भुत चरित तुम्हारलखि को न भूलिहैं मंत्र ॥
अकथ अलौकिक रूप तव तर्किसकै नहिंभेव ।
जानै सोइ करि कृपा तुम जाहि जनावो देव ॥
निज रहिबे हित वेश्म जो पूंछेउ सो सुनिलेहु ।
कहैं सुनैं तव चरित जे तस्य हृदय तव गेहु ॥
मंत्रराज तव जपहिं जे रटैं निरन्तर नाम ।
निरद्वन्द्वौ निःस्पृह सदा तस्य उरसि तव धाम ॥
परत्रियजानैजननिजिमि परधनगरलसमान ।
समलोष्टाशमकांचनहिं तस्यमनसितवथान ॥
जाति पांति धन धाम तजि तुम्हैंरहैंलवलाय ।
तिनकेमनमन्दिरबसहु सियासहितदोउभाय ॥
जिनके मान न मोह मद तव दासनमें नेह ।
काम क्रोध कटु रहित जे ते मानस तव गेह ॥
तव उच्छिष्ट भोजन करैं तव प्रसाद पट लेहिं ।
बसहु तासु उर राम जे क्षुधितहि भोजन देहिं ॥
दुखसुखसमुझैं एकसम शांतशुद्ध चितमौन ।
जगत रीतितेरहित जे तस्य उरसि तव भौन ॥
षटविकारमय वपुलखैं आतमरहित विकार ।
करैं सदा सतसंगजे तिन उर भवन तुम्हार ॥
श्रीसम सेवैं गुरु चरण नावैं द्विजपद माथ ।
वरणैं नाम प्रभाव नित तहां बसहु रघुनाथ ॥

तप तीरथ व्रतदान करि मांगहिं तवपदप्रीति ।
बसहिं तस्य उरपद्मजे चले राग रस जीति ॥

औरहुइमि बहुआश्रमअहईं * बसेउरामतुमलखिसुखतहईं
यहिअवसरसमसुथलजोचहऊ * तौचलि चित्रकूटमें रहऊ
बरणत सुरमुनिसंत विधाता * चित्रकूट चिंतत फल दाता
भले रामकहि कीन पयाना * आयकीन पयसरि अस्नाना
हरि दिनकामदगिरिप्रभुआये * समाचार सुरसंतन पाये
आइ सबन पद नाये माथा * नाथ आजु हम भये सनाथा
परणकुटी युग सुभग बनाई * निजनिज लोकगये सुखपाई
पुनिसुनि आये कोल किराता * कंदमूल फल धरिधरि पाता
दैदै भेंट ज्वहारि ज्वहारी * निरखि रामछवि होइँसुखारी
करि सनमान राम बैठारे * तिनतब प्रभुते वचन उचारे
पतितजानिप्रभुदरशनदीन्ह्यो * हमसबकाहु कृतारथकीन्ह्यो
अबतुम इहैं बसहु सबमासा * सकलसौंजकर अहैंसुपासा
हम तवदास सहितपरिवारा * आयसु देत न करब विचारा
करिपरितोष बिदा प्रभुकीन्हे * चलेभवन चरणनचितदीन्हे
जबते रामबसे वन आई * तबते भयउ सकल सुखदाई
फूलहिंफलैं विटप बहुभांती * सुरतरुसमविहरतअतिपांती

दो० करिहरि कपिवृक कोलमृग विचरत वैरबिहाइ ।
प्रेमविवश चलिजाहिंतहँ जहँदरशतदोउभाइ ॥

गीतिकाछंद ॥ चलिजाहिं जहँ तहँ बंधुदोउ तब देखि सुरतापसकहैं । ये अहैंबड़भागी सकलजे प्रभुइअवलोकत रहैं ॥ हिमशैलसुरतरुजह्नुजा गिरिगहनपयसरिदेखहीं । तहँ भाग्यजानहिं तुच्छ आपहि तिन्हैं बड़ करिलेखहीं ॥

विश्रामसागररघुनाथदासकृतरामचित्रकूटागमनोत्रयोदशोऽध्यायः १३

दो० सुमिरिरामसिय संतगुरु गणपगिरासुखदानि ।
बरणौं मानस मतकछुक अग्निवेशकृतआनि ॥
चित्रकूट प्रभु जिमिबसे सोमैं कह्यों बखानि ।
अबसोसुनहु सुमंत्रजिमि अवधगयेदुखमानि ॥
केवटह्वै हरिते बिदा जब आयो निजग्राम ।
देख्यो परे सुमंत्र महि रटैं राम हा राम ॥
जाइनिषाद विषादवश लीन्ह्यो गोदउठाइ ।
चर्चिचढ़ाये रथबिषे बहुतभांति समुझाइ ॥
लीन्हे सेवक बोलिनिज दीन्हे करि तिनसाथ ।
चलतनहयहिहिनाततदिशि देखिदेखिरघुनाथ ॥
इतउत ऐंचत अटतमग लेतजो हरिकोनाम ।
चितत्रतत्यहितनहरिदिवस पहुंचेकोशलग्राम ॥
पुरप्रवेशनहिंकरिसकत तकतसचिवनिशिओर ।
जैसे जाइ चोराइगृह सबकर समझाचोर ॥
मनमेंकरत विचारम्वहिं देखि पूछिहैं लोग ।
कौनउतरु देहौंतिन्हैं नृपरानिन तब भोग ॥
निकसतनिठुर न प्राणमम रहतकौनसुखलागि ।
धृगजीवन रघुवीरबिन जरत न वपु विरहागि ॥
उभयघरी निशिगतगये कौशल्याके धाम ।
सुनिनृप उठिउरलाइ कह कहुसुमंत्र कहँराम ॥
तबसुमंत्र बोलेसमुझि धीरधरहु उरनाथ ।
हानि लाभ जीवनमरण दुखसुख सबकेसाथ ॥
सबका कीन्हप्रणाम प्रभु सीता लषण समेत ।
आपुगये वन वचनलगि मोहिंपठै दुखहेत ॥
सुनिमहिपाल बिहालह्वै गिर्योधरणिपछिताइ ।

अन्धशापकी सुरतिकरि कही सबनसमुझाइ ॥
सत्रियविश्वदेवांधसुत श्रवण वध्यो जगजानि ।
तजिहौतनसुतविरहइमि दिहिनिशापदुखमानि ॥
पतंगिका के पूंछ में सींक चलाई जौन ।
लह्यो तासुफल महामुनि शूलतहां हमकौन ॥
कढ्योशम्भुको लिंगजहँ जलजासनको माथ ।
मिटत कर्मवश भानुजहँ तहँ हमकारघुनाथ ॥
सत्यकहत श्रुतिकर्म बिन भोगे छूटत नाहिं ।
रामरटनिते मिटत जिमि चूनापरि निशिमाहिं ॥
राम मात बोली बिलखि नाथ धरहु उरधीर ।
तौमिलिहैं सियरामफिरि शोभसुनियरघुवीर ॥
हायराम सियलषणकहि हायराम वशशोक ।
तृणसम हरिहितत्यागितनु भूपगयो सुरलोक ॥
लखि लागीं रोदनरवनि गुणबल तेजबखानि ।
विलपहिंदासीदास सब पुरजनपरिजनजानि ॥
यहिविधि बीती रातिसब प्रातकाल मुनिआइ ।
शोक मिटायो सबन कर विविध प्रसंगसुनाइ ॥

कहवशिष्ठ मन धीरज धरहू * धर्मविचारि शोच परिहरहू
जो जनमत सो मरत विशेखी * देहदशा यह अघटित देखी
कनककशिपुहिरण्याक्षसरीखे * गुणिनकेरगुणगुणियतलीखे
सगरसहसभुजआदि नरेशा * सुमिरणमात्ररह्यो अतुलेशा
जिनकेरथ पहियनते सागर * भयो सो भये कालवशनागर
पूर्वकर्म अनुसार जहाना * हरतमौतकरि त्रिविधबहाना
प्रथमसृष्टि जब रची विधाता * लहै न कोइतहँ जीवनिपाता
तबरचिमौतवधायसुदीन्हा * अयशसमुझित्यहिरोदनकीन्हा

आँसुन ते भयरोग घनेरे * कह विधि ये सब संचर तेरे
इनके ओट हरौ तुम प्रानी * करतसोइ विधि आज्ञामानी

दो० मेदिनिमेरुअजादिसुर सोइकदिन नशिजात ।
गजश्रुतिसमनरआयुचर ताकीकौनबिसात ॥
लही बड़ाई भूप वर हरि हित परिहरि देह ।
षट विकार परते परे आतम आनँद गेह ॥
छेद सकैनहिं शस्त्रज्यहि पावक सकै न जारि ।
मारुत सकै न शोष यहि बोरिसकै नहिं वारि ॥
जिमि बिहाइ जीरणवसन धारतमनुजनवीन ।
तिमिदेही तनु जीर्णतजि नूतनगहत प्रवीन ॥
आदिअंत अव्यक्तहै मध्यजासु कछुव्यक्त ।
तेहि आतम के हेतुकी करहु कल्पनात्यक्त ॥
रोये जो मिलिजाइ त्यहि रोवै भले पुकारि ।
जो न मिलै रघुनाथ तौ धीरज धरै विचारि ॥
सज्जन के संसर्ग ते कस्य न मानस ताप ।
मिटीमिटतमिटि हैनसुनि त्याग्योसबनकलाप ॥
तेलनाव तनु राखि नृप लिये दूत युग बोलि ।
बेगिहिलावहु भरतकहँ कहेउनतुमकछुखोलि ॥
चले चारइतपवन जिमि उतै भरत दोउभाइ ।
दीखभयावन स्वप्न निशि धावत पहुंचे जाइ ॥

भूतादिन तहँ पहुंचे जाई * गुरु निदेश सुनि दूनहुँ भाई
चपलवाजिचढ़ितुरतसिधाये * कुछुदिवसनिजनगरहिआये
पुरप्रविशत भे अशकुनभारी * परे देखि सब जीव दुखारी
लोगमिलैं नहिंकुशलसुनावैं * गवैं ज्वहारिज्वहारि सिधावैं
गेचलि प्रथम केकयी गेहा * बैठारे तिन सहित सनेहा

पूंछिकुशल निज नैहर केरी * बोले भरत तासु तन हेरी
भूप कहां सुरलोक पधारे * कारण रामविरह के मारे
दुःख कि देतरहैं युवराजू * काहेनदिहिनि किहेउमैंकाजू
कौन काज नृपपद तवहेता * लिहेउँ दिहेउँ रामैं वन चेता
रामकौनसुत सवति के जानी * सवति कवनि कौशल्यारानी
बोलत कस कहँ राम सभाई * गे वन बंधुसहित महिजाई
सुनिमहिसुरछिगिरेदोउभ्राता * कहि हारामलषणसियताता
हा पितु स्वर्गलागि प्रियतोहीं * रामहिंसौंपिगयउ किनमोहीं
हा सियरामलषण मम पाछे * सहिहैंदुख वन मुनिपटकाछे
है जननी तैं अस वर मांगे * हरे सकल सुख एकहिलागे
जो तैं यहै रहै उर धारे * जनमत मोहिं मारि किनडारे
रामसबहिं प्रिय प्राणसमाना * तैंकिमि तिन्हैं कहे वनजाना
भूप प्रतीति कीन भल तोरी * मरणकाल कछु भइमतिभोरी
भूप लगाइ न दोष तुम्हारा * दुखकर मूल अभागहमारा
अब दृगओट बैठु उठि जाई * त्यहिक्षण तहां मंथरा आई
लखिरिपुदवन लातइकमारी * गिरी भूमि हा हाय पुकारी
पकरिकेश इतउतघसिलावा * परअपकार केर फल पावा
भरत साधुलखि दीनछुड़ाई * कौशल्यागृह गे दोउभाई
राममातु उठि हृदय लगाये * जनुवन रामलषणफिरिआये
रोदनकरि पुनि हाल सुबरणा * रामगमनवन भूपति मरणा
जन्ममरणफलभलनृपलीन्हा * म्वहिंविधिविरचिवज्रकरिदीन्हा
मातुगिरा सुनि दुखरसबोरी * बोले भरत बिलखि करजोरी
मातुमृषाम्वहिं विधिजनमावा * मम पाछे सबहुन दुखपावा
केकयिसुतअपयशअधिकाई * मातुमते म्वहिं कौनबताई

दो० जो अघ गोद्विज मातु पितु सुत तियमारेहोइ।

जो ममसम्मतहोइ तौ म्वहिं अघलागै सोइ ॥
शिवनिरमायलपलभखी मद व्यभिचारी चोर ।
जो गतिपावै सोइम्वहिं मिलै मानि मत मोर ॥
जे श्रुतिनिंदक हरि विमुख सतसंगति न सुहातु ।
तिनकीगतिम्वहिंमिलहि जो होइमोरमत मातु ॥
मातु भरतके वचनसुनि बोली शुचिसुखधाम ।
रामहिंप्रिय तुम प्राणसम तुम्हैं प्राणसमराम ॥

सो० तातमात मतमाहिं तुम्हैं कहैं मतिमन्दते ।
सुगतिलहैंगे नाहिं असकहि लियेलगाइउर ॥

यहिविधिबिलपत रैनिसिरानी * होत प्रात आये मुनिज्ञानी
करिप्रबोध भरतहिंसमुझावा * उठे तुरत गुरुआयसु पावा
नृपतन छालि विमान बनाई * राखीं मातु सकलसमुझाई
गन्धसार समिधै बहु लीन्ही * दाह क्रिया सरयूतट कीन्ही
पांडुपीरवाते श्रुति रीती * दीनतिलांजलिसबनसप्रीती
गौरपक्ष ग्यारशिदिन जाना * कीनभरत दशगात्र विधाना
द्विजहिंदानदीन्हेउ बहुभांती * तिसरेदिन भइ त्यरही शांती
पितुहितभरतकीनिजसकरणी * सोमुखसहसहु जाइनबरणी

दो० एकादिन गुरुजनसकल जुरे सभामधिआइ ।
शोचविवश लखि भरत ते तबबोले ऋषिराइ ॥

चामरछन्द ॥ सुवनसुनिलीजिये । सबनसुखदीजिये ॥ दृगनजलपोंछिये । नृपहिकतशोचिये ॥ छप्पै ॥ शोचिय द्विजनिजधर्मत्यागिजोरहतबिषैरत । शोचियनृपनयरहित सहिततमतोषपोषगत ॥ शोचियवणिकबजाइपाइधनधर्म नठानहिं । शोचियतियपियछलनि शूद्रविप्रहिंअपमान-हिं ॥ शोचिययतीविरागबिन नियनशोचिसबभांतिभल ।

सुरदुर्लभ तन पाइजिन भजेहु न रामहिं छांड़िछल ॥
शोचनयोग न जनक तुम्हारे ❋ नीतिनिरत त्रिभुवनउजियारे
प्राणपुत्र तजिराखे वचना ❋ प्रकटी प्रेमप्रीति की रचना
असजियजानिशोचपरिहरहू ❋ पितुआयसु सो शिरपरधरहू
तुम्हें राज्य देंगे नृप ज्ञानी ❋ पालहुप्रजहि परमहितमानी
सुरपुर नृप परितोषै पैहैं ❋ राम लषण सियसुनि हरषैहैं
यामें दोष न निगम बतावे ❋ ज्यहिपितु राज्यदेइ सो पावे
सुनि सुमित्र कौशल्या बोली ❋ गुरुआज्ञा सुत अहैअमोली
पुनिपितुवचनजाइबलिअम्बा ❋ होउतात सबका अवलम्बा
सुनिमृदुवचनभरतअकुलाने ❋ बोले सबन नेहवश जाने

दो० यदपि मातु पितु गुरुवचन बिनविचार चहिकीन ।
तदपि मोहवश उतरुमैं देत क्षमहु लखिदीन ॥

प्रथमपिता प्रणपूर निबाहा ❋ रामलषणसिय वनभलचाहा
जो मोहिं राजदेत बरजोरा ❋ यामें हित तुम्हार की मोरा
ममहित सों रघुपतिपदसेवा ❋ अपर उपाय न जानहुँ देवा
हिततुम्हार हमते किमि होई ❋ केकयि सुवन जान सब कोई
ज्यहिउदगरि सबकादुखदीन्हा ❋ कारणते कारज कटु चीन्हा
मनमुखमूलसरिसदुखदायक ❋ धर्मशील चाहिय नरनायक
तेहिते सबै कहौं शिरनाई ❋ आयसु याहि देहु हरषाई
प्रातकाल रघुपति पहँ जावों ❋ जरनिमिटै जब दरशन पावों
भरतवचन सुनि सब हरषाने ❋ बोले मुनि तब परम सयाने
शोकसिंधु बूड़त अवगाहू ❋ तुम अवलम्ब दीन सबकाहू
मातुमते जो तुम्हें बताई ❋ सोशठ कीट नरक दुखपाई
अवशिचलहुवनजहँअवधेशू ❋ गेनिजनिज गृह पाइनिदेशू
भरतबोलिशुचि सेवकलीन्हे ❋ भवनभँडार सौंपि सबदीन्हे

सचिवहिदीनतिलककरसाजू * विपिन देवगुरु रामहिंराजू
होतप्रातचढ़ि पुरजन याना * सबनकीन वनओर पयाना
ज्यहि राखहिं गृहरक्षा हेता * सो कहै हरि बिनजरै निकेता
शुक शारिका पिंजरन बोलैं * अधिकउचाट कपाट न खोलैं
चढ़िचढ़िरथऋषिद्विजनसमेता * चलेसकलवनरघुपतिहेता
शिबिकासुभग समूहसँवारी * चढ़िगवनी मुनितियनृपनारी
ज्येष्ठादौ विवेक कहि सादे * भरत शत्रुहन चले पयादे
भरतहिं देखि लोग अनुरागे * तजितजियानचलनपगलागे

दो० कौशल्या ढिग जाइकै कह्यो चढ़ो रथतात।
ह्वैहैं पुरजन विकल अति सुनतचढ़े दोउ भ्रात॥
प्रथम दिवस तमसारहे उभय गोमती तीर।
तिसरे दिन बससई ढिग प्रातचली सबभीर॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतभरतचित्रकूटगमनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

दो० ज्येष्ठ कृष्ण चतुरथ दिवस शृंगवेर नियरान।
आवतभरत निषादसुनि गुणिफसादबिलखान॥
प्रथम मातु मिसिदीन वन अबलै कपट समाज।
चढ़े राम सिय लषणपर करन अकंटक राज॥
जो न होत यह बात उर तौ न लेत दलसाथ।
उभय भांति गुहज्ञाति सब बोलिलिये रघुनाथ॥

तिनते कहेसि सजग सबहोहू * परिहरितात सुतनकर छोहू
सम्मुख समर भरत ते करहू * राम हेतु तनु तजि भवतरहू
चतुर चित्रनी ते मणि लेहीं * मूढ़ रतन कौड़ी लगि देहीं
भलेनाथ कहि भट अनुरागे * कसिकसि अस्त्रशस्त्रभे आगे

सर्बनिज कटकदेखिगुहराजा * कहेसिजुझार बजावहुबाजा
त्यहि अवसर भइ बायें छीका * शकुनिनकहाशकुनयहनीका
रामहिं भरत मनावन जाहीं * तुमते होब रारि कछु नाहीं
रामसखा सुनि सब से कहेऊ * मैं अबजात सजग तुमरहेऊ
लेहौं भेद भरतकर जाई * प्रीति अप्रीतिनछिपतछिपाई
कन्दमूल फल सुरसरिनीरा * घटन भराइ गयो तिनतीरा
मुनिहिंकीनलखिदंडप्रणामा * दीनअशीशसमुझिप्रियरामा
भरतविलोकितुरतरथत्यागा * चलितेहिमिलेसहितअनुरागा
भेंटतदेखि देव अनुकूला * जयतिजयतिकहिबरषहिंफूला
कहँ वशिष्ठ कहँ भरत निषादा * भेंटततातहि सहित अहलादा
यह हरि शरण केरि प्रभुताई * नीचहुहोत पवित्र लखाई
पूंछी कुशल भरत ताकेरी * अबसबभांति कुशलभइमेरी
समुझिमोहिंजेप्रभुहिंनभजहीं * ते जगवंचक सबसुख तजहीं
बहुरिमिले रिपुदमन कुमारा * पुनिसब रानिन कीनजुहारा
दिहिनिअशीशलषणसमजानी * पुरजनलखिहरषेसुखमानी
कहैं सकल यह है बड़भागी * भेंटें जाहि राम अनुरागी
तबनिषाद निज लोग बुलाये * घर वन बाग सकल भरवाये
प्रथमैंसब सुरसरि तट गयऊ * करिमज्जन सुख पावतभयऊ
मांगि मांगि रघुपति पद नेहा * टिके आइ जहँतहँ तरुगेहा
तबगुहपति बहु अशनमँगाये * कंदमूल फल सबहिन खाये
भरत सखा कहि लीन लेवाई * गे जहँ रैनि रहे रघुराई
कुश साथरी देखितरु श्यामा * परिक्रमा करि कीन प्रणामा

दो० सजल नयन ह्वै सखा ते बोले सकुचसमेत।
हाय राम सियलषणवन सहत विपति ममहेत॥

जनकसुताअतिशयसुकुमारी * सासुससुरपति प्राण पियारी

लोनेलषण सरिस शुचिभ्राता * भयो न अहै न ह्वैहै ताता
मृदुमूरति रघुपति सुकुमारे * जीवचराचर सबहिं पियारे
ये सोवत वन दर्भ डसाई * विधिगतिमतिकछुजानिनजाई
जिन्हैं प्राणसम पितु महतारी * जोगवत रहैं नगर नरनारी
ते वन विचरि फूलफल खाहीं * देखि हृदय मम फाटत नाहीं
धृगधृगधृग मोहिं बारहिंबारा * धन्यतातप्रण भलप्रतिपारा
सुनिबोला करजोरि निषादू * जानिवामविधितजहुविषादू
नाथ आप प्रिय रामैं भारी * करत रहे उतकर्ष तुम्हारी
धरहु धीर सुखसमुझिप्रणामा * करहुसखनचलिगयेमुकामा
हरिगुणकहत भयो भिनसारा * करि मज्जन सब भये तयारा
केवट नाव अनेक मँगाई * उतरि सकल चलिभे हरषाई
सानुज भरत पयादे देखी * शुचिसेवकसकुचाहिंविशेखी
तिसरे प्रहर प्राग चलिआये * करिअस्नानसबहिंशिरनाये
विप्रन दान दीन बहुभांती * मांगि रामपद प्रीति सुहाती
जानि कामप्रद तीरथ नाथा * बोले भरत जोरियुग हाथा
सबफलदायक तुम भगवाना * दीजैआजु सुकृत म्वहिंदाना

दो० चहौं न सुगतिनसुमतिसुख ऋद्धिसिद्धिनहिंनेहु।
बढ़ै रामपद प्रीति नित यहीदान म्वहिं देहु ॥
शशि चकोरघन मोरधन कृपण मकर मधुरीति।
चातक स्वातीते अधिक प्रभुपद बाढ़ै प्रीति ॥
जो कहो प्रथमैं तजितिन्हैं कतगवनेहु परभौन।
अम्ब अनुग अज्ञान ते अघनहोय असकौन ॥

सो० भरत वचन सुनिसार भई त्रिवेणी में गिरा।
तात तजहु कुविचार तुमरामहिप्रिय प्राणसम ॥

वेणीवचन भरत सुनि हरषे * कहिबड़साधु सुमनसुरबरषे

भरद्वाज पहँ गे दोउभाई ❋ कीनदण्डवत मन सकुचाई
ग्रीषमऋतु पुनिमै जलभारी ❋ पदझलकतझलकाजनुवारी
लखिमुनीशउठिहृदयलगाये ❋ देइअशीश निकट बैठाये
कहिऋषितुमसकुचतकततातो ❋ अचलईशगतिवामविधाता
रामहिंप्रिय तुमसमनहिं कोई ❋ तवमतकहब लहबअघसोई
पलतेहुप्रजहितदपिनहिंफीका ❋ प्रभुपदप्रेमकियोअतिनीका
तेहिपरगहि कलंक बड़ येहू ❋ हम सबका उपदेशहि देहू
समुझिपरतम्वहिंअसनिरबहेऊ ❋ रामकृपामूरति तुमअहेऊ
बालकविधिसमसुयशतुम्हारा ❋ हरणताप तम पाप अपारा
भरिनयननछविनिरखितुम्हारी ❋ हमआपनिबड़िभाग्यविचारी

दो० सबसाधनकर फललहा लषण राम सियदर्श।
तेहिफलकरफल अबभयो भरतत्वयाअस्पर्श॥

सुनिमुनिवचन भरततबबोले ❋ पुलकिगातजललोचनलोले
नाथमोहिंनहिंपितुकरशोचा ❋ नहिंदुखजियजगकहैकिपोचा
बिगरै परलोक लोकन शंका ❋ नहिंकछुडरविधिभयोकिबंका
एकहि कष्ट हृदय मम भारी ❋ लषण राम सिय होतदुखारी
यहि आमयकी औषध आवै ❋ तबकछु औरबात मनभावै
कहमुनि करहु न शोचतुम्हारे ❋ सबदुखमिटिहैं प्रभुइ निहारे
आजुहोउ तुम अतिथिहमारे ❋ भलेनाथकहि कटक सिधारे
तबमुनिकरि विचारसुखपाई ❋ ऋद्धिसिद्धिअणिमादिबोलाई
कह्यो करहु सबहिनकी सेवा ❋ हरषीं सकल पाइ बड़ देवा
प्रथम कनकमय महलसुहाये ❋ कैयो योजन माहिं बनाये
दीन्ह्यो वास सुरुचि सबकाहू ❋ सुभग सेजस्रक सरसउकाहू
अशनवसनवर भोग अनेका ❋ दियेतोपि तिन यकपरएका
दासी दास अप्सरा नाना ❋ बागतड़ाग विविध पौमाना

सुरदुर्लभसुखलहि सबलोगा ॥ बिसरे घरवन विरह वियोगा
भरतविलोकि मुनीश प्रभाऊ ॥ भयोरामपद अधिक उछाऊ
चक्रवाक सम रैन बितायो ॥ प्रातनहाइ मुनिहिंशिरनायो
वर विराग विप्रेन्द्र निहारी ॥ मुदितदिये सँग सेवकचारी
आयसुपाय सुसैन सिधाये ॥ बीच वासकरि यमुनहिंआये
रघुपति बरण निरखिवरवारी ॥ हरषतभये सकल नर नारी
भरतभावभणिसकत न शेषा ॥ अपरकविहिअतिअगमविशेषा
जिमिमनमलिनमनुष्यनकेहां ॥ दुर्लभ ब्रह्मानँद जगमेहां
तेहिनिशिरहितहँउठिभिनुसारा ॥ एकैखेउ भये सब पारा
करिअस्नान चले शिरनाई ॥ देखिकहैं मग लोग लुगाई
कादोउ राम लषण हैं सोई ॥ होती संगसीय कह कोई
सेनसाथ पुनि मानसखेदा ॥ तब इकसखी कह्यो सबभेदा
सुनिसोकथा सकलअनुरागीं ॥ भरतहिबहुरि सराहनलागीं
केकयियोग न सुत ये अहहीं ॥ एककठोर विधातै कहहीं
भलीभई भव भूत बिगारी ॥ एककहै असकह्यो न प्यारी

दो॰ राज्यहरणपुनिपितुमरण विपिनचरणजगदीश ।
दैव करै ऐसी विपति परै न काहू शीश ॥

यहिविधिजहँतहँग्रामनिवासी ॥ कहैं सुनैं सुमिरैं सुखरासी
भरतहि जिन देखे मगलोगा ॥ तिनके सकलमिटे भवरोगा
सहितसमाज जहां पगधरहीं ॥ महिकोमलतरु छायाकरहीं
यह बड़िबात भरतके नाहीं ॥ जिन्हैं रामसुमिरत मनमाहीं
लखि गुरुते बोले सुरराजा ॥ बनीबात अबहोत अकाजा
रामहिं भरत मनावन जाहीं ॥ असकछुकरहुमिलैंजेहिनाहीं

दो॰ कह सुरगुरु हरिभक्त जो कोऊ करत कुचालि ।
परसपलटितेहिशीशसोइ ज्योंरजरविहिउछालि ॥

सेवक की सेवा किहे हरि हि होत परितोष।
करै भक्त ते वैर जो जरै राम के रोष॥
यदपि एकरस एक प्रभु गहत न सारासार।
तदपिसुभक्तनहित करत समअरु विषमबिहार॥

असजियजानितजहुअविचारू * सुमिरहुभरतचरणसुखसारू
सुनि सुरपतिउर धीरजआवा * वरषि सुमन पद प्रेम बढ़ावा
पूंछत प्रभु भरतहि चलिआये * नयनिवासकरि प्रात सिधाये
सबकेउर अभिलाष विशेषी * कब सियरामलषणमुखदेखी
तबनिषाद गिरिवरहिदेखावा * प्रेममगन सबहिनशिरनावा
सुमिरतनाम दरशकी आसा * उभयकोशचलिकीननिवासा
प्रातकाल उठिचले बिशेखा * इत सियस्वप्न प्रातअसदेखा
पुरजनसहित भरतजनु आये * सासुआनाविधि सबदुखताये
सुनिप्रभुकह्यो स्वप्नभलनाहीं * कीन स्नान शोच मनमाहीं
उत्तरदिशि देखी नभधूरी * दुरे आइ खग मृग तहँ भूरी
तबतौ चकित उठे रघुराई * आइ किरातन खबरिजनाई
भरतआगमन सुनि रघुवीरा * भये प्रेमवश पुलकशरीरा
पुनि मन शोचकीन रघुराऊ * उत सुरहित इत बन्धुदबाऊ
बहुरि समुझिमन भये सुखारे * भरत कहेमहँ अहैं हमारे

दो॰ लषणलख्यो प्रभु शोचवश उठे धनुषशरसाधि।
बोलेसम्मुखजोरि कर सहित क्रोधअहलाधि॥

नाथ कनक रसना प्रभुताई * पावत पुंस जात बौराई
बेनु नहुष भुजसहससुरेशा * शशित्रिशंकुयशविदितत्रिदेशा
अरु कृतवीर्य्य दक्षगतिजाई * सूती में नहिं सिन्धु समाई
भरत साधुबड़ रहे सयाने * तेउ राज्यपद पाइ भुलाने
विपिनयकाकी समुझिसुहाये * करन अकंटकराज्य सिधाये

जोमनमें यहबात न आवत ❋ तौकेहिकरिहरि कटकसुहावत
प्रथममातुमिसकिहिनिखुटाई ❋ समयपाय फललागत आई
भरतहिं आजु सबंधु प्रचारी ❋ नाथशपथ रणडरिहौं मारी
अतिअपमानरजहिंनहिंसोहैं ❋ हम नृपतनय करावधुओहैं
सुनतवचन लोकपभयमानी ❋ तबतहँ भई गगनइमिबानी
ऐसे बलहैं तात तुम्हारे ❋ परबुधकरत न कछुअबिचारे
सकुचे लषण राम सनमाने ❋ तात वचन तुम सत्य बखाने
भरतसरिस शुचिबंधु जहाना ❋ भयो न अहै तात तवआना
गरुड़हिं चहुँरजुअहिगहिखावै ❋ गोपदबूड़ि घटज बरु जावै
भरतहिहोब न नृपमद भाई ❋ विनशकिपयनिधिइखदखटाई
गुणअवगुणमयजगविधिकीन्हा ❋ भरतहंसजलतजिपयलीन्हा
यहिविधि इत प्रभु करत बड़ाई ❋ उतै भरत पयसरित नहाई
सकलसमाज राखि तेहितीरा ❋ आपुचले जहँ सियरघुवीरा
संग निषादनाथ लघु भ्राता ❋ विविध कुतर्ककरत मगजाता
कैकेयिसुतलखि चहैंतजिदेहीं ❋ सेवकसमुझिअपनकरिलेहीं
तजेहुअतजेहुमोहिंगतियाहीं ❋ शिशुतजिमातुपितहिंकितजाहीं
यहिविधिठठुकतबढ़तअधीरा ❋ आयेचलि प्रभुआश्रमतीरा
फूले विटप अनेक प्रकारा ❋ खगमृगमधुकरकरतविहारा

दो० पाकरि जंबुतमालचुत तामधि वटतर श्याम।
तेहितर सरितातटबनी परणकुटी अभिराम॥
बहुतुलसी तरुसुमनचरु रुचिर वेदिका एक।
होतकथा नित आइ तहँ बैठत साधु अनेक॥

थलशोभा जब भरत निहारी ❋ मिटे सकलदुख भयेसुखारी
चले प्रणाम करत दोउभाई ❋ पहुँचे जब रघुपतिपहँ जाई
उठे तुरत प्रभु जबै निहारा ❋ कहुँ धनुशर कहुँ तूणबिसारा

धाइउठाइलाइउरलीन्ह्यो ❋ मिलननिरखिसुरजयजयकीन्ह्यो
प्रीतिप्रतीतिभरतरघुवरकी ❋ विधिहरिहरसुरसकहिं न तरकी
हौं केहिभांतिकहौं मतिथोरी ❋ मिले लषण ते भरत बहोरी
राम सखहिं भेंटे हरषाई ❋ मिले शत्रुहन प्रेम बढ़ाई
केवट लषण शत्रुहन भेंटे ❋ पुनि दोउबंधु सियापद लेटे
दीन अशीष सहित बैठारे ❋ भे अनुकूल विलोकि सुखारे
तब केवट वरवचन सुनाये ❋ प्रभुमुनिमातु लोगसबआये
गुरुआगमन सुनत रघुवीरा ❋ गये जहां सरितट सबभीरा
मुनिहिं प्रणामकीन्हदोउभाई ❋ प्रेमसमेत लिये उरलाई
विप्र विप्रबनितन शिरनावा ❋ आशिरवाद सबनते पावा
आरतलोग समुझि सुरत्राता ❋ पलमा सबै मिले दोउभ्राता
पुनि देखी सब मातु विहाला ❋ प्रथमकेकयिहि मिले कृपाला
पदपरि प्रभु तेहिकीन सुखारी ❋ बहुरि सकल भेंटी महतारी
मिले सुमित्रहि पुनिदोउभाई ❋ कौशल्यै भेंटे अकुलाई

दो० अति सनेहवश मातुदोउ बन्धुलिये उरलाय।
तेहिक्षणभयो विलापजस तसकापै कहिजाय॥

सो० भेंटिसबै दोउभाइ गुरुहिकह्यो पगधारियो।
मुनिकरआयसु पाइ उतरे जलथल देखिसब॥

द्विजगुरुसचिव मातुलै साथा ❋ आये निजआश्रम रघुनाथा
सियउठि मुनिपद नायोमाथा ❋ उचितअशीषदीन्हऋषिनाथा
पुनिगुरुत्रियद्विजप्रियपदलागी ❋ दीनअशीषसबनअनुरागी
सासुन सकल मिली वैदेही ❋ लखिलखिसबै लाइउर लेही
तब मुनीश सबका बैठाये ❋ प्रथमकछुकहरिचरितसुनाये
पुनिनृप सुरपुरगमन जनावा ❋ सुनिसियरामदुसहदुखपावा
करहिंविलाप लषणयुतरानी ❋ सो करुणा नहिंजाइ बखानी

तबविधिसुत दीन्ह्योबहुज्ञाना * सबहिनजाइकीन्हअसनाना
दशमीदिवस रहा तेहिचीन्हा * बरतनिरजलासबहिनकीन्हा
प्रातहिजोऋषिआयसुदिहेऊ * सो प्रभुसहितप्रीतिते किहेऊ
करि पितुक्रिया वेदविधि रीता * मदन दिवसभे शुद्धपुनीता

सो० परम पुनीता जोइ कोइ न जानत तासुगति ।
नर नाटक कृत सोइ करत निजानुग भाववश ॥

इति श्रीविश्रामसागरश्रीरघुनाथदासकृतपञ्चदशोऽध्याय: १५ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं मानसमतकछुक अगिनिवेषकृतआनि ॥
कोशलपुरवासी सकल सुखप्रद परवत पास ।
वसतकसततनुलसतलखिनसतजगतकीआस॥
तब रघुपतिगुरुतेकह्यो नाथ विकलसबलोग ।
लखिमोहिंयुगसमजातपलनहिंफलभक्षणयोग॥

बोलेमुनि तुम सुनहु कृपाला * प्रथम लोगसब रहे विहाला
जबते कीन्हेनि दरश तुम्हारे * तबहीं ते सब भये सुखारे
तेहिते रहन कछुक दिन देहू * भले नाथ कहिगे निज गेहू
लागे रहन मुदित नरनारी * देखि शैल सब होयँसुखारी
पयसरि करहिंत्रिकालसनाना * कंद मूल फल लै लै नाना
कोलकिरात मुदित लै आवैं * धरिधरि आगे शीश नवावैं
देहिं लोग धन लेहिं न सोई * कहैं हमार भला किमिहोई
तुम सुकृती हम वनचर पापी * रामकृपा भय दरश कलापी
प्रियपाहुनतुम सब सुखदाता * सेवायोग न कीन विधाता
फलदल लेहु दीनजन जानी * रीझत साधु प्रेम पहिंचानी
सुनिमृदुवचनसकलअनुरागे * तिनके भाग सराहन लागे
प्रीतिविलोकि लेहिंफलफूला * खुशीहोहिंतबलखिअनुकूला

यहिविधिलोगसकलहरषाहीं ❋ वासरबीति पलकसमजाहीं
सबके मन इच्छा यह होई ❋ जहँ सियराम तहँ सबकोई
सियकरि सबसासुनपदसेवा ❋ किहिनिसुवशकोइजाननभेवा
यहिविधिअधिवासरचलिगयऊ ❋ द्वितियादिनसबबटुरतभयऊ
भरत वशिष्ठ राम मुनिरानी ❋ निजमतिसरिसकहैंसबबानी
तेहिक्षण जनकदूतयुगआये ❋ प्रभुइ देखिभे दुखितसुभाये
बूझत गुरु विदेह कुशलाई ❋ बोले तब सुचार शिरनाई
प्रभुअबकहहुकुशलकिहिलागी ❋ कुशल हेतुसोभयोबिरागी
नतरुकुशलगेअजसुतसाथा ❋ मिथिलासुतभइअवधअनाथा
नृपपरलोक सुना जबराजा ❋ भयेविकलतबसहितसमाजा

दो० पुनि धीरज धरि अवधपुर दूत पठाये चारि।
खबरिकही तिनआइ तब आपुहिचलेविचारि॥
किहिनिनिवास न मगकहूं चलतभयेदिनतीनि।
आइपहूंचे खबरि हित तबम्वहिं आज्ञादीनि॥

जनकागमन सुनत रघुवीरा ❋ आनन चलेसंग बहुभीरा
पुरजनसुनि सबभये सुखारी ❋ कहैंकिरहब बहुरि दिनचारी
गिरिवरदेखि जनकरथत्यागा ❋ कीनप्रणाम सहितअनुरागा
मगश्रम स्वल्प न काहूपावा ❋ मनुप्रभु पास प्रथमहीं आवा
इतउत लोग सकल नियराने ❋ लागे मिलन प्रेम रससाने
जनकमुनिनपद नायउमाथा ❋ ऋषिन प्रणामकीनरघुनाथा
मिले विदेहैं बंधु समेता ❋ लैआये सहप्रीति निकेता
द्वौसमाजमिलिभये विहाला ❋ रहनज्ञान धीरज तिहिकाला
भूप रूप गुण शील बखानी ❋ रोवहिं सकल विकलनृपरानी
रामहिं देखि अधिक उरदाहा ❋ हाय वाम विधि कीन्हें काहा
सुरनर मुनि सब भये दुखारी ❋ नृप विदेहकी दशा निहारी

मोहविवशभे जनकसुज्ञानी * यहरघुपति पद्प्रीतिपिछानी
जपतपयोग विरति विज्ञाना * रामप्रेम बिन व्योम समाना
मुनिवरसबहिं बोधबहुदीन्हा * रामघाट तब मज्जनकीन्हा
उतरे सब जहँतहँ जलतीरा * त्यहिदिन सकलरहेबिननीरा
प्रातसबनउठि कीनसनाना * कोलकिरातबात सुनिजाना
कंदमूल फल सरससुहाये * भरि भरि भार भूरि भटलाये
मुनिवरपठै जनकपहँ दीन्हे * सैनसहित नृपपारणकीन्हे
यहिविधिभे गतवासरचारी * प्रभुहिदेखि सबलोगसुखारी

दो० दोउ समाज कहैं नारि नर अब न जाब घरदूरि।
सियरघुपति सँगरहब वन सुरपुरते सुख भूरि॥
ज्येष्ठशुक्ल जिष्णुगादिवस जनकराज रनिवास।
आयहुसुनि सवकाशतहँ जहँसियकी सबसास॥

कौशल्या सादर बैठारी * स्रवतनयनजल सकलदुखारी
सियामातुबोली विधिकरणी * परमकठिन कछुजातनबरणी
देखहु विषवायस बहुतेरे * मधुमराल कहुं मिलत न हेरे
जन्म विवाहउछाह अपारा * कहँवहसुख कहँयहदुखडारा
लषणमातुकह ऐसे अहई * बालचरित समकत जोरहई
कौशल्याकह विधिहि न दोषू * निजकृत कर्मकेर सबरोषू
म्वहिंनशोच भूपतिकर कोई * नहिंवनजात रामसियसोई
गूढ़सनेह भरतकर देखी * यही एकम्वहिं शोचविशेखी
तेहिते देविकहेउ नृपपाहीं * बहुरैं लषण भरत सँगजाहीं
भरत शील गुण प्रेम बड़ाई * कहैं शेष पर सकैं न गाई
जबतब मोसे बदैं महीपा * भरत भये हमरे कुल दीपा
कनककसौटी चढ़िखुलिजाई * पुरुष परखिये अवसरपाई
सुनिवरवचनसकलबिलखानी * धरहुधीरपुनि कह्योसबानी

लषणमातु तबकह्यो सप्रीती * देविदण्ड युगयामिनि बीती
कौशल्या कह अब थल जाहू * हमरे तव पति हाथ निबाहू
सुनिबोली अस काहेन कहहू * राममातु दशरथप्रिय अहहू
अङ्गीकारकरै गुरु जाही * तृणगिरिसमप्रतिपालतताही
तवहितहरिकोइका अनुसरई * रवि सहाय कहुँ दीपककरई

दो० रामलषणसिय जाव वन करिसुरमुनिकोकाज ।
फिरि ऐहैं निज नगर तब पैहैं त्रिभुवन राज ॥

याज्ञवल्क्य नारदइमि काहा * झूंठ न होव सत्य हम चाहा
असकहिसियहितविनयसुनाई * आईनिजथल करतबड़ाई
प्रियपरिजनहिंमिलींलखिसीता * भेसबविकलमोहमदजीता
जनकसियहि उरलीन्ह्योलाई * बोले पुनि धरिधीरज राई
पुत्रिपवित्र द्वऊकुल कीन्हो * पावनसुयशसकलउरलीन्हो
सुनिपितुवचनसियासकुचानी * रैनरहे भल यहां न जानी
लखिरुख भेप्रसन्न पितुमाता * पठइनि तबतहँ भेंटिसुगाता
सियामातु तब पतिहि सुनाई * कौशल्या कृत भरत बड़ाई
सुनि पुलकित तन बोले राऊ * ऐसेहैं प्रिय भरत प्रभाऊ
हमवाशिष्ठमुनि बहु अवगाहा * मिली न भरतबुद्धिकी थाहा
योग भोग युत नय मै राऊ * किमिजानों हरिजनकरभाऊ
भरतभाग्य गुण शीलविचारा * शेष कहैं पर लहैं न पारा
महिमा भरतकेरि सुनु प्यारी * जानैं राम न सकैं उचारी
तौफिरि अपर सकै को गाई * चिरिया उर कहुं सिंधुसमाई

दो० लषणहिंफेरहु भवन तब कहो भरत वनजान ।
जोमैं पावहुँ थाह कछु प्रीति प्रतीति अमान ॥

राम भरतकै बात प्रमाना * जानैं राम भरत नहिं आना
इमपि भरतकी करत बड़ाई * हर्ष सहित सब रैनि बिताई

प्रातकाल करिमज्जन नीरा ※ जनकवशिष्ठ भरत रघुवीरा
कौशिकादिपुरजन अधिकाई ※ बैठे सब वटतरुतर आई
बोले तब राघव ऋषि तेरे ※ नाथ सहतदुख लोग घनेरे
जोआयसु मोहिं होइ गुसाईं ※ सो मैं करौं दास की नाईं
बोले मुनि तुम धर्म जहाजा ※ कसनकहौयहिविधिमहराजा
असकहि बहुरिभरतते भाषा ※ कहोतातनिजमनअभिलाषा
बोले भरत जोरिकर दोऊ ※ अवसरसमुझिकहतसबकोऊ
बैठेजहँ प्रभु त्रिभुवनत्राता ※ पुनिकौशिकमुनिउभयविधाता
तुमप्रभु विधिगति छेकनहारे ※ सचिवजनक तुम ठौरहमारे
औरहु ऋषि बैठे बहु ज्ञानी ※तहँहौंलघुकिमिसकहुँबखानी
जो तुम सब कर आयसु होई ※ सोइ हितमानि करैं सबकोई
कहमुनिममसम्मतसुनिलीजे ※ जो कछु राम कहैं सोइ कीजे
त्रिगुणआदिदैजहँलगिप्रानी※ राम रजाय सबन शिरजानी
कौशिकसचिव भरतसविदेहा ※ सबनकहेउ भलसम्मत येहा
जानि राम निज ऊपर भारू ※ बोले पुनि मुनिते श्रुतिसारू

दो० नाथशपथसुनिसोंहजग भरतसरिसशुचिभाइ ।
भयो न है नहिंहोन अब बहुत कहौं का गाइ ॥
जो गुरु पद रज शिरधरै लोक वेद बड़ तौन ।
तेहि पर रौरेकी कृपा भरत सरिस जग कौन ॥

मुखपर क्यहिविधिकरौंबड़ाई ※सकुचतिसुमतिसमुझिलघुभाई
भरतै पोचकहै जो कोई ※ महामूढ़ पापी है सोई
मातहि दोषदेइ सोउ मूढ़ा ※ जानि न जाइ ईशगति गूढ़ा
मातनमेंअतिप्रिय सोइमाता ※ भाइनमें प्रिय भरत सु भ्राता
भरतदेइँ म्वहिं आयसु जोई ※ शम्भुशपथ मैं करिहौं सोई
सुनि प्रभुवचन डरे सुरराई ※ पठवत शारद सो नहिं आई

तब वासव शठ परअपकारी * निजउच्चाट सबन शिरडारी
जनकभरतमुनिसचिवैत्यागी * सुरमाया सो सबके लागी
मन उच्चाट भये सब केरे * क्षण सुहात घर क्षण वनहेरे

दो० बोले तब मुनि भरत ते तात कहौ अब सोइ।
ज्यहिते यावत जीवजग सबहिन कर हित होइ॥
सुनि मुनि ते बोले भरत देव कह्यो सतिभाव।
मैं जानत निज नाथकर अतिशयसरलसुभाव॥
जननि जनक सोदर सखा सेवक सचिवपरोस।
काहु न देख्यो आजुतक प्रभुकर बदनसरोस॥

सबपर कृपाकटाक्ष लखाई * तदपि प्रीतिमोपर अधिकाई
शिशुपनमें खेलत प्रभुसङ्गा * कबहुँनकिहिनि मोरमनभङ्गा
जोकछु वस्तु अनोखी पावैं * मोहिं दियेबिन आपु न खावैं
महूँआजतक अतिपृथुजानी * प्रभुसम्मुख कछु बातनठानी
निशिदिनरहीदरशअभिलाखा * सोसनेहविधिमोर न राखा
सेवकधर्म स्वामि स्यवकाई * सोतजिगयो करनअधमाई
पुनिप्रभुमातु पितागुरुबानी * परिहरिपहुँचेउ पासप्रमानी
ऐसेहु अघ प्रभु गने न राई * शरणजानि लीन्ह्यो अपनाई
ऐसे प्रभुइ न हौं अनुसरहूं * सेवक ह्वै सम्मुख हठ करहूं

दो० निजस्वारथहित स्वामिते हठै सो सेवकपोच।
जो म्वहिं आयसु देहिंप्रभु सोइकरौं तजिशोच॥

सुखदवचनसुनि सबहरषाने * भरतहि धर्म धुरंधर जाने
रामभरतते वचन उचारे * तात रहत महि पुण्यतुम्हारे
जोहमहीं पर राख्योबाता * तौ अबकहौं सुनौ हे ताता
जोप्रथमैं पितुआयसु दीन्हा * हमैंतुम्हैंसोइ चाहियकीन्हा
जिनगुरुपितुपतिगिरानधारी * तिनजानहु तेहिडारयोमारी

असजियजानिमानिहितभाई ❋ पालहुप्रजहिअवधिभरिजाई
होइहि तुम्हैं न लेशकलेशू ❋ शिरपरगुरु सुमंत मिथिलेशू
महूंविपिनरहिअवधिबिताई ❋ ऐहौं सपदि भवन सुखपाई

दो० सुनि रघुपतिके वचन मृदु भा भरतै संतोष ।
मनहुँ लह्यो फल जन्मकर मिटे सकलदुखदोष ॥

बोले बहुरिजोरि युगहाथा ❋ तिलकसाज सबलायोंनाथा
सोअब कहा करिय रघुवीरा ❋ कहप्रभुचलहुचलीऋषितीरा
अत्रे मुनि जहँ देइँ बताई ❋ तहँधरिदेहु काम फिरिआई
असकहि चलेगयेमुनिधामा ❋ करतभये सब दण्डप्रणामा
आदर करि मुनिवर बैठारे ❋ भरत अत्रिते वचन उचारे
नाथनीर सब तीरथ केरा ❋ धरिय कहां सो करहु निबेरा
कहमुनि है यक कूप रसाला ❋ लोपतसोपि न कौन्यउकाला
ताहीमें जल राखहु ताता ❋ सुनितबभरतकीनिसोइबाता
भरतकूप कहवावत सोई ❋ पीवतजल निरमल मनहोई

दो० पुनि प्रभुते बोले भरत नाथ जो आयसु होय ।
आवहुँ तीरथ देखि सब राम कह्योभल सोय ॥
पाइ रजायसु चले तब जहां जहां चलिजात ।
नेमप्रेम लखि भरतकर मुनिजनमन सकुचात ॥
पांच दिवसमें सकलवन देख्यो भरतढिंढोरि ।
हरि दिन प्रातस्नानकरि प्रभुते कह्यो बहोरि ॥
दीजैमोहिंअधारकछु ज्यहिलखि अवधिसिराय ।
सुनिदीन्हीं निजपादुका भये मुदित मन पाय ॥
जननिजनकगुरुसचिवप्रियपुरजनसखासुभ्रात ।
भेंटि सबन कीन्हें बिदा चले सकल बिलखात ॥
त्यहिक्षण मायासुरनकी सबका भई सहाय ।

नाहितरघुपतिविरहते घर न सकतकोउ जाय ॥
बैठे प्रभु सिय अनुजयुत परणकुटी के माहिं ।
करत बड़ाई भरतकी इत वरणत सब जाहिं ॥
त्यहिदिनरहियमुनानिकट उभयभीलपतिग्राम ।
तीसर वासागोमती चौथल अवध मुकाम ॥
भूता दिन आये अवध जनकरहे दिनचारि ।
जहँ तहँ सबनि बसाइके निजपुरगयेसिधारि ॥
भरतसुदिवसशुधाइके पुनि गुरुआयसुमांगि ।
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी अनुरागि ॥

गीतिकाछंद ॥ बैठारिप्रभुपदपादुका शिरनाइ अनुज बुलाइके । सौंपाइपुरजनमातुसब तबआपुआयसुपाइकै ॥ पुरदक्षिणयोजनएक नंदिग्राम गुफाबनायहू । लागे रहन फलपातभखि जगभोगसब बिसरायहू ॥ सुनिअवधसुख सुरराजलाजतधनदधनलखिरागही । त्यहित्यागिदीन्ह्यो भरतकिमि जिमिमधुपचम्पकबागही ॥ रघुवीरपियपुनि बंधुत्यहि जड़मोहिमायाकिमिसकैं । जेअहैंसनमुखरामके तेउतासुतननाहींतकैं ॥ यहभरतचरितपुनीतपावनकरन मुनिवर्णनकर्यो । रघुनाथकरिसंक्षेपकछु विश्रामसागरमें धर्यो ॥ कहिहैंजेसुनिहैंमुदित तिनकीप्रीतिप्रभुपदबाढ़िहै । नशिहैंसकल दुख रामधाम न जातकोऊ आड़िहै ॥

दो० श्रीगुरु देवादासके चरणकमल धरि माथ ।
भरतचरित संक्षेपकरि कहाकछुक रघुनाथ ॥

सो० हरिहरजन गुणगूढ़ मूढ़ न लखैं विमूढ़ बिन ।
जिमिसंश्रितआरूढ़ मूढ़ न जानतजीवगति ॥

इति श्रीविश्रामसागरअयोध्याकांडेषोडशोऽध्यायः १६ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

❀ अथविश्रामसागर ❀

आरण्यकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं नाटकमतकछुक आदिरमायण जानि ॥

भरतचरित्र कहे कछु ताता ❀ अबसुनिये रघुपतिकी बाता
सीता अनुजसमेत कृपाला ❀ बसतकाम तापर सब काला
चहुँदिशिसघनलतातरुनाना ❀ मनहुँकामरतिरचितविताना
शीतल मन्द सुगन्धित बाऊ ❀ डोलतबोलत बय करिचाऊ
तामधिफटिकशिलाअतिसोहै ❀ उपमा देनहार असकोहै
तहँ यकदिन प्रभु निजकरतेरे ❀ चुनिप्रसून स्रकरचे घनेरे
सीतहिपहिराये सुखमानी ❀ तिलककरनिकिमिजाइबखानी
त्यहिप्रकार मिथिलेशकुमारी ❀ प्रभुके अंगन सजे सँवारी
बैठे सहित सनेह सानकी ❀ आश दोउदिशि प्रेमपानकी
करहिंप्रकाश पास मनिभारी ❀ रही छिटकि पूनो उजियारी
त्यहि निशिनारि जयन्ताकेरी ❀ आई तहँ लै सुमुखिघनेरी
रघुपतिरूप विलोकि जुड़ानी ❀ नृत्यगान कीन्ह्यो कलबानी
मनभावन वरमांगि सिधाई ❀ सोसुधि कतहुँ जयन्तैं पाई
इरषावश वायस वपु बनिकै ❀ मार्यो सियपद चंगुलभरिकै
रुधिरदेखिप्रभुतृणयकलीन्हा ❀ ब्रह्ममंत्र पढ़ि पाछे दीन्हा
ज्योंज्यों भागतजात जयन्ता ❀ त्योंत्यों बढ़तबाण बलहन्ता

दो० वज्री वेधा विरूपाक्ष यक्षपादि सब पास।
गयोदयोनहिंरहनक्यहुँ किमपिजानिनिजनास॥
सुखद दुखद ह्वैजात तब जब रोषत रघुवीर।
विकल देखि त्यहि देवऋषि कहिपठये प्रभुतीर॥
ह्वै निराश दुरवास सम आइ नाइ शिरबैन।
बोल्यो सम्मुख जोरिकर जय प्रभु करुणाऐन॥
जय जगजीवन जगतपति प्रणतपाल तुम एक।
रक्षिसकत नहिं विपतिमें अपर जो ईश अनेक॥
दीन वचन सुनि शत्रुके समुझि बाणगतिभेद।
एकनयनकरितज्योत्यहि ज्यहि न होइ फिरिखेद॥

यहिप्रकार प्रभुमहितसुपासा * शास्त्रमासतहँ कीन्ह्यो वासा
अवध लोग तहँ भरेरहावैं * बीसकजाइँ पचीसकआवैं
तबप्रभुनिजमनआन्योठीका * बनकरनगरभयो नहिंनीका

दो० मांगि बिदा सब ऋषिनते क्वारमास शुभजान।
सहितलषण सियरामदिशि दक्षिणकीनपयान॥
प्रथमगये अत्रेभवन कीन्ह्यो दण्ड प्रणाम।
लीनलाइ उर विप्र लखि छवि पूजे सब काम॥
प्रमुदित आसन दीन शुचि फल दल मूल पवाइ।
लागे पुनि अस्तुति करन मुनिवर प्रेमबढ़ाइ॥

नाराचछंद॥ नमामिरामराघवेशदेशनाथनायकं। महेश शेशब्रह्मधर्मसेव्यमानदायकं॥ दयालदासदुःखदोषदर्पदंभ गंजनं। मुनींद्रवृन्दभूमिसाधुदेवधेनुरंजनं॥ भजन्तिजेनतेप दारविंदबांछितर्कमें। पतंतितेप्रभंतिसंश्रितादिअंतनर्कमें॥ त्वमेकसर्वकालविश्वपालमुर्विजापतिं। ददामिजे त्वदाश्रि तंसुयोगिदुर्लभंगतिं॥ अनूपश्यामसुन्दरंस्वरूपकोटिकाम

ते। चरंतिशक्तिसानुजंपरार्थस्वर्गनांघ्रिते॥ स्वछंदसानुकूलज
क्तमूलभक्तवत्सलं। भवांघ्रिमध्यमेंसदावसंतिबुद्धिनिर्मलं॥
सुनिमुनिविनयरामसुखपावा * तबसियमुनितियपदशिरनावा
अनसूयालखि मिलीसप्रीती * दीनअशीशसुखदजसिरीती
उप पधारि पट भूषण कादे * जे पाये हरिते निज गादे
सीतहि पहिराये हितजानी * रहत नवल नितबोलीबानी
सुनुस्वामिनिजगभामिनिकेरा * पतिही देव न दूसर हेरा
अंध बधिर किनहोइ निकामा * करिअपमान पतैतमवामा
पतिव्रतकरै छांड़िजलजोखा * बिनश्रमपरपदलहै न धोखा
तुम्हैं प्राणप्रिय राम सुजाना * या मैं जगहित कीन बखाना
सुनिसियसुखलहिनायोमाथा * तब मुनिते बोले रघुनाथा

सो० नाथ जाउँ वन आन आयसु दीजै जानिजन।
सुनि मुनि परमसुजान नाइ शीश बोले बहुरि॥

दो० तुमसम नाथ न नाथ कोउ सुंदर सरलसुभाउ।
मैं सेवक कैसे कहौं नयन अयन ते जाउ॥
मुनिपदपंकज नाइ शिर विनय वचन बहुभाखि।
चलेलषणसियसहितप्रभु निजमूरतिउरराखि॥

प्रभुइचलतलखिगिरिमगदेहीं * घनसुछांहमाहि मृदुछैलेहीं
जहँतहँ मुनिआश्रमबहुभावैं * जाइ जाइ सब के शिर नावैं
पूजैं सकल सुरुचि भवभांती * चलैं प्रातबसि सुथलसुराती
अगजगमगवासीलखिकहईं * द्युतिमाभवनकवन ये अहईं
निकसिगये गुणकहैं बिसूरी * जबते देखे पथिक हजूरी
तबते मांझ मनताचे अटका * खरीगोष्ठनहिं सांगतलटका
यहिविधिवननांघतप्रभुजाहीं * मिलाविराधअसुरमगमाहीं
महाविशाल रूप विकराला * हाथ त्रिशूल गहे मृगछाला

प्रभुइ पेखिबोला कुविचारी ❋ साधुवेष तुमहौ छलकारी
हरि आन्यो काहूकी वामा ❋ लिहे फिरत वन संगललामा
असकहिगहिसिय सपदिसिधावा ❋ लखिरघुवीर दुसहदुखपावा

दो० प्रभुइ बोधदै लषण तब छांड़े विशिख कराल ।
उरलागतभो विकलतजि सियधावाजनुकाल ॥

धावत लखि त्यहिदेव डराने ❋ खगमृग मुनिलै जीवपराने
गिरिसम वपुष वेग पवमाना ❋ फूटहिंपवि टूटहिं तरुनाना
लषणमारितनजर्जरकीन्हा ❋ महिगिरिउठतपरतनहिंचीन्हा
तबप्रभुमुनि शरमारि गिरावा ❋ दिव्य देहदै स्वपद पठावा
अस्थितासुखनिगाड़िकृपाला ❋ सीतैलै पुनि चले रसाला
सुरपतिलै तहँ स्यन्दन आये ❋ करिप्रणामनिजलोकसिधाये
विचरतप्रभुसियलषणसमेता ❋ पहुँचे ऋषि शरभंग निकेता
निरखिरामछविअतिसुखमाना ❋ मनहुँक्षुधितलहिअशनअघाना
करिहरिविनय भक्तिवरमांगी ❋ योगानल तनुतजिबड़भागी
चढ़िविमान वैकुण्ठहिगयऊ ❋ भेदभक्तिहित मोक्ष न भयऊ
आगेमुनिबहु मिले प्रवीना ❋ भेंटिभेंटि सबका सुखदीना

सो० कुंभज शिष्यसुजान नाम सुतीक्षण रामजन ।
प्रभुआवत सुनिकान धायो करत मनोर्थबहु ॥

दो० बिसरी तनसुधि प्रेमलखि उरप्रकटे सियराम ।
गौरश्याम बहुकामछवि निरखिलह्यो विश्राम ॥

तबप्रभुतिनढिगजाइबखाना ❋ उठहुप्राणप्रिय विप्रसुजाना
उठत न जब जान्यो भगवंता ❋ भये चतुर्भुज हृदय तुरंता
रामरूप जब उरनहिं देखा ❋ उठेविकलजिमिमणिबिनशेखा
आगेसानुज सियरघुराई ❋ लखिहरष्यो जिमिगत निधिपाई
कीनि दंडवत प्रभु उरलाये ❋ आश्रम आनि पूजिमनभाये

करि बिनती मांग्यो वर एहा ॥ बढ़ै नाथपद नितनवनेहा
सीतालषणसहिततुमस्वामी ॥ बसहुस्वान्त ममअंतरयामी
एवमस्तु कहि राम सिधाये ॥ मुनि समेत कुंभज पहँ आये
रामप्रणामकीन ऋषिदेखी ॥ लियेलाय उरप्रेम विशेखी
कुशलपूंछि आसन बैठारे ॥ पूजनकरि मृदुवचन उचारे
आजुभयो म्वहिं आनँदकैसे ॥ चातक पाइ स्वाति जलजैसे
बैठेप्रभु सब दिशिमुनिवृंदा ॥ चितवैंमुख चकोर जिमिचंदा
कहहरि मंत्रदेहु म्वहिंवोही ॥ ज्यहिते मुनिमारौं सुरद्रोही
बोले मुनि म्वहिं बूझत काहा ॥ तुम्हरे भजन ज्ञान कछुलाहा
ज्यहिवशसुरमुनिअजत्रिपुरारी ॥ सो माया किंकरी तुम्हारी
कालकराल सकल जगखाई ॥ सो तव डरडरपत रघुराई
ते तुम बूझत मनुज समाना ॥ दीन्ह्यो मोहिं सुयश मैं जाना
ऐसे आप अनुग हितकारी ॥ तिन्हैं त्यागिसुरअपरसँभारी
भवनिधिपार चहैपुनिलीना ॥ श्वानपूंछगहिजिमिमतिहीना
पर वह पार न पावै कबहीं ॥ तिमितवभजनविनानरसबहीं
देहु सुभक्ति मोहिं रघुराई ॥ अबसोकहउँ बसहु जहँजाई

दो० पंचवटी गुण गण जटी टटनि टटी नट रास ।
अघट घटी दुख सुखपटी कुटी करौ तहँ वास ॥

सो० दंडकनृप मुनिजात भोगी सुनि दियशापतिन ।
गिरि बालू दिन सात जरेउ देशसो स्वच्छिये ॥
मुनिअनुशासनपाइ पंचवटी सिय अनुजयुत ।
आये कौशलराइ भे प्रसन्न शोभा निरखि ॥

कुं० रामलषण सियपदपरत मिटीशाप ऋषिकेरि ।
भयो दिव्यवन विटपतहँ मिले गीधपतिहेरि ॥
मिले गीधपति हेरि पिताइव प्रीति बढ़ाई ।

गोदावरी समीप रहे दल कुटी गढ़ाई ॥
कुटी डारि जबते परे सरे सबन के काम ।
बरणिसकै को तासुयश जहँ राजैं नितराम ॥

आवैं तहँ अनेक ऋषिराजा ❋ होइ सदा सतसंग समाजा
एकदिवस लक्ष्मण शिरनाई ❋ बोले प्रभुते आयसु पाई
नाथबात सबविधि तुमजानौ ❋ मैं पूछौं संक्षेप बखानौ
जग समुद्रमधि को आधारा ❋ गुरु कृपालुपद पोत निहारा
गुरुको जो देवैहित बोधा ❋ शिष्यकौन जो सुनै प्रबोधा
वंधितको विषया अनुरागी ❋ कोवामुक्ति विषयजिनत्यागी
नरकसो कौन घोर निजदेही ❋ तृष्णात्यागि स्वर्गसुख येही
तमोद्वार किं किंकरनारी ❋ मोक्षमार्ग सतसंग विचारी
सोवतको जगरहे जे टेकी ❋ जागत किं सदअसदविवेकी
कोवा शत्रु जितेन्द्री मीता ❋ सोई सुहृद तिन्हैं जिनजीता
रंककौन ज्यहि तृष्णा चोखी ❋ धनीसोको सबविधि संतोखी
महाअंध को जो मदनातुर ❋ निजभलकरै सोइ बड़चातुर
क्षमावंतको त्यहि श्रुतिकहई ❋ परुषवचनसुनि जोनहिंदहई
मृतककौन ज्यहिकीरतिनाहीं ❋ जीवतजासुसुयश जगमाहीं
दीरघरुज किं यह संसारा ❋ औषध तासु अनूप विचारा

दो० कोहौं आयों कहांते कित जैहौं का सार ।
कोमैं जननी को पिता याको कहिय विचार ॥

किं अनीति जहँ वेदविरुद्धा ❋ परमतीर्थ किं निजमनशुद्धा
बिनप्रतीति को कंचन कांता ❋ सेवाकरन योग को सांता
किंज्वर चिंता चितकी जानौ ❋ शठको जो बिनधर्मपिछानौ
लाभकौन बड़िभक्ति हमारी ❋ हानि न भज्योमोहिंतनुधारी
कोवा शूर सुभावै जीते ❋ भूषण किं जो शीलनरीते

विद्या किं जो भेद मिटिजाई ❋ भेद अविद्या है दुखदाई
लज्जा किं नहिं करै विकारा ❋ महावीर जिन मनहिं प्रहारा
धीरजवन्त बली अति कोवा ❋ सुमुखिकटाक्ष न मोहे जोवा
दुखकिं अनित्यवस्तु में नेहा ❋ सुखप्रदको ममचरणसनेहा
पातकमूल लोभ लखिपरई ❋ पढ़नसुननकी कुपथबिसरई
त्यागीको जो मनवच काया ❋ करिसतकर्म भजै फलपाया
सत्यवचन किं जोमोहिंलीन्हे ❋ पंडित किं विकार तजिदीन्हे
ममस्वरूप जानै सोइज्ञानी ❋ मूरख किं सुदेह अभिमानी
पन्थकवनि जामें मोहिंपावै ❋ दानी जो ममभक्ति बतावै
महापातित को हिंसाचारी ❋ धन्य कौन जो परउपकारी
कोवा श्रेष्ठ निरत हरिकर्मा ❋ नीच कौन जो करैकुकर्मा
संग्रह योग कहा गुण मेरे ❋ जाइनिकितै कुसंगति नेरे
तप किं विषयभोग परिहरई ❋ दयाजो भूतद्रोह नहिंकरई
किं यमजाल सु तामसमोहा ❋ प्रेमकहां जहँनहिं तनछोहा
साधु कौन जाके उर दाया ❋ हरि ते विमुख करैसोइ माया
दुखसुखसमसबकालतितीक्षा ❋ किं विज्ञान विवेक परीक्षा

दो० हौं नहिंतनमनवचनबुधि जातिबरणकुलएक।
मैंहौं चेतन सबन में याको कहत विवेक॥
थावर जंगम सबन में जहँ तक जीव जहान।
समनरूप निश्चय भयो सोइ अनन्य विज्ञान॥
जीव ईशमें भेद किं यतनोइ अहै सदीव।
बद्ध दशा में जीव कहि मोक्षदशा में सीव॥

छप्पै॥ जोजानोचितरूपजीवतालहतकौनविधि। तौ सुनियेहेतात अविद्यावृक्षपरमनिधि॥ गुणसुपक्षबिनईश विहँगगुणपक्षचाहिजब। निवसततापैआइहोत गुणपक्ष

प्रकटतब ॥ यथावासना भ्रमतनितहैजीवत्वउपाधिइमि ।
ज्ञानकर्मकरिहोतहै मोक्षबन्धश्रुतिकहतइमि ॥

दो० जैसे महदाकाश ते घटाकाश को भेद ।
तैसे मिटे उपाधि के जीव ब्रह्म निरभेद ॥

श्लोक । सत्सङ्गोवासनात्यागोध्यात्मविद्याविचारणम् ।
प्राणस्पन्दनिरोधश्च मुक्तिद्वारं चतुर्विधम् ॥

पुरुषअयोगिहि ब्रह्मनदरसै ❋ बिनविरागजिमिज्ञाननसरसै
विरतिकहा विधिलोक प्रयंता ❋ काकविष्ठसम समझै अंता
भूत कहा भय धीरज धामा ❋ परम जाप किं जो ममनामा
चुगुलकौन परअवगुणखोलै ❋ मौनी वचन युक्तिते बोलै
पिताविवेक सुमतिसोइमाता ❋ हरिजनमिलनमोक्षसुखदाता
दुस्तर किं सबजनन दुरासा ❋ रारिमूल किं केवल हासा
पशु को जो बिनसुकृत रहावै ❋ बंधु विपतिमें काम जो आवै
श्रद्धा किं जोमुदित अवालस ❋ क्रियाबिषे दुखसहै निरालस
किंविश्वास गणै सुनि सांची ❋ तोषकौन निष्काम अयांची
निष्ठा किं करिये जहँ प्रीती ❋ लखिनअभाव होयविपरीती
रुचि किंरहित शोच सुखपाये ❋ भाव क्षमादिसकलगुणआये
आसक्ती किं प्रिय बिन देखे ❋ रुचतनकछुतनधनकिहिलेखे
भोजन किं जग तीनि प्रकारा ❋ उत्तम मध्यम नीच निहारा
मधुरमंजु मृदुसात्त्विक जानौ ❋ तिक्ततात रजगुणी पिछानौ
भक्ष्याभक्ष्य तामसिन केरे ❋ तिमि त्रैविधिके मनुजनिबेरे
पूजा तीनि भांतिकी हेरी ❋ प्रतिमा वैष्णव आतमकेरी
उत्तम आतम मध्यम साधू ❋ कछुकनिष्ठ प्रतिमाअवराधू
शान्तिसोकौनविकारविहीना ❋ निरअभिमान ज्ञानकिंदीना
वशीकरण किं कोमलबानी ❋ मारणमंत्र क्षमा बड़ जानी

जीव उभयकिं बंध विमोक्ता ※ सहितरहिय वासनाअसोक्ता
भाग्यसुवाम कुमति परकेरी ※ जगत मान्यता आशाबेरी
परिमल किंप्रणधन किंधर्म्मा ※ करणी बिन बादै बेशर्म्मा
ईश्वर सबपर प्रकृतिनियंता ※ बहुविधि कह्यो जानकीकंता
सुनिप्रभुवचन लषणहरषाने ※ बैठे पुनि निज जाइ ठिकाने

दो० रत्नमाल मतजालले भगवतगीता साथ।
रामगीत नवनीत यह वरण्यो जनरघुनाथ॥

सो० सुनि गुनि हैं जे जीव पैहैं परमानन्द ते।
पुनि महिमाके पीव करि हैं तापर अति कृपा॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतरामदण्डकवनआगमनप्रश्नोत्तरवर्णनोनाम
सप्तदशोऽध्यायः १७॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि।
वरणों मानसमतकछुक नाटक रीति बखानि॥
वीरासन शरचापगहि चहिचहुँदिशि सौमित्र।
लगेविचारन मनबिषे रघुपति वचन विचित्र॥
जनकनन्दनी सहित प्रभु परणकुटीके बीच।
राजतलाजत लखलखि रतिपतिप्रिययुतनीच॥
तेहि अवसर रावणस्वसा सुपनेखा तहँ आइ।
रामरूप मोहित वचन बोली गर्व बढ़ाइ॥

त्रिभंगीछंद॥ सुनिये नृपनन्दन सुर मुनि वन्दन मैं हौं राजदुलारी। निज सम सुखमाते पुरुष न ताते अबतक रहिउँ कुमारी॥ तुमका जब देखा कछु मनलेखा विधिकृत यहसंयोगा। त्यहिते निजदासी करु वनवासी जो चाहो वर भोगा॥ सुनिसियदिसिहसिकैकहप्रभुहँसिकै हैममअनुज

कुमारा । सिततनतिनकेरीहूजैचेरी सोइ संयोगतुम्हारा ॥
हस्तिनितियलायक शशाननायकदुखदायक सुखहरणी ।
पद्मिनिमोहिं वारौ निरस निवारौ नेति नेति प्रभु वरणी ॥
तब सो गई धरणिधर पासा * कहलक्ष्मण मैं उनकरदासा
भूपै वरणि कहैहौ रानी * नाहिंत जग टहलुई बखानी
यामें कौन सुयश सुख लाहू * त्यहिते महाराजपहँ जाहू
सुनिपुनि गई जहां भगवन्ता * तिनफिरिपठई पासअनन्ता
बोले लषण तोहिं सो ब्याहै * जो लोकौ परलोक न चाहै

दो० तब लजाइ प्रकटतभई निजविकराल स्वरूप ।
वदनखोह गिरिशृंगशिर नाककान जनु सूप ॥

बोली तुमदोउ साधु न अहऊ * परपत्नी घर घाला चहऊ
मोहिं देखि जो कीन्ह्यो हासू * सो फल तुम्हैं देवैहौं आसू
सुनिसिय सभय रामगे जानी * वेदवाद नभ कह्यो बखानी
गयेसमुझिलक्ष्मणततकाला * नाककान बिनु कीन कुबाला
हायहायकरि भवन सिधाई * रुधिरस्रवतगे जहँ सब भाई
बोली धिक तव वीर प्रभावा * तिनपूछा छलकरिसमुझावा

दो० सुनिखरदूषणक्रोधकरि असुरसहसदशचारि ।
लियेबोलिसँगसब चले अस्त्र शस्त्र भटधारि ॥

कज्जलगिरिसम जिनके अंगा * गर्जहिं तर्जहिं सहितउमंगा
बाजैं विविध जुझाऊ बाजा * अशकुनहोत न मानैं राजा
कोउकह धरिमारौ दोउभ्राता * लैलीजै ललना भलिबाता
कोउकहनिधनिनआईउनहीं * चुपरहिचहिदनुजेशनसुनहीं
यहिविधिवदतनिकटचलिआये * लक्ष्मणतेप्रभुवचनसुनाये
सीतै लै गिरिकंदर जाहू * आवाचढ़ि शिर निश्चरनाहू
लैसियलषणगये तिहिआगे * चापचढ़ाइ चले प्रभु आगे

जिमि केशरी द्विरद दलहेरी ❋ आइ लिहिनि बगमेलगरेरी
देखिअकेले अति सुखमाना ❋ बढ़े शमा पर जिमि परवाना
प्रभुछविदेखिछकितसबभयऊ ❋ खरदूषण मंत्रीते कह्यऊ

दो० ये कोउ नृपबालक अहैं नरवर रूप निधान।
अस शोभा भरिजन्म हम देखी सुनी न कान॥

सो० यद्यपि किहिनि कुकर्म तदपिनमारणयोगये।
जाइकहौ तुम मर्म देइँनारि फिरि जाइँ घर॥

आइ सचिव रघुपतिते काहा ❋ सुनत विहँसि बोले सुरनाहा
हम क्षत्री मन शंक न आनें ❋ कालहु ते सम्मुख रण ठानें
सुररंजन खलगंजन हेता ❋ विचरत हमवन त्यागनिकेता
जो तुम्हरे पति होइँ डराने ❋ फिरैं न हम रण हतैं पराने
दूतन खरदूषण ते भाखा ❋ बोला सुनि मारो करि माखा
धाये तब तमचर करि शोरा ❋ लखिप्रभु कीन चाप टंकोरा
भये बधिर पुनि धीरज धारा ❋ लगेविविध बरसन हथियारा
शर तोमर तरवारि त्रिशूला ❋ चक्रपरिघ पविशक्ति समूला
तिलसमान प्रभु काटिनिवारे ❋ निज नराच संधानि पवारे
जाइ असुरदल काटनलागे ❋ हाइहाइ करि भट बहुभागे
कोइकह खरदूषण मतिहीना ❋ इनते आइसमर ज्यहिंकीना
सुनिसकोप बोले तिहुँभ्राता ❋ फिरीजोत्यहिहौंकरबनिपाता
मरणजानि घूमैं अनुरागी ❋ चहुँदिशि मारुमारु रटलागी
देखि देव सब होइँ अधीरा ❋ निश्चर निकर एक रघुवीरा
रामबाण लागहिं खरभारी ❋ खंड खंड ह्वै गिरहिं सुरारी
शिरधरि धरौधरौ कहिधावैं ❋ गगनउड़ैं बहुभगन चलावैं
बहुमरिगे बहु करहत डारे ❋ बहुकहैं कहँ पितुमातु हमारे
बहुतन कंककाक शृगश्वाना ❋ भक्षत करत कटकटी नाना

अंत्रावलिगहि बहु नभ जावैं ❋ विपुलबालजनु गुड़ी उड़ावैं
भूतरु प्रेत पिशाच पिशाची ❋ खप्परभरे योगिनी नाची

सो॰ निजदलविचलनिहारि खरदूषणत्रिशिरादिभट।
अगणित अस्त्र प्रचारि प्रभुपर डारेएकसँग॥

रघुपतिसब निजशरननिवारे ❋ दशदशविशिख सबनकेमारे
कहिकहिराम तजे तिनप्राणा ❋ बिनश्रम पायो पद निरवाणा
क्षणमा सकल कटक संहारी ❋ सुमनवरषिसुरजयतिपुकारी
सीतालषणआइशिरनावा ❋ निरखिश्यामवपुअतिसुखपावा
तब सुपनेखा गइ जहँ रावन ❋ जनुदनुजनकी मौतभयावन
करिरोदन बोली तकिताही ❋ तोहिंजियतममअसगतिचाही
समुझिपरत अबरही न राजू ❋ नहिंदेखत निजकाजअकाजू

दो॰ सुनि अकुलानी सभा सब कहरावण कहुहाल।
केहिं काटे श्रुतिनाक तव काकर आयहुकाल॥

अनुजगिरासुनि बोलीवचना ❋ अतिअतर्कअवलोकीरचना
द्वै तपसी तपसी वन आये ❋ सुन्दरिसुन्दरि सुन्दरि लाये
हौंलखिहौंलखिहौंलखिबोली ❋ रामनयोग न रामन जोली

दो॰ सोकरि कानन कानि तव करी न करी न आन।
मोबिन कानन कान बिन करी सो करी न कान॥

खरदूषणसुनि लाग गोहारी ❋ क्षणमा तिन सब सेना मारी
त्रिशिरादिकवधसुनिदनुजेशा ❋ मनहुँ जरेसम भयो कलेशा
शूर्पणखै प्रबोधि बल भाखी ❋ भवनगयो विस्मय मनराखी
सुरनरअहि त्रिभुवनमहँसोई ❋ ममअनुचरे न निदरतकोई
खरदूषण मोहिंसम बलधामा ❋ तिन्हैं को मारै बिन श्रीरामा
जो प्रकटे सुरमुनि हितकारी ❋ तौ करि वैर तरौं भव भारी
तामसतन कछुभजन न बनई ❋ रामविमुखगति वेद न भनई

जिननाहिंनिजपरलोकसुधारा * तौत्यहिबुधिबल जनमेझारा

दो० जो नृपसुत कोउ आइ तौ हरिलेहौं तिन वाम।
चला अकेले यानचढ़ि गा मारीच के धाम॥
पूंछा करि सनमान त्यहि तातचलेहु केहिहेत।
कहीकथा दशमुख सकल सुनिबोला सिखदेत॥

सो० मुनिमखमेंम्वहिंराम बिनफरमारेउ विशिखयक।
शतयोजनयहि ठाम आयों छिनमा त्रिकलहै॥
खरदूषण करि वैर भे विनाश ताते सबल।
जो चाहौ कुल खैर तौ फिरिजाउ निकेत निज॥
सुनिदशमुखकरिक्रोध बोलाम्वहिंसमसुभटको।
गुरुइवकरत प्रबोध चलत न आई मीचुतव॥
करि विचार रविपाथ चलामुदितसँगमनगुणत।
मरौं न राघव हाथ चलामुदितमनसँगगुणत॥
भरिनयननछविभ्राजदेखिहौंप्रभुसियलषणकी।
तबहोई ममकाज जब बधिहैं मृगरूप लखि॥

दो० इत सियते कह राम तुम करो उगागिनि वास।
जबतक करि नरचरितमैं करौं न निश्चर नास॥

सो० स्वामि रजायसु पाइ वेदवती वपुराखि तहँ।
आपुहदागिनिजाइ कीन वास हरिपास नित॥

यहरहस्य लक्ष्मणहु न जानी * मायाधीश सकल गुणखानी
बैठे प्रभु सिय परणकुटीचा * आयो तहँ रावण मारीचा
हेमहरिण ह्वै निकसा आगे * लखि जानकी कह्यो अनुरागे
हे स्वामी मृग पकरहु पारी * नाहिंतबनी छालभल मारी
कहप्रभु हिंसा अघबड़ जाना * होनहारवश सिय हठठाना
भक्तवछलप्रभु धनुशरलीन्हा * आश्रमसौंपि शेषकहँ दीन्हा

अपना चले कपट मृग पाछे * आवतदेखि भाग सो आछे
तब शरसजि धाये रघुराई * थकनिनवनिचितवनिम्वहिंभाई
प्रकटतदुरत लखतछवि भूरी * लैगा इमि रघुवीरहि दूरी
तब प्रभु ताहि तहां तकिमारा * हाइलषण असआदिपुकारा
पाछे कहि हरुये सियरामा * तनुतजिगा मुनिदुर्लभधामा
इत सीता सुनि आरत बानी * बोली लक्ष्मणते छलजानी

सो० संकट वश तव भ्रात जाहु वेगि सुनि शेष कह ।
प्रभुइ न दुख कहुँमात तुम्हैं सौंपिगे किमि तजहुँ ॥
सुनिसिय वचन कठोर कहे लषणकहँ लषणतब ।
रेखखैंचि चहुँओर चले चकितचित रामपहँ ॥
सूनबीच लखि रावण यती स्वरूप बनाय ।
मांगीभिक्षा सुनत सिय लगी देन हरषाय ॥

बोला कुटिल बँधी यह भीखा * सो न लेब मैं मानो सीखा
माघशुक्लभूता दिन जानो * वृंदमुहूरत में पहिंचानो
भावीवश सिय बाहर आई * चरणवन्दिलै चला उठाई

दो० जीवज्योति तन में यथा अगिनि धूमके माहँ ।
तिमि रावण के करपरी सियस्वरूप की छाहँ ॥

गगनजातरथ विलपतिसीता * हा रघुपति हा नाथ पुनीता
हा करुणाकर हा रणधीरा * आरतहरण हरहु ममपीरा
हा बलसिन्धु लषणसुखदाई * परी तात गोमर कर गाई
कहे वचन कटु रेख मँभाई * सोक्षमिकरिम्वहिंलेहुछिनाई
तुम्हैं कलंक दीन बिन दोखा * ताकरफलपावा अतिचोखा
जेपतिवचन करहिं नहिंकाना * तेउ भरैं दुख हमैं समाना
हा पितु मातु दूरि तव धामा * भा केकयी केर अब कामा
पठैदेउ वनदेउ कृपाला * हरिपालिहि चहै बरा शृगाला

सीताकै सुनि आरत वाणी * भे सब विकल चराचर प्राणी
गीधराज जाना वैदेही * लीन्हें जात असुरपति तेही
चला कहत पुत्री धरु धीरा * नीच मीच मैं आयों तीरा
रे रे रावण सुनु मम बाता * तजिजानकिहिजाहुकुशलाता
नाहिंत सकुल नाश तव होई * सुनित्यहि काननकीन्योकोई
तबखग चपरि चोंच गहिकेशा * रथते महि पटका लंकेशा
सियनिजनिलयराखिफिरिआवा * अरिकरधनुशरकाटिगिरावा
चोंचचंगुलन तन बिदकायो * मुर्च्छितह्वैपुनिअसिलैधायो
पंखकाटि सीतैं लै भागा * तबखगमहिगिरिशोचनलागा
हमते कछु न बनी भलिबाता * पापै करत भयो वपुघाता
दशरथसमसुनि प्रेम न पाला * राख्योसियैनहठियहिकाला
भरत राममुख देखि न पावा * खलकरतबनहिंप्रभुइसुनावा
एकै बात भई भलि एहा * राम निहोरे छूटी देहा

दो० इतसियविलपतजातनभ नगपरकपिननिहारि।
दियेडारि निजभूषणन रघुपति नाम पुकारि॥
आगेलखि संपातिसुत गहिरथ दीन्ह्यो छोरि।
यहिविधिलावा लंक तब बोला सियै निहोरि॥
सुमुखि न शोचै नरनहित उनमें कौन प्रभाव।
पितुप्रेरित वनसहतदुख निरबल रंक न राव॥
अकुलअजातिकुजातिपतिगतिमतिरहितसभीत।
जटी कपाली प्रियप्रणत तव दोषिनकर मीत॥
नहिंजांनी क्यहिकर्म्मकरि परिउ नरनके हाथ।
अब जागे बड़भाग तव जो आइउ ममसाथ॥
हमसमसबल न शूरकोउ जेहिवशसुरमुनिसर्व।
त्यहिते मेरी भारया होउ त्यागि दुख खर्व॥

सुरकन्या कैयो सहस मन्दोदरी समेत।
ह्वैहैं तेरी टहलुई हौं सेवक कहि देत॥
सुनिसियशोच सकोचवश कछू न उत्तर दीन।
तबतेहिनिजऐश्वर्य्य सुख सकलदेखावैलीन॥
अधिकविकलभइजानकी विभवनीचकरदेखि।
यथा विरहिनी दुखलहै शरदचन्द्रमहिंपेखि॥

सो० पुनि बोला दशशीश देखे मम ऐश्वर्य्य प्रिय।
तबसीता करि रीश कहत भई तृण ओटकरि॥
सुनु दुष्टन शिरमौर बिन मराल सरहंसिनी।
निरखिकाककरठौर मुदितहोतकहुँ तिमिमहूं॥
सुनिसियवचनसरोषडरकरि विपिनअशोकमहँ।
राखिसिहितनिजमोष दुरिहविगयेखवाइहरि॥

इहांलषणमृगअरितहँ गयऊ * अनुजैलखि बोलतअसभयऊ
द्वादशवर्ष मास शर बीते * इहांरहत सिय तजी न रीते
आजु जनकतनया तुम खोई * कहालषण ममदोष न कोई
आश्रमदीखजाइ बिन सीता * भयेविकलजनु योषितजीता
इतउत हेरिहांकि हँसिबोली * आवहुनिकासिनकरहुठठोली
तुम्हरे कहा कीन मैं जाई * अब केहिकारण रहिउकुहाई
लषण अरोषलखी जब नाहीं * तबप्रभु मुर्च्छिगिरेमहिमाहीं
कतहुँ बाणधनु पट तूणीरा * लषण उठाइ किये यकतीरा
बोले नमि हे नाथ उदारा * सुरमुनि हेतु लियो अवतारा
ज्ञाननिधान सबल बुधिमाई * भूलत मूढ़ मनुजकी नाईं
बन्धुवचन सुनि धीरज धारा * बहुरि अज्ञ इव वचन उचारा
को बोलत लक्ष्मण तवदासा * हमको तुम राघव वनवासा
करतकहा ढूंढ़त प्रिय प्यारी * हाहा सीते जनकदुलारी

दो० कहालषण मिलिहैं बहुरि उठिढूंढ़ौं वनमाहिं।
धनुशरतरकससाजितन पूंछिचले सबपाहिं॥
हे हरिकरिकुजद्रुजअखिल सबपरमारथरूप।
तुम देखी ममप्रीतमा देहु बताय अनूप॥
हे सीते जेहि नेहकहि तजिपितु आरज गेह।
हठिआइउममसाथअब कहाकियो सोइ नेह॥
भृङ्गजलज शुककुंदपिक करिहरिश्रीफलकेर।
मुदितमनहुँ अरिजीतिकिन हरौमान इनकेर॥
यहिविधिखोजतकुंजवनगणगिरिगुफातड़ाग।
गयेजटायू खग जहां शोणितलखि दुखलाग॥

आगेपरा गीधपति चीन्हा * हापितुहाकहि उरधरिलीन्हा
पूंछाहाल सकल तेहिकाहा * म्वहिंवधिसियलैगाखलनाहा
रहे प्राण तव दरशन हेता * चलनचहतअबक्रपानिकेता
सुनिप्रभु पद्मनयन जलढारी * बोले पांसु जटाते झारी
हेसौमित्रआइ तिनशरणा * म्वहिंलखिपर्‍योनपितुकरमरणा
सहिऩसक्योसोआजुविधाता * पक्षिपत्तलखिकीन्हिसिघाता
पुनि कह तात राखिये देहा * बोला तब खग सहितसनेहा
कृपासिन्धु तुम शीलनिधाना * मोहिंखगखलहिपितासममाना
असतुम तेहि न भजै नरजोई * महामूढ़ हतभागी सोई
जासुनामअगणितगतिदाता * कसनमरहुँ तिनके कर ताता
चारिउफल न मरणसम मोरे * असकहिमुदितप्राणनिजछोरे
रामरूपह्वै अस्तुतिकीन्हीं * अविचलभक्तिमांगिसोइलीन्हीं
कहप्रभु सियाहरण पितुतेरे * कह्यो न दुख होई सुनु मेरे

दो० तुम्हरे पुण्य प्रतापते कछु दिनमें रिपुमारि।
सकुलपठइहौंआइसोइ सुमुखकहीविस्तारि॥

भले नाथ कहि नाइ शिर प्रभु मूरति उरराखि।
चल्योगगनलखिसुमनसुर वरषेजयजयभाखि॥
पितुज्योंदीन्ह्योधाम निज मृतककर्म्मसबकीन।
ऐसे प्रभुइ बिसारि मन तैं चाहै सुखलीन॥
सहितशोकसियकीसुधिश्राई * बोले लक्ष्मणते अकुलाई
यावत मैं यदि जीवत ताता * तावत जीवत विश्वलखाता
नाहिंत सुरनर असुरसमेता * करिहौंभस्मअखिलजगजेता
सुनिप्रभुवचनसभयभवकाँपा * लागे होन अरिष्ट अमापा
सहितशंकलक्ष्मणगहिचरणा * बोले अहो दीनदुखहरणा

कुं० मान्धाता इक्ष्वाकु इभ भागीरथ नृप माथ।
रघु दिलीप अज आदिदै यावत तव पितु नाथ॥
यावत तव पितुनाथ लोक तिहुँ तनय समाना।
पालतआये सदै सुयश सकलौ जग जाना॥
तिन कुलकीरति वर्द्धहित प्रकटे आपु सुजान।
सोकिमिजरिहौजगअखिल निरपराधश्रीमान॥

सो० बन्धुवचनसुनि राम लज्जितह्वै लखिलषणकहँ।
लियेलाइ निजधाम बोले पूरब देखि शशि॥

कुं० लषणतकहु तरु उये रवि नाथ मलिन है चन्द।
निजकुलके अकलंक ते तरणितेज भो मन्द॥
तरणितेज भो मन्द कमल नहिं फूले ताता।
अहो मित्र दुख दुखी खिलै कैसे जलजाता॥
अहैंनखतप्रफुलितकुमुदशत्रुविपतिलखिहँसतमन।
पुनि न दीनउत्तरचले घनतरुतररघुपतिलखन॥

यहिविधिप्राकृतमनुजसमाना * ढूंढ़त कीन्ह्यो पुरः पयाना
मिलाविराधताहि गतिदीन्हीं * चलेबहुरि शबरीसुधिकीन्हीं

पूछत फूलभरे मुख तेरे ※ निवसतबड़भागिनिकेहिसेरे
जासुभजनबल वनसुखदाता ※ करबदेखितेहि शीतलगाता
इहांप्रातशबरीजबजागी ※ लखिशुभशकुनसमुझिअनुरागी
रामलषण प्रियपाहुन मोरे ※ ऐहैं आजु अनुजयुतजोरे
ब्रह्मादिक पूजितपद पूजी ※ मोसम को बड़भागिनिदूजी
लहिहौंहौंप्रभुप्रभुनिजबाना ※ दोउदिशिलाभनलाभसमाना
दोननराखि कंद फलफूला ※ चितवतअम्बसरिसअनुकूला
छिन द्वारे छिन भीतर जाई ※ प्रीतिपरखि पहुँचे दोउभाई
शबरी देखि परी तब पांयन ※ सनमानी प्रभु मासमचायन
आश्रमआनि पूजि जसरीती ※ दियेरुचिरफलदलकरिप्रीती
लगेखान प्रभु पुलकितगाता ※ स्वादसराहि सराहि न जाता
मांगत देत देखि सुरसन्ता ※ वरषिसुमनकहिजयभगवन्ता
त्रिभुवननाथ नरेश कुमारा ※ पावतफलतजि अस अपारा
अस विचारि रघुनाथअरूखे ※ जान्यो राम प्रेमके भूखे
अँचैउठे तब शबरी बोली ※ हाथजोरि दोउगिराअमोली
नाथरहिउँ मैं अवगुणखानी ※ कीन्ह्यो तुम मुदमंगलदानी

दो० कहप्रभु तैं निज कर्म ते भई श्रेष्ठ जग बीच।
जोनभजेममचरणप्रिय सोइशमलीसोइनीच॥
शबरीके सुनि मुनिनिकर आये ढिग अनखाइ।
पूछेउ सरवर शुद्धकिमि होइ कहो रघुराइ॥
कह प्रभु पावन पुरुष को परसि कीन तुम रोष।
गयेस्वच्छहित स्वच्छहु भयो रुधिरतेहिदोष॥
अबते शबरी के चरण धोय तोय ता मध्य।
देउलेउ पावित्रपुनि करत भयो शुचि मध्य॥

सो० ऐसो प्रभु को और जो निज लघुता दासकी।

करैकीर्ति सबठौर तब हरि शबरी ते कह्यो ॥
अबसुधि सीताकेरि कहिये करिगामिनि सुखद।
सुनिशबरी मुखहेरि कहेउ जाउ पम्पासरहि ॥
तहँ मिलिहैं सुग्रीव करेउ मिताई तासुते।
सो हितकरी सदीव मिलिहैं इमिसीतातुम्हैं ॥
यहिविधिबदिसबहाल रामधामगइत्यागितनु।
तेहिकीक्रियाकृपाल कीनयथोचितजननिजिमि ॥

गीतिकाछन्द ॥ जिमिजननिकीगतिकरैकोउतिमिराम शबरीकीकरी। अस और कौन कृपालुस्वामी शरण जाकी अनुसरी ॥ प्रभुकहतशबरीकेरयशसहप्रीतिपंपासरगये। मनमुदितमज्जनकीनशोभानिरखिमुनिहरषतभये ॥

दो० भये मुदित मुनिवृन्दतहँ मिलेदेवऋषि आइ।
पूछिनि प्रभुते मोहनिज रामकहा समुझाइ ॥

सो० सकल दोषदुखदानि जानिहरयो अभिमानतव।
सुमुखिशोककी खानि तेहितेलिहेउबचाइपुनि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतआरण्यकांडसम्पूर्णनामाष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथविश्रामसागर

किष्किन्धाकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं कोकिलमतकछुक बृहदचरित्र बखानि ॥
नारद अविचल भक्तिवर पाइ चले हरषात ।
तब सानुज रघुवंशमणि रीकमूक भे जात ॥
सबलपुरुष सुग्रीव लखि डरि पठये हनुमान ।
द्विजह्वै पूछा जाइ निजु हाल कहा भगवान ॥

सो० सुनि मारुतसुत बैन प्रभुइ चीन्हि चरणनपरे ।
लाये कपिपतिऐन मुदित भये सुग्रीव लखि ॥
कीन मित्रता भाव जनकसुताकी बात सुनि ।
सियभूषण कपिराव दिये लिये उरलाय प्रभु ॥

कह्यो लषणते चीन्हो ताता ❋ सुनिसौमित्रि कही वरबाता
कंकणकुण्डल में नहिं जानौं ❋ नूपुर नित पदवन्दन ठानौं
प्रभुइदुखितलखिकह्योसनेही ❋ तजहु शोच मिलिहैं वैदेही
हरषिप्रीतिहरि हरिपतिपाहीं ❋ तुमक्यहिहेतु बसहुवनमाहीं
तब सुग्रीव कहा सब हाला ❋ ज्यहिहितबालिवैरप्रतिपाला
सुनिबोले अवधेश कुमारा ❋ मैं मरिहौं रण शत्रु तुम्हारा
मित्र मित्र दुख दुखी न होई ❋ वदत वेद शुचि सखा न सोई
सुनि सुभाय बोले कपिनाहू ❋ बालिबली वधयोग न काहू

अस्थिदुन्दुभी कर समूहा ❋ महा कठिन लागे दशबूहा
तिन्हैं एक शर बेधै जोई ❋ मुनिवर बालिहि मारै सोई

दो० दूसर दुन्दुभि निधन सुनि इन्द्रतालफलसात।
पठये होइहैं सप्तदिन अजर अमर इन खात॥
नारद आय बालि कहँ दीन्हे गहन मँझार।
महिधरि लगे नहानसो करिगा भुजँगअहार॥

हरिसुत लखि बोला वचनेहा ❋ सात ताल जामैं तवदेहा
कह भुजङ्ग जो हमैं उबारी ❋ त्यहिनिशिनाथतुम्हैंसोइमारी
सर्पाकृत सो ताल विशाला ❋ को यकबाण ढहावन वाला
तीसर वर बासवकर साधा ❋ रिपुबलसम्मुख पावतआधा
यहिते बालिवधन के माहीं ❋ आवतम्वहिंप्रतीतिप्रभुनाहीं

दो० हँसिबोले भगवान तब चलौ दिखावो मोहिं।
बेधि गिरावों सुशरज्यहि निश्चय आवे तोहिं॥

भले नाथकहि प्रभुइ लवाई ❋ दीन्हेगिरिसमआस्थदिखाई
बेधे सकल एकही बाना ❋ दशयोजनशिरराखिसयाना
नभ महितल सबतीर्थ नहाई ❋ रामतूण प्रविशे पुनि आई
तब सुग्रीव देखाये ताला ❋ सर्पाकृत सबढहे कृपाला
छूटिभुजङ्ग चला जयभाषी ❋ वरषे देव सुमन अभिलाषी

दो० प्रभुप्रभावबलबिपुललखिकपिपतिप्रीतिबढ़ाइ।
निश्चय भइ वध बन्धुहित बोला पदशिरनाइ॥
सुनोनाथ तव कृपा ते मिटे सकल मम शोक।
शत्रुमित्र दुखसुखसमधि मनकृतनहिंपरलोक॥

त्यहिते त्यागि मोह मदमाया ❋ भजबसदा तवपद रघुराया
बालि हमार परम हितकारी ❋ मिलेआइज्यहिआपुअघारी
मोहितवचसुनि कहेउखरारी ❋ मृषाहोत नहिं गिराहमारी

तबसुग्रीव जाइ पुर गरजा * चला बालिसुनि तारा बरजा
रामाश्रित सुग्रीव न जाहू * कहहरिसुतसबविधिमोहिंलाहू
असकहि आवा अर्कज तीरा * भिरे क्रोधकरि दोनों बीरा
बालि बृहद विधु मुष्टिकमारी * विकलभाग सुग्रीव पुकारी
मैं जो कही केशव तुमपाहीं * बालि मोररिपु सोदरनाहीं
कहप्रभु तुमयक समदोत्र्प्राहू * त्यहिभ्रम मैं मारा नहिं काहू
कृपादृष्टि तकि तुदन मिटावा * सुमनमाल पहिराइ पठावा
चैत्र चतुर्दशि सितचितचाँड़े * भिरेबालि भुज पुनि पुरडाँड़े
विविधयतनकरि जूभतजोटा * प्रभुपेखत ठाढ़े तरु ओटा
जाना जब सुकण्ठ हियहारा * साधि बाणवर बालिहिमारा
गिराभूमि व्याकुल ह्वै वीरा * तब राघव चलिगेत्यहितीरा
प्रभुइविलोकिसुदितउठिबैसा * बोला वचन क्रोधयुत जैसा

दो० राम तुम्हार प्रभाव बल मैं घर सुना अपार।
देखा कर्म्म किरात कर कारण रहित विचार॥

सो० म्वहिंमिलत्योयहिरीतितुरतमिलौत्योंआनिसिय।
करिकादरते प्रीति मारेउ बिन अपराधम्वहिं॥

कहप्रभु हम निरबल के सङ्गा * अभिमानीढिगजाहिं न बङ्गा
शरणपाल कुलरीति हमारे * बधातोहिं छिपि शीलकेमारे
अनुजवधू कीन्हे निज घरनी * त्वहिंसममूढ़ पतितकोबरनी
प्रभु अजहूँ अघ बने हमारे * अन्त कालभे दरश तुम्हारे
सुनि कृपालकह राखौ देहा * अकनिबालि बोला सहनेहा

दो० जासुनाम जपि जीव जड़ तरैं करैं मुनिध्यान।
ते तुम मम आगे खड़े कहत राखु निजप्रान॥
केहि सुखसम्पति लागिअब राखौं सरल शरीर।
सुरतरु खनि रूँधै बबुर को अस शठ रघुवीर॥

त्यहिते अब जैहौं हरिधामा * पर यह वर दीजै अभिरामा
कर्म्माधीन जहां मैं रहऊं * तहँ तवचरण नेह निरवहऊं
अंगद ममसमान बलवंता * त्यहिकीजै निजदासअनंता

सो० प्रभुपद शीशनवाइ बालिगयो हरिधामतब।
पुरजनसुनिदुखपाइ आये जहँकपिपतिमृतक॥
तारा शिर उरराखि लागी इमिरोदन वदत।
मैंजोरही पतिभाखि मान्यो सीख न कालवश॥
राम विकल त्यहिजोइ बोले करहु न शोच प्रिय।
मिलिबिछुरतसबकोइ आपुअकेल न संगकोउ॥
मातुमही पितुशालि कालकृषी करसरसमुझि।
बोइ प्रथमपुनिपालि लूनिखातब्रह्मादि सब॥

असविचारिसोचतनहिंज्ञानी * कर्म्माधीन देहगति जानी
सबदिनयकथल्लबसत न कोई * पथिक मेघइव संगतिहोई
भूमि बिकार घटादि यथाई * उपजत विनशतवपुषतथाई
रहत एकरस धरणी जैसे * जीवअनित्या होत न तैसे
जो यह भेद न नीके जानै * सो देहादिक सत्य प्रमानै
तासुवियोग योग जब लहई * संसृतपरि भुगतै दुख सहई
ईशकृपा जब होत बिशेखी * नित्यानित्य परत तब देखी
नित्यवस्तु भगवत सनबंधी * औरसकल ममता मतिबंधी

सो० इमिबहुदीन्ह्यो ज्ञान बोधभानु प्रकट्यो तुरत।
मिटातिमिरअज्ञान लिहेसिमांगिहरिभक्तिवर॥

तब सुग्रीव रजायसु पाई * मृतककर्म्म सबकीन बनाई
प्रभुलक्ष्मणहिंकह्योसजिसाजा * करिआवहु सुग्रीवहि राजा
जायलषण पुरलोग बुलाये * विप्रमहाजन चलिसबआये
राजतिलक सुग्रीवहि दीन्हा * बालिसुतहि युवराजाकीन्हा

सबविधि सबै सीखदै धीरा ॥ सहसुकंठ आये प्रभुतीरा
ढिगबैठाइ दीन उपदेशा ॥ जाहुभवनतजिसकलअँदेशा
मैं सहबंधु शैलपर जाई ॥ रहिहौं भरि वरषा तहँ छाई
तुमयुत अंगद कीज्यो राजू ॥ दीज्योजनि बिसारिममकाजू
भलेनाथ कहि निलयासिधाये ॥ राम प्रवर्षणगिरि पर आये
प्रथमसुरन रचि कंदरराखे ॥ रामरहनहितचितअभिलाखे
जबते प्रभु प्रविशे तहँ आई ॥ सकलसौंज सुखसंपति छाई
नानारूप बिरचि मुनिदेवा ॥ करहिंसदा रघुपतिकी सेवा
संततहोय सुभग सतसंगा ॥ संशय समाधान बहुरंगा
निगमागममतविषयपदारथ ॥ कहतसुनत समबोधयथारथ
प्राविट काल कंद नभ घेरे ॥ गर्जत चलत पवनके प्रेरे
जनु रविते बासव महिबोरा ॥ द्वै ठान्यो संगर अतिघोरा
की पावसऋतु रवनि नवीली ॥ प्रभुइ रिझावनचलीछबीली
की संवत की तरुण अवस्था ॥ कीअवनीकी अम्ब बिसस्था
राम अनुज ते ताकी करणी ॥ कही जगतजीवन परबरणी
शरद सुन्दरी सुमति समाना ॥ आइ प्रकाशी पंथ प्रमाना
गुणततासुगति मतिबिसराई ॥ वदतबंधु ते मोह जनाई
तातकत वरषाऋतुनासी ॥ सियसुधिकछुनमिलीकटुखासी
जियतबियतकैस्योसुधिपावों ॥ बलकरिवयहिजीतिमहिलावों
जिनममहितसुखसकलबिसारे ॥ तिनबिनहमकिमिहोइँसुखारे
सुग्रीवहु कहि काज बिसारा ॥ पाइ राजपुर सम्पति दारा

दो० जोहमहूं अबबदलिकै बधी बालिसम ताहि ।
तोसुनि सब मूरखहमैं कहैं न सके निबाहि ॥
विरहवचनसुनिलषणतब तमकिलीन धनुबान ।
लखिप्रभुपुनि परबोधिकै पठयो कृपानिधान ॥

इत हनुमान विचारकरि कहसुकपठते जाय।
रामकाज लहिराजसुख दीन्ह्यो तुम बिसराय॥
सुनिसुकपठडरि यों कह्यो विषय हरो ममज्ञान।
अबते पठवहु दूतते लैआवें कपि आन॥

सो० कह अंगद यह काम हनुमानै ते होइहै।
नाहिंत दूरि मुकाम चलेतुरत सुनिपवनसुत॥

पारियात्रगिरि प्रथमहिंगयऊ * गवगवात्त ते भाषत भयऊ
रामकाजलगि मरकट नाहू * बोल्योबेगि सहितदलजाहू
सुनिकपि असीशंकुशतसाता * लैसँगचले सुभट हरषाता
पुनिरेवत कदली वन आये * दुर्द्दरगज ते वचन सुनाये
सातपद्मकपि असी करोरी * लै दोउचलेतुरत हरि ओरी

दो० पुनि पहुंचे बलवीरके सुनिकपि तेइसलाख।
साठिसहसशतसंगलै चले करत अभिलाख॥
धुन्धमालगिरि पुनिगये मिले शिखंडी नाम।
सुनिकपिछप्पनकोटिलै चले कहत जय राम॥
पुनि पहुंचे अर्जुनीगिरि कुमुदै दीन हुकुम्म।
कपि सत्तासीलाखलै गवन्यो चारि पदुम्म॥
पुनिचलिआयो नावगिरि मिले नील बलवंत।
सुनि कपि षोड़श खर्बलै चले बहुरि हनुमंत॥

सो० बद्री परबत जाय गन्धमदन ते सब कह्यो।
सुनत चले हरषाय लैसँग गेरह अर्ब कपि॥

पुनि पहुंचे अर्जुनगिरि जाई * ताराबखत चले सुधिपाई
नब्बेलाख सतासी कोटी * संग सकलमरकट मतिमोटी
पुनि सुमेरुपर्वत पगुधारा * मिलेकेशरिहि हालु उचारा
सुनिदशकोटिलाखनवकीशा * लैसँगचले सहस षटबीशा

पुनिकैलास पुलिंदैकह्यऊ ❋ जयअरुविजयअंडसुधिलह्यऊ
सत्रह शंकुकोटि यककोरी ❋ चयकपिचले चाहनहिंथोरी
पुनि विन्ध्याचल भूधरआयो ❋ बाणवसंत सुनत सुखपायो
हरिहर कोटि सहस्रसतलैके ❋ चलेचपल चित चंचलकैके
तड़पेबहुरिविजयगिरिगयऊ ❋ मिलिरतिमुखतेभाषतभयऊ
आठ पदुम नौसै इक्यासी ❋ लै कपिचले सहितसरमासी
कूदे बहुरि कासगिरि पावा ❋ मुदमयंद ते हाल सुनावा
तिनकपिपदुमकोटियकलीन्हे ❋ चलेसपदिप्रभुपदचितदीन्हे
जामवंत भूधर पुनि गयऊ ❋ जामवानसुनि सांगत भयऊ
धूमकेतु निज सोदर तेरे ❋ बाण वृन्द वसुशंकु सुडेरे
छप्पनकोटि अपरमरुलाषा ❋ लैसँगचले भालु करिमाषा
पुनिधवलागिरि आइविधाता ❋ बरणी सकल द्विविदते बाता
एककोटि कपि लाख पचीसा ❋ गवने संग सूमलै तीसा
पुनिउदयाचलपनसयलहेऊ ❋ सर्वासर्व शल्य ते कहेऊ
अर्बुद आठपदुम मुनिलैके ❋ मरकट चले चहूं चित दैकै
यहि विधिसबै बुलाइ कपीशा ❋ आइ सुकंठै नायो शीशा
यहमैं गिनती जौनगनाई ❋ बृहद रमायण महँ सो पाई
बालमीकिमुनिपुनिकछुजानी ❋ युद्धकाण्डमें कह्यो बखानी

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतसुग्रीवमित्रतारामप्रवर्षणनिवासवर्णनोनाम एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
सर्व रमायण केरमत जो सो कहौं बखानि ॥

पवनतनयजहँजहँकहिआयो ❋ किह्योसोसुनिसुकंठमनभायो
त्यहिअवसरलक्ष्मणतहँआये ❋ देहु जारिपुर बचन सुनाये

डरे लोग सुनि बालिकुमारा * आइ पांइपरि क्रोध निवारा
सुनि सूरजसुत उठे डराई * हनोमान ते कह्यो बुझाई
तारासहित शेषपहँ जावो * करिप्रबोध मंदिर लै आवो
भलेईशकहि शीश नवाई * बिनतीकीनि लषणकी जाई
ताराहँसि बहुवचन सुनाये * करि सनमान भवनलैआये
मिले सुकंठ सप्रेम प्रवीना * चरणपखारि वरासन दीना

दो० कहालषण सियकेरि सुधि लीन चाहिये भ्रात।
बोलि पठाये विपुलकपि आवन चाहत तात॥
असकहि शिबिकारूढ़ ह्वै आये जहँ रघुवीर।
बैठे जनु कैलास पति सोहत श्याम शरीर॥

सो० देखि नवायो माथ हाथजोरि करि विनयवद।
तव मायावश नाथ जीव सदा भरमत फिरत॥
विषय विवश मुनिदेव मैं पशु कपि कामीमहा।
कीन्हेबिन तवसेव मिटत न इन्द्रीजनित दुख॥

सुनि प्रभु बैठायो सनमानी * सियसुधिलीनचहीसुखदानी
ज्यहिहितत्यागिजालतनुराखा * सोनभईअबतकअभिलाखा
त्यहिअवसर आये कपियूथा * नानावर्ण विशाल वरूथा
शीतोरक्त विसंगम नीला * करधुर थूलाथूल धुमीला
साततालसम पृथुल कराला * जिन्हैंविलोकिलहैभयकाला
सब कपियुद्ध विशारद वीरा * स्वामी हितकारक रणधीरा
मिलिलँगूलपतिआयसुदीन्हा * सबनप्रणाम रामकहँकीन्हा
भयेछकितछविनखशिखदेखी * धन्यभाग्य अनुरागविशेखी
राम कुशल बूझी सबकेरी * बोले तब सूरजसुत टेरी
सुनहुसकल मरकटममबाता * जाते जीव केरि कुशलाता
जपतप दान ज्ञान बहुकरई * बिनहरिभजननभवनिधितरई

दो॰ विद्या बुद्धि विवेक वित धर्म कर्म भल सोइ।
अन्तर्यामी रामप्रभु जाते परसन होइ॥
मुख भुज कटि पदते भये बरणाश्रम हरिसूत।
जो न भजै त्यहि चारिमहँ त्यहि जानिये कपूत॥
बरणाश्रम ते भ्रष्ट है सोइ परत भ्रम कूप।
पुनिपावत यमयातना निज अघके अनुरूप॥
असविचारि छल छांड़िकै करहु रामकर काम।
मासदिवस महँ आयहू लैसियसुधि अभिराम॥
आई अवधि बिताइजो सो पाई बड़ दण्ड।
गवगवात्त ते कह्यो तुम जावो पूरब खण्ड॥

भले नाथ कहि माथ नवाये * सातपद्म कपिपाइ सिधाये
तारा बखत सुखेन मयन्दा * कह्यो जाहु उत्तर सहनन्दा
गेरह पद्म कीशलै साथा * खोजतचलेविपिनगिरिपाथा
पुनि वसंत शत वीर बुलाये * कह्योजाहुपश्चिमाहिं सिधाये
सोरह कोटिकीश लै भारी * तब अंगद ते कह्यो हँकारी
जामवन्त हनुमत नलनीला * सबदक्षिणदिशिजाहुसुशीला
दशकरोरि वानर सँग लैकै * चलेसकल प्रभुपद चितदैकै
हनूमान जब नायो माथा * कर मुद्रिका दीन रघुनाथा
कहिनिदिह्योसीतहिसहिदानी * फिरयोबेगिममविरदबखानी
सुनि प्रभुवचन चले शिरनाई * ढूंढ़त गिरिवनकपि समुदाई
वज्रदंत दानव यक आवा * अंगदत्यहिरणमारि गिरावा
मगमें तृषित भये कपि भारी * विवर देखि प्रविशेहित वारी
भवनएक तहँ विना निकासू * बैठि वाम तपपुंज प्रकासू
सबहिनजाइ ताहि शिरनावा * बूझे ते वृत्तांत सुनावा
सुनिबोली फलदलजलखाहू * खातभये सब सहित उछाहू

पुनि आये जहँ तापस बाला ॥ तबसो कहतभई निजहाला

कुं० हेमाप्सरा की सखी हौं स्वयंप्रभा ममनाम।
हरिआनी मय स्वर्ग ते दुरिराखी यहि ठाम॥
दुरिराखी यहि ठाम इन्द्रसुनि लैगयो ताही।
मैं रहिगइ यहिअयन राखि राघवमनमाही॥
मनमाहीं प्रभुराखि नाम सुमिखों नितनेमा।
अब कारज ह्वैगयो भयो पारस मिलि हेमा॥
अबतुम मूंदहु नयन निज जाहु विवरके पार।
मैं जैहौं रघुवीर पहँ सुनि झांपे दृग तार॥
सुनि झांपे दृग तार लखैंतो सिन्धु किनारे।
आपु गई प्रभु पास बहुरि बद्री पगुधारे॥
यहांविचारहिंकीशमिलिबादिहिबीतीअवधिसब।
मिलीनसीताकेरिसुधिसमुझिपरतभइमीचुअब॥

सो० सुनिकपिशनके बैन निकसाकहि सम्पातितब।
मिलाअशन निज ऐन देखि पराने कीश सब॥
कह अङ्गद अनुरागि धन्य जटायू सम न कोउ।
राम हेतु तनु त्यागि गा हरिपुरहै धृग हमैं॥
अनुजनामसुनिसोइठाढ़किहिसिकपिशपथकरि।
जामिउठे परदोइ मार्ग असित दशमी दिवस॥
निजगति बरणनकीन जरेपंख जिमिज्यहिभये।
पुनिसियकी सुधि दीन हैरावणपुर विटप तर॥

असकहिगीधगयउनिजगेहा ॥ तबसबकपिन भयो संदेहा
शतयोजन सागरहित तरना ॥ निजनिजबलसबकाहूबरना
पारजानहित सकल सकाने ॥ जामवन्त तब बचनबखाने
हे हनुमान ज्ञान गुण धामा ॥ होई यह तुमहीं ते कामा

तातै निजबल अतुलसँभारो ✽ हमसबकी जनिबाटनिहारो
सुनिहनुमंत हर्षउर लीन्हा ✽ तेरह योजनकर तनु कीन्हा
बोले ऋक्षपते सुनि लीजे ✽ काअबकरों तौनि सिखदीजे
कहौ रावणै आवों मारी ✽ कहु लैआवहुँ जनकदुलारी
इतनी बात करहु तुम ताता ✽ सीतहिदेखि कहौ कुशलाता

गीतिकाछंद ॥ कुशलातश्रीसियकेरितातसुनाइयेसुधि आइकै। ज्यहिजानिराघव कोशलै गढ़लंकघेरैं जाइकै॥ करिसमरमारहिं रावणहिं सुरसाधुबन्दि छुड़ाइकै। भव सिंधु तरि हैं जीव जड़ यहसुयशसुनि अरु गाइकै॥

दो० सब रामायणके बिषे देख्यो जौन विचित्र।
सोई जन रघुनाथहू बरण्यो कछुक चरित्र॥

इति श्रीविश्रामसागरसकलमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतकिष्किन्धाकांडसम्पूर्णनामविंशोऽध्यायः २० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर

सुन्दरकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरु गणप गिरासुखदानि ।
कहौंआदिकविकहनिकछु नाटकरीति बखानि ॥
जामवन्त के वचन सुनि हनोमान बलवान ।
चलेलंककहँ हरि दिवस जिमि रघुपतिको बान ॥
सुरप्रेरित बललखनहित सुरसहि रोंक्योआइ ।
बदनपैठि पुनि निकसिकै चल्यो आशिषापाइ ॥
राहुजननिरहि सिंधुमहँ गहि खगकरै अहार ।
सोइछललखिहनुमानत्यहि मारिभयेदधिपार ॥
शिवाशापयुत शैलपर गयो भयो नहिं बाल ।
यहनहिं प्रभुताप्लवँगकी प्रभुप्रतापवशकाल ॥
सो० गिरिचढ़िदेखीलंक अतिविचित्र मुनिमनहरनि ।
फिरत असुर बहु बंक चहुँदिशि रक्षाहेतुपुर ॥
करि विचार कपिशेश दण्डरारिवपुधारि तब ।
निशिगढ़कीनप्रवेश लखिबोलतभइलंकिनी ॥
जानतम्वहिं न अयान ममअहारहै लंककर ।
सुनि मुष्टिकहनुमान हनतमरीभइ दिव्यवपु ॥
कहत भई करजोरि भयो सत्यवर ब्रह्मकर ।
जाहुनगरभयछोरि सुमिरिरामपदकपिचल्यहु ॥
सब घर हेरे पौन कतहुँ न देखी जानकी ।
गये दशानन भौन अतिविचित्र पुष्पकजहां ॥
दो० सर्वकामप्रद सब रतन सर्वकाल ज्यहिमाहिं ।

सर्व सौज देखत बनै बरणि जात सो नाहिं ॥

तहँ निशंक दशमुखे निहारा ❋ सोइगयो कल करत विहारा
चौदहसहस सुनाग कुमारी ❋ जहँतहँ कनकलतासी डारी
देखिभयो हनुमानहिं शोचा ❋ नाहकहरिसिजानकिहिपोचा
अबते देइ पठै जो सीता ❋ तौन होइ यहि पुरते रीता
रामकाजलगि सब त्रियदेखी ❋ जनकसुता सो कतहुँ न पेखी
पुनिगे भवन विभीषण केरे ❋ रामायुध तहँ अंकित हेरे
तबलागे मन करन विचारा ❋ जागि विभीषण नामउचारा
भयोमुदित कपि सज्जनजानी ❋ यहितेमिले न होइहै हानी
लागे कहन रामगुण धीरा ❋ सुनत विभीषण आयो तीरा
पूछाहाल पवनसुत भाषा ❋ इउदिशिभइपूरणअभिलाषा

दो० कह्यो विभीषण जोरिकर कबहुँक श्रीरघुनाथ ।
करि हैं कृपा कृपायतन जनपर जानि अनाथ ॥
तामसतनुकछु भजननहिं नहिंपदकमलसनेहु ।
बिन हरिकृपा न दरश तव भयो भरोसोयेहु ॥
कहकपि परमकृपालुप्रभु सचिवकिये कपिभाल ।
बाक न बुद्धि न रूप कुल तोषहेतु तिहुँकाल ॥

सो० ऐसेप्रभुहिबिसारि कस न परहिं नर निरयमहँ ।
सुनतभयो सुखभारि पुनिपूँछ्यो कहँ जानकी ॥
दीन्हीयुक्ति बताइ गे अशोकवन विशदजहँ ।
कनकविटप समुदाइ नानाचित्र विचित्र फल ॥
खोजत खसत प्रभात गये शिंशपा विटपतर ।
बैठी जहँ जगमात मनहुँ विरह मूरति धरे ॥
देखि नवायो शीश मनहीं मन रहे बैठि तरु ।
त्यहिअवसरदशशीशअगणिततहँसँगसुमुखिसब॥

अशोक वाटिका में सीता।
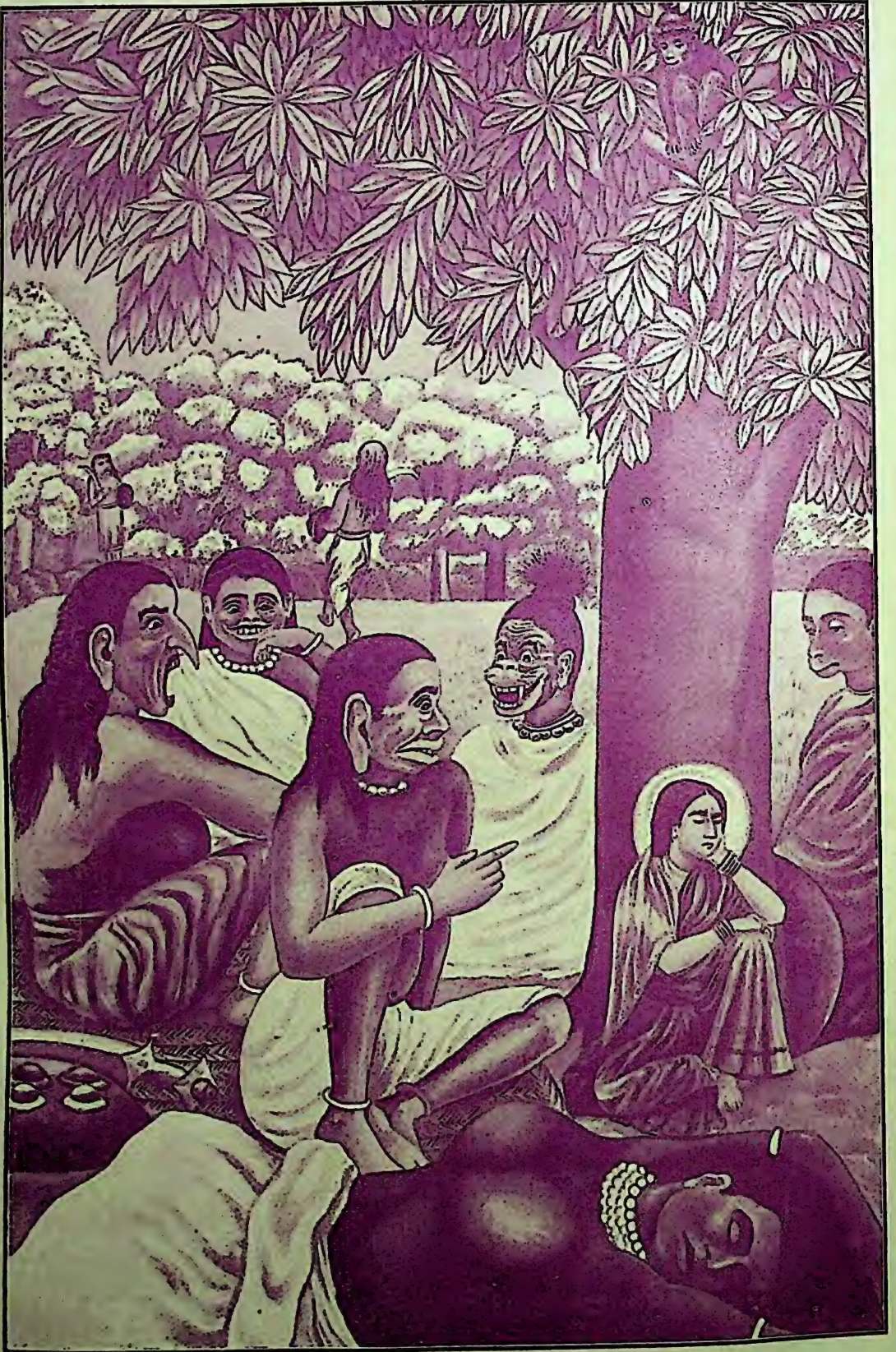
विविध रूप धरि राक्षसी, लगीं सियै दुखदैन।
त्रिजटा तब समुझाइकै, जात भई निज ऐन॥ (पृष्ठ ५४१)

बोला जनक सुताते बानी * सुनहुप्राणप्रियसुमुखिसयानी
मैं सुर असुरनाथ बलधामा * मन्दोदरी आदि सब भामा
मेघनाद आदिक सुत जेते * तिनकी रवनि रहत जन तेते
करहुँ सकलशुचि सेवक तोरें * एकबार निरखौ दिशि मोरे
तेरेयोग सकल सुख आहीं * तृणधरिवदसीता त्यहिंपाहीं

छप्पै ॥ रे रावणजेअहैं रामचरणन अनुरागी । तेसरिप तिचुल्लवत लखैं ललनासमआगी ॥ चिन्तामणि असम वतसरिसखद्योत तमारी । स्वर्णमेरु लोष्ठवतभूप भृत्यवत विचारी ॥ कल्पविटप तिर्नवतजग राशिभारवतदेह । तो तैंकाहदेखावई म्वहिंलघुलंकायेह ॥

दो० होत प्रफुल्लित कमलिनी कहुँ खद्योत प्रकाश ।
कहत वचन मर्यादतजि हेतु आपने नाश ॥
सुनि सीताके वचन वर मनहुँ लगे उरबान ।
काढ़ि खड्ग मारन उठ्यो तैं ममकृत अपमान ॥

सो० मन्दोदरि गहिपानि समुझायो बहुभांति तब ।
बोलिबकीअघखानिकहिसिकित्रासहुजनकजहिं॥
मासदिवसके बीच जो नहिं मानी वचन मम ।
तौकटिहौं शिरनीच लज्जित ह्वै गा भवननिज ॥

दो० विविधरूपधरि राक्षसी लगीं सियै दुखदेन ।
त्रिजटा तब समुझाइके जातभई निजऐन ॥
रामविरह वशजानकी सबनि निहोरि निहोरि ।
मांगहिं पावक देहुजेहि मिटै विपति अतिमोरि ॥

सुनतपवनसुत हृदयविचारी * दीन मुद्रिका सनमुखडारी
लखिमुँदरी रघुपति करकेरी * बोलीं वचन तासु तनहेरी
श्रीघरवन हम तव यहरीती * अबकोकरिहित्रियनपरतीती

कहुहैं कुशल लषण रघुवीरा ॥ कैसे तैं आई ममतीरा
तब हनुमत बोले सहचाऊ ॥ मातु भानुकुल दशरथराऊ
तिनके सुवन लषणरघुनाथा ॥ आये वन वैदेही साथा
महिजे तहँ हरिलैगा कोऊ ॥ ढूंढ़तफिरैं विपिनमहँ दोऊ
गीधराजते सुधि जब पाई ॥ तबतो अधिकउठे अकुलाई
बहुरिसखा सुग्रीवहि कीन्ह्यो ॥ भूषणपाय थाहसी लीन्ह्यो
बरषासमुभि रहे गमखाई ॥ अबकपिअगणितबटुरेआई
पठये चहुँदिशि चाहनभूरी ॥ मोतेकहिनि नयनजल पूरी
लै मुन्दरी जाहु तुम ताता ॥ सीतहिदेखि कहो कुशलाता
कालिहमातुमैं लंकहि आयों ॥ खोजतआजु दरश तवपायों
रामचरितयहिविधिसुनिसीता ॥ भईमुदित दुखदारुण बीता
बोलीं जेहि यह कथा सुनाई ॥ सो अब प्रकटहोत किनभाई

दो० सुनि सीताके वचनकपि आयो पुरहलजात ।
चूके अवसरसुजनजिमि सज्जनसन्मुखजात ॥

कपिस्वरूपलखिसीयसकानी ॥ रामदूत मैं सत्य सयानी
तिनके गुण कछु करौ बखाना ॥ शीशनाय बोले हनुमाना

कुकुभाछंद ॥ प्रथमदयादुखदेखिसकैं नहिं उभयकृपा करिगहई । अनुकंपाहितकरतनत्यागत करुणाकष्टनसहई ॥ आनृशंसगुणसहितदोषहूताकीरक्षाचाहैं । अनुक्रोश निजशरणिकेर कलिकरतब पुनि पुनिकाहैं ॥ दम गुण इन्द्री दमनदर्पपरिभवदानवसंतापा । समगुण सुमनविरोधबोध वपुपरिपूरण निष्पापा ॥ सत्यसदा सच कहतगहत लखि प्रीतिप्रतीतिअपावन । क्षमाछिद्रलखिक्षमहिंसदा प्रापति सौलभ्य सुहावन ॥ सौशिल्या तजदीन खीन बुधि सुधि शरणागतपालैं । प्रणत विधुरवात्सल्य भोगकृत प्रमुदित

आपुकृपालैं ॥ सबउरफुरसर्वज्ञअघटघटनाकरशक्तिस्वरूपं । रजकृतगणनकृतज्ञमेरुसमसुमिरतभक्तिअनूपं ॥ गुणगँभीर रहितीर जासुकीगतिमतिजात न जानी । चतुरतिचित्रविचित्ररचतरचनाअगणितबिचबानी ॥ थिरसुनाम गुणधाम अचल अपंतअनहेतुउदारा । धीर्यधाररिपुमार मोहमधिमानसटरैनटारा ॥ शूरसमरसुखलहत तेजजग जीवनिनिजवशराखैं । बलबड़कारजकरतहोइश्रमस्वल्प नपद्धतिनाखैं ॥ सौंदर्य्याखिलअंगसुभगचषचाहतचाहन डोलैं । महामीठमाधुर्यसाम्यसौरभसबतेभलबोलैं ॥ भागवानब्रह्मादिधनी बहुजाके धनतेभयऊ । सिरससुमनसुकुमार्यआर्य आज्वलि अजीत अरिजयऊ ॥ शुद्धसुवेषकिशोरसौर्य मार्दव विरक्तविज्ञानी । धर्म्मधाम निष्कामराम रघुनाथअनाथअमानी ॥

दो० कहिकै कहत न गहतगहि दैकै देत न काहु ।
वधिकैवधतनतजततजिभजेहिभजततवनाहु ॥
संग सुमित्रा सुवनते अधिक भरत में प्रीति ।
कइकबार मोसे कहिनि कुटिल कागकी रीति ॥

सुनि हनुमान वचन वैदेही * जान्यो मनक्रम रामसनेही
बोलीं अहैं कुशल दोउभाई * हमते तात न कछु बनिआई
सासुससुर पति वचननिवारी * आइन संगसनेह पुकारी
अछतदेह जब भयो बिछोहा * तजे न प्राण कौन बड़ मोहा
यहौसह्यों दुख दुसह अभागी * जरिनगयो वपु विरहदवागी
तेहिते तातप्रीति की बाता * जानतझषकरदमजलजाता
आरज सुवन दयाके सिंधू * सरल सुभाव दीनके बंधू
निजदिशि देखिचहेसो करहीं * हमरे करम सदा दुख भरहीं

सुनिपवनजकह पुलकितगाता ॥ दीनबचन कतभाषतमाता
जनके दुख रघुनाथ दुखारी ॥ तवबियोग संभव दुखभारी
ऋतु अनरोध शोध बिनपाये ॥ ज्योंत्योंइतने दिवसबिताये
नाहितकहँ रघुपति शरभानू ॥ तमबरूथकहँनिशिचरजानू
जो मैं हठि लैजावों आजू ॥ बिन निदेश बिगरै सुरकाजू

दो० त्यहिते कछुदिनधीरधरु कपिनसहित दोउभाय ।
आइ तुम्हैं ले जाइहैं अरिहरिपुर पहुँचाय ॥
सुनिबोली सिय कीस सब हैंसुत तोहिं समान ।
तबतौ कीन्हेउस्वर्णगिरि सरिसस्वतनुहनुमान ॥

सो० बिनकीन्हे करतूति कथत ताहि लघुजानिये ।
काल्हि कहौंगो भूति धोइ समरसरि बदनमसि ॥
मैंजु सुने कटु बैन कहे जो निशिचर नीचने ।
धरिराखे उर ऐन समय पाय सब काढ़िहौं ॥
भइ सीतहि परतीति देखि बुद्धिबल कीशकर ।
दीन्हअशीशसप्रीति अजरअमरसुतहोउ प्रिय ॥
सुनिकपिनायो माथ हाथजोरि बोल्यो बहुरि ।
क्षुधालागि म्वहिं मात हर्षिकहेउ सुत खाहुफल ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतमारुतनन्दनश्रीसीताप्रतिश्रीरामसन्देश बर्णनोनामैकविंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० सुमुरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
कहौं आदिकबि कथनि कछु नाटकरीति बखानि ॥
मेघनाद ते अधिक प्रिय पुरहुत ते बर बाग ।
दशमुखदुखहितखाइफल कपितरु तोरनलाग ॥
बरजत मारे असुरकछु कछुक गये गृहभागि ।

कछुनजनायोरावणहिं सुनतलागिजनुआगि ॥
तुरत बोलि मंत्रीसुत लीन्हा ❋ लखिकिन्नरकहँआयसुदीन्हा
असी सहस्र सुभट सँगलैके ❋ आवा निकट दुन्दुभी देकै
हरषे हरिसुत सैन निहारी ❋ बोले जय रघुनाथ खरारी
जयलक्ष्मण सुग्रीव कपीशा ❋ लखि किन्नर मारे शर बीशा
तबहनुमतहँसितरुयकलीन्हेउ ❋ तेहियक विशिख खंडत्रैकीन्हेउ
कपि योजनकी शिलाउपाटी ❋ लक्ष बाण करि किन्नरकाटी
तब बजरंग रोष करि धायो ❋ पटकिपानिशिरमारि गिरायो
पाछे अपर निशाचर मारे ❋ भागि बचे ते जाय पुकारे
सुनि तब अक्षय कुँवर पठावा ❋ उभयलाख भट लै सो आवा
देखि ताहि गरज्यो कपिभारी ❋ भागे हयगय हहरि पछारी

दो॰ साधि सकल आये निकट कहिकहि वाणीबिंग ।
कूदेहुकपितिनमध्यइमि जिमिमेषनमहँ सिंग ॥
कछुक नाय कांड़े करनि कछुमांड़े धरिपाईँ ।
कछुक मिलाये धूरिमहँ भूरि मशान की नाईँ ॥

निजबलवधलखिअक्षयकुमारा ❋ लोहखम्भलै कीशहिमारा
लागत सो मुरछासी आई ❋ मारे तब लाखन शर धाई
भयोचेततनपूरित देख्यो ❋ भानुकिरणजनुचहुँदिशिलेख्यो
झिटिकिदेहसब बाणगिरायो ❋ गहिगिरियकअक्षयपरधायो
आवत लखि मारे बहुबाना ❋ दहिने करते खस्यो पषाना
तुरत वाम गहि शिरदैमारा ❋ सहित सूत रथभा संहारा
तासु सचिव सुत पांच प्रचारे ❋ कछु खेलाइ पुनि सोऊ मारे
बैठे बहुरि महल पर जाई ❋ बोले लंका दिशि गोहराई
मैंहौं कोशलेन्द्र कर दासा ❋ बैठलवा वन कीन्हे नासा
जासु सुभट मनहोइ खुशाली ❋ आइकरै सो समरकुचाली

अक्षयनिधनसुनिनिश्चरराई ॥ मेघनादकहँ लिहिसि बुलाई
कह्यो बांधि वानर कहँ लावो ॥ मारेहुजनिसुतमोहिंदिखावो
आयसु मानि अनी लै संगा ॥ आवा तहँ जहँ कपि रणरंगा
लखिपवनजफांद्यो तिनबीचा ॥ मारे छिटकि अनेकन नीचा
पुनिप्रचारिवृष रिपुतेभिरेऊ ॥ मृगपतिसममहिकोउनगिरेऊ
भरिअनंग दिन भई लराई ॥ जाना यह हरि जीत न जाई
ब्रह्मअस्त्र तब साधि चलावा ॥ करिविचार हनुमान बँधावा
लीलै लैआये जहँ रावन ॥ देखाकपि जनु कुधर भयावन
अरुणनयनरिसवशअँगजरहीं ॥ सभय देव सब आयसु करहीं
लखिप्रभावकपि शंकनआनी ॥ बोला तब दशकन्धर बानी

गीतिकाछंद॥ कपिकौनतूसुतअक्षघातककौनबलरघुनाथके। रघुनाथको खरदूषणांतक अनुज लक्ष्मण साथके॥ लषणको तवभगिनि जानत परशुधर मदजेहि हरेउ। परशुधरको सहसभुज रिपु दीप जेहि तव शिरधरेउ॥ पठवा जु केहि सुग्रीवका हरिबालि सोदरजानिये। कपिबालिको तुम रह्योजा कीकांखमें सुधिआनिये॥ किमि सिंधुनांघे गोपदज्यों केहिहे तुसिय चोरैलखै। सियकौन कन्याजनककी तुम बाणगे जाके मखै॥ कसबाण सोइबलिसुवन जेहि त्वहिं बांधि नाचनचाय हू। कोकहत यहिविधि पन्निनीजेहि जलधिमांझ चलायहू॥ शठ बांधिआयसि यहीबातन बातयहनाहिं आनहै। तवत्रियनलखि अघलागपुनि तोहिंदेन शिक्षाज्ञानहै॥ देकौनशिक्षा देतयाही वैरप्रभुसे जनिकरो। परिपाइँ सीतहि देहु सब बिन मौत जाते नामरो॥ कोमारिहै त्वहिं कर्म तेरे कौन तिनते राखिहै। श्रीराम करुणाधाम जब तैं शरण मुखते भाखिहै॥ मम शरण त्रिभुवनआजु तो हम शरण काकी जाहिंरे। नहिं जाइ

हैतो पाइहैफल कटुक कछुदिन माहिंरे ॥ मृगनारि द्विज कपि नाहहौ खरदूषणांधक निरबली । म्वहिंभेंटि जब फिरिजाइ है तबबातकछु आगेचली ॥ जब समररुखिहैं राम तबकोसुभ टशायक सहिसकी । सुनि समुझि बूझत नाहिं बीसहु नयन फूटे बरबकी ॥ रेपोचकपि नहिंडरत काको मोहिं तू शठहै क हा । नहिं दीन आयसु ईश नातरु ख्याल कर त्यों जसचहा ॥ रसराज तोहिंकरि सुभट रसयुत लङ्कखल खलतो स्वयं । पुट पाककरि सुरपतिहि देतो घनेघर घलतो त्वयं ॥ सुर नाग नर दिक्पाल सब जगजाल जेहि करतल अहैं । त्यहि शत्रुते करि रारिजीवन मरण दोनों भलरहैं ॥ अबलीनसेना मापितवनाहिं सबल कोउ मोतेहवै । पर डरत आयसु भङ्गते नत सबनकरि जातोशवै ॥ सुनि कहिसि निश्चर बोलि यह कपि कालवश वध कीजिये । वरबागकी गति किहिसि जिमि तिमि बांटि त नको लीजिये ॥

सो० सुनि धायो जिमि भूत कह्यो विभीषण जोरिकर ।
नाथ न मारिय दूत घटत कि दधिदलि बूंदयक ॥

अपर दण्ड कीजै जो चहऊ ॥ तो बालधि पावकते दहऊ
जेहितेफिरि तपसिनपहँजावै ॥ कपिन समेत इहां लैआवै
एक गये जो मिलैं अनेका ॥ तौ तुरतै तजि दीजै एका
सबहिन कहा मंत्र यह मूला ॥ लगे लयावन घृत पट तूला
जहँ तहँ लगे लपेटन बोरी ॥ कपि खेलारकरि लूमबढ़ोरी
ठौर ठौर पावक परजारी ॥ उये कोटिरवि किधौं देवारी
लघुह्वै निबुकिमेरुसम भयऊ ॥ रावण भवन कूदि चढ़िगयऊ

नाराचछन्द ॥ चढ़योफलांगिधामलूमलागकोउठायऊ । मनो अकाशते नदी कृशानुकी बहायऊ ॥ किलङ्क लील

नेककाल जीहसी पसारेहू। किधौं अनीक ऐफ सूर सैफसी निकारेहू॥ किधौं सुरेश चापकी कलाप दामिनी महैं। विलोकि यातुधान सो परातभे जहैं तहैं॥ फिराइ लाइ लाइ ऐन मैनसे लगेबरै। गयन्दछोरि बाजिछोरि ऊंट छोरिये खरै॥ अनेक बाल बालकी सुतात मात बोलहीं। बचाइ लीजिये हमैं समै समान डोलहीं॥ अनेक नारिमारिरिभ डिंभ काढ़ि लावहीं। अनेक डारि डारि वस्तु वारिलेन धावहीं॥ अनेक कन्त वीरते पुकारि बैन योंकहैं। उठाइलेहु लाल माल जालदे परो तहैं॥ विलोकिदेव योंकहैं कपीश यज्ञ सीठनी। सुरारिसौजलं ककुंड हाक स्वाहसीभनी॥ किधौं विराटके सुरारि राजरोगजा निजू। निमित्त तासुवेदज्यों जस्योमृगाङ्कठानिजू॥ मथंतिमंद राजकी मनोजफागु खेलई। विरागधृत्य बोधको विमोहबंधुठे लई॥ गिरैकँगूर दूरते तबैकहै मँदोदरी। विहाय लोकलाज कानि भागती न क्योंअरी॥ अरेअकंपनातिकाय कंठकी महोदरं। लवाइ लेहु अद्धगाति पूतनाति सोदरं॥ अनेकबार मैं कही बुझायहू विभीषणं। न मानि दाढ़िजारको कुठारवंश तीषणं॥ निकेतद्वार अद्धउर्द्ध हाटबाटमें जहां। लुकात जायनीर कीशतीर देखिये तहां॥ घनेस्ववत्त जातके निशात स्वास्तिपावहीं। बोलाइ शेष राघवेश जानकी कहावहीं॥ वधू जो कुम्भकर्णकी पसारिपाणि भाखिये। दुहाइरामचन्द्रकेरि मोरकन्त राखिये॥ अनेक धाइधाइजाइ रावणै सुनायहू। विचारवीरमे घनादसेबली पठायहू॥ अनेक अस्त्रशस्त्र लाय आयमारनेलगे। घुमायदीन बालधी पुकारि कूरसे भगे॥ सुमंत्र जाय यों कही बड़ोबलाय कीशहै। निशंकबंकहू बड़ो सुनो न ऐसदीश है॥ विशालज्वाल जानिकोपि मेघबोलि योंकही। बुताइ देहु

आगिरे बहाइजंतुकोसही ॥ भलेसुनायचापआयपुंजपाथ छांड़ेऊ । यथासनेहपाइचौगुनीकृशानुबाढ़ेऊ ॥ लगीजुअं गअंगबाणप्राणलैभगेसबै । निहारि रीतिमालवानस्यानबो लियोंतबै ॥ नआहियाहिआपिसूम आहिईशवामता । स मीरश्वाससीयकीजुरामरोषमामता ॥ विडौजब्रह्मविष्णुरु द्रआदिदेवजौनहैं । डेरात मोहिंसर्व बंगईशऔरकौनहैं ॥ बोलाइकालते कह्यो लँगूललाव मारिकै । बटोरिभूतप्रेतय क्षदंडचंडधारिकै ॥ विलोकि वातजातघात कीनिसैनतासु को । उठाइ गालमेंधख्यो पख्योखँभारजासुको ॥ समेतशंभु भासराम दासपासआयहू । सभीतपंकजासनादि बीनती सुनायहू ॥ दण्डकछन्द ॥ जयतिश्रीवातसंजातविख्यातब लविपुलपनबालरविगालधर्त्ता । लोकालिपिकसीश्रुतिशास्त्र विद्यानिपुणनिरसिसंसारमहिभारहर्त्ता ॥ जयतिबजरंगर णरंगअरिभंगकृतकर्मनहिंभर्मऋष्यमूकवासं । सत्यसुग्रीव सुखहेतुवृषकेतु वपुवचन मनकाय रघुनाथदासं ॥ जयति गुणज्ञानविज्ञानवैरागनिधि नामवसुयाम उरधामधारी । साधुसुररञ्जनं असुरगणगञ्जनं दुष्टमुखभञ्जनं विपतिहा री ॥ जयतिकपिशिष्टपरमिष्टपावकपरमधर्मधुरधर्णहरिदर्प हन्ता । स्वर्णशैलाभजलदाभविग्रहवरणविमलयशशूरवी राग्रगन्ता ॥ जयतिजनकात्मजाशोचमोचन विपिन निध ननिर्द्वंद्वदशग्रीवजाता । निपटनिश्शंकगढ़लंकदाहककाम क्रोधमददेवदानन्ददाता ॥ जयति शिरश्रवणदृगदेतकटि उदरकरशूलनिरमूलनाभिष्टआमं । पातुपूरबदच्छिविदिशि पश्चिमउत्तरऊर्ध्वअधसर्वदासर्वठामं ॥ जयतिपरयंत्रप रमंत्रनेवारणं शाकिनीडाकिनीघोरमारी । भूतयमदूतवेता

लपावकप्रेतचौरबिगबिच्छुअहिबंधनारी ॥ जयतिसुरसिद्ध मुनिवृन्दवन्दितचरण शरणभयहरणधृतकुधरहाथं । अंज नीआनिदोहाइश्रीरामकी हरहुदुखसपदिरघुनाथनाथं ॥

दो० देहु छांड़ि यमराज कहँ यही बीनती मोरि ।
परवश आयों लरन सुनि दीन गालते छोरि ॥
जरत देखि पुर जानकिहि भयो शोच कपिहेत ।
लागीं सौंपन सब विबुध विष्णुहिंप्रीतिसमेत ॥
वैदेही की सुरति करि हरिहु लाग पछितान ।
पुनि अपनी दिशि देखिकै दूरि कीन अज्ञान ॥
बच्यो विभीषण भवन अरु कुम्भकरण कर द्वार ।
अपर लंक सब जारि कपि कूद्यो जलधिमँझार ॥
पूंछ बुझाइ बनाइ लघु वपुष आइ सिय तीर ।
कह्यो चिह्नकछुदेहु मोहिं जिमि दीन्ह्यो रघुवीर ॥
सुनिसहप्रीतिउतारिनिज चूड़ामणितबदीन्हि ।
गहवर बोली तात तुम भले समयसुधिलीन्हि ॥
जिमिमणिबिनुव्याकुलभुजगजलबिनुव्याकुलमीन।
तिमि देखे रघुनाथ बिनु तलफत हौं मैं दीन ॥
कह सुत अब कब आइ हैं दीनबंधु यहिपार ।
देहैं राज विभीषणै करि निशिचर संहार ॥
विजयपाइ कब राजिहैं मोहिं सहित दल माहिं ।
देव बंदिते छूटि कब विनय करब प्रभुपाहिं ॥
कबधौं विधि पहुँचाइ हैं फिरि कोशलपुर तात ।
भरत शत्रुहन लोग सब कब लहिहैं मुदमात ॥
ह्वैहैं मंगल काज कब पुजिहैं याचक काम ।
नखशिखकबअवलोकिहौंरघुपतिछविअभिराम॥

शीशमुकुटमणिगणजटित श्रवणनकुंडललोल ।
जगमगात कब देखिहौं टोपी दिये अमोल ॥
अलकैं सींची अतर सों निकट कपोलन मुक्त ।
भरिलोचन कब देखिहौं कुसुम कलिन संयुक्त ॥
भाल तिलक भासितउरध भृकुटी धनुअनुहारि ।
भूरिभाग कब देखिहौं नयनन पलक बिसारि ॥
चंचल चारु विशाल बिबि लोचन मोचन मान ।
चितवत दिशिकब देखिहौं मनको करि कुरबान ॥
कीरतुंड सम नासिका लटकन की छवि भूरि ।
कब चकोर सम देखिहौं मुख मयंक तृण तूरि ॥
अरुण अधर दाड़िम दशन रसन चारुमृदुहास ।
हेहरिकब अवलोकिहौं शशिकर सरिस प्रकास ॥
मधुरवचन जनमनहरण कबसुनिहौं निजकान ।
चिबुकचारु कब देखिहौं चितवनि अमीसमान ॥
कम्बुकण्ठ तुलसी सुभग मणि मोतिनकीमाल ।
उर दीरघ अवलोकिहौं कब त्रिवली सुखजाल ॥
भुजविशालकरिकरसरिस करतलकमलसमान ।
सहित विभूषण देखिहौं कब लीन्हे धनु बान ॥
झीन झँगा पहिरे ललित ता ऊपर पट पीत ।
कब निज नयन सेराइहौं देखि उदर उपवीत ॥
कटि केहरि हरि करधनी पट परदनी सुरंग ।
कब पदपद्म पलोटिहौं जानु पाणि सब अंग ॥
मैं सुत कन्त अनन्त कर जानत सरल सुभाउ ।
ताते कहत न सहत दुख तुम ते कौन दुराउ ॥
विरह अग्नि ते देखि त्वहिं शीतल भइ निजदेह ।

सोउकहत तुमजानफिर सोइ दुखसहबअनेह ॥
दीनवचन सुनि सीयके भयो विकल कपिराय ।
नीकिनलागी अमरता छलबल कछुनबिसाय ॥
दीन्हो मातु प्रबोध तब होई तुव मन जौन ।
चल्यो नाइ शिर नाद करि कूद्यो सागरलौन ॥
आवत जानि लँगूल सब चढ़े विटप गिरिधाइ ।
देखत पहुँचेआइ हनु कुहू दिवस सुखदाइ ॥
भये छीनते पीन सब शाखामृग यक साथ ।
बृहद्रामायण केर मत कहा कछुक रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतहनुमान्‌लंकापुरीविध्वंसवर्णनो नामद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

दो० सुमिरिराम सियसंत गुरु गणपगिरासुखदानि ।
साररमायण कहौं कछु गीतावलि मतआनि ॥
सियै रंजि वनभंजि पुनि पुर जराइ मणिपाइ ।
आयो मारुतसुतहि लखि हरषे कपि समुदाइ ॥
भेंटि भेंटि पूंछा सबन हाल कहा हनुमान ।
सुनत चले सानन्द ह्वै जहँ सुकण्ठ भगवान ॥
मार्ग पञ्चमी शुक्र दिन मधुबन पहुँचे आइ ।
खाये फल दल मधु सबन रखवारे बिड़राइ ॥
षष्ठीदिनकपिपतिहिमिलि मुदितकहासबहाल ।
सतयेंदिन आये अखिल जहँ रघुनाथकृपाल ॥

चरण परतभेंटे रघुवीरा ॥ सानुज बैठारे निज तीरा
जामवन्ततब सकल बखाना ॥ जेहिविधिकाजकीन हनुमाना

सुनत समोद गोद भरिअङ्ग * हनुमानहिं भेंटे श्रीरङ्ग
उपपधारि बूझी कुशलाता * किमिसियखबरिलयायोताता

गीतिकाछन्द ॥ किमितातलायहुसीयसुधि सुनिपवन सुतपदगहिकहा । प्रभुपासतेजबचलेनढूंढ़तदूरियकसा गरचहा ॥ शतयोजनहितेहिनांघिचालिसकोसतकआरा महै । पुनिहेमकेत्रैकूटलंक सुवेलसुन्दरनामहै ॥ तहँपांच लाखपषानकेगृह दारुकेनवलच्चहैं । पुनिताम्रकेहैंकोटि घर श्रुतिकोटिरजकेस्वच्छहैं ॥ तितनेहिंकंचनकेर केवल कोटिपंकजरागके । षटकोटितृणकेवंशछदकेकोटिशतबहु भागके ॥ अस्फटिककेनवकोटिमेचककदामकोटिसहस्रसै । मैंदीखइतनेनिलयलंकादुर्गशतयोजनबसै ॥ दशशीशता कोईश जाकेकोपतेत्रिभुवनकँपै । उपबागतामेंजानकीतव विरहपावकमेंतपै ॥ जहँरहततहँकेविहँगानिजनिज भवन तजिभजिभजिगये । भइभेंटश्वाससमीरते तितफिरिनतिहुँ महँपगदये ॥ कृशगातसोजरिजाततजिदृगवारि निजहित राखहीं । तवनामसुमिरतयामआठौऔरकछुनहिंभाखहीं ॥ जबप्राणमीनसमान बिनजलजानितबत्यागोचहैं । तब सींचिप्रभुगुणराखित्रिजटाजायमैंदेखीतहैं ॥ शिरनाइदी न्ह्योमुद्रिकाकहिकुशलवनभंजनकह्यो । बधिअच्छलंकजरा इचूड़ारत्नसीतातेलह्यो ॥ सोलीजियेरघुनाथलेनिजहाथ हृदयलगायहू । भेप्रेमपुलकितगातशिथिलनबातमुखते आयहू ॥ सुनिशोकसीयवियोगसागरमांझबूड़नलागेहू । हनुमानबोहितसरिसलीनउठाइआतुरजागेहू ॥

शीशनाइ बोले हनुमन्ता * केतनिबातकरो प्रभु चिन्ता
कहो रावणहिं दलयुतमारो * कहो आनि तवचरणनडारो

कहो लंकलै सागर बोरों ॥ कहो त्रिकूटै घटइव फोरों
कहो लाइ गिरि सागरतोपों ॥ कहो पानकरि जलउरलोपों
कहो परों मैं देह बढ़ाई ॥ तापर सैन उतरि सब जाई
कहो तुम्हैं लै सियै देखावों ॥ कहो जानकी आनि मिलावों
तवप्रताप ते सबकछु करिहौं ॥ बिननिदेशपथपाउँ न धरिहौं
ताते जो भावै सो कहहू ॥ कह प्रभु तुम सुत ऐसे अहहू
सबविधिहौंनिजमनअनुमाना ॥ तुमसममोर हितूनहिंआना
प्रतिउपकारयोग्य मैं नाहीं ॥ त्यहिते हौंऋणियांतुमपाहीं
सुनिहनुमानसकुचिअसभाखा ॥ तवप्रतापमैंका मृगशाखा

दो० धूरि मेरु गोपद जलधि जल पावक भय प्रीति ।
नाथ कृपा जापर करहु विपरीते विपरीति ॥
सुनि प्रभुलीन लगाइ उर बोले सम्मत नीक ।
मांग्यो जौन रजाइ तुम तात रहै सो ठीक ॥

पर मैं निजशायक बरिराखे ॥ रहिहैं क्षुधित तुम्हारे माखे
अरुजगहित लीलानहिंबाढ़ी ॥ मिटी आह दशमुखकीगाढ़ी
कर्मप्रधान विश्व मैं कीन्हा ॥ देवचहैं निज बदला लीन्हा
सो सब फिरि रहिजाई ताता ॥ ताते अब कीजै यह बाता
लैकपि भालुचलहु चढ़िलंका ॥ देखौं महूं कैस गढ़ बंका
कहकपिनाथ वेगही कीजै ॥ अभिजितसमुझिकूचकरिदीजै

दो० सबादिनयहसाइतिसुभग जहँअपयोगनआन ।
सुनतअष्टमीदिवसप्रभु रविलखिकीनपयान ॥

गीतिकाछंद ॥ प्रभुकीनलंकपयानजबतबधनुषनिजटंकोरेहू । सुनिशब्दघोरकठोरचौंकेशंभुविधिमुखमोरेहू ॥ भयोकामसकलनिकाम शिरसेगंगधारा बहिचली । धरिधीरहृदयविचारिनिजनिजकाजलागेविधिभली ॥ भयविकल

सब दिक्पाल चौदहभुवनकेबासीडरे। दशमौलि सभयबिहा
ल पुरजन गर्भ तिनके गिरिपरे ॥ कपि भालु ठोंकहिं तालअति
बिकरालरद कटकटकरैं। बदिबाद कूदहिं नादकरिहरि सप्तउ
परोपरपरैं ॥ अतिपीन परम विशाल करगिरि विटप धृत चं
चलमहैं। मुखविकट लोचन पिंगजिन्हैं विलोकि भय कालहु
लहैं ॥ धरु मारु भुजा उखारु अरिदल डारुसागर तोपई। तेहिं
दोष देखव ताहिजो तेहिहेत तनको कोपई ॥ यहिभांति मर्कट
कटक बोलत चलत मरु पंगुलभये। शशि भानुलोपे याननभ
थलधूरि पर सरपटिगये ॥ अनिमेष चहत निमेष मातलि सह
सहग अकुलानेहू। सुनिहांक श्रीहनुमानकी पर अपन काहुन
जानेहू ॥ बलखात दिग्गज कोल कूरम शेषशिर हालत मही।
मुख मुहुर मुहुरामर्षि कर्षत गई तन करकस सही ॥ श्रीरामरा
जत पवनपर जिमि उदय गिरिपर रविलसै। सौमित्रि अङ्गदकं
धमानहुँ अग्निघर चेदाबसै ॥ कसमसत इमि मग बसत बिस
यें दिवस दधितट आयहू। उतरेनिरखि जलराशि फलदलफू
ल सबहिंन खायहू ॥ इतरहत असुरसशंक जबते लंकगोकपि
जारिकै। सुत सचिव रावण बोलि बूझेउ मंत्रकहौ विचारिकै ॥
सुनि घटश्रुति बोला अहँकारी ✽ कोहै त्रिभुवन सरिस हमारी
जोसम्मुख सकनयन मिलाई ✽ असकहिचलाविवशऔंघाई
तब सक्रोधबोला अतिकाया ✽ आयसु मोहिं देहु करिदाया
अबहींक्षितिनरहरिबिनकरहूं ✽ और मंत्रका बहुत उचरहूं
कामरूप बोला घननादा ✽ ममप्रभाव जग जानत जादा
विधिहरिहरवशकिहेउँजुझारू ✽ नर बनरन हित कौन विचारू
कुम्भ निकुम्भ दम्भ छलकारी ✽ बोले विभुता विदित हमारी
कृपादृष्टि सब देव निहारें ✽ देखत उच्चासन बैठारें

भोजनहितकहियततिनपाहीं ❋ हम काहूकर छुआ न खाहीं
डाटत बोलि सकै नहिं एकू ❋ कपि मानुष हम गनै न नेकू
मत्सररूप अकम्पन कहई ❋ हमैंजियत अहकोसियलहई
कहा उपायकरौं अब सोई ❋ नर वानर जेहि बचैं न कोई
अपर कथा कहियेका चोभी ❋ तबभा भनत महोदर लोभी
जो आवै अनगन्त करोरी ❋ डारौं खाइ भरै महिझोरी
तौकपि सहस लाख कहिलेखे ❋ जैहैं घूमि न अब हम देखे
बोला तब दुर्मुख पाखण्डी ❋ छलकरि हरिआनौं छौ दण्डी
जो चाह्यो सो कीन्ह्यों पाछे ❋ बद मकराच्छ कपट वपु काछे
विपुल विप्र जो मैं बरिआनी ❋ भूसुर बनि कोइ सकै न आनी
जनिबौकरत सकत करिकाहा ❋ सो किमि जात जासु नरनाहा
सुनि प्रहस्त बोला डरपाई ❋ ममभत सीतहि देहु पठाई
नारिपाइ जो फिरि चढ़िआवैं ❋ करहु युद्ध जेहि जान न पावैं
यामें नहिं अधरमकी बाता ❋ बोला तब हिंसक नरघाता
सकलवस्तु भोगनहित आवै ❋ धर्म्माधर्म्म कहां कहवावै
करत बतकही कादरकेरी ❋ यह नहिंमारिहि सबन खदेरी
नीति कहत हम कादर ठहरे ❋ जाना अब तुम सोइहौ बहरे

दो० कह्यो सुमति मन्दोदरी सुनहु कन्त मम बात।
करजामयरिपु अग्निनृप लघुकरि गने न जात॥
भुवनेश्वर सर्वज्ञ जो गनत छोट तुम ताहि।
मीचु बेसाहत सुकर यह भलीबात नहिं आहि॥
सुवनसचिव तवमन्दमति कहत वचन मुखपेखि।
नगर जरत तब सबनकर लीन पराक्रम देखि॥
तेहिते श्रीमतजानकिहि पठइ देउ सनमानि।
नाहिंत दूषण बालिकी होईगति सतिजानि॥

नारिवचन सुनि मोहवश बोला मोहिं समान ।
सबल कुटुम्बी नृप धनी परतापी को आन ॥
भागत सुरजेहि नामसुनि सकीको ताते जूझि ।
जान्यो तेहि हैं काल बश परै न ताते सूझि ॥
ब्रूहिविभीषण नाइशिर तेहि अनुशासन पाइ ।
जो चाहौ निजभद्र तौ सीतहि देउ पठाइ ॥
तातराम नहिं नरअधिप अखिललोक करतार ।
गोद्विजसुरमहि संतहित लीन मनुजअवतार ॥
जपतप तीरथ ध्यानकरि जिनके दरशन दूरि ।
सोप्रभुआयो अत्तअधि धन्यभागतव भूरि ॥
मेघनाद भट आदि जे बैठे मारत गाल ।
तेकि सकब धरिधीर जब छुटिहैं बाण कराल ॥
त्यहिते सकलविकारतजि नाउ रामपद शीश ।
मिटैं सकल अपराध जेहि बनेरहैं भुजबीश ॥

सो० सुनितिरछे करि अत्त बोला शठजीवत यहां ।
करत शत्रुकरपत्त जा उत कहि मारयोचरण ॥
करिविचार शिरनाइ आयोघर निजमातुढिग ।
कहीकथा सबगाइ सुनिबोली सनमानि सो ॥
कहाभयो जो लात मारी पितुसम भ्रातबड़ ।
इहां रहे कुशलात वहां गये नहिंनेकु भल ॥
समुझिविमोहितबैनचलेउबन्दिसचिवनसहित।
आयेधनपतिऐन लखिकीन्ह्यो सनमान तिन ॥
कह्योसकल निजहेतु सुनि कुबेर शोचन लगे ।
बोलेतब बृषकेतु तात किह्यो अतिनीकतुम ॥

दो० औषधिहित उपदेशबहु करत नलागतजाहि ।

रुजअसाधिशठजानिकैतजतसुजनजनताहि॥

परअब शरण रामकी जाहू * सपदि मंत्रबूझो मतिकाहू
सुनसुत रामविमुख जे प्रानी * भूले भववन गजचढ़िमानी
आगे वृद्धराक्षसी देख्यो * पाछे सिंह भयानक पेख्यो
तबतो गज वहँ गयो बिलाई * आपकूप गृह गिरो डराई

दो० तेहितरताक्यो कालसम अजगर छांड़ी नाहिं।
तब गहिदूर्वा आरबख लटकिरहा तेहि माहिं॥

तहँसुंदरि मधुलागि निहारी * प्रमुदितह्वैतेहिगहेसिअनारी
सहित कुटुम्ब उड़ीसबमांखी * लपटिगईपगकटिमुखआंखी
परयक बूंदकिहिसि मधुपाना * सो सुखमूढ़ परम सुखमाना
श्यामश्वेत विधि मूषकखूबा * लागे निशिदिन काटनदूबा
चुकिगै जबै गिरा हहराई * तुरतै अजगर लीन चबाई
यहगतिसबजीवनकीजानो * बिनहरिशरण नकतहुंठिकानो

दो० रामशरण बिनकालते बचा चहै भजि आन।
सोशठअहिभय गरुड़तजि दादुर पक्षलुकान॥
रामविमुख जग जीव जे तपत पाप त्रै माहिं।
तेहिदुखनाशनहितयतनबदश्रुतिसोइइमिआहिं॥
जिमिशिशुहित पितुरोगगद नीरतरनहितनाव।
पालतपावत चढ़तपर चिरकर होत अभाव॥
याते सांचे शुचि सुखद शरणपाल रघुवीर।
केवल ताके शरणबिन मिटै न भव भयभीर॥

सुनिसुखपाइशिवहिशिरनावा * मंत्रिनसहित समोदसिधावा
अंतःकरणसहित जिमिजीवा * हरिहितकैदुखसमुभिअतीवा
करतमनोरथ मगइमिजाहीं * शंभुमिलनगुणिअतिहरषाहीं
अहोभाग्य ममउदयअपारा * कौनकीन असशुभ आचारा

साधु विप्र करका अस दीन्हा ❋ कौन अपूरब तप हम कीन्हा
जो सर्वोपरि प्रभु सुख अयना ❋ देखिहौं जाइ आजु भरि नयना
निजजनहित श्रीवपु प्रकटाये ❋ धराभार भंजन महि आये
शोभासिन्धु दरश जब पैहौं ❋ तबका परमानन्द न लैहौं
जेहि पद पद्म भजें सब सन्ता ❋ विधिहरिहरसनकादि अनंता
जिनके चिह्न धरा दुखहारी ❋ रजकण परसि तरी ऋषिनारी
जासुवारि भव निजशिर धारा ❋ जेहि तारे जग अधम अपारा
जिन पदपीठि भरत मनरंजा ❋ धरिहौं मैं शिर तिन पदकंजा
जेहि करकमल असुर बहु मारे ❋ धर्म साधु श्रुति रक्षणहारे
ज्यहिकरगाहि भंज्यो भवचापा ❋ परसत मिटत काल परतापा
करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी ❋ ममम्स्तक धरिहैं सोइ पानी
पुंछिहैं जब तब कहिहौं नामा ❋ नाथ होब मैं तोर गुलामा
बिनबितनिज करिहौं सेवकाई ❋ छांड़ि कपट हठ मान बड़ाई
पहिरब पट उतरे जो पैहौं ❋ बची बचाई जूठनि खैहौं
सुनि लेहैं अपनाइ कृपाला ❋ तबहोइहौं सबभांति निहाला
निशिदिन देखिहौं प्रभुकी झांकी ❋ तबका रही करनको बाकी
मरतो जाइ कहां बिललाई ❋ यह गति शम्भु कृपा हमपाई
निजदिशि देखि शङ्क मनधारे ❋ हरषे जब प्रभु रीति विचारे

दो० यहि विधि करत मनोरथ आये जहँ हरिसैन।
करि बिचार नम दूरि ते बोले गदगद बैन॥
जय सर्वज्ञ कृतज्ञ प्रभु कृपासिन्धु गुणगाथ।
शरणभये पालेउ विपुल अब म्वहिं पालहु नाथ॥
नाम विभीषण असुर कुल रावण रिपुकर भ्रात।
श्रवण सुयश सुनि शरण तव आयों लै निज गात॥

सुनि प्रभु बोलि सचिव सब लीन्हा ❋ बूझ्यो यहि का चाहिय कीन्हा

कह कपिपति रिपुसोदर येहू ❋ भेदलेन आवा गहिलेहू
कह अंगद आखिर बधकरना ❋ अबहीं क्यों न हतत हैशरना
जामवन्त कह रिपुकर भ्राता ❋ अब हमते यहिते कस नाता
सीयहरी तब क्यों नहिं आवा ❋ देहु जान मुख प्रणत सुनावा
कह नल दूत पठै मत लीजै ❋ ऐसेहि कैसे बिदा करीजै
उत्तम होइ तो राखहु पासा ❋ नाहिंत हत तब नील प्रकासा
सांचेहु यह शरणागत आवा ❋ राखिय देव मोहिं अस भावा
सभयतजे अघलाग अनन्ता ❋ होइ जो मात पिता कुलहन्ता
कह हनुमन्त सुनहु रघुराया ❋ राक्षसहै न शरण जो आया
बलि प्रहलाद सुकण्ठ यथा धू ❋ जानहु तुम तिनसम यह साधू
छली न प्रभु तव सन्मुख होई ❋ फिरे सभीत द्वारते कोई
बहुरि बात कछु कहन न पाई ❋ बीच विभीषण गिरा सुनाई

दो० अबतक आवत दीनके हरतरह्यो दुखभार।
अस अभाग बड़मोर जेहि सुरतरु करत विचार॥
दीनबन्धु सुनि दीन के वचन उठे अकुलाय।
कह्यो लषण हनुमान ते अबहीं लावहु जाय॥

सो० लाये करि सनमान पूसबदी भूता दिवस।
प्रभु छविदेखि जुड़ान कीन्हि दण्डवतत्राहिकहि॥

प्रभु उठाइ भेंटे उरलाई ❋ बैठे निज समीप बैठाई
पूछी कुशल कहो लङ्केशा ❋ दुष्ट सङ्ग सम कछु न कलेशा
बोले नाथ विभीषण भाला ❋ सुमिरण जे तव करत कृपाला
तिन्हैं कुशल मङ्गल कल्याना ❋ देत विरंचि विनयकरि नाना
जो मूरति मुनिजन मनमारी ❋ करहिं ध्यान नहिं सकैं निहारी
तेहि भरिअङ्क मिल्यो मैं आजू ❋ यहिते अधिक कौनसुखसाजू
कह प्रभु सत्य कहौं मैं तोहीं ❋ दाससरिसप्रियअपरनमोहीं

जिनकेहौंहित अनत न नेहा ❋ तिनहित आयधरौं मैं देहा
असकहिजलसागरकरलीन्हा ❋ तिलकविभीषणकेशिरदीन्हा
सुनिसुभावलखि कपिसबहरषे ❋ जयजयकहिप्रसूनसुरबरषे

दो० जोपुरकलह कलेशकरि रावण शिवपहँलीन।
सोप्रभुकुदिनविभीषणहिं तृणआश्रमसमदीन ॥
ऐसे प्रभुहिं बिसारि जे करत आनकी आस।
तेशठ धनहित धनिहिंतजि भजतदासकोदास ॥
चन्द्रोदय परबोध मत मूलसार शुकगाथ।
बरणयो सुंदरकाण्ड शुभ सुखप्रदजनरघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतसागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतसुन्दरकांडसम्पूर्णनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

❀ अथ विश्रामसागर ❀

लङ्काकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
बरणौं कोकिलकहनिकछु अग्निवेशमतआनि ॥
प्रात पंचमी दिवस प्रभु पूंछा सचिव बुलाइ ।
किहिविधिउतरियउदधिसुनिबोलेनिशिचरराइ ॥
नाथ आपु कर एक शर सोखै सागर कोटि ।
तदपि नीति असिसिंधुते मांगहु सागरबोटि ॥
कह्यो तात भल होइ हित जोकर दैव सहाइ ।
लषण ब्रूहि शर मारिये ईश न सोकी आइ ॥
बोले प्रभु नहिं रुचत म्वहिं साधु अवज्ञा तात ।
त्यहिते यहकरि लीजिये पुनि वह ठानव बात ॥

असकरि दर्भ डासिदधितीरा ❀ बैठे करिप्रणाम रघुवीरा
बिनवततीनिदिवसचलिगयऊ ❀ तबप्रभुकोपिशरासनलयऊ
अग्निबाण संधान्यो जबहीं ❀ लाग्योजरनवारिनिधितबहीं
विप्ररूपधरि हरि ढिगआवा ❀ रतनभेंटदै पद शिरनावा
नाथसृष्टि सब तुम्हरी अहई ❀ ज्यहिजसकीन्ह्योसोतसरहई
अवजसआयसु होइतुम्हारा ❀ सोइकरौं मैं परम उदारा
कहो सुखायजाउँ यकबारा ❀ मरिजैहैं जल जीव अपारा
कृपासिन्धु बोले हँसिबाता ❀ कपिदल तरै करौसोइबाता

त्यहितबकहा नीलनलकीशा ❋ तिनपरसेजलतरत गिरीशा
आयसु देहु रचैं ते सेतू ❋ महूं सहाय करब तव हेतू
असकहिनवमीदिनसोगयऊ ❋ परारम्भ दशमी ते भयऊ
चहुँदिशिशैलदेहिंकपिआनी ❋ सोनलनीललेहिं निजपानी
रचहिंसेतु अति सुदृढ़ बनाई ❋ शिवस्वरूप थाप्यो रघुराई
कह्यो महातमथिर जगहेतू ❋ तेरसि दिवस सिद्ध भा सेतू
विस्तीरण दशयोजन केरा ❋ दीरघकोस चारिशत हेरा
प्रभु नलनीलहिं बहुतसराहा ❋ पूजी भुजा सहित उतसाहा
प्रात चतुर्दशि लाग उतारा ❋ प्रभुछवि देखत जीवअपारा
राजत हनूमान के कांधे ❋ लक्ष्मण बालितनय के रांधे

दो० लिपुलचलेजलचरणिकपि विपुलसेतुअसमान।
जैसे भवनिधि तरणहित कर्म उपासन ज्ञान॥

इमिउतरतनिशिदिनइकधारा ❋ द्वितिया दिवस भयेसबपारा
पाइरजाय निकट फल खाये ❋ तृतियादिनसुवेलगिरिआये
कोष्ठाटालक गोपुर शृंगा ❋ दशमीतक उतरे पलवंगा
हरि दिन रावण दूत पठाये ❋ दलदेखन शुकसारण आये
चरचिचपलगहि मारनलागे ❋ रामशपथदीन्हा तब त्यागे
आये तब दशमुख के तीरा ❋ बोलालखिकहुकपिदलभीरा
कालविवश आये यहिपारा ❋ होइहैं एक दिवसकर चारा
पुनिकहु रहै विभीषण भीरू ❋ जानिबूझि भा यवकर कीरू
बहुरिभाषु तपसिनकी बाता ❋ जिन्हैंनिकारिदीन पितुमाता
सुनि बोले शुकसारण ऐसे ❋ सुनो कृपा करि बूझेउ जैसे

कुं० सहसलाखकरकोटि यक सहस कोटिकर शंकु।
सहस शंकुकर अर्बुद सहस अबुद बिर्दकु॥
सहस अबुद बिर्दकु सहस कर पद्मप्रमाना।

सो अष्टादश सुने संग यूथप बलवाना ॥
बलवानाकपिजालसबकालसरिसहमलखिगहस ।
कहत मिलावनलंकतव पंकमाहिं ऐसे सहस ॥

दो० आयसु मिलतनपिलतपुर भये विभीषण राज ।
तिनते सम्मत बूझिकै करत आपहू काज ॥
सुनि बोला हँसि बादिक्यों करै बड़ाई भूरि ।
जासु विभीषणसे सचिव परीकि तिनते पूरि ॥

तबशुककहकछुदूरि न भारी * चढ़ि अट्टालक लेहु निहारी
सहितसुमुखभटचरतिहिबारा * चढ़िदेखी कपिकटक अपारा
शुकसारण कहि नाम बताये * अंगदादि जे भट सँग आये

दो० वै अंगद हनुमान वै वै सुकण्ठ नलनील ।
वै सुखेन वै ऋक्षपति वै दधिमुख समशील ॥
जटा मुकुट मुनिपट धरे धनुर्बाण तूणीर ।
अस्थित हरि मृगचर्मपर सेवतपद बहुवीर ॥
गौरश्याम छविधाम वै सहित सुलक्ष्मण राम ।
बैठिविभीषण पुरहलखि कीन्हेसिमनपरणाम ॥
औरो कपिदल दरशिकै बोलाबिहँसि निशंख ।
देख्योंकौतुककालकर दिहिसिपिपिलिकनपंख ॥
इत प्रभु छत्रसमेततकि माख्यो शर यकसंग ।
मुकुटप्रसूनगिराइ पुनि प्रविशाआइ निषंग ॥

देखिअचम्भिरहे सब लोगा *कोइकहप्रथमभयोअपयोगा
बोला यामें अशकुन काहा * शिरहु खसे भटकरैं उमाहा
तेहिते शयनकरहु अब जाई * चलिभे सकलरजायसु पाई
तब मयसुता कह्यो भयभीता * हे पति कालभयो विपरीता
जे तवसन्मुख सकैं न बोली * ते अब तुमते करत ठठोली

जिहिपुर सकैं विष्णु नहिं आई ❋ ताहि तुच्छ कपि गयो जराई
जिहिजग नांघिसकै नहिंकोई ❋ तामें सेतु कि गिरिकर होई
जासु नाम सुनि सुर भजिजावैं ❋ तापरकीश अशन चढ़िआवैं
जो सादर निज करत विलासा ❋ सोकि जाइ फिरि शत्रुन पासा
तुमहूं अस हठ कबहुं न ठानी ❋ तिहिते परत वामविधि जानी
अबते परिहरि हठ शठताई ❋ करहु काम किन होइ भलाई
जिहिं प्रभु मधुकैटभ संहारा ❋ हिरणाकुशहिरण्याक्षहिमारा
जिहिखरादि बहुभटवधकीन्हे ❋ बालिप्राण इकबाणहिं लीन्हे
सोइ प्रभु सेतु समुद्रमें बांधा ❋ बीसहु नैन होहिं जनि आंधा
म्वहिं समेत जगदम्बहिं लैकै ❋ पांयन परहु रामकहँ दैकै
प्रणतपाल प्रभु कृपा अगाधू ❋ तुरतहिं क्षमिहैं तव अपराधू
बोला सत्य वचन तव प्यारी ❋ पर इक बात न जानि तिहारी

कुं० शिवनिर्मालय शीशये रघुपति लायक नाहिं।
तिहिते इन्हें निवारिहौं समर रसाके माहिं॥
समर रसाके माहिं प्रथम बल तिन्हें दिखैहौं।
प्रभु आये जिहि हेतु तस्य मनसाध मिटैहौं॥
साध मिटैहौं तस्य मैं आपन छांड़ि शरीर शव।
मिलिहौं निजनाथैवसौं यशगैहैंसनकादिशिव॥

दो० चौंसठियुग निज बांहबल कियों अकंटकराज।
तिन्हें अछत अरि पदपरौं धृग कादरकर काज॥

ममवश सकल जीवजग जेता ❋ ते यहिभांति डरत केहि हेता
जासु विनाश निकट जबआवै ❋ तिहिविपरीतक्रियाअतिभावै
अस कहि सो सोई चुप साधी ❋ जागतनिशिबीतीसोउआधी
प्रातकाल उठि सभा सिधावा ❋ आपन बल सब भटन सुनावा

सुनिशठसचिवसेनपति हरषे ❁ लगे कहन कादर जन करषे

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतरामसुवेलआगमनोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

दो० सुमिरि रामसिय संतगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
वरणौं मानस मत कछुक कोकिल काव्य बखानि ॥
दशमुख दशहूं दिशि दरशि दीन्हे दलपति पेरि ।
आपु जानकी पासह्वै आयो त्यहि थल फेरि ॥

इहां माघ परिवा दिन प्राता ❁ अंगद ते बोले सुरत्राता
बालितनय बलबुद्धि विशाला ❁ लङ्कहि जाहु जहां दशभाला
हित उपदेश दिह्यो तुम भूमी ❁ नहिं मानै तौ आयो घूमी
भलेनाथ कहि माथ नवाई ❁ चले राखिउर प्रभु प्रभुताई
पुर प्रविशत रखवारन रोंका ❁ सुनि युवराज सबनकहँ ठोंका
रावणसुत विषमुखतिहिदीसा ❁ बोला बढ़ि तैं काकर कीसा
रामकेर को जाकी भामा ❁ हरिलायो हितु अपने धामा
सोइ राम जिनके लघु भ्राता ❁ तव फूफूका रूप निपाता
इतना सुनि तिहि पावँ उखारा ❁ अङ्गद पकरि भूमि दैमारा
देखि असुर सटके तिहिकाला ❁ एक एकते कहैं न हाला
पुरजन चहि चट पट दैलेहीं ❁ बूझे बिनु बताइ मगुदेहीं
मनमें कहैं दशानन नीचू ❁ सिय का आनी सबकी मीचू
आवा प्रथम नगर जिहिं जारा ❁ यहधौं काहकरै करतारा
जहँअबनिशिदिनमचीलराई ❁ तिहिपुरबसिपुनिकौनिभलाई
आवत कपि रावण सुनिपावा ❁ दूत पठै निज सभा बुलावा
दशमुख बैठ दीख कपि आई ❁ सहितहंस जनुगज गिरिराई
सुर मुनि असुर नाग गन्धर्वा ❁ चितवततिहि भृकुटीदिशिसर्वा
हरिलखि उठे सकल इकबारा ❁ बोला तब रिसकरि प्रतिहारा

छप्पै ॥ पढ़ैनक्योंविधिविनयशंभुकतदरशनदेवै । जीव करैकतशोरधर्मक्योंचरणनसेवै ॥ रहैनदूरि दिनेशदेवऋषि स्वरलैगावै । पवनसहितकुबेरबेरकरिक्योंनितआवै ॥ चंदन बोलैमंदमतिमातलिसमानयहअहै । बैठिजाहुगेबैठिसबत ब रावणकपितेकहै ॥ रेवानरतूकौनदूतहमरघुपतिकेरे । इत आयोक्यहिहेतुअहंरत्ताहिततेरे ॥ कौनाविपतिशठमोहिंश त्रुशिरपरप्रभुआये । ईशकोपिरघुनाथ जासुतुम तियहरि लाये ॥ कौनकहतहनुमानको जिहिंतेरीलंकादही । करुणा सिंधुसर्वज्ञसोसुनिव्याकुलह्वैयोंकही ॥ जायजायकोइजाय धायरावणैसुनावै । जिहिसियदेइबताइरंककरजिउबचिजा वै ॥ सुनिबोलेसबसुभटनाथजोहमचलिजैहैं । उजुरकरीकछु शत्रुताहिबिनबधेनऐहैं ॥ तबप्रभुनहिंपठयोतिन्हैंमोहिंकह्यो लखिसाधुसुनि । मोरेहुमनआईदयानिजपितुकरतोहिंमित्र गुनि ॥ तातेआयोंतातबातअबमानहुमेरी । जातेतवभलहोइ बचैसबरैयततेरी ॥ श्रीमदमहिपसुभावजान अथवाबिन जानेहु । हरिआन्योजगदम्बआदिभलयहैनठानेहु ॥ जोजस भातसभाअजहुंसीतैलैनिजनारियुत ॥ जाहुशरणश्रीरामके मिटिहैंसबअपराधउत ॥ रेवानररहुचुप्पबादिबकवादनठा नै । विश्वविदिततैंमोरअभयपरभावनजानै । सुरनरमुनिपशु नागजीतिसबनिजवशकीन्ह्यों । शिवैदिह्योंशिरस्वकरगिरि हिकन्दुकइवलीन्ह्यों ॥ असमैंपुनिआतासुभटजिहिंदेखतदु नियांदुरै । मेघनादअससुवनजोगहिआन्योसुरपतिधुरै ॥ कहअंगदसोसत्यअहैऐसेबलतोरा । परनहिंराघवसाथसिं हहितजिमिगजजोरा ॥ जेजेभप्रतिकूल परीनहिंकिसीकि पूरी । शठताडुकासुवाहुमिलेखरदूषणधूरी ॥ विश्वसुभटबल

शम्भुधनुहरि बैठ्योतिहिधरिदलो । ताकोमिलतजिमानमद जोचाहैआपनभलो ॥ रेमर्कटममसरिसअहैकोसुभटअनारी । सोकहुकोतवपिताबालिकपिनाथबिचारी ॥ रहारहा कपिरहा भलेकहुहैसोनीके । कछुदिनमेंतहँजाइ कुशलपूछ्योनिजप्रीके ॥ रामविमुखकरजौनफल होतसोसबनीके पढ़ी । जानिबूझिबातैंगढ़तरढ़तमौततवशिरचढ़ी ॥

दो० मर्मवचन युवराजके सुनिरावण रिसरोंकि ।
बोलामुखमुरभेदहित प्रथमसुकरमहिठोंकि ॥

छप्पय॥हेअंगदबलवन्तबालिसुततोहींआही। तवसमजाकेपुत्रतासुऐसीगतिचाही ॥ जन्मतक्योंनहिंमरेउबालिकर नामधरायो। जिहिंडारेउपितुमारितासुशठदूतकहायो॥ अबतेममदललेसकलकपितुवकरुनिजराजचलि । हनिरनभलसुसुशत्रुजेआठआठदिशिदेइबलि । कहअंगदरेनीचमीच वशमतिबढ़िबोलै। ममनठानतभेदपवनतेगिरिकहुंडोलै ॥ जासुभृत्यब्रह्मादितासुहमह्वैकरिदासा। बोरिदीनकुलकहसि अहसितैंनिशिचरखासा ॥ तेहिकछुकरतविचारनहिंसोफलपैहैसपदिबरु । जावतआवतअवधिनहिं तावतभावत सोइकरु ॥ रेरेकपिजगमाहिं मोहिंकोहैफलदाई । लोकपालयमकाल नमतमोकोनितआई ॥ चहौंजाहिनृपकरों चहोंत्यहिरंकबनावौं । उजुरनकरताकोइ बहुतकातोहिं सुनावौं ॥ कहअंगदतैंअजितअससोरावणऔरैबियो । जठरसहसभुजबालिबलिअवधनृपनजेहिदुखदियो ॥ सुनिअंगदकेवचन मूढ़लज्जितह्वैबोला । बालपनेकीबातगाततबनिरबलहोला ॥ कोशलनृपसबजीतिप्रथमअपनेवशकीन्हो । जबतेभयेदिलीपछांड़ितबतेकरदीन्हो ॥ ताहितजेक

छुघटिगयोभयोनमनमेंएकतिल । विदितबरेहुशिवशिवहि शिव गिरिकरिधारेउयथाशिल ॥ कहअङ्गदकाभयो शीश जोनिजकरकाटे । बाजीगरबहुकरैं बैठिकौड़ीहितहाटे ॥ कहाभयोगिरिलियो भालुकपिधारेडोलैं । तहौंनपायोसुयश आजुरोउनासबबोलैं ॥ कहाभयोसबजगजयोभयोनजोरघुनाथजन । तोसबजानोस्वप्नसमअवनिरवनिसुतधामधन ॥ कहरावणहँसिरामदासतुमहींजोभयऊ । दिहिनिकालमुख आइलाभयामेंकालयऊ ॥ तीनलोकपरलोकशोकसबतनकेनासे । मिलिहैंतौतबबियतजियतजबजावइहांसे ॥ तहँऊं तवसुग्रीवरिपुतासुविभीषणकेरमैं । अपरकीशखेंहैंअसुरऐहैं तपसीघेरमैं ॥ कहअङ्गदरेचोरबालिजिनयकशरमारा । भृगुपतिकरबलदर्पसर्पलीलेसंहारा ॥ खरदूषणत्रिशिरादिदनुजचढ़िबचेनभागे । तोरिचापासियबरीसकलभूपनकेआगे ॥ यस्यअनुगइकलङ्कदहिचतुरअंशतवभटदले । तिनसोंतैंलरिहैकहागालमारिलेचहुभले ॥ कहरावणजोअहैसबल अस स्वामितुम्हारा । तोपठवतकिहिहेतुबसीठीबारेबारा ॥ करहि आइकलिकर्म्मधर्म्मजोत्तात्रिनकोहै । रिपुतेठानतप्रीतिलाज नहिंलागतजोहै ॥ मनकदराइतौजाइफिरिभागेकोनहिंहम हनैं । चढ़िआवैजोमौतवशसकलकौनपनकोबनै ॥

दो० शशिसमुद्र बांधे कहा अभयपरे भुजबीश ।
इन्हैं न नांघनहारकोउ सुनिबोल्यो पुनिकीश ॥

कुं० कारण ज्ञानअज्ञानका बलनिर्बलकर अंत ।
कारजतेखुलिजातजिमि नारि कपटसुतपंथ ॥
नारिकपट सुतपंथ तुम्हैं हम तबहीं जान्यो ।
जबधरितापसरूप विपिन सियते छलठान्यो ॥

ठान्यो लेखागृहपगयो धनुरेखा पारण।
आयो मैं न बसीठ राम पठयो यहि कारण॥

छप्पय॥ बोलेकपिसबआजुचलौप्रभुशत्रुहिमारी। कह हरितेहिवधकिहेकौनहोईयशभारी॥ जिमिमृगपतिहतिमेष शेषसर्षपशिरलीन्हे। तिमिलघुतालघुदान ज्ञानमूरखकहँ दीन्हे॥ यद्यपियहजानततदपित्तत्रिजातिकररोषअति। ता तेअबहूंदीनह्वै सीतैलौमिलुमंदमति॥ कहरावणनृपसुवन संगसबकौशलबारा। प्रथमैंआवाएकभूंठहीजायपुकारा॥ हमहींदीनछड़ाय भीरमेंमर्‌योअत्तयसुत। लागिगई गृह आगिकहिसिमैंकीनकामउत॥ तैसेतोहूंनरनकी करतबड़ा ईकूरमति। मोकोजानतछोटकरि विश्वविदितजोशूरसति॥ कहअंगदमतिमंदद्वंदरतबोलुविचारी। कल्पविटपसमविट पसकलसीतासमनारी॥ चिंतामणिपाषाणसरितसरगङ्गस माना। अभयदानविज्ञान सरिसलौकिककरज्ञाना॥ पगली बातैंअकनितब असमनहोतहमारहरि। तोहिंसहितसब लङ्कलै बोरौंउदधिमँझारपरि॥

कुं० शोचु न शालत साधु फिरि राजकरी केहि भौन।
मोहिंजियत किमिहोइनृपतोहिंजियतकहैकौन॥
तोहिं जियत कहै कौन कामवश अयशी मूढ़ा।
जीवत मृतक समान सरुज हरिविमुखतिबूढ़ा॥
तव शोणितके तृषित पुनि रघुपति के नाराच।
तेहिते राखत रोंकि रिस नाहिंत बनत्यो सांच॥

छप्पय॥ कहरावणजोहोतहिरिसयहिविधिबलतेरे। तौ कतकरत्योआइचेराईपितुअरि केरे॥ करतमातुसँगभोगशू रसुतसोतपजानै। मरतनशठविषखाइबातहमतेबढ़िठानै॥

नरबनरनकी कौनगति तीनलोकमिलिजोचढ़ैं । करौंसमरस नमुखतभूंकभूं न पगपीछेपरैं ॥ तब अङ्गदकरिकोप पटक दोउभुजमहिदीन्हे । गिराअधरसुखमूढ़ मुकुटकरमेंश्रुति लीन्हे ॥ प्रेरेप्रभुकेपासधरे पवनज गहिआगे । भूरिभानु समतेज तरकिकपिदेखनलागे ॥ रामविभीषणके शिरसि भूषितकियेसँवारतित । देखिदेवबोलेविमल जयजानकिप तिप्रणतहित ॥ तबतमचरपतितमकि कह्योधरिधरिहरि खाहू । मिलिमारोदोउबन्धु बङ्ककपिकलमतजाहू ॥ अबत कनीतिविचारि वचनसुनिरोषनकीन्हा । आखिरचढ़्योक पार अधिकअधमैं मुखदीन्हा ॥ निजबलबादतबलकिबल तिनकेअहै न अलपतन । परतिय परधन परअहित करत डरतजोछामछल ॥

कुं० तब अङ्गद कह चरण मम जो कोइ देवै टारि ।
फिरैं राम निजधाम मैं जाहुँ जानकी हारि ॥
जाहुँ जानकी हारि सुनत घननादिक योधा ।
लगे उठावन भूरि भूरि बल करिकरि क्रोधा ॥
डगमगातमहिसुतलनभउअरसिंधुसुरविकलसब ।
बालि बलीके सुवनकर पगनहिंहाल्यो नेकुतब ॥

छप्पय ॥ लखिरावण हियहारि आपुउठि कपिहि प्रचा- र्यो । चरणछुवततेहिदेखि वचन युवराज उचार्यो ॥ ममपद परे न ठीक गहैकिन हरिपदजाई । सुनिसिंहासन सपदिबैठ मनमाहिंलजाई ॥ कहेसि कौनपनतेइसेक्योंनहिं डारतखाइ खर । हँसिकपिकुनपगहाइ निजकहिकैचल्यो उड़ाइअर ॥

सो० दीरघ इकप्रासाद परपद परशतपतेहु सोउ ।
बहुरिचल्यो करिनाद प्रभुपदनायो आइशिर ॥

दो० लखिबोले रघुनाथहँसि तात किहेउ भलकाम।
कहअङ्गद ममगाननहिं तव प्रभाव सबराम ॥

इति श्रीविश्रामसागरअङ्गदरावणसंवादोनामपञ्चविंशोऽध्यायः २५॥

दो० सुमिरिराम सियसंत गुरु गणपगिरासुखदानि।
वरणौंमानसमतकछुक कोकिल कहनिबखानि ॥
इहांदशानन अभयनिशि निवसित उरधाखार।
लागे निरतन नर्तकी कौतुक करैं अपार ॥
रामलषणकपि भालुसब हँसेसमुझि अभिमान।
सहि न सके सुग्रीव बिन बूझे कीन पयान ॥
दशयोजन कर बीच तहँ पहुँचे एक कुलांच।
सिंहासनते अवनिपर पटक्यो मारि तमाच ॥
गिरा न नीचे सँभरिकै भिरा क्रोधकरि सोउ।
कर पद मुष्टिक पेंचशिर निजनिज मारे दोउ ॥
यहिविधि बाजेयामभरि पर कोउ सका न हारि।
लाग्यो माया करन तब कपिपति चले विचारि ॥

इहां न प्रभु सुग्रीवै देखा * भयेशोचवशशोधि विशेखा
इतने में सो पहुँचो आई * बूझे ते सब बात जनाई
कहप्रभुअसअधिपैनहिंचाहीं * सो कछु होतरहा गहिकाहीं
हमसियलै का करतेन ताता * देतेन त्यागितुरतनिजगाता
सुनिनाशत भव कुटुँब हमारा * नाथ कृपा को मारनहारा
असकहि पाय रजायसु सोये * उठिप्रभातपुनि हरिपदजोये
दुनिया दिनकरिकटकविचारा * लङ्का घेरो चारिउ द्वारा
पूरबदिशि नलनील विराजा * दक्षिण सेनसहित युवराजा
पश्चिम पवनपुत्र बलधामा * उत्तररहे अनुजयुत रामा
मध्य सुकंठ मोह सँग योधा * चहुँदिशिलेतविभीषणशोधा

यहिविधिपुरनिरोधसुनिरावन॰ चहुँदिशि निजभटलागपठावन
प्राचीदिशा प्रहस्त पठावा॰ याम्याद्वार महोदर आवा
मेघनाद दिशि गयो प्रतीचा॰ रहा दशानन द्वार उदीचा
विरूपाक्ष तिष्ठा मधिदेशा॰ नारांतक चहुँओर प्रवेशा
यहिविधिराखिसबनतेबोला॰ गहिगहिखाउभालुकपिलोला

दो० भलेनाथ कहि हाथगहि परशु भिंदि असि सांग।
तोमर मुद्गर शूल सब धाये दै दै बांग॥
बाजे बाजन युद्धके सुनि भट गनैं न बोध।
आवत तमचर चाहिकै धाये कपि करि क्रोध॥

गीतिकाछन्द॥ करिक्रोध धाये भालु कपि गहि विटप परबत अनगने। दोउओरते लागे चलावन अस्त्र शस्त्रादिक घने॥ कोउ गिरत कोउ उठि भिरत कोउ पुर फिरत कोउ लल कारई। कोउ दुरत कोउ भट मुरत नहिं कोउ हटत कोउ चढ़ि मारई॥ यकसाथ सब रघुनाथ बल पलवंग गढ़पर चढ़िगये। बिकलाइ असुर निकाय मरदे अपर लखि भागत भये॥ पुर परेउ हाहाकार विपुल कुमार वनिता रोवहीं। दुरिदेहिं गारी दशमुखे अघ जासु हम दुख जोवहीं॥ दशशीश निजदल वि चल लखि सबते कहिसि गोहराइहै। घरआइहै जोभागिसो ममहाथ माराजाइहै॥ सुनि सुभट मानि गलानि घूमे जानि वध दोउओरते। करियुद्ध कीन्हे त्रसित वानर भगिचले गढ़ घोरते॥ यकएक दितिसुत दाबि कूदै ताहि नीचे राखिकै। बिन प्राणकरि हरिवीर बोले बचे आरति भाखिकै॥ हनुमान पश्चि मओर सुनि घननादके पगमारेहू। रथ सूतहातित्यहि विकल करि पुनिलङ्कआयप्रचारेहू॥ इतकूदिआयोबालिबचमिलि उभय रावण गृहगये। लागे ढहावन भवन जहँ तहँ रामगुण

गावतभये ॥ कपिखेलकरि डरवाइ राम कहाइ तिन्हैं निवारेहू। फांदेबहुरिरिपुसैनमहँअगणित निशाचरमारेहू ॥ खरभरपरो सबग्राम तमचर वामशिरधुनि यौंकहैं । उतपातकेघरकीशदो ऊआजुघरआयेअहैं ॥ कितनेक खगगहि पटकिरावणनिकट दीनचलाइकै । कितने झिके प्रभुपासगति तेहिदेत रामबजा इकै ॥ निशिजानि आयेनाथ वहँ दोउ देखिप्रभु बिनश्रमकरे। हनुमान अंगदगये थलसुनि भालुमर्कट सबफिरे ॥ अतिरोष पाइप्रदोषबल धायेअसुर जयबोलिकै । कपिदेखि भिरेप्रचारि पुनि सब चले निशिचर डोलिकै॥ निजहारि लखि अतिकाय आदिक अनिपनिज माया ठनी । भयो निमिषमें अँधियार सू झ न हाथ भागी कपिअनी ॥ चहुँओरते मग मिलत नहिं कच रुधिर वरषत बालुका । लखिराम मारेउ विशिखयक मिटिगई माया मालुका ॥ कपिरीछ पेखि प्रत्यच्च लपटे बहुरिरिपु भागत भये । तबत्रासितआयेरामपहँ पगपरतसबकेदुखगये ॥ यहभाँ तिवासरआठनिज २ घाटकपि कोनपलरे । तब कही रावण स चिवते कसकरिय इत बहुभटमरे ॥सुनि मालवन्त सुमन्त्रबोले हुआपुजबते सियहरी । तबतेकियो बहुबात एकहु तात नहिंपू रीपरी ॥ अबतें समुझि भलजानकिहि गहिपाइँ प्रभुकहँदीजि ये । भयेमूढ़ मारहुँतोहिं कापर ओटमुख करिलीजिये ॥ कछुरी ति पुछियत जाहि सो शठ अधिक भांति देखावई । जिमिकहै कोइ गिरिमेरुते झुकिजाहु आंधी आवई ॥ तेहि तुरत जा न्यो कालवश रसनाहिं उठि घरका गयो । तब मेघनाद सद र्प सम्मुख आइ अस बोलत भयो ॥ देख्यो पराक्रम कालिह ममबहु आजुका निजमुख भनो । सुत वचन सुनि हरषान मन रणशूर सुनि करखा मनो॥ उठि प्रात नौमीदिवस रथचढ़ि सु

कृतकपिदल आयहू । कहँराम कहँसौमित्रि कहँहनुमान कहँ कचजायहू ॥ सुनिभालुकपि धायेकुधरगहि देखि सो मारन लगा । लखितासु बानावरी सब अकुलाइ मर्कट दल भगा ॥ तब भिरे लषण प्रचारि बाणन मारि तेहि व्याकुलकियो। जब भयो बिनरथ सूत जानिसि मारि इन मोको लियो॥ तब ब्रह्म दत्त प्रचण्डशक्ती लषण के हिरदय हनी। महिमुरछिगिरे अन न्तरहा उठाइकरि मायाघनी ॥ किमि उठैं जगदाधारलखि हनुमान मुष्टिक मारेहू । पुनि लातमारि अचेतकरि धरिलंक ऊपरडारेहू ॥ निशिजानि तब हनुमान शेषहि लादिप्रभु तहँ लायहू । लखिरामहृदय लगाइभ्रातहि विरहवचन सुनायहू॥ हा ईश जगत नदीश मैं इकपोततैं विरचारहे। षटभक्तिभायप मित्रगुणनिचढ़ाइ अबबोराचहे॥ हा तात तजि पितुमातु वन मम विपति आइ बटायहू । तिनसाथहौं सुरलोकलौं हँसिप्रा णनाहिं पठायहू ॥ निजकर्म निजकरतूति ते तुमतात सब सुकृ तीजये। मैं राखि तुमबिन देहदीरघ लादिशिर अपयशलये॥ असससमुझिपरत कठोरता ममहृदयते कुलिशैभई। जोसमु झिआपसनेह तुरतै दरकिदरजन ह्वैगई ॥ पितुमरण भामि निहरण खगवध दहिनभुजा गँवायहूँ । सबभांति अपने वंश शुचिमें कालिमा मैं लायहूँ॥ जिनतुम्हैं सौंप्यो मोहिं तिनसों काहकहिहौं जाइके । प्रियबन्धुखोयो वामहित तेहिसक्यो नाहीं लाइके ॥ कपिभालु जैहैं गिरिगुफन तब सङ्ग को मोरो चहे। ह्वैहै विभीषणकी कवनिगति यही बड़ मोहिं शोचहे ॥ दुखदेखि सकत न रह्योमम अबहेतकेहि करुणातजी। जेहि देतनहिं उठिबोधवीरन कौनबलधनुशर सजी ॥ धनधामसु ततिय कुटुँबजगह्वै जात पुनिपुनि आवहीं । पितुमातु सोदर

जन्मभरिनहिं मिलतजबतेजावहीं ॥ प्रभुवचननर अनुहार सुनि कपिभालु सबहियहारेहू। तब रीछपति हनुमानकहँतेहि समय जानि प्रचारेहू ॥

कह हनुमंत जोरि युगहाथा * लषणशोचजनि कीजैनाथा
कहौ चन्द्रमें पटइव गारी * अबहींदेहुँ अमियमुख डारी
कहौ विबुधवैद्यहि गहि आनौं * मौतमारि सबके दुख भानौं
कहौ फोरि नभ रविहि निकारौं * रिपुतेहि द्वार राहु बैठारौं
कहौ ब्रह्म हरि हर का आनी * अमरअमर बुलवावों बानी
कहौ पताल जाय हति नागा * आनौं अमीकुण्ड यहि जागा
कहौ देहुँ निज देहै त्यागी * अबहींउठौं लषणघटजागी

दो० जो कछु तव मनमें रुचै सो म्वहिं आयसु होइ।
नाथ शपथ क्षणमें करौं प्रभु प्रतापबल सोइ ॥
पवनतनयके वचन सुनि सहितराम कपि भालु।
उठेजागि जिमि मंत्रसुनि सर्पग्रसित द्रुमजालु ॥
बोले श्रीपति सत्यसुत सबलायक तुम आहु।
चाही वैद्य सुषेण है अरिपुर आनन जाहु ॥
पहुँचे तुरत विचारि तेहि ल्याये सदन समेत।
तासु वचन सुनि पुनिचले शीघ्र सजीवनि हेत ॥
कालनेमि मग मारिकै सब गण साठि हजार।
रोंकत लूम लपेटि सोइ देखाजाइ पहार ॥
देखी जहँ तहँ ओषधी तब मन मांझ बिसूरि।
लीलै चले उठाइ गिरि दलि दशमुख भटभूरि ॥
किधौं अपत्र पलाश वन किधौं प्रभात लखाइ।
छांड़ि शम्भुगण बहुरिमग ढरयो अवधपर आइ ॥

देखि भरतमन असुर विचारा * बिनुफरबाणहृदयमहँमारा॥

कपिमहिगिरतरामसुखभाखा * पवन साधि द्रोणाचल राखा
तेज तासु पुर गयो समाई * ज्यों सरिता सागर महँ जाई
दौरि भरत गहिहृदयलगावा * जागनजबतबबिलखिसुनावा
जो रघुपतिपद प्रीति हमारी * बहुरि होइ अनुकूल खरारी
तौ कपिहोउ विगतश्रम पीरा * सुनि उठबैठ राम कहि वीरा
भरत रिपुहनै लखि भ्रमछायो * काघरराम लषण फिरिआयो
पुनिपाँहिंचानिपुलकिशिरनावा * पूछा सब वृत्तान्त सुनावा
व्याकुलह्वै बोले धिक हमहीं * प्रभुके काज न आयों कबहीं
कुसमय जानि कह्यो धरिधीरा * चढ़िशरसपदिजाहुप्रभुतीरा
सुनि सहगर्व बैठ शर जबहीं * सुमन समान उठायो तबहीं
देखि प्रभाव उतरि कपि परेऊ * शीश नवाइ प्रशंसा करेऊ
तव प्रताप उरधरि रघुवीरा * जैहौं अतिलाघव प्रभु तीरा
भले भरत कहि बोले ताता * पाछे सुनि दुख पैहैं माता
तेहिते चलि दीजै समुझाई * आइ भवन सब कथा सुनाई
सुतघायलसुनिसाधुसुमित्रहि * भयोहर्ष अरुशोच विचित्रहि
बोली धन्य सुवन मम आजू * जूझेउ समर स्वामिके काजू
परइक कलक होत बड़िताता * कुसमय भये राम बिनु भ्राता
पुनि सुभाय रिपुहनते कहेऊ * जाहुतात तुम प्रभुपहँ रहेऊ
सबविधिकिह्योभजनसोइसच्चा * नरतनको फल याही बच्चा
सुनतउठे मुदसहित प्रकासा * विधिवश सुढर ढरेजनु पासा

दो० अम्ब अनुजगति देखिमन मानीसबनगलानि।
बोली रघुपति मातु तब कपिते धीरज आनि ॥
प्रथमभेंटकहि कह्योइमि कह्योकठिनउरअम्ब ।
लाल लछमणते ललित लागत अहो कदम्ब ॥
बोले मारुत सुवन तब सकल धरहु मनधीर ।

कुशल जानकी लषण युत ऐहैं घर रघुवीर ॥
असकहिचले समेतगिरि आये जहँ भगवन्त ।
औषध कीन सुषेण उठि बैठे तुरत अनन्त ॥
कृपासिन्धु बन्धुइ मिले मिट्यो सकल दुखभार ।
मुदितभालुकपिजनलह्योसमरपयोनिधिपार ॥
भेंटि सचिव बूझन लगे बड़दुख पायो तात ।
कहत न तत मेरे लग्यो पीरभई प्रभुगात ॥
होतपदिकके कांति जिमि दुखसुख लहै भुवार ।
शुकमुख जानत पाठ करि अर्थ पढ़ावनहार ॥
विमल वचन सुनि शेषके कहनलगे सबवीर ।
राम लषणकी प्रीतिकै उपमा चीर न नीर ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम सनेहीकृतलक्ष्मणहितविरहवर्णनोनाम षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु गणपगिरा सुखदानि ।
वरणौं मानस मत कछुक सार रमायण जानि ॥

पुनि ताहीथल पवनकुमारा ❋ धरिआये गिरि बैद अगारा
सुनि रावण मन परेउ खभारा ❋ प्रातलगे कपि चारिहु द्वारा
मेघनाद पुनि रथचढ़ि आवा ❋ बर्षिबाण कपिदलबिचलावा
दश दश विशिख सबनके मारे ❋ जहँ तहँ भट करहतहैं डारे
पुनिविधिवचनलागिदोउभाई ❋ नागफांस ते लीन बँधाई
मुदित पिताढिग लङ्कहि लावा ❋ रावण देखि परमसुख पावा
विविध प्रशंसाकरि सुतकेरी ❋ सीतहि जाइ देखाइसि टेरी
प्रभुबन्धनलखिसियअकुलानी ❋ गरुड़ैतब पठयोविधिज्ञानी
आइ सकल पन्नग बिचलाये ❋ पुनिदोउबन्धुकटकमहँलाये
अस्तुतिकरिसुनिरघुपतिवचना ❋ हरिपुरगयेगुणतप्रभुरचना

इहां विभीषण हनुमत दोऊ * शोधादल अचेत सबकोऊ
कह्यो विभीषण आप तेरे * है कछु चेत चलहुगे शेरे
जामवंत तब वचन बखाना * कहो अहैं नीके हनुमाना
सुनि दनुजेश कह्यो धरिधीरे * पूछेउ नहीं लषण रघुवीरे
तजिकपिपति युवराजसमेता * हनुमाने बूझेउ केहि हेता
जो होइहै जीवत हनुमन्ता * तौ जानो सब जियत अनन्ता
जो कदापि गिरिगे हनुमानो * तौ तुम मृतकसबनकहँजानो
सुनि लंकेश सरस सुखपावा * पवनतनय चरणनशिरनावा
आयसु होइ करी सोइ बाता * लावहु चारि ओषधी ताता

दो० यक बिशल्यकरनी अहै युगसांवरिनी नाम।
तीसरि संजीवनिपुरत संधानी अभिराम॥

सुनि मारुतसुत तुरतै धाये * आनिजरीसबसुभटजिआये
भये सबल सब गाजनलागे * देखि रामलक्ष्मण अनुरागे
हरि दिनचढ़िधुमराक्ष मुरारी * आइ कीन अतिसंगर भारी
भयेविकल कपिभालु अपारा * दुवादशी दिन पवनज मारा
आवा बहुरि अकंपन योधा * महासमरकीन्हिसिसहक्रोधा
तेरशिदिन गर्जेहु युवराजा * बहुरिप्रहस्त आइ रणगाजा
किहिसिमारिशर जर्जर गाता * परिवादिनतेहि नीलनिपाता
तीनिदिवस तब लराकपीशा * पंचम्यादिन सुनि दशशीशा
कुम्भकर्णकहँ आनि जगावा * नानाविधिकरिकुटिलउपावा
पुनिबहुभांति कराइसिभोजन * बोलासो निजकहो परोजन
कह रावण हैं मानुष आये * शत्रुसमुझिहमतियहरिलाये
सेतुबांधि उतरे यहिपारा * सुभटसमूह किहिनि संहारा
मिलाविभीषण जाइ अपाना * मोहिंतोहिं नहिं नेकुडराना
कपिन सहित तेहिभक्षणकीजै * सहितकुटुंब मोहिं सुखदीजै

सुनिघटकर्ण कह्योसुरशाली * प्रथमपूंछिकिनकिहेउकुचाली
यकदिन बात जनाई थोरी * प्रकटीनहिं सीता की चोरी
त्रिभुवनपति सौं वैर बढ़ाई * पुनि सुखचहतकहाअबभाई
ताते त्यागि कुटिलपन येहू * जगदम्बा लै रामहिं देहू
जेहिते करौ सकलसुख मेरी * सुनि बोला रावणमुख हेरी
कितौकरो चलि संगर भारी * कितौ रहौ पुनिसोइ सँभारी
नाहिंत भीरु विभीषण जैसे * परो पाइँ रिपु पायँन तैसे
मैं निजबल विरोध यह ठाना * करिहौंतिमिसबकरकल्याना
सुनि घटकर्ण कालकृत जानी * प्रभुदर्शनहित मनमें आनी
अनुजै भेंटि समोद सिधावा * लखिरावण बहु सुरापियावा
करि मदपान भयो मतवारा * चला कहत कहँ भूपकुमारा
हायहायकरि खेचर भागे * लखितेहिमिलेविभीषणआगे
चरणपरसि निजनाम बतावा * सुनिसराहि प्रभुपासपठावा
कहि निनाइ रघुपतिपद माथा * कुम्भकर्ण यह आवत नाथा
रावणबंधु विपुलबल लाहू * जो त्रिभुवनमें गनत न काहू
उड़ैअकाश व्योमचर मारै * धसै पताल फणिकफणफारै
मणि उतारि लावत है कैसे * उपवन ते पुष्पन को जैसे
बिनहीप्रलय प्रलयकरिदेतो * जो षटमास न सूतत येतो
परप्रभुभृकुटी कुटिल निहारी * लोप होत भवकातमचारी
सुनि कपिभालु चले करिहूहा * डारिनितेहिशिर शैलसमूहा
सुमनसरिसबर्षत जियजानी * धावा मुखपसारि दोउपानी
कोटिनकपि चपिगे तरताके * कोटिनकरसंमेटि मुखभांके
कोटिनश्रवण नाकमगमाखी * निकसहिंजिमिबांबिनतेपांखी
कोटिन दिशादिशा उड़िभागे * कोटिन प्रभुके पाछे लागे
कोटिन हनुमन्तादिक बोले * कोटिन गुणपटुरावत डोले

कोटिनगये समुदमहँ बूड़ी ❋ कोटिनकाटि चलाये मूड़ी
आगे लखि रघुनाथै पावा ❋ करिप्रणाम मनवचनसुनावा

दो० ना मैं आहौं ताड़का ना मैं अहौं सुबाहु ।
ना हौं धनु मारीच मृग ना हौं खर कपिनाहु ॥
मैंहौं देवनकेर रिपु आइ करौ रण राम ।
ज्यहिचढ़िआयो गर्वकरि सो अबपूजौं काम ॥

सुनिसुग्रीव लात यक मारी ❋ पकरि तिन्हैं पुरचलाप्रचारी
लखिसबहनललगे यकसाथा ❋ सांसपाइनिकस्यो कपिनाथा
श्रवण नाक कर मुखते काटी ❋ गयो रामपहँ असुरै डाटी
चलारुधिरतबदेखिलजाना ❋ फिरिकपिनिकरकिहेसिबिनप्राना
हनूमान निज लूम लपेटी ❋ डारिन सिंधुमांझ जिमिफेंटी
धावातब करिक्रोध कराला ❋ मारिकीशसबकिहिसिबिहाला
नारदआइ कही असिबाता ❋ बधउ वेगिप्रभुप्रोक्त विधाता
शीशनाइ जब कीन पयाना ❋ तब हरि धनुषबाण संधाना
मारेशायक विपुल प्रचारी ❋ धावा मुखपसारि गिरिधारी
लखिराघव भुजकाटि गिराई ❋ लिहिसिबामकर सोउउड़ाई
बिनभुजगिरिमंदरसम धावा ❋ शीशकाटि प्रभुलंक बहावा
लुंडमुंडबिन चल्यो प्रचंडा ❋ तबप्रभु काटि किये युगखंडा

दो० देखि देव वरषे सुमन हरषे मुनिन समेत ।
मुदित भालुकपि कटकमधि सोहे कृपानिकेत ॥

अनुजशीशलखिरावणशोचा ❋ असनवसनत्यहिभयेअरोचा
रोवहिं रमणिवरणिगुण ताके ❋ चलामहोदर लै भट बांके
कपिदलआइसमरअतिठाना ❋ एकादिवस हता अनुमाना
फाल्गुनकृष्णआदिदिनभोरा ❋ चढ़ानरांतक लै भट घोरा
नानाविधि त्यहि युद्धमचावा ❋ जानाकपिनकालनिजुआवा

हरिबलपाइलरततेहिचीन्हा * फनिदिननिधनशरासनकीन्हा
तब अतिकाय आय रणठाना * अष्टम्यादिन भे गत प्राना
कुम्भकरणसुत कुंभ निकुंभा * आइकिहिनिदोउयुद्धअरंभा
लरतलरत दिन पांच बिताये * तेरसि दिवस गये दोउपाये
तबखरसुतमकराक्षसिधावा * कपिदलदलतलषणपहँआवा
मारे अस्त्र शस्त्र भट नाना * कटै न वपु विधिकर वरदाना
झपटिलषणकहँनिगलिसिधावा * मनहुँमयंकहितुदनदुरावा
हाहाकार भयो दल भारी * निकसे लषण उदर तेहिफारी
फागुनशुक्ल प्रथमदिन जूझा * भा रावणै मोहयश बूझा
मेघनाद लखि वचनसुनावा * केहिहिततुमअसखेद बढ़ावा
जबलग मैं जीवत सुत तोरा * तब लग करहु राज्य बरजोरा
देखौ आजु मोर संग्रामा * असकहिचलादिव्यरथतामा
इकअदृश्यपुनिनिशिनभगामी * आवाजहां भालुकपिस्वामी
गर्जा प्रलय पयोद समाना * सुनिकटुशब्दसबनभयमाना
अस्त्रशस्त्र पुनि वर्षन लागा * मघानखतसमअसिशरसांगा
गहिगिरितरुकपिजाहिंअकासा * मिलैनकोउतबफिरैंउदासा
भयेविकल कपि भागनलागे * जहांजाइँ मगमिलै न आगे
अंगद हनोमान नलनीला * शेष सुकंठ विभीषण कीला
औरौ दुर्द्धरादि जे वीरा * मारिसबनकहँकिहिसिअधीरा
पुनि अति समर रामते ठाना * नागफांसवश भे भगवाना
जासुनाम भवबंधन हर्त्ता * सोकिहोइ परवश यशकर्त्ता
समयसमानचरित प्रभुकरहीं * असबिचारिबुधभर्म न परहीं
देखासबन विकल घननादा * तबभा प्रकट कहत दुर्वादा
देखि ऋक्षपति चले प्रचारी * तबतेहि तीव्रशक्ति तकिमारी
जामवंत सोइ मारि गिरावा * चरणपकरि पुनि लंकपठावा

गरुड़ आइ प्रभु बंधन काटा ❋ भे सब सकल राम जब डाटा
गहिगहिगिरि गुरुपादप धाये ❋ मारिसकलनिशचरबिचलाये
मेघनाद मुरछाते जागा ❋ जायअजयमखकरनसोलागा

दो० जानि विभीषण प्रभुहिसों कह्योजोरि युगपानि ।
इन्द्रजीत निःकुम्भले गा मखहित रिस आनि ॥

सो० जबलगि होइ न सिद्धि तबतक ताको मारिअपु ।
पाछे पाइप्रसिद्धि वेगि न जाइहि जीतिरिपु ॥

सुनि प्रभु कहा लषणते तबहीं ❋ जाहुतात लै कपिदल अबहीं
मखविध्वंसि पुनि मारेहु ताही ❋ भलेनाथ तव आयसु आही
असकहि सजि धनुशरतूणीरा ❋ चले संग हनुमतयुत वीरा
जातहिकपिन भंगमख कीन्हीं ❋ मारतलखिधनुहींतेहिलीन्हीं
द्वै शर जामवन्तके छेदे ❋ तीनि बाण अङ्गद के भेदे
चारि विभीषण अंगन फारे ❋ पांच विशिख पवनजके मारे
एक एक शर सबके दयऊ ❋ पुनिलक्ष्मणपरछांड़ तभयऊ
सकल अनन्त काटि महिडारे ❋ पुनि निजबाण कराल पँवारे
आवतलखिशर भयोअलोपा ❋ छांड़िसिबहुरिशूलकरिकोपा
तुरतकीन शतखंड अहीशा ❋ तबयकगिरिगहिडारिसिशीशा
रजसम करि सोऊ महिपारा ❋ अस्त्रशस्त्रपुनितजेसिअपारा
सोतबलषणनिवारतभयऊ ❋ यहिविधिबीतिमासदिनगयऊ
महायुद्ध लखि सुर मुनि सारे ❋ हर्ष शोचवश होइँ बिचारे
तब लक्ष्मण करिकोप कराला ❋ छांड़ेउ एक नराच विशाला
जातहि शिर भुज काटेउ तासू ❋ गर्जत पुनि मारे शर आसू
राम लषण कहि सह अनुरागा ❋ तेरसिदिवस भयो तनत्यागा
सुनि बोले अङ्गद हनुमाना ❋ धन्य मातुतव तोहिंबलवाना
कटितनु परेउ समरमहि तामा ❋ दहिनी भुजा गई तेहिधामा

शिरलै कीश रामपहँ आये ❋ अनुजहिलखिप्रभुहृदयलगाये
फेरिकमलकर छत हरिलीन्हा ❋ वरषे देव सुमन जय कीन्हा
पुनिरघुपतिकपिभालुविलोके ❋ भयेसकलश्रम रहितविशोके
अरिपुर मेघनादकी नारी ❋ पतिभुजलखिमनसंशयधारी
दीन्हकलमखरकरगहिलीन्ही ❋ लक्ष्मणकीकीरतिलिखिदीन्ही
कोटि कलप जो योग कमावै ❋ सो उनलषणकि समसरिपावै
सुनत सखिनयुत रोवनलागी ❋ आजु दशानन भयो अभागी
करिहैं कीश मुदित पुर फेरी ❋ छूटि बन्दि सब देवन केरी
कोइ जय लहै हमैं का करना ❋ जख्योजगत जोआपनजरना
असकहि भुज पालकी चढ़ाई ❋ आपु बैठि रावन पहँ आई
सासु श्वशुरपद शीश नवाई ❋ रोदनकरि सब कथा सुनाई
जो पावों निजपतिकर माथा ❋ तौरचिचिता जरहुँतेहिसाथा
मयतनयादि जहांतक रानी ❋ लगीं विलाप करन दुखमानी
सुनिदशमुखहुमुरछिमहिपरेऊ ❋ पुनिधरिधीरवचनअनुसरेऊ
सुमुखिसमुझिजियकरहुनशोका ❋ प्रकटनामयाकोमृतुलोका
मातु भूमि पितुबीज बेसारा ❋ काल किसान जीव तृणभारा
पालत पुनि लूटत सोइ खाई ❋ कौन कौन हित रोवै धाई

दो० रह्यो न कोई रहैगो पुनि कछु जाइ न साथ।
धन्यभाग इन सबनके जो जूझे प्रभुहाथ॥
सबसम जानत मोहिं तू मैंहौं अतिबलवान।
देखौ कालिहि कपिनकर मेटिहौं जाइ गुमान॥
बालि विभीषण पवन विधि तापस नील कपीश।
इन सब शीशन सहित तव आनौं पतिकर शीश॥
बड़बिमोहवश जानि तेहि कछू न उत्तरदीन।
नारदके वर वचन तब मयजा वरणन कीन॥

तातें निजहित रामपहँ जाहु सकल तजि शङ्क ।
होइभूप धर्मज्ञ जहँ तहँ कोउ रहै कि बङ्क ॥
बहुरिरहत तहँ श्वशुरतव भयनकछू शिरनाइ ।
चली यानचढ़ि भटनयुत पहुँची कपिदलजाइ ॥

सो० लखिहरषे कपिभालु बिन श्रम आई जानकी ।
मिटासकल जञ्जालु भयो सुयशहम सबनकहँ ॥

यहिविधि गई जहां रघुराई * नखशिखलखिदोउबंधुलुनाई
कीनि दण्डवत विनय समेता * तब लङ्केश कहा सब हेता
सुनि कृपालु बोले अनुरागी * जो भावै सो लीजै मांगी
कहौ देहुँ पतितोर जिवाई * भोगहुराज कल्पभरि जाई
सुनिसुरमुनि कपिभालु डराने * बहुरिसुलोचनि वचनबखाने
कृपासिंधु मैं दीख बिचारी * यहिमरने ते जीवन खारी
विष बदले जो अमृत पावै * लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै
ताते नाथ देहु पतिशीशा * दीन्ह देवाइ तुरत जगदीशा

दो० मस्तक पाइ हँसाइ तहँ लाई सागर पास ।
भई सतीपति सहित पुनि किहिसिसत्यपुरवास ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतमेघनादवधसुलोचनासतीवर्णनो
नामसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
वरणौं मानस मतकछुक साररमायण जानि ॥
तेहिदिन भयो न समरकछु दशमुखशोचैलीन ।
अहिरावण को यादकरि आकर्षण जपकीन ॥

दण्डचारि महँ सो तहँ आवा * रावणलखिनिजहालसुनावा
सकलसैन कपि भालुनमारी * तातरही यक आश तुम्हारी

सुनिबोला यह केतिक बाता ❋ जैहौं लै पताल दोउ भ्राता
देहौंबलि कामद कहँ सोई ❋ जानेहु नभ प्रकाश जबहोई
असकहिविरचिविभीषणरूपा ❋ गयो जहां लक्ष्मण सुर भूपा
सोवतलखि लै गगन उड़ाना ❋ दशमुखदेखिसत्यतेहिजाना
यहिविधि सो लै गयो पताला ❋ प्रभुबिनभेकपिभालुबिहाला
तब सब हाल विभीषण काहा ❋ अहिरावण लैगा नरनाहा
रहत नागपुर जो कोइ लावै ❋ सो सबको दे प्राण जियावै
कहहनुमान तजहु सब शोका ❋ लैहौंप्रभुहि ढूंढि तिहुँलोका
चलेखबरि मग खगते पाई ❋ क्षणमहँ अरिपुर पहुँचे जाई
द्वारपाल मकरध्वज आढ़ा ❋ तासु पूंछ तेहि बांध्योगाढ़ा
पुनि लघुबनि देवीमठ गयऊ ❋ होतहोम तहँ देखत भयऊ
तबतहँ विकटरूप धरिलीन्हा ❋ गैधसिशक्तिसुथलथलदीन्हा
देखिसहित कुल हरषा राजा ❋ प्रकटी देवि भवा अबकाजा
नानाविधि मेवा पकवाना ❋ आनि चढ़ावैं पुरजननाना
पावनिवस्तु सकल कपिखाई ❋ पुनिबलिहितआने दोउभाई
बाजहिंबाजन गावहिं नारी ❋ सुनिनिश्चर सबहोइँ सुखारी
तब प्रभुते बोले शठसोई ❋ सुमिरो जो कोइ तुम्हरे होई
सुनिरघुपति तब कीनबखाना ❋ यहिअवसरचहिये हनुमाना
मारनहित शिवभे सब ठाढ़े ❋ घनसमान कपि गर्जेहु गाढ़े
निश्चरडर असकहत विशेखी ❋ क्रोधकीन देवी नरदेखी
बहुरिगर्जि कपि वपु प्रकटावा ❋ दोउभैयन दोउकंध चढ़ावा
निज लँगूरकर कोट बनाई ❋ असिलै मारेहु खलसमुदाई
अहिरावण शिरकाटि कुमारा ❋ देवी की आहुति में डारा
औरो असुर मिले ते मारे ❋ पुनिलैप्रभुइचलेहुलखिद्वारे
विनयकीनि मकरध्वज भाये ❋ राजदेइ निज सैनहिं आये

लखिकपिभालुसुखीसबभयऊ * बूड़तमनहुँ थाहमिलिगयऊ
हनुमाने सब लगे सराहे * कहप्रभु इनबिनकोसमआहे
बोले पवनतनय शिरनाई * आपुचहै तेहि देउ बड़ाई

दो० यहां दशानन दूतमुख सुनि अहिरावणनास।
एकादिन निजसैन लखि चढ़ासमर बिनत्रास॥
बाजहिंबाजन विविधविधि अशकुन होइँ अपार।
गनहिं न एकहु गर्ववश महिसहि सकत न भार॥

निज निज नाथकेरि जयभाषी * धाये इत उत भट अभिलाषी
कपिकरमुगदलसंगमभयऊ * जनुघनश्यामश्वेतमिलिगयऊ
गर्जहिं मनहुँ बाजने बाजें * चमकहिं खड्ग छटासी राजें
वर्षहिं बाण बूंद जनु भारी * छूटै तोप गाज जनु पारी
भयो अँधेर उड़ी रजकूरा * इन्द्रधनुष बहुलसै लँगूरा
गिरहिं सुभट मन्दिर हहराई * शोणितसरित चलीउमड़ाई
भुज अहि कच्छप चर्म सुहावे * कुंजर अश्व ग्राहद्युति पावे
फिरत चक्र आवर्त्त अनेका * उछरहिं शीश सूसिढिग एका
भूषण भेक उपल समरेनू * धनुष तरंग बहे पट फेनू
कर पद मीनजु केश सेवाला * दोउदलकूलविटपरथजाला
बहुभट बहैं चढ़े खग नीचा * जनु नेवार खेलहिं सरि बीचा
खैचें आंत गीधगहि तीरा * बंशी मनहुँ लगाई कीरा
भूतरु प्रेत पिशाच पिशाची * मज्जहिं मुदित योगिनी नाची
वीर विनोद लहैं शर देखी * कायर त्यागहिं प्राण विशेखी
देखि कठिन कोपेहु हनुमाना * मर्दन लगे निशाचर नाना
गजते गज घोरनते घोरा * खरते खर रथते रथ तोरा
महिष ते महिष ऊंटते ऊंटा * पैदर ते पैदर दल कूटा
कोटिन कर शिर लातन मारे * कोटिन पटकि सिन्धुमहँ डारे

कोटिन हाथ पायँबिन कीन्हे ❋ कोटिन फेंकि गगनमहँ दीन्हे
हँसि प्रभु कहैं लषणते हेरी ❋ देखहु लरनि पवनसुत केरी
निजदलविचलदेखिदशशीशा ❋ धावा लैधनु शर भुज बीशा
जहँ तहँ उड़े कीश भय पाये ❋ यथापात बौंड़र के आये
अंगद हनुमदादि भट भारी ❋ लैलै गिरि मारे यकबारी
फूटहिं पवि सो मुरै न नेका ❋ लाग निपातन कीश अनेका
दीन्हिसिपूरिदशहुदिशिबाना ❋ भागतकतहुँ न मिलैठिकाना
विकल पुकारहिं जहँ तहँ ठाढ़े ❋ पाहिराम लक्ष्मण दिन गाढ़े
सुनिलक्ष्मणधनुबाणसिधारा ❋ सरिसआइसम्मुखललकारा
होउ सजग अब सुन दशभालू ❋ पहुँचेउँ आइ तोर मैं कालू
सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहुमारे ❋ सकल काटि सौमित्रि निवारे
पुनि छांड़े निजबाण अहीशा ❋ सूत समेत भयो रथखीशा
शतशतविशिखदशौशिरमारे ❋ मनहुँ चलेबहि रुधिर पनारे
पुनि शत शर छाती महँ दीन्हें ❋ बीसहु भुज बरही सम कीन्हें
धावा विकल क्रोधकरि भारी ❋ विधिकीदीन्हिसांगितकिमारी
लागत उर लक्ष्मण महि परेऊ ❋ रहा उठाइ न नेकहु टरेऊ
ज्यहि शिररजसमभुवनअपारा ❋ तेहि उठाइ किमि सकै लवारा
देखि पवनसुत मुष्टिक हनेऊ ❋ ह्वैअचेत अवनी ठनमनेऊ
प्रभु लैगयो जहां भगवाना ❋ देखि दशानन अचरज माना

दो० चैत्रकृष्ण नवमीदिवस अनुजै लखि रघुवीर ।
कहौं कालके कालतुम सुनत उठौ रणधीर ॥
पुनिरिपुसम्मुखजाइत्यहिविकलकीनशरमारि ।
लखि अचेत निजनगर तब लैगा सूत निकारि ॥

भवन दीख जब रावण जागा ❋ निजसुमंत्र कहँ खीझनलागा
रे मतिमन्द भीरु धृग तोहीं ❋ रणते विमुख कराये मोहीं

असकहिदशमीदिवससचेता ❋ लागकरनमख विजयकेहेता
सुनिप्रभुभटपठये बहु आसू ❋ करहुविध्वंस जाय मखजासू
अंगदहनुमदादि कपि वीरा ❋ कौतुकही आये तेहितीरा
लखि लागे सब मारन लाता ❋ उठै न सो स्वारथ मन राता
तब कपि करन उपद्रव लागे ❋ दियेछोरि हय गय मृग भागे
फारे पट वितान घट फोरे ❋ छत्रचमर व्यंजनगहि टोरे
लखिमन्दोदरि उठी रिसाई ❋ दुरा चित्रशाला महँ आई
अंगदहु घुसिगे तहँ फूले ❋ विविधचित्र पुतरी लखिभूले
धाइधरैं पुनि तजैं निहारी ❋ पावैं किमि सुन्दरि वनचारी
देखिहँसी सुरकन्या एका ❋ गहत बताइ सुनारि अनेका
तिहीं दिखाई रावण रानी ❋ असुर निकटलाये गहिपानी
भूषण वसन परे सब छूटी ❋ कामपुरी जनु शिवगण लूटी
आरतवचनपतिहिंलखिकहई ❋ जो जसकरै सो तसफललहई
सीतहिदिह्यो झूठ दुखभारी ❋ देखहु निरगतिसांच हमारी
नारिवचन सुनि उठा रिसाई ❋ गयेभागि कपि जहँ रघुराई

त्रिभंगीछंद ॥ गेभागिकपीशातबदशशीशागहिभुजबीशाधनुतीरा । सँगसेनअपाराचलेउजुझारामदमतवारारणधीरा ॥ इतप्रभुसुरतीरा कह्योअधीरा मेटहुपीरावेगिभले । कटिकसिपटबांधाधनुशरसांधा दलतप्रबाधाहेतुचले ॥ लखिइंद्रअजानास्यंदनआनापवनसमानादेखिप्रभू । हरिदिनतेहिमाहींचढ़िसबपाहींकहौकिनाहींनीकअभू ॥ सुनिसब वनचारी भयेसुखारी देखिमुरारीकोपठन्यो । कहिवचनकठोराशायकघोरा तजिचहुँओराकीशहन्यो ॥ ह्वैविकलपरानेसकलठिकाने लखिअकुलाने विशिखभरे । तबरामसुजानापावकबाना छांड़ेनानासकलजरे ॥ दशमुखदिशिदयऊ

रथबिनभयऊ दूसरलयऊक्रोधयुतं । पुनिशरवरकाटे सब प्रभुकाटे निश्चरडाटेबालिसुतं ॥ कटिकटिभटपरहीं पुनि उठिलरहीं बलकरिधरहींयकखोलै । कोटिनबिनमाथा धावहिंसाथा कहरघुनाथाशिरबोलै ॥ धरुधरुधरुमारूपकारि पछारू करहुअहारूकोउनबचै । अतिचंचलकीशावधंबनरीशा जोवागीशा भूलिरचै ॥ धायेकपिभालू जनुवपुकालू मारि बिहालूअसुरकिये । नखउदरविदारैंआंतनिकारैं निजगरडारैंहर्षहिये ॥ लखिरावणकोपा प्रभुरथतोपा देखिअलोपादेवडरे । हयमारि गिराये रामउठाये सम्मुखधाये क्रोध करे ॥ करषेउशरदावा श्रुतितकआवा तबकरवावायोंबोला । भोजनहितहारू रहतअगारू रामपछारू क्योंडोला ॥ सुनि कहौंजुआहूंपूछनजाहूं दशशिरडाहूंकीएका । प्रभुसकलबताये असकहिधाये जाइगिरायेशिरतेका ॥ फिरिभयेनवीने पुनिप्रभुबीने पुनिहरदीन्हे पुनिकाटे । पुनिपुनिइमिजामें रामगिरामें दशदिशितामेंभरिपाटे ॥ जबअसुररिसाईसांग चलाईलखिरघुराईआपुसही । चहिचल्योविभीषणजहँरिपुतीषण वदतसुशीषणनीचगही ॥ असकहिललकारागदा प्रहारा लगतप्रहारासरिसागिरा । मुखश्रवणनिदाहाशोणितबाहा उठिकरिहाहाबहुरिभिरा ॥ मारेयकएकैंअस्त्रअनेकै हरिबलछेकैंअमितलखा । पवनजतबधायो मारिगिरायो प्रभुढिगआयोरामसखा ॥ रावणहनुमानामेरुसमाना भिरतबहानाअसुरठनै । नभसुरमुनिहेरीदुनहुनकेरी जयजय टेरीटेरिभनै ॥ कपिभालुनिहारे हनुमतिहारे गिरितरुधारे सबधाये । लखिनिश्चरभूपाधरिबहुरूपा कीशअनूपाबिचलाये ॥ भागतभटघेरहिंआतुरटेरहिं मुखमेंगेरहिंभुजबीशा ।

दुरिदेवपराने बहुरिपुजाने रहेठिकाने अजईशा ॥ व्याकुल लखिबन्दर हँसिकमुकन्दर सबदशकन्धर नाशकिय। पुनि एकनिहारा मर्कटधारा धाइअपारा असुरछिये ॥

दो॰ पुनि छांड़े निज बाण प्रभु कालसरिस वधहेत।
लागे काटन असुर के यथा हाथ तृणखेत ॥

सो॰ सात दिवस दिनराति बाजेउघण्टा धनुषकर।
हरि पूजा की भांति भये सुभट संहारसब ॥

कुं॰ घण्टा की परमान अब सुनु जेहि सङ्गरबीच।
नागअयुत दशलाख हय रथी डेढ़शतमीच ॥
रथी डेढ़ शत मीच लहै पैदर दश कोटी।
तब यक नटै कबन्ध कोटि पर खेचर चोटी ॥
खेचर नाचहिं कोटि विना शिरके निहकंटा।
तब राघव के धनुष केर बाजत यकघंटा ॥

श्लोक ॥ नागानामयुतंतुरङ्गनियुतं सार्द्धंरथीनांशतं पत्तीनांदश कोटिसङ्ख्यितमे नृत्यंकबन्धारणे ॥ एवंकोटिकबन्धनर्तनविधौ नृत्ये स्तथाखेचरस्तेषांकोटिकनर्तनेरघुपतेः कोदण्डघण्टारवः १ एवंससदि नंख्यातंस्वर्गेमर्त्येरसातले ॥ भटनाशोभवेद्भूरिरामरावणसङ्गरे २ ॥

दशमुखआपुहिजानिअकेला ॥ लागकरन माया कर खेला
भूत पिशाच प्रेत वेताला ॥ अमितजंतुप्रकटेत्यहिकाला
लीन्हे धनुष शिलीमुख चोखे ॥ मारु मारु धरु बोलहिंरोखे
निर्तहिं करहिं रुधिरकर पाना ॥ गहे कपाल योगिनी नाना
मुखपसारि दौरें हम खावा ॥ भागें कपि तहँ देखहिं दावा
ऊपर ते बरषैं बहु बालू ॥ भये थकित सब मर्कट भालू
शेष सहित कत होय खरारी ॥ सुनिप्रभुमायासकलनिवारी
देखि सुभट धाये करि हूहा ॥ प्रकटे तेहि कपि भालुसमूहा

सम्मुखचले विटप गिरिधारी ❋ देखिकीश बोले हियहारी
सब मर्कट ह्वैगे रिपु ओरा ❋ कौनकुशलजोविधिघरफोरा
आपुइ आपु लखै नहिं कोई ❋ भागे अब कछु जीति न होई
बहुरि हरी माया भगवाना ❋ तबतेहिं रचे लषणहनुमाना
लखिकपिभालुसकहिंनहिंमारी ❋ घेरिनिरामहिंधनुगिरिधारी
डरे देव कपि प्रभु हर्षाने ❋ पुनि समूह शायक संधाने
छांड़त रिपुशिर काटन लागे ❋ जनुसमूह शर ते खग भागे
रहे पूरि नभकेतु समाना ❋ छेदे निकर एक यक बाना
लोकलोकगिरिगिरिवनजहँई ❋ भयो राम रावण रण तहँई
सुर नर नाग सबै अकुलाने ❋ जाइकहाँ कोउसुखद ठिकाने
मारु मारु धरु धरु शिरबोलैं ❋ कालव्याल से खेदे डोलैं
प्रभुकाटत शिर बारहिंबारी ❋ मनहुँ अनार उड़ै फुलवारी

सो० यहिविधि चीणतमाथ बीते अष्टा दिवस तब ।
बोले श्रीरघुनाथ सुयश देन हित घटजंते ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथदाससराम सनेहीकृतरामरावणसमरवर्णनोनामाष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणपगिरासुखदानि ।
साररमायण केरमत कहौं इतिहास बखानि ॥

नाथ थकित भे भुजा हमारे ❋ तद्यपि असुर मरतनहिं मारे
तातेयतन करहु जेहिछीजे ❋ कहअगस्त्यमुनिप्रभुसुनिलीजे
प्रथम तुम्हारे पितर दिनेशा ❋ जासुप्रताप विदित सबदेशा
तिनकी विनय करहु करजोरी ❋ होइ विजय आनन्द बहोरी
सुनि प्रभु देन बड़ाई हेता ❋ बोले रविदिशि प्रीतिसमेता

भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ नमोमार्तंडं प्रचंडंतमारी । नमो कल्मषामै दुखातंकहारी ॥ नमोभानुमेपातु प्राच्यादिवासं ।

नमोपातुवेदागयाम्यार्तनासं ॥ नमोपातुतापेन्द्रदेवप्रतीचं ।
नमोमेरविंरत्नरत्नेंदुदीचं ॥ नमोरत्नगिगर्भासिईशानदेशं ।
नमोसंयमापातुदेग्नेसुवेशं ॥ नमोपातुनैर्ऋत्यहीरन्यरेतं ।
नमोपातुवायव्यदेवार्कमेतं ॥ नमोमित्रमूर्द्धानिसेधिष्णुमर्द्दं ।
नमोचारुणंपातुसर्वत्रवर्द्दं ॥ नमोमातुसर्वांगसुर्यासतोषं ।
नमोजन्ममृत्युर्जराव्याधिशोषं ॥ नमोधर्मकामार्थ निर्वाण
दाता । नमोदोषदारिद्रसंतापहाता ॥ नमोविश्वभूतात्मभूता
त्मभूपं । नमोज्ञानविज्ञानरूपंअनूपं ॥ नमोलोकनाथादिम
ध्यान्तमेकं । नमोतीव्रतेजार्कनामंअनेकं ॥ नमोमेकचक्रंरथं
दिव्यगामी । नमोकंदकालज्ञकारुण्यस्वामी ॥ नमोनिर्मलं
निर्विलोकंविरालं । नमोभूषितंभूषणंरत्नजालं ॥ नमोस्वर्ण
संकाशमाकाशवासी । नमोसज्जनानंददावेगरासी ॥ नमो
सूक्ष्मभाविक्तप्रागल्भमीशं । नमोब्रह्मविद्याविभौवैबलीशं ॥
नमत्रैगुणंत्वंत्रिमूर्तित्रिकालं । नमोत्वंतुरीयंनिरीहंनिरालं ॥
नमोत्वंसुरासुर्मृतासेव्यमानं । करोसोकृपाज्योंतजैशत्रुप्रानं ॥
यही बीनती दासरघुनाथ की है । यथाबालवाणीलिह्यो
जानिही है ॥

श्लोक ॥ सूर्य्याष्टकंयोनुदिनंपठेन्नरःमध्याह्नकालेशुचिनेमयुक्तः ॥
नश्यन्तिसर्वाणिरुजानितस्य प्राप्नोतिमोदार्थजयाभिरामम् १ ॥

यहिविधिकरि बिनतीजगदीशा ✱ छांड़ेशररिपुदिशिइकतीशा
यकशर नाभिसरामृत शोषा ✱ बीसभुजा काटे करि रोषा
दशशिरकाटिदशौदिशिमाहीं ✱ धरिआये रघुनन्दन पाहीं
बिनभुज शिर धावा करिकोपा ✱ कहांराम रणकरहुँ अलोपा
तबप्रभुकाटि किये युग खंडा ✱ गिरतभूमि हाल्यो ब्रह्मण्डा
तासुतेज प्रभुवदन समाना ✱ देखि देव नभ हने निशाना

जयधुनि पूरिरही चहुंओरा ❋ तिनमधिकोशलराजकिशोरा
कुसुमित किंशुकतरु के बीचा ❋ राजततरु तमालजनु सींचा
जटामुकुट सोहत मुनिवीरा ❋ करकमलन फेरत धनुतीरा
राजिवदृग करिकृपा निहारे ❋ सुरनरमुनि सब भये सुखारे
यहछवि सुखद बसै उर जासू ❋ मोह असुर तब होइ विनासू
पतिवध सुनि मैजादिक रानी ❋ आईंतहँ शिरपीटत पानी
रावणगति लखि देह बिसारी ❋ लगीं कहन तासुगुण भारी
जेहि भुजबल जीतेउ सुरसर्वा ❋ तनसुखकिहेउसकलसहगर्वा
सोइवपुबाहुश्वान शिवखाहीं ❋ रामविमुख कछुअचरजनाहीं
जासुकर्मफल चाहिय शोका ❋ तदपिकृपालु दीननिजलोका
देखि विभीषणहूं दुखपावा ❋ प्रभुप्रेरित लक्ष्मणसमुझावा
अनुजक्रियाकीन्हीजसचाही ❋ द्वितियादिन आये प्रभुपाही
तबरघुपतिलियबोलिअनंतहि ❋ कपिरिच्छपअंगदहनुमंतहि

दो० कह्यो विभीषण जाइपुर राज्यदेहु जसरीति ।
भलेनाथकहि नाइशिर कीन्ह्योतिलक सप्रीति ॥
बाजे बाजन बहु किये युवतिन मंगल गान ।
सहितविभीषणलषणपुनि आये जहँ भगवान ॥

तब प्रभु कह्यो पवनसुत तेरे ❋ जनकसुतहि लावहुढिग मेरे
सुनि पवनज अंगद लंकेशा ❋ आइ मातुपद नायो शीशा
पूछीकुशल कुशलसब भाषी ❋ पुनि पवनज बोले मनमाषी
मातुतमचरिनत्वहिंदुखदीन्हा ❋ तेहिते इन्हैं चही वधकीन्हा
कहसीता जनिमारिय ताता ❋ अच्छमनुज की बरणी बाता
सुनिसुखसहितविभीषणभावा ❋ षोड़शविधि शृंगार करावा
शिबिका सुभग माँझ बैठारी ❋ लाये सादर जहाँ खरारी
पावक ते प्रकटन के हेता ❋ कहे वचन दुर्वाद समेता

सुनि जानकी बहुरि दुखपाई ❋ लक्ष्मणते पावक मँगवाई
चिता रचाइ कह्यो तेहिपाहीं ❋ रघुपतितजिगतिदूसरिनाहीं
तौ जलसरिस होउ तुम केशा ❋ असकहि तामें कियो प्रवेशा
विप्ररूपधरि पावक लाये ❋ प्रभुइसौंपिअसवचनसुनाये
राम वामदिशि आसन दयऊ ❋ देखिभालुकपिहरषत भयऊ
लषण राम सिय शोभा रूरी ❋ निरखि सुमन बरषे सुर भूरी
दशरथ सहित रामपहँ आये ❋ लषणसहितप्रभुशीशनवाये
बोले तव प्रसाद रिपुमारे ❋ सुनि बिनती सुरलोक पधारे
तब विरंचि बिनती बहुकीन्ही ❋ प्रभुपदप्रीतिमांगिसोलीन्ही
आइ विनय तब कीन पुरारी ❋ भलकीन्हो प्रभु बध्यो सुरारी
मनवांछित वरमांगि सिधाये ❋ तब सुरेश वर वचन सुनाये
नाथ कृपाकरि सुर मुनि रंजे ❋ दास जानि सबके दुख भंजे
अब मोहिं जौन रजायसु देहू ❋ करहुँ सो सुनिबोले प्रभु येहू
तात देहु कपि भालु जियाई ❋ दिये जियाय अमी बरषाई
तब लङ्कापति वचन उचारा ❋ नाथ करिय कछु अंगीकारा
कह प्रभु तोर कोशगृह मोरा ❋ मोर कोशगृह तव न निहोरा
करहु कल्पभरि राजभिरामा ❋ अंतसमय आयो ममधामा
पुनि बोले पट भूषण लाये ❋ कपि भालुन चहिये बरताये
कह प्रभु होई गहरु विशेखी ❋ ममभन है भरतहि कब देखी
ताते लैअकाश महँ जाहू ❋ देहुबरषि मिलिहै सबकाहू
जाइ विभीषण नभ बरषाये ❋ पहिरिपहिरिसबप्रभुपहँआये
नानाजिनिसि देखिकपिभालू ❋ विहँसि सकलते कह्यो कृपालू
तुम्हरे बल मैं रिपु रणजीता ❋ भे लङ्केश मिलीं म्वहिं सीता
होई त्रिभुवन सुयश तुम्हारा ❋ पुनि पैहौ परधाम हमारा
अबहिंजाहुनिजनिजगृहभाई ❋ सुनि कपि भालु चले हरषाई

दो० सहित जानकी लषणयुत यूतथप सब लङ्केश ।
फणिदिन पुष्पकयान चढ़ि चले आपने देश ॥
लखत लखावत वासनिज आये दण्डक तीर ।
मिलि घटजादिकमुनिन कहँ पुनि गमने रघुवीर ॥

सो० चित्रकूट में आइ परितोषे मुनि साधु सब ।
पुनि तीरथपति पाइ न्हाइ दान दीन्ह्यो द्विजन ॥

भरद्वाज कहँ मिलि सनमाना * शृङ्गवेर पुनि आयउ याना
मिला गुहा अतिप्रीति समेता * पवनज ते कह कृपानिकेता
जाइ अवध भरतहि सुधिदेहू * तिनकै रहसि कहेउ म्वाहिंतेहू
सुनिचलिभेकपिकरिपरणामा * आइरहेतेहिनिशि तेहिग्रामा
इहां सकल शोचहिं पुरवासी * आवत हैं की नहिं सुखरासी
रघुपतिविरहअनलसबजरहीं * सगुणसमुझिशुभधीरजधरहीं
अवधिबीच एकहि दिनजानी * कौशल्यादि मातु अकुलानी
फणिदिनरवि भरणीसहचावा * तिसरे पहर गणिक बुलवावा
पगपरि पूंछेहु सह अनुरागा * सुनि ज्योतिषी बिचारै लागा

कुं० तिथिऽरु पहर संयुक्तकरि बारहु तार मिलाय ।
देइ सातकर भाग जो बचै तासुफल गाय ॥
बचै तासु फलगाय एकते तेहि अस्थाना ।
द्वैते आवन कहत तीनिते मगमें जाना ॥
चतुरथपहुँचे आइ ढिग पंचम पुनरावृत्तिबिथि ।
षष्ठेव्याधिसमेतमुनि मृतककहैइमिविष्णुतिथि ॥

दो० यहि विचार ते जानिये आये प्रभु पुरपास ।
सुनि सबमातन दानबहु दीन्हे सहितहुलास ॥

इति श्रीरावणवधारामायोध्यागमनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

लङ्काकाण्डस्समाप्तः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर

उत्तरकाण्डप्रारम्भः

दो० सुमिरिराम सियसंतगुरु गणपगिरासुखदानि ।
सार रमायण केरमत कहौं इतिहास बखानि ॥
रहा एकदिन अवधिकर भरतसमुझिमनमाहिं ।
लागे शोचन विरह वश धीरज आवत नाहिं ॥
तेहि अवसर हनुमानतहँ आये विप्रस्वरूप ।
रटत नाम अवलोकि कै बोले वचन अनूप ॥
जासुविरह शोचत अहौ आवतसो समरत्थ ।
लषणजानकी सहितसुनि प्रमुदितमिलेभरत्थ ॥
तातकह्यो सन्देशजस तसकछु नहिं जो देहुँ ।
ताते ऋणिया आपकर हौं मैं उऋण न लेहुँ ॥
देखि भरतकी प्रीति कपि कही रामते जाय ।
सुनत चले प्रभु यानचढ़ि पुरढिग पहुँचेआय ॥
भरतशत्रुहनसहितगुरु पुरजन सचिवसमाज ।
लेन सिधाये रघुपतिहि कहि जननिनते काज ॥
जहँ तहँ सुनि पुर नारि नर धाये दरशन हेत ।
एक एक ते कहैं तुम देखे कृपानिकेत ॥
कोटिनचढ़िगिरितरुअटनिनिरखैंव्योमविमान ।
कोटिन मङ्गल द्रव्यलै करहिं रामगुण गान ॥
कुं० अवधविराजतयामिनीजिमिविरहिनित्रियचारु ।
पतिआवत सुनि मुदितमन कीनसुतनशृङ्गारु ॥
कीन सुतन शृङ्गारु कोटि कटि किंकिणि जानो ।

मणिविद्रुममय भवन अंग प्रति भूषण मानो ॥
साजेवसन सुरंग संग सखि चित्र अनेका ।
पग नूपुर पुर शोर घोर गति बाजत एका ॥
चंचल अंचलपानि पताका ध्वज फहराहीं ।
ग्राम धाम के लोग सकल धाये प्रभु पाहीं ॥
ऊंचअटनिपर छत्र उचकि चितवत मग फूली ।
कनककलश कुचप्रकट मोदवश कंचुकिभूली ॥
भूलीकंचुकि मोदवश नेत्र भरोखा खरबवध ।
यकटकरहैनिमेषतजिनारिरूपभयइमिअवध ॥

दो० भरतहि आवतदेखिप्रभु त्याग्योतुरत बिमानु ।
सम्मुख चले सनेह वश पठै धनदपहँ यानु ॥
प्रथम मिलेगुरु द्विजनपुनि गहेभरत प्रभुपाय ।
बलकरि तुरत उठाय हरि भेंटे हृदय लगाय ॥
राम शत्रुहन मिलेपुनि भरत लक्ष्मण दोउ ।
पुरवासी क्षणमें मिले बाल वृद्ध सबकोउ ॥
भरत शत्रुहन सीयपद परसे पाय अशीश ।
पुनिभेंटे सबकपिन कहँ विप्रन सहित मुनीश ॥
बाजहिं बाजनविपुलसुर बरषहिं सुमन सराहि ।
द्वार द्वार प्रति आरती करहिं लोग सबचाहि ॥
सुनि सुनि धाईं मातुसब ज्यों बच्छाहित धेनु ।
प्रथमकेकयी भेंटिपुनि मिले सबन सुखदेनु ॥
एकै दिन गे सबन गृह सबके भोजन कीन ।
केहु न जानेहु मर्म यह कच उतरावै लीन ॥
प्रात सप्तमी दिवस मुनि कह्यो राज्यपददैन ।
सुनि रघुपति सब ऋषिन ते बोले कोमल बैन ॥

भरत-भेंट।

प्रथम मिले गुरु द्विजन पुनि, गहे भरत प्रभु पाय।
बल करि तुरत उठाय हरि, भेंटे हृदय लगाय॥ (पृष्ठ ५९८)

नाथ द्रव्यमद राज्यमद विद्यामद वपु लेखि।
यौवनमद तहँ राज्यमद सबते यहै विशेखि॥
तेहिपाये कछु सुख नहीं केवल निरय निवासु।
पुनि चंचल नहिंहोत निजु ताते चहै न दासु॥

सो० नरतनकर फल एक कहत वेद बुध आपुसम।
परिहरि काम अनेक भजै सदा जगदीश कहँ॥
सुनिबोले ऋषिनाथ तुमबिन अस को कहैप्रभु।
सो माया तवहाथ कालकर्म गुण जासुवश॥
जो सुमिरत तव नाम ते छूटत अभिमानते।
प्रभु परिपूरण काम तेहिकहोइ श्रीराज्यमद॥

तेहिते लेहु राज्यपद राखा * पूजै हम सबकी अभिलाखा
भले भाषि पट भूषण साजे * घर घर मोद बधाये बाजे
मङ्गल द्रव्य अनेक प्रकारा * लै लै आये अनुग अपारा
योजन एक कनककी छोनी * तामधि चन्द्रवेदिका लोनी
ताके बीच महल यकरम्भा * मणिमयचहुँदिशिषोड़शखम्भा
कोनेनप्रतिसुरतरुतहँआसन * तेहिगृह मध्य रतनसिंहासन
तेहिपर कमल अष्टदल केरा * धरे विविध भाजन चहुँफेरा
गुरुवशिष्ठ शुभ सम्मत चाहा * तेहिऊपर बैठनहित काहा

कुं० विप्रन शीश नवायके सिंहासन श्रीराम।
बैठे श्री सीता सहित मानौ रतियुत काम॥
मानौ रतियुत काम किधौं श्रीयुत भगवाना।
किधौं तड़ितयुत मेघ किधौं विद्यायुत ज्ञाना॥
किधौं सिद्धियुत बृहदरवि कल्पलताप्रद चिप्र।
छवि शृङ्गारुधम कीर्तिलखि वेदउचारैं विप्र॥
शशिसम छत्र सुकण्ठकर चवँर विभीषणहाथ।

लषण लिहे आदर्शवर अंगद पावनपाथ ॥
अंगद पावन पाथ पान रिपुदलन पवावै ।
व्यजना करत निषाद भरत सब कादि गलावै ॥
जामवन्त हनुमन्तकर छरी छबीली शक्तिअसि ।
वचनसुधारसतरनितनचंदनाशिरचंद्रिकाशशि ॥
नाच नटी गुनगम जटी छटी न छटी अनूप ।
ठटनि ठटी नहिं कछुघटी मन निपटी पटरूप ॥
मन निपटी पटरूप टाहि विघटहि गति ऊपर ।
झटकिसुकरकटिमटकिलटकिपटकहिपगनूपुर ॥
नूपुर पटकहि लटकिछवि लखिमटकै बुधिवाक ।
तानकटी सुनि चटपटी लहै मनुज मुनि नाक ॥
जान्यो जब अविशेष की आई घटिका शिष्ठ ।
प्रथमैं श्रीरघुनाथ शिर कीन्हों तिलक वशिष्ठ ॥
कीन्हों तिलक वशिष्ठ अपर सब तिनके पाछे ।
करहिं आरती मातु निछावरि पट अलि आछे ॥
विप्रन दीन्ह्यों दान सोई ज्यहि जो मन आन्यो ।
नृपन धरी बहुभेंट वंदि त्रिभुवन पति जान्यो ॥
तब विरंचि करजोरिकै बोले सम्मुख बैन ।
जय रघुनाथ अनाथपति प्रणतपाल सुखऐन ॥
प्रणतपाल सुखऐन मैन छवि कोटि विराजै ।
धन्य भाग्य बड़ तासु लखा जिन याहि समाजै ॥
लखासमाजै आजुमोहिं दानदेहु निजभक्ति अब ।
सुनि तथास्तु बैठे पुरः आये मुदित महेश तब ॥
वन्देहं त्वत्पद प्रभो संश्रिताब्धि दृढ़ पोत ।
परिभवांघ्रि ध्येयं सदा तीर्थास्पद सुखसोत ॥

तीर्थास्पद सुखसोत नुतं कमलज हरिईसं।
प्रणतपाल अभीष्ट द्रोह भृत्यारत खीसं॥
खीसंकृत अघ ओघ सव्य श्री मुनिमानन्दे।
गुणागार मे पातु शरन्निश्याहं वन्दे॥
विप्ररूप धरि वेद तब बोले गिराअनूप।
जयजगदीशअजीशपति निर्गुणसगुणस्वरूप॥
निर्गुण सगुण स्वरूप भूपभव पार उतारण।
जे नर तजि तव भक्ति यचत जगसुखके कारण॥
सुर दुर्लभ तनु पाइ ते पतत नरकमहँ क्षिप्र।
चरण कमलरति देहुसुनि सबहिंन जाने विप्र॥
बोले विश्वामित्र तब जय जन वन मनहंस।
रघुकुलकुमुदचकोरशशि शिवधनुकृत विध्वंस॥
शिवधनु कृत विध्वंस वंशयुत असुर निकंदन।
जय सुरनर मुनिपाल कालसब दशरथनंदन॥
दशरथनंदन भक्ति देहु निज मोहिं अडोले।
तब तहँ बाल स्वरूप आइ सनकादिक बोले॥
जयभगवन्त अनन्तअज अनघअनामयएक।
करुणासिंधुसर्वज्ञशिव सुखप्रद नाम अनेक॥
सुखप्रद नाम अनेक करम तव पावनकारी।
काम क्रोध मद मोह लोभ गज सिक्ख खरारी॥
जगदधितारनपोतदृढ़ कहतसुनत हरिलेतभय।
बसहुसदाममउरअयन सीतालषणसमेतजय॥
कह वशिष्ठ करजोरि तब जयप्रभुरूप तुम्हार।
बचन अगोचर बुद्धिपर जाने कहा गँवार॥
जाने कहा गँवार परशुधर सके न जानी।

प्रकट विष्णुअवतार वेग निजकीन्हिनिहानी ॥
शिवअरधंगिनिदत्तजा भ्रमवशबहुसंकटसहा ।
खगपतिकागभुशुण्डिसे भूले तौ जड़नरकहा ॥

दो॰ आपुजनावहु जाहिसो बिनश्रमलेइ पिछानि ।
ममउरकरहुनिवासनित यहिसमाजसुखदानि ॥

कुं॰ यहिविधिसुरनरनागनृप सबहिनबिनतीकीनि ।
तबरघुपति सबकपिनकहँ निजपरसादी दीनि ॥
निज परसादी दीनि मुकुट लंकापति पावा ।
कुंडल लहे सुकण्ठ माल हनुमत गरनावा ॥
पीतांबर युवराजकहँ दीन्हों जामा ऋक्षपहि ।
औरौगहनमँगाइवपु बच्यो न कोई भांतियहि ॥
सबविधि सबहि प्रसन्नकरि बोले मुनितेराम ।
विपति मांझ ये सखा सब आये मेरे काम ॥
आये मेरे काम नाम जिन केर बतायो ।
तिन जो कीन पुरुषार्थ तासुसहप्रीति सुनायो ॥
भरतहुतेमोहिंअधिकाप्रियदेहुँकहाअसकवनिनिधि ।
लषणचरितकाकहउँ जिन सेवाकीन्हींसकलविधि ॥

सो॰ सुनतसभा हरषानि जयकहि सुरबरषे सुमन ।
शरण सुखदप्रभु बानि पहिरेपट भूषणबहुरि ॥

छंद ॥ पुरवासीनरनारिजेकहैंकिआजविशेखि । नयनस फलकरिलीजिये रघुपतिछविदेखि ॥ नीलजलदमनिसरि सवपुदिनकरमणिसमतेज । कोटि मनोभवतेरुचिर राजत मनिमेज ॥ रतनजटितमनिमुकुट शिरजगमगतअपार । श्रुतिकुंडलनिजकेतुकेदीन्हेंजनुमार ॥ भृकुटीललितललाट पैदिहेतिलकसुभास । जनुलायेअलिरविकिरनि हितकम

लप्रकास ॥ चंचलचारुविशालदृगमधिप्राणसुहाव । मानहु विविखंजनलरैंशुककरतबराव ॥ श्यामसुकेशप्रसूनघरजनु मणियुतनाग । उतरेमुखशशिश्रमीहितलखिरिपुडरलाग ॥ बिम्बादाड़िमदशनमधिरसनसुरंग । कमलकोशमेंकुलिश जनुबसेदामिनिसंग ॥ मन्दहासबोलतमधुरखायेमुखपान । धरकृपादृष्टिकीदृष्टिसों करैंश्रमीसमान ॥ कम्बुकण्ठकौस्तु भलसै मुक्तनकीमाल । पयदमध्यसोहीमनो बगपांतिवि शाल ॥ भुजश्रजानुबरजनुबहीयुगयमुनाधार । धनुश रतटभूषणभँवरकरकंजउदार ॥ असितशयलउपवीतउर ओढ़ेउपवीत । लसतक्षीरसरितामनोत्वपलालखिमीत ॥ नाभिशिरसत्रिबलीसुपथ रोमावलिसेवाल । कटिकेहरि हरि किंकिणी जनुसुरवरमराल ॥ कदलिजंघयुगफबर नूपुरश्रनमोल । पुरटपद्मकेकलिनमें जनुश्रलिगनबोल ॥ अरुणचरणचिरचिह्नयुत युगपदजनुखाभ । श्यामरक्तहरि दलनिजनुबैठेजलदाभ ॥ विधिहरिहरध्यावतजिन्हें मुनि गणतजिसाथ । तिनपाँयनमेंप्रीतिदृढ़ चाहैजनरघुनाथ ॥

दो० यहिविधिनखशिखरूपलखि मुदितहोयँसबकोइ ।
एक एकते आइ गृह बोली बूझेउ सोइ ॥

हे सखि आजु रामछवि देखी * नयननमम परिहरीनिमेखी
तहँ पुनि बसत अंग प्रभुकेरे * अद्भुत रचना हेरी नेरे
युगलकंज दशदलतिनमाहीं * बसतमराल उड़तते नाहीं
पिकबककीर लालमिलिडोलैं * बैठे घेरि चहुंदिशि बोलैं
तिनके मध्य मयन रथकेरे * चक्र विराजत मणिमयहेरे
कमलनालरति गललीहासा * रम्भातरु तेहि ऊपर वासा
तेहिपर गज करिपर मृगराई * दिव्यवसनते दीन उढ़ाई

हरिपर सरमधि भँवर विराजैं ❋ विविध बरणके पक्षीराजैं
सरपर कनककेर गिरिदोई ❋ तिनपर रहा नीलघन सोई
तेहिपर सुमन पंचरँग फूले ❋ तामधि बैठि परेवा भूले
तेहिपरकुसुमकुसुमपरअलिसुत ❋ तेहिपर युगबिंबाफल अद्भुत
तेहिपरशुकअतिशैलागतभल ❋ लीन्हेंपल्लवचोंचसहितफल
शुकतरपिकऊपर विविखंजन ❋ खंजनपरघनपर शशिरंजन
इतउतदिनमणिउदितसुहाये ❋ मानहुँशशि सहायहितआये
शशिऊपर बहुनखतसुहावन ❋ इन्दुमइन्दु लसतमनभावन
तेहिपरगिरि गिरिपरवनसोहै ❋ तेहिबिच्चलाल पंथमनमोहै
तेहिपरमणिधर नागिनिदेखी ❋ तेहिअघदीरघ सरितापेखी
तेहितेबही सरित युगजोई ❋ जलचरविपुलविविधविधिसोई
फूले कमलमिथुन इकसंगा ❋ क्रीड़तविहँग जानिबहुरंगा
सुनत सखी सो देखन धाई ❋ मुदित भूप के मन्दिर आई
दम्पतिरूप देखि हरषानी ❋ आईभवन तोरि तृणपानी

दो० यहि विधि सायंकाल भो रहे दीप पुर पूरि ।
मनहुँ शेष आये मिलन किधौं धरणिसुत भूरि ॥

तबमुनिमुदितरजायसुदीन्हा ❋ संध्यावन्दन सबहिन कीन्हा
राजसभा पुनि बैठे आई ❋ हरषि पहरभरि रयनबिताई
सेवक आइकही तब बाता ❋ चलहुभवन प्रभुबोलतमाता
उठे तुरत पुरजन शिरनाई ❋ गे निज भवन रजायसुपाई
आये रघुपति जहँ महतारी ❋ अनुजसियायुतकीनबियारी
अँचवनकरि पुनिबीराखादी ❋ हनुमदादिजन लिहिनिप्रसादी
बोलासुख चलिसोवहुश्यामा ❋ आये तबप्रभु कंचनधामा
देखिसखिनहँसि पांयपखारे ❋ मणिमय अठसिल्या बैठारे
स्रकसुगंध मेवा पकवाना ❋ धरे कनक भाजन भरिनाना

रामाभिषेक ।

राम राज्य बैठे जब तेरे, त्रिभुवन दुःख मिटे सब केरे ।
कामधेनु भइ भूमि सुहाई, माँगे मेघ देइँ जल आई ॥ (पृष्ठ ६०४)
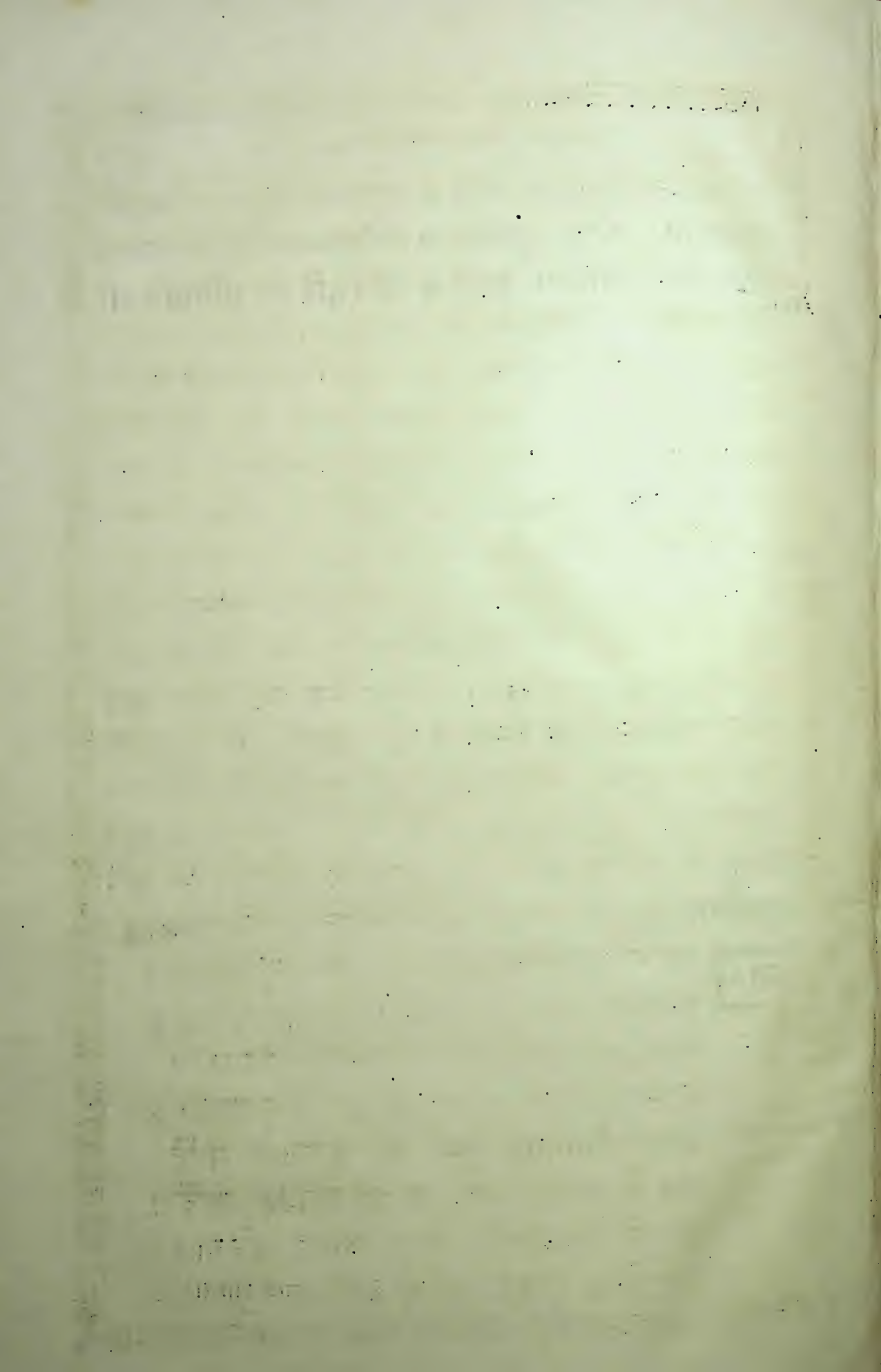
सुर नर नागसुता अनुरागीं ❋ नृत्य गान मिलि करनेलागीं
देखतहीगे सोइ कृपाला ❋ लखिप्रभात बोला तबसाला
उठहु नाथ जगनाथ हमारे ❋ विधि हरि हर मुनिठाढ़े द्वारे
मिलिसबहिनकहँदरशनदीजे ❋ याचकसकल अयाचककीजे
विहँग वचनसुनि उठे खरारी ❋ देखिसखिन आरती उतारी
प्रीति सहित दातूनि कराई ❋ मिले सबन पुनि द्वारे आई
विप्रन दान देइ बहुरंगा ❋ सेवक सखा अनुजलै संगा
जाइकीन सरयू अस्नाना ❋ देखिलोग सुखलहैं निदाना
पूजनकरि पुनि मन्दिर आये ❋ मुदित मातुतब अशनकराये
कछुकबार करिशयन कृपाला ❋ पुनिसबमिलिआयेनृपशाला
राम राज्य बैठे जब तेरे ❋ त्रिभुवन दुःख मिटे सब केरे
कामधेनु भइ भूमि सुहाई ❋ मांगे मेघ देइँ जल आई
चारिहु वर्ण धर्म निज चरहीं ❋ कोउ काहूते वैर न करहीं
बाल वृद्ध यौवन नर नारी ❋ सबकै प्रभुपद प्रीति अपारी
रघुपतिचरित सुनै नित कहई ❋ परमानन्द मगन सब रहई
अजहूं जे हरिपद मनलावैं ❋ रामराज्यकर सुख ते पावैं
रघुपतिचरित सुनैं जे कहहीं ❋ निश्चयते अव्ययपद लहहीं

दो० रामचरित्र विचित्र अति कहि कोइलहै कि पार।
सुखप्रद निजमति सरिसमैं तुम्हैं सुनाये सार॥
सुनि हरषे श्रोता सकल धन्यभाग्य निजजानि।
कहतदास रघुनाथ अब सहितजोरि युगपानि॥
हेप्रभु सीतानाथ तुम जस फुरमायो मोहिं।
तस मैं भाष्यो ग्रन्थ यह सो अर्पतहौं तोहिं॥
श्रीगुरु देवादासके चरण कमल धरिमाथ।
रामचरित सुखप्रद कछुक वरणे जनरघुनाथ॥

तोमरछन्द॥ श्रीरामचरणप्रताप। कछुकीनकिरपाश्राप॥ तेहिनाथचरितसिखालि। अबकहतगुरुपरनालि॥

कवित्त॥ श्रीरामानुजसंप्रदायद्वारा अग्रदासजूके तहांके महन्तभे गोविन्दरामजानिये। तिनहींके शिष्य सन्तदास तस्यकृपाराम कृपारामजूके रामचरण पिछानिये॥ रामचरणजूके रामजन्न तस्यकान्हरभे कान्हरके शिष्य हरिरामको बखानिये। हरीरामजूके देवादास रामनामभाल देवादासजूके रघुनाथमोहिंजानिये॥

दो० इष्ट हमारो राम सिय रामनाम प्रिय भाल।
राम रकार मकार है बिंदु जानकी लाल॥
पावनको पावन करन शिवको धनुमुनिपर्ण।
शुचिसन्तनके प्राणहैं रामनाम दोउ वर्ण॥
विविधग्रन्थबहु विधिसुमन ममसतिमाखीजानि।
विश्रामोदधि ग्रन्थ मधु कीन इकट्ठे आनि॥
स्वच्छ मधुर आरोग्य शुचि आवत सबके काम।
यत्नकिहे सहजे मिलै नाहिंत महँगे दाम॥
कथारसिकजे सन्तजिमि गुणग्राही रस चोर।
ते आदरिहैं ग्रन्थ यह देखि परिश्रम मोर॥
लहिहैं सुख सम्पति विविध जैहैं मिटि तिहुँताप।
चारों युगमें प्रबलहै रघुपति भक्ति प्रताप॥

छं० अतिप्रबल भक्तिप्रताप सबपर ईश जेहि निजवश करे। कलिकालहू हरिभजनकरि बहुजीवभवसागर तरे॥ सर्वज्ञशम्भुविरागमुनिजपयोगतपप्रेमीजने। शठकोप जामुनि बर्जिशुचिनवनंदगोपादिकघने॥ अहिनाथसुरतरु तरणिमीवादित्यतम भ्रमहारेहू। सममेघ मध्वाचार्य स्वामी

विष्णुवोहिततारेहू ॥ गुरुनिष्टलालाचार्य्यरामानंदश्रीरँग रंगियो । पयपानकृतकीलाग्रशंकरनामसुरपारसबियो ॥ जयदेवश्रीधरबिन्दमंगलज्ञानदेव त्रिलोचनं । भयजासु सेवकआइश्रीपति प्रेमवशदुखमोचनं ॥ पृथुरूपबल्लभभूप जनजेहिरामसियदधिमेंलखे । बिबिसूरकूबागदाधरहरप्रे मनिधिमंगलसखे ॥ गतिगूढ़हरिअनुकरनराजहिपाणि पुरिखातमदियो । प्रियलागिकर्माकेरिखीचरिबोलिनिज मन्दिरलियो ॥ सियटूकभजिनिजसुतनविषदैप्रभुइपियवा ईभई । हरिहंसमामाभानजेसद्वृत्तिकीकसनीलई ॥ भइ भुवनकीअसिसारिकीसितिकेश देवाहितकरे । दियोदाह कामध्वजकलेवरआइजेमलदिशिलरे ॥ घरदीनिमहिषी गोपकीद्विजहेतुचलिसाखीभरी । शिरनयोगणिकाकाजश क्रीदासलगिनिजउरधरी ॥ सुखपावसुन्दरिरामकहिरैदास हरिहिबुलायहू । बहुबाररामकबीरहितधनुदीनबरदीलाय हू ॥ बिनबीजजामेहुधनाकोससि सैनहितछुरहरिगही । रघुनाथमाधवदासजनकोशौचकरवायोसही ॥ हरिव्यास देविहिदीनिदित्तानरहरीसमधीलई । त्रिपुरारितत्त्वाजीव नित्यानंदनाभाअनभई ॥ भूगर्भदेवमुरारिगजगोविंदगिरि घरकोसखा । गोपालरूपसनातनातददीननगलीन्हेलखा ॥ बिठलेशलालाभक्तनरसीखलनबहुपरचैदये । परमार्थके रसरूपपीपापतितबहुपावनकिये ॥ कोतल्लकेशवभट्टमीरा लीनगिरिधरमेंभई । रतनावतीकरमैतिभक्तिगणेशदेढ़क रिगई ॥ चतुरोगतुलसीदासपावनरामयशजिनउरधरेउ । कविकृष्णलषणप्रयागजूड़ेयुगलहरिजनआदरेउ ॥ भेऔ रहुबहुसंतअबजेअहैं आगेहोइहैं । रघुनाथतिनकेचरित

सबकहिसकैनहिंअसकोइहैं ॥ जिमिक्षीरसिंधुअपारखग निजचोंचसमभरिपावहीं । तेहिभांतिकविनिजमतिसरिस हरिसंतजनगुणगावहीं ॥

कुं० अहोसंतभगवंत गुरु विनय करहु ममकान ।
चहौंनमहिसुखदेवसुख विधिसुखपुनिनिरवान ॥
विधिसुखपुनिनिरवान ऋद्धिसिधिसकलधरीजै ।
जहँ राखो प्रभुमोहिं तहां निज पद रतिदीजै ॥
दीजैपुनिसतसंगजहँ तवगुणसुन वाकोलहौं ।
भक्तिविमुखकरवदनजनिदिखरायोसुखप्रदअहौं ॥

अयन तीसरे संख्या गाई ॥ युग सहस्र नवसै हैं भाई
और सतत्तर जानो जोई ॥ इतनी हैं चौपाई सोई
दोहा साठिपंचशत जानो ॥ नब्बे सोरठ सोइ पिछानो
हैं छप्पै बावन यहिमाहीं ॥ गितिकाछंदउन्तालिसआहीं
चौबोला युग यामें होई ॥ मंजु छंद यक सुंदर सोई
छंदैंहैं मुनि कहा सुहाई ॥ कुंडलियाम्वहिं बीसलखाई
तोटक यक यक दंडक जानो ॥ कमल एक यक तोमर मानो
रोला वेद वेद अश्लोका ॥ रुद्र त्रिभंगीछंद विलोका
एक मालिका यामें भाई ॥ संख्या अयन कहा मैं गाई

सो० महिखरछंद जो एक युग नराच छंदैं अहैं ।
भुजँगप्रयाता एक एक कबित यामें बिशद ॥

दो० जो कुछ देखेउ चूकमम क्षम्यो जानि अज्ञान ।
पराधीन जग जीवसब ज्ञानी इक भगवान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीमज्जगज्जन निजनकजानकीरामस्यानुगानुगोहं श्रीरघुनाथदासरामसनेही निर्मितविश्रामसागरग्रन्थःसमाप्तः ॥

(१)

<table>
<tr><td>कमल
महादेव
हंस</td><td>कुन्द
यमराज
गरुड़</td><td>निवारी
हनुमान्
पपीहा</td><td>दुपहरिया
इंद्र
गीध</td></tr>
<tr><td>बेला
राम
मैना</td><td>केवड़ा
गणेश
कोयल</td><td>गुल्दावदी
शनिश्चर
खूसट</td><td>पियाबासा
भैरव
बया</td></tr>
<tr><td>कलगा
भरत
टिटीरी</td><td>सुदर्शन
पवन
भरदूल</td><td>गुल्मेहँदी
जल
खड़रैचा</td><td>नरगिस
शारदा
चंडूल</td></tr>
<tr><td>कंदयल
अन्न
गरगवा</td><td>मरुवा
शुक्र
कटनाश</td><td>गुलफिरंग
अश्विनीकु
तूती</td><td>सेवती
स्वामिका
सारस</td></tr>
</table>

(२)

<table>
<tr><td>गुलाब
हरि
सुवा</td><td>निवारी
हनुमान्
पपीहा</td><td>कदम्ब
सूर्य
हीरल</td><td>दुपहरिया
इंद्र
गिद्ध</td></tr>
<tr><td>बेला
राम
मैना</td><td>मोतिया
कृष्ण
बाज</td><td>गुलाचीन
शत्रुघ्न
मुरैला</td><td>गुल्दावदी
शनिश्चर
खूसट</td></tr>
<tr><td>चमेली
ब्रह्मा
काग</td><td>जूही
पावक
चकोर</td><td>अनार
नरसिंह
तीतर</td><td>गुलाबास
बृहस्पति
शार्दूल</td></tr>
<tr><td>कनयर
अन्न
गरगवा</td><td>मरुवा
शुक्र
कटनाश</td><td>नरगिस
शारदा
चंडूल</td><td>गुलफिरंग
अश्विनीकु
तूती</td></tr>
</table>

(४)

<table>
<tr><td>चांदनी
सीता
लाल</td><td>कुन्द
यमराज
गरुड़</td><td>गुल्लाला
गुरुजन
कठफोरा</td><td>मोतिया
कृष्ण
बाज</td></tr>
<tr><td>चमेली
ब्रह्मा
काग</td><td>निवारी
हनुमान्
पपीहा</td><td>कलगा
भरत
टिटीरी</td><td>गुल्मेहँदी
जल
खड़रैचा</td></tr>
<tr><td>गुड़हल
देवी
महरि</td><td>जूही
पावक
चकोर</td><td>केतकी
मुनि
बटेर</td><td>सेवती
स्वामिका
सारस</td></tr>
<tr><td>कनैर
अन्न
गरगवा</td><td>मरुवा
शुक्र
कटनाश</td><td>गुलाबास
बृहस्पति
शार्दूल</td><td>गुलफिरंग
अश्विनीकु
तूती</td></tr>
</table>

(८)

<table>
<tr><td>गेंदा
लक्ष्मी
बकुला</td><td>केवड़ा
गणेश
कोयल</td><td>कदम्ब
सूर्य
हारिल</td><td>दुपहरिया
इंद्र
गिद्ध</td></tr>
<tr><td>गुल्लाला
गुरुजन
कठफोर</td><td>मोतिया
कृष्ण
बाज</td><td>पियाबासा
भैरव
बया</td><td>नरगिस
शारदा
चंडूल</td></tr>
<tr><td>कलगा
भरत
टिटीरी</td><td>चम्पा
बुध
बुलबुल</td><td>केतकी
मुनि
बटेर</td><td>सेवती
स्वामिका
सारस</td></tr>
<tr><td>कनैर
अन्न
गरगवा</td><td>अनार
नरसिंह
तीतर</td><td>गुलाबास
बृहस्पति
शार्दूल</td><td>गुलफिरंग
अश्विनीकु
तूती</td></tr>
</table>

(१६)

हरिसिं० चन्द्रमा कबूतर	सुदर्शन पवन भरदूल	गुलाचीन शत्रुहन मुरैला	गुल्दावदी शनीचर खूसट
गुड़हल देवीजी महरि	गुल्मेहँदी जल खड़रैचा	पियाबासा भैरव बया	नरगिस शारदा चंडूल
जूही पावक चकोर	चम्पा बुध बुलबुल	केतकी मुरवर बटेर	सेवती स्वामिका सारस
मरुवा शुक्र कटनाश	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शार्दूल	गुलफिरंग अश्विनीकु तूती

अंगुली रखकर इस प्रश्न को निकालते हैं ॥

१	२	१३	८	२६	२४
३१	२३	२८	११	७	०
१७	१४	२०	२७	१९	०
९	१८	४	२२	५	०
३	२९	१६	६	३०	०
१५	१०	१२	२५	२१	॥

दो० बन्दि गणाधिप शारदा रामसिया गुरु विष्णु ॥
हरिप्रेरित रघुनाथजन बरणत मानसप्रष्णु १
कह महेश प्रभुपद कमल भजकुरिभेषमराल ॥
ह्वैहै मंगल लाभबहु मिटिहैं सब दुखहाल २
जैसा रंग गुलाब का तैसा यह संसार ॥
कह हरि मति भूलै सुवा यामें दुःख अपार ३
पढ़ि मैना बँदि में पर्यो अबते सुमिरहुनाम ॥
जब वह बेला आइहै तबहीं सरि है काम ४
कह सिय पियगुनलालसे सुयशचांदनी छाय ॥
मिलतमोदगावतसुनत गनतबिपतिसबजाय ५
कुंदसरिसतनआउबटि लक्ष्मणभलकुलनीक ॥
कहत धर्मकरि गरुड़पति भजे होइ सबठीक ६

काकभक्ष को त्यागिकै लीन चमेली वास ॥
कहविधि अस सतसंगहै करु पूजी सब आस ७
सुमिरिनाम चातक सरिस मनका मैल निवारि ॥
करतल तेरे चारिफल कह हनुमान पुकारि ८
जिनकरि तू सुख चहतहै तिनते होई दुक्ख ॥
बकगेंदासमकुटिलअति श्रीपतिसनमुखसुक्ख ९
बुद्धिमान गणपतिसरिस बोलत कोकिल बैन ॥
भजहु हरिहि ह्वै केवड़ा तुम सबको सुखऐन १०
मित्र मिली होरिल मिली सम्पति मिली कदम्ब ॥
भूलेहुजनि रघुनाथको मतिहि दुखायो अम्ब ११
कीनक्रिया जिमि गीधकी तज्यो इन्द्रसुत जानि ॥
तासुचरण दुपहर सरिस भजु तू सुखकी खानि १२
सेवहु गुरुजन प्रीतिकरि फूली मुद गुल्लाल ॥
कठफोरवासम रिपुमिटी मिलीसुहृद सुतबाल १३
भरतरहनि धरु हृदय महँ तनुटीढ़ी सुतमूल ॥
कलगाभक्ति बढ़ाइये निशिदिन मंगलमूल १४
गईताहि अब भरवैमति रहीते भजु नँदलाल ॥
कालबाजि शिरसूझि नहिं पर्यो मोतियाजाल १५
कर्मकृषी भलि कीजिये ज्यहि उपजे सुख अन्न ॥
चुगहि गरगवा जीव तब होय न कँदयल मन्न १६
सोम परेवा का लखै करु तू हरि श्रृंगार ॥
देखुनयनभरिसुखदछवियहिअवसरयहिबार १७
भरुहीके अण्डा बचे बच्यो पवनसुत जानि ॥
तिमिते बचि सुखभोगिहैं सुमिरु सुदर्शनपानि १८
गुलाचीन कर हारकरि रिपुहंतहि पहिराउ ॥

पैहै विजय विनोद यश मोर तोर मतिगाउ १९
बसै शनिश्चर पाय तेहि फिरै दावदी जैस ॥
बिनहरि सुमिरे सुख नहीं खोउ न खूसट बैस २०
गुड़हलसम तन हरिभगति देवीशीश चढ़ाउ ॥
होइसिद्धि कल्याण जेहि महरिसुवन यशगाउ २१
दुख सुख आवत समयपर ज्यों खंजन ऋतुपाइ ॥
आनँद जल वर्षत उठी गुल्मेहँदी हरियाइ २२
जूही अपने मित्रहित पावक खात चकोर ॥
जो हरिसुमिरै प्रीतिते क्यों न होइ फल तोर २३
नारिखहेरिया सरिस है छूमति मन कटनाश ॥
मरुआ पकरि भुलाइहै कवि कौड़ीकी आश २४
ज्यों मधुकर चंपहि तजै त्यों तू तज यह काज ॥
बुलबुलसे लड़िजाइहौ कहबुध फिरि वन राज २५
बिनवर्षा घन समुझि घर दीन्हे बयन बिसारि ॥
पियाबास तब तिमि तजा भैरव आश निवारि २६
तीतर त्यागे प्राण निज गा अनारतरु सूखि ॥
नरसिंहको करु यादि अब तू मति काहुइ दूखि २७
सुमिरि शारदाके चरण चढ़ै न क्यों चण्डूल ॥
नरगिस करि क्याकरहिंगे जो ईश्वर अनुकूल २८
रहिये रहनि बटेरकी चहिये सुयश गजारि ॥
लहै केतकी वास किमि मुनिवर कहत विचारि २९
सारस बदको यादकरु है सो मंगलखानि ॥
स्वामिकार्त्तिक रटत जेहि शंभु सेवती मानि ३०
गुलाबासकी आश तजि शारदूल को ध्याव ॥
होई सुख परदेशमें कहत बृहस्पति जाव ३१

गुल फिरंग फूली विपिन भई कृपण के दर्वि ॥
कह रविसुत हरिबिन वृथा तूती बोलै अर्वि ३२
श्रीगुरु देवादासके चरणकमल धरि माथ ॥
वरणौं मानस प्रश्न यह पूरण जन रघुनाथ ३३
देव सुमन अरु खगनके नाम जानि यकतीश ॥
पंचधाम कोठा असी अंक पांच तिन शीश ३४
सकल सुनावै नाम जो धाम मध्य ठहराय ॥
अंकजोरि दोहा समुझि सगुनहिं देउ बताय ३५

इति

Printed by K. D. Seth, at the N. K. Press, Lucknow.